आगमसाहित्यरत्नमालायाः पञ्चमं रत्नम्

प्राचीनाचार्यकृतभाष्योपेतं, श्रीविसाहगणिमहत्तरप्रणीतम्

निशीथ-सूत्रम्

आचार्यप्रवरश्रीजिनदासमहत्तरविरचितया

विशेषचूर्ण्या समलंकृतम्

तृतीयो विभागः

उद्देशकाः १०-१५

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि

मुनि श्री कन्हैयालाल "कमल"

आगम-प्रतिष्ठान

सन्मति-ज्ञान पीठ आगरा

प्रकाशक
सन्मति ज्ञान-पीठ
लोहामंडी, आगरा

प्रथम संस्करण सन् १९५८
वीर संवत् २४८४ विक्रम संवत् २०१४

मूल्य, सम्पूर्ण चार भाग
राज-संस्करण १००) रु०, साधारण-संस्करण ५०) रु०

श्रद्धेय गुरुदेव श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज
श्रद्धेय स्थविर श्री श्यामलाल जी महाराज

के

पवित्र कर कमलों में

सादर सभक्ति

समर्पित

:

मंगलमय युगल मूर्ति

के

सहज स्नेह

की

सुमधुर

स्मृति

में

उपाध्याय अमर मुनि

प्रकाशकीय

आशा से भी अतिशीघ्र निशीथचूर्णि का यह तीसरा खण्ड, पाठकों की सेवा में पहुँच रहा है। यह हमारे और पाठकों के लिए वस्तुतः सौभाग्य का सुमधुर प्रसंग है।

'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' का महावाक्य प्रायः शुभ कार्यों में अपने दर्शन दे ही जाता है। श्रद्धेय उपाध्याय श्री जी का स्वास्थ्य तो काफी समय से ढीला चल रहा है। इधर यकृत-विकृति का पुनः प्रकोप रहा। श्री कमल मुनि जी भी ज्वर-ग्रस्त हुए, फलतः एक बार तो कार्य ने मंथर गति ले ली। किन्तु मुनिवरों का तेज धुंधला नहीं पड़ा। कुछ ठीक होते ही पुनः तत्परता से कार्य में जुट गए। और तो क्या, रुग्णावस्था में भी कार्य-संलग्न ही रहे। वस्तुतः कर्तव्य की धुन ही कार्य की पूर्णाहुति का एक मात्र हेतु है।

निशीथचूर्णि, प्राचीन जैन साहित्य का शिरोमणि ग्रन्थ है। जब से इसके प्रकाशन की चर्चा विद्वज्जगत् के समक्ष उपस्थित हुई है, तभी से विद्वानों का ध्यान इस ओर एकाग्र होगया है। अनेक स्थानों से माँग-पर-माँग आ रही है। ज्ञानपीठ केवल २५० प्रति ही छपा रहा है। इस पर हमारे मान्य सुप्रसिद्ध दार्शनिक पं० श्री दलसुख मालवणिया आदि ने तो कम-से-कम हजार प्रति की सूचना दी है। परन्तु अब हमारे लिए इस ओर मूल में लौटना असंभव है। फिर ज्ञानपीठ के साधनों की भी अपनी एक सीमा है।

चतुर्थ खण्ड का मुद्रण तीव्रगति से हो रहा है। किन्तु उसके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट एवं शोधपूर्ण भूमिका आदि के तैयार होने में कुछ समय लग जाने की संभावना है। आशा है, प्रेमी पाठक तदर्थ प्रतीक्षा के मधुर क्षणों में रहने की कृपा करेंगे।

विजयसिंह दूगड़
मंत्री-सन्मति-ज्ञानपीठ, आगरा

उत्सर्ग और अपवाद मार्ग

छेद सूत्रों का मर्म स्थल

जैन-साधना

जैन संस्कृति की साधना, आत्म-भाव की साधना है, मनोविकारों के विजय की साधना है। वीतराग प्ररूपित धर्म में साधना का शुद्ध लक्ष्य है, मनोगत विकारों को पराजित कर सर्वतोभावेन आत्मविजय की प्रतिष्ठा। अतएव जैनधर्म की साधना का आदिकाल से यही महा घोष रहा है कि एक (आत्मा का अशुद्ध भाव) के जीत लेने पर पाँच क्रोधादि चार कषाय और मन जीत लिए गए, और पाँचों के जीत लिए जाने पर दश (मन, कषाय और पाँच इन्द्रिय) जीत लिए गए। इस प्रकार दश शत्रुओं को जीत कर, मैंने, जीवन के समस्त शत्रुओं को सदा के लिए जीत लिया है।[1]

जैन-साधना का संविधान

'जैन' शब्द 'जिन' शब्द पर से बना है। जो जिन का उपासक है, वह जैन है। जिन के उपासक का अर्थ है—जिन-भाव का साधक। राग द्वेषादि विकारों को सर्वथा जीत लेना जिनत्व है। अतः जो राग द्वेष रूप विकारों को जीतने के लिए प्रयत्नशील है, कुछ को जीत चुका है, और कुछ को जीत रहा है, अर्थात् जो निरन्तर शुद्ध जिनत्व की ओर गतिशील है, वह जैन है।

अस्तु निजत्व में जिनत्व की प्रतिष्ठा करना ही जैन धर्म है, जैन साधना है। यही कारण है कि जैन धर्म बाह्य विधि-विधानों एवं क्रियाकाण्डों पर आग्रह रखता हुआ भी, आग्रह नहीं रखता है, अर्थात् दुराग्रह नहीं रखता है। साधना के नियमोपनियमों का आग्रह रखना एक बात है, और दुराग्रह रखना दूसरी बात है, यह ध्यान में रखने जैसा है। साधना के लिए विधि निषेध आवश्यक हैं, अतीव आवश्यक हैं। उनके बिना साधना का कुछ अर्थ नहीं। फिर भी वे गौण हैं, मुख्य नहीं। मुख्य है—समाधि भाव, समभाव, आत्मा की शुद्धि। अन्तर्मन शान्त रहे, कषायभाव का शमन हो, चंचलता—उद्विग्नता जैसा किसी प्रकार का क्षोभ न हो, सहज शुद्ध शान्ति एवं समाधि का महासागर जीवन के कण-कण में लहराता रहे, फिर भले ही वह किसी भी तरह हो, किसी

१—एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ता णं, सव्व-सत्तू जिणामहं॥

—उत्तराध्ययन २३, ३६

भी साधन से हो,[2] यह है जैन साधना का अजर अमर संविधान। इसी संविधान की छाया में जैन साधना के यथादेश-काल विभिन्न रूप अतीत में बदलते रहे हैं, वर्तमान में बदल रहे हैं और भविष्य में बदलते रहेंगे। इसके लिए, जैन तीर्थंकरों का शासन-भेद ध्यान में रखा जा सकता है। भगवान पार्श्वनाथ और भगवान महावीर एककार्यप्रपन्न थे, एक ही लक्ष्य रख रहे थे, फिर भी दोनों में विशेष था, विभेद था। दोनों ही महापुरुषों द्वारा प्रचलित साधना का अन्तःप्राण बन्धन-मुक्ति एक था, किन्तु बाहर में चातुर्याम और पञ्च शिक्षा के रूप में धर्म-भेद तथा अचेलक और सचेलक के रूप में लिंगभेद था, यह इतिहास का एक परम तथ्य है।[3]

साधना-एक सरिता

जैन धर्म की साधना विधिवाद और निषेध वाद के एकान्त अतिरेक का परित्याग कर दोनों के मध्य में से होकर बहने वाली सरिता है। सरिता को अपने प्रवाह के लिए दोनों कूलों के सम्बन्धातिरेक से बचकर यथावसर एवं यथास्थान दोनों का यथोचित स्पर्श करते हुए मध्य में प्रवहमान रहना, आवश्यक है। किसी एक कूल की ओर ही सतत बहती रहने वाली सरिता न कभी हुई है, न है, और न कभी होगी। साधना की सरिता का भी यही स्वरूप है। एक ओर विधिवाद का तट है, तो दूसरी ओर निषेधवाद का। दोनों के मध्य में से बहती है, साधना की अमृत सरिता। साधना की सरिता के प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए जहाँ दोनों का स्वीकार आवश्यक है, वहाँ दोनों के अतिरेक का परिहार भी आवश्यक है। विधिवाद और निषेधवाद की हानि से बचकर यथोचित विधि-निषेध का स्पर्श कर सामान्य-रूप में बहने वाली साधना की सरिता ही अन्ततः अपने अजर अमर अनन्त साध्य में विलीन हो सकती है।

उत्सर्ग और अपवाद

साधना की सीमा में प्रवेश पाते ही साधना के दो अंगो पर ध्यान केन्द्रित हो जाता है—"उत्सर्ग तथा अपवाद।" ये दोनों अंग साधना के प्राण हैं। इनमें से एक का भी अभाव हो जाने पर साधना अधूरी है, विकृत है, एकांगी है, एकान्त है। जीवन में एकान्त कभी कल्याणकर नहीं हो सकता। क्योंकि वीतराग-देव संक्षुण्ण पथ में एकान्त मिथ्या है, अहित है, अशुभंकर है। मनुष्य द्विपद प्राणी है, अतः वह अपनी यात्रा दोनों पदों से ही भली-भाँति कर सकता है। एक पद का मनुष्य लंगड़ा होता है। ठीक, साधना भी अपने दो पदों से ही सम्यक् प्रकार से गति कर सकती है। उत्सर्ग और अपवाद—साधना के दो चरण हैं। इनमें से एकतर चरण का भी अभाव, यह सूचित करेगा कि साधना पूरी नहीं, अधूरी है। साधक के जीवन-विकास के लिए उत्सर्ग और अपवाद आवश्यक ही नहीं, अपितु अपरिहार्य भी है। साधक की साधना के महापथ पर जीवन-रथ को गतिशील एवं विकासोन्मुख रखने के लिए—उत्सर्ग और अपवाद-रूप दोनों चक्र सशक्त तथा सक्रिय रहने चाहिएँ—तभी साधक अपनी साधना द्वारा अपने अभीष्ट साध्य की सिद्धि कर सकता है।

२—दोसा जेण निरुंभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व॥ —निशीथ भाष्य गा० ५२५०

३—उत्तराध्ययन, २३ वाँ अध्ययन, केशीगौतम संवाद।

उत्सर्ग और अपवाद की परिभाषा

उत्सर्ग और अपवाद की चर्चा बहुत गंभीर एवं विस्तृत है। अतः सर्वप्रथम लंबी चर्चा में न जाकर हम प्राचीन आचार्यों की धारणा के अनुसार संक्षेप में उत्सर्ग और अपवाद की परिभाषा पर विचार कर लेना चाहते हैं।

आचार्य संघदास, 'उत्' उपसर्ग का अर्थ 'उद्यत' करते हैं और 'सर्ग' का 'विहार'। अस्तु जो उद्यत विहार चर्या है, वह उत्सर्ग हैं। उत्सर्ग का प्रतिपक्ष अपवाद है। क्योंकि अपवाद, दुर्भिक्षादि में उत्सर्ग से प्रच्युत हुए साधक को ज्ञानादि-अवलम्बनपूर्वक धारण करता है। अर्थात् उत्सर्ग में रहते हुए साधक यदि ज्ञानादि गुणों का संरक्षण नहीं कर पाता है, तो अपवाद सेवन के द्वारा उनका संरक्षण कर सकता है।[४]

आचार्य हरिभद्र का कथन है कि "द्रव्य क्षेत्र, काल आदि की अनुकूलता से युक्त समर्थ साधक के द्वारा किया जाने वाला कल्पनीय (शुद्ध) अन्नपानगवेषणादि-रूप उचित अनुष्ठान, उत्सर्ग है। और द्रव्यादि की अनुकूलता से रहित का यतनापूर्वक तथाविध अकल्प्य-सेवनरूप उचित अनुष्ठान, अपवाद है।"[५]

आचार्य मुनिचन्द्र सूरि, सामान्य रूप से प्रतिपादित विधि को उत्सर्ग कहते हैं और विशेष रूप से प्रतिपादित विधि को अपवाद। अपने उक्त कथन का आगे चल कर वे और भी स्पष्टीकरण करते हैं कि समर्थ साधक के द्वारा संयमरक्षा के लिए जो अनुष्ठान किया जाता है, वह उत्सर्ग है। और असमर्थ साधक के द्वारा संयम की रक्षा के लिए ही जो बाहर में उत्सर्ग से विपरीत-सा अनुष्ठान किया जाता है, वह अपवाद है। दोनों ही पक्षों का विपर्यासरूप से अनुष्ठान करना, न उत्सर्ग है और न अपवाद, अपितु संसाराभिनन्दी प्राणियों की दुश्चेष्टा मात्र है।[६]

---

४ उज्जयस्सग्गुस्सग्गो, अववाओ तस्स चेव पडिवक्खो।
उस्सग्गा विनिवतियं, धरेइ सालंबमववाओ ॥३१९॥

—बृहत्कल्पभाष्य पीठिका

उद्यतः सर्गः—विहार उत्सर्गः। तस्य च उत्सर्गस्य प्रतिपक्षोऽपवादः। कथम्? इति चेद अतआह—उत्सर्गाद् अध्वाऽवमौदर्यादिषु 'विनिपतितं' प्रच्युतं ज्ञानादिसालम्बमपवादो धारयति ॥३१९॥

—आचार्य मलयगिरि

५ दव्वादिएहिं जुत्तस्सुस्सग्गो जदुचियं अणुट्ठाणं।
रहियस्स तमववाओ, उचियं चियरस्स न उ तस्स ॥

—उपदेश पद, गा० ७८४

६ सामान्योक्तो विधिरुत्सर्गः। विशेषोक्तस्त्वपवादः। द्रव्यादियुक्तस्य यत्तदौचित्येन अनुष्ठानं स उत्सर्गः, तद्रहितस्य पुनस्तदौचित्येनैव च यदनुष्ठानं सोऽपवादः। यच्चैतयोः पक्षयोर्विपर्यासेन अनुष्ठानं प्रवर्तते, न स उत्सर्गोऽपवादो वा, किन्तु संसाराभिनन्दिसत्त्वचेष्टितमिति।

—उपदेशपद-सुखसम्बोधिनी, गा० ७८१-७८४

आचार्य मल्लिषेण उत्सर्ग और अपवाद के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण स्पष्टीकरण करते हैं—"सामान्य रूप से संयम की रक्षा के लिए नवकोटिविशुद्ध[७] आहार ग्रहण करना, उत्सर्ग है। परन्तु यदि कोई मुनि तथाविध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव-सम्बन्धी आपत्तियों से ग्रस्त हो जाता है, और उस समय गत्यन्तर न होने से उचित यतना के साथ अनेषणीय आदि आहार ग्रहण करता है, यह अपवाद है। किन्तु अपवाद भी उत्सर्ग के समान संयम की रक्षा के लिए ही होता है।"[८]

एक अन्य आचार्य कहते हैं—"जीवन में नियमोपनियमों की जो सर्वसामान्य विधि है, वह उत्सर्ग है। और जो विशेष विधि है, वह अपवाद है।"[९]

कि बहुना, सभी आचार्यों का अभिप्राय एक ही है कि सामान्य उत्सर्ग है, और विशेष अपवाद है। लौकिक उदाहरण के रूप में समझिए कि प्रतिदिन भोजन करना, यह जीवन की सामान्य पद्धति है। भोजन के बिना जीवन टिक नहीं सकता है, जीवन की रक्षा के लिए उत्सर्गतः भोजन आवश्यक है। परन्तु अजीर्ण आदि की स्थिति में भोजन का त्याग करना ही श्रेयस्कर है। किन्हीं विशेष रोगादि की स्थितियों में भोजन का त्याग भी जीवन की रक्षा के लिए आवश्यक हो जाता है। अर्थात् एक प्रकार से भोजन का परित्याग ही जीवन हो जाता है। यह भोजन सम्बन्धी अपवाद है। इसी प्रकार अमुक पद्धति का भोजन सामान्यतः ठीक रहता है, यह भोजन का उत्सर्ग है। परन्तु उसी पद्धति का भोजन कभी किसी विशेष स्थिति में ठीक नहीं भी रहता है, यह भोजन का अपवाद है।

साधना के क्षेत्र में भी उत्सर्ग और अपवाद का यही क्रम है। उत्सर्गतः प्रतिदिन की साधना में जो नियम संयम की रक्षा के लिए होते हैं, वे विशेषतः संकट कालीन अपवाद स्थिति में संयम की रक्षा के लिए नहीं भी हो सकते हैं। अतः उस स्थिति में गृहीत नियमों में परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है, और वह परिवर्तन भले ही बाहर से संयम के विपरीत ही प्रतिभासित होता हो, किन्तु अंदर में संयम की सुरक्षा के लिए ही होता है।

---

७ आहार के लिए स्वयं हिंसा न करना, न करवाना, न हिंसा करने वालों का अनुमोदन करना।

आहार आदि स्वयं न पकाना, न पकवाना, न पकाने वालों का अनुमोदन करना।

आहार आदि स्वयं न खरीदना, न दूसरों से खरीदवाना, न खरीदने वालों का अनुमोदन करना। —स्थानाङ्ग सूत्र ९,३,६८१

८ यथा जैनानां संयमपरिपालनार्थं नवकोटिविशुद्धाहारग्रहणमुत्सर्गः। तथाविध द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावापत्सु च निपतितस्य गत्यन्तराभावे पंचकादियतनया अनेषणीयादिग्रहणमपवादः। सोऽपि च संयमपरिपालनार्थमेव। —स्याद्वाद मञ्जरी, कारिका ११

९ सामान्योक्तो विधिरुत्सर्गः, विशेषोक्तो विधिरपवादः। —दर्शन शुद्धि

एकान्त नहीं, अनेकान्त

कुछेक विचारक जीवन में उत्सर्ग को ही पकड़ कर चलना चाहते हैं, वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति उत्सर्ग की एकान्तसाधना पर ही खर्च कर देने पर तुले हुए हैं, फलतः जीवन में अपवाद का सर्वथा अपलाप करते रहते हैं। उनकी दृष्टि में (एकांगी दृष्टि में) अपवाद धर्म नहीं, अपितु एक महत्तर पाप है। इस प्रकार के विचारक साधना के क्षेत्र में उस कानी हथिनी के समान हैं, जो चलते समय मार्ग के एक ओर ही देख पाती है। दूसरी ओर कुछ साधक वे हैं, जो उत्सर्ग को भूलकर केवल अपवाद को पकड़ कर ही चलना श्रेय समझते हैं। जीवन-पथ में वे कदम कदम पर अपवाद का सहारा लेकर ही चलना चाहते हैं। जैसे शिशु, बिना किसी सहारे के चल ही नहीं सकता। ये दोनों विचार एकांगी होने से उपादेय कोटि में नहीं आ सकते। जैन धर्म की साधना एकान्त की नहीं, अपितु अनेकान्त की सुन्दर और स्वस्थ साधना है।

जैन संस्कृति के महान् उन्नायक आचार्य हरिभद्र ने आचार्य संघदास गणी की भाषा में एकान्त पक्ष को लेकर चलने वाले साधकों को संबोधित करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है "[१०] भगवान् तीर्थंकर देवों ने न किसी बात के लिए एकान्त विधान किया है और न किसी बात के लिए एकान्त निषेध ही किया है। भगवान् तीर्थंकर की एक ही आज्ञा है, एक ही आदेश है, कि जो कुछ भी कार्य तुम कर रहे हो, उसमें सत्यभूत होकर रहो। उसे वफादारी के साथ करते रहो।"

आचार्य ने जीवन का महान् रहस्य खोल कर रख दिया है। साधक का जीवन न एकान्त निषेध पर चल सकता है, और न एकान्त विधान पर ही। यथावसर कभी कुछ लेकर और कभी कुछ छोड़कर ही वह अपना विकास कर सकता है। एकान्त का परित्याग करके ही वह अपनी साधना को निर्दोष बना सकता है।

साधक का जीवन एक प्रवहण-शील तत्त्व है। उसे बाँधकर रखना भूल होगी। नदी के सतत प्रवहण-शील वेग को किसी क्षुद्र गर्त में बाँधकर रख छोड़ने का अर्थ होगा, उसमें दुर्गन्ध पैदा करना तथा उसकी सहज स्वच्छता, एवं पावनता को नष्ट कर डालना। जीवन-वेग को एकान्त उत्सर्ग में बन्द करना, यह भी भूल है और उसे एकान्त अपवाद में कैद करना, यह भी चूक है। जीवन की गति को किसी भी एकान्त पक्ष में बाँधकर रखना, हितकर नहीं। जीवन को बाँधकर रखने में क्या हानि है? बाँधकर रखने में, संयत करके रखने में तो कोई हानि नहीं है। परन्तु एकान्त विधान और एकान्त निषेध में बाँध रखने में जो हानि है, वह एक भयंकर हानि है। यह एक प्रकार से साधना का पक्षाघात है। जिस प्रकार पक्षाघात में जीवन सक्रिय नहीं रहता, उसमें गति नहीं रहती, उसी प्रकार विधि-निषेध के पक्षपातपूर्ण एकान्त आग्रह से भी साधना की सक्रियता नष्ट हो जाती है, उसमें यथोचित गति एवं प्रगति का अभाव हो जाता है।

१०—न वि किंचि अणुण्णातं, पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं।
तित्थगराणं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥७७१॥ —उपदेश पद

विधि-निषेध अपने आप में एकान्त नहीं हैं। यथापरिस्थिति विधि निषेध हो सकता है और निषेध विधि। जीवन में इस ओर नियत-जैसा कुछ नहीं है। आचार्य उमास्वाति प्रशमरति प्रकरण में स्पष्टतः लिखते हैं कि—

"भोजन, शय्या, वस्त्र, पात्र तथा औषध आदि कोई भी वस्तु शुद्ध-कल्प्य-ग्राह्य होने पर भी अकल्प्य-अशुद्ध-अग्राह्य हो जाती है, और अकल्प्य होने पर भी कल्प्य हो जाती है।"[११]

"देश, काल, क्षेत्र, पुरुष, अवस्था, उपघात और शुद्ध भावों की समीक्षा के द्वारा ही वस्तु कल्प्य-ग्राह्य होती है। कोई भी वस्तु सर्वथा एकान्त रूप से कल्प्य नहीं होती।"[१२]

वस्तु अपने-आप में न अच्छी है, न बुरी है। व्यक्ति-भेद से वह अच्छी या बुरी हो जाती है। आकाश में चन्द्रमा के उदय होने पर चक्रवाक-दम्पती को शोक होता है, चकोर को हर्ष। इस में चन्द्रमा का क्या है? वह चक्रवाक और चकोर के लिए अपनी स्थिति में कोई भिन्न-भिन्न परिवर्तन नहीं करता है। चक्रवाक और चकोर की अपनी मनः स्थिति भिन्न है, अतः उसके अनुसार चन्द्र अच्छा या बुरा प्रतिभासित होता है। इसी प्रकार साधक भी विभिन्न स्थिति में रहते हैं, उनका स्तर भी देश, काल आदि की विभिन्नता में विभिन्न स्तरों पर ऊँचा-नीचा होता रहता है। अतएव एक ही वस्तु एक साधक के लिए निषिद्ध अग्राह्य होती है, तो दूसरे के लिए उसकी अपनी स्थिति में ग्राह्य भी हो सकती है। परिस्थिति और तदनुसार होने वाली भावना ही मुख्य है। *यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी*। जिसकी जैसी भावना होती है, उसको वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है। लोक-भाषा में भी किंवदन्ती है कि *जाकी रही भावना जैसी, प्रभुमूरत देखी तिन तैसी*। अर्थात् सत्य एक ही है, वह विभिन्न देश काल में विभिन्न मनोभावों के अनुसार विभिन्न रूपों में परिलक्षित होता रहता है।

निशीथ सूत्र के भाष्यकार इस सम्बन्ध में बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात कहते हैं। वे समस्त उत्सर्गों और अपवादों, विधि और निषेधों, की शास्त्रीय सीमाओं की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि :—

"समर्थ साधक के लिए उत्सर्ग स्थिति में जो द्रव्य निषिद्ध किए गए हैं, वे सब असमर्थ साधक के लिए अपवाद स्थिति में कारण विशेष को ध्यान में रखते हुए ग्राह्य हो जाते हैं।"[१३]

११—किञ्चिच्छुद्धं कल्प्यमकल्प्यं स्यात् स्यादकल्प्यमपि कल्प्यम् ;
पिण्डः शय्या वस्त्रं, पात्रं वा भेषजाद्यं वा ॥१४५॥

१२—देशं कालं पुरुषमवस्थामुपघातशुद्धपरिणामान् ;
प्रसमीक्ष्य भवति कल्प्यं, नैकान्तात्कल्पते कल्प्यम् ॥१४६॥

—प्रशमरति

१३—उस्सग्गेण णिसिद्धाणि, जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।
कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५२४५॥

—निशीथ भाष्य

आचार्य जिनदास ने निशीथ चूर्णि में उपर्युक्त भाष्य पर विवरण करते हुए स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि—

जो उत्सर्ग में प्रतिषिद्ध हैं, वे सब-के-सब कारण उत्पन्न होने पर कल्पनीय-ग्राह्य हो जाते हैं। ऐसा करने में किसी प्रकार का भी दोष नहीं है।[१४]

उत्सर्ग और अपवाद का यह विचार ऐसा नहीं कि विचार जगत् के किसी एक कोने में ही पड़ा रहा हो, इधर-उधर न फैला हो। जैन साहित्य में सुदूर अतीत से लेकर बहुत आगे तक उत्सर्ग और अपवाद पर चर्चा होती रही, और वह मतभेद की दिशा में न जाकर पूर्व-निर्धारित एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ती रही। आचार्य जिनेश्वर अपने युग के एक प्रमुख क्रिया-काण्डी आचार्य हुए हैं। परन्तु उन्होंने ने भी शास्त्रीय विधि निषेधों के सम्बन्ध में एकान्त का आग्रह नहीं रखा। आचार्य हरिभद्र के अष्टक प्रकरण पर टीका करते हुए वे चरक संहिता का एक प्राचीन श्लोक उद्धृत करते हैं कि—

"देश, काल और रोगादि के कारण मानव-जीवन में कभी-कभी ऐसी अवस्था भी आ जाती है कि जिस में अकार्य कार्य बन जाता है और कार्य अकार्य हो जाता है। अर्थात् जो विधान है वह निषेध कोटि में चला जाता है, और जो निषेध है वह विधान कोटि में आ पहुँचता है।"[१५]

उत्सर्ग और अपवाद की एकार्थ-साधनता

प्रस्तुत चर्चा में यह बात विशेषरूप से ध्यान में रखने जैसी है कि उत्सर्ग और अपवाद दोनों एकार्थ-साधक होते हैं, अर्थात् दोनों का लक्ष्य एक होता है, दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं, साधक होते हैं, बाधक और घातक नहीं। दोनों के सुमेल से ही, एकार्थ-साधकत्व से ही साधक का साधनापथ प्रशस्त हो सकता है।[१६] उत्सर्ग और अपवाद यदि परस्पर निरपेक्ष हों, अन्यार्थक हों, एक ही प्रयोजन को सिद्ध न करते हों, तो वे शास्त्र-भाषा के अनुसार उत्सर्ग और अपवाद ही नहीं हो सकते। शास्त्रकार ने दोनों को मार्ग कहा है। और मार्ग वे ही

१४—जाणि उस्सग्गे पडिसिद्धाणि, उप्पण्णे कारणे सव्वाणि वि ताणि कप्पंति। ण दोसो ....॥५.२४५॥ —निशीथ चूर्णि,

१५—उत्पद्यते ही साऽवस्था, देशकालामयान् प्रति। यस्यामकार्यं कार्यं स्यात्, कर्म कार्यं च वर्जयेत् ॥ —अष्टकप्रकरण, २७—५, टीका

१६—नोत्सृष्टमन्यार्थमपोद्यते च। —अन्ययोगव्यवच्छेदिका, ११ वीं कारिका

यमर्थमेवाश्रित्य शास्त्रेषूत्सर्गः प्रवर्तते, तमेवार्थमाश्रित्यापवादोऽपि प्रवर्तते, तयो निम्नोन्नतादिव्यवहारवत् परस्परसापेक्षत्वेन एकार्थसाधनविषयत्वात्। —स्याद्वादमञ्जरी, का. ११

होते हैं, जो एक ही निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर जाते हों, भले ही घूम-फिर कर जाएँ। जो विभिन्न लक्ष्यों की ओर जाते हों, वे एक लक्ष्य पर पहुँचने की भावना रखने वाले यात्रियों के लिए मार्ग न होकर कुमार्ग ही होते हैं। साधना के क्षेत्र में उत्सर्ग भी मार्ग है, और अपवाद भी मार्ग है, दोनों ही साधक को मुक्ति की ओर ले जाते हैं, दोनों ही संयम की रक्षा के लिए होते हैं।

एक ही रोग में एक व्यक्ति के लिए वैद्य किसी एक खाद्य वस्तु को अपथ्य कह कर निषेध करता है, तो दूसरे व्यक्ति के लिए देश, काल और प्रकृति आदि की विशेष स्थिति के कारण उसी निषिद्ध वस्तु का विधान भी करता है। परन्तु इस विधि और निषेध का लक्ष्य एक ही है--रोग का उपशमन, रोग का उन्मूलन। इस सम्बन्ध में शास्त्रीय उदाहरण के लिए आयुर्वेदोक्त विधान है कि "सामान्यतः ज्वर रोग में लंघन (भोजन का परित्याग) हितावह एवं स्वास्थ्य के अनुकूल रहता है, परन्तु वात, श्रम, क्रोध, शोक और कामादि से उत्पन्न ज्वर में लंघन से हानि ही होती है।"[१७] इस प्रकार एक स्थान पर भोजन का त्याग अमृत है, तो दूसरे स्थान पर भोजन का अत्याग अमृत है। दोनों का लक्ष्य एक ही है, भिन्न नहीं।

उत्सर्ग और अपवाद के सम्बन्ध में भी यही बात है। दोनों का लक्ष्य एक ही है--जीवन की संशुद्धि, आध्यात्मिक पवित्रता, संयम की रक्षा, ज्ञानादि सद्गुणों की वृद्धि। उत्सर्ग अपवाद का पोषक होता है, और अपवाद उत्सर्ग का। उत्सर्ग मार्ग पर चलना, यह जीवन की सामान्य पद्धति है, जैसे कि सीधे राजमार्ग पर चलने वाला यात्री कभी प्रतिरोध-विशेष के कारण राजमार्ग का परित्याग कर समीप की पगडंडी भी पकड़ लेता है, परन्तु, कुछ दूर चलने के बाद अनुकूलता होते ही पुनः उसी राज मार्ग पर लौट आता है। यही बात उत्सर्ग से अपवाद और अपवाद से उत्सर्ग के सम्बन्ध में लागू पड़ती है। दोनों का लक्ष्य गति है, अगति नहीं। फलतः दोनों ही मार्ग हैं, अमार्ग या कुमार्ग नहीं। दोनों के यथोक्त सुमेल से ही साधक की साधना शुद्ध एवं परिपुष्ट होती है।

उत्सर्ग और अपवाद कब और कब तक ?

प्रश्न किया जा सकता है कि साधक कब उत्सर्ग मार्ग से गमन करे और कब अपवाद मार्ग से? प्रश्न वस्तुतः बड़े ही महत्त्व का है। उक्त प्रश्न पर पहले भी यथाप्रसंग कुछ-न-कुछ लिखा गया ही है, किन्तु वह संक्षेप-भाषा में है। संभव है, साधारण पाठक उस पर से कोई स्पष्ट धारणा न बना सके। अतः हम यहाँ कुछ विस्तृत चर्चा कर लेना चाहते हैं।

उत्सर्ग साधना-पथ की सामान्य विधि है, अतः उस पर साधक को सतत चलना है। उत्सर्ग छोड़ा जा सकता है, किन्तु वह यों ही अकारण नहीं, बिना किसी विशेष परिस्थिति के नहीं। और वह भी सदा के लिए नहीं। जो साधक अकारण ही उत्सर्ग मार्ग का परित्याग कर देता है, अथवा किसी अपुष्ट (नगण्य) कारण की आड में उसे छोड़ देता है, वह साधक ईमानदार साधक नहीं है। वह भगवदाज्ञा का आराधक नहीं, अपितु विराधक है। जो व्यक्ति अकारण ही

१७—कालाविरोधिनिर्दिष्टं, ज्वरादौ लङ्घनं हितम्।
ऋतेऽनिल-श्रम-क्रोध-शोक-कामकृतज्वरात्॥

—स्याद्वादमञ्जरी (उद्धृत) का० ११

औषधि का सेवन करता है, अथवा रोग की समाप्ति हो जाने पर भी रोगी होने का नाटक खेलता रहता है, वह मक्कार है, कर्तव्य-भ्रष्ट है। इस प्रकार के अकर्मण्य व्यक्ति अपने आप भी विनष्ट होते हैं और समाज को भी कलंकित करते हैं। यही दशा उन साधकों की है, जो वात-वात पर उत्सर्ग मार्ग का परित्याग करते हैं, अकारण ही अपवाद का सेवन करते हैं और एक वार कारणवश अपवाद में आने के पश्चात् कारण की समाप्ति हो जाने पर भी वहीं डटे रहते हैं। इस प्रकार के साधक स्वयं तो पथभ्रष्ट होते ही हैं, किन्तु समाज में भी एक गलत आदर्श उपस्थित करते हैं। उक्त साधकों का कोई मार्ग नहीं होता, न उत्सर्ग और न अपवाद। अपनी जघन्य वासना या दुर्वलता की पूर्ति के फेर में वे शुद्ध अपवाद मार्ग को वदनाम करते हैं।

अपवाद मार्ग भी एक विशेष मार्ग है। वह भी साधक को मोक्ष की ओर ही ले जाता है, संसार की ओर नहीं। जिस प्रकार उत्सर्ग संयम मार्ग है, उसी प्रकार अपवाद भी संयम मार्ग है। किन्तु वह अपवाद वस्तुतः अपवाद होना चाहिए। अपवाद के पवित्र वेष में कहीं भोगाकांक्षा चकमा न दे जाय, इसके लिए साधक को सतत सजग एवं सचेष्ट रहने की आवश्यकता है। साधक के सम्मुख वस्तुतः कोई विकट परिस्थिति हो, दूसरा कोई सरल मार्ग सूझ ही न पड़ता हो, फलस्वरूप अपवाद अपरिहार्य स्थिति में उपस्थित हो गया हो, तभी अपवाद का सेवन धर्म होता है। और ज्योंही समागत तूफानी वातावरण साफ हो जाय, स्थिति की विकटता न रहे, त्योंही अपवाद से उत्सर्ग मार्ग पर पुनः आरूढ हो जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में क्षणभर का विलम्ब भी घातक हो सकता है।

और एक वात यह भी है कि जितना आवश्यक हो, उतना ही अपवाद का सेवन करना चाहिए। ऐसा न हो कि चलो, जव यह कर लिया, तो अब इसमें भी क्या है ? यह भी कर लें। जीवन को निरन्तर एक अपवाद से दूसरे अपवाद पर शिथिल भाव से लुढकाते जाना, अपवाद नहीं है। जिन लोगों को मर्यादा का भान नहीं है, अपवाद की मात्रा एवं सीमा का परिज्ञान नहीं है, उनका अपवाद के द्वारा उत्थान नहीं, अपितु शतमुख पतन होता है। "*विवेक-भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।*"

उत्सर्ग और अपवाद पर एक वहुत ही सुन्दर पौराणिक गाथा है। उस पर से सहज ही समझा जा सकता है, कि उत्सर्ग और अपवाद की अपनी क्या सीमाएँ हैं ? और उनका सूक्ष्म विश्लेषण किस प्रकार ईमानदारी से करना चाहिए ?

एक वार द्वादश वर्षीय भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। लोग भूखों मरने लगे, सर्वत्र हाहाकार मच गया। एक विद्वान् ऋषि भी भूख से संत्रस्त इधर-उधर अन्न के लिए भटक रहे थे। उन्होंने देखा कि राजा के कुछ हस्तिपक (पीलवान) वैठे हैं, बीच में अन्न का ढेर है, सव उसी में से एक साथ ले लेकर खा रहे हैं। पास ही जल-पात्र रखा है, प्यास लगने पर वीच-वीच में सव उसी में मुँह लगा कर जल पी लेते हैं।

ऋषि ने पीलवानों से अन्न की याचना की। पीलवानों ने कहा—"महाराज, क्या दें ? अन्न तो जूठा है !"

ऋषि ने कहा—"कोई हर्ज नहीं। जूठा है तो क्या है, आखिर पेट तो भरना ही है। आपत्ति काल में कैसी मर्यादा ? "आपत्ति काले मर्यादा नास्ति।"

ऋषि ने जूठा अन्न ले लिया, एवं एक ओर वहीं बैठ कर खा भी लिया। जब चलने लगे, तो पीलवानों ने कहा—"महाराज, जल भी पी जाइए"। इस पर ऋषि ने कहा—"जल जूठा है, मैं नहीं पी सकता"।

इतना सुनना था कि सब-के-सब पीलवान् ठहाका मारकर हँस पड़े। कहने लगे—"महाराज ! अन्न पेट में पहुंचते ही, मालूम होता है, बुद्धि लौट आई है। भला, आपने जो अन्न खाया है, क्या वह जूठा नहीं था ? अब पानी पीने में जूठे—सुच्चे का विचार किस आधार पर कर रहे हो ?"

ऋषि ने शान्तभाव से कहा—"बन्धुओ, तुम्हारा सोचना ठीक है। परन्तु मेरी एक मर्यादा है। अन्न अन्यत्र मिल नहीं रहा था, और इधर मैं भूख से इतना अधिक व्याकुल था कि प्राण कंठ में आ लगे थे, और अधिक सहन करने की क्षमता समाप्त हो चुकी थी। अतः मैंने जूठा अन्न ही अपवाद की स्थिति में स्वीकार कर लिया। अब रहा जल का प्रश्न ? वह तो मुझे मेरी मर्यादा के अनुसार अन्यत्र शुद्ध (सुच्चा) मिल सकता है। अतः मैं व्यर्थ ही जूठा जल क्यों पीऊँ ?"

उत्सर्ग और अपवाद कब और किस सीमा तक ?, इस प्रश्न का कुछ-कुछ समाधान ऊपर के कथानक से हो जाता है। संक्षेपमें-जब तक चला जा सकता है, तब तक उत्सर्ग मार्ग पर ही चलना चाहिए। और जबकि चलना सर्वथा दुस्तर हो जाय, दूसरा कोई भी इधर-उधर बचाव का मार्ग न रहे, तब अपवाद मार्ग पर उतर आना चाहिए। और ज्योंही स्थिति सुधर जाए, पुनः तत्क्षण उत्सर्ग मार्गपर लौट आना चाहिए।

उत्सर्ग और अपवाद के अधिकारी

उत्सर्ग मार्ग सामान्य मार्ग है, अतः उस पर हर किसी साधक को सतत चलते रहना है।[१८] गीतार्थ को भी चलना है, और अगीतार्थ को भी। बालक को भी चलना है, और तरुण तथा वृद्ध को भी। स्त्री को भी चलना है, और पुरुष को भी। यहाँ कौन चले और कौन नहीं, इस प्रश्न के लिए कुछ भी स्थान नहीं है। जब तक शक्ति रहे, उत्साह रहे, आपत्ति काल में भी किसी प्रकार की ग्लानि का भाव न आए, धर्म एवं संघ पर किसी प्रकार का उपद्रव न हो, अथवा ज्ञान दर्शन चारित्र की क्षति का कोई विशेष प्रसंग उपस्थित न हो, तब तक उत्सर्ग मार्ग पर ही चलना है, अपवाद मार्ग पर नहीं।

परन्तु अपवाद मार्ग की स्थिति उत्सर्ग से भिन्न है। अपवाद मार्ग पर कभी कदाचित्

१८—सखुड्डग-वियत्ताणं, वाहियाणं च जे गुणा।
अखंड-फुडिया कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा॥
—दश० ६, ६

ही चला जाता है। अपवाद की धारा तलवार की धारा से भी कहीं अधिक तीक्ष्ण है। इस पर हर कोई साधक, और वह भी हर किसी समय नहीं चल सकता। जो साधक गीतार्थ है, आचारांग आदि आचार संहिता का पूर्ण अध्ययन कर चुका है, निशीथ सूत्र आदि छेद सूत्रों के सूक्ष्मतम मर्म का भी ज्ञाता है, उत्सर्ग और अपवाद पदों का अध्ययन ही नहीं, अपितु स्पष्ट अनुभव रखता है, वही अपवाद के स्वीकार या परिहार के सम्बन्ध में ठीक-ठीक निर्णय दे सकता है।

जिस व्यक्ति को देश का ज्ञान नहीं है कि यह देश कैसा है, यहां की क्या दशा है, यहाँ क्या उचित हो सकता है और क्या अनुचित, वह गीतार्थ नहीं हो सकता।

काल का ज्ञान भी आवश्यक है। एक काल में एक बात संगत हो सकती है, तो दूसरे काल में वही असंगत भी हो सकती है। क्या ग्रीष्म और वर्षा काल में पहनने योग्य हलके-फुलके वस्त्र शीतकाल में भी पहने जा सकते हैं? क्या शीतकाल के योग्य मोटे ऊनी कंबल जेठ की तपती दुपहरी में भी परिधान किए जा सकते हैं? यह एक लौकिक उदाहरण है। साधक के लिए भी अपनी व्रत-साधना के लिए काल की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता का परिज्ञान अत्यावश्यक है।

व्यक्ति की स्थिति भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। दुर्बल और सबल व्यक्ति की तनुस्थिति और मनः स्थिति में अन्तर होता है। सबल व्यक्ति वहुत अधिक समय तक प्रतिकूल परिस्थिति से संघर्ष कर सकता है, जब कि दुर्बल व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। वह शीघ्र ही प्रतिकूलता के सम्मुख प्रतिरोध का साहस खो वैठता है। अतः साधना के क्षेत्र में व्यक्ति की स्थिति का ध्यान रखना भी आवश्यक है। देश और काल आदि की एकरूपता होने पर भी, विभिन्न व्यक्तियों के लिए रुग्णता या स्वस्थता आदि के कारण स्थिति अनुकूल या प्रतिकूल हो सकती है। यही बात व्यक्ति के लिए उपयुक्त द्रव्य की भी है। क्या मोटा ऊनी कंबल साधारणतया जेष्ठ मास में अनुपयुक्त होने पर भी, उसी समय में, ज्वर (पित्ती उछलने पर) की स्थिति में उपयुक्त नहीं हो जाता है? किंवहुना द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के कारण विभिन्न स्थितियों में विभिन्न परिवर्तन होते रहते हैं। उन सब स्थितियों का ज्ञान गीतार्थ के लिए आवश्यक है। [१९]जिस प्रकार चतुर व्यापारी आय और व्यय की भली भाँति समीक्षा कर के व्यापार करता है, और अल्प व्यय से अधिक लाभ उठाता है, उसी प्रकार गीतार्थ भी अल्प दोष-सेवन से यदि ज्ञानादि गुणों का अधिक लाभ होता हो, तो वह कार्य कर लेता है, और दूसरों को भी इसके लिए देशकालानुसार उचित निर्देशन कर सकता है।

---

१९ — सुंकादी-परिसुद्धे, सइ लाभे कुणइ वाणिओ चिट्ठं।
[१]एमेव य गीयत्थो, आयं दट्ठुं समायरइ ॥९५२॥

—वृहत्कल्पभाष्य

१ एवमेव च गीतार्थोऽपि ज्ञानादिकं 'आयं' लाभं दृष्ट्वा प्रलम्बाद्यकल्प्यप्रतिसेवां समाचरति, नान्यथा। —वृहत्कल्प भाष्य वृत्ति, गा० ९५२

गीतार्थ के लिए एक और महत्त्वपूर्ण बात है—यतना की। उत्सर्ग में तो यतना अपेक्षित है ही, किन्तु अपवाद में भी यतना की बहुत अधिक अपेक्षा है। अपवाद में जब कभी चालू परम्परा से भिन्न यदि किसी अकल्प्य विशेष के सेवन का प्रसंग आजाए, तो वह यों ही विवेकमूढ होकर अंधे हाथी के समान नहीं होना चाहिए। अपवाद में विवेक की आँखें खुली रहनी आवश्यक हैं। उत्सर्ग की अपेक्षा भी अपवादकाल में अधिक सजगता चाहिए। यदि यतना का भाव रहता है, तो अपवाद में स्खलना की आशङ्का नहीं रहती है। यतना के होते हुए उत्सृष्ठ वृत्ति कथमपि नहीं हो सकती। [२०]यतना अपने आप में वह अमृत है, जो दोष में भी गुण का आधान कर देता है। अकल्प्य सेवन में भी यदि यतना है, यतना का भाव है, तो इसका अर्थ है कि अकल्प्य-सेवन में भी संयम है। आखिर यतना और है क्या, संयम का ही तो दूसरा व्यवहारसिद्धरूप यतना है। अतः सच्चा गीतार्थ वह है, जो उत्सर्ग और अपवाद में सर्वत्र यतना का ध्यान रखता है। उसका दोष-वर्जन भी यतना के साथ होता है, और दोष-सेवन भी यतना के साथ। जीवन में सब ओर यतना का प्रकाश साधक को पथभ्रष्ट होने से बचाए रखता है।

आचार्य भद्रबाहु और संघदास गणी ने गीतार्थ के गुणों का निरूपण करते हुए कहा है :—"जो आय-व्यय, कारण-अकारण, आगाढ (ग्लान)-अनागाढ, वस्तु-अवस्तु, युक्त-अयुक्त, समर्थ-असमर्थ, यतना-अयतना का सम्यग् ज्ञान रखता है, और साथ ही कर्त्तव्य कर्म का फल=परिणाम भी जानता है, वह विधिवान्-गीतार्थ कहलाता है।"[२१]

अपवाद के सम्बन्ध में निर्णय देने का, स्वयं अपवाद सेवन करने और दूसरों से यथा-परिस्थिति अपवाद सेवन कराने का समस्त उत्तरदायित्व गीतार्थ पर रहता है। अगीतार्थ को स्वयं अपवाद के निर्णय का सहज अधिकार नहीं है। वह गीतार्थ के निरीक्षण तथा निर्देशन में ही यथावसर अपवाद मार्ग का अवलम्बन कर सकता है।

प्रस्तुत चर्चा में गीतार्थ को इतना अधिक महत्त्व क्यों दिया जाता है? इसका एक-मात्र समाधान यह है कि कर्त्तव्य की चारुता और अचारुता, अथवा सिद्धि और असिद्धि, अन्ततः कर्त्ता पर ही आधार रखती है। यदि कर्त्ता अज्ञ है, कार्य-विधि से अनभिज्ञ है, तो देश, काल और साधन की हीनता के कारण अन्ततः कार्य की हानि ही होगी, सिद्धि नहीं। और यदि कर्त्ता विज्ञ है, कार्य-विधि का मर्मज्ञ है, तो वह देश, काल और साधनों के औचित्य का भली भाँति ध्यान रखेगा, फलतः अपने अभिलषित कार्य में सफल ही होगा, असफल नहीं।[२२]

२०—जयणा उ धम्मजणणी, जयणा धम्मस्स पालिणी चेव।
तव्वुड्ढिकरी जयणा, एगंतसुहावहा जयणा ॥७६६॥
जयणाए वट्टमाणो, जीवो सम्मत्त-णाण-चरणाण।
सद्धा-बोहाऽऽसेवणभावेणाऽऽराहओ भणिओ ॥७७०॥ —उपदेशपद

२१—आयं कारण गाढं, वत्थुं जुत्तं ससत्ति जयणं च।
सव्वं च सपडिवक्खं, फलं च विधिवं वियाणाइ ॥९५१॥
—बृहत्कल्प निर्युक्ति, भाष्य,

२२—संपत्ती य विपत्ती, य होज्ज कज्जेसु कारगं पप्प।
अणुवायतो विवत्ती, संपत्ती कालुवाएहिं ॥९४९॥
—बृहत्कल्प भाष्य

अब एक प्रश्न और है कि आखिर गीतार्थ कहाँ तक साथ रह सकता है ? कल्पना कीजिए, साधक ऐसी स्थिति में उलझ गया है कि वहाँ उसके लिए गीतार्थ का कोई भी निर्देशन प्राप्त करना असंभव है। उक्त विकट स्थिति में वह क्या करे और क्या न करे ? क्या वह अपनी नवागत स्थिति के अनुकूल परम्परागत स्थिति में कुछ योग्य फेर-फार नहीं कर सकता ?

उत्तर है कि क्यों नहीं कर सकता। अन्ततोगत्वा साधक स्वयं ही अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार निर्णय कर सकता है कि वह कब उत्सर्ग पर चले और कब अपवाद पर ? तत्त्वतः अपनी मति ही मति है, वही युक्त एवं अयुक्त की वास्तविक निर्णायिका है। यह ठीक है कि गीतार्थ गुरु, मूल आगम, भाष्य, चूर्णि और अन्य आचार ग्रन्थ, काफी लम्बी दूर तक साधक का निर्देशन करते हैं। परन्तु अन्ततः साधक पर ही सब कुछ छोड़ना होता है, और वह छोड़ भी दिया जाता है। एक पिता अपने नन्हे शिशु को हाथ पकड़ कर चलाता है, चलाना सिखाता है। परन्तु कुछ समय बाद वह शिशु को उसकी अपनी शक्ति पर ही छोड़ देता है न ? धर्म, आत्मा की साक्षी पर ही आधार रखता है। अन्त में अपने अन्तर्तम का भाव ही काम आता है ! अस्तु, साधक जैसा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव हो वैसा करे, किन्तु सर्वत्र अपनी हार्दिक प्रामाणिकता और सत्याचरणता को अखण्ड रखे। जीवन में सत्य के प्रति उन्मुखता का रहना ही सब कुछ है। कर्तव्य और अकर्तव्य, बाहर में कुछ नहीं है। इनका मूल अन्दर की मनोभूमि में है। वहाँ यदि पवित्रता है, तो सब पवित्र है, अन्यथा सब कुछ अपवित्र है।

अपवाद दूषण नहीं, अपितु भूषण

यद्यपि, उत्सर्ग और अपवाद दोनों का लक्ष्य एक है, इस पर काफी प्रकाश डाला चुका है। फिर भी अपवाद के सम्बन्ध में सर्व-साधारण की ओर से यह प्रश्न प्रायः खड़ा ही रहता है कि क्या उत्सर्ग को छोड़ कर अपवाद में जाने वाले साधक के स्वीकृत व्रतों का भंग नहीं होता ? क्या इस दशा में साधक को पतित नहीं कहा जा सकता ? यह प्रश्न व्रतों के बाह्याकार और उसके बाह्य भंग पर से खड़ा होता है। प्रायः जनता की आँखें बाह्य के स्थूल दृश्य पर ही अटक कर रह जाती हैं, किन्तु साधक स्थूल ही नहीं, सूक्ष्म भी है, इतना सूक्ष्म कि जिसका आकार प्रकार स्थूल से कहीं बड़ा है, बहुत बड़ा है। साधक के उसी सूक्ष्म अन्तर् में उक्त प्रश्न का सही समाधान प्राप्त हो सकता है।

आचार्य संघदास गणी एक रूपक के द्वारा प्रस्तुत प्रश्न का बड़ा ही सुन्दर समाधान उपस्थित करते हैं—"एक यात्री किसी अभीष्ट लक्ष्य की ओर त्वरित गति से चला जा रहा है। वह यथाशक्ति शीघ्र गति से दौड़ता है, ताकि शीघ्र ही गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाए। परन्तु चलता हुआ थक जाता है, आगे मार्ग की और अधिक विषमताओं के कारण चल नहीं पाता है, अतः वह बीच में कहीं विश्राम करने लग जाता है। यदि वह यात्री अपने अहं के कारण उचित विश्राम न करे, क्लान्त होने पर भी हठात् चलता ही रहे, तो स्वस्थ नहीं रह सकता। कुछ दूर जाकर, वह इतना अधिक क्लान्त हो जाएगा कि अवश्य ही मूर्च्छा खाकर गिर पड़ेगा। संभव है, प्राणान्त भी हो जाए। ऐसी स्थिति में, जिस लक्ष्य के लिए तन-तोड़ दौड़ धूप की जा रही

थी, वह सदा के लिए अगम्य ही रह जाएगा। अस्तु, यात्री का विश्राम भी चलने के लिए ही होता है, वैठे रहने के लिए नहीं। वह विश्रान्ति लेकर, तरोताजा होकर पुनः दुगुने वेग से चलता है, वैठ जाने के फलस्वरूप होने वाले विलम्ब के समय को शीघ्र ही पूरा कर लेता है और लक्ष्य पर पहुँच जाता है। [२३]अतः व्यवहार की भाषा में भले ही विश्रान्तिकालीन स्थिति अगति हो, किन्तु निश्चय की भाषा में तो वह स्थिति भी गति ही है।

साधक सहज भाव से शास्त्रनिर्दिष्ट उत्सर्ग मार्ग पर चलता है, और *यावद् बुद्धि वलोदयं* उत्सर्ग मार्ग पर चलना भी चाहिए। परन्तु कारणवशात् यदि कभी उसे उत्सर्ग मार्ग से अपवाद मार्ग पर आना पड़े, तो यह उसका तात्कालिक विश्राम होगा। यह विश्राम इसलिए लिया जाता है कि साधक अपने स्वीकृत पथ पर द्विगुणित वेग के साथ सोल्लास आगे वढ़ सके और अभीष्ट लक्ष्य पर ठीक समय पर पहुंच सके।

फलितार्थ यह है कि अपवाद उत्सर्ग की रक्षा के लिए ही होता है, न कि ध्वंस के लिए। अपवाद काल में, यदि वाह्य दृष्टि से स्वीकृत व्रतों को यत्किंचित् क्षति पहुँचती भी है, तो वह मूलतः व्रतों की रक्षा के लिए ही होती है। जहरीले फोड़े से शरीर की रक्षा के लिए, आखिर शरीर के उस भाग का छेदन किया जाता ही है न? किन्तु वह शरीर-छेदन शरीर की रक्षा के लिए ही है, नाश के लिए नहीं।

जीवन और मरण में सव मिलाकर अन्ततः जीवन ही महत्त्वपूर्ण है। *'जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्'* का स्वर्ण सूत्र आखिर एक सीमा में कुछ अर्थ रखता है। कल्पना कीजिए—साधक के समक्ष ऐसी समस्या उपस्थित है कि वह अपने व्रत पर अड़ा रहता है, तो जीवन जाता है और यदि जीवन की रक्षा करना चाहता है, तो गत्यन्तराभाव से स्वीकृत व्रतों का भंग होता है। ऐसी स्थिति में साधक क्या करे और क्या न करे? क्या वह मर जाए? शास्त्र-कार इस सम्वन्ध में कहते हैं कि यदि अपने धर्म की रक्षा के लिए कोई महत्त्वपूर्ण स्थिति हो, साधक में उत्साह हो, तरंग हो, तो वह प्रसन्न भाव से मृत्यु का आलिंगन कर सकता है? परन्तु यदि ऐसी कोई महत्त्वपूर्ण स्थिति न हो, मृत्यु की ओर जाने में समाधिभाव का भंग होता हो, जीवन के वचाव में कहीं अधिक धर्माराधन संभवित हो, तो साधक के लिए जीते रहना ही श्रेयस्कर है, भले ही जीवन के लिए स्वीकृत व्रतों में थोड़ा-वहुत फेर-फार भी क्यों न करना पड़े। यह केवल मेरी अपनी मति-कल्पना नहीं है। जैन जगत् के महान् श्रुतधर आचार्य भद्रवाहु ओघनिर्युक्ति में कहते हैं कि "साधक को सर्वत्र सव प्रकार से अपने संयम की रक्षा करनी चाहिए। यदि कभी संयम का पालन करते हुए मरण होता, हो तो संयम-रक्षा को छोड़ कर अपने जीवन की रक्षा करनी चाहिए। प्राणान्त काल में अपवाद-सेवन द्वारा जीवन की रक्षा

२३—धावंतो उव्वाओ, मग्गन्नू किं न गच्छइ कमेणं।
किं वा मउई किरिया, न कीरए असहुओ तिक्खं ॥३२०॥

—वृहत्कल्पभाष्य पीठिका

करने वाला मुनि दोषों से रहित होता है, वह पुनः विशुद्धि प्राप्त कर सकता है। तत्त्वतः तो उसका व्रत-भंग होता ही नहीं है।[२४]

व्रत-भंग क्यों नहीं होता, प्रत्यक्ष में जब कि व्रत-भंग है ही? उक्त शंका का समाधान द्रोणाचार्य अपनी टीका में करते हैं कि – "अपवाद-सेवन करने वाले साधक के परिणाम विशुद्ध हैं। और विशुद्ध परिणाम मोक्ष का हेतु ही होता है, संसार का हेतु नहीं।"*

जैन धर्म के सम्बन्ध में कुछ लोगों की धारणा है कि वह जीवन से इकरार नहीं करता, अपितु इन्कार करता है। परन्तु यदि तटस्थ दृष्टि से गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए, तो मालूम पड़ेगा कि वस्तुतः जैन धर्म ऐसा नहीं है। वह जीवन से इन्कार नहीं करता, अपितु जीवन के मोह से इन्कार करता है। जीवन जीने में यदि कोई महत्त्वपूर्ण लाभ है, और वह स्वपर की हित-साधना में उपयोगी है, तो जीवन सर्वतोभावेन संरक्षणीय है। आचार्य भद्रबाहु, अपने उक्त सिद्धान्त के सम्बन्ध में, देखिए, कितना तर्कपूर्ण समाधान करते हैं—

"साधक का देह संयमहेतुक है, संयम के लिए है। यदि देह ही न रहा तो फिर संयम कैसे रहेगा? अतएव संयम की साधना के लिए देह का परिपालन इष्ट है।"[२५]

यह वाणी आज के किसी भौतिकवादी की नहीं है, अपितु सुदूर अतीत युग के उस महान् अध्यात्मवादी की है, जो आध्यात्मिकता के चरम शिखर पर पहुँचा हुआ साधक था। बात यह है कि अध्यात्मवाद कोई अंधा आदर्श नहीं है! वह आदर्श के साथ यथार्थ का भी उचित समन्वय करता है। उसके यहाँ एकान्त पक्षाग्रह-जैसी कोई बात नहीं है। मुख्य प्रश्न है—कारण और अकारण का। आचार्य जिनदास की भाषा में, साधक के लिए अकारण कुछ भी अकल्पनीय अनुज्ञात नहीं है, और सकारण कुछ भी अकल्पनीय निषिद्ध नहीं है।[२६]

यदि स्पष्ट शब्दों में निश्चयनय के माध्यम से कहा जाए तो, साधक, न जीवन के लिए है और न मरण के लिए है। वह तो अपने ज्ञान, दर्शन और चारित्र की सिद्धि के लिए है। अतः जिस जिस प्रकार ज्ञानादि की सिद्धि एवं वृद्धि होती हो, उसे उसी प्रकार करते रहना चाहिए, इसी में संयम है।[२७] यदि, जीवन से ज्ञानादि की सिद्धि होती हो, तो जीवन की रक्षा

२४—सव्वत्थ संजमं, संजमाओ अप्पाणमेव रक्खिज्जा।
मुच्चइ अइवायाओ, पुणो विसोही न याऽविरई ॥४६॥ —ओघनिर्युक्ति

*न याऽविरई, किं कारणं? तस्याशयशुद्धतया, विशुद्धपरिणामस्य च मोक्षहेतुत्वात्।
—ओघनिर्युक्तिटीका, गा० ४६।

२५—संजमहेउं देहो धारिज्जइ सो कओ उ तदभावे।
संजम-फाइनिमित्तं, देहपरिपालणा इट्ठा ॥४७॥
—ओघनिर्युक्ति

२६—णिक्कारणे अकप्पणिज्जं न किं चि अणुण्णायं, अववायकारणे उप्पण्णे अकप्पणिज्जं ण किं चि पडिसिद्धं। निच्छयववहारतो एस तित्थकराणा।......कज्जंति अववादकारणं, तेण जति पडिसेवति तहा वि सच्चा भवति, सच्चो ति संजमो ॥५२४८॥ —निशीथचूर्णि

२७—कज्जं णाणादीयं उस्सग्गववायओ भवे सच्चं।
तं तह समायरंतो, तं सफलं होइ सव्वं पि ॥५२४९॥ —निशीथभाष्य

करते हुए वैसा करना चाहिए। और यदि मरण से ही ज्ञानादि अभीष्ट की सिद्धि होती हो, तो मरण भी साधक के लिए शिरसा श्लाघनीय है।

उत्सर्ग और अपवाद के सम्बन्ध में भी यही बात है। साधक, न केवल उत्सर्ग के लिए है और न केवल अपवाद के लिए है। वह दोनों के लिए है, मात्र शर्त है–साधक के ज्ञानादि गुणों की अभिवृद्धि होनी चाहिए। जीवन और मरण की कोई खास समस्या न भी हो, फिर भी यदि सन्मतितर्क आदि महान् दर्शन-प्रभावक ग्रन्थों का अध्ययन करना हो, चारित्र की रक्षा के लिए इधर-उधर सुदूर भू प्रदेश में क्षेत्र परिवर्तन करना हो, तब यदि गत्यन्तराभाव होने से अकल्पनीय आहारादि का सेवन कर लिया जाता है, तो वह शुद्ध ही माना जाता हैं, अशुद्ध नहीं। शुद्ध का अर्थ है, इस सम्बन्ध में साधक को कोई प्रायश्चित्त नहीं आता।[२८]

कोई भी देख सकता है, जैन धर्म आदर्शवादी होते हुए भी कितना यथार्थवादी धर्म है। उसके यहाँ बाह्य-विधि विधान हैं, और बहुत हैं, किन्तु वे सब किसी योग्य गृहपति के गृह की प्राचीर के समान हैं। साधक उनमें से अंदर और बाह्य यथेष्ट आ जा सकता है। वे कोई कारागार की अनुल्लंघनीय प्राचीर नहीं हैं कि साधक उनके अंदर बन्दी हो जाय, और कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो, इधर-उधर बाहर आ जा ही न सके।

जैन धर्म भावप्रधान धर्म है। उसका अनुष्ठान, सर्वथा अपरिवर्तनीय जड़ अनुष्ठान नहीं, किन्तु क्रियाशील परिणामी चैतन्य अनुष्ठान है। मूल में जैन परम्परा को बाह्य दृश्यमान विधि-विधानों का उतना आग्रह नहीं है, जितना कि अन्तरंग की शुद्ध भावनात्मक परिणति का आग्रह है। यही कारण है कि उसके दर्शनकक्ष में मोक्ष के हेतुओं की कोई बंधी बँधाई नियत रूपरेखा नहीं है, इयत्ता नहीं है। जो भी संसार के हेतु हैं, वे सब सत्यनिष्ठ साधक के लिए मोक्ष के हेतु हो जाते हैं। और जो मोक्ष के हेतु हैं, वे सब संसाराभिनन्दी के लिए संसार के हेतु हो जाते है।[२९] इसका

२८—दंसणपभावगाणं, सट्ठाणट्ठाए सेवती जं तु।
णाणे सुत्तत्थाणं, चरणेसण-इत्थिदोसा वा ॥४८६॥

दंसणपभावगाणि सत्थाणि सिद्धिविणिच्छय-सम्मतिमादि गेण्हंतो असंथरमाणो जं अकप्पियं पडिसेवति, जयणाए तत्थ सो सुद्धो अपायच्छित्ती भवतीत्यर्थः।

णाणेति णाणणिमित्तं सुत्तं अत्थं वा गेण्हमाणो, तत्थ वि अकप्पियं असंथरे पडिसेवंतो सुद्धो।

चरणे त्ति जत्थ खेत्ते एसणादोसा इत्थिदोसा वा ततो खेत्तातो चारित्रार्थिना निर्गन्तव्यं, ततो निग्गच्छमाणो जं अकप्पियं पडिसेवति जयणाते तत्थ सुद्धो ॥४८६। —निशीथ चूर्णि

२९—जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा।
—आचा० १, ४, २, १३०

य एवाश्रवाः कर्मबन्धस्थानानि, त एव परिश्रवाः कर्मनिर्ज्जरास्पदानि।
—आचार्य शीलाङ्क।

जे जत्तिया य हेऊ, भवस्स ते चेव तत्तिया मुक्खे।
गणणाईआ लोगा, दुण्ह वि पुण्णा भवे तुल्ला ॥५३॥ —ओघनिर्युक्ति

सर्व एव त्रैलोक्योदरविवरवर्तिनो भावा रागद्वेषमोहात्मनां पुंसां संसारहेतवो भवन्ति, त एव रागादिरहितानां श्रद्धामतामज्ञानपरिहारेण मोक्षहेतवो भवन्तीति।

—द्रोणाचार्य, ओघनिर्युक्तिटीका

अर्थ यह है कि त्रिभुवनोदरविवरवर्ती समस्त असंख्येय भाव अपने-आप में न मोक्ष के कारण हैं और न संसार के कारण। साधक की अपनी अन्त: स्थिति ही उन्हें अच्छे या बुरे का रूप देती है। साधक के अन्तर्तम में यदि शुद्ध भाव है, तो अंदर-बाहर सब शुद्ध है। और यदि अशुद्ध भाव हैं, तो सब अशुद्ध है। अत: कर्म-बन्ध और कर्म-निर्जरा का मूल्यांकन बाहर से नहीं, अपितु अंदर से किया जाना चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि बाहर कुछ नहीं है, जो कुछ है, अंदर ही है। मेरा कहने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि बाहर में सब कुछ कर करा कर भी अन्ततः अंदर में ही अन्तिम मुहर लगती है। सावधान! बाहर के भावाभाव में कहीं अंदर के भावाभाव को न भूल जाएँ!

हाँ, तो अपवाद में व्रतभंग नहीं होता, संयम नष्ट नहीं होता ; इसका एक मात्र कारण यह है कि अपवाद भी उत्सर्ग के समान ही अन्तर्तम की शुद्ध भावना पर आधारित है। बाहर में भले ही उत्सर्ग-जैसा उज्ज्वल रूप न हो, व्रत भंग का मालिन्य ही हो, किन्तु अंदर में यदि साधक निर्मल रहा है, सावधान रहा है, ज्ञानादि सद्गुणों की साधना के शुद्ध साध्य पर सुस्थित रहा है, तो वह शुद्ध ही है।

उत्सर्ग और अपवाद का तुल्यत्व

शिष्य प्रश्न करता है—"भंते! उत्सर्ग अधिक हैं, या कि अपवाद अधिक हैं?"

प्रस्तुत प्रश्न का बृहत्कल्प भाष्य में समाधान किया गया है कि "जितने उत्सर्ग हैं, उतने ही उनके अपवाद भी होते हैं। और जितने अपवाद होते हैं, उतने ही उनके उत्सर्ग भी होते हैं।"[३०]

उक्त कथन से स्पष्टतया सिद्ध हो जाता है कि साधना के उत्सर्ग और अपवाद दोनों ही अपरिहार्य अंग हैं। जिस प्रकार उन्नत से निम्न की और निम्न से उन्नत की प्रसिद्धि है, उसी प्रकार उत्सर्ग से अपवाद और अपवाद से उत्सर्ग प्रसिद्ध है, अर्थात् दोनों अन्योऽन्य प्रसिद्ध हैं।[३१] एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व ही सिद्ध नहीं हो सकता। अस्तु, ऐसा कोई उत्सर्ग नहीं, जिसका अपवाद न हो, और ऐसा कोई अपवाद भी नहीं, जिसका उत्सर्ग न हो। दोनों की कोई इयत्ता नहीं है, अर्थात् अपने आप पर आधारित कोई स्वतंत्र संख्या नहीं है। दोनों तुल्य हैं, एक दूसरे पर आधारित हैं।

उत्सर्ग और अपवाद का बलाबल

शिष्य पृच्छा करता है—"भंते! उत्सर्ग और अपवाद इन दोनों में कौन श्रेय है और कौन अश्रेय? तथा कौन सबल है और कौन निर्बल?"

३०—जावइया उस्सग्गा, तावइया चेव हुंति अववाया।
जावइया अववाया, उस्सग्गा तत्तिया चेव ॥३२२॥

३१—उन्नयमविक्ख निन्नस्स पसिद्धी उन्नयस्स निन्नाओ।
इय अन्नोन्नपसिद्धा, उस्सग्गऽववायओ तुल्ला ॥३२१॥
—बृहत्कल्प भाष्य-पीठिका

इसका समाधान, वृहत्कल्प भाष्य में, इस प्रकार दिया गया है—

"उत्सर्ग अपने स्थान पर श्रेय एवं सवल है। और अपवाद अपने स्थान पर श्रेय एवं सवल है। इसके विपरीत उत्सर्ग के स्थान पर अपवाद अश्रेय एवं निर्वल है, और अपवाद के स्थान पर उत्सर्ग अश्रेय एवं निर्वल है।[३२]

प्रत्येक जीवन क्षेत्र में स्व-स्थान का वड़ा महत्त्व है। स्वस्थान में जो गुरुत्व है, वह पर स्थान में कहाँ? मगर, जल में जितना शक्तिशाली है, क्या उतना स्थल भूमि में भी है? नहीं, मगर का श्रेय और वल दोनों ही स्वस्थान-जल में है। इसी प्रकार उत्सर्ग और अपवाद का श्रेय और वल भी अपेक्षाकृत है। उत्सर्ग के स्थान में उत्सर्ग और अपवाद के स्थान में अपवाद का प्रयोग ही जीवन के लिए हितकर है। यदि अज्ञानता अथवा दुराग्रह के कारण इनका विपरीत प्रयोग किया जाए, तो दोनों ही अहितकर हो जाते हैं।

उत्सर्ग और अपवाद का स्वस्थान और परस्थान

शिष्य जिज्ञासा प्रस्तुत करता है—"भंते! उत्सर्ग और अपवाद में साधक के लिए स्वस्थान कौन-सा है? और पर स्थान कौन-सा है?"
इस जिज्ञासा का सुन्दर समाधान वृहत्कल्प भाष्य में इस प्रकार दिया गया है—

"जो साधक स्वस्थ और समर्थ है उसके लिए उत्सर्ग स्वस्थान है, और अपवाद पर-स्थान है। किन्तु जो अस्वस्थ एवं असमर्थ है, उसके लिए अपवाद स्वस्थान है, और उत्सर्ग पर-स्थान है।"[३३]

देश, काल और परिस्थिति-वशात् उत्सर्ग और अपवाद के स्थानों में यथाक्रम स्व-परत्व होता रहता है। इस पर से स्पष्ट ही सिद्ध हो जाता है, कि साधक-जीवन में उत्सर्ग और अपवाद का समान भाव से यथा परिस्थिति आदान एवं अनादान करते रहना चाहिए।

परिणामी, अतिपरिणामी और अपरिणामी साधक

जैन धर्म की साधना न अति परिणामवाद को लेकर चलती है; और न अपरिणामवाद को लेकर ही चलती है। जो साधक परिणामी है, वही उत्सर्ग और अपवाद का मार्ग भली भाँति समझ सकता है, और देशकालानुसार उनका उचित उपयोग भी कर सकता है। किन्तु अति परिणामी और अपरिणामी साधक उत्सर्ग एवं अपवाद को समझने में असमर्थ रहते हैं, फलतः

३२—सट्ठाणे सट्ठाणे, सेया वलिणो य हुंति खलु एए।
सट्ठाण-परट्ठाणे, य हुंति वत्थूतो निप्फन्ना ॥३२३॥

—वृहत्कल्प भाष्य पीठिका

३३—संथरओ सट्ठाणं, उस्सग्गो असहुणो परट्ठाणं।
इय सट्ठाण परं वा, न होइ वत्थू-विणा किंचि ॥३२४॥

—वृहत्कल्प भाष्य पीठिका

समय पर उनका पूर्ण औचित्य के साथ उपयोग न होने के कारण साधना-भ्रष्ट हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में व्यवहार भाष्य और उसकी वृत्ति में एक बड़ा ही सुन्दर रूपक आया है—

एक आचार्य के तीन शिष्य थे। अपने आचार्यत्व का गुरुतर पद-भार किसको दिया जाय ?, अस्तु तीनों की परीक्षा के विचार से आचार्य ने एक-एक को पृथक्-पृथक् बुलाकर कहा—"मुझे आम्र लाकर दो।"

अतिपरिणामी, साथ में दूसरी और भी बहुत सी अकल्य वस्तु लाने की बात करता है।

अपरिणामी कहता है—"आम्र, साधु को कल्पता नहीं है। भला, मैं कैसे लाकर दूँ ?"

परिणामी कहता है—"भंते ! आम्र कितने ही प्रकार के होते हैं। क्या कारण है, और तदर्थ कौन-सा प्रकार अभीष्ट है, मुझे स्पष्ट प्रतिपत्ति चाहिए। और यह भी बताएँ कि कितने लाऊँ ? मात्रा का ज्ञान मेरे लिए आवश्यक है। कहीं ऐसा न हो कि मैं गलती कर जाऊं।"

आचार्य की परीक्षा में परिणामवादी उत्तीर्ण हो जाता है। क्योंकि वह उत्सर्ग और अपवाद की मर्यादा को भली भाँति जानता है। वह अपरिणामी के समान गुरु की अवहेलना भी नहीं करता, और अतिपरिणामी की तरह कारणवश एक अकल्प्य वस्तु माँगने पर अन्य अनेक अकल्प्य वस्तु लाने को भी नहीं कहता। परिणामवादी ही जैन साधकों का समुज्ज्वल प्रतिनिधि चित्र है। क्योंकि वह समय पर देश, काल आदि की परिस्थिति के अनुरूप अपनेआपको ढाल सकता है। उसमें जहाँ संयम का जोश रहता है, वहाँ विवेक का होश भी रहता है।

अपरिणामी, उत्सर्ग से ही चिपटा रहेगा। और अतिपरिणामी अपवाद का भी दुरुपयोग करता रहेगा। किस समय पर और कितना परिवर्तन करना, यह उसे भान ही नहीं रहेगा। अपरिणामी, सर्वथा अपरिवर्तित क्रिया-जड़ होकर रहेगा तो अतिपरिणामी, परिवर्तन के प्रवाह में बहता ही जाएगा, कहीं विराम ही न पा सकेगा। धर्म के रहस्य को, साधना के महत्व को परिणामी साधक ही सम्यक् प्रकार से जान सकता है, और तदनुरूप अपने जीवन को पवित्र एवं समुज्ज्वल बनाने का नित्य-निरंतर प्रयत्न कर सकता है।

अहिंसा का उत्सर्ग और अपवाद

भिक्षु का यह उत्सर्ग मार्ग है, कि वह मनसा, वाचा, कायेन किसी भी प्रकार के स्थूल एवं सूक्ष्म जीवों की हिंसा न करे। क्यों नहीं करे ? इस के समाधान में दशवैकालिक सूत्र में भगवान् ने कहा है—"जगती तल के समग्र जीव-जन्तु जीवित रहना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। क्योंकि सब को अपना जीवन प्रिय है। प्राणि वध घोर पाप है। इसलिए निर्ग्रन्थ भिक्षु, इस घोर पाप का परित्याग करते हैं।"[३४]

३४—सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं॥

—दश० अ० ६, गा० ११।

उपर्युक्त कथन, जैन साधना पथ में प्रथम अहिंसा महाव्रत का उत्सर्ग मार्ग है। परन्तु कुछ परिस्थितियों में इसका अपवाद भी होता है। वैसे तो अहिंसा के अपवादों की कोई इयत्ता नहीं है। तथापि वस्तु-स्थिति के यत्किंचित् परिबोध के लिए प्राचीन आगमों तथा टीकाग्रन्थों में से कुछ उद्धरण उपस्थित किए जारहे हैं।

भिक्षु के लिए हरित वनस्पति का परिभोग निषिद्ध है। यहाँ तक कि वह हरित वनस्पति का स्पर्श भी नहीं कर सकता। यह उत्सर्ग मार्ग है। परन्तु इसका अपवाद मार्ग भी है। आचारांग सूत्र में कहा गया है, कि "एक भिक्षु, जो कि अन्य मार्ग के न होने पर किसी पर्वतादि के विषम-पथ से जा रहा है। यदि कदाचित् वह स्खलित होने लगे, पड़ने लगे, तो अपने आप को गिरने से बचाने के लिए तरु को, गुच्छ को, गुल्म को, लता को, वल्ली को तथा तृण हरित आदि को पकड़ कर सँभलने का प्रयत्न करे।[३५]

भिक्षु का उत्सर्ग मार्ग तो यह है, कि वह किसी भी प्रकार की हिंसा न करे। परन्तु, हरित वनस्पति को पकड़कर चढ़ने या उतरने में हिंसा होती है, यह अपवाद है। यदि सूक्ष्मता से विचार किया जाए तो यह हिंसा भी हिंसा के लिए नहीं होती है, अपितु अहिंसा के लिए ही होती है। गिर जाने पर अंग-भंग हो सकता है, फिर आर्त रौद्र दुर्ध्यान का संकल्प विकल्प आ सकता है, दूसरे जीवों को भी गिरता हुआ हानि पहुँचा सकता है। अतः भविष्य की इस प्रकार स्व-पर हिंसा की लंबी शृंखला को ध्यान में रख कर यह अहिंसा का अपवाद है, जो मूल में अहिंसा के लिए ही है।

वर्षा बरसते समय भिक्षु अपने उपाश्रय से बाहर नहीं निकलता। क्योंकि जलीय जीवों की विराधना होती है, हिंसा होती है। पूर्ण अहिंसक भिक्षु के लिए सचित्त जल का स्पर्शमात्र भी निषिद्ध है। भिक्षु का यह मार्ग उत्सर्ग मार्ग है।

परन्तु साथ में इसका यह अपवाद भी है, कि चाहे वर्षा बरस रही हो, तो भी भिक्षु उच्चार (शौच) और प्रस्रवण (मूत्र) करने के लिए बाहर जा सकता है।[३६] मलमूत्र का बलात् निरोध करना, स्वास्थ्य और संयम दोनों ही दृष्टि से वर्जित है। मलमूत्र के निरोध में आकुलता रहती है, और जहाँ आकुलता है, वहाँ न स्वास्थ्य है, और न संयम।

वर्षा में बाहर-गमन के लिए केवल मल मूत्र का निरोध ही अपवादहेतु नहीं है, अपितु बाल, वृद्ध और ग्लानादि के लिए भिक्षार्थ जाना अत्यावश्यक हो, तब भी उचित यतना के साथ वर्षा में गमनागमन किया जा सकता है। योगशास्त्र की स्वोपज्ञ वृत्ति में आचार्य हेमचन्द्र ने

३५—से तत्थ पयलमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा, तणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय अवलंबिय उत्तरिज्जा……।

—आचारांग, २ श्रुत० ईर्याध्ययन, उद्देश २।

३६—इतरस्तु सति कारणे यदि गच्छेत्—आचारांग वृत्ति २, १, १, ३, २०
वच्चा-मुत्तं न धारए। दशवैकालिक अ० ५, गा० १९
उच्चार-प्रश्रवणादिपीडितानां कम्बलावृतदेहानां गच्छतामपि
न तथाविधा विराधना।

—योगशास्त्रस्वोपज्ञवृत्ति ३ प्रकाश, ८७ श्लोक।

इस सम्बन्ध में स्पष्ट उल्लेख किया है।[३७]

यही बात मार्ग में नदी-संतरण[३८] तथा दुर्भिक्ष आदि में प्रलम्ब-ग्रहण सम्बन्धी[३९] अपवादों के सम्बन्ध में भी है। ये सब अपवाद भी अहिंसा महाव्रत के हैं। जीवन, आखिर जीवन है, वह संयम की साधना में एक प्रमुख भाग रखता है। और जीवन सचमुच वही है, जो शान्त हो, समाधिमय हो, निराकुल हो। अस्तु, उत्सर्ग में रहते यदि जीवन में समाधिभाव रहता हो, तो वह ठीक है। यदि किसी विशेषकारणवशात् उत्सर्ग में समाधिभाव न रहता हो, अपवाद में ही रहता हो, तो अमुक सीमा तक वह भी ठीक है। अपने आप में उत्सर्ग और अपवाद मुख्य नहीं, समाधि मुख्य है। मार्ग कोई भी हो, अन्ततः समाधिरूप लक्ष्य की पूर्ति होनी चाहिए।

सत्य का उत्सर्ग और अपवाद

सत्य भाषण, यह भिक्षु का उत्सर्ग-मार्ग है। दशवैकालिक सूत्र में कहा है—"मृषावाद—असत्य भाषण लोक में सर्वत्र समस्त महापुरुषों द्वारा निन्दित है। असत्य भाषण अविश्वास की भूमि है। इसलिए निर्ग्रन्थ मृषावाद का सर्वथा त्याग करते हैं।"[४०]

परन्तु साथ में इसका अपवाद भी है। आचारांग सूत्र में वर्णन आता है, कि एक भिक्षु मार्ग में जा रहा है। सामने से व्याध आदि कोई व्यक्ति आए और पूछे कि—"आयुष्मन्! श्रमण! क्या तुमने किसी मनुष्य अथवा पशु आदि को इधर आते-जाते देखा है?" इस प्रकार के प्रसग पर प्रथम तो भिक्षु उसके वचनों की उपेक्षा करके मौन रहे। यदि मौन न रहने-जैसी स्थिति हो, या मौन रहने का फलितार्थ स्वीकृति-सूचक जैसा हो, तो "जानता हुआ भी यह कहदे, कि मैं नहीं जानता।"[४१]

३७—बाल-वृद्ध-ग्लाननिमित्तं वर्षत्यपि जलधरे भिक्षार्थं निःसरतां कम्बलावृतदेहानां न तथाविधाप्काय विराधना।

—योगशास्त्र, स्वोपज्ञ वृत्ति ३, ८७

३८—तओ संजयामेव उदगंसि पविज्जा।

—आचा० २, १, ३, २, १२२

३९—एवं अद्धाणादिसु, पलंबगहणं कया वि होज्जाहि।

—निशीथ भाष्य, गा० ४८७९

४०—मुसावाओ य लोगम्मि, सव्व साहूहिं गरिहिओ।
अविस्सासो य भूयाणं; तम्हा मोसं विवज्जए॥

—दश० अ० ६ गा० १३

४१—"तुसिणीए उवेहेज्जा, जाणं वा नो जाणंति वएज्जा।" आचा० २, १, ३, ३, १२९

भिक्षोर्गच्छतः कश्चित् संमुखीन एतद् ब्रूयात्-आयुष्मन् श्रमण! भवता पथ्यागच्छता कश्चिद् मनुष्यादिरुपलब्धः? तं चैवं पृच्छन्तं तूष्णीभावेनोपेक्षेत, यदि वा जानन्नपि नाहं जानामि, इत्येवं वदेत्। —आचा० २, १, ३, ३, १२९

यहाँ पर असत्य बोलने का स्पष्ट उल्लेख है। यह भिक्षु का अपवाद मार्ग है। इस प्रकार के प्रसंग पर असत्य भाषण भी पापरूप नहीं है। निशीथचूर्णि में भी आचारांग सूत्र का उपर्युक्त कथन सन्दृब्ध है।[४२]

सूत्रकृतांग सूत्र में भी यही अपवाद आया है। वहाँ कहा गया है—

"जो मृषावाद मायापूर्वक दूसरों को ठगने के लिए बोला जाता है, वह हेय है, त्याज्य है।"[४३]

आचार्य शीलांक ने उक्त सूत्र का फलितार्थ निकालते हुए स्पष्ट कहा है—"जो परवञ्चना की बुद्धि से रहित मात्र संयम-गुप्ति के लिए कल्याण भावना से बोला जाता है, वह असत्य दोषरूप नहीं है, पाप-रूप नहीं है।[४४]

अस्तेय का उत्सर्ग और अपवाद

उत्सर्ग मार्ग में भिक्षु के लिए घास का एक तिनका भी अग्राह्य है, यदि वह स्वामी-द्वारा अदत्त हो तो। कितना कठोर व्रत है। अदत्तादान न स्वयं ग्रहण करना, न दूसरों से ग्रहण करवाना और न अदत्त ग्रहण करने वाले का अनुमोदन ही करना।[४५]

परन्तु परिस्थिति विकट है, अच्छे-से-अच्छे साधक को भी आखिर कभी झुक जाना पड़ता ही है। कल्पना कीजिए, भिक्षु-संघ लंबा विहार कर किसी अज्ञात गाँव में पहुंचता है, स्थान नहीं मिल रहा है, बाहर वृक्षों के नीचे ठहरते हैं तो भयंकर शीत है, अथवा जंगली हिंसक पशुओं का उपद्रव है। ऐसी स्थिति में शास्त्राज्ञा है कि" बिना आज्ञा लिए ही योग्य स्थान पर ठहर जाएँ और पश्चात् आज्ञा प्राप्त करने का प्रयत्न करें।"[४६]

४२—"संजमहेउं ति" जइ केइ लुद्धगादी पुच्छंति—'कतो एत्थ भगवं दिट्ठा मिगादी ?'....ताहे दिट्ठेसु वि वत्तव्वं—ण वि "पासे" त्ति दिट्ठ त्ति वुत्तं भवति।

—निशीथ चूर्णि, भाष्यगाथा ३२२

४३—"सादियं ण मुसं बूया, एस धम्मे वुसीमओ।" —सूत्र० १, ८, १९

४४—यो हि परवञ्चनार्थं समायो मृषावादः स परिहीयते।
यस्तु संयमगुप्त्यर्थं "न मया मृगा उपलब्धा" इत्यादिकः स न दोषाय।

— सूत्रकृतांग वृत्ति १, ८, १९

४५—चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
दंतसोहणमित्तं पि, उग्गहंसि अजाइया॥

—दश० ६, १४

४६—कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पुव्वामेव ओग्गहं अणुन्नवेत्ता तओ पच्छा ओगिण्हित्तए। अह पुण जाणेज्जा—इह खलु निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा नो सुलभे पाडिहारिए सेज्जासंथारए त्ति कट्टु एवं ण्हं कप्पइ पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए। 'मा वहउ अज्जो', वइ-अणुलोमेणं अणुलोमेयव्वे सिया।

व्यवहारसूत्र ८, ११।

ब्रह्मचर्य का उत्सर्ग और अपवाद

भिक्षु का यह उत्सर्ग मार्ग है, कि वह अपने ब्रह्मचर्य महाव्रत की रक्षा के लिए एक दिन की नवजात कन्या का भी स्पर्श नहीं करता।

परन्तु अपवाद रूप में वह नदी में डूबती हुई अथवा क्षिप्तचित्त आदि भिक्षुणी को पकड़ भी सकता है।[४७]

इसी प्रकार यदि रात्रि आदि में सर्पदंश की स्थिति हो, और अन्य कोई उपचार का मार्ग न हो, तो साधु स्त्री से और साध्वी पुरुष से अवमार्जन आदि स्पर्श-सम्बन्धित चिकित्सा कराए तो वह कल्प्य है। उक्त अपवाद में कोई प्रायश्चित्त नहीं है—*'परिहारं च से न पाउणइ।'*[४८]

साधु या साध्वी के पैर में काँटा लग जाए, अन्य किसी भी तरह निकालने की स्थिति न हो, तो एक दूसरे से निकलवा सकते हैं।[४९]

कथित उद्धरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि साधक-जीवन में जितना महत्त्व उत्सर्ग का है, अपवाद का भी उतना ही महत्त्व है। उत्सर्ग और अपवाद में से किसी का भी एकान्ततः न ग्रहण है, न परित्याग। दोनों ही यथाकाल धर्म हैं, ग्राह्य हैं। दोनों के सुमेल से जीवन स्थिर बनता है। एक समर्थ आचार्य के शब्दों में कहा जा सकता है, कि "किसी एक देश और काल में एक वस्तु अधर्म है, तो वही तद्‌भिन्न देश और काल में धर्म भी हो सकती है।"[५०]

अपरिग्रह का उत्सर्ग और अपवाद

उत्सर्ग स्थिति में साधु के लिए पात्र आदि धर्मोपकरण, जिनकी संख्या १४ बताई है,[५१] ग्राह्य हैं। इनके अतिरिक्त अन्य सब परिग्रह हैं। और परिग्रह भिक्षु के लिए सर्वथा वर्ज्य है।[५२]

परन्तु अपवादीय स्थिति की गंभीरता भी कुछ कम नहीं है। जब कोई भिक्षु स्थविर-भूमि-प्राप्त स्थविर हो जाता है, तो वह छत्रक, चर्मछेदनक आदि अतिरिक्त उपधि भी आवश्यकता-नुसार रख सकता है।[५३]

४७—बृहत्कल्प सूत्र उ० ६ सू० ७–१२

४८—व्यवहार सूत्र उ० ५ सू० २१

४९—बृहत्कल्प सूत्र उ० ६ सू० ३

५०—यस्मिन् देशे काल, यो धर्मो भवति। स एव निमित्तान्तरेषु अधर्मो भवत्येव॥

५१—प्रश्न व्याकरण, संवर द्वार, अपरिग्रह निरूपण

५२—दशवैकालिक, चतुर्थ अध्ययन, पंचम महाव्रत

५३—व्यवहार सूत्र ८, ५

आचारांग सूत्र में समर्थ तथा तरुण भिक्षु को एक पात्र ही रखने की आज्ञा है,[५४] अतएव प्राचीन काल का मात्रक, तथैव आज कल के तीन या चार पात्र अपवाद ही हैं।

निशीथ चूर्णिकार ने ग्लानादि कारण से ऋतुवद्ध एवं वर्षाकाल के उपरान्त एक स्थान पर अधिक ठहरे रहने को भी परिग्रह का कालकृत अपवाद ही माना है।[५५]

यदि कोई भिक्षु विषग्रस्त हो जाए, तो विष निवारण के लिए, सुवर्ण घिसकर उसका पानी विष-रोगी को देने का भी वर्णन है। यह सुवर्ण-ग्रहण भी अपरिग्रह का अपवाद है।[५६]

भिक्षु को यथाशास्त्र निर्दिष्ट पात्र ही रखने चाहिएँ, यदि अधिक रखता है, तो वह परिग्रह है। परन्तु दूसरों के लिए सेवाभाव की दृष्टि से अतिरिक्त पात्र रख भी सकता है।[५७]

पुस्तक, शास्त्र वेष्टन, लेखनी, कागज, मसि, आदि भी परिग्रह ही है, क्योंकि ये सब भिक्षु के धर्मोपकरण में परिगणित नहीं हैं। परन्तु चिरकाल से ज्ञान के साधन रूप में अपरिग्रह का अपवाद मानकर इनका ग्रहण होता रहा है।

गृह-निषद्या का उत्सर्ग और अपवाद

भिक्षु, गृहस्थ के घर पर नहीं बैठ सकता, यह उत्सर्ग-मार्ग है। प्रत्येक भिक्षु को इस नियम का कठोरता के साथ पालन करना होता है।[५८]

परन्तु जो भिक्षु जराभिभूत वृद्ध हैं, रोगी है, अथवा तपस्वी है, वह गृहस्थ के घर बैठ सकता है।[५९] वह गृहनिषद्या के दोष का भागी नहीं होता।

५४—तहप्पगारं पायं जे निग्गंथे तरुणे जाव थिरसंघयणे से एगं पायं धरेज्जा, नो बिइयं
—आचा० २, १, ६, १, १

५५—गिलाणो सो विहरिउमसमत्थो, उउवद्धं वासियं वा अइरित्तं वसेज्जा।
गिलाणपडियरगा वा ग्लानप्रतिबद्धत्वात् अतिरित्तं वसेज्जा।।
—निशीथ चूर्णि, भाष्यगाथा ४०४

५६—विषग्रस्तस्य सुवर्णं कनकं तं घेत्तु घसिऊण विषणिग्घायणट्ठा तस्स पाणं दिज्जति,
अतो गिलाणट्ठा ओरालिय ग्रहणं भवेज्ज।
—निशीथ चूर्णि, भाष्य गाथा ३६४

५७—कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अइरेगपडिग्गहं अन्नमन्नस्स अट्ठाए धारेत्तए,
परिग्गहित्तए वा.........
—व्यवहार सूत्र ८, १५

५८—गिहन्तरनिसेज्जा य.......
—दश० ३, ४। दश० ६, ८

५९—तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ
जराए अभिभूयस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो।।
—दश० ६, ६०

आधाकर्म आहार का उत्सर्ग और अपवाद

उत्सर्ग मार्ग में आधाकर्मिक आहार भिक्षु के लिए अभक्ष्य कहा गया है।[६०] वह भिक्षु की कल्प-मर्यादा में नहीं है। परन्तु कारणवशात् अपवाद मार्ग में वह आधाकर्म आहार भी अभक्ष्य नहीं रहता।

सूत्रकृतांग सूत्र का अभिप्राय है, कि पुष्टालंवन की स्थिति में आधाकर्मिक आहार ग्रहण करने वाले भिक्षु को एकान्त पापी कहना भूल है। उसे एकान्त पापी नहीं कहा जा सकता।[६१]

आचार्य शीलांक, उक्त सूत्र पर विवरण करते हुए स्पष्ट लिखते हैं कि—

"अपवाद दशा में श्रुतोपदेशानुसार आधा कर्म आहार का सेवन करता हुआ भी साधक शुद्ध है, कर्म से लिप्त नहीं होता है। अतः एकान्त रूप में यह कहना कि "आधाकर्म से कर्मवन्ध होता ही है, ठीक नहीं।"[६२]

निशीथ भाष्य में भी दुर्भिक्ष आदि विशेष अपवाद के प्रसंग पर आधाकर्म आहार ग्राह्य वताया गया है।[६३]

संथारे में आहार ग्रहण का अपवाद

किसी भिक्षु ने भक्त प्रत्याख्यान (संथारा) कर लिया है अर्थात् आहार-ग्रहण का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया है। शिष्य प्रश्न करता है—"भंते ! कदाचित् उस भिक्षु को क्षुधा सहन न कर सकने के कारण उत्कट असमाधिभाव हो जाए, और वह भक्त पान मांगने लगे तो उसे देना चाहिए, कि नहीं ?"

व्यवहार भाष्य वृत्ति में इस का सुन्दर समाधान दिया गया है। आचार्य मलयगिरि कहते हैं—"भिक्षु को असमाधि भाव हो आने पर यदि वह स्थिरचित्त न रहे और भक्त—

६०—जे भिक्खू आहाकम्मं भुंजइ, भुजंतं वा सातिज्जइ।

—निशीथ सूत्र १०, ६

६१—अहाकम्माणि भुंजंति, अण्णमण्णे सकम्मुणा।
उवलित्ते ति जाणिज्जा, अणुवलित्ते ति वा पुणो ॥८॥
एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो न विज्जइ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायारं तु जाणए ॥९॥

सूत्र० २, ५

६२—आधाकर्माऽपि श्रुतोपदेशेन शुद्धमिति कृत्वा भुञ्जानः कर्मणा नोपलिप्यते। तदाधाकर्मोप-भोगेनावश्यकर्मवन्धो भवति, इत्येवं नो वदेत्। —टीका

६३—असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोहए वा, धिति पडुच्चा व आहारे॥

—निशीथ भाष्य, गाथा २६८४

पान मांगने लगे तो उसे भक्त पान अवश्य दे देना चाहिए। क्योंकि उसके प्राणों की रक्षा के लिए आहार कवच है।"[६४]

शिष्य पूछता है, कि—"त्याग कर देने पर भी भक्त-पान क्यों देना चाहिए?"[६५] आचार्य कहते हैं—

"भिक्षु की साधना का लक्ष्य है, कि वह परीषह की सेना को मनःशक्ति से, वचः-शक्ति से और काय-शक्ति से जीते। परीषह सेना के साथ युद्ध वह तभी कर सकता है, जब कि समाधि-भाव रहे। और भक्त-पान के विना समाधि भाव नहीं रह सकता है। अतः उसे कवच-भूत आहार देना चाहिए।"[६६]

शिष्य प्रश्न करता है—"भंते! संथारा करने वाले भिक्षु के द्वारा भक्त-पान ग्रहण कर लेने पर यदि कोई आग्रही निन्दा करे, तो क्या होता है?"

आचार्य कहते हैं—"जो उसकी निन्दा करता है, जो उसकी भर्त्सना करता है, उसे चार मास का गुरु प्रायश्चित्त आता है।"[६७]

पशुओं के बन्धन-मोचन का उत्सर्ग और अपवाद

भिक्षु आत्म-साधना में एक धारा से सतत निरत रहनेवाला साधक है। वह गृहस्थ के संसारी कार्यों में किसी प्रकार का भी न भाग लेता है, और न उसे ठीक ही समझता है। वह गृहस्थ के घर पर रहकर भी जल में कमल के समान सर्वथा निर्लिप्त रहता है। अतएव भिक्षु को गृहस्थ के यहाँ बछड़े आदि पशुओं को न बाँधना चाहिए और न खोलना चाहिए। यह उत्सर्ग मार्ग है।

परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि भिक्षु की साधना एक चेतना-शून्य जड़ साधना है। अतः कैसी भी दुर्घटना हो, वह अनुकम्पाहीन पत्थर की मूरत बन कर बैठा रहेगा। कल्पना

६४—अशने पानके च याचिते, तस्य भक्तपानात्मकः कवचभूत आहारो दातव्यः।

व्यवहार भाष्य वृत्ति उ० १० गा० ५३३

६५—अथ किं कारणं, प्रत्याख्याय पुनराहारो दीयते?

६६—हंदि परीसहचमू, जोहेयव्वा मणेण काएण।
तो मरण-देसकाले कवयभूओ उ आहारो॥

—व्यवहार भाष्य, उ०, १० गा० ५३४

परीषह सेना मनसा कायेन (वाचा च) योधेन जेतव्या। तस्याः पराजयनिमित्तं मरणदेशकाले (मरण समये) योधस्य कवचभूत आहारो दीयते।

—व्यवहार भाष्य वृत्ति

६७—यस्तु तं भक्तपरिज्ञाव्याघातवन्तं खिसति। (भक्तप्रत्याख्यान प्रतिभग्न एष इति) तस्य प्रायश्चित्तं चत्वारो मासा अनुद्घाता गुरुकाः।

व्यवहार भाष्य वृत्ति १० उद्देश, गा० ५५१,

कीजिए—आग लग जाए, बाढ़ का पानी चढ़ आए, वृकादि हिंसक पशु आक्रमण करने वाले हों, अथवा अन्य कोई विषम स्थिति हो, तो क्या किया जाय ? क्या इस स्थिति में भी पशुओं को सुरक्षित एकान्त स्थान में न बाँधे, उन्हें यों ही अनियंत्रित घूमने दे और मरने दे ? नहीं, निशीथ-भाष्यकार के शब्दों में शास्त्राज्ञा है कि उक्त अपवादपरक स्थितियों में पशुओं को सुरक्षा के लिए बाँधा जा सकता है।[६८]

जो दृष्टि बाँधने के सम्बन्ध में है, वही खोलने के सम्बन्ध में भी है। गृहस्थ के प्रति चापलूसी का दीन भाव रख कर कि वह मुझ पर प्रसन्न रहेगा, फलस्वरूप मन लगा कर सेवा करेगा, गृहस्थ का कोई भी संसारी कार्य न करे। परन्तु यदि पशु आग लगने पर जलने जैसी स्थिति में हों, गाढ बन्धन के कारण छटपटा रहे हों, तो सुरक्षा के लिए पशुओं को खोल भी सकता है।[६९] यह अपवाद पद है, जो अनुकम्पा-भाव से विशेष परिस्थिति में अपनाया जा सकता है।

अतिचार और अपवाद का अन्तर

अतिचार और अपवाद का अन्तर समझने जैसा है। बाह्य रूप में अपवाद भी अतिचार ही प्रतिभासित होता है। जिस प्रकार अतिचार में दोष-सेवन होता है, वैसा ही अपवाद में भी होता है, अतः बहिरंग में नहीं पता चलता कि अतिचार और अपवाद में ऐसा क्या अन्तर है कि एक त्याज्य है, तो दूसरा ग्राह्य है।

अतिचार और अपवाद का बाहर में भले ही एक जैसा रूप हो, परन्तु दोनों की पृष्ठ भूमि में बहुत बड़ा अन्तर है। अतिचार कुमार्ग है, तो अपवाद सुमार्ग है। अतिचार अधर्म है, तो अपवाद धर्म है। अतिचार संसार का हेतु है, तो अपवाद मोक्ष का हेतु है।

६८—बितिय पदमणप्पज्झे, बंधे अविकोविते व अप्पज्झे।
विसमऽगड अगणि आऊ, सणप्फगादीसु जाणमवि ॥३९८३॥

—निशीथ भाष्य

विसमा अगड अगणि आऊसु मरिज्जिहिति त्ति, वुगादिसणप्फएण वा मा खिज्जिहि त्ति, एवं जाणगो वि बंधइ।

—निशीथचूर्णि

६९—बितियपदमणप्पज्झे, मुंचे अविकोविते व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, वलिपासग-अगणिमादीसु ॥३९८४॥

—निशीथ भाष्य

वलिपासगो त्ति बंधणो, तेण अईवगाढं बद्धो मूढो वा तडप्फडेइ, मरइ वा जया, तया मुंचई। अगणि त्ति पलीवणगे बद्धं मुंचेइ, मा डज्झिहिति।

—निशीथ चूर्णि

मूल वात यह है कि अतिचार के मूल में दर्प रहता है, मोहोदय का भाव रहता है।[७०] क्रोधादि कपायभाव से, वासना से, संसार सुख की कामना से विना किसी पुष्टालम्वन के, उत्सर्ग संयम का परित्याग कर जो विपरीत आचरण किया जाता है, वह अतिचार है। अतिचार से संयम दूषित होता है, अतः वह त्याज्य है। यदि मोहोदय के कारण कभी अतिचार का सेवन हो भी जाता है, तो प्रायश्चित्त के द्वारा उसकी शुद्धि करनी होती है। अन्यथा भिक्षु विराधक हो जाता है, और पथभ्रष्ट होकर संसार-कान्तार में भटक जाता है।

अब रहा अपवाद। इसके सम्बन्ध में पहले भी काफी प्रकाश डाला जा चुका है। "यदि मैं अपवाद का सेवन नहीं करूँगा, तो मेरे ज्ञानादि गुणों की अभिवृद्धि न होगी"—इस विचार से ज्ञानादि के योग्य सन्धान के लिए जो प्रतिसेवना की जाती है, वह सालम्ब सेवना है।[७१] और यही अपवाद का प्राण है। अपवाद के मूल में ज्ञानादि सद्गुणों के अर्जन तथा संरक्षण की पवित्र भावना ही प्रमुख है।

निशीथ भाष्यकार ने ज्ञानादि-साधना के सम्बन्ध में वहुत ही महत्त्वपूर्ण उल्लेख किया है। वे कहते हैं कि जिस प्रकार अंध गर्त में पड़ा हुआ मनुष्य लताओं का अवलम्वन कर वाहर तट पर आजाता है, अपनी रक्षा कर लेता है, उसी प्रकार संसार गर्त में पड़ा हुआ साधक भी ज्ञानादि का अवलम्वन कर मोक्ष तट पर चढ़ आता है, सदा के लिए जन्म मरण के कष्टों से निजात्मा की रक्षा कर लेता है।[७२]

अतः उत्सर्ग के समान अपवाद भी संयम है, अतिचार नहीं। कपाय भाव से प्रेरित प्रवृत्ति अतिचार है, तो संयम भाव से प्रेरित वही प्रवृत्ति अपवाद है। अतएव अतिचार कर्म वन्ध का जनक है, तो अपवाद कर्मक्षय का कारक है।[७३] वाहर में स्थूल दृष्टि से एक रूपता होते हुए भी, अन्दर में अन्तर है, आकाश पाताल जैसा महान् अन्तर है। एक भगवान् की आज्ञा में है, तो दूसरा भगवान की आज्ञा से वाहर है। पुष्टालम्वन वह अद्भुत रसायन है, जो अकल्प को भी कल्प वना देती है, अतिचार को भी आचार का सुरूप दे देती है।

७०—प्रति सेवना के दो रूप हैं—दर्पिका और कल्पिका। विना पुष्टालम्वनरूप कारण के की जाने वाली प्रतिसेवना दर्पिका है, और वह अतिचार है। तथा विशेप कारण की स्थिति में की जाने वाली प्रति सेवना कल्पिका है, जो अपवाद है और वह भिक्षु का कल्प है—आचार है।

या कारणमन्तरेण प्रतिसेवना क्रियते सा दर्पिका, या पुनः कारणे सा कल्पिका।

—व्यवहार भाष्य वृत्ति उ० १० गा० ३८

७१—णाणादी परिवुड्ढी, ण भविस्सति मे असेवते विति;
तेंसि पसंधणट्ठा, सालंवणिसेवणा एसा ॥४६६॥

—निशीथ भाष्यं

७२—संसार गड्ड-पडितो, णाणादवलंवितु समारुहति।
मोक्खतडं जध पुरिसो, वल्लिविताणेण विसमा उ ॥४६५॥

—निशीथ भाष्य

उपसंहार

उत्सर्ग और अपवाद छेद सूत्रों का मर्म स्थल है। अतएव भाष्यों, चूर्णियों तथा तत्सम्बन्धित अन्य आचार ग्रन्थों में प्रस्तुत विषय पर इतना अधिक विस्तृत विवेचन किया गया है कि यह क्षुद्र निबन्ध समुद्र में की एक नन्हीं बूँद जैसा लगता है, वस्तुतः बूँद भी नहीं। फिर भी यथा मति, यथा गति कुछ लिखा गया है, और वह जिज्ञासु की ज्ञान-पिपासा के लिए एक जल कण ही सही, किन्तु कुछ है तो सही।

प्रस्तुत निबन्ध का अक्षरशरीर कुछ पुरानी और कुछ नयी विचार सामग्री के आधार पर निर्मित हुआ है, और वह भी चिन्तन के एक आसन पर नहीं। बीच-बीच में विक्षेप पर-विक्षेप आते रहे, शरीर-सम्बन्धी और समाज-सम्बन्धी भी। अतः लेखन में यत्र-तत्र पुनरुक्ति की झलक आती है। परन्तु वह जहाँ दूषण है, वहाँ भूषण भी है। उत्सर्ग और अपवाद जैसे गहनातिगहन विषय की स्पष्ट प्रतिपत्ति के लिए पुनरुक्तता का भी अपने में एक उपयोग है, और वह कभी-कभी आवश्यक हो जाता है।

—उपाध्याय अमर मुनि

---

७३ —अन्ना वि हु पडिसेवा, सा उ न कम्मोदएण जा जयतो।
सा कम्मक्खयकरणी, दप्पाऽजय कम्मजणणी उ॥

—व्य० भा० उद्देश १, गा० ४२

या कारणे यतमानस्य यतनया प्रवर्तमानस्य प्रतिसेवना,
सा कर्मक्षयकरणी। सूत्रोक्तनीत्या कारणे यतनया
यतमानस्य ततस्तत्राज्ञाराधनात्।

—व्यवहार भाष्य—वृत्ति

विषयानुक्रम

दशम उद्देशक

एकादश उद्देशक

द्वादश उद्देशक

त्रयोदश उद्देशक

चतुर्दश उद्देशक

पंचदश उद्देशक

निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्यप्रवरश्रीजिनदासमहत्तरविरचितया

विशेषचूर्ण्या समलंकृतम्

तृतीयो विभागः

उद्देशकाः १०–१५

दुविहो य होइ धम्मो, सुयधम्मो खलु चरित्तधम्मो य ।
सुयधम्मो सज्झाओ, चरित्तधम्मो समणधम्मो ॥३२९९॥
सुयधम्मो खलु दुविहो, सुत्तं अत्थं य होइ णायव्वो ।
दुविहो य चरणधम्मो, य अगारमणगारियं चेव ॥३३००॥

—भाष्यकार

दशम उद्देशकः

उक्तः नवमोद्देशकः । इदानीं दशमः । तस्सिमो संबंधो –

मा भुंज रायपिंडं, ति चोइतो तत्थ मुच्छितो गिद्धो ।
खुज्जाती मा वच्चसु, आगाढ च उप्पती दसमे ॥२६०६॥

गुरुणा चेतितो मुच्छिय गिद्धे एकार्थवचने ।

अहवा – तं भुंजंतो संजमासंजमं ण याणति मूर्छितवत्, मुच्छितो अभिलाषमात्रगृद्धः ।

अहवा – खुज्जादियाणमालयं वच्चेति । चोदितो आगाढवयणं भणेज्ज । एस उप्पत्ती आगाढवयणस्स । दसमुद्देसगस्स एस संबंधो ॥२६०६॥

जे भिक्खू भदंतं आगाढं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

"जे" इति निद्देसे, 'भिक्खू" पुव्ववण्णिओ, "भदि कल्याणे सुखे च दीप्तिस्तुतिसौख्येषु वा", माहात्म्यस्य सिलोकः "भदंतो" आचार्यः । अत्यर्थं गाढं आगाढं । "वद व्यक्तायां वाचि" अण्णं वा वदंतं अणुमोदेति ।

णिज्जुत्ती –

आगाढं पि य दुविहं, होइ असूयाइ तह य सूयाए ।
एएसिं पत्तेयं, दोण्हं पि परूवणं वोच्छं ॥२६०७॥

आगाढं द्विविधं – असूताए सूताए वा ॥२६०७॥

[1]आगाढफरुसोभयसुत्ताण तिण्ण वि इमं सरूवं –

गाढुत्तं गूहणकरं, गाहेतुम्हं व तेण आगाढं ।
णेहरहितं तु फरुसं, उभए संजोयणा णवरं ॥२६०८॥

गाढं उक्तं गाढुत्तं, तं केरिसं ? "गूहणकरं" अन्यस्याख्यातुं न शक्यते ।

अहवा – सरीरस्योष्मा येनोक्तेन जायते तमागाढं । णेहरहियं निप्पिवासं फरुसं भण्णति । गाढफरुसं उभयं, ततियसुत्ते-संजोगो दोण्ह वि ॥२६०८॥

---

१ सू० १–२–३ ।

सूयासूयवयणाणं इमेहिं दारेहिं सरूवं जाणियव्वं –

जाति[1]-कुल[2]-रूव[3]-भासा[4], धण[5] बल[6] परियाग[7] जस[8] तवे[9] लाभे[10] ।
सत्त[11]-वय[12]-बुद्धि[13] धारण[14], उग्गह[15] सीले[16] समायारी[17] ॥२६०९॥ दा० गा०

अम्हे मो जातिहीणा, जातीमंतेहिं को विरोहो णे ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६१०॥

लोकप्रसिद्धं उल्लिंगितवचनं सूचा । अत्र तादृसं न गृहीतव्यं, इह तु परं दोषेण सूचयति स्पष्टमेव दोषं भापतीत्यर्थः । परवत्थु-णिद्देसो णाम भदंतं चेव भणति – तुमं जातिहीणो त्ति ।

अम्हे मो कुल-हीणा, को कुलपुत्तेहिं सह विरोहो णे ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६११॥

अम्हे मो रूव-हिणा, सरूवदेहेसु को विरोहो णे ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६१२॥

अम्हे मो अकतमुहा, अलं विवाएण णे कतमुहेहिं ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६१३॥

वाग्मी-कृतमुखः ।

भासाए द्वितीयव्याख्यानम् –

खर-फरुस-णिट्ठुरं णे, वक्कं तुब्भं मिय-महुर-गंभीरं ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६१४॥

सरोलवयणमिव अकंतं खरं, प्रणय-नेह-णित्तण्हं फरुसं, जगारादियं अणुवयारं णिट्ठुरं, "णे" इत्यात्मनिर्देशे, अक्खरेहिं मितं, अत्थअभिधाणेहिं मधुरं, सरेण गंभीरं ॥२६१४॥

अम्हे मो धण-हीणा, आसि अगारम्मि इड्ढिमं तुब्भे ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६१५॥

एमेव सेसएसु वि, जोएयव्वा असूय-सूयाओ ।
आतगता तु असूया, सूया पुण पागडं भणति ॥२६१६॥

अप्पणो दोसं भासति, ण परस्स एसा असूया ।
ण अप्पणो, परस्स फुडमेव दोसं भासति एसा सूया, सूयंतीत्ति सूया ।
ओरसबल-युक्तो [1]बलवान् । परियायो प्रव्रज्याकालः ।
लोके ख्यातिर्महात्मा इति यशः, संजमो वा चउत्थादिओ तवो ।
आहारोवकरणादिएसु लद्धिमं लाभो । सत्वेन युक्तः शक्तो वा शक्तः ।

१ गाथाचतुर्थं सूचितपदव्याख्या ।

प्रथमे वयसि वर्तमानः त्रिदशवत् वयवं, जो वा जम्मि वए ठितो तस्स तहा गुणं भासति ।

उप्पत्तियादिबुद्धिजुत्तो बुद्धिमं । धारणा दृढस्मृतिः ।

बहुबहुविधक्षिप्रानिश्रितासंदिग्धध्रुवाणां उग्गहं करेति ।

अक्कोहादिणा सीलेण जुत्तो सीलवं । चक्कवालसामायारीए जुत्तो कुसलो वा ।

एते अत्था सव्वे सूयासूएहिं भाणियव्वा ।

एक्केक्का सा दुविहा, संतमसंता य अप्पणि परे य ।
पच्चक्ख परोक्खा वि य, असंत पच्चक्ख दोसयरा ॥२६१७॥

आतंगता असूया, परगता सूया । असूया संतासंता य । सूया वि संतासंता य । जहत्थेण ठियं संतं । अभूतार्थं अनृतं असंतं । परस्स जं पभासति तं (परोक्खं) पच्चक्खं वा असंतं पच्चक्खं महंतदोसतरं भवति ॥२६१७॥

अहवा – इमेहिं अप्पाणं परं वा पसंसति निंदति वा –

गणिवायते[1] बहुसुते[2], मेधा[3] वायरिय[4] धम्मकहि[5] वादी[6] ।
अप्पकसाए[7] थूले[8], तेणुए[9] दीहे[10] य मडहे[11] य ॥२६१८॥

अम्हे खमणा ण गणी, को गणिवसहेह सह विरोहो णे ।
एस असूया सूया, तु णवरि परवत्थु-णिद्देसो ॥२६१९॥

अगणिं व गणिं बूया, गणिं व अगणिं तु हासमादीहिं ।
एवं सेसपएसु वि, सप्पडिवक्खं तु णेयव्वं ॥२६२०॥

सेसा पदा बहुस्सुयादिया । विचित्तं बहुयं च सुयं बहुस्सुतो । तिविधो मेधावी - गहण-धारणा-मेरा-मेधावी य । आयरिओ गच्छाहिवती, तत्थेवं भासति अम्हे के आयरियत्तस्स जे सामायारिं पि ण याणामो ।

अहवा भणाति – तुमं को आयरियत्तस्स, जो सामायारिं पि न याणसि । चउव्विहाए अक्खेवणिमादियाए धम्मकहालद्धीए जुत्तो । ससमयपरसमएसु कतागमो उप्पण्णप्पतिभो वादी । बहुअल्पकषायं । क्रियासु अदक्षः स्थूरः । तनुर्दक्षः । जड्डामो थूर देहा को तणुदेहेहिं णे सह विरोहो । घट्टेमो निच्च उवरिं, [1]मडहसरीरेहिं को विरोहो णे । णिंदं वा करेति थुती य । परमप्पणो कहंतरं णाउं परवयणपयोगवसा पच्चुत्तरमप्पणा देति ॥२६२०॥

एतेसामण्णतरं आगाढं जो वदति तस्सिमा सोही ।

छेदादी आरोवण, नेयव्वा जाव मासियं लहुयं ।
आयरिए वसभम्मि य, भिक्खुम्मि य खुड्डए चेव ॥२६२१॥

आयरिओ आयरियं, आगाढं वयति पावइ च्छेयं ।
वसभे छग्गुरु भिक्खुम्मि च्छलहू खुड्डए गुरुगा ॥२६२२॥

---

१ लघु ।

आयरिओ आयरियं आगाढं वदति छेदो। आयरिओ वसभं र्फा। आयरिओ भिक्खुं र्फु। आयरिओ खुड्डं ड्का ॥२६२२॥

वसभे छग्गुरुगाई, छल्लहुगा भिक्खु खुड्ड गुरुगाई।
अंतो पुण सिं चउलहू, मासगुरु मासलहुओ य ॥२६२३॥

वसभो आयरियं आगाढं वदेति ६ (गु)। वसभो वसभं ६ (ल) वसभो भिक्खुं ड्का। वसभो खुड्डं ड्क।

भिक्खू आयरियं आगाढं वदति र्फु। भिक्खू वसभं ड्का। भिक्खू भिक्खुं ड्क। भिक्खू खुड्डं मासगुरु।
खुड्डओ आयरियं आगाढं वदति ड्का। खुड्डओ वसभं ड्क। खुड्डो भिक्खूं मास लघु। खुड्डओ खुड्डयं मासलघुं ॥२६२३॥

अहवा – अन्यः प्रायश्चित्तक्रमः।

पंचण्हायरियाइं, चेया एक्केक्क हासणा अहवा।
राइंदियवीसंतं, चउण्ह चत्तारि वि विसिट्ठा ॥२६२४॥

आयरिय वसभ भिक्खू थेरो खुड्डो य छेदादी वीसराइंदियाइ अंते एतेणं चेव चारणियप्पओगेणं चारेयव्वं। जत्थ जत्थ चउगुरुगं तत्थ तत्थ सुत्तणिवाओ दट्ठव्वो ॥२६२४॥

अहवा – पुव्वुत्ताण चउण्हं चउगुरुगं तवकालविसेसियं।

अहवा – सव्वेसिं अविसिट्ठं चउगुरुं ॥२६२४॥

जं चेव परट्ठाणे, आसायंतो उ पावए ओमं।
तं चेव य ओमो वि य, आसाइंतो वि रायणियं ॥२६२५॥

परट्ठाणं परं प्रधानं ज्येष्ठमित्यर्थः। जं सो ओमं आसादेंतो पावति, ओमो वि तं चेव जेट्ठं आसादेंतो पावति ॥२६२५॥

एएसामण्णयरं, आगाढं जो वदे भदंतारं।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२६२६॥

असंखडादयो दोसा, पक्खापक्खग्गहणे य गच्छभेदो ॥२६२६॥

कारणे भणेज्जा वि –

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वएज्ज खिसंतो।
उवलंभट्ठा य तथा, सीयंते वा वदेज्जा हि ॥२६२७॥

अणवज्झो वा साहू भणेज्जा, अणवज्झो वा भदंतो भणेज्ज। अप्पज्झो वा भणेज्ज खिसणपरं भदंतं। सो आयरिओ बहुस्सुओ जातिहीणो सीसपडिच्छए अभिक्खं जातिमादीहिं खिसति, सो सुत्तत्थे उवजीविउं न सक्केति, ताहे तस्स जातिसरणाए खिसं उवालंभं वा करेज्ज। जो आयरिओ जाइहीणो "अहं ण णज्जामि" त्ति अण्णे साहू जातिमातिएहिं खिसति ॥२६२७॥

तस्स अण्णावदेसेण इमा खिसा –

जातिकुलस्स सरिसयं, करेहि ण हि कोद्दवो भवे साली ।
आसललियं वराओ, चाएति न गद्भो काउं ॥२६२८॥

तुज्झ वि जं कुलं जाती वा तं अम्हेहिं परिण्णायं तो अप्पणो च्चेव जातिकुलं सरिसं करेहि । मा कोद्दवसमाणो होउं अप्पाणं सालिसरिसं भण्णतु । णो वा गद्दभसमाणेहिं होउं जाती अस्सललितं काउं सक्कति ॥२६२८॥

विरूवेण खिंसमाणो इमं भण्णति –

रूवस्सेव सरिसयं, करेहि ण हु कोद्दवो भवे साली ।
आसललियं वराओ, चाएति न गद्भो काउं ॥२६२९॥ कंठा

वायगो-गणी, आयरिओ वा, जेण कतो तस्सिमा खिंसा –

अह वायगो त्ति भण्णति, एस किर गणी अयं च आयरिओ ।
सो वि मण्णे एरिसओ, जेण कओ एस आयरिओ ॥२६३०॥

इमो उवालंभो खिसते । सीतंते वा –

जाती-कुलस्स सरिसं, करेहि मा अप्पवेरिओ होहि ।
होज्ज हु ते परिवातो, गिहि-पक्खे साहु-पक्खे य ॥२६३१॥

परिवयणं परिवातो अयसो अगुणकित्तणं इत्यर्थः ॥२६३१॥

अहवा – इमो उवालंभो –

जुत्तं णाम तुमे वायएण गणिणा व एरिसं काउं ।
आयरिएण व होउं, काऊणं किं च काहामो ॥२६३२॥

जुत्तमिति युज्यते योग्यं वा, णामशब्दः पादपूरणे, इदं, नेति निर्देशे, वाचको वा आयरियस्स वा होउं किं एरिसं काऊण जुज्जति । अह तुब्भे चेव मज्जायरक्खगा होतुं करेह तो अम्हे किं काहामो॥२६३२॥

सीदंते वा इमो उवालंभो –

अहवा ण मज्ज जुत्तं, भदंत एयारिसाणि वोत्तुं जे ।
गुरुभत्ति-चोइतमणो, भणामि लज्जं पयहिऊणं ॥२६३३॥ कंठा

किं चान्यत् –

वरतर मए सि भणितो, न यावि अण्णेण पच्चुवालद्धे ।
छण्णे मम वेण्णप्पं, भणेज्ज अण्णो पगासेंतो ॥२६३४॥

अहं ते पच्छण्णे दोसपच्छायणं करेंतो भणामि, अण्णो पुण दोसकित्तणं करेंतो वहुजणमज्झे भणेज्ज, तेण वरतरं मए सि भणितो ॥२६३४॥

त्रयोदश उद्देशक

जहा बितिश्रोद्देसे फरुसं तहा इहं पि उस्सग्गऽववातेहिं वत्तव्वं ।

णवरं – इह आयरिये सुत्तणिवाओ ॥२६३९॥

जे भिक्खू भदंतं आगाढं फरुसं वयइ, वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

एसेव गमो णियमा, मीसगसुत्ते वि होति नायव्वो ।
आगाढ-फरुसगम्मि, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मी ॥२६४०॥

जो एतेसु दोसु पुव्वुत्तेसु सुत्तेसु गमो सो चेव इह मीसगसुत्ते गमो दट्ठव्वो ।

णवरं – संजोगपच्छित्तं भाणियव्वं ॥२६४०॥

जे भिक्खू भदंतं अण्णयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएति,
अच्चासाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

[1]दसासु तेत्तीसं आसादणा भणिता, तासिं अण्णतराए आसादणाए आसादेति । आङ्त्युपसर्गो मर्यादावाचकः "सद्" विसरणगत्यवसानेषु । गुरुं पडुच्च विणयकरणे जं फलं तमायं सादेतीति आसादणा ।

सा य आसादणा चउव्विहा –

दव्वे खेत्ते काले, भावे आसायणा मुणेयव्वा ।
एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२६४१॥

चउण्ह दव्वादियाण इमा वक्खा –

दव्वे आहारादिसु, खेत्ते गमणादिएसु णायव्वा ।
कालम्मि विवच्चासे, मिच्छा पडिवज्जणा भावे ॥२६४२॥

दव्वे आहारादिएसु ।

सेहे रातिणिएण सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेमाणे तत्थ सेहतराए खद्धं खद्धं आहारेति ।

सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता तं रातिणियं अणापुच्छित्ता जस्स इच्छेत्ति तस्स खद्धं खद्धं दलयति । आदिग्गहणाओ वत्यादिया गुरुणो अदंसिया पडिभुंजति ।

खेत्ते पुरतो पासतो मग्गओ वा आसण्णं गमणं करेति, आदिग्गहणातो चिट्ठणणिसीयणादी आसण्णो करेति ।

कालम्मि विवच्चासो णाम सेहो रातिणियस्स रातो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवति । विणयेण पडिसुणेयव्वं । तस्स पुण विणएण अपडिसुणेमाणस्स उस्सुत्तं भवति, तेण विवच्चासो भवति ।

भावे जं गुरू भणति तं ण पडिवज्जति, अपडिवज्जंते य मिच्छा भवति ॥२६४२॥

काले उ सुयमाणे, अपडिसुणेंतस्स होति आसयणा ।
मिच्छादिफरुसभावे, अंतरभासा य कहणा य ॥२६४३॥

---

१ दसासुयखंधे ।

"काले" त्ति रातो वा वियाले वा गुरुणो वाहरेंतस्स सुणेंतो वि असुणेंतो विव अच्छति। एसा कालासादणा।

इदाणिं भावासादणा – मिच्छा पडिवत्तितो भावे त्ति हिसि त्ति वत्ता, किं तुमं ति वा, फरुसं भणाति, गुरुणो वा धम्मकहं कहेंतस्स अंतरभासा एसा भावासायणा ॥२६४३॥

दव्वादिएसु चउसु वि इमो अविणयरोसो –

गुरुपच्चइया आसायणा तु धम्मस्स मूलछेदो तु ।
चतुपददोसा एते, एत्तो व विसेसियं वोच्छं ॥२६४४॥

गुरुविणयकरणे कम्मक्खए जो आतो तं सादेति ।

अहवा – गुरुपच्चतितो णाणादिया आयो, तं अविणयदोसेण सादेति न लभतीत्यर्थः। विणओ धम्मस्स मूलं, सो य अविणयजुत्तो [1]तस्स छेदं करेति ।

अहवा –धम्मस्स मूलं सम्मत्तं, गुरुआसादणाए [2]तस्स छेदं करेति। दव्वादिएसु चउसु वि एते सामण्णतो दोसा भणिया ॥२६४४॥

एत्तो एक्केक्कस्स विसेसेण भणाति –

सच्चित्तखद्धकारग, अविकडणमदंसणे भवे दोसा ।
इंगाल अविहि तेणिं, गलग्गुच्छूढात्ति सेसेसुं ॥२६४५॥

गुरुणो अणालोतियं अपडिदेसियं वा जइ भुजति तो इमे दोसा – सच्चित्तं फलकंदादी भुंजेज्ज, अतिप्पमाणे वा भुंजेज्ज, तं अजीरंतं आदेज्ज वमेज्ज मारेज्ज व सरीरस्स वा अकारगं भुंजेज्ज तेण से वाही भवेज्ज, इंगालसधूमं वा भुंजे, अविधीए वा भुंजे सुरसुरं चवचवं, दुयं विलंबितं सपरिसाडिं मणवयकाएसु वा अगुत्तो भुंजे, सत्तविहालोयवज्जिते तेणियं भवति, ठाणादिसपगासणया भायणपक्खेवणया गुरुभावे सत्तविहो आलोगो, सता वि जयणा सुविहियाणं। "सेसेसु" त्ति राइणिएण सद्धिं खद्धं खद्धं, डायं डायं, रसियं रसियं, अ मणुण्णं मणुण्णं इत्यादि गलए लगेज्जा, तुरिए अतिप्पमाणेण वा कवले उ [3]च्छूढ आयविराहणादिया दोसा ॥२६४५॥ दव्वासादणा गता।

इदाणिं खेत्तासादणा दोसा –

घट्टण-रेणु-विणासो, तिपास-ओभावणा भवे पुरतो ।
खेत्ते काल-पलित्ते, गिलाण असुणेंत अधिकरणं ॥२६४६॥

आसण्णं गच्छंतस्स गुरुणा संघट्टणा भवति, पादुट्ठियरेणुना य वत्थविणासो भवति, सो जति पासतो वामतो दाहिणतो मग्गतो य पुरतो गच्छंते ओभावणा आयरियस्स। एस खेत्तासादणा गता।

इमे काले रातो वियाले वा पेल्लित्ते आयरियस्स वाहरंतस्स अपडिसुणेमाणस्स सीसस्स गिलाण-विराहणा हवेज्ज, उवकरणदाहो वा, अजंगमो वा आयरिओ डज्झे, अपडिसुणेमाणो वा अण्णेण साहुणा भणितो – कीस अकण्णसुएण अच्छसि त्ति, उत्तरादुत्तरेण अधिकरणसंभवो ॥२६४६॥ कालासादणा गता।

---

१ धम्मस्स। २ सम्मत्तस्स। ३ व्वु।

इदाणिं भावासादणा –

सेहादीण अवण्णा, परउत्थियगम्म परिभवो लोए ।
भावासायण दोसा, सम्ममणाउंटणा चेव ॥२६४७॥

सेहादिणो विचिंतेज्ज जहा – एते अम्हं जेट्ठतरा आयरियस्स अवज्ञां करेंति तहा णज्जति णूणं एस पतितो, ते वि सेहा अवज्ञां करेज्ज, एवं ससिस्सेहिं परिभूतो परतित्थियाण वि गम्मो भवति, लोगे य परिभूतो भवति । एते भावासादणा दोसा। गुरुणो उवदेसपदाणे [1]सामणाउट्टंतस्स भावासादणा चेव ॥२६४७॥

"[2]मिच्छा पडिवज्जणा भावे" त्ति अस्य व्याख्या –

मिच्छापडिवत्तीए, जे भावा जत्थ होंति सब्भूया ।
तेसू वितहं पडिवज्जणा य आसायणा तम्हा ॥२६४८॥

मिच्छा अनृतं प्रतिपदनं प्रतिपत्तिः, जत्थेति दव्वादिएसु जीवादिपदत्थेसु वा सुत्त-ज्झयण-सुयक्खंधेसु वा, सब्भूया जे जिणपण्णत्ता भावा, ते गुरु अयाणंतो परिसामज्झे पण्णवेति, तत्थ उवदेसो सीसो तुण्हिक्को अच्छति, जाहे उट्ठिओ वक्खाणाओ ताहे सीसो एगंते गुरुणो सब्भावं साहति । अह सीसो तेसु पदत्थेसु-परिसामज्झे चेव वितहपडिवज्जणा एत्थ वुत्थाणं करेज्ज ताहे अविणयो भवति, अविणयपडिवत्तीए य तम्हा आसायणा भवति ।

अहवा – परिसामज्झे गुरू चोदितो वितहपडिवज्जणं करेज्ज, न सम्यक् प्रतिपद्यतीत्यर्थः । तम्हा सीसस्स आसायणा भवति ।

अहवा – गुरू जाणंतो चेव अण्णहा अत्थं पण्णवेति, मा परप्पवादी दोसं गेण्हेज्ज जहा सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो नत्थि उवओगा । एगोपयोगप्रतिपादनमित्यर्थः । तं च सेहतरातो जाणति – जहा अप-सिद्धंतं पण्णवेंति, तत्थ जति वितहं पडिवज्जति आसादणा सेहस्स ॥२६४८॥

चोदगाह – जमत्थं आयरिओ ण याणति तमत्थं सीसो कहं जाणति ?

भणति –

जंऽगारणगारत्ते, सुतं तु सहसंभुतं य जं किं चि ।
तं गुरु अण्णहकहणे, णेवमिदं मिच्छपडिवत्ती ॥२६४९॥

जं तेण सेहतराएण गिहत्थत्तणे सुएल्लयं, अणगारत्ते वा अण्णतो सुयं, अप्पणा वा ऊहितं, तं गुरुस्स अण्णहा कहितस्स सो भणेज्जा – ण एयं भवति त्ति, मिच्छापडिवत्तिओ आसादणा भवति ॥२६४९॥

एवं भणतो दोसो, इमं सुतं वऽण्णहिं मए एवं ।
सब्भूयमसब्भूए, एवं मिच्छाउ पडिवत्ती ॥२६५०॥

एवं गुरुपडिकूलं भणतो आसादणा दोसो भवति ।

---

१ सम्यग् अनावर्त्तयतः । २ गा० २६४२ ।

अहवा – सीसो गुरुं भणइ – तुज्झ एवं पण्णवेंतस्स समयविराहणा दोसो भवति । मम एयं सुयं अण्णायरियसमीवे । एवं पण्णविज्जंते समयविराहणा दोसो न भवति । एवं सीसस्स सब्भूयमसब्भूयए वा परिसामज्झे मिच्छापडिवत्तिओ आसादणा भवति ।

वितियं पढमे ततिए, य होति गेलण्णकज्जमादीसु ।
अद्धाणादी बितिए, ओसण्णादी चउत्थम्मि ॥२६५१॥

वितियंति अववायपदं, पढमेत्ति दव्वासायणा, ततिए त्ति कालासादणा, बितिए त्ति अद्धाणादिसु खेत्तासादणा, चउत्थे त्ति ओसण्णादिसु ठियस्स । तत्थ पढमततिय त्ति गेलण्णं पडुच्च वितियपदं भवति ॥२६५१॥

होज्ज गुरुओ गिलाणो, अपत्थदव्वं व तं च से इट्ठं ।
अविगडमदंसितं वा, भुंजे खद्धं व दलएज्जा ॥२६५२॥

गुरु गिलाणो, तस्स य जं अपत्थदव्वं तं लद्धं, ताहे तं अवियडितं अदंसियं वा सयं भुंजे, अण्णस्स वा अणापुच्छाए खद्धं खद्धं दलयति । मा सो रातिणिओ सयं भुंजिहिति, एवं गुरुरक्खणट्ठा अविणयं पि करेंतो सुद्धो ॥२६५२॥

कंटाइ-साहणट्ठा, अवथंभट्ठा वऽलीणो अद्धाणे ।
संबाधुवस्सए वा, विस्साम-गिलाण छेदसुए ॥२६५३॥

खेत्तासादणं पडुच्च अववातो भण्णति –
अद्धाणे कंटादि-साहणट्ठा पुरतो गच्छति ।
विसमे वा अवलंबणट्ठा पासतो अल्लीणो गच्छति ।
गिलाणस्स वा अवथंभणट्ठा अल्लीणो अच्छति ।
संबाधुवस्सए वा आसण्णठितो अच्छति गच्छति वा ।
आयरियस्स वा विस्सामणं करेंतो आसण्णं चिट्ठति संघट्टेति वा ।
गिलाणस्स उव्वत्तणादी करेंतो संघट्टणादी करेति आसण्णं वा चिट्ठति ।
छेयसुयं वा वक्खाणेंतो अप्पसद्दं वक्खाणेति मा अपरिणया सुणेहिति, ताहे सोतारा आसण्णं ठविज्जंति ॥२६५३॥

इमो कालाववादो –

काले गिलाणवावड, सेहस्स व सारियं भवे बाहिं ।
संबाधुवस्सए वा, अधिकरणाई उ (इ) मा दोसा ॥२६५४॥

राओ वा दिया वा गिलाणवावडो गुरुस्स वाहरंतस्स ण देज्ज सद्दं, सेहस्स वा सागारियं बाहिं अंतो ठितो सुणेंतो वि सद्दं ण देज्ज, मा सण्णायगा सरं पच्चभिजाणित्ता उप्पव्वाहिति । साहूहिं वा ओतप्रोतं संबाधुवस्सए या सज्जं अलभंतो उल्लंघिउं वयंतस्स वा अधिकरणादी दोसा तम्हा तत्थ ठियो चेव सद्दं करेज्जा ।

अहवा – गिहत्थसंबद्धे उवस्सए कारणठिया ण मे अधिकरणादि दोसा भविस्संति तम्हा आयरिओ सणियं वाहरति, तं च असुणंतो तुसिणीओ सुद्धो, अधिकरणदोसभया वा तुसिणीओ अच्छति तहा वि सुद्धो ॥२६५४॥

उल्लावं तु असत्तो, दाउं गिलाणो तहेव उट्ठेउं ।
तुसिणी तत्थ गओ वा, सुणेज्ज सो वाहरंतस्स ॥२६५५॥

दिवा रातो वा वाहरंतस्स गुरुस्स गिलाणो उल्लावं दाउमसत्तो गिलाणो तुसिणीओ अच्छेज्ज, उट्ठेउं वा असत्तो तत्थ गतो पडिसुणेज्ज । शब्दं ददातीत्यर्थः ॥२६५५॥

इदाणिं भावस्स अववादो भण्णति –

भणति रहे जइ एवं, हवेज्ज णिद्दोसमिहरहा दोसा ।
तुज्झे वि ताव ऊहह, भणति पगासे वि दढमूढे ॥२६५६॥

सेहतराएण आयरिओ परिसामज्झे ण वत्तव्वो जहा तुमं पण्णवेसि एवं ण भवति त्ति ।

तो कहिं तेण भाणियव्वं ?

उच्यते – "रहे" एगंते भणति जहाहं पण्णवेमि । जति एवं भण्णति तो णिद्दोसं । "इहरहा" जहा तुमं पण्णवेह एवं समयविराहणा दोसो भवति। तुब्भे वि मयाभिहितं अत्थं ऊहह–किं घडति ण घडतीति, ताव शब्दः परिमाणवाचकः, जहा इमेण मे पहेण गंतव्वं जावतितं दट्ठुं, एव इणमत्थं पुव्वावरेण ताव ऊहह जाव भवे अभिगओ ।

अहवा – पदपूरणे (वा) दढं-हढं जो मूढो भूतत्थं अपडिवज्जंतो पगासं परिसामज्झे वि भण्णति ॥२६५६॥

"[1]ओसण्णादी चउत्थम्मि" अस्य व्याख्या –

विरहे उ मठायंतं, ओसण्णं भणति परिसमज्झे वि ।
ण वि जाणसि हित्तादि व, नडपढियं किं तुहंतेणं ॥२६५७॥

ओसण्णो आयरिओ, विरहे एगंते बहु भणितो – "सगोरवविरमाहि" त्ति अट्ठायंतो अविरमंतेत्यर्थः, परिसामज्झे वि भण्णति – ण याणसि तुमं हितं वा अहियं वा णडपढितेण वा किं तुज्झतेण. पादेहिं वा संघट्टिज्जति जेण सो अवमाणितो चिंतेति एते मं देवयमिव पेक्खंता इदाणिं मं ओसण्णदोसेण दासमिव पासंति तं ण एतेसिं दोसो, मज्झ दोसो, उज्जमामि ॥२६५७॥

जे भिक्खू अणंतकाय-संजुत्तं आहारं आहारेइ, आहारेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५॥

अणंतकातो मूलकंदो, अल्लगफलादि वा एवमादिसम्मिस्सं जो भुंजति तस्स चउगुरुं ।

जे भिक्खू असणादी, भुंजेज्ज अणंतकायसंजुत्तं ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२६५८॥

आणादिया दोसा भवंति ।

इमे दोसा –

तं कायपरिच्चयती, तेण य भुत्तेण संजमं चयती ।
अतिखद्ध अणुचितेण य, विसूइगादीणि आयाए ॥२६५९॥

---

१ गा० २६५१ ।

इमा आयविराहणा – तेण रसालेण अतिखद्धेण अणुचित्तेण य विसूतियादी भवे मरेज्ज वा, अजीरंते वा अण्णतरो रोगातंको भवेज्ज, एवं आयविराहणा। जम्हा एते दोसा तम्हा ण भोत्तव्वं ॥२६५९॥

कारणे भुंजेज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाणरोहए वा, जयण इमा तत्थ कायव्वा ॥२६६०॥ पूर्ववत्

इमा वक्खमाण-जयणा –

ओमं ति-भागमद्धे, ति-भाग आयंबिले चउत्थादी।
निम्मिस्से मिस्से या, परित्तऽणंते य जा जतणा ॥२६६१॥

जहा पलंबसुत्ते वक्खमाणा, जहा वा पंढे भणिया तहा वत्तव्वा। इमो से अक्खरत्थो – ओमं एसणिज्जं भुंजति तिभागेण वा ऊणं एसणिज्जं भुंजति, अद्धं वा एसणिज्जं, तिभागं वा एसणिज्जं, आयंबिलेण वा अच्छति, चउत्थं वा करेति, ण य अणंतकायसम्मिस्सं भुंजति, जाहे णिमिस्सं ण लब्भति ताहे परित्तकायमिस्सं गेण्हति, जाहे तं पि ण लब्भति ताहे अणंतकायमिस्सं गेण्हति, जा य पणगादि जयणा सा दट्ठव्वा ॥२६६१॥

जे भिक्खू आहाकम्मं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

आधाकडं आहाकम्मं, तं जो भुंजति तस्स चउगुरुं आणादिणो य दोसा।

तस्स आहाकम्मस्स कहं संभवो हवेज्ज ?

इमो भण्णति –

साली-घय-गुल-गोरस, नवेसु वल्लीफलेसु जातेसु।
पुण्णट्ठ दाणसड्ढा, आहाकम्मे निमंतणया ॥२६६२॥

कस्स ति दाणसड्ढो अभिगमसड्ढस्स वा णवो साली घरे पवेसितो ताहे दाणसड्ढो चिंतेति – पुव्वं जतीण दाउं पच्छा अप्पणा परिभोगं काहामि त्ति आहाकम्मं करेज्ज। जहा सालीए एवं घते गुडे गोरसे वा तुंबादिवल्लिफलेसु जातेसु पुण्णणिमित्तं दाणसड्ढाति आहाकम्मं काउं साहुणो णिमतेज्ज ॥२६६२॥

तस्स य आहाकम्मस्स इमे दोसा –

आहाकम्मे तिविहे, आहारे उवधि वसहिमादीसु।
आहाराहाकम्मं, चउव्विधं होइ असणादी ॥२६६३॥

आहाकम्मं तिविधं – आहारे उवधि वसहीए य। आदिसद्दो णामादिभेदप्रदर्शनार्थः, उत्तरभेदप्रदर्शनार्थं वा। आहाराहाकम्मं चउव्विधं असणादियं ॥२६६३॥

उवही आहाकम्मं, वत्थे पाए य होइ णायव्वं।
वत्थे पंचविधं पुण, तिविहं पुण होइ पायम्मि ॥२६६४॥

उवधिआहाकम्मं दुविधं – वत्थे पादे य। तत्थ वत्थे पंचविहं – जंगियं भंगियं सणियं पत्तयं तिरीडपट्टं च। पादे तिविहं – लाउय दारुय मट्टियापादं च। एतेसिं वक्खाणं पूर्ववत् ॥२६६४॥

वसही आधाकम्मं, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य।
एक्केक्कं सत्तविहं, नायव्वं आणुपुव्वीए ॥२६६५॥

वसहीआहाकम्मं दुविधं – मूलगुणाहाकम्मं उत्तरगुणाहाकम्मं च।

मूलगुणे सत्तविहं इमं – पट्टीवंसो दो धारणाओ, चत्तारि य मूलवेलीओ।

उत्तरगुणे इमे सत्त – वंसग-कडण-ओकंचण-छावण-लेवण-दुवार-भूमिकम्मे य। एतेसिं वक्खाणं पूर्ववत् ॥२६६५॥

आहाकम्मस्स इमे एगट्ठिया –

आहा अधे य कम्मे, आयाकम्मे य अत्तकम्मे य।
तं पुण आहाकम्मं, णायव्वं कप्पती कस्स ॥२६६६॥

आहाए णामादिचउव्विहो णिक्खेवो।
दव्वाहा घणुं आहियं जीवा अग्गे आरोपिता इत्यर्थः, वइल्लाण वा खंधे जुगं आहितं।
भावाहा आहाकर्मग्रहणादात्मनि कर्म आहितं, आत्मा वा कर्मणि आहितः।

अहे कम्मे वि चउव्विहो निक्खेवो।
उच्चानीचे नीचतरे च द्रव्यं क्रियते तं दव्वाहे कम्मं।

आहाकम्मग्गहणातो जम्हा विसुद्धसंजमट्ठाणेहितो अप्पाणं अविसुद्धठाणेसु अहो अहो करेति तम्हा भावाहोकम्मं।

आयाहम्मे वि चउव्विधो निक्खेवो।
दव्वायाहम्मे अणुवउत्तो पाणातिवायं करेंतो।
भावाते णाण-दंसण-चरणा, तं हणंतो भावाताहम्मं।

अत्तकम्मे वि चउव्विहो निक्खेवो।
दव्वे अत्तकम्मं अणुवउत्तस्स किरिया।
भावे अत्तकम्मं आहाकम्मपरिणतो परकम्मं अत्तकम्मी करेति।
तं पुण आहाकम्मं कस्स पुरिसस्स कप्पति ण कप्पति वा ?

अहवा – कस्स तित्थे कथं कस्स कप्पति ण कप्पति वा ? ॥२६६६॥

आधाकम्मकारी इमं दुविधं उद्दिस्स करेज्जा – ओहेण विभागेण वा।

सो पुण ओहविभागो इमेहिं चउहिं दारेहिं अणुगंतव्वो –

संघस्स पुरिम-पच्छिम-समणाणं चेव होइ समणीणं।
चउण्हं उवस्सयाणं, कायव्व परूवणा होति ॥२६६७॥

आहाकम्मकारी सामण्णेण वा विसेसेण वा संघुद्देसं करेति। एवं समग-सामण्ण-विसेसेण वा

उद्दिस्सति। चउण्हं उवस्सयाणं सामण्णेण विसेसेण वा उद्देसं करेति। ते य इमे चउरो उवस्सया – पंचयाम-समणाण एगो, समणीण वितिओ, एवं चाउज्जामियाण वि दो, एवं चउरो ॥२६६७॥

संघं समुद्दिसित्ता, पढमो बितिओ य समण-समणीणं।
ततिओ उवस्सए खलु, चउत्थओ एगपुरिसं तु ॥२६६८॥

आहाकम्मकारी सामण्णे चउरो संकप्पेउं आहाकम्मं करेति – एगो संघं, बितिओ समण-समणीओ, ततिओ उवस्सए उद्दिसिउं करेति, चउत्थो एगपुरिसं उद्दिस्सति ॥२६६८॥

जदि सव्वं उद्दिसिउं, संघं तु करेति दोण्ह वि ण कप्पे।
अहवा सव्वे समणा, समणी वा तत्थ वि तहेव ॥२६६९॥

यदीत्यभ्युपगमे, सर्वमिति सामान्येन सर्वसंघं उद्दिसिउं करेति तो दोण्ह वि चउजाम-पंचजामाण न कप्पति।

अहवा – दो पुरिम-मज्झिमा।

अहवा – सव्वे समण-समणी य सामण्णेण उद्दिसति। तत्थे त्ति सामन्नुद्देसे तहेव जहा कडं संघस्स तहा समण-समणीण वि चउजाम-पंचजामाण वि सव्वेसि अकप्पं भवति ॥२६६९॥

विभागुद्देसे इमं विहाणं –

जइ पुण पुरिमं संघं, उद्दिसती मज्झिमस्स तो कप्पे।
मज्झिम उद्दिट्ठे पुण, दोण्हं पि अकप्पियं होइ ॥२६७०॥

जइ पुरिमं उसभसामिसंघं उद्दिसिउं करेति तो मज्झिम-बावीस-तित्थकराण संघस्स कप्पं भवति, पच्छिमाण अकप्पं।

अह मज्झिम-संघस्स उद्दिसिउं कडं तो दोण्ह वि पुरिम-मज्झिमाण अकप्पं।

अहवा – चउजाम-पंचजामाणं दोण्ह वि अकप्पं। पच्छिमुद्दिट्ठे पुरिम-पच्छिमाण अकप्पं मज्झिमाण कप्पं ॥२६७०॥

एमेव समणवग्गे, समणीवग्गे य पुव्वणिद्दिट्ठे।
मज्झिमगाणं कप्पे, तेसि कडं दोण्ह वि ण कप्पे ॥२६७१॥

पुव्वमिति रिसभसामिणो तित्थे जे समणा समणीओ वा ते उद्दिसिउं करेंति, तो तेसिं अकप्पं, मज्झिमाण पुण कप्पं। तेसिं मज्झिमाण कडं दोण्ह वि पुरिमाण मज्झिमाण अकप्पं ॥२६७०॥

पुरिसाणं एगस्स वि, कयं तु सव्वेसि पुरिम-चरिमाणं।
ण वि कप्पे ठवणा मेत्तगं तु गहणं तहिं णत्थि ॥२६७२॥

ओहेण एगपुरिसं समुद्दिस्स जं कयं तं सव्वेसिं पुरिम-पच्छिमाण अकप्पं।

मज्झिमाण विसेसो – एगेण गहिएण सेसाण तत्थ कप्पं भवति।

पुरिम-पच्छिमाण पुण एगेण वि गहिए सेसाण वि सव्वेसिं अकप्पं भवति "ठवणा" इति प्रज्ञापन-मात्रं नात्र संभवोऽस्तीत्यर्थः।

अह मज्झिमगं एगं उद्दिसिउं करेति पुरिम-पच्छिमाणं समण-समणीणं सव्वेसिं अकप्पं। मज्झिमाणं पुण तस्सेवेगस्स अकप्पं सेसाणं भवति ॥२६७२॥

एवमुवस्सयपुरिमे, उद्दिट्ठं तं ण पच्छिमा भुंजे।
मज्झिमतव्वज्जाणं, कप्पे उद्दिट्ठसमपुव्वा ॥२६७३॥

एवं जति सामण्णेण उवस्सयाणं करेति तो सव्वेसिं अकप्पं भवति।

अह पुरिमोवस्सए उद्दिसिउं करेति तो पुरिमाण-पच्छिमाण य सव्वेसिं अकप्पं, मज्झिमाणं पुण कप्पं भवति।

अह मज्झिमोवस्सए सव्वोउद्दिसिउं करेति तो मज्झिमाण पुण पुरिम-चरिमाण य सव्वेसिं अकप्पं चेव भवति।

"मज्झिमतव्वज्जाणं कप्पे" त्ति अस्य व्याख्या – जति मज्झिमसमणाण उवस्सए उद्दिसिउं करेति ते चेव समणे वज्जेउं मज्झिमाण चेव सेसगाण समण-समणिउवस्सगाण कप्पं भवतीत्यर्थः।

"उद्दिट्ठसमपुव्व" त्ति अस्य व्याख्या – पुव्व इति रिसभसामि वा।

अहवा–पंचजामा ते उदिट्ठसमा, तेषां न कल्पयतीत्यर्थः। एवं प्रायसं पुरिम-मज्झिमाण भणितं ॥२६७३॥

इमं तु प्रायसं मज्झिम-पच्छिमाणं भण्णति –

सव्वे समणा समणी, मज्झिमगा चेव पच्छिमा चेव।
मज्झिमग-समण-समणी, पच्छिमगा समण-समणीओ ॥२६७४॥

"सव्वे समणा समणी" एत्थ सामण्णेण भणिते सव्वेसिं अकप्पं।

"मज्झिमगा चेव" मज्झिमगाण समण-समणीण उद्दिट्ठं मज्झिमाण पच्छिमाण य सव्वेसिं अकप्पं।

"पच्छिमा चेव" पच्छिमाणं सव्वेसिं समण-समणीण य उद्दिट्ठं पच्छिमाण सव्वेसिं अकप्पं, मज्झिम-पासावच्चिज्जाण सव्वेसिं कप्पं।

मज्झिम-समणाण उद्दिट्ठं मज्झिम-समणीण कप्पं, सेसाणं सव्वेसिं अकप्पं।

मज्झिम-समणीण उद्दिट्ठं मज्झिम-समणाण चेव कप्पं, सेसाण सव्वेसिं अकप्पं।

पच्छिम-समणाण उद्दिट्ठं पच्छिमगाण समणाण समणीण य अकप्पं, मज्झिमगाण दोण्ह वि कप्पं।

पच्छिम-समणीण उद्दिट्ठे वि एवं चेव भाणियव्वं ॥२६७४॥

उवसग-गणित-विभावित, उज्जुगजड्डा य वंकजड्डा य।
मज्झिमग उज्जुपण्णा, पेच्छा सण्णाइयागमणं ॥२६७५॥

बहूणं उवस्सगाणं मज्झे पंच इति गणिया। अमुग इति नामेहिं विभातिया गणियविभातिएगु चउभंगो कायव्वो।

मज्झिमाण पढमभंगे गणियविभातिताण चेव अकप्पं, सेसाण कप्पं।

मज्झिमाण बितियभंगे जाव गणियप्पमाणेहिं ण गहियं ताव सव्वेसिं अकप्पं, तप्पमाणेहिं गहिते सेसाण कप्पं भवति।

मज्झिमाण ततियभंगे जावतिया सरिसणामा सव्वेसिं अकप्पं सेसाण कप्पं भवति ।

मज्झिमाण चउत्थभंगे सव्वेसिं अकप्पं भवति ।

चोदग आह – किं कारणं–चाउज्जामाण उद्दिट्ठवज्जाण कप्पं, पंचजामाण सव्वेसिं चेव अकप्पं ?

अत्रोच्यते – पुरिमा रिजु जड्डा य । पच्छिमा वंक जड्डा य । मज्झिमा उज्जुपण्णा णाणमंता य । तिविधाण वि साहूण णडपेच्छग-दिट्ठंतेण णिदरिसणं कज्जति । साहूण सण्णायगकुलागयाण गिहिणो उग्गमादिदोसे करेज्ज । तत्थ वि तिहा णिदरिसणं कज्जति ।।२६७५।।

नडपेच्छं दट्ठूणं, अवस्स आलोयणा ण से कप्पे ।
कउगाती सो पेच्छति, न ते वि पुरिमाण तो सव्वे ।।२६७६।।

णडविलंविणो णडा । पुरिमाण साहू भिक्खादिणिग्गता, णडं दट्ठूण उज्जुत्तणेणं आयरियाणं अवस्स आलोयणं देंति, आयरिएण य भणिओ ण वट्टति, ण साहूण णडपेक्खणा कप्पते काउं । आमं ति अब्भुवगता पुणो अडंतो कउआदी पेच्छति, छत्तो कउगो भण्णति, – आलोइए गुरूहिं भणितो – ण तुमं पेच्छनु ।

सो भण्णति – णडो वारितो ण कउगो, एस मया कउओ दिट्ठो ।

आयरिओ भणइ – कउओ वि ण कप्पते दट्ठुं ।

एवं उज्जुत्तणेण जावतितं पडिसिज्झति तावतियं वज्जेति । जाहे ण सव्वं कप्पति त्ति वारितो ताहे सव्वे णडा वज्जेति ।।२६७६।।

एमेव उग्गमादी, एक्केक्कणिवारितेतरे गिण्हे ।
सव्वे वि ण कप्पंति, त्ति वारिओ जा जियं चयति ।।२६७७।।

एमेव पुरिमाण उग्गमादिदोसं एक्केक्कं वारितो वज्जेइ, इतरं गेण्हति, जाहे वारिओ सव्वे वि उग्गमादिदोसा ण कप्पंति ताहे सव्वे जावज्जीवं परिच्चयति ।।२६७७।।

एवं सण्णायगा साहू वि एक्केक्को वारितो ठायति –

सण्णातगा वि उज्जुत्तणेण कस्स कडं तुज्झ एयं ति ।
मम उद्दिट्ठ ण कप्पति, कीतं अण्णस्स वा पकरे ।।२६७८।।

जहा साहू सण्णायगावलोयणेण सण्णायगकुलं गतो तदा सण्णायगा वि किंचि अब्भुच्चयं करेज्ज । साहुणा पुच्छिया कस्सेयं तुम्हे कयं, ते उज्जुत्तणेण कहयंति तुज्झमेयं ति । सो साहू भणति – मम उद्दिट्ठं भत्तं ण कप्पति, ताहे सो गिही कीयकडादि य करेति, अण्णस्स वा साहुस्स आहाकम्मादि करेज्ज ।।२६७८।।

सव्वेसि संजयाणं, उग्गमदोसा निवारिया सव्वे ।
इति कहिते पुरिमाणं, सव्वेसिं ते उ ण करेंति ।।२६७९।।

एवं गिहीण जाहे कहियं सव्वे उग्गमदोसा सव्वेसिं साहूणं ण कप्पंति ताहे ते गिहिणो सव्वे उग्गमदोसे सव्वेसिं साहूणं ण करेंति । इति उपप्रदर्शनार्थं । पुरिमा एव तिष्ठन्तीत्यर्थः ।।२६७९।।

"[1]उज्जु-जड्डुत्तणाण" इमं वक्खाणं -

उज्जुत्तणं से आलोयणाए जड्डत्तणं से जं भुंजे।
तज्जातिए ण जाणति, गिही वि अण्णस्स अण्णे वा ॥२६८०॥

जं से आलोएति तं से उज्जुत्तणं। जं तज्जातीए सव्वे दोसे ण वज्जेति एयं से मतीए जडत्तणं। गिहिणो वि जं अण्णस्स णिवारियस्समण्णं करेंति, अण्णो व उग्गमदोसे करेति, एयं सिं मतीए जड़त्तणं, जं पुण पुच्छित्ता फुडं साहंति एयं सिं उज्जुत्तणं ॥२६८०॥

"[2]मज्झिम-उज्जुपन्नाणं" इमं वक्खाणं -

उज्जुत्तणं से आलोयणाए पण्णा तु सेसवज्जणया।
सण्णायगा वि दोसेण करेंतण्णेण सव्वेसिं ॥२६८१॥

जं रहे पडिसेविउं आलोएति, एयं से उज्जुत्तणं। जं तज्जातीए सव्वे दोसे वज्जति, एयं से पण्णत्तणं। गिहिणो वि जहा एस एयस्स दोसो अकप्पो तहा तज्जातीया सव्वे अकप्पा, जहा एयस्स तहा सव्वसाहूणं। अण्णे उग्गमदोसे अण्णेसिं साधूणं ण कप्पंतीत्यर्थः ॥२६८१॥

"[3]पच्छिमा वंकजड्डु" त्ति अस्य व्याख्या -

वंका उ ण साहंती, पुट्ठा य भणंति उण्ह-कंटादी।
पाहुणग-सद्ध-ऊसव, गिहिणो वि य वाउलं तेवं ॥२६८२॥

वंकत्तणतो दोसे पडिसेविउं ण साहंति, नालोचयंति, जड्डुत्तणं से जं जाणंतो अजाणंतो वा आत्माऽतिचारे प्रवर्तते।

पुच्छिओ - तुमे णडो दिट्ठो ?

भणति - ण मे दिट्ठो।

तो किं तत्थ चिट्ठितो ?

भणति - तत्थ उण्हेणाभिहतो चिट्ठितो, कंटगो वा लग्गो, सो तत्थ चिट्ठतेणावणीतो।

गिहिणो वि पुच्छिता भणंति - पाहुणा आगता तेण मए अब्भुच्चओ कओ, अप्पणो कओ वा एरिसे भत्ते सद्धा, उस्सवो वा अज्ज अम्हाणं, एवं गिहिणो वाउलेंति-व्यामोहमुत्पादयंति, न सद्भावमाख्यायंतीत्यर्थः।

एतेण कारणेण चाउजाम-पंचजामाण आहाकम्मग्गहणे विसेसो कतो। एवं संजतीण वि संजय-सरिसगमो दट्ठव्वो ॥२६८२॥

एतेसामण्णतरं, आहाकम्मं तु गेण्हती जो उ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२६८३॥

वितियपदेण इमेहिं कारणेहिं भुंजेज्जा -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोहए वा, धितिं पडुच्चा व आहारे ॥२६८४॥

---

१ गा० २६७५। २ गा० २६७५। ३ गा० २६७५।

असिवगहिश्रो त्ति, तो पच्छा भोयणट्ठा । असिवगहितो वा, अलंभंतो ताहि वा असिवं तेण अणितो, श्रोमे वि अकव्वंतो रायदुट्ठे अप्पसारियं अच्छंतो, बोहिगभए भिक्खाए अणिगच्छंतो, गेलण्णे श्रोसवं पत्थभोयणं वा, अद्धाणे अद्धाणकप्पो असंथरंतो वा आहाकम्मलंभे गहणं करेज्ज । रोहए वि अप्फव्वंतो दुब्बल-धिती वा प्राणसंधारणट्ठा आहारे, अण्णतरं वा कारणं पडुच्च आहारेज्ज ॥२६८४॥

गिलाण अद्धाणेसु इमा वक्खा –

आयरिए अभिसेए, भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणाश्रो ।
तिक्खुत्तो अडविपएसे, चतुपरियट्टे ततो गहणं ॥२६८५॥
गुरुगो जावज्जीवं, सुद्धमसुद्धेण होइ कायव्वं ।
वसभे बारसवासा, अट्ठारस भिक्खुणो मासा ॥२६८६॥

आयरिश्रो गिलाणो सुद्धस्स अलाभे आहाकम्मं भयति सेवतीत्यर्थः । एवं अभिसेश्रो भिक्खू य । अद्धाणे पडिसेवणा पवेसउत्तिण्णा मज्झे वा तिक्खुत्तो हिंडिउं च परियट्टे पणगहाणीए असंथरंतो जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे गेण्हति । एवं न तस्स दोषेत्यर्थः ॥२६८६॥

जे भिक्खू पडुप्पण्णं निमित्तं वागरेति, वागरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू अणागयं निमित्तं वागरेति, वागरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

पडुप्पण्णं णाम वट्टमाणं लाभालाभाति वट्टमाणे वागरेति । अणागतं एप्पं णिमित्तं वागरेति-आगामस्स काले लाभाति वागरेति ।

छव्विहं णिमित्तं इमं –

लाभालाभ-सुह-दुक्ख-जीवित-मरण तीतवज्जाइं ।
गिहि-अण्णतित्थियाण व, जे भिक्खू वागरिज्जाणा ॥२६८७॥

लाभालाभं सुहं दुक्खं जीवितं मरणं-एताणि छ अतीतकालवज्जाणि वागरेति वर्तमान एप्ये इत्यर्थः । गिहीणं अण्णतित्थियाणं वा जो वागरेज्ज भिक्खू सो आणादिदोसे पावेज्ज ॥२६८७॥

छव्विह-वट्टमाणगप्रदर्शनार्थं –

पट्ठविश्रो मे अमुश्रो, लभति ण लब्भति व तस्सिमा वेला ।
वीमंसा दुक्खीहं, सुहीति अमुअं च ते दुक्खं ॥२६८८॥

अमुगो मया अमुगसमीवं पेसितो लाभणिमित्तं सो तत्थ तं लभेज्ज ण लभेज्ज ?

अहवा – इमा तस्स आगमणवेला, सो लद्धलाभो अलद्धलाभो वा आगच्छति ण वा ?
वीमंसट्ठा वा कोइ पुच्छेज्ज – किमहं सुही दुक्खी वा ?

अहवा – वट्टमाणकाले चेव वागरेति इमं ते सारीरं दुक्खं माणसं वा वट्टति ॥२६८८॥

जीवति मश्रो त्ति वा, संकितम्मि एगतरगस्स णिद्देसं ।
एवं होहिति तुज्झं, तस्स व लाभादश्रो एस्से ॥२६८९॥

को त्ति विदेसत्थो ण णज्जति जीवति मतो वा, एरिसे संकिते पुच्छितो एगतरणिद्देसं करेज्ज, एवं वट्टमाणे।

एस्से वि जस्स पुच्छिज्जति – सो पच्चक्खो परोक्खो वा।

पच्चक्खो भण्णति – तुज्झं एस्से काले एवं होहिति। लाभो अलाभो वा, सुहं दुक्खं वा, जीवियं मरणं वा।

परोक्खे तस्स–एस्से काले इमो लाभो अलाभो वा, सुहं दुक्खं, जीवितं मरणं वा भविस्सति ॥२६८९॥

जीविय त्ति भणिते –

आणंदं अपडिहयं, संखडिकरणं च उभयधा होइ।
खेत्तादि मरण कोट्टण, अधिकरणमणागयं जं च ॥२६९०॥

आणंदं अपडिहयं करेति वर्धमानकमित्यर्थः। मतो त्ति भणितो संखडिकरणं करेज्ज। एवं उभयहा अवि अधिकरणदोसो भवति।

अहवा – मतो त्ति भणिते खित्तचित्तो भवे मरति वा, उर-सिर-कुट्टणादि वा करेज्ज, मत्तिकिच्च-करणेसु वा अधिकरणं भवे।

अहवा – अणागते णिमित्ते वागरिते एते खित्तचित्तादिया दोसा भवंति ॥२६९०॥

जं च णिमित्त-बलेण कज्जसंधणं करेज्ज ॥२६९०॥

उच्छाहो विसीदंते, अगंतुकामस्स होति गमणं तु।
अहिकरण थिरीकणं, कय विक्कय सन्नियत्ती य ॥२६९१॥

अणागतणिमित्तवागरणेण कज्जे विसीदंतस्स उच्छाहो कतो भवति। लाभत्थिणो परदेसं अगंतुकामस्स अवस्स ते लाभो भविस्सति त्ति गमणं करेति। किसिमादि अधिकरणेसु विसीदंतस्स अवस्स वुड्ढी भविस्सति त्ति वागरिए अधिकरणे स्थैर्यं भवति।

अहवा – परदेसं गंतुकामस्स इहेव लाभो भविस्सति त्ति थिरीकते अधिकरणं भवति। इमं किणाहि इमं विक्किणाहि। इतो कम्मारंभातो सण्णियत्ताहि इमम्मि कम्मारंभे पयट्टसु, एवं ते लाभो भविस्सति। एवं अधिकरण दोसा ॥२६९१॥

इमे य दोसा –

आएस विसंवादे, पओस-णिच्छुभणमादि-वोच्छेओ।
अहिकरणं अण्णेण व, उड्डाहऽण्णाण-वातो य ॥२६९२॥

आएसे य विसंवतिए पदोसं गच्छेज्ज। वसहीओ वा णिच्छुभेज्ज। आहारादिवसहीण वा वोच्छेदं करेज्ज। अण्णेण वा णिमित्तिएण सद्धिं अधिकरणं भवे, अण्णेण वा णिमित्तिएण संवादिते साधूण अण्णाण-वादो भवति, उड्डाहो य भवेज्ज ॥२६९२॥

नियमा तिकालविसए, निमित्ते छव्विहे हवति दोसो।
सज्जं उ वट्टमाणे, आतुभए तत्थिमं णायं ॥२६९३॥

णियमा अवस्सं दोसो भवति, तिकालविसए अतीते वट्टमाणे एस्से य, छव्विहे लाभादिए सयमेव वर्तमानकाले आदेसे दोसो भवति, उभयमिति अप्पणो परस्स वा, तत्थिमं णातं दृष्टांत इत्यर्थः ॥२६६३॥

आकंपिता णिमित्तेण, भोइणी होतिए चिरगतम्मि ।
पुव्वभणितं कथंते, आगतरुट्ठो य वलवाते ॥२६६४॥
दाराभोगण एगागि, आगमो परियणस्स पच्चोणीं ।
पुच्छा य खमणकहणं, सादीयंकारसुविणादी ॥२६६५॥
कोहो वलवा-गब्भं, च पुच्छितो भणति पंचपुंडासो ।
फालण दिट्ठे जति णेवं तुह अवितहं कति वा ॥२६६६॥

एगो णिमित्तिओ तेण भोतिणी गामसामिणी आकंपिता अविसंवातिणिमित्तेण आउट्टिता । अण्णता सा भोतिणी भोतियं चिरगतं पुच्छति – कया सो भोतितो आगच्छति ? तेण कहियं – अमुगदिणे अमुगवेलाए आगच्छति । ताहे तस्स णेमित्तियपुव्वभणितं इत्थिमादिपरियाणे सव्वं कहेति ।

सती असती त्ति मे दारं, तस्स आभोगणट्ठा एगागी आगतो पेच्छति – सव्वपरियणो पच्चोणीए णिग्गतो अ, मग्गति ता पच्चोणी ।

तेण पुच्छियं – कहं ते णायं ?

तेहिं कहियं – एरिसो तारिसो खमगो णेमित्तिओ, तेण कहियं ।

सो आगतो तं वाहिरित्ता णिमित्तं पुच्छति ।

तेण वि से सुविणादिसादीयंकारं णिमित्तं अवितहं कहियं ।

सो भोतिओ तंमि कहिते ईसालुयभावेण रुट्ठो वडवाएसं पुच्छति – एस वलवा गब्भिणी, एतीए किं भविस्सति ?

तेण भणियं – पंचपुडो आसो भविस्सति । तेण तक्खणा चेव फालविया दिट्ठो ।
ताहे भोतितो भणति – "जइ एवं ण होतं तो तुह एवं पोट्टं फालियं होंतं ।" एवं अवितहणेमित्तिया केत्तिया भविस्संति, जम्हा एते दोसा तम्हा ण वागरे ॥२६६६॥

भवे कारणं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए वागरे भिक्खू ॥२६६७॥
एतेह संथरंतो, पणगादी कम्मऽइच्छितो संतो ।
एस्सेव पडुप्पण्णं, व भणति भद्देसु उवउत्तो ॥२६६८॥

एतेहिं कारणेहिं असंथरंतो पणगपरिहाणीए जाहे आहाकम्मं अइक्कंतो ताहे पुव्वं आगमिस्स णिमित्तं वागरेति भद्दगेसु अतीव उवउत्तो, पच्छा आगमिस्स पडुप्पण्णं ॥२६६८॥

जे भिक्खू सेहं अवहरइ, अवहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

सेहणिज्जो सेहो, जो तं अणाभव्वं अवहरति तस्स चउगुरुं । तं च सेहं ण लभति ।

सेहऽवहारो दुविहो, पव्वाविए अऽपव्वयंते य ।
एक्केक्को वि य दुविहो, पुरिसित्थिगतो य नायव्वो ॥२६९९॥

सेहावहारो दुविहो – पव्वतिते अपव्वतिते वा । पुणो दुविहो – एक्केक्को पुरिसित्थिभेदेण णायव्वो ॥२६९९॥

किह पुण तस्सावहारो हवेज्ज ? –

पव्वावणिज्ज बाहिं, ठवेत्तु भिक्खुस्स अतिगते संते ।
सेहस्स आसिआवण, अभिधारेंते य पावयणी ॥२७००॥

कोति पव्वावणिज्जं ससिहं सेहं घेत्तुं पट्ठितो । तं भिक्खाकाले एगत्थ गामे बाहिं ठवेउं भिक्खट्ठा पविट्ठो, सो य अण्णेण साहुणा सेहो दिट्ठो । ततो स तेणं विप्परिणामेउं आसियावितो । साधुविरहितो वा एगागी अभिधारेंतो वयंतो अंतरा अण्णेण विप्परिणामेउं पव्वावितो । एते दो वि जया पावयणी जाता तदा अप्पणा चेव अप्पणो दिसा-परिच्छेदं करिस्संति ॥२७००॥

जेण सो बहि-ट्ठितो दिट्ठो सो इमो –

सन्नातिगतो अद्धाणिओ व वंदणग पुच्छ सेहो मि ।
सो कत्थ मज्झ कज्जे, छायपिवासुस्स वा अडती ॥२७०१॥

सण्णाभूमिणिग्गतेण दिट्ठो, आदिसद्दातो भत्तादिपरिट्ठावणा-णिग्गतेण दिट्ठो ।
अहवा – केणइ अद्धाणणिग्गतेण दिट्ठो ।
सेहेण वंदितो साधू पुच्छति – को सि तुमं ? कतो वा आगतो ? कहिं वा पट्ठितो ?
सेहेण भणियं – अमुगेण साहुणा सद्धिं पट्ठितो पव्वज्जाभिप्पाएण ।
सो कत्थ साधू ?
सेहो भणति – मज्झ कज्जे छायस्स पिवासियस्स वा भत्तपाणट्ठा अडइ ॥२७०१॥

सो साधू भणाति –

मज्झमिणमण्णपाणं, भुंजसु(उवजीव)ऽणुकंपयाए सुद्धो उ ।
पुट्ठमपुट्ठे कहणे, एमेव य इयरहा दोसा ॥२७०२॥

जति सो साहू साहम्मिय त्ति अणुकंपाते भत्तपाणं ददाति तो सुद्धो । सेहेण पुच्छितो अपुच्छितो जइ धम्मं अणुकंपाए कहेति तो एमेव सुद्धो । अह अवहरणट्ठा भत्तं पाणं वा देति, धम्मं वा अक्खाति, तो से चउगुरुं पच्छित्तं, सेहं च ण लभति ॥२७०२॥

इमे य अवहरणपयोगा –

भत्ते पण्णवग निगूहणा य वाचार झंपणा चेव ।
पट्ठवण सयं हरणे, सेहेऽव्वत्ते य वत्ते य ॥२७०३॥

अवहरणट्ठाए – "मम संबंधं एरसइ" त्ति भत्तं से देति, धम्मं वा से पण्णवेइ । सो सेहो तस्स

आउट्टो भणति – तुज्झ समीवे निक्खमामि, किं तु कहिं वि मे गुविलपदेसे णिगूहह, तस्स हं पुरतो न ठायामि। ताहे सो तं वावारेति – अमुगत्थ णिलुक्काहिति। तत्थ णिलुक्कं साधू पलालादिणा झंपेति – स्थगयतीत्यर्थः।

अहवा – अण्णेहिं सद्धिं अण्णगामं पट्ठवेति। एगागिं वा पट्ठवेइ – "अमुगत्थ वच्चह अहमवि अमुगदिणे तत्थ एहामि"।

अहवा – सयमेव घेत्तुं अवहरति। एतेसु छसु पदेसु सेहे अव्वत्ते वत्ते य ॥२७०३॥

इमं पच्छित्तं –

गुरुओ चउलहु चउगुरु, छल्लहु छग्गुरुगमेव छेदो य।
भिक्खूगणाइरियाणं, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥२७०४॥

भिक्खू जति अव्वत्तसाहुस्स अवहरणट्ठा भत्तं देति मासगुरुं। धम्मस्स पण्णवणाते चउलहुं। णिगूहण-वयणे चउगुरुं। वावारणे छल्लहुं। झंपणे छग्गुरुं। पट्ठवणे सयं हरणे छेदो। एवं अव्वत्ते। वत्ते पुण चउलहुगाओ आढत्तं मूले ठायति। गणिग्गहणातो उवज्झातो तस्स चउलहुगा आढत्तं अणवट्ठे ठायति। आय-रियस्स चउगुरुगाढत्तं पारंचिए ठायति ॥२७०४॥ एवं ससहाए अवहरणं भणियं।

जो पुण असहाओ अभिधारंतो वयति तत्थिमं –

अभिहारेंत वयंतो, पुट्ठो वच्चामहं अमुगमूलं।
पण्णवण भत्तदाणं, तहेव सेसा पया णत्थि ॥२७०५॥

कोइ सेहो असहाओ एगागी कंचि आयरियं अभिधारंतो वच्चति। तेण अंतरा गामे पंथे वा साधू दिट्ठो, णीयावत्तं से वंदणं कतं।

तेण साहुणा पुच्छितो – कहिं वच्चसि ? कतो वा आगओ ?

तेण कहियं – अमुगायरियस्स सगासे पव्वयणट्ठा वच्चामि। जति भिक्खू वुग्गाहणट्ठा अव्वत्तस्स भत्तदाणं धारेति तो मासगुरुं, धम्म-पण्णवणाते चउलहुं। वत्ते चउलहुं चउगुरुगा। उवज्झायआयरियाणं-छल्लहु छग्गुरुगा। हेट्ठे एक्केक्कपदं हुसति। सेसा णिगूहणादिया पदा णत्थि। अवराहपदाभावातो पच्छित्तं पि ण विज्जति ॥२७०५॥ एस अपव्वाविए विधी भणितो।

इमो पव्वाविते –

पुरिसम्मि इत्थिगम्मि य, पव्वावितगम्मि एस चेव गमो।
णायव्वो णिरवसेसो, अव्वत्ते तहेव वत्ते य ॥२७०६॥

जो अपव्वाविए विही पव्वाविए वि एस चेव विधी। अव्वत्ते वत्ते य णिरवसेसो दट्ठव्वो ॥२७०६॥

एवं तु सो अवहितो, जाहे जातो सयं तु पावयणी।
णिक्कारणे य गहितो, वच्चति ताहे पुरिल्लाणं ॥२७०७॥

एवं जो अवहितो सो जाहे सयमेव पावयणी जातो अधीतानुयोगीत्यर्थः। एसो अण्णो वा जो णिक्कारणे केणति गहितो सो अप्पणो सयमेव दिसापरिच्छेदं काउं पुणो बोहिलाभट्ठताए पुरिल्लाण चेव वच्चति ॥२७०७॥

भत्तदाणादि अवहडस्स इमो अववादो भण्णति -

> अण्णस्स व असतीए, गुरुम्मि अब्भुज्जतेगतरजुत्ते ।
> धारेति तमेव गणं, जो य हडो कारणज्जाए ॥२७०८॥

जेण अवहडो तस्स गच्छे अण्णो आयरिओ णत्थि ।

अहवा - अत्थि सो अब्भुज्जयमरणेणं अब्भुज्जयविहारेण वा जुत्तो प्रतिपन्नेत्यर्थः । ताहे सो अवहडो तं चेव गणं धरेइ ण पुरिल्लाणं गच्छति । जइ केणइ आयरिएणं कारणजाएण अवहडो सो तं चेव गणं धरेइ, ण पुरिल्लाणं गच्छति ॥२७०८॥

एवं चेव विसेसियतरं भण्णति -

> कारणजाए अवहडो, गणं धरेमाणा सो हरंतस्स ।
> जावेगो निम्मातो, पच्छा से अप्पणो इच्छा ॥२७०९॥

जो कारणेण अवहडो [1]अण्णाभावे सो गणं धरेंतो हरंतस्स आभव्वो भवति । सो जेण कारणेण अवहडो जति तं कारणं ण पूरेति तो पुरिल्लाण चेव आभव्वो हवति, ण हरंतस्स । जो कारणेण अवहडो सो तम्मि गणे ताव अच्छति जाव एगो गीयत्थो णिम्मातो, पच्छा से अप्पणो इच्छा, तत्थ वा अच्छति, पुरिल्लाण वा गच्छति । इतरो पुण णिक्कारणावहडो एगम्मि णिम्माए णियमा पुरिल्लाण गच्छति, न तस्येच्छा इत्यर्थः ॥२७०९॥

> एतेसामण्णतरं, अवहारं जो करेज्ज सेहस्स ।
> सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२७१०॥

किं पुण तं कारणं जेण अवहारं करेति ?

> नाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुजोगे य ।
> सुत्तत्थजाणगस्सा, कप्पति सेहावहारो उ ॥२७११॥

कस्स ति आयरियस्स पुव्वगते वत्थुं पाहुडं वा कालियसुत्ते वि सुतखंधो अज्झयणं उद्देसो वा अत्थि, तमण्णस्स णत्थि । जति तं अण्णस्स ण संकामिज्जति तो वोच्छिज्जति । एवं नाऊण भत्तपाणपण्णवणादिएहिं अव्वत्तं वत्तं वा सुत्तजाणओ पुरिसो सेहावहारं करेज्ज । एवमादिकारणेसु कल्पते इत्यर्थः ॥२७११॥

> एमेव य इत्थीए, अभिधारंतीए तह वयंतीए ।
> वत्तऽव्वत्ताए गमो, जहेव पुरिसस्स णायव्वो ॥२७१२॥

एवं इत्थी वि अभिधारंती जा गच्छति ससहाई वा जा वयति । वत्ताए अव्वत्ताए या जहेव गमो पुरिसाण तहेव इत्थीए वि णायव्वो बोधव्वमित्यर्थः ॥२७१२॥

जे भिक्खू सेहं विप्परिणामेति, विप्परिणामेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

---

१ अन्य (गच्छाधिपति) अभावे ।

कोति सेहो अहमेतस्स आयरियस्स समीवे पव्वयामित्ति परिणतो, तं विविधैः प्रकारैरात्मानं तेन परिणामयति त्ति विपरिणामेति ।

अहवा – विविधप्रकारैरात्मानं परिणामयति । विगतपरिणामेत्ति विगतपरिणामं वा करोतीति विप्परिणामेति ।

विप्परिणामणसेहे, पव्वाविय‌ए यऽपव्वयंते य ।
एक्केक्का सा दुविहा, पुरिसित्थिगया य णायव्वा ॥२७१३॥ पूर्ववत्

तह चेवमिहारंते, वंदिय पुच्छा य भत्तपण्णवणा ।
तह वि असंवज्झंते, विप्परिणामो इमेहिं तु ॥२७१४॥

तत्थंति जहाऽवहारे सहायो अभिधारंतो वा कस्सइ आयरियस्स पासं वच्चइ, अंतरा य अण्णेण साहुणा दिट्ठो । सेहेण य विणयपुव्विं तस्स वंदणयं कयं ।

साहुणा पुच्छितो – कहिं वच्चसि ?

तेण भणियं – अमुगायरियस्स सगासं पव्वतिउं वच्चामि ।

ताहे सो तं विप्परिणामेति भत्तदाणधम्मपण्णवणाए य ॥२७१४॥

तह वि अपडिवज्जमाणं इमेहि विप्परिणामेति –

आहिंडए[1] विवित्ते[2], मद्दविए[3] जाति[4] लाभ[5] सुत[6] अत्थे[7] ।
पूइय[8] महणे[9] णेता[10], संगहकुसलो[11] कहक[12] वादी[13] ॥२७१५॥

"[1]आहिंडए" त्ति अस्य व्याख्या –

आहिंडति सो णिच्चं, वयं तु णाहिंडगा ण वत्थव्वा ।
अहवा वि स वत्थव्वो, अम्हे पुण अणियता वासा ॥२७१६॥

सो तम्मि विप्परिणामंतो भणइ–"मम पासे णिक्खमाहि। सो आहिंडिओ इओ इओ पडिहिंडइ, डालं टालिओ, तुमं पि तेण समं हिंडंतो सुत्तत्थाणं अणाभागी भविस्ससि । अम्हे पुन ण आहिंडगा, ण वत्थव्वा, जतो मासकप्पविहारेण विहरामो, तो अम्हेहिं समाणं सुहं अच्छिहिसि, अणिगच्छंतो सुत्तत्थाणं य अभागी न भविस्ससि ।"

अहवा – तस्स भावं णाऊण भणेज्जा – "सो वत्थव्वो एगगामणिवासी कूवमंडुक्को इव ण गाम-णगरादी पेच्छति । अम्हे पुण अणियतवासी, तुमं पि अम्हेहिं समाणं हिंडंतो णाणाविध-गाम-णगरागर-सन्निवेस-रायहाणि जाणवदे य पेच्छंतो अभियागकुसलो भविस्ससि, तहा सर-वावि-वप्पिणि-णदि-कूव-तडाग-काणणुज्जाण-कंदर-दरि-कुहर-पव्वते य णाणाविह-रुक्खसोभिए पेच्छंतो चक्खुसुहं पाविहिसि, तित्थकराण य तिलोगपूइयाण जम्मण-णिक्खमण-विहार-केवलुप्पाद-निव्वाणभूमीओ य पेच्छंतो दंसणसुद्धि काहिसि, तहा अण्णोण्णसाहुसमागमेण य सामायारिकुसलो भविस्ससि, सव्वापुव्वे य चेइए वंदंतो बोहिलाभं निज्जित्तेहिसि, अण्णोण्ण-सुय-दाणाभिगम-सड्ढेसु संजमाविरुद्धं विविध-वंजणोववेयमण्णं घय-गुल-दधि-क्षीरमादियं च विगतिपरिभोगं पाविहिसि"॥२७१६॥

1 सेस विवित्तादिपदानां व्याख्या गा० २७१७ ।

एमेव सेसएसु वि, पडिपक्खगएण णिंदती तं तु ।
जति वि य सो होति तहा, तह वि य विस्सासणा सा उ ॥२७१७॥

सेसा विवित्तमादिया पदा। जे तस्स सेहस्स अणुकूला ते अप्पणा दंसेति, पडिपक्खपदेहिं तं णिंदति। जस्स पासं पट्ठितो जहा सो णिंदति जइ वि तहा भवति तहावि विस्सासणा विपरिणामणा इत्यर्थः।

अम्हे विवित्ता णिरतियारा गुणाधेया।

सो अविवित्तो मूलगुणातियारेहिं संपण्णो सारंभो सपरिग्रह इत्यर्थः।

अम्हं आयरिओ अम्हे य मद्दवजुत्ता।

सो अप्पणो परिवारो य से कोहणो, अप्पे वि अवराहे कते भणति, णिच्छुभति वा।

इमे अम्हाणं आयरिया जातिकुलेण य संपण्णा, सव्वजणस्स पूयणिज्जा, गुरुगा य।

सो पुण जाइहीणो।

किं च-इमे अम्हाणं आयरिया लद्धिसंपण्णा, आहारोवकरणवसहीओ य जहा अभिलसिया उप्पज्जंति पकामं च णिच्चिंतेहिं अच्छियव्वं।

सो पुण अलद्धिओ, तस्स जे सीसा ते णिच्चं आहारोवकरणमादियाण अडंता सुत्तत्थाणं अभागिणो अगीयत्था य, तुमं पि तारिसो भविस्ससि।

इमे य अम्हाणं आयरिया बहुस्सुया अहो य रातो य वायणं पयच्छंति।

तस्स पुण णमोक्कार, चेइअवंदण-पडिक्कमणेसु वि संदेहो।

इमे य अम्हाणं आयरिया अत्थधारिणो अत्थपोरिसिं पयच्छंति सीसपडिच्छएहिं आकुला।

सो पुण अगीयत्थो, एगाणिएहिं तस्स समीवे अच्छियव्वं।

इमो य अम्हाणं आयरिओ रातीसर-तलवरमादिएहिं महाजणेण य पूजिओ।

तं पुण ण को ति जाणति पूएति वा, भय-मायवच्छओ विवाहेंटलो, अणाढितो सव्वलोयस्स।

इमो य अम्हाणं आयरिओ महाजणणेतारो।

सो य एगागी, णत्थि से को ति।

इमे अम्हाणं आयरिया बाल-वुड्ढ-सेह-दुब्बल-गिलाणादियाण संगहोवग्गहकुसला।

सो पुण ण किं चि अणुअत्तेति, असंगहितो अप्पापोसओ।

इमो य अम्हाणं आयरिओ अक्खेवणिमादियाहिं कहाहिं सरायपरिसाए धम्मं कहेउं समत्थो।

सो पुण वायकुंठो।

इमो परवादिमहणो ण कोइ उत्तरं दाउं समत्थो।

सो पुण एक्कं पि अक्खरं णिरवेक्खं वोत्तुं असत्तो।

एवं ताव अपुच्छितो विप्परिणामेति ॥२७१७॥

अह सो सेहो पुच्छेज्जा –

दिट्ठमदिट्ठे विदेसत्थ गिलाणे मंदधम्म अप्पसुए ।
णिप्फत्ति णत्थि तस्सा, तिविहं गरहं च सो कुणति ॥२७१८॥

कोति सेहो कंचि आयरियं अभिधारेंतो वच्चति, तेण अंतरा को ति साहू पुच्छितो–

अमुगा मे आयरिया कहिं चि दिट्ठा, सुता वा ?

सो साहू भणति किं तेहिं ?

सेहो भणाति – पव्वतितुकामो हं ताण समीवे ।

ताहे सो दिट्ठे वि भणाति – ण मे दिट्ठा ।

सुते वि भणाति – ण मे सुता ।

अघवा – सदेसत्थे वि भणाति विदेसं गता ।

अहवा – अगिलाणे वि भणाति गिलाणा । सो वच्चसे वितिज्जतो किं चि काहिसि ?

अघवा भणाति – जो तस्स पासे पव्वयति सो अवस्सं गिलाणो भवति ।

अहवा – जो तस्स पासे पव्वयति सो निच्च गिलाणवेयावच्चवावडो भवति ।

अहवा भणति – सो मंदधम्मो, किं तुज्झ मंदधम्मता रुच्चति ? किं च ते मंदधम्मेहिं सह संसग्गीए ?

अहवा भणति – सो अप्पसुतो, तुमं च गहणधारणा समत्थो । तस्स पासगतो समाणो किं काहिसि ?

अहवा – तुमं चेव तं पढाविहिसि ।

अहवा भणाति – तस्स णिप्फत्ती णत्थि । जं सो पव्वावेति सो मरति, उण्णिक्खमति वा ।

अहवा – से तिविधं – मणोवाक्कायगरहणं करेति ।

अहवा – णाणे दंसणे चरणे ।

एवं विप्परिणामेति, ण तम्हा एवं वदेज्ज । दिट्ठादिएसु सब्भावं चेव कहेज्ज ॥२७१८॥

इमा विही जइ पुच्छिते –

जति पुण तेण ण दिट्ठा, णेव सुया पुच्छितो भणति अण्णे ।
जदि वा गया विदेसं, सो साहति जत्थ ते विसए ॥२७१९॥

जो सेहेण पुच्छितो जति तेण आयरिया ण दिट्ठा, णेव सुता कत्थ गामे णगरे विसए वा, तो पुच्छितो भणति – अहं ण याणामि, अण्णे साहू पुच्छसु ।

अह जाणति जहा ते विदेसं गतो ताहे कहयति – जत्थ ते विसए एवं गामं णगरं पि कहयति ॥२७१९॥

सेसेसु तु सब्भावं, णाऽतिक्खति मंदधम्मवज्जेसु ।
गूहंते सब्भावं, विप्परिणति हीणकहणे य ॥२७२०॥

सेसेसु त्ति गिलाणादिएसु पदेसु जइ वि एसो गिलाणादिभावे वट्टति तहावि गिलाणादिभावे णाइक्खति मंद-धम्मं वज्जेउं, मंद-धम्मं पुण आतिक्खति । णाण-दंसण-चरित्तसंपण्णो वादी धम्मकही मद्दवो

विणीतो संगहोवग्गहकरी-एरिसे भावे गूहेंतस्स विप्परिणामणा भवति, अधिकं पि अण्णायरिएहिं तो जइ हीणं कहेति ।।२७२०।।

अहवा इमा गरहा –

सीसोकंपिय गरहा, हत्थविलंबिय अहो य हक्कारे ।
अच्छी कण्णा य दिसा, वेला णामं ण घेत्तव्वं ।।२७२१।।

पुच्छितो सीसं कंपेति, हत्थे वा धुणति, विलंविए वा कुणति, अहो कट्ठं ति वा भणति, अहो ण णज्जति वा, हा हा अहोऽकज्जं ति वा भणति, अच्छीणि वा मिल्लावेइ, अणिमिसणयणेण वा खणमेकं अच्छति, तण्णामग्गहणे वा हत्थेहिं कण्णे ठएविति ।

अहवा – भणाति – जाए दिसाए सो, ताए दिसाए वि ण ठायव्वं। णिरण्णेहिं इमाए वेलाए तस्स णामंपि ण घेत्तव्वं ।।२७२१।।

अहवा –

पव्वयसी आमं कस्स त्ति सगासे अमुगस्स णिद्दिट्ठे ।
आयपराहिकसंसी, उवहणइ परं इमेहिं तु ।।२७२२।।

कोइ सेहो कंचि अभिधारेंतो वच्चति, अंतरा अण्णो आयरिओ साहू वा दिट्ठो, वंदिओ पुच्छिओ – तुमं पव्वयसि ?

सेहो भणाति – "आमं" ति अणुमयत्थे ।

साहुणा भणियं – "कस्स सगासे ?"

सेहो भणाति – "अमुगायरियस्स" त्ति णिद्दिट्ठे ।

ताहे सो साधू अप्पाणं परसमीवातो अधिकं पसंसति ।।२७२२।।

परं च इमं उवाएहिं –

अवहुस्सुता यऽसद्धा, अहछंदी तेहि वा वि संसग्गी ।
ओसण्णो संसग्गी, वि तेहि एक्केक्कए दो दो ।।२७२३।।

अहं वहुस्सुओ, सो पुण अवहुस्सुओ ।

अहं सुद्धपाढी । सो असुद्धसुत्तो । सो वा अहाच्छंदी, अहाच्छंदेहिं वा संसग्गी, ओसण्णो वा ओसण्णेहि वा से संसग्गी । एवं पासत्थादिएसु वि दो दो दोसा वत्तव्वा ।।२७२३।।

[1]तिविहगरहा संदरिसणत्थं इमं भण्णति –

सीसोकंपण हत्थे, कण्णा अच्छि दिसि काइगा गरहा ।
वेला अहो अहंति य, नामं ति य वायिगी होति ।।२७२४।।

सीसो कंपण हत्थविलंवणाकण्णट्ठगाणं, अच्छीण णिमिल्लणं, अण्णदिसामुहेहिं ठायव्वं इति एसा सव्वा काइगी गरहा । इमाए वेलाए णामं ण घेत्तव्वं, अहोकारकरणं, हाहक्कारकरणं च, तस्स णामं पि न घेत्तव्वमिति । एसा वातिगी गरहा भवति ।।२७२४।।

---

१ गा० २७१८ ।

इमा माणसी गरहा –

अह माणसिगी गरहा, सूतिज्जति णेत्त-वत्त-रागेहिं ।
धीरत्तणेण य पुणो, अभिणंदति णेव तं वयणं ॥२७२५॥

असढस्स नत्थि सोही, सेहो पुण पुव्व परिणतो होइ ।
विप्परिणामे गुरुगा, आणाती अणंतसंसारी ॥२७२६॥

माणसी गरहा णेत्तविकारेण वक्त्रविकारेण य सूइज्जति – ज्ञायते इत्यर्थः ।

अहवा – पव्वयामि त्ति भणिते साहु त्ति वा सुट्ठुत्ति वा किच्चमेयं भवियाणं ति एवं णो अभिणंदति, धीरत्तणेण वा तुण्हिक्को अच्छति ॥२७२६॥

अहवा तिविहा गरहा –

णाणे दंसण चरणे, सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव ।
अह होति तिविह गरहा, काए वाए मणे चेव ॥२७२७॥

णाणं से गरहिति – णडपढिएण वा किं तस्स नाणेण। मिच्छद्दिट्ठी वा सो वप्पव्ववो (चव्वाओ) सातियारदंसणो । अचरित्ती सादियारचरित्ती वा ।

अहवा तिविहा गरहा – सुत्थे अत्थे उभए । सुत्ते खलियादि, अत्थं पुण परियच्छति । सुत्तं से अखलियादिगुणजुत्तं, अत्थे संकियादि, उभयं पि से असुद्धं, ण जाणति वा ।

अहवा –काइयादि इमा तिविहा गरहा – कायं से गरहति, हुंडादिसंठियं वा गरहति, [1]पोच्चडग-मादी मणसे गरहति, अणूहत्तणादी वा वहलपण्णो वा । एवं अण्णतरे गरहप्पगारे कते तस्स संका भवति । को जाणति किं पि सो करेति, अवस्समकज्जकारी जेण से अववादं गेण्हति ।

अहवा – से उप्पज्जति जस्स णामं ण घेत्तव्वं ता एयस्स दिसाए ण ठायव्वं, एते य साहुणो अलियं ण भणंति, अवस्सं सो दुराचारो, माऽहं पि तत्थ गतो विणसिस्सं, एत्थ अण्णत्थ वा पव्वयामि त्ति ॥२६२७॥

एयाणि य अण्णाणि य, विप्परिणामणपयाणि सेहस्स ।
उवहि-णियडिप्पहाणा, कुव्वंति अणुज्जुगा केई ॥२७२८॥

एताणि त्ति जाणि भणियाणि, अण्णाणि दव्व-खेत्त-काल-भावे य, सेहविप्परिणामणपदानि भवंति ।

तत्थ दव्वे – मणुण्ण आहारादियं देति ।

खेत्ततो – तप-वातिणि ट्ठाते मणुण्णकूले पदेसे ठवेति ।

कालओ – वेलाए चेव ददाति ।

भावतो – अणुकूलं चेव करेति, हियमहुरं वा उवदेसति, संवज्झणट्ठा एवं विप्पणामेंति ।

---

१ असारः मलिनं वा देशिभाषायाम् ।

किति, उवही ? तिविहा – कम्मोवधी भावोवधी सरीरोवधी । इह तु कम्मोवधीपहाणा तीव्र-कर्मोदए वर्तमाना इत्यर्थः । परस्य व्यंजकत्वेन अधिका कायक्रिया णियडी भण्णति । ऋजुभावविरहिता अणुज्जता ते एवं विप्परिणामणं कुर्वन्ति ॥२७२८॥

एएसामण्णतरं, विस्ससणं जे करेंति सेहस्स ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२७२९॥

एतेसिं पगाराणं जो अण्णतरेण विस्सासेइ – विप्परिणामेति सेहं सो आणादि दोसे पावति, चउगुरुयं च से पच्छित्तं, तं च सेहं ण लभति, पुरिल्लाणं चेव सो आहव्वो, साहम्मियतेणियं च दुल्लभबोधियं च कम्मं बंधति । असंखडे य आयसंजमविराहणा भवे । सेहविप्परिणामे य मिच्छत्तं । जम्हा एते दोसा तम्हा णो विप्परिणामे ॥२७२९॥ एवं पव्वइउकामे, पव्वइए वि एवं चेव, इत्थीए वि एवं चेव ।

वितियपदं चेवं –

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वकए कालियाणुओगे य ।
सुत्तत्थजाणगस्सा, कप्पति विस्सासणा ताहे ॥२७३०॥

जे भिक्खू दिसं अवहरति, अवहरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

दिशेति व्यपदेशः प्रव्रजनकाले उपस्थापनाकाले वा । यो आचार्य उपाध्यायो वा व्यपदिश्यते सा तस्य दिशा इत्यर्थः । तस्यापहारी – तं परित्यज्य अन्यमाचार्यं उपाध्यायं वा प्रतिपद्यते इत्यर्थः । संजतीए पवत्तिणी अवि या ।

रागेण व दोसेण व, दिसावहारं करेज्ज जे भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२७३१॥

रागेण किं चि णीयल्लगं पासित्ता रागो जातो ताहे तं दिसं गेण्हति, पुरिल्ले आयरिओवज्झाए उड्डेति । दोसेण कोति कम्हि त्ति कारणे उ दुसद्धो, समगो अण्णं आयरियं संदिसति । तस्स चउगुरुं पच्छित्तं आणादिणो दोसा भवंति ॥२७३१॥

अहवा – इमेण रागेण उद्दिसति –

जाति कुल रूव भासा, धण बल परिवार जस तवे लाभे ।
सत्त वय बुद्धि धारण, उग्गहसीले समायारी ॥२७३२॥

मातिपक्खविसुद्धा इब्भजाइ, पियपक्खविसुद्धं इक्खागुमादियं कुलं, सुविभत्तंगोवंग अहीणपंचेंदियत्तणं रूवं, मियमधुरफुडाभिहाणा भासा, धणिमं पव्वतिनो पव्वतियस्स वा तस्य धनमस्ति, उवचिय-मंस-सोणिओ बलवं, विरियंतरायखयोवसमेण वा बलवं, ससमय-परसमय-विसारयत्तणेण लोगे लोगुत्तरे य जसो, चउत्थादिणा बाहिरब्भंतरेण वा तवेण वा जुत्तो, आहारोवकरणलाभसंपण्णो, [1]विद्धि-आवत्तीसु य अणुस्सुओ अणिक्कमा य सत्तमंतो, दुदारज्झवसाणो वा सत्तमंतो, तीसति-वरिसो तिदसो इव वयवं, उप्पातियादिचउव्विहबुद्धिउववेदो बुद्धिमं, बहुं धरेति, बहुविधं धरेति, अणिस्सियं धरेइ, असंदिद्धं धरेइ, धुवं धरेइ, दुद्धरं धरेइ, एवं उग्गहे वि, खमादिसीलउववेतो सीलवं, चक्कवालसमायारीए जुत्तो कुसलो य ॥२७३२॥

---

१ वृद्धि ।

एवं –

एएहिं तु उववेयं, रागेण परं तु उद्दिसति कोई ।
जच्चाइविहूणं वा, उज्झति कोई परिभवेणं ॥२७३३॥

एतेहिं उववेयं कोइ रागेण अण्णं आयरियं उद्दिसति । एतेहिं चेव जच्चादिएहिं विहूणं कोति परिभवेण परिचयति, दोषेण इत्यर्थः ॥२७३३॥

अहवण मेत्तीपुव्वं, पूया लद्धि परिवारतो रागे ।
अहिगरणमसम्माणे, सभावनिट्ठं च दोसेणं ॥२७३४॥

अहवणशब्दो विकल्पप्रदर्शने, मित्तभावो मैत्री, तत्पूर्वं तन्निमित्तं, महायणपूइयं तेण वा सो पूतितो, आहारादिलद्धिसंपण्णं परिवारसंपण्णं वा । एतेहिं गुणेहिं उववेयं रागेण आयरियं पडिवज्जति । आयरिएण पुण सद्धि अधिकरणे उप्पण्णे, आयरिएण वा असम्माणिओ, सभावेण वा अणिट्ठं आयरियं परिच्चयति, एस दोसेण ॥२७३४॥

पुरिसांतरियं परिच्चाए अण्णमुद्दिसणे य इमे दोसा –

आणादिया य दोसा, विराहणा होति संजमायाए ।
दुल्लभबोहीयत्तं, वितियवयविराहणा चेव ॥२७३५॥

तित्थकराणं आणाभंगो, आदिसद्दातो अणवत्था, जहा एयस्स एयमसच्चं तहा अण्णं पि । एवं मिच्छत्तं जणयति । वितियपयविराहणे संजमविराहणा । अण्णेण भणितो "किमायरियं परिच्चयसि" त्ति, उत्तरोत्तरेण अधिकरणं । एत्थ आयसंजमविराहणा । दुल्लभबोधीयत्तं च णिव्वत्तेति । तम्हा दिसावहारं णो करे ॥२७३५॥

वितियपदेण अण्णमायरियं उद्दिसेज्जा वि –

वितियपदं आयरिए, ओसण्णोहाइए य कालगते ।
ओसण्णो छव्विहो खलु, वत्तमवत्तस्स मग्गणया ॥२७३६॥

जइ आयरिओ ओसण्णो जातो, ओधावितो वा, कालगतो वा, एए तिण्णि दारा । एत्थ ओसन्नो छव्विहो – पासत्थो, ओसन्नो, कुसीलो, संसत्तो, अहाछंदो, णितिओ य । तम्मि गच्छे आयरिओ जो संकप्पिओ वत्तो अवत्तो वा । सो वत्तावत्तो कहं गणं धरेति त्ति चउभंगेण मग्गणा कज्जति ।

सोलसवरिसारेण वयसा अवत्तो, परेण वत्तो ।

अणधीयणिसीहो अगीयत्थो सुत्तेण अव्वत्तो, सुत्तेण गीयत्थो वत्तो ।

सुत्तेण वि वत्तो, वएण वि वत्तो, पढमभंगो । वितिओ – सुअ-वत्तो, ण वएण ।

ततिओ – सुए णअवत्तो, वएण वत्तो । चउत्थो – दोहिं वि अवत्तो ॥२७३६॥

वत्ते खलु गीयत्थे, अव्वत्ते वएण अहवऽगीयत्थे ।
वत्तित्थ सार पेसण, अहवाऽऽसण्णे सयं गमणं ॥२७३७॥

वएण वत्तो गीयत्थे एस पढमभंगो, खलु पादपूरणे। अव्वत्ते वएण एस वितियभंगो [1]पढमभंगो।

अहवा – अगीयत्थे एस ततियभंगो पढमभंगिल्लो। उभयवत्तो तस्स इच्छा अण्णमायरियं उद्दिसति वा ण वा। सो वत्तो तमोसण्णायरियं सारेति – चोदयतीत्यर्थः। कहं ? अण्णं गीतं पेसेति।

अहवा – आसण्णे उ सयं गंतुं चोदेति, तं पेसेति, सयं वा गच्छति ॥२७३७॥

एगाह पणगपक्खे, चाउम्मासे वरिसे जत्थ वा मिलति।
चोदेति चोदवेति व, अणिच्छे वट्टावते सयं तु ॥२७३८॥

एगाहो त्ति, आसण्णे दिणे दिणे गंतुं सारेति, एगाहो वा एगतरं, पंचण्हं दिणाण वा सारेति। एवं पक्खे चाउम्मासे वरिसंते य जत्थ वा समोसरणादिसु मिलति तत्थ वा सारेति। सव्वहा अणिच्छंते तं गणं सयमेव वट्टावेति ॥२७३८॥

अण्णं च उद्दिसावे, पयावणट्ठा ण संगहट्ठाए।
जति णाम गारवेणं, मुएज्जऽणिट्ठे सयं ठाति ॥२७३९॥

सो उभयवत्तो अण्णं वा आयरियं उद्दिसति। स्यात् किमर्थं ? पतावणट्ठा, ण गच्छस्स संगहोवग्गहट्ठता, स्वयमेव शक्तमत्वात्। मम जीवंते चेव अण्णमायरियं उद्दिसति, जति णाम एरिसेण गारवेण ओसण्णत्तणं मुएज्जति तहावि साधु, सव्वहा अणिच्छे सयमेव आयरियपदे ठायति ॥२७३९॥ गतो पढमभंगो।

इदाणिं वितियभंगो –

सुयवत्तो वयावत्तो, भणति गणं तेऽहं धारिउमसत्तो।
सारेहि सगणमेयं, अण्णं च वयामु आयरियं ॥२७४०॥

सो सुत्तेण वत्तो वएण अव्वत्तो। सो तं आयरियं भणति – एयं ते गणं अहं अपडुप्पण्णवयत्तणाओ य धारेउं असत्तो, एहि तुमं एयं सगणं सारेहि।

अहवा – ण सारेहि तो अम्हे अण्णं आयरियं वयामो इत्यर्थः ॥२७४०॥

आयरिय उवज्झायं, इच्छंते अप्पणो य असमत्थो।
तिगसंवच्छरमद्धं, कुल-गण-संघे दिसाबंधो ॥२७४१॥

अपडुप्पण्णवयत्तणातो गणं वट्टावेउमसमत्थो अण्णे आयरिओवज्झाए उद्दिसिउमिच्छंतो पुव्वायरियं भणाति – अम्हे अण्णस्स आयरियस्स णो उवसंपज्जामो, सो णे उवसंपण्णाण अम्हं सचित्तादी हरति, तुमं जति सगणं ण सारेसि तो अम्हे [2]णिसट्ठं चेव अण्णं आयरियं पडिवज्जामो।

कुलिच्चं कुलसमवायं काउं कुले उवट्ठायंति, ताहे कुलेण जो दत्तो स तेसिं तिण्णि वरिसाणि सचित्तादि णो हरति ॥२७४१॥

---

१ प्रथमद्वारे। २ निदर्शकं।

तिण्हं वरिसाणं परतो इमा विधी –

सच्चित्तादि हरंति ण, कुलं पि णेच्छामो जं कुलं तुज्झं ।
वच्चामो अण्णगणं, संघं वा जति तुमं ण ठासि ॥२७४२॥

पुव्वायरियस्स अग्गतो भणितं – जं तुह कुलं तं कुलिच्चो अम्हे तिण्ह वरिसाणं उवरि सचित्तादि हरति, जइ तुमं अम्हायरिओ ण ठासि तो अम्हे अतो वि परतो गणं संघं वा दूरतरं वयामो । ताहे गणायरियं उद्दिसावेति, गणसमवाए वा उवट्ठायंति । सो वि संवच्छरं सचित्तादी ण हरति, एवं संघे उवट्ठायंति, सो वि छम्मासं सचित्तादी ण हरति, एवं बितियपदेण दिसावहारं करेति ॥२७४२॥

एवं पि अठायंतो, तावेतुं अद्धपंचमे वरिसे ।
सयमेव धरेंति गणं, अणुलोमेणं च णं सारे ॥२७४३॥

एवं अद्धपंचमे वरिसे पुव्वायरियं चोदणाहिं "तावेउं" अवतावेउं जाहे सो ण ठाइ ताहे अद्धपंचमेहिं वरिसेहिं वयवत्तीभूतो सयमेव गणं धरेति, जत्थ य पासेति तत्थ य पुव्वायरियं अणुलोमेहिं वयणेहिं सारेति – चोदयतीत्यर्थः ॥२७४३॥

अहव जति अत्थि थेरा, सत्ता परियट्टिउण तं गच्छं ।
दुहतो वत्त सरिसओ, तस्स उ गमओ मुणेयव्वो ॥२७४४॥

अहविन्ययं विकल्पवाची, अप्पणा गीयत्थो, अण्णे य से थेरा गच्छपरियट्टगा अत्थि, तो अण्णं आयरियं ण उद्दिसंति ।

कम्हा ण उद्दिसंति ? भण्णति – जतो से पढमभंगसरिसो चेव एस गमो भवति ॥२७४४॥ गतो बितियभंगो ।

इदाणि ततियभंगो –

वत्तवतो उ अगीओ, जति थेरा तत्थ केइ गीयत्था ।
तेसंतिए पढंतो, चोदिति सि असति अण्णत्थ ॥२७४५॥

जो पुण वयसा प्राप्तप्रौढवयो वत्तो अगीयत्थो पुण जइ य सगच्छे थेरा गीयत्था तो सो तेहिं थेराणं अंतिए समीवे पढंतो गच्छस्स चोदणातिसारणं करेति, ओसण्णायरियं च चोदेति, तेसि गीयत्थथेराणं असति गणं घेत्तुं अघेत्तुं वा अण्णायरियसमीवे उवसंपज्जति सुत्तट्ठाणं अट्ठा ॥२७४५॥ गतो ततियभंगो ।

इदाणि चउत्थो –

जो पुण उभयावत्तो, पवट्ठावग असति सो उ उद्दिसति ।
सव्वे वि उद्दिसंता, मोत्तूण इमे तु उद्दिसति ॥२७४६॥

जो पुण वएण सुत्तेण अव्वत्तो सो गणवट्टावगस्स असति अण्णं आयरियं उद्दिसति – उवसंपज्जते इत्यर्थः एते चउभंगिल्ला सव्वे वि इमे मोत्तुं उद्दिसंति ॥२७४६॥

संविग्गमगीयत्थं, असंविग्गं खलु तहेव गीयत्थं ।
असंविग्गमगीयत्थं, उद्दिसमाणस्स चउगुरुगा ॥२७४७॥

संविग्गं अगीयत्थं, असंविग्गं गीयत्थं, असंविग्गं अगीयत्थं एते आयरि-उवज्झायत्तेण उद्दिसंतस्स चउगुरुगं भवति । तस्स य चउगुरुगादि ॥२७४७॥

तस्स कालपरिमाणं इमं –

सत्तरत्तं तवो होइ, तओ छेदो पहावती ।
छेदेण छिण्णपरियाए, ततो मूलं ततो दुगं ॥२७४८॥

एते अजोग्गे उद्दिसिउं अण्णाउट्टंतस्स सत्तदिणे चउगुरु भवति ।
अण्णे सत्तदिणे छल्लहुं, अण्णे सत्तदिणे छग्गुरुं ।

ततो परं अण्णे सत्तदिणे चउगुरुछेदो । एवं छल्लहु छग्गुरुगा वि छेदा सत्तदिणे नेया ।

ततो एक्केक्कं दिणं मूलं अणवट्ठा पारंचीया भवंति ।

अहवा – छग्गुरुगतवोवरि छग्गुरुगो चेव छेदो सत्तदिणे, ततो मूलअणवट्ठपारंचिया एक्केक्कं दिणं ।

अहवा – छग्गुरुगतवोवरि पणगादिओ छेदो सत्त सत्त दिणेसु णेयो, ततो परं मूलं अणवट्ठपारंचिया । एयं पच्छित्तं वियाणमाणेण संविग्गो गीयत्थो उद्दिसियव्वो ॥२७४८॥

छट्ठाणविरहियं वा, संविग्गं वा वि वयति गीयत्थं ।
चउरो य अणुग्घाया, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥२७४९॥

छट्ठाणविरहियं संविग्गं गीयत्थं सदोसं जति उद्दिसति तो चउगुरुगा पायच्छित्तं आणादिया य दोसा भवंति ॥२७४९॥

"छट्ठाणविरहियं" अस्य व्याख्या –

छट्ठाणा जा णितिओ, तव्विरहितकाहियादिया चउरो ।
ते वि य उद्दिसमाणा, छट्ठाणगयाण जे दोसा ॥२७५०॥

पासत्थो उस्सण्णो कुसीलो संसत्तो अहाच्छंदो णितितो य–एतेहिं छहिं ठाणेहिं विरहितो सदोसो को भवति ? भण्णति – काहियादिया चउरो । काहीए मामाए संपसारए पासणिए ।

अहवा – काहिए पासणिए मामाए अकयकिरिए । एते उद्दिसमाणस्स ते चेव दोसा जे छट्ठाणगते भणिया ॥२७५०॥ ओसण्णे त्ति गयं ।

इदाणिं "[1]ओहातिय-कालगते" त्ति दो दारा –

ओहातिय-कालगते, जाहिच्छा ताहे उद्दिसावेति ।
अव्वत्ते तिविहे वी, णियमा पुण संगहट्ठाए ॥२७५१॥

जति वि आयरिओ ओहातितो । ओहावणं च दुविधं – सलिंगेण वा गिहत्थलिंगेण वा । कालगए वा आयरिए जो पढमिल्लेसु तिसु भंगेसु अव्वत्ता तिण्णि भणिया तेसिं जाहे इच्छा आयरियउद्देसे ताहे उद्दिसावेति अण्णमायरियं पडिवज्जंति त्ति। (जे उभयतो अवत्ता) ते पुण अव्वत्तत्तणाए णियमा गच्छसंगहट्ठाए अण्णमायरियं पडिवज्जंति ॥२७५१॥ एस भिक्खू भणितो ।

---

१ गा० २७३६ ।

आयरिय-उवज्झाएसु इमो विधी –

तीसु वि दीवितकज्जा, विसज्जिया जति य तस्स तं णत्थि ।
णिक्खिविय वयंति दुवे, भिक्खू किं दाणि णिक्खिवितुं ॥२७५२॥

दोण्हट्ठाए दोण्ह वि, णिक्खिवणा होति उज्जमंतेसु ।
सीयंतेसु तु सगणो, वच्चति मा ते विणासेज्ज ॥२७५३॥

वत्तम्मि जो गमो खलु, गणवच्छे सो गमो उ आयरिए ।
णिक्खमणे तम्मि वत्ता, जमुद्दिसे तम्मि ते पच्छा ॥२७५४॥

इह गणावच्छेतितो उवज्झाओ । जया उवज्झाओ आयरिओ वा अण्णं आयरियं उद्दिसति ताहे जो उभयवत्तम्मि भिक्खुम्मि विधी, सच्चेव गणावच्छेए आयरिए य विधी दट्ठव्वो । णवरं–गणणिक्खेवं काउं वयंति । सगणे जे अण्णआयरिय-उवज्झाया संविग्गा गीयत्था ते तेसिं गणणिक्खेवं करेंति । असंविग्गा अगीता तेसु जति निक्खिवंति तो तेण णिक्खिप्पमाणा चत्ता भवंति । तम्हा असंविग्गाऽगीतेसु ण णिक्खिवे । अण्णाभावे सगणो चेव वच्चति । जमुद्दिसति आयरियं तम्मि ते "तम्मि" त्ति तस्य, ते सर्वे शिष्या भवंति – पच्छित्तण उवसंपणकालाओ पच्छाउवसंपज्जणकालादारभ्येत्यर्थः ॥२७५४॥

ओहावित ओसण्णे, भणति अणाहा वयं विणा तुज्झे ।
कम-सीसमसागरिते, दुप्पडियरगं जतो तिण्हं ॥२७५५॥

ओहाइयं ओसण्णं वा आयरियं जत्थ पासति तत्थिमं भणति – तुज्झेहिं विणा अणाहा वयं, वयमित्यात्मनिर्देशे, असागारियपदेसे तस्स ओसण्णोहातितायरियस्स कमेसु पादेसु सीसेण णिवडति, भणइ – "एहि ! पसादेण अब्भुट्ठेह, सणाहीकरेह अम्हे, मा मुयमाउ य डिंभयं पि व इओ तओ दुलुदुलेमो ।

सीसो पुच्छति – तस्स गिही-भूयस्स अचारित्तिणो किं पादेसु णिवडिज्जति ?

आयरिओ भणति – दुप्पडियरगं जओ तिण्ह मातु पितु धम्मायरियस्स य । एते परमोवकारिणो । एतेसिं दुक्खेण पच्चुवकारो काउं सक्कति ॥२७५५॥

किं चान्यत् –

जो जेण जम्मि ठाणम्मि ठावितो दंसणे व चरणे वा ।
सो तं ततो चुयं, तम्मि चेव काउं भवे णिरिणो ॥२७५६॥

जो जेण धम्मोवदेसप्पदाणादिणा दंसणे चरणे वा ठावितो सो तं गुरुं दंसण-चरणेहिंतो चुयं तेसु चेव दंसग-चरणेसु ठाविउं णिग्गयरिणो णिरिणी भवति – कृतप्रत्युपकारेत्यर्थः ॥२७५६॥

जया आयरिय उवज्झाया गणपरिवुडा अण्णायरियं उवसंपज्जंति तदा इमो विधी –

णिक्खिवणा अप्पाणे, परे य संतेसु तस्स ते देंति ।
संघाडते असंते, सो वि न वावारऽणा पुच्छा ॥२७५७॥

जदा तेहिं आयरिय-उवज्झाएहिं आलोयणप्पदाणेण अप्पा उवणिक्खित्तो भवति, तदा भणंति – इमे य मे साहू, एस परिणिक्खेवो। तेण वि आयरिएण अप्पणो संतेसु साहूसु ण घेत्तव्वा, तस्स चेव ते देति। अह वत्थव्वायरियस्स असती साहूण ताहे सव्वे ते घेत्तुं पडिच्छायरियस्स एगं संघाडगं कप्पागं देति। सो वि य पाडिच्छायरिओ वत्थव्वायरियस्स अणापुच्छाए ते सिस्से ण वावारेति पेसणादिसु ॥२७५७॥

जे भिक्खू दिसं विप्परिणामेइ, विप्परिणामेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

इमा सुत्तस्स सुत्तेण सह संबंधगाहा –

सयमेव य अवहारो, होति दिसाए ण मे गुरू सो तु ।
अह भणिता विप्परिणामणा उ अण्णेसिमा होति ॥२७५८॥

सयमिति स्वयं अतिक्रान्तसूत्रे विप्परिणामणा आत्मगता अभिहिता, इमा पुण वक्खमाणसुत्ते अण्णे अण्णस्स दिसाविप्परिणामणं करेति ॥२७५८॥

रागेण व दोसेण व, विप्परिणामं करेति जे भिक्खू ।
दुविहं तिविह दिसाए, सो पावति आणमादीणि ॥२७५९॥

दिसं विप्परिणामेति स रागेण वा दोसेण वा ।

रागेण तम्मि सेहे अज्झोववातो गाढं ताहे तेण रागेण विप्परिणामेउं अप्पणो अंतेण कड्ढेति ।

दोसेण पदुट्ठो मा तस्स सीसो भवउ त्ति विप्परिणामेति । आयरियोवज्झाया दुविहा दिसा साहूणं । आयरियोवज्झाया पवत्तिणी य तिविहा संजतीण दिसा, एया दिसा विप्परिणामेंतस्स आणादिया दोसा ॥२७५९॥

सो पुण इमेहिं विप्परिणामेति –

डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्मेहो दमग मंदबुद्धि त्ति ।
अवि यऽप्पलाभलद्धी, सीसो परिभवति आयरियं ॥२७६०॥

"डहरो" त्ति अस्य व्याख्या –

डहरो एस तव गुरू, तुमं च थेरो न जुज्जते जोगो ।
अविपक्कबुद्धि एसो, वए करेज्जा व जं किं चि ॥२७६१॥

कोति सेहो परिणयवओ तरुणायरियस्स समीवे पव्वतितुकामो अण्णेण भण्णति – "डहरो एस तव गुरु तुमं च परिणयवओ, णेय आयरिय-सीससंजोगो जुज्जति, कहं पुत्त-णत्तुअ-समाणस्स सीसो भविस्ससि ? कहं वा विणयं काहिसि ? किं च ते सयणादिजणो भणीहिति" त्ति ।

अहवा भणाति – सो डहरो अविपक्कबुद्धि, अविपक्कबुद्धित्तणेण य अकज्जं पि कज्जं वदति, अविपक्कबुद्धित्तणातो जं किं चि दोसं करेज्ज । एवं विप्परिणामेति ।

अहवा – सो विप्परिणामंतो सब्भूतं वा किंचि दोसं वदे, असब्भूतं वा किंचि दोसं वएज्ज ॥२७६१॥

एमेव सेसेएसु वि, तं निंदंतो सयं परं वा वि ।
संतेण असंतेण व, पसंसए तं कुलादीहिं ॥२७६२॥

सेसा कुलादिया पदा, तेहिं कुलादिएहिं पदेहिं तं णिंदति। जस्स उवट्ठितो सो पुण सम्रो परम्रो वा संतेहिं वा असंतेहिं कुलादिएहिं जस्स पट्ठो सयं परं व तं णिंदति। तस्स सेहस्स जमुद्दिसति तम्मि संतेहिं वा असंतेहिं वा सयं परायगं वा संसति।

इमो कुलीणो, सो अकुलीणो।

इमो मेहावी, सो दुम्मेहो।

इमो ईसर-णिक्खंतो, सो दमगो।

अहवा – इमो वत्थपत्तादिएहिं ईसरो, सो दमगो।

ईमो बुद्धिसंपण्णो, सो अबुद्धिमं।

अपि चासौ अल्पलाभलद्धी, इमो सलद्धिमं।

इमेहिं कारणेहिं सिस्सो, परो वा परिभवति आयरियं।

अहवा – पसंसते कुलादीहिं सेहं – तं कुलमंतो सो अकुलजो।

एवं सेसपदेसु वि ॥२७६२॥

कारणे विप्परिणामणं पि करेज्ज –

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वकए कालियाणुजोगे य।
सुत्तत्थ जाणगस्सा, कप्पति विस्सासणा ताहे ॥२७६३॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू वहियावासियं आदेसं परं ति-रायाओ अविफालेत्ता संवसावेति, संवसावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

आगतो आदेसं करोतीति आएसो, प्राघूर्णकमित्यर्थः। सो य अण्णगच्छवासी वहियावासी भण्णति। तमागतं परतो तिरायातो, परतो तिण्हं दिणाणं ति, अविफालिय "विप्फालणा" णाम वियडणा – किं निमित्तं आगता? अणज्जंतो वा भदंत? कतो आगता? कहिं वा वच्चह? एवं अविफालेंतस्स चउत्थदिणे चउगुरुं भवति, आणादिणो य दोसा।

वहियऽण्णगच्छवासी, आदेसं आगयं तु जो संतं।
तिण्ह दिवसाण परतो, ण पुच्छति संवसाणादी ॥२७६४॥ गतार्थाः

आरतो अविप्फालेंतस्स दोसा –

पढमदिण वितिय-ततिए, लहु गुरु लहुगा य सुत्त तेण परं।
संविग्गमणुण्णितरे, व होंतऽपुच्छे इमे दोसा ॥२७६५॥

पढमदिणे अविफालेंतस्स मासलहुं, वितियदिणे मासगुरुं, ततियदिणे चउलहुं, "तेण परं" ति – चउत्थ दिणे सुत्तणिवातो चउगुरुमित्यर्थः। संविग्गो उज्जमंतो, मणुण्णो संभोतितो, इयरो असंभोतितो पासत्था-दिगो वा।

एए जति अपुच्छितो संवासेइ तो इमे दोसा भवंति ॥२७६५॥

उवचरग अहिमरे वा, छेन्नतितो तेण मेहुणट्ठी वा ।
रायावक्कारी वा, पउत्तओ भावतेणो वा ॥२७६६॥

कताइ सो तेण वेसग्गहणेणं [1]उवचरो भंडितो गच्छति, [2]अहिमरो वंदिओ गच्छति, छेवतितो असंविग्गहितो भण्णति, सपक्खपरपक्खातो तेणित्तुमागतो, तेणगो वा गच्छति, मेहुणं सेवित्तुमागतो, मेहुणट्ठी वा गच्छति; रण्णो वा अवकारं काउमागतो, रण्णो वा अवकारकारणाए गच्छति, वा विकप्पो, आयरियस्स वा उदायिमारकवत्, भावतेणो सिद्धंतावहरणट्ठताए केणति पउत्तो आगतो, अप्पणा वा गोविंदवाचकवत्, एवमादि दोसा भवंति ॥२७६६॥

अपुट्ठे पुच्छितो वा इमं भणे –

उवसंपयावराहे, कज्जे कारणिय अट्ठजाते वा ।
बहिया उ गच्छवासिस्स दीवणा एवमादीहिं ॥२७६७॥

तुज्झं चेव उवसंपज्जणट्ठा आगतो, अवराहालोयणं वा दाहामि त्ति आगतो, कुल-गण-संघकज्जेण वा, असिवादीहिं वा कारणेहिं आगतो, अट्ठजायणिमित्तेण वा आगतोऽहं । सो बहिया गच्छवासी विप्फालितो एवमादी कारणे दीविज्जा, आयरिओ वि विप्फालणा एवमाइकारणे सुहं जाणति । कारणे तिण्ह दिणाणं परतो न विप्फाले, आलोयणं वा न पडिच्छे ॥२७६७॥

कज्जे भत्तपरिण्णा, गिलाण राया य धम्मकही वादी ।
छम्मासादुक्कोसा, तेसिं तु वइक्कमे गुरुगा ॥२७६८॥

कुल-गण-संघ-कज्जेण आयरिओ वावडो न विप्फालेति । भत्तपरिण्णी, अणसणोवविट्ठो, तत्थ वा वाउलो, गिलाणकज्जेण वावडो, दिणं वा सव्वं धम्ममाइक्खति, परवादिणा वा सद्धिं वादं करेति, एवमादि-कारणेहिं तिण्ह दिणाणं परतो अविफालेंतो वि सुद्धो । उक्कोसेण जाव छम्मासा, छम्मासातिक्कमपक्खमविगे अविफालेंतस्स चउगुरुगा ॥२७६८॥

अण्णेण पडिच्छावे, तस्सऽसति स तं पडिच्छते रत्तिं ।
उत्तर-वीमंसासुं, खिण्णो व णिसिं पि ण पडिच्छे ॥२७६९॥

तिरातिक्कमे अण्णेण वि आलोयणं पडिच्छावेति । अण्णस्स वा आलोयणाभिमुहसत्ति सयमेव रातो पडिच्छति । अह रातो वि परवादुत्तरवीमसाए वावडो, दिवा वादकारणेण खिण्णो विसमंतो रातो वि ण पडिच्छति । एवं छम्मासा वत्ता । छम्मासंते वि अण्णेहिं पडिच्छावेति, एगेव भाव इत्यर्थः ॥२७६९॥

दोहि तिहि वा दिणेहिं, जति छिज्जति तो न होइ पच्छित्तं ।
तेण परमणुण्णवणा, कुलाइ रण्णो व दीवेंति ॥२७७०॥

छण्ह मासाणं परतो जति दोहिं तिहिं वा दिणेहिं कज्जं छिज्जति परिसमाप्यते इत्यर्थः, तो पच्छित्तं ण भवति । अध छम्मासा परतो दोहिं तिहिं वा दिणेहिं कज्जं ण समप्पति तो कुल-गण-संघस्स रण्णो वा णिवेदेति तहिं जो हं वावडो भविस्सामि तेण खामिस्सं ॥२७७०॥

---

1 सेवादिव्याजादुपद्रवकारकः । 2 घनादिनोभाद् घातकः ।

कारणेण विप्फालेज्जा –

बितियपदमणप्पज्झे, अणगणादागयं ण विप्फाले ।
अप्पज्झं च गिलाणं, अच्छितुकामं च वच्चंतं ॥२७७१॥

अणवज्झो "ण विप्फाले" त्ति, ण विप्फालिज्जति वा, अवज्झो वा गिलाणो ण पुच्छति, गिलाण वावडो वा, सो वा आदेसो गिलाणो ण पुच्छिज्जति, गिलाणवावडो वा आएसो ण पुच्छिज्जति ।

अहवा – तेण अपुच्छिए चेव कहियं – जहा तुज्झ सगासे अच्छिउकामो आगतो ।

अहवा – अपुच्छिएण चेव कहियं – इहाहं वसितुं इमिणा कारणेण गच्छामि चेव । एवं अविफालेंतो सुद्धो ॥२७७१॥

जे भिक्खू साहिकरणं अविओसविय-पाहुडं अकड-पायच्छित्तं परं ति-रायाओ विप्फालिय अविप्फालिय संभुंजति, संभुंजंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१४॥

जे त्ति णिद्देसे । भिक्खू पुव्ववण्णितो । सह अधिकरणेण साधिकरणो, कषायभावाशुभभावाधिकरण-सहिते इत्यर्थः । विविधं विविधेहिं पगारेहिं वा ओसवियं उवसामियं, किं तं पाहुडं – कलहमित्यर्थः । ण वि ओसविअं अविओसवियं पाहुडं, तम्मि पाहुडकरणे जं पच्छित्तं तं कडं जेण सो कडपच्छित्तो, अ मा नो ना प्रतिषेधे, न तत् कृतं प्रायश्चित्तं अकृतप्रायश्चित्तं, जो तं संभुंजण संभोएण संभुंजति – एगमंडलीए संभुंजति त्ति वुत्तं भवति ।

अहवा – दाणग्गहणसंभोएण भुंजति, तस्स चउगुरुगा आणादिणो य दोसा ।

इमे अधिकरणनिरुत्ता एगट्ठिया य –

अहिकरणमहोकरणं, अहरगतीगाहणं अहोतरणं ।
अद्धितिकरणं च तहा, अहीरकरणं च अहीकरणं ॥२७७२॥

भावाधिकरणं कर्मबन्धकारणमित्यर्थः ।

अहवा – अधिकं अतिरित्तं उत्सूत्रं करणं अधिकरणं, अधो अधस्तात् आत्मनः करणं, अधरा अधमा जघन्या गतिः, तामात्मानं ग्राहयतीति, अधो-अधस्तादवतारभूमिगृहनिश्रेण्यानि वा, न धृतिः अधृतिरित्यत्यर्थः अस्याः करणं, अधीरस्य असतमंतस्य करणं अधिकरणं ।

अहवा – अधीः अबुद्धिमान् पुरुषः, स तं करोतीत्यधिकरणं ॥२७७२॥

साहिकरणो य दुविहो, सपक्ख-परपक्खतो य नायव्वो ।
एक्केक्को वि य दुविहो, गच्छगतो णिग्गतो चेव ॥२७७३॥

साधिकरणो साधू दुविधेन अधिकरणेन भवति । तं चिमं दुविधं सपक्खाधिकरणं परपक्खाधिकरणं च । सपक्खाधिकरणकारी गच्छगतो गच्छणिग्गतो वा । एवं परपक्खाधिकरणं दुविधं ॥२७७३॥

तं पुण अधिकरणं इमेहिं कारणेहिं उप्पज्जति –

सच्चित्त[1]ऽचित्त[2]मीसो[3], वयोग[4]-परिहारिओ[5] य देसकहा[6] ।
सम्ममणाउट्टंते, अहिकरणमतो समुप्पज्जे ॥२७७४॥

"[1]सचित्ते" त्ति अस्य व्याख्या –

किमणाऽऽभव्वं गिण्हसि, गहियं व न देसि मज्झ आभव्वं ।
सच्चित्तेतरमीसे, वितहा पडिवज्जओ कलहो ॥२७७५॥

सेहो सेही वा एगस्स उप्पण्णो। तमण्णो गिण्हमाणो भणिओ – किमणाभव्वं गिण्हसि ? पुव्वगहियं वा मग्गितो मज्झ आभव्वं किं ण देसि ? एवं सचित्ते । एवं इयरे अचित्ते मीसे य वितहं विवरीयं पडिवज्जतो अधिकरणं भवति ॥२७७५॥ तिण्णि दारा गता ।

इदाणिं "[2]वयोगते" त्ति –

विच्चामेलण सुत्ते, देसी भासापवंचणे चेव ।
अण्णम्मि य वत्तव्वे, हीणाहियमक्खरे चेव ॥२७७६॥

सुत्ते विच्चामेलणा – अण्णोण्णज्झयणसुयक्खंधेसु घडमाणे आलावए विवितुं जोएंते – विच्चामेलणा भवति । देसी भासा-मरहट्ठविसए चोद्दिति, कुणियं वा भणंतो हसिज्जसि – वेयणचेट्ठाहिं एव कुणं कुट्टिं वा करोतीत्यर्थः । अण्णम्मि य वत्तव्वे – कुंदं चंदं, हीणक्खरे – भास्कर इति वक्तव्वे भाकर इति, अधिअक्खरे सुवन्नं सुसुवन्नं ॥२७७६॥

"[3]परिहारिय" त्ति अस्य व्याख्या –

परिहारिगमठवेंते, ठविए अणट्ठाए णिव्विसंते य ।
कुच्छियकुले य पविसति, चोदितऽणाउट्टणे कलहो ॥२७७७॥

गुरु-गिलाण-बाल-वुड्ढ-आदेसमादियाण जत्थ पाउग्गं लभति ते परिहारियकुले, ते ण ठवेति, अणट्ठा वा णिव्विसति – प्रविशतीत्यर्थः ।

अहवा – परिहरणिज्जा परिहारिया, ते य कुला, ते विसंतो चोदितो अणाउट्टंते उट्टंते वा कलहो भवे ॥२७७७॥

"[4]देसकहे" त्ति अस्य व्याख्या –

देसकहा परिकहणे, एक्के एक्के य देसरागम्मि ।
मा कर देसकहं वा, अठायमाणंमि अहिगरणं ॥२७७८॥

देस-इत्थि-भत्त-रायकहा करेंतो चोदितो–"मा करे देसकहं, ण वट्टति" त्ति। "कोऽसि तुमं ? जेण मं वारेसि", अट्ठायंते – अधिकरणं भवे ।

अहवा – एक्को सुरट्ठं वण्णेति, लाटो वित्तप्पो वितिप्पो, भणाति – "किं तुमं जाणसि कूवमंडुक्को, दक्खिणावहो पहाणो" ।

एवं एक्केक्क देसरागेण उत्तराउत्तरेण अधिकरणं भवति । एवमादिएसु कज्जेसु चोदिज्जंते अणाउट्टंते अधिकरणं समुप्पज्जे ॥२७७८॥

एवं उप्पण्णे अधिकरणे –

जो जस्स उ उवसमती, विज्झवणं तेण तस्स कायव्वं ।
जो उ उवेहं कुज्जा, आवज्जति सो इमे ठाणे ॥२७७९॥

---

[1] गा० २७७४ । [2] गा० २७७४ । [3] गा० २७७४ । [4] गा० २७७४ ।

जो साधू जस्स साहुस्स उवसमति सो तेण साहुणा उवसामेयव्वो विज्झवेयव्वो। जो पुण उवेहं करेति सो इमेहिं ठाणेहिं पच्छित्तं आवज्जति। उवेहं करेति, ओहसणं करेति, उत्तुअति सहायकिच्चं वा करेति॥२७७९॥

लहुओ[1] उ उवेहाए, गुरुओ सो चेव उवहसंतस्स[2] ।

उत्तुयमाणे[3] लहुया, सहायगत्ते[4] सरिसदोसा ॥२७८०॥

उवेहं करेंतस्स मासलहुं। उवहसंतस्स सो चेव मासो गुरुओ। उत्-प्राबल्येन तुदति उत्तुदति प्रचोदयतीत्यर्थः। तस्स चउलहुगा। सहायगत्तं पुण करेंतो अधिकरणकारिणा सरिसदोसो सरिसपायच्छित्ती य भवति ॥२७८०॥

उवेहाए त्ति इमं वक्खाणं –

परवत्तियाण किरिया, मोत्तु परट्ठं च जयसु आयट्ठे ।

अवि य उवेहा वुत्ता, गुणा य दोसा य एवं तु ॥२७८१॥

अधिकरणं करेंतो दट्ठुं तुण्हिक्को मज्झत्थेण वा भावेण अच्छति।

अण्णे वि भणंति – "परप्रत्यया परभवा क्रिया कर्मसंबंधः सो अस्माकं न भवति, उवसामंतेण परट्ठो कओ भवति, तम्हा तं परट्ठं मोत्तुं – "जयसु" त्ति परं जत्तं करेह झाणादि-नाणादिए आयट्ठे आत्मार्थं। अवि य ओहणिज्जुत्तीए वुत्तं – 'उवेहेत्ता संजमो वुत्तो", एवं उवक्खेवेण सज्झायादि गुणा भवंति, परट्ठ-वक्खेवेण सुत्तत्थपलिमंथादिया दोसा भवंति ॥२७८१॥

अहवा – आयरिओ अण्णो वा साधू अण्णेण साहुणा भणिओ – एतेहिं अधिकरणं कतेहि किं ण उवसमेह ?

ताहे भणाति –

जति परो पडिसेविज्जा, पाविय पडिसेवणं ।

मज्झ मोणं चरेंतस्स, के अट्ठे परिहायति ॥२७८२॥

एवं भणतो मासलहुं। सेसं कंठं ॥२७८२॥

"[1]ओहसण-उत्तुअणा" पच्छद्धस्स वक्खाणेति –

एसो वि ताव दमयउ, हसति व तस्सोम्मना य ओहसणा ।

उत्तरदाणं मा उसराहि अह होति उत्तुयणा ॥२७८३॥

दोण्हं अधिकरणं करेंताणं एगम्मि सीदंते आयरिओ अण्णो वा भणति–एसो वि ताव एवं दमयतु। उत्तरेण वा एगं अपोहंतो तं अट्टहासेहिं हसति। एस ओहसणा।

इमा उत्तुअणा – उत्तरदाण सिक्खावणं।

अहवा भणाति – मा एयस्स ओसराहि मा वा एतेण जीप्पीहिसि। एवमादि उत्तुअणा ॥२७८३॥

---

१ गा० २७८० ।

इमं "[1]सहायत्तस्स" वक्खाणं –

वायाए हत्थेहिं, पाएहिं दंत-लउडमादीहिं ।
जो कुणति सहायत्तं, समाणदोसं तयं विंति ॥२७८४॥

दोण्ह कलहं करेंताणं तत्थेगस्स एगो साहू सहायत्तणं करेति, वायाए कलहेति, हत्थेण वा हणति, पाएण वा पण्हि देति, दंतेहि वा खायति, लउडेण वा हणेति । एवमादिएहिं जो सहायत्तं करेति सो तेण अधिकरणसाधुणा समाणदोसो ॥२७८४॥

आयरियाण उवेहाए इमे दोसा ।

सामण्णेण (समाणे) वा अधिकरणे अणुवसामिज्जंतो इमं दोसदरिसणत्थं उदाहरणं –

अरण्णमज्झे अगाहजलं सरं जलयोवसोहियं वणसंडमंडियं । तत्थ य बहूणि जलचर-खहचर-थलचराणि य सत्ताणि आसिताणि । तत्थ य एगं महल्लं हत्थिजूहं परिवसति । अण्णता गिम्हकाले तं हत्थिजूहं पाणियं पाउं ण्हाउत्तिण्णं मज्झण्हदेसकाले सीयलरुक्खच्छायासु सुहं सुहेण पासुत्तं चिट्ठति । तत्थ य अदूरे दो सरडा भंडिउमारद्धा । वणदेवयाए य ते दट्ठुं सव्वेसि सभाए आघोसियं –

णागा जलवासीया, सुणेह तस-थावरा ।
सरडा जत्थ भंडंति, अभावो परियत्तई ॥२७८५॥ कंठा

वणसंडसरे जल थल खहचर वीसमण देवयाकहणं ।
वारेह सरडुवेक्खण, धाडण गयणास चूरणता ॥२७८६॥

देवयाए भणियं मा एते सरडे भंडंते उवेक्खह, वारेह । तेहिं जलचर-थलचरेहिं चिंतियं-किमम्हं एते सरडा भंडंता काहिंति ? तत्थ य एगो सरडो भंडंतो भग्गो पेल्लितो सो धाडिज्जंतो-सुहसुत्तस्स हत्थिस्स विलं ति काउं णासापुडं पविट्ठो । वितिओ वि पविट्ठो । ते सिरकवाले जुद्धं लग्गा । हत्थी विउलीभूतो महतीए असमाहीए वेयणट्टो य "चूरणं" ति-तं वणसंडं चूरियं, बहवे तत्थ वासिणो सत्ता घातिता । जलं च आडोहंतेण जलचरा घातिता । तलागपाली भेदिता । तलागं विणट्ठं । जलचरा सव्वे विणट्ठा ।

एवं साहुस्स वि उवेहं करेमाणस्स महंतो दोसो उप्पज्जति । तेण उवेक्खिता गिहिगिही करेज्ज । पवत्तापवित्तएण य रायकुलं वंग-णिच्छुभग-कडगमद्दगं करेज्ज ॥२७८६॥

किं चान्यत् –

तावो भेदो अयसो, हाणी दंसण-चरित्त-णाणाणं ।
साहुपदोसो संसारवद्धणो साहिकरणस्स ॥२७८७॥

चतुर्थोद्देशके पूर्ववत् ॥२७८७॥

---

[1] गा० २७८० ।

अयं विशेष –

अतिभणिय अभणिते वा, तावो भेदो य जीवचरणाणं ।
रूवसरिसं ण सीलं, जिम्हं मण्णे भवे अयसो ॥२७८८॥

पसत्थापसत्थो तावो भवति, सो साधू मया बहुविधेहिं असब्भवदोसेहिं अब्भक्खातो आकुट्ठो वा वा परितप्पइ । एस पसत्थो ।

इमो अपसत्थो – "किं वा मए तस्स जातिसारणं ण कतं, हा चुक्कोमि" त्ति परितप्पति ।
रूवाणुरूवं से सीलं णत्थि त्ति अयसः ।

अहवा – लोगाववातो भवति । जिम्हमनेन कृतं – वर्जनीयमित्यर्थः, "मण्णे" त्ति – एवं मन्यामहे, एवमादि अयसो भवति ॥२७८८॥

अक्कुट्ठतालिते वा, पक्खापक्खिकलहेण गणभेदो ।
एगतर-सूयएहि य, रायादी सिट्ठे गहणादी ॥२७८९॥

जारजातो त्ति वयणेण अक्कुट्ठो, हस्तदंडादिना प्रहारदानं ताडनं, अण्णोण्णपक्खपरिग्गहकरणेण गणभेदो भवति । एगपक्खेण रायकुले कहिते ।

अहवा सूयएहिं चारएहिं कहिए – तत्थ गेण्हणादिया दोसा भवंति ॥२७८९॥

"[1]हाणी दंसण-चरित्त-णाणाणं" ति अस्य व्याख्या –

चत्तकलहो वि ण पढति, अवच्छलत्ते य दंसणे हाणी ।
जह कोहाइ विवड्ढी, तह हाणी होति चरणे वि ॥२७९०॥

कलहुत्तरकालं वि कसायदोससंतावियमणो ण पढति, साहुपदोसकरणत्तणेण अवच्छलत्तं भवति, अवच्छलत्ते य दंसणहाणी भवति । जहा जहा कोहादियाण वड्ढी तहा तहा चरित्तहाणी भवति ॥२७९०॥

जम्हा एते दोसा तम्हा उवेहा ण कायव्वा । तो किं कायव्वं ? भण्णइ –

आगाढे अहिगरणे, उवसम ओकड्ढणा उ गुरुवयणं ।
उवसमह कुणह झायं, छड्डणता सागपत्तेहिं ॥२७९१॥

अधिकरणं आगाढं – कक्खडं उप्पण्णं कोहाभिभूता उवसामेयव्वा, कलहेंता य पासट्ठिएहिं अवकड्ढेयव्वा ।

गुरूहिं उवसमणट्ठा इमं वयणं भणियव्वं – अज्जो ! उवसमेह । अणुवसमंताण कओ संजमो ? कओ वा सज्झाओ ? तम्हा उवसमेह, उवसमित्ता य सज्झायं करेह ।

मा दमगपुरिसा इव कणगरससंठाणियं संजमं कसाय-साग-रुक्ख-पत्तेसु णिस्सारयाए संजमं छड्डेह ॥२७९१॥

अहवा गुरू भणंति –

जं अज्जियं समीखल्लएहिं तव-नियम-बंभमइएहिं ।
तं दाणि पेच्छ णाहिह, छड्डेंता साग-पत्तेहिं ॥२७९२॥ कंठा

---

१ गा० २७८७ ।

"[1]छड्डुणया सागपत्तेहिं" ति, अत्र दृष्टान्तो जहा –

एगो परिवायगो दमगपुरिसं चितासोगसागरपविट्ठं करतल-पल्हत्थमुहं अत्थोवज्जण-मुपायचिंतणपरं पासति। पुच्छति य – किमेवं चिंतापरो ? तेण से सब्भावो कहिओ – "दारिद्दा-भिभूओ मि" त्ति।

तेण भणियं – "इस्सरं ते करेमि, जतो भणामि ततो गच्छाहि, जं च भणामि तं सव्वं कायव्वं।" ताहे ते संबलं घेत्तु पव्वयणिगुंजं पविट्ठा।

परिव्वायगेण य भणितो – एस कणगरसो सीतवातातवपरिसमं अगणंतेहिं तिसाखुहा-वेदणं सहंतेहिं बंभचारीहिं अचित्त-कंद-मूल-पत्त-पुप्फ-फलाहारीहिं समीपत्तपुडेहिं भावओ अरुस्समणेहिं घेत्तव्वो। एस से उवचारो।

तेण दमगेण सो कणगरसो उवचारेण गहितो कडुयदोद्धियं भरियं।

ततो णिग्गतो तेण परिव्वायगेण भणियं-सुरुट्ठेण वि तुमे एस सागपत्तेण ण छड्डियव्वो।

तओ सो परिवायगो गच्छंतो तं दमगपुरिसं पुणो पुणो भणति – ममं पभावेणं इस्सरो भविस्ससि। सो य पुणो पुणो भणमाणो रुट्ठो भणति – जं तुज्झ पभावेण इस्सरत्तणं तेण मे ण कज्जं, तं कणगरसं सागपत्तेण छड्डेति।

ताहे परिव्वायगेण भणियं – हाहा दुरात्मन् !

जं अज्जियं समीख-ल्लएहिं तव-नियम-बंभमइएहिं।
तं दाणि पेच्छ णाहिह, छड्डेंता सागपत्तेहिं॥

अहवा – गुरू ते अधिकरणकरे साहू भणति –

जं अज्जियं चरित्तं, देसूणाए वि पुव्वकोडीए।
तं पि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेणं ॥२७९३॥

"समीखल्लएहिं" ति दिट्ठंतो दव्वखल्लगा य गहिया, "तवनियमबंभमतिएहिं" ति दिट्ठंतोवसंहारो भावखल्लगा गहिता।

तेण परिव्वायगेण सो दमगपुरिसो भण्णति – तुमं इदाणि परिव्वायकालातो पच्छा परि-तप्पमाणो जाणेहिसि – "हा दुट्ठु मे कयं जं कणगरसो सागपत्तेहिं छड्डितो"।

आयरितो वि ते अधिकरणकरे भणाति – तुब्भे वि मा कलहेह। मा पच्छा परितप्पिहिह, जहा-बहुकालोवज्जितो संजम-कणगरसो साग-पत्त-पत्तसंठाणिएसु कसाएसु छड्डितो णिरत्थयं मणा एत्तियं कालं पव्वज्जाए किलिट्ठो त्ति। एवं आयरिओ सामण्णतो भणाति ॥२७९३॥

अह अविधीए वारेति –

आयरिओ एगं ण भणे अह एग णिवारे मासियं लहुयं।
[2]राग-द्दोस-विमुक्को, सीयघरसमो य आयरिओ ॥२७९४॥

---

१ गा० २७९१।

आयरिओ जति एगं अधिकरणिसाहुं अणुसासति, बितियं णाणुसासति ततो, आयरियस्स मासलहुं । तम्हा आयरिएण रागदोसविमुक्केण भवियव्वं ।

दिट्ठंतो – "सीयघरं" – वड्ढकीरयण-णिम्मियं चक्किणो सीयघरं भवति, वासासु णिवाय-पवातं, सीयकाले सोम्हं, गिम्हे सीयलं । जहा तं चक्किणो सीयघरं सव्वरिउक्खमं भवति तहा पायपूरिसस्स वि ते सव्वरिउक्खमा भवंति । जहा तं विसेसं ण करेति तहा आयरिओ वि विसेसं ण करेति ।।२७९४।।

विसेसं पुण करेंतस्स इमो दोसो भवति –

वारेह एस एयं, ममं ण वारेह पक्खरागेणं ।
बाहिरभावं गाढतरगं च मं पेक्खसी एक्कं ।।२७९५।।

एस आयरिओ एयं साहुं अत्तवुद्धीए वारेति । मम पुण परभावबुद्धीए ण वारेति । एवं पक्खरागे कज्जमाणे सो एगो साहू बाहिरभावं गच्छति, गाढतरं वा अधिकरणं करेति ।

अहवा – आयरियं भणेज्ज – "तुमं मं एक्कं बाहिरं पेच्छसि" त्ति अप्पाणं उब्बंधिउं मारेति (तो) आयरियस्स पारंचियं, उण्णिक्खमति वा तो मूलं ।।२७९५।।

अह अधिकरणं काउं अणुवसंतो चेव अच्छति गच्छे तो इमा विधी –

गच्छो अणिग्गयस्सा, अणुवसमंतस्सिमो विही होति ।
सज्झाय भिक्ख भत्तट्ठऽवासते चतुरहक्केक्के ।।२७९६।।

पुव्वद्धं कंठं । सूरोदए सज्झायकाले चोइज्जइ, बितियं भिक्खोत्तरणकाले, ततियं भत्तट्ठकाले, चउत्थं पदोसे आवस्सयवेलाए । एवं चउरो वारा एक्केक्के अहे चोइज्जति ।।२७९६।।

तेसि पडिक्कंताणं सज्झाए अपट्ठविए अंतरे एसमादि कारणे अधिकरणं उप्पज्जे ।

दुप्पडिलेहियमादीसु, चोदिते सम्मं अपडिवज्जंते ।
ण वि पट्ठवेंति उवसम, कालो ण सुद्धो छि(जि)यं वासी ।।२७९७।।

दोसट्ठं पडिलेहणं करेंतो, आदिसद्दातो अपडिलेहंतो चोदितो तम्मि अणाउट्टंते अधिकरणं भवे, जति अपट्ठविते सयं चेव उवसंतो लट्ठं ।

अह एक्को, दो वि वा ण उवसमंति, ताहे आयरिया पट्ठवणवेलाए इमं भणंति – इमे साहू ण पट्ठवेंति । उवसमह अज्जो !

सो पच्चुत्तरं देति – "अवस्सं कालो ण सुद्धो, छि(जि)यं वा साहूहिं सुतं, गज्जियं वा साहूहिं सुतं, ततो ण पट्ठवेंति", एवं वुत्ते सव्वे पट्ठवेंति, सज्झायं करेंति । अणुवसमंतस्स मासगुरुं पच्छित्तं ।।२७९७।।

भिक्खोत्तरण-वेलाए पुणो आयरिया भणंति –

णो तरती असमत्तट्ठी, ण च वेलाऽभुंजणे ण तिण्णं सि ।
ण पडिक्कमंति उवसम, णिरतीचारा सु पच्चाह ।।२७९८।।

अज्जो ! साहवो भिक्खाए णो तरंति, उवसमाहि । सो पच्चुत्तरं देति "णूणं" ण भत्तट्ठी, ण या भिक्खावेला, तेण णो तरंति" । एवं वुत्ते सव्वे भिक्खाए अवतरंति । तस्स अणुवसंतस्स वितियं मासगुरुं ।

सन्नियट्टेसु गुरू भणाति – अज्जो ! ण भुंजंति साहू, उवसमह ।

सो पच्चुत्तरं देति "नूणं न जीरतण्हे" ।

एवं वुत्ते सव्वे एगततो भुजंति । तस्स ततियं मासगुरुं ।

पुणो गुरू पदोसे पडिक्कमणकाले भणाति – "अज्जो ! साहू न पडिक्कमंति, उवसमाहि । पच्चुत्तरमाह "नूणं निरतियारा" । इत्थ चउत्थे ठाणे अणुवसमंतस्स चउगुरुं । एवं गोसकाले अधिकरणे उप्पण्णे विधी भणिओ ॥२७९८॥

अण्णम्मि व कालम्मि, पढंत हिंडंत मंडलाऽऽवासे ।
तिण्णि व दोण्णि व मासा, होंति पडिक्कंत गुरुगा उ ॥२७९९॥

अण्णम्मि काले सज्झाए पट्ठविते जति अधिकरणं उप्पण्णं पढंताण, तो तिण्णि चोदणाकाला, दोण्णि मासगुरू ।

भिक्खं हिंडंताणं अधिकरणे – दोण्णि चोदणाकालो, एगं मासगुरुं ।

भुत्ताण अधिकरणे उप्पण्णे – एगो चोदणाकालो, एत्थ णत्थि मासगुरुं । अणुवसंतस्स पडिक्कमंते चउगुरुमेव भवति ॥२७९९॥

एवं दिवसे दिवसे, चाउक्कालं तु सारणा तस्स ।
जति वारे ण सारेती, गुरूण गुरुगो उ ततिवारे ॥२८००॥

पुव्वद्धं कंठं । जति वारा आयरिओ तं सारणट्ठाणेसु ण सारेति तति गुरुगो मासगुरुगा भवन्ति ॥२८००॥

एवं तु अगीयत्थे, गीयत्थे सारिते गुरू सुद्धो ।
जति तं गुरू ण सारे, आवत्ती होइ दोण्हं पि ॥२८०१॥

एवं दिणे दिणे सारणाविधी अगीयत्थस्स । गीयत्थं पुण एगदिणं चउसु ठाणेसु सारेंतो, परतो असारेंतो वि सुद्धो । जति पुण तं गीयं अगीयं वा गुरू ण सारेति तस्स य अणुवसमंतस्स, एवं दोण्ह वि आवत्ती – पच्छित्तं भवति ।

अण्णे भणंति – अगीयस्स अणुवसमंतस्स वि णत्थि पच्छित्तं, अगीयं अचोदेंतस्स गुरुस्स पच्छित्तं । गीतं पुण जति गुरू ण चोदेति तो आवत्ती दोण्ह वि भवति ॥२८०१॥

गच्छो य दोण्णि मासे, पक्खे पक्खे इमं परिहवेंती ।
भत्तट्ठं सज्झायं, वंदणऽलावं ततो परेणं ॥२८०२॥

एवं अणुवसमंतं गच्छो दोण्णि मासे सारेति । इमं पुण गच्छो तम्मि पक्खे परिहरेति । पढमपक्खे गते गच्छो तेन समं भत्तट्ठं ण करेति । बितियपक्खे गते सज्झायं तेण समाणं ण करेति । ततियपक्खे गते वंदणं ण करेति । चउत्थपक्खे गते आलावं पि तेण समाणं वज्जेति ॥२८०२॥

आयरिओ चउमासे, संभुंजइ चउरो देति सज्झायं ।
वंदणऽलावं चतुरो, तेण परं मूल णिच्छुभणा ॥२८०३॥

आयरिओ पुण अणुवसमंतस्स वि चउरो मासे भत्त-पाण-दाण-ग्गहण-संभोगेण संभुंजति, चउण्हं उवरि भत्तं वज्जेति । चउरो सज्झायं देति, तओ सज्झायं वज्जेति । वंदणालावपदे दो वि चउरो मासे करेइ, ततो वरिसे पुण्णे संवच्छरिए पडिक्कंते मूलं पच्छित्तं, गणाओ य णिच्छुभति ॥२८०३॥

एवं बारसमासे, दोसु तपो सेसए भवे छेदो ।
परिहायमाण तद्दिवसे, तवो मूलं पडिक्कंतो ॥२८०४॥

एवं बारसमासे अणुवसमंते अच्छंते दोसु तवो आदिमेसु जाव गच्छेण वज्जितो सेसेसु दससु मासेसु छेदा पंचराइंदिओ जाव संवत्सरं पत्तो । पज्जोसवणारातिपडिक्कंताणं अधिकरणे उप्पण्णे एसा विधी । दिवस-मासे परिहावेत्ता 'तद्दिवस" इति पज्जोसवणादिवसे अधिकरणे उप्पण्णे तवो मूलं च भवति, ण छेदो । पडिक्क-मणकाले वा उप्पण्णे मूलमेव केवलं पडिक्कमंते भवति ॥२८०४॥

एसेवऽत्थो भण्णति –

एवं एक्केक्कदिणं भवेत्तु ठवणा दिणे वि एमेव ।
चेइयवंदणसारिते, तम्मि य काले तिमासगुरू ॥२८०५॥

भद्दवयसुद्धपंचमीए अणुदिए आइच्चे अधिकरणे उप्पण्णे संवच्छरो भवति, छट्ठीए एगदिणूणो संवच्छरो भवति, एव एक्केक्कदिणं परिहवंतेण आणेयव्वं जाव ठवणादिणो त्ति पर्युपासमादिवस इत्यर्थः । तम्मि ठवणादिणे अणुदिए आइच्चे अधिकरणे उप्पण्णे एवमेव चोदणा सज्झायपट्ठवणकाले चोदिज्जति, पुणो चेइय-वंदणकाले चोइज्जति, अणुवसमंतो पुणो पडिक्कमणवेलाए, एवं तम्मि पज्जोसवणकालदिवसे तिमासगुरू भवति ॥२८०५॥

मूलं तु पडिक्कंते, पडिक्कमंते व होज्ज अहिगरणं ।
संवच्छरमुस्सग्गे, कयम्मि मूलं ण सेसाइं ॥२८०६॥

पडिक्कंते मूलं भवति । एसा ठवणदिवसविधी । अह अद्धपडिक्कंताण चेव अधिकरणं भवे संवत्सरीए काउस्सग्गे कते मूलमेव केवलं, ण सेसा पच्छित्ता भवंति ॥२८०६॥

संवच्छरं च रुट्ठं, आयरिओ रक्खती पयत्तेणं ।
जति णाम उवसमेज्जा, पव्वतराजी सरिसरोसो ॥२८०७॥

एवं आयरिओ तं रुट्ठं संवत्सरं पयत्तेण रक्खति । किमर्थं ? उच्यते – जति नाम उवसमेज्ज । अह नो उवसमति संवच्छरेण वि तो सो पव्वतराईसरिसरोसो भवति ॥२८०७॥

अण्णे दो आयरिया, एक्केक्कं वरिसमुवसमेंतस्स ।
तेण परं गिहि एसो, वितियपदं रायपव्वतिए ॥२८०८॥

मूलायरियसमीवाओ णिग्गयं अण्णे दो आयरिया कमेण एक्केक्कवरिसं पयत्तेण चेव विधिणा संरक्खन्ति । जेण उवसामितो तस्सेव सीसो । तेणं ति तस्मात् तृतीयवर्षात् परतः "सो" त्ति स गृही क्रियते ।

संघस्तस्य लिंगमवहरतीत्यर्थः। बितियपदेण वा दंडियपव्वइयस्स लिगं णं हिज्जति ॥२८०८॥ एसा विही भिक्खुस्स भणिया। उवज्झायरियाण वि एसेव विही। णवरि – इमो विसेसो –

एमेव गणायरिए, गच्छम्मि तवो तु तिण्णि पक्खाइं।
दो पक्खा आयरिए, पुच्छा य कुमारदिट्ठंतो ॥२८०९॥

इह गणाचार्यग्रहणादुपाध्यायः परिगृह्यते, तस्स अणुवसमंतस्स गच्छे वसंतस्स तिण्णि पक्खा तवो भवति, परतो छेदो। आयरियस्स अणुवसमंतस्स दो पक्खतवो भवति, परतो छेदो।

सीसो पुच्छति – "किं सरिसावराहे विसमं पच्छित्तं देह ? तम्हा रागदोसी भवंतो"।

एत्थ आयरिओ कुमार-दिट्ठंतं देति ॥२८०९॥

जे ते उवज्झायस्स तिण्णि पक्खा ते दिवसीकता।

पणयालदिणे गणिणो, चउहा काउं सपाय एक्कारा।
भत्तट्ठणसज्झाए, वंदणऽलावे य हावेंति ॥२८१०॥

ते चउभागेण कता सपाता एक्कारसदिवसा भवंति। तत्थ गच्छो उवज्झाएणं समं वसधीए एक्कारसदिणं भत्तट्ठं करेति एवं सज्झायवंदणालावे वि, परतो पणयालदिणाण दसगो छेदो ॥२८१०॥

आयरियस्स दो पक्खा दिवसीकता।

तीसदिणे आयरिए, अद्धट्ठदिणा उ हावणा तत्थ।
परतो गच्छेण चउपदेहिं तु, णिज्जूढे लग्गती छेदो ॥२८११॥

ते चउभाएण विभत्ता अद्धट्ठमादिणा भवंति, तत्थ गच्छो आयरिएण सह अद्धट्ठमे दिणे भत्तं करेति, एवं सज्झाए वंदणालावे य, गच्छेण णिसेहो चउहिं भत्तट्ठाणादिएहिं पदेहिं। पण्णरसराइंदिए छेदे लग्गति ॥२८११॥

भिक्खू उवज्झायायरियाणं अण्णगणसंकंताणं सामण्णं भण्णति –

संकमतो अण्णगणं, सगणेण य वज्जितो चउपदेहिं।
आयरिओ पुण वरिसं, वंदणऽऽलावेहिं सारेंति ॥२८१२॥

सगच्छेणं जदा भत्तट्ठाणादिएहिं पदेहिं वज्जितो तदा अण्णगणं संकंतो। तं अण्णगणायरिओ वंदणाऽऽलावपदेहिं भुंजंतो सारंतो य वरिसं रक्खंति ॥२८१२॥

सज्झायमातिएहिं, दिणे दिणे सारणा परगणे वी।
नवरं पुण णाणत्तं, तवो गुरुस्सेतरो छेदो ॥२८१३॥

परगणे वि संकंतस्स सज्झायमादिएहिं चउहिं ठाणेहिं सारणा कज्जति। णवरं – परगणसंकमे इमो विसेसो – गुरुस्स सगणसंकमतस्स तवो, इयरो त्ति साधू, तस्स परगणे अणुवसमंतस्स पढमदिणे चेव छेदो भवति ॥२८१३॥

इमं णिग्गताण भण्णति –

खर-फरुस-णिट्ठुराइं, अह सो भणितुं अभाणियव्वाइं।
णिग्गमण कलुसहियए, सगणे अट्ठा परगणे य ॥२८१७॥

"खर-फरुस-निट्ठुराइं" ति अस्य व्याख्या –

उच्चसर-सरोसुत्तं, हिंसयं मम्मवयणं खरं तं तु।
अक्कोस-निरुवयारुत्तमसब्भं णिट्ठुरं होति ॥२८१८॥

उच्चेण महंतेण सरेण जं सरोसं उक्तं तं खरं। जं पुण हिंसगं मम्मवट्टणं च तं फरुसं। जगारादियं अक्कोसवयणं। ककार-डकारादियं च णिरुवयारं। असभाजोग्गं असब्भं जहा कोलिकः। एरिसं णिट्ठुरं होइ। एरिसाणि अभाणियव्वाणि ॥२८१८॥ भणिओ कालुसहियओ, णिग्गतो सगच्छातो सो।

सगणे अट्ठफड्डया, परगणियव्वया वि अट्ठफड्डया। जे परगणियव्वा ते संभोइया अट्ठ, असंभोइएनु वि अट्ठ, जे अण्णसंभोतिया ते उज्जयचरणा ओसण्णा। सो एतेसु गतो –

अद्धट्ठ अट्ठमासा, मासा दो होंति अट्ठसु पयारो।
वासासु असंचरणं, न चेव इयरे वि पेसंति ॥२८१९॥

सगणिच्चएसु अट्ठफड्डएसु पक्खे पक्खे संचरंतस्स अद्धट्ठं मासा भवंति, परगणच्चिएसु फड्डएनु अद्धट्ठ मासा, एते सव्वे वि अट्ठमासा। अट्ठसु उदुबद्धिएसु मासेसु भिक्खूणं विहारो भवति तेण अट्ठगहणं कयं। वासासु चउसु मासेसु तस्स अधिकरणसाहुस्स संचरणं णत्थि, – वासाकालो त्ति काउं। "इयरे वि" त्ति-जम्मि फड्डए सो संकमति तेवि तं पण्णवेत्ता वर्षाकाल-इति कृत्वा न प्रेषयंति। जतो आगतो तत्थ जे तस्स गणे अट्ठफड्डगा तेसु संकमंतस्स तेहिं असज्झाय-भिक्ख-भत्तट्ठणापडिक्कमणवेलासु सो सारेतव्वो, उवसमति त्ति। जति ण सारेति तो मासगुरुं पच्छित्तं, तस्स पुण अणुवसमंतस्स दिवसे दिवसे पंच रातिदिया छेदो भवति ॥२८१९॥

सगणम्मि पंचराइंदियाइं दस परगणे मणुण्णेसु।
अण्णेसु होंति पण्णर-वीसा तु गयस्स ओसण्णे ॥२८२०॥

परगणे संभोतिएसु संकंतस्स दसराइंदिओ छेदो, अण्णसंभोतिएसु पण्णरसराइंदिओ छेदो। ओसण्णेसु वीसराइंदिओ छेदो। एवं भिक्खुस्स भणियं ॥२८२०॥

इमं उवज्झायरियाणं –

एमेव उवज्झाए, दसदिवसादी तु भिण्णमासंतो।
पण्णरसादी उ गणी, चउसु वि ठाणेसु मासंते ॥२८२१॥

एवं उवज्झायस्स वि, णवरं – दसराइंदिओ छेदो आदि, भिण्णमासो छेदो अंते। गुरुस्स आयरियस्स तस्स चउसु ठाणेसु सगण-परगण-संभोइय परगण-अण्णसंभोतिय ओसण्णेसु य पण्णरसरातिंदिओ छेदो-आदी, मासिओ छेदो अंते ॥२८२१॥

इमं णिग्गताण भण्णति –

> खर-फरुस-णिट्ठुराइं, अह सो भणितुं अभाणियव्वाइं ।
> णिग्गमण कलुसहियए, सगणे अट्ठा परगणे य ॥२८१७॥

"खर-फरुस-निट्ठुराइं" ति अस्य व्याख्या –

> उच्चसर-सरोसुत्तं, हिंसयं मम्मवयणं खरं तं तु ।
> अक्कोस-निरुवयारुत्तमसब्भं णिट्ठुरं होति ॥२८१८॥

उच्चेण महंतेण सरेण जं सरोसं उक्तं तं खरं । जं पुण हिंसगं मम्मघट्टगं च तं फरुसं । जगारादियं अक्कोसवयणं । ककार-डकारादियं च णिरुवयारं । असभाजोग्गं असब्भं जहा कोलिकः । एरिसं णिट्ठुरं होइ । एरिसाणि अभाणियव्वाणि ॥२८१८॥ भणिओ कालुसहियओ, णिग्गतो सगच्छातो सो ।

सगणे अट्ठफड्डुया, परगणियव्वया वि अट्ठफड्डुया । जे परगणियव्वा ते सभोइया अट्ठ, असंभोइएसु वि अट्ठ, जे अण्णसंभोतिया ते उज्जयचरणा ओसण्णा । सो एतेसु गतो –

> अद्धट्ठ अट्ठमासा, मासा दो होंति अट्ठसु पयारो ।
> वासासु असंचरणं, न चेव इयरे वि पेसंति ॥२८१९॥

सगणिच्चएसु अट्ठफड्डुएसु पक्खे पक्खे संचरंतस्स अद्धट्ठं मासा भवंति, परगणिच्चिएसु फड्डुएसु अद्धट्ठ मासा, एते सव्वे वि अट्ठमासा । अट्ठसु उदुबद्धिएसु मासेसु भिक्खूणं विहारो भवति तेण अट्ठगहणं कयं । वासासु चउसु मासेसु तस्स अधिकरणसाहुस्स संचरणं णत्थि, – वासाकालो त्ति काउं । "इयरे वि" त्ति-जम्मि फड्डुए सो संकमति तेवि तं पण्णवेत्ता वर्षाकाल-इति कृत्वा न प्रेषयंति । जतो आगतो तत्थ जे तस्स गणे अट्ठफड्डुगा तेसु संकमंतस्स तेहिं असज्झाय-भिक्ख-भत्तट्ठणापडिक्कमणवेलासु सो सारेयव्वो, उवसमति त्ति । जति ण सारेति तो मासगुरुं पच्छित्तं, तस्स पुण अणुवसमंतस्स दिवसे दिवसे पंच रातिंदिया छेदो भवति ॥२८१९॥

> सगणम्मि पंचराइंदियाइं दस परगणे मणुण्णेसु ।
> अण्णेसु होंति पण्णर-वीसा तु गयस्स ओसण्णे ॥२८२०॥

परगणे संभोतिएसु संकंतस्स दसराइंदिओ छेदो, अण्णसंभोतिएसु पण्णरसराइंदिओ छेदो । ओसण्णेसु वीसराइंदिओ छेदो । एवं भिक्खुस्स भणियं ॥२८२०॥

इमं उवज्झायरियाणं –

> एमेव उवज्झाए, दसदिवसादी तु भिण्णमासंतो ।
> पण्णरसादी उ गणी, चउसु वि ठाणेसु मासंते ॥२८२१॥

एवं उवज्झायस्स वि, णवरं – दसराइंदिओ छेदो आदि, भिण्णमासो छेदो अंते । गुरुस्स आय-रियस्स तस्स चउसु ठाणेसु सगण-परगण-संभोइय अण्णगण-अण्णसंभोतिय ओसण्णेसु य पण्णरसराइंदियो छेदो-आदी, मासियो छेदो अंते ॥२८२१॥

(आकृतिरिहक्)

सगणे	परगणसंभोइए	परगण अण्णसंभोइए	ओसण्णे
भि० ५	१०	१५	२०
उ० १०	१५	२०	२५
आ० १५	२०	२५	३०

एवं पुरिसेण सगणादिट्ठाण विभागपच्छित्तं दंसियं ।

इदाणिं एवं चेव ठाणेसु पुरिसविभागठाणं पच्छित्तं दंसिज्जति –

सगणम्मि पंचराइंदियाइं भिक्खुस्स तद्दिवसछेदो ।
दस होंति उवज्झाए, गणि आयरिए य पण्णरस ॥२८२२॥

सगणे संकंतस्स भिक्खुस्स पंचराइंदिओ छेदो, उवज्झायस्स दस, आयरियस्स पण्णरस रातिंदिया छेदो ॥२८२२॥

अण्णगणे भिक्खुस्स, दस तु रातिंदिया भवे छेदो ।
पण्णरस उवज्झाए, गणि आयरिए भवे वीसा ॥२८२३॥

संविग्गमण्णसंभोइएहिं भिक्खुस्स पण्णरसछेदो ।
वीसा य उवज्झाए, गणि आयरिए य पणवीसा ॥२८२४॥

एवं एक्केक्कदिणं, हवेत्तु ठवणादिणे वि एमेव ।
चेइयवंदणसारिते, तम्मि वि काले तिमासगुरू ॥२८२५॥

पासत्थादिगयस्सा, वीसं राइंदियाए भिक्खुस्स ।
पणवीस उवज्झाए, गणि आयरिए भवे मासो ॥२८२६॥

गणस्य गणे वा आचार्यः ।

अहवा – गणित्वमाचार्यत्वं च यस्याऽसौ गणि आयरिओ ॥२८२६॥

इदाणिं सगणादि ठाणे भिक्खुमादिपुरिसपक्खविभागेण य छेदसंकलणा भण्णति –

अड्ढाइज्जा मासा, पक्खे अट्ठहिं मासा हवंति वीसं तु ।
पंच उ मासा पक्खे, अट्ठहि चत्ता उ भिक्खुस्स ॥२८२७॥

अधिकरणं काउं अणुवसंतो भिक्खु सगणं संकंतो तस्स पक्खेणं दिणे दिणे पंचरातिदिएण छेदणे अड्ढाइज्जमासा परियागस्स छिज्जंति, पन्नरसएण पंचगुणिउं, तीसाए भागे हिते अड्ढाइज्जा मासा हवंति । अट्ठ सगणफड्डया । तेसु तस्सेव पणगच्छेदणं वीसं मासा छिज्जंति, पण्णरस अट्ठहिं गुणितो पुणो पंचहिं गुणिता तीसाए भागे हिते वीसं मासा भवंति ।

परगणसंभोइएसु संकंते पक्खेण (दसएण) छेदेण पंचमासा छिज्जंति । तस्सेव (दसएण) चेव छेदेण परगणे अट्ठहिं पक्खेहिं चत्तालीसं मासा छिज्जंति । एवं भिक्खुस्स ॥२८२७॥

उवज्झायस्स सगणे –

पंच उ मासा पक्खे, अट्ठहि मासा हवंति चत्ता उ ।
अद्धट्ठमासपक्खे, अट्ठहि सट्ठी भवे गणिणो ॥२८२८॥

पुव्वद्धं पूर्ववत् । उवज्झायस्स परगणे पण्णरसेण छेदेण पक्खेण अद्धट्ठमासा छिज्जंति, पंचदसहिं गुणिता पंचदसा पंचवीसुत्तरा दोसया भवंति, ते तीसाए भागे हिते अद्धट्ठ मासा भवंति ।

उवज्झायस्स परगणे अट्ठसु फड्डएसु अट्ठहिं पक्खेहिं पण्णरसेण छेदेण सट्ठि मासा छिज्जंति, पण्णरस पण्णरसेहिं गुणिता पुणो अट्ठहिं गुणिता तीसाए भागे हिते सट्ठी भवंति । एवं गणिणो उपाध्यायस्येत्यर्थः ॥२८२८॥

इदाणिं आयरियस्स सगणे –

अद्धट्ठमास पक्खे, अट्ठहि मासा हवंति सट्ठीओ ।
दसमासा पक्खेणं, अट्ठहऽसीती उ आयरिए ॥२८२९॥

पूर्ववत् पुव्वद्धं । आयरियस्स परगणे संकंतस्स पक्खेण वीसएण छेदेण दसमासा छिज्जंति, पण्णरस वीसहिं गुणिता तीसाए भागे हिते दसमासा भवंति । परगणट्ठफड्डगेसु अट्ठसु आयरियस्स अट्ठपक्खेहिं वीसएण छेदेण असीति मासा छिज्जंति । पण्णरस अट्ठहि गुणिता पुणो वीसहिं गुणिता तीसाए भागे हिते असीति मासा भवंति ॥२८२९॥

इदाणिं – एतेसिं चेव भिक्खु-उवज्झायायरियाणं संविग्ग-अण्णसंभोतिएसु ओसण्णेसु य संकलिय-छेदो भणति ।

तत्थ भिक्खुस्स अण्णसंभोतियओसण्णेसु –

अद्धट्ठमास पक्खे, अट्ठहि मासा भवंति सट्ठीओ ।
दसमासा पक्खेणं, अट्ठहऽसीती य भिक्खुस्स ॥२८३०॥

गुणगार-भागहारेहिं मासुप्पादणं पूर्ववत् ॥२८३०॥

उवज्झायस्स अण्णसंभोइएसु –

दसमासा पक्खेणं, असि अट्ठहि य हवंति णायव्वा ।
अद्धत्तेरसपक्खे, अट्ठहि य सयं भवे गणिणो ॥२८३१॥

पुव्वद्धं पूर्ववत् । उवज्झायस्स ओसण्णेसु संकंतस्स पक्खेण पणुवीसएण छेदेण अद्धतेरसमासा छिज्जंति, पण्णरस पणुवीसाए गुणिता तीसाए भागे हिते अद्धतेरसमासा भवंति । तस्सेव अट्ठसु ओसण्णेसु फड्डएसु अट्ठहिं पक्खेहिं पणुवीसएण छेदेण सतं मासाणं छिज्जति, पण्णरस अट्ठहिं गुणिता पुणो पणुवीसगुणिता तीसाए भागे हिते सयं मासाणं भवति ॥२८३१॥

आयरियस्स अण्णसंभोतिएसु संकंतस्स –

अद्धं तेरस पक्खे, मासाण सयं च अट्ठहिं भवति ।
पण्णरस-मास-पक्खे, अट्ठहि वीसुत्तरं गणिणो ॥२८३२॥

पुव्वद्धं पूर्ववत् । आयरियस्स ओसण्णेसु पक्खेण तीसेण छेदेण पण्णरस मासा छिज्जंति । आयरियस्स ओसण्णफड्डएसु तीसेण छेदेण अट्ठहिं पक्खेहिं वीसुत्तरं माससयं छिज्जति, गुणगार-भागहारा पूर्ववत् ॥२८३२॥

ते पुण इमेरिसगुणजुत्ता वसभा पुव्विं पट्ठविज्जंति ।

तस्संबंधि सुही वा, पगया ओयस्सिणो गहियवक्का ।
तस्सेव सुही सहिया, गमेंति थेरा तगं पुव्वं ॥२८४०॥

"तस्स" त्ति-गिहिणो जे सयण, मित्ता वा, लोगे वा पगता प्रख्याता, "उय" त्ति तेयस्सिणो खीरासवादि-लद्धिसंपण्णा, मिट्ठवाक्या सव्ववहारप्रयोगवशा भणंता गिहियवक्का भवंति, एरिसा वसभा तस्स गिहिणो जे अण्णे गिहीसंबंधे सुहिणो वा तेहिं सहिया गमेंति, पूर्वमिति प्रथमं, पश्चात् साधुं नयिष्यंति, थिरसभा वा थेरा, परिणयवया वा थेरा ॥२८४०॥

तस्सग्गतो इमेरिसं भणंति –

सो णिच्छुभति साधू, आयरिए तं च जुज्जसि गमेतुं ।
नाऊण वत्थुभावं, तस्स जति णंति गिहिंसहिता ॥२८४१॥

जेण साहुणा तुमे समं कलहितं सो साधू आयरिएण धाडिज्जति, अम्हं आयरिया ण सुट्ठु सुणेंति, तव च आयरियं जुज्जति गमेउं, जइ आयरियं गमेति खमति य तो लट्ठं ।

"[1]पेच्छामो" त्ति अस्य व्याख्या – "णाउण वत्थु" पच्छद्धं, कूराकूरं गिहिवत्थुभावं । केण वाऽभिप्पाएण भणति – "आणेहि" त्ति किं हंतुकामो खमेउकामो वा ? एवं णाऊण तस्स जइ णेंति तो जे संबंधी सुही वा गिही तेहिं सहिता तं साहू णेंति ॥२८४१॥

अह सो गिही तिव्वकसाओ उवसामिज्जंतो वि ण उवसमति तो तस्स साहुस्स गच्छस्स य संरक्खणट्ठा इमा विधी –

वीसुं उवस्सते वा, ठवेंति पेसिंति फड्डपतिणो वा ।
देंति सहाते सव्वे, व णिंति गिहिते अणुवसंते ॥२८४२॥

वीसुं पृथक् अण्णम्मि उवस्सयम्मि एत साहुं ठवेति, अण्णगामे वा जे फड्डया तेसु जे आयरिया तं ताण पट्ठवेंति, णितस्स य सहाए देंति, अह मासकप्पो पुण्णो तो सव्वे णिंति, एवं गृहस्थे अनुपशान्ते निर्गच्छन्तीत्यर्थः ॥२८४२॥

अह सो गिही उवसामिज्जंतो उवसमति, साहू णोवसमति तो से भिक्खादिकिरियादिसु इमं पच्छित्तं –

अविओसियम्मि लहुगा, भिक्खवियारे य वसहि गामे य ।
गणसंकमणे भणंते, इहं पि तत्थेव वच्चाहि ॥२८४३॥

जति अणुवसंतो साहू भिक्खं हिंडति, वियार-विहारभूमिं वा गच्छति, वसहीउप्पायणट्ठा वा गामं पविसति, वसहीओ वा अण्णसाधु-वसहिं गच्छति, तो सव्वेसु चउलहुगा पच्छित्तं ।

अतितिव्वकसायाभिभूतो अण्णं गणं संकंतो तं अण्णगणिच्चया भणंति – "इहं पि गिहीअसहणा अत्थि तुमं पि असहणो, मा तेहिं समाणं अधिकरणं काहिति, तत्थेव वच्चाहि" ॥२८४३॥

---

[1] गा० २८३९ ।

इह वि गिही अविसहणा, ण य वोच्छिण्णा इहं तुह कसाया ।
अण्णेसिं पायासं, जणइस्ससि वच्च तत्थेव ॥२८४४॥ गतार्थाः

सिट्ठम्मि ण संगिज्झइ, संकंतम्मि उ अपेसणे लहुया ।
गरुगा अजयण-कहणे, एगतरपदोसतो जं च ॥२८४५॥

अणुवसंते हि साहुम्मि अण्णं गणं संकंते मूलायरिएण साहुसंघाडगो पट्ठवेयव्वो । तत्थ सो गतो तेण संघाडएण सिट्ठे कहिते सो तेहिं ण संगहियव्वो ।

अह पुण मूलायरिओ तेसिं साहुसंघाडयं ण पट्ठवेति तो चउलहुं, सो साहुसंघाडगो बहुजणमज्झे "एस णिद्धम्मो गिहीहिं समाणं अधिकरणं काउमागओ" एवं अजयणकहणे चउगुरुगा पच्छित्तं । अजयणाते कहिते सो साधू एगतरस्स पदुट्ठो जं कहिति तं ते अजयणाकही पावेंति । "एगतरो" त्ति साहुसंघाडगो गिही य ।

अहवा – साहुसंघाडगो मूलायरिओ य ।

अधवा – मूलायरिओ जस्स समीवं संकंतो य ॥२८४५॥

तम्हा अजयणं वज्जेउं इमा विधी –

उवसामितो गिहत्थो, तुमं पि खामेहि एहि वच्चामो ।
दोसा हु अणुवसंते, ण सुज्झए तुज्झ सामयियं ॥२८४६॥

पुव्वं गुरुणो एगंते कहेउं पच्छा सो साधू एगंते भण्णति – "उवसामितो सो गिहत्थो, एहि वच्चामो, तुमं पि तं खामेह, अणुवसमंतस्स इहलोगपरलोगे य बहु दोसा । समभावो-सामायियं, तं सकसायस्स णो विसुज्झेज्जा" । एवं एगंते भणितो जति णोवसमति तो एवं चेव गणमज्झे भण्णति, एवं भणिए कोति गच्छति, कोति ण गच्छति ॥२८४ ॥

तिव्वकसायपरिणतो य भण्णति – "तस्स गिहिणो णिमित्तेणं इहं पि ठाणं ण लभामि –

तमतिमिरपडलभूओ, पावं चिंतेइ दीहसंसारी ।
पावं ववसितुकामो, पच्छित्ते मग्गणा होति ॥२८४७॥

कण्हचउद्दसीए राओ भासुरदव्वाभावो तमं भण्णति, तम्मि चेव रातो जदा रयरेणुधूमधूमिगा भवति तदा तमतिमिरं भण्णति, जदा पुण ताए चेव रातीए रयायिया मेहदुद्दिणं च भवति तदा तमतिमिर-पडलं भण्णति – सुट्ठुं अंधकारं ण तत्थ पुरिसो किं चि पासति । एवं पुरिसो कसाय-उदएण तिव्वतिव्वतर-तिव्वतमेण तमतिमिरपडलंभूतो भण्णति । भूतशब्दः द्रव्यान्धकारसादृश्योपम्यार्थे द्रष्टव्यः ।

अहवा – तम एवं तिमिरं – तमतिमिरं तमतिमिरमेव पडलं – तमतिमिरपडलं, अंधकार-विशेषमित्यर्थः, तेण उवमा कज्जति तेण तमतिमिरपडलभूतो । इहापि भूतशब्दः उपमार्थे । यथा अन्धकारेण ण किंचिदुपलभ्यते एवं तीव्रकषायोदयान्न चारित्रगुणः कश्चिदुपलभ्यते ।

अहवा – पित्तुदयविकारेण य दव्वचक्खिदियस्स सबलीकरणं तिमिरं भण्णति । दव्विंदियसबलभावे य दंसणावरणकम्मोदओ भवति । सिंभुदयविकारेण य दव्वचक्खिदियस्संतरणं पडलं भण्णति, तब्भावे यं चक्खु-

दंसणावरणोदग्रो। एवं तिमिरपडलेहिं पुरिसस्स तमो भवति – न किंचित् पश्यतीत्यर्थः। तेण उवमा जस्स कज्जति सो भण्णति तमतिमिरपडलभूतो। इहापि भूतशब्दो उपमार्थे, यथाऽसौ पुमान् दर्शनावरणोदयान्न किंचित् पश्यति। एवं चारित्रावरणकषायोदयादिह परलोके हितं न किंचित् पश्यति। ऐश्वर्याज्जीविताद्वा भ्रंसनं पापं तं तस्स गिहत्थस्स नितेति। तम्मि पाप-वयसिते पच्छित्ते इमा मग्गणा भण्णति ॥२८४७॥

वच्चामि वच्चमाणे, चतुरो लहुगा य होंति गुरुगा य।
(पंथे) पहरण मग्गण लद्धे गहणम्मि य छल्लहू गुरुगा ॥२८४८॥

वच्चामि तं गिहत्थं पंतावेमि त्ति संकप्पकरणे चउलहुग्रा, पदभेदातिपंथे वच्चंतस्स चउगुरुगा, पहरणमग्गणे छल्लहुगा, पहरणे लद्धे गहिते य छग्गुरुगा ॥२८४८॥

उग्गिण्णदिण्ण अमाये, छेदो तिसु वेगसारणे मूलं।
दोसु य अणवट्ठप्पो, तप्पभितिं होंति पारंची ॥२८४९॥

उग्गिण्णे छेदो, पहरिते मूलं। अण्णे भणंति – उग्गिण्णे पहरिते य अमते छेदो, मते मूलं। "जं जत्थ" त्ति परितावणादियं च जं जत्थ संभवति तं वत्तव्वं ॥२८४९॥

अहवा – तं संजयं गिहत्थवहाए आगतं सो चेव गिहत्थो।

तं चेव निट्ठवेती, बंधण णिच्छुभण कडगमद्दो वा।
आयरिए गच्छम्मि य, कुलगणसंघे य पत्थारो ॥२८५०॥

तं संजयं णिट्ठवेति व्यापादयति बंधति वा, वसहि-णिवेसण-गाम-णगर-देस-रज्जातो वा णिच्छुभति घाडयतीत्यर्थः, जंतेण वा पीलति।

अहवा – कडगमद्दो एगस्स रुट्ठो सव्वं चेव गच्छं व्यापादयति। जहा खंदगगच्छो पालएण।

अहवा – आयरियाण बंधण-णिच्छुभण-कडगमद्दं करेति, एवं कुलसमवायं दातुं कुलस्स करेति। एवं गणस्स संघस्स एस पत्थारो। अह एगं अणेगे वा गामे णगरे पंथे वा जं जत्थ पासति तं तत्थेव व्यापादयति। एस पत्थारो भण्णति ॥२८५०॥ एवं एगागिणो वच्चंतस्स आरोवणा दोसा य भणिया।

इदाणिं सहायसहियस्स आरोवणा भण्णति –

संजयगणे गिहिगणे, गामे णगरे य देस रज्जे य।
अहिवति रायकुलम्मि य, जा जहिं आरोवणा भणिता ॥२८५१॥

बहू संजते मेलेत्ता तं संजयगणं सहायं गेण्हति। एवं गिहिगणं। तं पुण गामं णगरं देसं रज्जं, अहिपति त्ति अह एतेसिं चेव अधिवा सहाया, ते गेण्हंति। अण्णं वा किं चि रायकुलं सहायं गेण्हति, जहा-सगा कालगऽज्जेण। एगागिणो जा य संकप्पादिगा आरोवणा भणिता इहावि सच्चेव दट्ठव्वा ॥२८५१॥

संजयगुरू तदहिवो, गिही तु गाम पुर देस रज्जे वा।
एएसिं चिय अहवा, एगतरजुओ उभयओ वा ॥२८५२॥

संजयाणं जो गुरू सो तदधिवो भण्णति।

अहवा – संजताण अधिवो गुरू। गिहीण तदधिवो गिहत्थो भवति। तुशब्दो विकल्पे, पासंडी चेत्यर्थः। गाम-पुर-देस-रज्जाण जे अधिवा भणंति – गामस्स गामउडो व्यापृतक इत्यर्थः। पुरस्स सेट्ठी कोट्टवालो वा, देसस्स देसकुट्टो वा, देसव्यापृतको वा, रज्जस्स महामंत्री, राजा वा, एतेसिं एगतरेण उभएण वा संजुत्तो गच्छति ॥२८५२॥

"[1]जा जहिं आरोवणा भणिता" अस्य व्याख्या – संजयगणेण तदधिवेण वा सहितो वच्चामि त्ति संकप्पे चउलहुं।

तहिं वच्चंते गुरुगा, दोसु उ छल्लहुग गहणे छग्गुरुगा।
उग्गिण्ण पहरण, छेदो मूलं जत्थ वा पंथे ॥२८५३॥

एगतरोभएण वा संजते पदभेदातिपंथे वच्चंतस्स चउगुरुं, पहरण-मग्गणदिट्ठे य दोसु पदेसु छल्लहुं, गहिए छग्गुरु, उग्गिण्णपहरिएसु दोसु पदेसु जहासंखं छेदो मूलं च, परितावणादियं पंथे वा पुढवादियं सव्वं दट्ठव्वं। गिहत्थादिएहिं एगतरोभयसहितो गच्छामि त्ति संकप्पेति चउगुरुं, पदभेदादिपंथे पहरणमग्गणे य दोसु वि पदेसु छल्लहुं। शेषं पूर्ववत्। एवं भिक्खुस्स भणियं ॥२८५३॥

एसेव गमो नियमा, गणि आयरिए य होइ णायव्वो।
नवरं पुण णाणत्तं, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥२८५४॥

उवज्झाए आयरिए य एसेव विधी। णवरं – हेट्ठा पदं हुसति उवरिं अणवट्ठ-पारंचिया भवंति।

अहवा – तवारिहा सारिसा चेव, उवज्झायस्स मूलठाणे अणवट्ठो, आयरियस्स पारंचियं ॥२८५४॥

तवारिहाण इमो विसेसो –

भिक्खुस्स दोहि लहुगा, गणवच्छे गुरुग एगमेगेणं।
उवज्झाए आयरिए, दोहिं गुरुगं तु णाणत्तं ॥२८५५॥

भिक्खुस्स दोहिं वि लहुगा। आयरिये संते उवज्झाओ गणवच्छो वि भण्णति, तस्स तवारिहा अण्ण-तरेण तवेण वा कालेण वा गुरू आदिज्जंति।

अण्णे भणंति – तवगुरु चेव। कालगते आयरिए उवज्झाओ जाव अणभिसित्तो आयरियपदं अणुसीलंतो एवं उवज्झाओ आयरिओ भण्णति, आयरियस्स तवारिहा दोहिं वि गुरुगा, एयं "णाणत्तं" विसेसो ॥२८५५॥

काऊण अकाऊण व, उवसंत उवट्ठियस्स पच्छित्तं।
सुत्तेण उ पट्ठवणा, असुते रागो य दोसो वा ॥२८५६॥

गिहत्थस्स अवकारं काउं अकाउं वा जतो उवसंतो गुरुस्स आलोयण-विहाणेण अपुणकरणेण उवट्ठियस्स तस्स पच्छित्तं सुत्तेण पट्ठविजति त्ति, पट्ठाविजति – तस्याग्रतो निगद्यते "इदं ते प्रायश्चित्तमिति"। असुत्तोवदेसेणं पुण पायच्छित्तं अप्पं देंतस्स रागो, बहुं देंतस्स दोसो ॥२८५६॥

थोवं जति आवण्णो, अतिरेगं देति तस्स तं होति।
सुत्तेण उ पट्ठवणा, सुत्तमणिच्छंते णिज्जुहणा ॥२८५७॥

१ गा० २८५१।

जति थोवं आवण्णो तत्थ जति आयरिओ तस्स अतिरेगं देति, ऊणं वा, तो जत्तिएण अहियमूणं वा देति, तमायरियस्स पच्छित्तं भवति । तम्हा सुत्तेण पट्ठवणा । जो पुण सुत्तं णेच्छति सुत्तत्थाभिहियं वा पच्छित्तं णेच्छति, तस्स णिज्जूहणा विसंभोग इत्यर्थः ॥२८५७॥

जेणऽहियं ऊणं वा, ददाति तावतियमप्पणो पावे ।
अहवण सुत्तादेसे, पावति चउरो अणुग्घाया ॥२८५८॥

पूर्वार्धं गतार्थम् ।

अहवा – आयरिओ ऊणातिरित्तं देंतो सुत्तादेसेण चउगुरु पावति ।

तं च इमं सुत्तं –

"[1]जे भिक्खू उग्घातियं अणुग्घातियं वदति
अणुग्घातियं उग्घातियं वदति
उग्घातियं अणुग्घातियं देइ
अणुग्घातियं उग्घातियं देइ"
तस्स चउगुरु पच्छित्तं भवतीत्यर्थः ॥२८५८॥

वितियं उप्पाएतुं, सासणपंते असज्झ पंचपदा ।
आगाढे कारणम्मी, राया संसारिए जयणा ॥२८५९॥

कोइ पडिणीओ गिहत्थो, तस्स सासणहेतुं, तेण समाणमधिकरणमुप्पादेउं सो सासिज्जति । अप्पणा असमत्थो आगाढे कारणे (संजय-गामं) गामं णगरं देसं रज्जं एतेहिं पंचहिं पदेहिं सहितो सासेति, असमत्थो असहाओ वा रायसंसारियं कुज्जा, अणुसट्ठी धम्मकहा-विज्जा-णिमित्तादिएहिं जइउं । एसा जयणा ।

अहवा – पुव्वं गामभोइयस्स, पच्छा तस्सामिणो, एवं उत्तरुत्तरं, पच्छा जाव राया संसारियं कुज्जा । एसा वा जयणा–रायाणे पुण पंते तं रायाणं फेडिउं तव्वंसजं अण्णवंसजं वा भद्दयं ठवेति ॥२८५९॥

जो इमेहिं गुणेहिं जुत्तो फेडेति तस्स –

विज्जा-ओरस्सबली, तेयसलद्धी सहायलद्धी वा ।
उप्पाएतुं सासति, अतिपंतं कालगऽज्जो वा ॥२८६०॥

जो विज्जाबलेण जुत्तो जहा-अज्ज खउडो ।

उरस्सजेण वा बाहुबलेण जुत्तो जहा-बाहुबली ।

तेयलद्धीए वा सलद्धी जहा-बंभदत्तो पुव्वभवे संभूतो ।

सहायलद्धीए वा जहा-हरिएसबलो ।

एरिसो अधिकरणं उप्पाएउं अतिपंतं सासेति । जहा-कालगऽज्जेण गद्दभिल्लो सासिओ ।

को उ गद्दभिल्लो ? को वा कालगऽज्जो ? कम्मि वा कज्जे सासितो ?

---

१ अग्रे वर्तमानानीमानि चत्वार्यपि सूत्राणि ।

भणति –

उज्जेणी णाम णगरी। तत्थ य 'गद्दभिल्लो'' णाम राया। तत्थ 'कालगज्जा' णाम ग्रायरिया जोतिस-णिमित्त-बलिया। ताण भगिणी रूववती पढमे वए वट्टमाणी गद्दभिल्लेण गहिता। ग्रंते पुरे छूढा। ग्रज्जकालगा विण्णवेंति, संघेण य विण्णत्तो ण मुंचति।

ताहे रुट्ठो ग्रज्जकालगो पइण्णं करेति – "जइ गद्दभिल्लं रायाणं रज्जाग्रो ण उम्मूलेमि, तो पवयण-संजमोवग्घायगाणं तमुवेक्खगाण य गतिं गच्छामि"।

ताहे कालगज्जो कयगेण उम्मत्तली भूतो तिग-चउक्क-चच्चर-महाजणट्ठाणेसु इमं पलवंतो हिंडंति – "जइ गद्दभिल्लो राया तो किमतः परं।

जइ वा ग्रंतेपुरं रम्मं तो किमतः परं।

विसग्रो जइ वा रम्मो तो किमतः परं।

सुणिवेट्ठा पुरी जइ तो किमतः परं।

जइ वा जणो सुवेसो तो किमतः परं।

जइ वा हिंडामि भिक्खं तो किमतः परं।

जइ सुण्णे देउले वसामि तो किमतः परं"

एवं भावेउं सो कालगज्जो पारसकुलं गतो। तत्थ एगो साहि त्ति राया भण्णति, तं समल्लीणो णिमित्तादिएहिं ग्राउट्टेति। ग्रण्णया तस्स साहाणुसाहिणा परमरायाणेण कम्हि यि कारणे रुट्ठेणं कट्टारिगा मुद्देउं पेसिया सीसं छिंदाहि त्ति, तं 'ग्राकोप्पमाणं ग्रायातं सोयं विमणो संजातो।

ताहे कालगज्जेण भणितो मा ग्रप्पाणं मारेहि।

साहिणा भणियं – परमसामिणा रुट्ठेण एत्थ ग्रच्छिउं ण तरइ।

कालगज्जेण भणियं – एहि हिंदुगदेसं वच्चामो। रण्णा पडिस्सुयं। तत्तुल्लाण य ग्रण्णेसिं पि पंचाणउतीए साहिणा संग्रंकेण कट्टारियाग्रो मुद्देउं पेसियाग्रो। तेण पुव्विल्लेण दूया पेसिया मा ग्रप्पाणं मारेह। एह वच्चामो हिंदुगदेसं। ते छण्णउतिं पि सुरट्ठमागया। कालो य णवपाउसो वट्टइ वरिसाकाले ण तीरति गंतुं। छण्णउइं मंडलाइं कयाति (णि) विभत्तिऊणं। जं कालगज्जो समल्लीणो सो तत्थ राया ग्रधिवो राया ठवितो, ताहे सगवंसो उप्पण्णो। वत्ते य वरिसाकाले कालगज्जेण भणिग्रो-गद्दभिल्लं रायाणं रोहेमो। ताहे लाडा रायाणो जे गद्दभिल्लेण ग्रवमाणिता ते मेल्लेउं ग्रण्णे य ततो उज्जेणी रोहिता। तस्स य गद्दभिल्लस्स एक्का विज्जा गद्दहिरूवधारिणी ग्रत्थि। सा य एगम्मि ग्रट्टालगे परबलाभिमुहा ठविया। ताहे परमे ग्राधिकप्पे गद्दभिल्लो राया ग्रट्ठमभत्तोववासी तं ग्रवतारेति। ताहे सा गद्दभी महंतेण सद्देण णादति, तिरिग्रो मणुग्रो वा जो परबलिच्चो सद्दं सुणेति स सव्वो रुहिरं वमंतो भयविहलो णट्ठसण्णो धरणितलं णिवडइ।

कालगज्जो य गद्दभिल्लं ग्रट्ठमभत्तोववासिं णाउं सद्दवेहीण दक्खाणं ग्रट्ठसतं जोहाण णिरूवेति – "जाहे एस गद्दभी मुहं विडंसेति जाव य सद्दं ण करेति ताव जमगसमगं सराण मुहं पूरेज्जेह"।

तेहिं पुरिसेहि तहेव कयं। ताहे सा वाणमंतरी तस्स गद्दभिल्लस्स उवरिं हणिउं मुत्तेउं व लत्ताहिं य हंतुं गता। सो वि गद्दभिल्लो अवलो उन्मूलिओ। उट्ठिया उज्जेणी। भगिणी पुणरवि संजमे ठविया।

एवं अधिकरणमुप्पाएउं अतिपंतं सासेंति। एरिसे वि महारंभे कारणे विधीए सुद्धो अजयणापच्चतियं पुण करेंति पच्छित्तं ॥२८६०॥

जे भिक्खू उग्घातियं अणुग्घातियं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू अणुग्घातियं उग्घातियं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू उग्घातियं अणुग्घातियं देति, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू अणुग्घातियं उग्घातियं देति, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

उग्घातियं लहुयं भण्णति, अणुग्घाइयं गुरुगं। "वदति" प्ररूपयति, "ददाति" आरोपयति। एवं विवरीएसु परूवणादाणेसु चउगुरुगं पच्छित्तं।

उग्घायमणुग्घायं, वऽणुग्घायं तहा य उग्घायं।
जे भिक्खू पच्छित्तं, वएज्ज दिज्जा व विवरीयं ॥२८६१॥ गतार्था

प्रायश्चित्तस्य न्यूनाधिकदाने आज्ञाभंगादयो दोषाः –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं।
पावति जम्हा तेणं, अविवरीयं वदे दे वा ॥२८६२॥

विवरीयं परूवेतो देंतो वा तित्थगराणं आणाभंगं करेति, अण्णहा परूवणदाणेसु य अणवत्था कता भवति, अण्णहा परूवणदाणेहि य मिच्छत्तं जणेति, जहा एयं तहा अन्यदपि सर्वमलीकमिति, ऊणे चरणस्स असुद्धी, अधिके साधुपीडा। एवं दुविहा विराहणा भवति, जम्हा एते दोसा तम्हा अविवरीयं वदति देति वा ॥२८६२॥

परितावमणणुकंपा, भयं च लहुगम्मि पत्ते गुरु देंतो।
वीसत्थया ण सुज्झइ, इयरे अलियं वदंते य ॥२८६३॥

लहुगम्मि पत्ते गुरुं देंते साहुस्स परितावणा कता, अणणुकंपा य, भयेण य पुणो णालोयेति। इतरे त्ति गुरुं पत्ते लहुं देंते वीसत्थताए य पुणो पडिसेवेति, ण य से चारित्तं सुज्झइ। एते देंते दोसा। वदंते पुण दोसु वि सुत्तेसु अलियं भवति ॥२८६३॥

किं चान्यत् –

अप्पच्छित्ते उ पच्छित्तं, पच्छित्ते अइमत्तया।
धम्मस्सासायणा तिव्वा, मग्गस्स य विराधणा ॥२८६४॥

अप्पच्छित्ते अणावत्तीए जो पच्छित्तं देति, पत्ते वा आवत्तीए जो अतिप्पमाणं पच्छित्तं देति, सो सुअचरण धम्मस्स आसादणं गाढं करेति, दर्शनज्ञानचरणात्मकस्य च मार्गस्य विराधणां करोति ॥२८६४॥

"धर्मस्ये" त्ति अस्य व्याख्या –

सुय-चरणे दुहा धम्मो, सुयस्स आसायणऽण्णहा दाणे ।
ऊणं देंते ण सुज्झति, चरणं आसायणा चरणे ॥२८६५॥

अण्णहा वदंतेण सुत्तं विराहियं । ऊणं देंतेण चरणं विराधितं ॥२८६५॥

मग्गस्ये ति व्याख्या –

नाणाति-तिविहा मग्गो, विराहितो होति अण्णहा दाणे ।
सुयमग्गो वेगट्ठा, मग्गो य सुयं चरणधम्मो ॥२८६६॥

पुव्वद्धं कंठं । सुयं ति वा मग्गो त्ति वा एगट्ठं ।

अहवा – मग्गो सुअं भण्णति, धम्मो चरणं, एते विराहंतेण मोक्खमग्गो विराहितो भवति । एवं संजम-आयविराहणातो असंखडादयो य दोसा, देवया छलेज्ज ॥२८६६॥

वितियं गुरूवएसा, तववलिए उभयदुव्वल्लेऽवलिते ।
वेयावच्च अणुग्गह, विगिंचणट्ठाए विवरीयं ॥२८६७॥

आयरियपरंपरोवदेसेण आगतं गुरुं लहुं वा वदंतो देंतो वा सुद्धो । "तववलिय" त्ति चउत्थमादितव करणे वलिओ, सो उग्घातिपायच्छित्ते दिण्णे भणाति – "किं ममेतेण कज्जं ति, अण्णं पि देंति ।" ताहे आयरितो अणुग्घातं देति, भणति – "इमं च्चेव पच्छित्तं, एतं मे अणुवउत्तेण दिण्णं ।"

"उभयदुवलो" णाम धितीए संघयणेण य, तस्स अणुग्घातिए वि उग्घातं दिज्जइ, जहा तरति वोढुं । धितिसंघयणाण एगतरवलिए य तयणुरूवं दिज्जइ ।

"वलिए" त्ति - उभएण वि वलियस्स चियमंससोणियस्स दप्पुद्धरस्स उग्घातिए वि अणुग्घातं दिज्जति । जो आयरियाण वेयावच्चकरणे अब्भुज्जतो तस्स साणुग्गहं दिज्जति । भणियं च – "वेयावच्चकराणं होति अणुग्घाए वि उग्घातं" । अणुग्गहकसिणेण वा से दिजति, पायच्छित्ते दिण्णे छहिं दिवसेहिं गतेहिं अण्णे छम्मासा जतिउं आवण्णो झोसिय छ आदिल्ला अण्णे छम्मासा दिज्जंति । जो वा विगिंचियव्वो तस्स अपच्छित्ते वि पच्छित्तं दिज्जति, अप्पे वा वहुं दिज्जति, वरं पच्छित्तो मग्गो णस्सिहिति ॥२८६७॥

जे भिक्खू उग्घाइयं सोच्चा णच्चा संभुंजइ, संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू उग्घाइय-हेउं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू उग्घाइय-संकप्पं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू उग्घातियं उग्घातिय-हेउं वा उग्घातिय-संकप्पं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अणुग्घातियं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अणुग्घाइय-हेउं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू अणुग्घाइय-संकप्पं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अणुग्घातियं अणुग्घाइय-हेउं वा अणुग्घाइय-संकप्पं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ, संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू उग्घाइय-हेउं वा अणुग्घाइय-हेउं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू उग्घाइय-संकप्पं वा अणुग्घाइय-संकप्पं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा उग्घाइय-हेउं वा अणुग्घाइय-हेउं वा उग्घाइय-संकप्पं वा अणुग्घाइय-संकप्पं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

[1]एते छ सुत्ता । उग्घातियं णाम जं संतरं वहति लघुमित्यर्थः । अणुग्घातियं णाम जं णिरंतरं वहति गुरुमित्यर्थः । "सोच्चं" त्ति अण्णसगासाओ, "णच्चं" ति सयमेव जाणित्ता, "संभुजे" ति एगओ भोजनं ।

उग्घाइयहेउसंकप्पाण उग्घातियाण तिण्ह वि इमं वक्खाणं –

उग्घातियं वहंते, आवण्णुग्घायहेउगे होति ।
उग्घातिय-संकप्पिय, सुद्धे परिहारियतवे य ॥२८६८॥

उग्घातियं ति पायच्छित्तं वहंतस्स – पायच्छित्तमापण्णस्स जाव मणालोइयं ताव हेउं भण्णति, आलोइए "अमुगदिणे तुज्झेयं पच्छित्तं दिज्जिहिति" त्ति संकप्पियं भन्नति । एयं पुण दुविधं पि दुविहं वहति – सुद्धतवेण वा परिहारतवेण वा । हेऊ वि सुद्धस्स तवस्स वा परिहारतवस्स वा । संकप्पियं पि सुद्धतवेण वा परिहारतवेण वा ॥२८६८॥

---

१ 'कानि षड्सूत्राणि' इति सम्यग्विचारणीयम् ।

अणुग्घाइयहेउ-संकप्पाण अणुग्घाइयाण तिण्ह वि इमं वक्खाणं –

अणुग्घातियं वहंते, आवण्णऽणुघातहेउगं होति ।
अणुघातिय-संकप्पिय, सुद्धे परिहारिय तवे य ॥२८६९॥

पूर्ववत् । णवरं – अणुग्घातिए त्ति वत्तव्वं ॥२८६९॥

जे सगच्छे सुद्धपरिहारतवाण आरूढा ते णज्जंति चेव ।

जे परगच्छातो आगता ते पुच्छिज्जंति –

को भंते ! परियाओ, सुत्तत्थ अभिग्गहो तवोकम्मं ।
कक्खडमकक्खडेसु य, सुद्धतवे मंडवा दोन्नि ॥२८७०॥

इमा पढमा पुच्छा –

गीयमगीओ गीओ, महंति कं वत्थु कस्स व सि जोग्गो ? ।
अग्गीउ त्ति य भणिते, थिरमथिर तवे य कयजोग्गो ॥२८७१॥

सो पुच्छिज्जति – किं तुमं गीयत्थो अगीयत्थो ? जति सो भणति – गीतो महं ति ।

तो पुण पुच्छिज्जति – किं आयरिओ ? उवज्झाओ ? पव्वत्तओ ? थेरो ? गणावच्छेतितो ? वसभो ?

एतेसिं एगतरे अक्खाए पुच्छिज्जति – कयमस्स तवस्स जोग्गो – सुद्धस्स, परिहारतवस्स ?

अह सो अगीतोमि त्ति भणिज्जा आपुच्छिज्जति – थिरो अथिरो त्ति। थिरो दृढो, तवकरणे बलवानित्यर्थः । अथिरो अंतरादेव भज्जते, नांतं नयतीत्यर्थः ।

पुणो थिरो अथिरो वा पुच्छिज्जति – तवे कयजोग्गो तवकरणेनाभ्यस्ततवो ॥२८७१॥

सगणम्मि नत्थि पुच्छा, अण्णगणादागयं च जं जाणे ।
परियाओ जम्म दिक्खा, अउणत्तीस वीसकोडी वा ॥२८७२॥

सगणे एयाओ णत्थि पुच्छाओ, जओ सगणवासिणो सव्वे णज्जंति जो जारिसो, अण्णगणागतं पि जं जाणे तं न पुच्छे । "भंते त्ति आमंतणवयणं, "[1]परियाए" त्ति परियाओ दुविहो – जम्मपरियाओ पव्वज्जापरियाओ य । जम्मपरियाओ जहण्णेण जस्स एगूणतीसवासा । कहं ? जम्मट्ठवरिसे पव्वतितो, णवमवरिसे उवट्ठावितो, वीसतिवरिसस्स दिट्ठिवाओ उद्दिट्ठो, वरिसेण जोगसमत्तो एवं एते अउणतीसं वासा । उक्कोसेण देसूणां पुव्वकोडी । पव्वज्जा एगूणवीसस्स दिट्ठिवातो उद्दिट्ठो वरिसेण समत्तो, एते वीसं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥२८७२॥

इदाणिं "[2]सुत्तत्थमि" ति अस्य व्याख्या –

णवमस्स ततियवत्थू, जहण्ण उक्कोस ऊणगा दस उ ।
सुत्तत्थऽभिग्गहे पुण, दव्वादितवो रयणमादी ॥२८७३॥

णवमस्स पुव्वस्स जहण्णेणं ततियं आयारवत्थू, तत्थ कालणाणं वण्णिज्जति, जाहे तं अधीयं ।

---

१ गा० २८७० । २ गा० २८७० ।

उक्कोसेण जाहे ऊणगा दस पुव्व अधीता । सगलदसपुव्विणो परिहारतवो ण दिज्जति । सुत्तत्थस्स एयं पमाणं । "[1]अभिग्गहे" त्ति अभिग्गहा दव्वादिया कालभावेहिं । "तवोकम्मं" पुण "रयणमादि" त्ति, रयणावली आदिसद्दातो कणगावली सीहनिक्कीलियं जवमज्झं वइरमज्झं चंदायणं ॥२८७३॥

"[2]कयखडेसु य पच्छद्धं" अस्य व्याख्या – सुद्धपरिहारतवाणं कतरो कयखडो ? कतरो वा अकयखडो ?

[3]एत्थ सेल-एरंड-मंडवेहिं दिट्ठंतो कज्जति –

जं मायति तं छुभति, सेलमए मंडवे ण एरंडे ।
उभयबलियम्मि एवं, परिहारो दुब्बले सुद्धो ॥२८७४॥

सेलमंडवे जं मायइ तं छुभति, ण सो भज्जति । एरंडमए पुण जावतियं मायइ तावतियं छुभति । एवं "उभयबलिए" त्ति धिइसंघयणोवजुत्ते जं आवज्जति तं परिहारतवेण दिज्जति । जो पुण धितिसंघयणेहिं "दुब्बलो" त्ति हीणो तस्स सुद्धतवो वा हीणतरं वि दिज्जति ॥२८७४॥

सीसो पुच्छति – किं सुद्धपरिहारतवाण एगावत्ती उत भिण्णा ?

उच्यते –

अविसिट्ठा आवत्ती, सुद्धतवे चेव तह य परिहारे ।
वत्थुं पुण आसज्जा, दिज्ज ते तत्थ एगतरं ॥२८७५॥

सुद्धपरिहारतवाण अविसेसिया आवत्ती आवण्णिया भवन्ति । संघयणोवजुत्तं जाणिऊणं परिहारतवो दिज्जति, इतरो वा सुद्धतवो, एवं एगतरा दिज्जति ॥२८७५॥

इमेरिसाण सव्वकालं सुद्धतवो दिज्जति –

सुद्धतवो अज्जाणं, अगियत्थे दुब्बले असंघयणे ।
धितिबलिए य समण्णागएसु सव्वेसु परिहारो ॥२८७६॥

अज्जाणं अगीयत्थस्स, धितीए दुब्बलस्स, संघयणहीणं, एतेसिं सुद्धतवो दिज्जति । धितिबलजुत्ते संघयणसमण्णिए पुरिसे परिहारतवो दिज्जति ॥२८७६॥

परिहारतवं पडिवज्जंते इमा विही –

विउसग्गो जाणणट्ठा, ठवणा भीएसु दोसु ठवितेसु ।
अगडे णदी य राया, दिट्ठंतो भीय आसत्थे ॥२८७७॥

परिहारतवं पडिवज्जंते दव्वादि अणुगते पसत्थेसु दव्वादिसु काउस्सग्गो कीरइ, सेससाहू जाणणट्ठा । आलावणादिपदाण य ठवणा ठविज्जति, तेसु अठविएसु जति भीतो तो आसासो कीरइ त्ति । इमेहिं य वीहि, पायच्छित्तं, गुरुभाउ, महती य णिज्जरा भवति । कप्पट्ठियअणुपरिहारिया य से सहाया ठविता । इमेहिं अगड-णदी-तीरादिदिट्ठंतेहिं भीतस्स आसासो कीरति । अगडे पडियस्स आसासो कीरति – एस जणो धावति, रज्जू आणिज्जति । अचिरा उत्तारिज्जसि, मा विसादं गेण्हसु । एवं जति णाऽऽसासिज्जति तो मया त्ति भीएण तत्थ चेव मरेज्ज ।

---

१ गा० २८७० । २ गा० २८७० । ३ गा० २८७० ।

णदिपूरगेण हीरमाणो भण्णति – तडं अवलंबाहि, एस तारगो दतिगादि घेत्तुमवतरिउ-मुत्तारेहिसि मा विसादं गेण्हसु ।

रायगहिओ वि भण्णति – एस राया जति वि दुट्ठो तहा वि विण्णविज्जंतो पुरिसादिएसु आयारं पस्सति, अइ डंडं न करेति, एवं आसासिज्जंतो आससति, दढचित्तो य भवति ॥२८७७॥

काउस्सग्गो य किं कारणं कीरइ ? उच्यते –

णिरुवस्सग्गणिमित्तं, भयजणणट्ठा य सेसगाणं तु ।
तस्सप्पणो य गुरुणो, य साहए होइ पडिवत्ती ॥२८७८॥

साहुस्स णिरुवसग्गणिमित्तं सेससाहूण य भयजणणट्ठा काउस्सग्गो कीरइ । सो य दव्वओ वडमादिखीररुक्खे, खेत्तओ जिणघरादिसु, कालओ पुव्वसूरे पसत्थादिदिणेसु य, भावतो चंदतारावलेसु, तस्सप्पणो गुरुणो य साहए सुपडिवत्ती भवति सो य जहण्णेण मासो, उक्कोसेण छम्मासा ॥२८७८॥

तम्मि परिहारतवं पडिवज्जंते आयरिओ भणति – एयस्स साहुस्स णिरुवसग्गणिमित्तं ठामि काउस्सग्गं जाव वोसिरामि । "लोगस्सुज्जोयगरं" अणुपेहेत्ता "णमो अरिहंताणं" ति पारेत्ता "लोगस्सुज्जोयगरं" कड्ढित्ता आयरिओ भणति –

कप्पट्ठिओ अहं ते, अणुपरिहारी य एस ते गीओ ।
पुव्विं कयपरिहारो, तस्सऽसयण्णो वि दढदेहो ॥२८७९॥

आयरिओ, आयरियणिउत्तो वा णियमा गीतत्थो तस्स आयरियाण पदाणुपालगो, कप्पट्ठितो भण्णति । सो भणाति – अहं ते कप्पट्ठाती । परिहारियं गच्छंतं सव्वत्थ अणुगच्छति जो सो अणु परिहारितो, सो वि णियमा गीयत्थो, सो से दिज्जति, एस ते अणुपरिहारी । सो पुण पुव्वकयपरिहारी, पुव्वकयपरिहारियस्स असति अण्णो वि अकयपरिहारो धितिसंघयणजुत्तो दढदेहो गीयत्थो अणुपरिहारितो ठविज्जति, ॥२८७९॥

एवं दोसु ठविएसु इमं भण्णति –

एस तवं पडिवज्जति, ण किं चि आलवदि मा ण आलवह ।
अत्तट्ठ चिंतगस्सा, वाघातो भे न कायव्वो ॥२८८०॥

एस आयविसुद्धिकारओ परिहारतवं पडिवज्जति ।

एस तुब्भे ण किं चि आलवति, तुब्भे वि एयं मा आलवह ।

एस तुब्भे सुत्तत्थेसु सरीरवट्टमाणी वा ण पुच्छति, तुब्भे वि एयं मा पुच्छह ।

एवं परियट्टणादिपदा सव्वे भाणियव्वा । एवं आलवणादिपदे आत्मार्थचिन्तकस्य ध्यानपरिहार-क्रियाव्याघातो न कर्तव्यः ॥२८८०॥

इमे ते आलवणादिपदा –

आलावण-पडिपुच्छण-परियट्टुट्ठाण वंदणग मत्तो ।
पडिलेहण-संघाडग-भत्तदाण-संभुंजणे चेव ॥२८८१॥

आलावो देवदत्तादि, पुच्छा सुत्तत्थादिएसु, पुव्वाधीतसुत्तस्स परियट्टणं, कालभिक्खादियाण उट्ठाणं, राओ सुत्तट्ठितेहिं खमणमादियं वा वंदणं, खेलकाइयसण्णासंसत्तमत्तगो ण सोहेति तस्संतिओ वा ण घेप्पति,

उवकरणं परोप्परं ण पडिलेहेंति, संघाडगा परोप्परं ण भवंति, अभत्तदाणं परोप्परं ण करेंति, एगमंडलीए ण भुंजंति, यच्चान्यत् किंचित् करणीयं तं तेण सार्धं ण कुर्वन्तीत्यर्थः ॥२८८१॥

इमं गच्छवासीण पच्छित्तं –

संघाडगाओ जाव उ, लहुगो मासो दसण्ह तु पदाणं ।
लहुगा य भत्तदाणे, संभुंजणे होंतिऽणुग्घाता ॥२८८२॥

जति गच्छिल्लगा परिहारियं आलवति तो ताण मासलहु, एवं जाव संघाडगपदं अट्ठमं सव्वेसु मासलहुं, जति गच्छिल्लया हंद भत्तं गेण्हसु तो चउलहुं, एगट्ठं भुंजंताण चउगुरुं ॥२८८२॥

परिहारियस्स इमं पच्छित्तं –

संघाडगा उ जो वा, गुरुगो मासो दसण्ह तु पदाणं ।
भत्तपयाणे संभुंजणे य परिहारिए गुरुगा ॥२८८३॥

परिहारियस्स अट्ठसु पएसु मासगुरुं भत्तदाणसंभुंजणे चउगुरुं ॥२८८३॥

कप्पट्ठियस्स अणुपरिहारियस्स दोण्ह वि एग संभोगो, एते दो वि गच्छिल्लएहिं समाणं आलावं करेंति वंदामो त्ति य भणंति, सेसं ण करेंति ।

कप्पट्ठिय-परिहारियाण इमं परोप्पर-करणं –

कितिकम्मं च पडिच्छति, परिण्ण पडिपुच्छगं पि से देति ।
सो वि य गुरुमुवचिट्ठति, उदंतमवि पुच्छितो कहति ॥२८८४॥

कप्पट्ठितो परिहारियवंदणं पडिच्छति । "परिण्ण" त्ति पच्चक्खाणं देति । सुत्तत्थेसु पडिपुच्छं देति । "सो" त्ति परिहारिओ कप्पट्ठियं उवचिट्ठति, अब्भुट्ठाणादिकिरियं सुस्सूतं च करेति, सण्णादि गच्छंतो अच्छेइ, पुच्छितो कप्पट्ठितेण "उदंत" इति सरीरवट्टमाणी कहेति ॥२८८४॥

उट्ठेज्ज णिसीएज्जा, भिक्खं गेण्हेज्ज भंडगं पेहे ।
कुविय-पिय-बंधवस्स व, करोति इतरो च तुसिणीओ ॥२८८५॥

परिहारितो तवकिलामितो जइ दुब्बलयाए उट्ठेउं ण सक्केइ ताहे अणुपरिहारियस्स अग्गतो भणेति – उट्ठेज्जामि, णिसीएज्जामि, भिक्खं हिंडेज्जामि । उट्ठविओ जति भिक्खं हिंडिऊण सक्कति ता हिंडति । अह ण सक्केति तो अणुपरिहारिओ परिहारियभायणेहिं हिंडित्तु देति । जइ ण सक्केइ भंडगं पडिलेहेउ ताहे अणुपरिहारिओ से पडिलेहणियं करेइ । जइ ण सक्केति सण्णाकाइयभूमिं गंतुं । तत्थ परिहारिओ भणाति – काइयसण्णाभूमिं गच्छेज्जामि, ताहे से अणुपरिहारिओ मत्तए पणामेति । एवं जहा पियबंधुणो कुविओ बंधू जं करणीयं तं तुसिणीयभावेण सव्वं करेति । एवं "इयरो" त्ति अणुपरिहारितो करेति ॥२८८५॥

सुत्तणिवाओ इत्थं, परिहारतवम्मि होइ दुविधम्मि ।
तं सोच्चा णच्चा वा, संभुंजंतस्स आणादी ॥२८८६॥

एत्थ सुत्तनिवाओ – जो परिहारतवं दुविधं उग्घायं अणुग्घायं वहइ तं सोच्चा णच्चा वा जो संभुंजति तस्स आणादिया दोसा भवंति ॥२८८६॥

बितियपदसाहुवंदण, उभग्रो गेलण्ण थेर ग्रसती य।
ग्रालवणादी उ पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥२८८७॥

साधुवंदणं ति ग्रण्णगच्छं साधू संपट्ठिता। ग्रण्णो साधू ते दट्ठुं भणाति–ग्रमुगसाहुस्स वंदणं करेज्जह, सो परिहारतवं पडिवण्णो जस्स परिभाइतं (तियं) हत्थे, सो ग्रयाणंतो वंदिउं वंदणयं कधेति, तस्स ण दोसो।

"उभग्रो गेलण्णं" त्ति कप्पट्ठियं ग्रणुपरिहारिय परिहारिग्रो ग्र एते जति तिण्णि वि गिलाणा ताहे गच्छेल्लया सव्वं जयणाए करेंति।

का जयणा ? भण्णति – गच्छेल्लया परिहारिय-भायणेहिं हिंडित्ता कप्पट्ठियस्स पणामेंति, सो ग्रणुपरिहारियस्स पणामेति, सो वि परिहारियस्स। ग्रत्थ कप्पट्ठियग्रणुपरिहारिया पणामेउं पि ण वएंति तो सयमेव गच्छिल्लया करेंति। जति गच्छिल्लया सव्वे वि गिलाणा तो ते कप्पट्ठियादिया तिण्णि जयणाए सव्वं पि करेज्जा। परिहारिग्रो गच्छिल्लयभायणेसु ग्राणिउं ग्रणुपरिहारियस्स पणामेति, सो कप्पट्ठियस्स, सो वि गच्छिल्लयाणं। "थेर ग्रसतिए" त्ति थेरा ग्रायरिया, तेसिं वेयावच्चकरस्स ग्रसती, वेयावच्चकरवाघाए वा ग्रण्णो य सलद्धीग्रो णत्थि, ताहे परिहारिग्रो वि करेज्ज जयणाए, सो गुरुभायणेसु हिंडिउं ग्रणुपरिहारियस्स पणामेति। कप्पट्ठियस्स वा सो वि ग्रायरियाणं देति। एवमादिसु कज्जेसु ग्रालवणादीपदे जयणाए भिक्खू समाचरेदित्यर्थः ॥२८८७॥

सुत्ताणि[1] फुं।

इदाणिं एतेसिं चेव छण्हं सुत्ताणं दुगादिसंजोगसुत्ता वत्तव्वा।

तत्थ [2]दुगसंजोगे पण्णरस सुत्ता भवंति। तत्थ पढमं दसमं पनरसमं च। एते तिण्णि दुगसंजोगसुत्ता सुत्तेणेव गहिया, सेसा बारस ग्रत्थतो वत्तव्वा।

[3]तिगसंजोगेण वीसं सुत्ता भवंति। तत्थ छट्ठ पणरसमं च दो वि सुत्ता सुत्तेणेव गहिता, सेसा ग्रट्ठारस ग्रत्थेणेव वत्तव्वा।

[4]चउसंजोगेणं पण्णरस, ते ग्रत्थेणेव वत्तव्वा।

[5]पंचसंजोगेण छ, तेवि ग्रत्थेण वत्तव्वा।

छक्कगसंजोगे एक्कं तं सुत्तेणेव भणितं। एवं एते सत्तावन्नं संजोगसुत्ता भवंति। एतेसिं ग्रत्थो पुव्वसुत्तसमो।

दुगसंजोगेण उग्घातियं ग्रणुग्घातियं वा कहं संभवति ?

भण्णति – ग्रावत्ती से उग्घातिया कारणे उ दाणं ग्रणुग्घातियं। एवं उग्घायाणुग्घायसंभवो।

ग्रहवा – तवेण ग्रणुग्घातं कालतो उग्घातियं, एवं उवउज्जिऊण भावेतव्वं ॥२८८७॥

१–पद् इत्यर्थः।

२–के इति विचार्यम्-१२, १३, १४, १५, १६। २३, २४, २५, २६। ३४, ३५, ३६। ४५, ४६ ५६=१५।

३–१२३, १२४, १२५, १२६। १३४, १३५, १३६। १४५, १४६। १५६। २३४, २३५, २३६। २४५, २४६। २५६। ३४५, ३४६। ३५६, ४५६ = २०।

४–१२३४, १२३५, १२३६। १२४५, १२४६। १२५६। १३४५, १३४६। १४५६। २३४५, २३४६। २४५६। ३४५६। १३५६। २३५६ = १५।

५–१२३४५–१२३४६–१३४५६–२३४५६–१२३५६–१२४५६।

जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमिय-मणसंकप्पे संथडिए निव्वितिगिच्छा-
समावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेत्ता संभुंजति, संभुंजंतं वा सातिज्जति ।

अह पुण एवं जाणेज्जा –

"अणुग्गए सूरिए, अत्थमिए वा" से जं च मुहे, जं च पाणिंसि,
जं च पडिग्गहे, तं विगिंचिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे नाइक्कमइ ।
जो तं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

"जे" त्ति णिद्देसे, "भिक्खू" पुव्ववण्णिओ । उग्गतो उदितो । को सो ? आदिच्चो । वत्तणं वित्ती-जीवनोपायमित्यर्थः । उग्गते आदिच्चे वित्ती जस्स सो उग्गतवित्ती । पाठांतरेण वा उग्गतमुत्ती, उग्गताए आदिच्चमुत्तीए जस्स वित्ती सो उग्गतमुत्ती ।

अहवा – "मूर्तिः" शरीरं, तं जस्स प्रतिश्रयावग्रहात् उदिते आइच्चे वृत्ति-निमित्तं प्रचारं करोति सो वा उग्गयमुत्ती भण्णति ।

अणत्थमिए आदिच्चे जस्स मणसंकप्पो भवति स भण्णति – अणत्थमियमणसंकप्पो । उग्गयवित्ती-गहणातो सोलसभंगीए पच्छिल्ला अट्ठ भंगा गहिता । अणत्थमियसंकप्पगहणातो वितियसोलसभंगीए पच्छिल्ला चेव अट्ठ भंगा गहिता । एतेहिं सव्वभंगसूयणा कता । संथडिओ णाम हट्ठसमत्थो, तद्दिवसं पज्जतभोगी वा— अध्वानप्रतिपन्नो क्षपक ग्लानो वा न भवतीत्यर्थः। वितिगिच्छा विमर्पः मतिविप्लुता संदेह इत्यर्थः, सा णिग्गता वितिगिच्छा जस्स जो णिव्वितिगिच्छो भवति । उदिय अणत्थमिय संथडिय णिव्वितिगिच्छे य असणादि भुंजंतो सुद्धो ।

अह पुण अद्ध-भुत्तो एवं जाणति णिव्वितिगिच्छेण चित्तेण जहा – "अणुदितो अत्थमितो वा आदिच्चो" से जं च मुहे पक्खित्तं, जं च पाणिणा गहियं, जं च पडिग्गहे ठवियं, तं च "विगिंचमाणे" त्ति-परिठविते, "विसोहेमाणे" त्ति णिरवयवं करेंतो, णो प्रतिषेधे, अतिक्कमणं लंघणं, धम्मो त्ति सुतचरणधम्मो, जिणाणं च, णो अतिक्कमति ।

जो पुण अणुदियऽत्थमिते त्ति णिव्वितिगिंछेण चित्तेण भुंजति तस्स चउगुरुं पच्छित्तं । एवं संथडीए वितिगिच्छे वि सुत्तं । असंथडीए णिव्वितिगिच्छे वितिगिच्छे य दो सुत्ता । एवं एते चउरो सुत्ता ।

इदाणिं णिज्जुत्तीए सुत्तसंगहगाहा –

संथडमसंथडे वा, णिव्वितिगिंछे तहेव वितिगिंछे ।
काले दव्वे भावे, पच्छित्ते मग्गणा होति ॥२८८८॥

पूर्वार्धं गतार्थम् । पढमं सुत्तं संथडीए णिव्वितिगिच्छे । तत्थ-तिविधा पच्छित्तमग्गणा । काल-दव्व-भावेहिं ।

कालपच्छित्तपरूवणत्थं भंगपरूवणा कज्जति ।
अणुदियमणसंकप्पे अणुदियगवेसी अणुदियगाही अणुदियभोती ।
"अणुदियमणसंकप्प"ग्गहणेण भावो चेव केवलो घेप्पति, सव्वत्थाणुपाती ।

"अणुदियगवेसि" त्ति-उवओगादिकालतो जाव भिक्खं ण गेण्हति ।

"अणुदियगाहि" त्ति आदिभिक्खग्गहणकालतो जाव ण भुंजति ।

"अणुदियभोति" त्ति आदिलंबणाओ जाव पच्छिमो लंबणो ।

एतेसु चउसु पदेसु सपडिपक्खेसु भंगरयणलक्खणेण सोलस भंगा रएयव्वा ।

रइएसु जत्थ मज्झिल्लपदेसु दोसु परोप्परविरोहो दीसति ।

मज्झिल्लेसु वा एक्कम्मि दोसु वा उदितो दिट्ठो अंतिल्ले य अणुदितो ते भंगा विरुज्झमाणा वज्जा, सेसा गज्झा ।

अणत्थमियमणसंकप्पे अणत्थमियगवेसी अणत्थमियगाही अणत्थमियभोती – एतेसु चउसु पदेसु सपडिपक्खा सोलस भंगा कायव्वा ।

एत्थ मज्झिल्लपदेसु जत्थ परोप्परं विरोहो दीसति । मज्झिल्लेसु वा एक्कम्मि दोसु वा अत्थमिओ दिट्ठो, अंते य अणत्थमिओ ते भंगा विरुज्झमाणा वज्जा, सेसा गज्झा ॥२८८८॥

अणुदिय-उइय-अत्थमिय-अणत्थमिएसु चउसु वि ठाणेसु अविरुज्झमाणभंगपरिणामपददरिसणत्थं । भण्णति –

अणुदियमणसंकप्पे, गवेस-गहणे य भुंजणे चेव ।
उग्गतऽणत्थमिते वा, अत्थं पत्ते य चत्तारि ॥२८८९॥

पढमो वितितो चउत्थो अट्ठमो य – एते चउरो घडंति । सेसा चउरो न घडंति ।

उदितमणसंकप्पे वि पढमो वितिओ चउत्थो अट्ठमो य-एते चउरो घडंति । सेसा चउरो न घडंति ।

अणत्थमियमणसंकप्पे पढमो वितिओ चउत्थो अट्ठमो य – एते चउरो गज्झा, सेसा चउरो वज्जा ।

अत्थंपत्ते वि – एते चउरो गज्झा । चतुरग्गहणं सर्वथानुपाती ॥२८८९॥

"अणुदियमणसंकप्पो" त्ति अस्य व्याख्या –

सूरे अणुग्गयम्मि उ, अणुदित उदितो य होति संकप्पो ।
एमेवऽत्थमितम्मि वि, एगयरो होति संकप्पो ॥२८९०॥

अणुदिए सूरिए अणुदियमणसंकप्पो उदियमणसंकप्पो वा भवति । उदिते वि अणुदितो उदितो वा मणसंकप्पो भवति । एवं अत्थमिए वि अत्थमियमणसंकप्पो अणत्थमियमणसंकप्पो वा । अणत्थमिए वि अत्थमियमणसंकप्पो वा अणत्थमियमणसंकप्पो वा । एवं एगतरो संकप्पो भवति ॥२८९०॥

अणुदित-मणसंकप्पे, गवेस-गहणे य भुंजणे गुरुगा ।
अह संकियम्मि भुंजति, दोहि लहू उग्गए सुद्धो ॥२८९१॥

अत्थंगय-संकप्पे, गवेसणे गहण-भुंजणे गुरुगा ।
अह संकियम्मि भुंजति, दोहि लहू अणत्थमिए सुद्धो ॥२८९२॥

"उग्गयवित्ती" अस्य सूत्रपदस्य व्याख्या –

उग्गयवित्ती मुत्ती, मणसंकप्पे य होंति आएसा ।
एमेव यऽणत्थमिते, धाते पुण संखडी पुरतो ॥२८९३॥

उग्गय इति वा, उदओ त्ति वा एगट्ठं। वर्तनं वृत्तिः। उग्गए सूरिए जस्स वित्ती सो उग्गयवित्ती। आदेसंतरेण वा उग्गयमुत्ती भण्णइ। उग्गताए आइच्चमुत्तीए जस्स वित्ती सो उग्गयमुत्ती भण्णति।

अहवा – मूर्तिः शरीरं, तं उग्गए आइच्चे वित्तिणिमित्तं जस्स चेट्ठति सो उग्गयमुत्ती भण्णति। मणसंकप्पो त्ति वा, अज्झवसाणं ति वा, चित्तं त्ति वा, एगट्ठं।

तम्मि मणसंकप्पे आदेशा इमे कायव्वा-अणुदिते वि आदिच्चे मणसंकप्पेण उदिते वृत्तिरेव भवति, न प्रायश्चित्तमित्यर्थः। च शब्दः समुच्चए, जहा अणुदिए उदियमणसंकप्पेण णिद्दोसो तहा उदिए वि अणुदियमण-संकप्पेण सदोषेत्यर्थः। अत्थमिए वि तहेव त्ति। अत्थमिए वि आतिच्चे अणत्थमियमणसंकप्पेण वृत्तिरेव भवति न प्रायश्चित्तं। इहापि आदेशांतरं कर्तव्यं – जहा अत्थमिए वि अणत्थमियमणसंकप्पेण णिद्दोसो तहा अणत्थमिए वि अत्थमियमणसंकप्पेण सदोषेत्यर्थः।

अहवा – उग्गयवित्ती उग्गयमुत्ती एतदेवादेशांतरं द्रष्टव्यम्।

अहवा – "मणसंकप्पेण होंति आदेसा" इति उपरिष्टाद्वक्ष्यमाणं अणुदिते अत्थमिते वा कत्थ गहण-संभवो भवति ? अतो भणति – "धाते पुण संखडी पुरतो" त्ति। "धायं" ति वा "सुभिक्खं" ति वा एगट्ठं। तम्मि सुभिक्खे संखडीए संभवो भवति। सा य संखडी दुविधा - पुरे संखडी, पच्छा संखडी च। पुव्वादिच्चे पुरेसंखडी। मज्झण्हपच्छातो पच्छासंखडी। इह पुण जा अणुदिते सा पुरेसंखडी। पुणसद्दग्गहणाओ अत्थमिए वा पच्छसंखडीसंभवो भवे।

अहवा – घातग्गहणं अववादप्रदर्शनार्थम्। सुभिक्खे संथरंते वा णिक्कारणे जति अणुदिते अत्थमिते वा गहणं करेति तो पच्छित्तं, इहरहा पुण ण भवति ॥२८९३॥

सूत्रपदद्वयस्य-गाथाद्वयेन व्याख्या क्रियते। पूर्वं प्रकृतभंगा उच्यन्ते। अणुदिय-उदिय-सोलसभंगीए इमे अट्ठ घडेमाणा जहासंखेण ठवियव्वा–पढमो, बितिओ, चउत्थो, अट्ठमो,णवमो, दसमो, बारसमो, सोलसमो य। सेसा अट्ठ वज्जिता। ततो अणत्थमिय अत्थमियसोलसभंगीए एते चेव अट्ठ भंगा उद्धरिता।

पढम-बितिज्जा भंगा पंचम-छट्ठभंगट्ठाणेसु कायव्वा।

पंचम-छट्ठा पढम-बितिज्जठाणेसु कायव्वा।

ततिय-चउत्थभंगा सत्तम-अट्ठमभंगट्ठाणेसु कायव्वा।

सत्तमऽट्ठमा ततिय-चउत्थठाणेसु कायव्वा।

अहवा – पढमे – बितिय-ततिय-चउत्थभंगा पंचम-छट्ठ-सत्तमऽट्ठ भंगाण हेट्ठा कमेण ठावेयव्वा।

एवं ठविएसु ततो इमं गंथमाह –

अणुदियमणसंकप्पे, गवेसगह भोयणम्मि पढमलता।
बितियाए तिसु असुद्धा, उग्गयभोई उ अंतिमओ ॥२८९४॥

अणुदियमणसंकप्पे अणुदियगवेसी अणुदियगाही अणुदियभोती। एसा पढमलता। बितिया लता – आदिल्लेसु तिसु पदेसु संकप्प-गवेसण-गहणपदेसु असुद्धा, अंतिल्लं भोगिपदं तम्मि सुद्धा ॥२८९४॥

ततियाए दो असुद्धा, गहणं भोती य दोण्हि वी सुद्धा।
संकप्पम्मि असुद्धा, तिसु सुद्धा अंतिमलता तु ॥२८९५॥

ततियलताए – दो संकप्प-गवेसणपदं च असुद्धा, गहण-भोगीपदं च एतेसु दोसु वि सुद्धा। चउत्थ-लताए – संकप्पपदं एक्कं असुद्धं, गवेसणं गहणं भोगीपदं च तिण्णि वि सुद्धा। अणुदियस्स अंतिल्ला लतेत्यर्थः ॥२८९५॥

इदाणिं – सुद्धेणं भावेणं चत्तारि लताओ भण्णंति – सो आदिच्चो उदितो अणुग्गतो वा णियमा उग्गयंति भण्णति –

उग्गयमणसंकप्पे, अणुदितएसी य गाह भोई य।
एमेव य वितियलया, सुद्धा आइम्मि अंते य ॥२८९६॥

उदियमणसंकप्पे अणुदियगवेसी अणुदियगाही अणुदियभोती। एसा उदिते पढमलता। विति-यलताए – वि एवं चेव। णवरं – आति-अंतपदेसु सुद्धा। मज्झिल्लेसु दोसु पदेसु असुद्धा ॥२८९६॥

ततियलताए गवेसी, होति असुद्धो उ सेसगा सुद्धा।
चत्तारि वि होंति पया, चउत्थलतियाए उदयचित्ते ॥२८९७॥

ततियाए एगं गवेसणापदं असुद्धं, सेसा संकप्पगहणभोगिपदं च तिण्णि वि सुद्धा। सव्वेसु पदेसु चउत्थलतिया विसुद्धा उदयचित्तत्वात्।

एवं अत्थमिताऽणत्थमिते वि अट्ठ लता, चउरो असुद्धा, चउरो सुद्धा, तासिं विभागदरिसणत्थं भण्णति – अत्थमियं अणत्थमियं वा सूरियं नियमा अत्थमियं भण्णति ॥२८९८॥

अत्थंगयसंकप्पे, पढमवरं एसि गहण भोई य।
दो संतेसु असुद्धो, बीया मज्झे हवई सुद्धो ॥२८९८॥

अत्थंगयसंकप्पे अणत्थमियगवेसी अणत्थमियगाही अणत्थमियभोजी एसा पढमलता। वितिया आदिअंतेसु दोसु वि असुद्धा। मज्झे गवेसगहणेसु दोसु वि सुद्धा।

तइया गवेसणाए, होइ विसुद्धा उ तीसु अविसुद्धा।
चत्तारि वि होंति पया, चउत्थलइगाए अत्थमिए ॥२८९९॥

ततियलता – एगम्मि गवेसणपदे सुद्धा, सेसेसु तिसु असुद्धा। चउत्थलताए चत्तारि वि पदा असुद्धा, अत्थमियमणसंकप्पे त्ति काउं ॥२८९९॥ अविसुद्धलता गता।

इदाणिं विसुद्धलताओ भण्णति – अत्थमियं अणत्थमियं वा णियमा अणत्थमियं भण्णति –

अणत्थगयसंकप्पे, पढमा एसी य गहण भोई य।
मण एसि गहणसुद्धो, वितिया अंतम्मि अविसुद्धा ॥२९००॥

अणत्थंगयसंकप्पे अणत्थमियगवेसी अणत्थमियगाही अणत्थमियभोजी। एस पढमलता। वितिय-लताए – आदिल्ला तिण्णि पदा विसुद्धा, अंतिल्लभोगिपदेण अविसुद्धा ॥२९००॥

मण एसणाए शुद्धा, ततिया गहभोयणे य अविसुद्धा।
संकप्पे नवरि सुद्धा, तिसु वि असुद्धा उ अंतिमगा ॥२९०१॥

ततियलता – संकप्पे य गवेसणे य सुद्धा, गहणभोगिपदेहिं दोहिं असुद्धा। चउत्थलता – संकप्पेण णवरि-सुद्धा, सेसेसु तिसु पदेसु गवेसण-गहण-भोगीहिं असुद्धा, अंतिमा इति चतुर्थलता ॥२९०१॥

एत्थ – अट्ठसु अविसुद्धेसु इमं पच्छित्तं –

पढमाए बितियाए, ततिय चउत्थी य णवम दसमीए ।
एक्कारसि बारसियए, लताए चउरो अणुग्घाया ॥२६०२॥

एतासु अट्ठसु वि लतासु चउरो अणुग्घाया–चउगुरु इत्यर्थः । ते अणुदियलतासु चउसु तवकालविसेसिया कायव्वा ॥२६०२॥

इमा पुण सुद्धलताओ –

पंचम-छ-सत्तमियाए, अट्ठसिया तेर चोद्दसमियाए य ।
पण्णरस सोलसीं वि य, लतातो एया विसुद्धातो ॥२६०३॥

एतेसु पच्छित्तं णत्थि विशुद्धभावत्वात् ॥२६०३॥

जं भणियं "उपरिष्टाद्वक्ष्यमाणमि" ति तद्वक्ष्यति –

दोण्ह वि कयरो गुरुओ, अणुग्गयत्थमियभुंजमाणाणं ।
आदेस दोण्णि काउं, अणुग्गते लहु गुरू इतरो ॥२६०४॥

सीसो पुच्छति – अणुदियमणसंकप्पस्स अत्थमियमणसंकप्पस्स य कयमो गुरुतरओ ?

आयरिओ भणति – एत्थ आएसदुगं कायव्वं ।

एत्थ एगे भणंति – "अणुग्गतातो अत्थमियभोजी गुरुअतरओ । कम्हा ? जम्हा सो संकिलट्ठपरिणामो दिवसातो भोत्तुं अकिलंतो चेव पहे रातीए भुंजति, अविसुज्झमाणकालो य । अणुदियभोजी पुण सव्वराति अहियासेउं किलंतो भुंजति विसुज्झमाणकालो तेण लहुअतराओ ।"

अण्णे भणंति – "अत्थमियभोजीओ अणुदियभोजी गुरुअतरतो । कम्हा ? जम्हा सो सव्वरातिं सहिउं थोवं कालं ण सहति तेण सो संकिलिट्ठपरिणामो । इयरो पुण चिंतेइ – बहु मे कालो सोढव्वो तेण भुंजइ अतो लहुततरो ।" इमो थियपक्खो – अणुदिए पतिसमयं विसुज्झमाणकालो त्ति गुरुतरो । एयं सव्वं कालणिप्फण्णं पच्छित्तं भणियं ॥२६०४॥

इदाणिं दव्व-भावनिप्फण्णं पच्छित्तं भण्णति ।

तं पुण इमेहिं ठाणेहिं णायं होज्ज –

गविसण गहिए आलोय णमोक्कारे भुंजणे य संलेहे ।
सुद्धो विगिंचमाणो, अविगिंचणे होतिमा सोही ॥२६०५॥

अणुदितो अत्थमितो वा इमेहिं ठाणेहिं णातो, कए उवओगे पदभेदकए णायं जहा अणुदितो अत्थमितो वा ततो च्चिय स णियत्तंतो सुद्धो ।

अह गवेसणं करेंतेण णायं ततो चेव स णियत्तंतो सुद्धो ।
अह गहिते णायं जं गहितं तं विगिंचंतो सुद्धो ।
अह आलोएंतेण णायं तह वि विगिंचंतो सुद्धो ।
अह भुंजिउकामो णमोक्कारं करेंतेण णायं तो विगिंचंतो सुद्धो ।

अह भुंजंतेण णायं सेसं विगिंचंतो सुद्धो ।

अह सव्वमि भुत्ते संलेहसेसं तं विगिंचंतो सुद्धो ।

"अविगिंचणे" त्ति णाते जति भुंजति तो दव्वभावणिप्फण्णं पच्छित्तं भवति ॥२६०५॥

इमं दव्वणिप्फण्णं –

संलेह पंच भागे, अवड्ढ दो भाए पंचमो उ भिक्खुस्स ।
मास चतु छच्च लहु गुरू, अभिक्खगहणे तिह मूलं ॥२६०६॥

संलेहा तिण्णि लंबणा, अणुग्गते अत्थमिते वा संलेहसेसं णाउं भुंजति । पंचलंबणसेसं वा जति भुंजति । "भागो" त्ति-तिभागो, दसलंबणा जति ते भुंजति । अवड्ढं अद्धं, पण्णरसलंबणा ते सव्वं जति भुंजति । "दो भागं" त्ति-दोण्णि भागा वीसं लंबणा । तीसाए पंच मोत्तुं सेसा पणवीसं ते जति भुंजति । एतेसु संलेहणादिएसु इमं पच्छित्तं – मासलहुं मासगुरुं चउलहुं छल्लहुं छग्गुरुं । अभिक्खसेवं पडुच्च वितियवाराए मासगुरुं आदि छेदे ठायति । ततियवाराए चलहुगादि मूले ठायति ॥२६०६॥ एवं भिक्खुस्स ।

एमेव गणायरिए, अणवट्ठप्पो य होति पारंची ।
तम्मि वि सो चेव गमो, भावे पडिलोम वोच्छामि ॥२६०७॥

गणि उवज्झाओ, तस्स वि एमेव चारणागमो । णवरं – तस्स मासगुरुगादि आढत्तं ततियवाराए अणवट्ठे ठायति । आयरियस्स वि एमेव गमो । णवरं – चउलहुगादि आरद्धं तिहिं वाराहिं पारंचिए ठायति । एवं दव्वणिप्फण्णं जहा जहा दव्ववुड्ढी तहा तहा पच्छित्तवुड्ढी भवति । गतं दव्वणिप्फण्णं ।

इदाणिं भावे पडिलोमं भणामि – जहा जहा दव्वपरिहाणी तहा तहा पच्छित्तवुड्ढी स्वल्पस्व-ल्पतरभावेन गृद्धत्वात् ॥२६०७॥

पणहीण तिभागद्धे, तिभागसेसे य पंचमो तु संलेहे ।
तम्मि वि सो चेव गमो, नायं पुण पंचहिं गतेहिं ॥२६०८॥

एमेव भिक्खगहणे, भावे ततियम्मि भिक्खुणो मूलं ।
एमेव गणायरिए, सपया सपदा पदं हसति ॥२६०९॥

तम्मि भावपच्छित्ते जो दव्वे चारणप्पगारो सो चेव दट्ठव्वो । णवरं – णाणत्तं, "पंचहिं गतेहिं" ति पंचभिर्मुक्तैः सेसा पणवीसं तीसा । पणगेण हीणा सेसा वीसं भुंजंतो मासगुरुं । अद्धं सेसा पन्नरस लंबणा भुंजंतो चउलहुं । तिभागो दस लंबणा ते भुंजंतो चउगुरुगा । तीसाए पंच लंबणा मोत्तुं सेसा पणवीसं ते अणाभोगतो परिभुत्ता, णाते पुण सेसा पंच परिभुंजंतस्स छल्लहुगा । संलेहसेसं भुंजति छग्गुरुगा । बितिय-वाराए मासगुरुगा आढत्तं छेदे ठायति । ततियवाराए चउलहुया आढतं मूले ठायति भिक्खुस्स । उवज्झायस्स मासगुरुगादि आढत्तं ततियवाराए अणवट्ठे ठायति । आयरियस्स चउलहुओ आढत्तं ततियवाराए पारंचिए ठायति । जे दव्वभावेसु तवारिहा पच्छित्ता ते तवकालेहिं दोहिं वि गुरुगा भवंति ॥२६०९॥ उग्गयवित्ती अणत्थमियसंकप्पा य दो पदा व्याख्याता ।

इदाणिं "[1]संथडिए" त्ति – सूत्रपदस्य व्याख्या –

संथडिओ संथरंतो, संततभोई व होति नायव्वो ।
पज्जत्तं अलभंतो, असंथडी छिण्णभत्तो वा ॥२६१०॥

भत्तपाणं पज्जत्तं लभंतो, संथडो भण्णति ।

अहवा – संथडति दिणे दिणे पज्जत्तं अपज्जत्तं वा भुंजंतो संथडीओ भण्णति । जो पुण पज्जत्तं भत्तपाणं ण लभति चउत्थादिणा छिण्णभत्तो वा सो असंथडीतो भण्णति ॥२६१०॥

"[2]निव्वितिगिछ" त्ति अस्य सूत्रपदस्य व्याख्या –

नीसंकमणुदितो अतिछित्ता व सूरो ति गेण्हती जो उ ।
उदित [3]चरेंते वि हु सो, लग्गति अविसुद्धपरिणामो ॥२६११॥

उदिए अणत्थमिए वा जस्स णिस्संकितं – णिस्संदिद्धं चित्ते ठियं जहा आदिच्चो अणुदितो अतिच्छिओ व त्ति–अस्तमितः सो अविसुद्धपरिणामातो पच्छिते लग्गति ॥२६११॥

एमेव य उदितो त्ति य, चरति त्ति व सोढमुवगयं जस्स ।
स विवज्जए वि सुद्धो, विसुद्धपरिणामसंजुत्तो ॥२६१२॥

सोढमिति णिस्संदिद्धं चित्ते उवगतं, जहा आदिच्चो उदितो चरति वा, सो जति विवज्जते भवति तहा वि विशुद्धपरिणामयुक्तत्वात् शुद्धयते ॥२६१२॥

चक्खुअविसयत्थो आदिच्चो इमेहिं णज्जति उदितो अत्थमितो वा –

समि-चिंचिणियादीणं, पत्ता पुप्फा य नलिणिमादीणं ।
उदयत्थमणं रविणो, कहेंति विगसंत मउलेत्ता ॥२६१३॥

समिपत्ता चिंचिणिपत्ता य णलिणमादीण य पुप्फा–एते वियसंता रविणो उदयं कहेंति । एते चेव मउलेंता अत्थमणं कधंति ॥२६१३॥

कहं पुण आदिच्चो उदितो अत्थमितो वा ण दीसति ?

उच्यते –इमेहिं अंतरितो –

अब्भ-हिम-वास-महिगा, महागिरी राहु रेणु रयछण्णो ।
मूढ-दिसस्स व बुद्धी, चंदे गेहे व तेमिरिए ॥२६१४॥

अब्भसंथडे, हिमणिकरे वा पडमाणे, वासेण वा उत्थइते, महियाए वा पडमाणीए पच्छातितो, महागिरिणा वा अंतरितो, राहुणा वा सव्वग्गहणे गहितो, उदितो अत्थमितो रेणू पंसू ताए छातितो, रएण व छातितो, दिसामूढो वा अवरदिसं पुव्वं मण्णमाणो सो णीयं आइच्चं दट्ठुं "उदयमत्तो त्ति आदिच्चो" घेत्तुं भत्तपाणं च वसहिं पविट्ठो जाव भुंजति ताव अत्थमियं अंधकारं च जायं ततो णातं जहा "अत्थंते भुत्तो मि" त्ति ।

---

१ सूत्र० ३१ । २ सूत्र० ३१ । ३ घ (पा०) ।

गिहब्भंतरे कारणजाते दिवा सुत्तो, पदोसे चंदे उदिते वि पबुद्धो, विवरेण जोण्हपविट्ठं पासित्ता चिंतेति – "एस आदिच्च-तावो पविट्ठो" सो य तिमिराभिभूतो मंदं मंदं पासति, गिहीहि णिमंतितो भुत्तो य।

एवमादिएहिं कज्जेहिं अणुदियं उदियं भणेज्ज, उदियं वा अणुदियं भणिज्जा, अणत्थमिए वा अत्थमियं संकप्पं करेज्जा, अत्थमिए वा अणत्थमियसंकप्पं करेज्ज ॥२९१४॥

निव्वितिगिंछेण य सुत्तुवदेसगहितं। जतो भण्णति –

सुत्तं पडुच्च गहिते, नातं इहरा तु सो ण भुंजंतो।
जो पुण भुंजति नाउं, पडुच्च तं सुत्तमेतं तु ॥२९१५॥

"सुत्तं पडुच्च" त्ति सूत्रप्रमाणाद् गृहीतं, जतो सुत्तेण भणितं – "उग्गयवित्ती अणत्थमियमणसंकप्पे संथडीए निव्वितिगिंछे असणं वा ४ पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा" न दोषेत्यर्थः। गृहीते भुत्ते वा पश्चाद् ज्ञातं अणुदितो अत्थमितो वा, "से जं च मुहेत्यादि" सुत्तं। "इहरह" त्ति जो सो अणुदितं अत्थमियं वा पुव्वामेव जाणंतो ण गेण्हंतो भुंजंतो वा। जो पुण अणुदियं अत्थमियं वा णाउं भुंजति तं पडुच्च इमं सुत्तं भण्णति। तं भुंजमाणे अण्णेसिं वा दलयमाणे राती-भोयणपडिसेवणापत्ते आवज्जति चाउम्मासियं परिहारठाणं अणुग्घातिमं ॥२९१५॥

"[1]विगिंचण-विसोहणपदाण" इमं वक्खाणं –

सव्वस्स छड्डण विगिंचणा उ मुह-हत्थ-पायछूढस्स।
फुसण धुवणा विसोहण, स किंच बहुसो य णाणत्तं ॥२९१६॥

अणुदितो अत्थमितो त्ति णाउं जं मुहे पक्खित्तं तं खेल्लमल्लए णिच्छुभइ, जं पाणिणा गहितं तं पडिग्गहे णिक्खिवति, जं पडिग्गहे तं थंडिले विगिंचति। एवं सव्वविगिंचणा भण्णति। फुसण त्ति णिच्छोडणा, धुवण त्ति कप्पकरणं, एसा विसोधणा भण्णति।

अहवा – छड्डुणा फुसणा धुवणाण एक्कसिं करणं विगिंचणा, बहुसो एतेसिं चेव कारणे विसोहणा। एयं विगिंचण-विसोहणणाणत्तं भणितं ॥२९१६॥ एवं करेंतो णातिक्कमते धम्मं –

"[2]धम्म" मिति अस्य व्याख्या –

नातिक्कमते आणं, धम्मं मेरं व रातिभत्तं वा।
अत्तट्ठेगागी वा, सय भुंजे देज्ज वा इयरे ॥२९१७॥

तित्थकराणाऽतिक्कमणं ण करेति, सुयधम्मं णातिक्कमति, चारितमेरं ण लंघेति, रातिभत्तं णातिक्कमति, अणुदितं अत्थमितं वा णाउं तं भुंजमाणा।

"[3]अण्णेसिं दलमाणे" त्ति अस्य व्याख्या – अत्तलाभअभिग्रही सयं भुंजति, कारणेण वा जो एगागी सो वि सयं भुंजति, इयरो पुण अणत्तलाभी अणेगागी वा अण्णेसिं दलिज्ज ॥२९१७॥ संथडिओ निव्वितिगिंछो सम्मत्तं सुत्तं –

इदाणिं संथडिओ वितिगिच्छो भण्णति –

जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए वितिगिच्छाए समावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता संभुंजइ, संभुंजंतं वा साइज्जइ।

---

१ सूत्रं ३१। २ गा० २९१५ अंकमिताया गाथायाः चूर्णौ पश्यन्तु। ३ गा० २९१५ अंकमिताया गाथायाः चूर्णौ पश्यन्तु। ४ गा० २९१५ अंकमिताया गाथायाः चूर्णौ पश्यन्तु।

अह पुण एवं जाणेज्जा –

"अणुग्गए सूरिए अत्थमिए" वा

से जं च मुहे, जं च पाणिंसि, जं च पडिग्गहे, तं विगिंचिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे नाइक्कमइ। जो तं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३२॥

एवं वितिगिच्छे वी, दोहि लहू नवरि ते उ तवकाले।
तस्स पुण हवंति लया, अट्ठ असुद्धा न इतराओ ॥२९१८॥

संथडिओ वितिगिच्छो, सो वि एवं चेव वत्तव्वो। णवरं – तस्स जे तव्वारिहा पच्छित्ता ते तवकालेहिं दोहिं वि लहुगा। "तस्से" त्ति विइगिछस्स। "पुण" सद्दो पुव्वकयभंगकमातो विसेसणे। असुद्धा एव केवला अट्ठ-लता भवंति, "इतरातो" सुद्धातो न भवंति, वितिगिछस्स प्रतिपक्षाभावात् ॥२९१८॥

अणुदितउदियो किह णु, संकप्पो उभयओ अदिट्ठे उ।
धरति ण य त्ति च सूरो, सो पुण नियमा चउण्हेक्को ॥२९१९॥

"उभय" त्ति उदयकाले वा अत्थमणकाले वा।

अब्भादिएहिं कारणेहिं अदिट्ठे आइच्चे संका भवति – किं उदितो अणुदितो त्ति।

अत्थमणकाले वि किं सूरो धरति न व त्ति संका भवति। सो पुण णियमा अणुदित्तो उदितो वा, अणत्थमितो अत्थमितो वा। एतेसिं चउण्ह विकप्पाणं अण्णतरे वट्टति, उदयं पडुच्च वितिगिछ-मणसंकप्पो वितिगिछगवेसी वितिगिछगाही वितिगिछभोती। एवं अट्ठभंगा कायव्वा। अत्थमणं पडुच्च एवं चेव अट्ठभंगा कायव्वा। दोसु वि अट्ठभंगीसु चउरो चउरो अलक्खणा उच्चारियव्वा। इमे य घेत्तव्वा – पढमो वितिओ नउत्थो अट्ठमो य। अत्थमणलतासु य एते चउरो घेत्तव्वा। अट्ठसु वि य लतासु चउगुरुअं पच्छित्तं, उभयलहुं, दव्वभावणिप्फण्णं पि पच्छित्तं पूर्ववत्, णवरं – उभयलहुं पच्छित्तं दट्ठव्वं ॥२९१९॥ संथडिओ वितिगिच्छो गतो।

इदाणि असंथडिओ णिव्विइगिछो भणाति –

जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए निव्वितिगिंछासमा-वन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता संभुंजइ, संभुंजंतं वा सातिज्जति।

अह पुण एवं जाणेज्जा –

"अणुग्गए सूरिए अत्थमिए" वा, से जं च मुहे, जं च पाणिंसि, जं च पडिग्गहे, तं विगिंचिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे नाइक्कमइ। जो तं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए वितिगिंछासमावन्नेणं
अप्पाणेणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता
संभुंजइ, संभुंजंतं वा सातिज्जति ।

अह पुण एवं जाणेज्जा –

"अणुग्गए सूरिए अत्थमिए" वा, से जं च मुहे, जं च पाणिंसि,
जं च पडिग्गहे, तं विगिंचिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे
नाइक्कमइ । जो तं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३४।।

सो असंथडितो तिविधो इमो –

तवगेलण्णऽद्धाणे, तिविधो तु असंथडो विहे तिविहो ।
तवऽसंथडिमीसस्स वि, मासादारोवणा इणमो ।।२६२०।।

एग दुग तिण्णि मासा, चउमासा पंचमास छम्मासा ।
सव्वे वि होंति लहुगा, एगुत्तरवड्ढिआ जे णं ।।२६२१।।

छट्ठऽट्ठमादिणा तवेण किलंतो असंथडो, गेलण्णेण वा दुव्वलसरीरो असंथडो, दीहद्धाणेण वा पज्जत्तं अलभंतो असंथडो । एतेसु तिसु वि पुव्वकमेण सोलस लता कायव्वा । अलक्खणा उद्धरिता । सेसेसु पच्छित्तं कालणिप्फण्णं पूर्ववत् । दव्वभावपच्छित्ते इमो विसेसो । तत्थ तवासंथडे तवेण विगिट्ठेण किलामितो पारणए आउरो अणुदियं अत्थमियं वा णाउं संलेहसेसं भुंजति मासलहुं, पंच सेसे भुंजति दोमासियं, दसलंबणे समुद्दिसति तिमासलहुं, पण्णरसलंबणे समुद्दिसति चउमासलहुं, वीसलंबणे समुद्दिसति पंचमासलहुं, पंच विसुद्धचित्तेण समुद्दिट्ठा सेसा पणुवीसं अणुदियं अत्थमियं वा णाउं भुंजति छम्मासलहुं । सव्वे एते लहुगा मासा जेण एगुत्तरवुड्ढी दिट्ठा ।।२६२१।।

"वुड्ढि" त्ति भणिते सीसो पुच्छति – कतिविहा वुड्ढी ?

आयरिओ आह –

भिक्खुस्स ततियगहणे, सट्ठाणं होति दव्वणिप्फण्णे ।
भावम्मि उ पडिलोमं, गणि आयरिए वि एमेव ।।२६२२।।

दुविहा उ होइ वुड्ढी, सट्ठाणे चेव तह य परठाणे ।
सट्ठाणम्मि उ गुरुगं, परठाणे लहू य भयणा वा ।।२६२३।।

सट्ठाणवुड्ढी णियमा गुरू भवति । जदा मासलहू तो मासं चेव सट्ठाणं संकमति, तदा विसेसत्थं णियमा मासगुरू संकमति । एवं दुमासलहुतो दुमासगुरुं । परट्ठाणवुड्ढी णाम विसरिसा संखा जहा – मासातो दुमासो, दुमासातो तिमासो एवं जाव पंचमासातो छम्मासो । परट्ठाणवुड्ढीए लहुतो लहु वा भवति गुरु वा । वितियवाराए दुमासाढत्तं छेदे ठायति, ततियवाराए तिमासलहुतो आढत्तं मूले ठायति, एवं भिक्खुस्स । उवज्झायस्स एवं चेव, णवरं – दुमासलहुओ आढत्तं तिहिं वाराहिं अणवट्ठे ठायति । आयरियस्स तिमासलहुतो आढत्तं तिहिं वाराहिं चरमे ठायति । एवं दव्वणिप्फण्णे पच्छित्तं । भावे पडिलोमं भाणियव्वं ।।२६२३।।
तवासंथडिओ गतो ।

इदाणिं "[1]गेलंन्नासंथडिओ" –

एमेव य गेलण्णे, पट्ठवणा णवरि तत्थ भिण्णेणं ।

चउहिं गहणेहिं सपयं, कस्स अगीयत्थसुत्तं तु ॥२६२४॥

गेलण्णासंथडी वि एवं चेव, णवरं – लहुभिण्णमासातो आढत्तं पंचमासलहुए ठायति । चउत्थवाराए भिक्खुस्स मूलं । उवज्झायायरियाणं हेट्ठा पदं हुसति, चउहिं वाराहिं सपदं भवति । भावे पडिलोमं दट्ठव्वं ॥२६२४॥ गतो गेलण्णासंथडिओ –

इदाणिं "[2]अद्धाणासंथडिओ, विहे तिविधो" त्ति अस्य व्याख्या –

अद्धाणासंथडिए, पवेस मज्झे तहेव उत्तिण्णे ।

मज्झम्मी दसगाती, पवेसे उत्तिण्णे पणगाती ॥२६२५॥[3]

अद्धाणासंथडी तिविधो – विहपवेसे, विहमज्झे, विहोत्तारे।

तत्थ पढमं मज्झे भणाति – भिक्खुस्स संलेहादिएसु छसु ठाणेसु दस-रातिंदियादी आरोवणाए दोमासियाए ठायति, एवं सत्तमवाराए मूलं फुसति । उवज्झाओ पण्णरसरातिंदियादि सत्तमवाराए अणवट्ठे ठायति । आयरिओ वीसरातिंदियादि सत्तमवाराए चरमं पावतीति । भावे एवं चेव पडिलोमं ।

इदाणिं पवेसे उत्तिण्णे य भण्णति – पवेसे उत्तारे य दोसु वि संलेहणादिसु छसु पदेसु पणगेणं पट्ठवणा कज्जति मासलहुए ठायति, भिक्खुस्स अट्ठमवाराए मूलं भवति । उवज्झायस्स दसादि अट्ठमवाराए अणवट्ठं । आयरियस्स पण्णरसादि अट्ठमवाराए चरिमं पावति । भावे एवं चेव पडिलोमं ।

सीसो पुच्छइ – "किं कारणं ? अद्धाणासंथडिओ मज्झे खिप्पं सपदं पावितो ? आदि अंतेसु चिरेण पावितो ?"

आयरियो भणाति – आदी अद्धाणयस्स भयं उप्पज्जति – 'कहमद्धाणं णित्थरिस्सामि" त्ति, अंते वि अद्धाणस्स भुक्खा-तिसाकिलामितो त्ति, कारणेण चिरेण सपदं पावति । मज्झे पुण जितभयो णाति-किलंतो य अब्भत्थणातो य खिप्पं सपदं पावति । एत्थ कालणिप्फण्णं तवकालेहि विसिट्ठं । एत्थ एक्केक्काओ पादातो आणादिया दोसा, रातीभोयणदोसा य ।

"कस्स अगीयत्थसुत्तं तु" अस्य व्याख्या –

सीसो पुच्छति – "एयं जं भणियं पच्छित्तं, एयं कस्स" ?

आयरियो भणति – एवं सुत्तमगीयत्थस्स । भण्णइ – "किं कारणं ?" भण्णइ – सो कज्जाकज्जं जयणाजयणं वा अगीतो ण जाणति ॥२६२५॥ गीतो पुण जहत्थं जाणंतो –

उग्गयमणुग्गए वा, गीयत्थो कारणे णऽतिक्कमति ।

दूताऽऽहिंडविहारी, ते वि य होंती सपडिवक्खा ॥२६२६॥

---

१ गा० २६२० । २ गा० २६२० ।

३ अद्धाणे आति अंते, पणगादी पट्ठहिं भवे चरिमं । मज्झे दसाइ सत्तहि, भावंमि विवज्जउ णवरं ॥ पूनासत्क-भाष्यप्रत्यामियं गाथा अधिका समुपलभ्यते ।

गीयत्थो पुण कारणे उप्पणे उग्गए वा अणुग्गए वा गेण्हंतो जयणाए अरत्तदुट्ठो य भुंजंतो आणं धम्मं राती भोयणं वा णातिक्कमति । ते य अद्धाणपडिवण्णया तिविधा — दूइज्जंता वा आहिंडगा वा विहरंता वा । एक्केक्का सपडिवक्खा कायव्वा ॥२९२६॥

इमेण भेदेण —

दूइज्जंता दुविहा, णिक्कारणिया तहेव कारणिया ।
असिवादी कारणिया, चक्के थूभाइया इयरे ॥२९२७॥

दूइज्जंता दुविहा — णिक्कारणिया य कारणिया य । असिवोमोदरिय-रायदुट्ठ-खुभिय-उत्तिमट्ठ-कारणे वा,

अहवा — उवधिकारणा, लेवकारणा वा, गच्छे वा बहुगुणतरं ति खेत्तं, आयरियादीण वा आगाढकारणे, एतेहिं कारणेहिं दूइज्जंता कारणिया । णिक्कारणिया असिवादिवज्जिता उत्तरावहे धम्मचक्कं, मधुराए देवणिम्मिय थूभो, कोसलाए व जियंतपडिमा तित्थकराण वा जम्मभूमीओ, एवमादिकारणेहिं गच्छतो णिक्कारणिगो ॥२९२७॥

उवदेस अणुवदेसा, दुविहा आहिंडगा मुणेयव्वा ।
विहरंता वि य दुविहा, गच्छगया णिग्गया चेव ॥२९२८॥

आहिंडगा दुविधा — उवदेसाहिंडगा अणुवदेसाहिंडगा य ।

उवदेसो सुत्तत्थे घेत्तुं भविस्सायरिओ देसदरिसणं करेति विसयायारभासोवलंभणिमित्तं, एसो उवएसाहिंडगो । अणुवदेसाहिंडगो कोउगेण देसदंसणं करोति ।

विहरंता दुविधा — गच्छगया गच्छणिग्गया य ।

गच्छवासिणो उदुवद्धे मासं मासेण विहरंति ।

गच्छणिग्गता दुविहा — विधिणिग्गया अविधिणिग्गया य ।

विधिणिग्गया जिणकप्पिया, पडिमापडिवण्णगा, अहालंदिया, सुद्धपरिहारिया य ।

अविधिणिग्गया चोदणादीहिं चोइज्जंता चोयणं असहमाणा गच्छतो णिग्गच्छंति ॥२९२८॥

एतेसिं भेदाणं इमे अणुदिय अत्थमितेसु लग्गंति —

णिक्कारणियाऽणुवदेसगा वि लग्गंति अणुदितऽत्थमिते ।
गच्छा विणिग्गया वि हु, लग्गे जति ते करेज्जेवं ॥२९२९॥

णिक्कारणिया अणुवदेसाहिंडगा अविधिणिग्गया य अणुइय अत्थमिये जति गेण्हंति भुंजंति वा तो पच्छित्ते लग्गंति । जे पुण कारणिगा उवएसाहिंडगा गच्छगया य एए कारणे जयणाए गेण्हंता भुंजंता य सुद्धा । गच्छणिग्गता वि जति अणुइयऽत्थमिए गेण्हंति भुंजंति वा तो पच्छित्ते लग्गंति । जे पुण विधिणिग्गया ते अणुदियऽत्थमिते णियमा ण गेण्हंति त्रिकालविषयज्ञानसम्पन्नत्वात् ॥२९२९॥

अहवा — अन्यो विकल्पः गच्छाद्विनिर्गतानां —

अहवा तेसिं ततियं, अप्पत्तोऽणुग्गतो भवे सूरो ।
पत्तो य पच्छिमं पोरिसिं तु अत्थंगतो तेसिं ॥२९३०॥

"अहवा" – शब्दो विकल्पवाची । तेसिं जिणकप्पियादीणं ततियं पोरिसिं सूरो "अपत्तो" अणुदितो भणति, पच्छिमं च पोरिसिं पत्तो सूरो अत्थंगतो भणति, तेसिं च भत्तं पंथो य ततियाए णियमा । अन्यथा न कुर्वंतीत्यर्थः । असंथडी णिव्वितिगिच्छो भणितो ॥२९३०॥

इदाणि "मीसो" त्ति – मीसो वितिगिच्छो भणति ।

किह पुण तस्स वितिगिच्छा भवति ? इमेहिं –

वितिगिच्छ अब्भसंथड, सत्थो व पधावितो भवे तुरितं ।
अणुकंपाए कोई, भत्तेण णिमंतणं कुणति ॥२९३१॥

अब्भसंथडादिएहिं वितिगिच्छो भवति । अद्धाणपवण्णा सत्थेण अतरा य अण्णो अभिमुहो सत्थो आगतो । दो वि एगट्ठाणे आवासिता । अभिमुहागंतुगसत्थिगेण य केणई अणुकंपाए साहू णिमंतिता भत्तादिणा । साहु जम्मि सत्थे सो चलितो आदिच्चोदयवेलाए उदितो अणुदितो त्ति संकाए गहियं ॥२९३१॥

इहं पि तिविधे असंथडीए वितिगिच्छे अट्ठ लता असंथडिए निव्वितिगिच्छे तवागिहं पच्छित्तं उभयगुरुं, वितिगिछे पुण उभयलहुं, सेसं तं चेव सव्वं मासादियं पच्छित्तं –

ततियभंगासंथडिनिवि-तिगिच्छ सोही तु कालणिप्फण्णा ।
चउलहुयं सव्वे वि हु, उभयगुरू एत्थ पच्छित्ता ॥२९३२॥

एमेव चरिमभंगो, णवरं एत्थ हवंति अट्ठ लता ।
उभयलहुए स (य) जाणसु, कालादी एत्थ पच्छित्तं ॥२९३३॥

जे भिक्खू राओ वा, वियाले वा सपाणं सभोयणं उग्गालं उग्गिलित्ता पच्चोगिलइ, पच्चोगिलंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

रत्ति वियालाण पुव्वकतं वक्खाणं । सह पाणेण सपाणं, सह भोयणेण सभोयणं । उद्गिरणं उग्गरो, रलयोरेकत्वात् स एव उग्गलो भण्णति, सित्थविरहियं पाणियं केवलं उड्डोएण सह गच्छतीत्यर्थः, भत्तं वा उड्डोएण सह आगच्छति, उभयं वा । तं जो उग्गिलित्ता पच्चोगिलति अण्णं वा सातिज्जति ।

कहं पुण सातिज्जति ?

कस्स वि उग्गालो आगतो । तेण अण्णस्स सिट्ठं – उग्गालो मे आगतो पच्चुगिलिओ य । तेण भणियं– सुंदरं कयं, एसा सातिज्जणा ।

तस्स पायच्छित्तं चउगुरुं, आणादिया य दोसा । एस सुत्तत्थो ।

इदाणि णिज्जुत्ती –

उद्दरे वमित्ता, आइयणे पणगवुड्ढि जा तीसा ।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं च भिक्खुस्स ॥२९३४॥

दुविधा दरा – धण्णदरा पोट्टदरा य, ते उद्दं जाव भरिया तं उद्दरं भण्णति, पर्यायवचनेन सुभिक्ष मित्यर्थः । तस्मिन् सुभिक्षे पज्जतियं अण्णादि घेत्तुं भोत्तुं च वमेत्ता अविसिट्ठभत्तलोभेण जो पुणो पच्चादियति ।

जइ दिवसो एगलंबणादी जाव पंचलंबणा ताव चउलहुं।

छहिं आरद्धं-जाव-दस एतेसु चउगुरुं।

एक्कारसाति-जाव-पण्णरस ताव छल्लहुं।

सोलसादि-जाव-वीसं ताव छग्गुरुं।

एगवीसादि-जाव-पणवीसं ताव छेदो।

छव्वीसादि-जाव-तीसा लंबणा उग्गिलिउं पच्चोगिलति ताव मूलं।

एवं पंचगुवरिवड्ढीए भिक्खुस्स भणियं ॥२६३४॥

गणि आयरिए सपयं, एगग्गहणे वि गुरूण आणादी।
मिच्छत्तऽमच्चवडुए, विराहणा तस्स वऽण्णस्स ॥२६३५॥

"गणि" त्ति – उवज्झाओ, तस्स चउगुरुगादि अणवट्ठे ठायति। आयरियस्स छलहुगादि आढत्तं सपदमिति पारंचिए ठायति।

एवं ताव दिवसो, रत्तिं सित्थे वि चतुगुरू होति।
उद्दरग्गहा पुण, अववाए कप्पते ओमे ॥२६३६॥
रातो व दिवसतो वा, उग्गाले कत्थ संभवो होज्जा ?
गिरिजण्णसंखडीए, अट्ठाहिय तोसलीए वा ॥२६३७॥

एवं ताव दिवसओ। राओ पुण एगसित्थग्गहणे वि चउगुरुगं। उद्दरग्गहणेण अववातो दंसितो, जेण ओमादिसु[1] कप्पति। आणाति आणा[2] तित्थकराणं कोविता भवति। अणवत्था कता। मिच्छत्तं च जणेति – जहावादी तहाकारी ण भवति।

अहवा – वंतादाणं दट्ठुं सेहो सिढिलभावो पडिगमणं वा करेज्जा। राया वा विप्परिणामेज्जा। वारणं वा भिक्खादियाण करेज्जा। असारं वा पवयणं भणेज्ज। असुइत्तणेण वा हड्डसरक्खादिजणेहिं अतिसतिया भणेज्जा। तस्स वऽण्णस्स आयविराहणा भवेज्ज।

एत्थ दिट्ठंतो – अमच्चवडुएण। एगो रंकवडुओ अंचियकाले संखडीए मज्झियकूरं जिमितो अतिप्पमाणं। णिग्गयस्स रायमग्गमोगाढस्स हिययमुच्छल्लं अमच्चपासायस्स हेट्ठा वमिउमारद्धो। आलोयणठितेण य अमच्चेण दिट्ठो। सो य वडुगो वमेत्ता तमाहारमविणट्ठं पासित्ता लोभेण भुंजिउमारद्धो। अमच्चस्स तं दट्ठुं अंगमुद्धुसियं, उड्डं च कयं, सो अमच्चो दिणे दिणे जेमणवेलाए जिमितो वा तं संभरिता उड्डं करेति। एवं तस्स वग्गली वाही जातो, विणट्ठो य। सो वि वडुओ एवं चेव विणट्ठो।

एवं आयविराहणा होज्ज। जम्हा एते दोसा तम्हा पमाणमित्तं भोत्तव्वं, जेण उग्गाल संभवो ण भवति।

[3]कत्थ पुण उग्गालसंभवो भवेज ? उच्यते – गिरिमादिजण्णसंखडीसु अट्ठाहियमहिमासु वा तोसलिविसए वा ॥२६३७॥

---

१ गा० २६३६। २ गा० २६३५। ३ गा० २६३७।

अद्धाणे वत्थव्वा, पत्तमपत्ता दुहा य अद्धाणे ।
पत्ता य संखडिं जे, जइणमजयणाए ते दुविहा ॥२९३८॥

ते संखडिभोइणो संजया ते दुविहा – अद्धाणपडिवण्णा, वत्थव्वा य। वत्थव्वा ते तत्थेव मासकप्पेण ठिता, ते दुविधा – संखडिपेही संखडिग्रपेही य । अद्धाणपडिवण्णा दुविधा – तत्थेव गंतुकामा, अण्णत्थ वा गंतुकामा । जत्थ सा संखडी तत्थेव गंतुकामा ते दुविधा – जयणपत्ता अजयणपत्ता य । जे अणुस्सुया पदभेदं अकरेंता सुत्तत्थपोरिसीओ य करेंता आगच्छंति ते जयणपत्ता । जे पुण संखडिं सोच्चा उस्सुअभूआ तुरियं सुत्तत्थे अकरेंता ते अजयणपत्ता । जे पुण अद्धाणिया अण्णत्थगंतुमणा ते दुविधा – पत्तभूमिगा अपत्तभूमिगा य ॥२९३८॥

वत्थव्वजयणपत्ता, एगगमा दोवि होंति णायव्वा ।
अजयणवत्थव्वा वि य, संखडिपेही उ एगगमा ॥२९३९॥

तत्थ संखडि-अपलोइणो, जे य तत्थेव गंतुकामा जयणपत्ता, एते दो वि चारणियाए एगगमा भवंति । जे तत्थेव गंतुकामा अजयणपत्ता, जे य वत्थव्वा संखडिपेहिणो एते दो वि चारणियाए एगगमा भवंति ॥२९३९॥

"[1]पत्ता य संखडिं जे" अस्य व्याख्या –

तत्थेव गंतुकामा, वोलेउमणा व तं उवरिएणं ।
पयभेय अजयणाए, पडिच्छ-उव्वत्तसु य भंगे ॥२९४०॥

जत्थ गामे संखडी तत्थेव गंतुकामा, जे वा तस्स गामस्स – "उवरिएणं" ति मज्झेण गंतुकामा, देसीभासाए व्वे (च) वत्थेणं ति वुत्तं भवति । ते जति सभावमतीए पदभेदं करेंता एगमादिदिणं वा पडिक्खंति, अवेलाए "उवत्तं" ति सुत्तत्थपोरिसीअगेमण वा पत्ता जयणपत्ता भवंति । एतेसिं जे इतरे ते जयणापत्ता ॥२९४०॥

"पत्तमपत्ता दुहा य अद्धाणे" अस्य व्याख्या –

संखडिमभिधारेंता, दुगाउया पत्तभूमिया होंति ।
जोयणमाति अप्पत्तभूमिता बारस उ जाव ॥२९४१॥

संखडिगामस्स जे पासेण गंतुकामाए संखडिमभिधारेतुं अद्धजोयणाओ अच्छंति ते पत्तभूमिया भवंति, जे पुण जोयणमादीसु ठाणेसु जाव बारसजोयणा ते सव्वे अपत्तभूमिया भवंति ॥२९४१॥

खेत्तंतो खेत्तबहिया, अप्पत्ता बाहि जोयणदुए य ।
चत्तारि अट्ठ बारस, जग्गसु व विगिंचणातियणा ॥२९४२॥

खेत्तंतो-जाव-अद्धजोयणो संखडिमभिधारेंता आगच्छंति एते पत्तभूमिगा, जे पुण खेत्तबाहिरतो जोअणातो दुजोअणातो जाव बारसण्हं वा जोयणेणं संखडिमभिधारेत्ता आगच्छंति एते अपत्तभूमिगा । संखडीए

---

1 गा० २९३८ ।

जाव दट्ठुं भोच्चा पदोसे ण जग्गंति, वेरत्तियं कालं ण गेण्हंति, "विगिंचण" त्ति उग्गालं उग्गालेत्ता विगिंचंति, उग्गिलित्ता वा आदियंति ॥२९४२॥

एतेसु चउसु पदेसु इमा वारणा कज्जति –

वत्थव्वजयणपत्ता, सुद्धा पणगं च भिण्णमासो य ।
तव कालेसु विसिट्ठा, अजयणमादीसु वि विसिट्ठा ॥२९४३॥

वत्थव्वा संखडिअपेहिणो जयणापत्ता य जेण ते संखडीए जाव दट्ठुं भोच्चा पच्छा पाउसीयं पोरिसिए ण करेति, मा ण जीरिहिति, तो आयरिए आपुच्छित्ता णिव्वणा सुद्धा । ते चेव जति वेरत्तियं ण करेंति तो पंचराइंदिया तवलहुगा कालगुरू ।

अह उग्गालो आगतो विगिंचति य तो भिण्णमासो तवगुरुओ काललहू ।

अह तं उग्गालं आदियति तो मासलहुं उभयगुरुं । वत्थव्वसंखडिपेहिणो अजयणपत्ता य एतेसिं दोण्ह वि संखडीए भोच्चा पादोसियं ण करेंति मासलहुं । वेरत्तियं ण करेंति एत्थ वि मासलहुं । उग्गालेंति विगिंचति एत्थ वि मासलहुं । आदियंति एत्थ मासगुरुं । एत्थ वि तवकालेहिं विसेसियव्वा ॥२९४३॥

तिसु लहुओ गुरु एगो, तीसु य गुरुओ य चउलहू अंते ।
तिसु चउलहुया चउगुरु, तिसु चउगुरु छल्लहु अंते ॥२९४४॥
तिसु छल्लहुया छग्गुरु, तिसु छग्गुरुया य अंतिमे छेदो ।
छेदादी पारंची, वारसमादीसु तु चउक्कं ॥२९४५॥

"तिसु लहुओ गुरु एगो" त्ति गतार्थं ।

जे अण्णत्थ गंतुकामा पत्तभूमिगा अद्धं जोयणातो संखडिणिमित्तमागता तेसिं पादोसियासु तिसु ठाणेसु मासगुरुं, अंते चउलहुगा ।

जे अपत्तभूमगा संखडिणिमित्तं जोयणतो आगता तेसिं पादोसिआदिसु तिसु पदेसु चउलहुं, अंते चउगुरुं ।

जे पुण दुजोयणातो आगता तेसिं आदिपदेसु चउगुरुं, अंते छल्लहुगा ।

जे पुण चउण्हं जोयणाणमागता तेसिं छल्लहुगा, (अंते छग्गुरुया ।)

जे अट्ठ जोयणाणमागता तेसिं छग्गगुरुगा, अंते छेदो ।

जे वारसण्हं जोयणाणमागता ते [1]णिस भोच्चा पादोसियं ण करेंति । छेदो वेरत्तियं ण करेंति । आदिसद्दातो मूलं विगिंचंति अणवट्ठो आदियंति पारंचियं । "छेदादी पारंची" – आदिसद्दातो मूलणवट्ठा एते चउरो पायच्छित्ता। वारसमादीसु तु चउक्कं जे तस्स आदिओ आरब्भ कमेण ठावेयव्वा ।

अहवा – पडिलोमेण वारसादिसु पदेसु सव्वेसु चउक्कं दट्ठव्वं ॥२९४५॥

सव्वेसु य चउक्कपदेसु जे तवारिह तवकालेहिं विसेसियव्वा दोहिं लहुं, तवगुरुं, कालगुरुं, अतो दोहिं वि गुरुगं भणितो वि एस अत्थो पत्थारमंतरेण ण सुट्ठु अववोधो त्ति ।

---

१ अत्यन्त ।

पत्थार-णिदरिसणत्थं भणति –

अद्धाणे वत्थव्वा, पत्तमपत्ता य जोयणदुवे य ।
चत्तारि अट्ठ बारस, न जग्गसु विगिंचणातियणे ॥२९४६॥

अह सुद्धेण उड्ढेण अट्ठघरसया तिरियं चउरो एवं बत्तीस घरा कायव्वा । पढमघरड्ढयपंतीए अधो अधो इमे अट्ठ पुरिसविभागा लिहियव्वा । अद्धाणिया वत्थव्वया जयणाकारी, एगो पुरिसविभागो । अद्धाणिया वत्थव्वया अजयणकारी, वितिओ विभागो । पत्तभूमया ततितो । अप्पत्तभूमगा जोयणागंता चउत्थो । दु-जोयणागंता पंचमो । चउ-जोयणागंता छट्ठो । अट्ठ-जोयणागंता सत्तमो । बारस-जोयणागंता अट्ठमो । उवरिम-तिरिया य चउक्कपंतीए उवरिं कमेण इमे चउरो विभागा लिहियव्वा । न जग्गसु वा विगिंचणा य, आदियणा, सव्वं गतत्थं ॥२९४६॥

आदिम-चउक्कपंतीए वितियघरातो कमेण इमे पच्छित्ता ठवेयव्वा –

जे पुण संखडिपेही, अजयणपत्ता य तेसि इमा ।
पाओ सिय वेरत्तिय, उग्गालविगिंचणातियणे ॥२९४७॥

पणगं च भिण्णमासो, मासो लहुगो य पढमओ सुद्धो ।
मासो तवकालगुरू, दोहि वि लहुगो य गुरुगो य ॥२९४८॥

वितियघरए पणगं । ततियघरए भिण्णमासो । चउत्थे मासलहुं । उक्कमेण भणियं । पढमघरे सुद्धो त्ति । अंतिल्ले जो य मासो सो तवकालेहिं दोहिं वि गुरुगो । पणगतवो तवेण लहुगो । भिण्णमासो तवेण गुरुगो त्ति ।

अहवा – मासो तवकालगुरु, आदिपदे दोहिं वि लहू भवति । मज्झिल्लेसु दोसु वि पदेसु जहासंखं कालतवेण गुरुगा भवंति ॥२९४८॥

वितियादि-चउक्कघरपंतीओ सव्वा इमेण तवसा पूरेयव्वा –

लहुओ गुरुओ मासो, चउरो लहुया य होंति गुरुगा य ।
छम्मासा लहु गुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥२९४९॥ कंठा

इमा य रयण-भंग-लक्खणगाहा –

जह भणिय चउत्थस्सा, तह इयरस्स पढमे मुणेयव्वं ।
पत्ताण होइ जयणा, जा जयणा जं तु वत्थव्वे ॥२९५०॥

पच्छद्धं ताव भणामि – जे अद्धाणिया जयणापत्ता वत्थव्वा य जयणइत्ता जं तु तेसिं पच्छित्तं चउत्थे ठाणे भण्णति "जहा भणियं चउत्थस्स चउत्थं" आदियणं पदं, जयणइत्ताण जहा चउत्थे ठाणे – भणियं तहा "इयरे" त्ति – जयणइत्ता तेसिं पढमेसु तिसु ठाणेसु मुणेयव्वं मासलहुमित्यर्थः । अंतिल्ले मासगुरुं । वितियपंतीए जह भणियं चउत्थस्स तहा "इयरे" पत्तभूमया तेसु तिसु आइल्लेसु ठाणेसु मुणेयव्वं, अंतिल्लेसु चउलहुं । एवं बत्तीसा वि घरा पूरेयव्वा ।

---

१ पाउसीयं न करेंति । २ वेरत्तीयं न गेण्हति ।

णवरं – अंतिल्लं पंतीए छेद-मूल-अणवट्ठ-पारंचिया। तवारिहा तवकालेहिं विसेसियव्वा, पूर्ववत्। स्थापना ॥२९५०॥

एएण सुत्त ण कयं, सुत्तणिवाते इमे उ आएसा।
लोही य ओमपुण्णा, केति पमाणं इमं बेंति ॥२९५१॥

एवं पसंगेण विकोवणट्ठा भणियं, ण एत्थ सुत्तं णिवडति। सुत्तणिवाते इमे आदेसा भवंति।

आयरिओ भणाति – गुणकारित्तणातो ओमं भोत्तव्वं जहा उग्गालो ण भवति। दिट्ठंतो लोही। "लोहि" त्ति कवल्ली "ओमे" त्ति ऊणा, जति आदाणस्स अद्दहिज्जति तो तप्पमाणी ण छड्डेति, अंतो अंतो उव्वत्तति। अह पुण –"पुण्णं" ति– आकंठा आदाणस्स भरिया, तो तप्पमाणी भरिया अब्भूआणा छडिज्जति, अग्गिं पि विज्झावेति, एवं अतिप्पमाणं भत्तं पाणं वा पाडणा पेरियं उग्गिलिज्जति, ण ओमं, तम्हा ओमं भोत्तव्वं।

विकोवणट्ठा तत्थ आयरियदेसगा इमं ओमप्पमाणं वदंति ॥२९५१॥

तत्त[१]ऽत्थमिते[२] गंधे[३], गलगपडिगए[४] तहेवऽणाभोगे।
एए ण होंति दोण्ह वि, सुहणिग्गत णातमोइलणा ॥२९५२॥

"[१]लोही य ओमपुण्ण" त्ति अस्य व्याख्या –

अतिभुत्ते उग्गालो, तेणोमं कुणसु जं न उग्गलति।
छड्डिज्जति अतिपुण्णा, तत्ता लोही ण पुण ओमा ॥२९५३॥ गतार्था

"[२]तत्ते" त्ति-अस्य व्याख्या भण्णति।

आह जति ऊणमेवं, तत्तकवल्ले व बिंदुमेगस्स।
वितिओ न संथरेवं, तं भुंजे सखूरे जं [३]जीज्जे ॥२९५४॥

णेगम-पक्खासितो एगो भणइ – जति ओमं भोत्तव्वं तो इमेरिसं भोत्तव्वं, जहा – तत्तो कवल्लो, तत्ते उदगबिंदु पक्खित्तो तक्खणा णासति। एवं एरिसे आहारेयव्वं जं भुत्तमेव जीरइ।

"[४]अत्थमिए" त्ति अस्य व्याख्या – पश्चार्धं गतार्थं। वितिओ णेगम-पक्खासितो भणाति – एवं एरिसे भुत्ते ण संथरति तम्हा एरिसं भुंजउ सूरत्थमणवेलाए जिज्जति ॥२९५४॥

"[५]गंधे" त्ति अस्य व्याख्या –

णिग्गंधो उग्गालो, ततिए गंधो उ एति ण तु सित्थं।
अविजाणतो चउत्थे, पविसति गलगं तु जा पप्प ॥२९५५॥

गंधे दो आदेसा। एगो भणति – सूरत्थमणे जिण्णे रातो असंथरं भवति तम्हा एरिसं भुंजओ जेण अत्थमिए वि अण्णगंधविरहितो उग्गारो भवति, ण गंधो उग्गारस्येत्यर्थः।

अण्णो भणइ – होउ गंधो उग्गारस्स, जहा सित्थं णागच्छति तहा भुंजउ। एते दो वि ततिओ आदेसो।

---

१ गा० २९५१। २ गा० २९५२। ३ जिरे (पा०)। ४ गा० २९५२। ५ गा० २९५२।

चउत्थो भणति – "अविजाणतो" पच्छद्धं ।

चउत्थ-पक्खासितो भणति – ससित्थो उग्गारो अत्थमिए गलगं जाव पप्पति, आगच्छित्ता अजाणंतस्सेव पडिपविसति, एरिसं भुंजओ ॥२६५५॥

एवं णेगम-पक्खासितेहिं भणिए आयरिओ आह –

"[1]एते ण होंति दोण्णि वि" अस्य व्याख्या –

पढमबितिए दिवा वी, उग्गालो णत्थि किमुत रयणीए ।
गंधे य पडिगए या, एए पुण दो यऽणादेसा ॥२६५६॥

पढम-बितिया आदेसा अणादेसा चेव जेण दिवा वि उग्गालस्स अभावो । ततिय-चउत्था एते दोण्णि वि अणादेशा सूत्रविरहितत्वात् ॥२६५६॥

"[2]सुहणिग्गत णातमोइलण" त्ति अस्य व्याख्या –

पडुपण्णऽणागते वा, काले आवस्सगाण परिहाणी ।
जेण ण जायति मुणिणो, पमाणमेतं तु आहारे ॥२६५७॥
एवमपि तस्स णिययं, जुत्तपमाणं पि भुंजमाणस्स ।
वातस्स व सिंभस्स व, उदए एज्जा उ उग्गालो ॥२६५८॥
जो पुण तं अत्थं वा, दवं च णाऊण णिग्गयं गिलति ।
तहियं सुत्तणिवातो, तत्थादेसा इमे होंति ॥२६५९॥

साहुणा पमाणजुत्तं आहारेयव्वं, जेण पडुप्पण्णऽणागते काले आवस्सयजोगाण परिहाणी ण भवति तावतियं आहारेयव्वं । एवं पमाणजुत्ते आहारेयव्वे जो ससित्थो असित्थो उग्गालो दवं वा केवलं तं जो मुहणिग्गतं जाणित्ता पच्चोगिलइ तम्मि सुत्तणिवातो ॥२६५९॥

तत्थ य इमे आदेसा भवंति –

अच्छे ससित्थ चव्विय, मुहणिग्गय-कवल-हत्थभरिते य ।
अंजलिपडिते दिट्ठे, मासाती जाव चरिमं तु ॥२६६०॥

अच्छं आगतं जइ परेण अदिट्ठं आदियति तो मासलहुं ।

अह दिट्ठं तो मासगुरुं । ससित्थमागतं जति परेण अदिट्ठं आतियति तो मासगुरुं । दिट्ठे चउलहुं ।

अह तं सित्थं अदिट्ठं चव्वेति तो चउलहुं । दिट्ठे चउगुरुं । मुहातो णिग्गतं कवलं एगहत्थे पडिच्छिउं अदिट्ठे आदियति चउगुरुं, दिट्ठे छल्लहुं ।

अह एक्कं हत्थपुडं भरियं अदिट्ठं आदियति तो छल्लहुं, दिट्ठे छग्गुरुं ।

अह अंजलिभरियं अदिट्ठं आदियति तो छग्गुरुं, दिट्ठे छेदो । अंजलिं भरित्ता अण्णं भूमीए पडियं तं पि अदिट्ठं आदियति तो छेदो, दिट्ठे मूलं ।

---

१ गा० २६५२ । २ २६५२ ।

एवं भिक्खुस्स। उवज्झायस्स मासगुरु आढत्तं अदिट्ठदिट्ठेहिं णवमे ठायति।

आयरियस्स चउलहु आढत्तं अदिट्ठदिट्ठेहिं दसमे ठायति ॥२६६०॥

दियराओ लहु गुरुगा, बितियं रयणसहिएण दिट्ठंतो।
अद्धाण सीसए वा, सत्थो व पहावितो तुरियं ॥२६६१॥

अहवा – ससित्थं असित्थं वा अदिट्ठं दिट्ठं वा दिवसतो आदियंतस्स चउलहुं। रात्रो चउगुरुं। विराहणा पुव्वभणिता। बितियपदे कारणेण आदिएज्जा, ण य पच्छित्तं भवे ॥२६६१॥

तत्थ आयरिया रयणसहियवणिए दिट्ठंतं करेंति।

जल थल पहे य रयणा, णुवज्जणं तेण अडवि पज्जंते।
णिक्खणण-फुट्ट-पत्थर, मा मे रयणे हर पलावो ॥२६६२॥

जहा एगो वणिओ कहिं चि थलपहेण महता किलेसेण सय-सहस्समोल्लाण रयणाणं पंचसतातिं उवज्जणित्ता परं विदेसं पत्थिओ, पच्छा सदेसं पत्थितो। तत्थ य अंतरा पच्चंतविसए एगा अडवी सवरपुलिंद-चोराकिण्णा। सो चिंतेति – कहमविग्घेणं णित्थरेज्जामि त्ति। ते रयणे एक्कम्मि विजणे पदेसे णिक्खणति। अण्णे फुट्टपत्थरे घेत्तुं – उम्मत्तग-वेसं करेति, चोराकुलं च अडविं पवज्जति।

तक्करे एज्जमाणे पासित्ता भणाति – अहं सागरदत्तो रयणवाणितो मा ममं डक्कह, मा मे रयणे हरोहह।

सो पलवंतो चोरेहिं गहिओ पुच्छितो – कयरे ते रयणे ? फुट्टपत्थरे दंसेति।

चोरेहिं णायं – कतो वि से रयणे हडे तेण उम्मत्तगो जातो मुक्को य। एवं तेण पत्त-पुप्फ-फल कंद-मूलाहारेण सा अडवी पंथो य आगमगमणं करेंतेण जणा भाविता ॥२६६२॥

ताहे –

घेत्तूण णिसि पलायण, अडवी मडदेहभावितं तिसितो।
पिविउं रयणाभागी, जातो सयणं समागम्म ॥२६६३॥

ते रयणे णिसीए घेत्तुं अडविं पवण्णो। जाहे अडवीए बहुमज्झदेसभागं गतो ताहे तण्हाए परब्भमाणो एगम्मि सिलायलकुंडे गवगादि-मडगदेहभावितं विवण्णगंधरसं उदगं दट्ठुं चिंतेति – जइ एयं णातियामि तो मे रयणोवज्जणं णिरत्थयं सव्वं, कामभोगाण य अणाभागी भवामि, ताहे तं पिविता अडविं णित्थिण्णो। सयणधण कामभोगाण य सव्वेसिं आभोगी भवति ॥२६५३॥

इदाणिं दिट्ठंतोवसंहारो –

वणिउव्व साहु रयणा, महव्व अडवि (य) ओमसादीणि।
उदगसरिसं च वंतं, तमादियं रक्खए ताणि ॥२६६४॥

वणिय-सरिच्छो साहू, रयण-सरिच्छा महव्वता, उवसग्गपरीसह-सरिच्छा तक्करा, ओमादि सरिच्छा अडवी, वंतं मडगतोयसमं, फुट्टपत्थरसमाणे सादियारा महव्वया। कारणे वंतमादियंतो महव्वए – रक्खति। अद्धाणसीसए मणुण्णं आहारियं वंतं च ॥२६५४॥

ताहे –

दिवसतो अण्णं गेण्हति, असति तुरंते य सत्थे तं चेव ।
णिसि लिंगेणऽण्णं वा, तं चेव सुगंधि दव्वं वा ॥२९६५॥

दिवसतो अण्णं गेण्हति, अण्णंमि वा अलभंते रातो अण्णं गेण्हति, तस्स वि अभावे सत्थे वा तुरियं पधावमाणे ताहे तं चेव वंतं घेत्तुं चाउज्जातगादिणा सुगंधदव्वेण वासित्ता भुंजति, न दोषेत्यर्थः ॥२९६५॥

जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा, ण गवेसति ण गवेसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे त्ति णिद्दिसे। भिक्खू पुव्ववण्णिओ। ग्लै हर्षक्षये। इमस्स रोगातंकेण वा सरीरं खीणं, सरीरक्खयो भवति तं गिलाणं, अण्णसमीवाओ सोच्चा सयं वा णाऊणं जो ण गवेसति तस्स चउगुरुं, जं सो गिलाणो अगविट्ठो पाविहिति परितावादि तण्णिप्फण्णं पच्छित्तं पावेति, तम्हा गवेसियव्वो ।

सग्गामे सउवस्सए, सग्गामे परउवस्सए चेव ।
खेत्तंतो अण्णगामे, खेत्तवहि सगच्छ-परगच्छे ॥२९६६॥

सोच्चाणं परसमीवे, सयं च णाऊण जो गिलाणं तु ।
ण गवेसयती भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥२९६७॥

सग्गामे सवउस्सए गिलाणो गवेसियव्वो। सग्गामे परउवस्सए तत्थ वि गवेसियव्वो। खेत्तंतो अण्णगामे एत्थ गिलाणो गवेसियव्वो। अह अण्णगामे खेत्तवहि एत्थ वि गिलाणो गवेसियव्वो। एतेसु ठाणेसु सगच्छिल्लो परगच्छिल्लो वा भवतु गवेसियव्वो ।

अहवा – वहुगिलाण–संभवे इमा विधी –

अहवा – सग्गामउवस्सए सगच्छिल्लो परगच्छिल्लो य दो वि गिलाणा। पुव्वं सगच्छिल्लो गवेसियव्वो, पच्छा परगच्छिल्लो। एवं सव्वट्ठाणेसु पुव्वं आसण्णतरो गवेसियव्वो ॥२९६७॥

वितियपदेण असिवादिकारणेहिं अगवेसंतो सुद्धो।

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, ण गवेसेज्जा य वितियपदं ॥२९६८॥

जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा उम्मग्गं वा पडिपहं वा गच्छति,
गच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

सोऊण जो गिलाणं, उम्मग्गं गच्छे पडिपहं वा वि ।
मग्गाओ वा मग्गं, संकमती आणमादीणि ॥२९६९॥

उम्मग्गा णाम अडविपहेण गच्छति ।

अहवा – अपहेण चेव, "पडिहेणं" ति जेणागतो तेणेव नियत्तति, ततो वा पंथातो अण्णं पथं संकमति ।

सो पुण किं एवं करेति ? उच्यते – सो चिंतेति जइ तेहिं दिट्ठो गिलाणवेयावच्चं ण काहमि तो णिद्धम्मेसु गणिज्जीहामि । अह करेमि तो मे सकज्जवाघातो भवति । एवं करेंतस्स आणमादिया दोसा, जं च सो गिलाणो अपडिजग्गितो पाविहिति तण्णिप्फण्णं च पच्छित्तं पावति ॥२६६९॥

तम्हा दोसपरिहरणत्थं –

सोऊण वा गिलाणं, पंथे गामे य भिक्खवेलाए ।
जति तुरियं णागच्छति, लग्गति गुरुए सवित्थारं ॥२६७०॥

गिलाणं सुणेत्ता पंथे वा गच्छंतो, गामं वा पविट्ठो, भिक्खं वा हिंडंतो, जति तक्खणा चेव तुरियं गिलाणंते णागच्छति तो से चउगुरुं पच्छित्तं सवित्थारं ॥२६७०॥

तम्हा –

जह भमर-महुयर-गणा, णिवतंति कुसुमितम्मि वणसंडे ।
तह होति णिवतियव्वं, गेलण्णे कतितवजढेणं ॥२६७१॥

जह भमरा कुसुमिते वणसंडे णिवतंति एवं धम्मवच्छलत्तेण वेयावच्चऽट्ठयाए णिवतियव्वं । साहम्मियवच्छल्लं कयं । अप्पा य णिज्जरादारे णितोतिओ भवति ॥२६७१॥

तस्स इमे दो दारा –

सुद्धे[1] सड्ढी[2] इच्छकार[3] असत्त[4] सुहिय[5] ओमाण[6] लुद्धे[7] य ।
अणुयत्तणा[8] गिलाणे, चालण[9] संकामणा[10] दुहतो ॥२६७२॥

"[1]सुद्धे" त्ति अस्य व्याख्या –

सोऊण वा गिलाणं, जो उवयारेण आगओ सुद्धो ।
जो उ उवेहं कुज्जा, लग्गति गुरुए सवित्थारे ॥२६७३॥

उवचारो विधी । उवचारमेत्तेण वा जो आगतो सो सुद्धो, न तस्य प्रायश्चित्तं । उवेहं पुण करेंतो चउगुरुए सवित्थारे लग्गति ॥२६७३॥

"[2]उवचार" स्य व्याख्या –

उवचरति को गिलाणं, अहवा उवचारमेत्तगं एति ।
उवचरति व कज्जत्थी, पच्छित्तं वा विसोहेति ॥२६७४॥

जत्थ गिलाणो तत्थ गंतूणं पुच्छितो को तुब्भं गिलाणं "उवचरति" पडिजागरतीत्यर्थः ।

अहवा – उवचरति पुच्छति – तुज्झं को ति णो गिलाण इत्यर्थः ।

अहवा – लोगोपचारमात्रेणाऽऽगच्छति – 'उवचारो" भण्णति ।

अहवा – साधूणं मज्जाता चेव जं – "गिलाणस्स वट्टियव्वं" एस उवचारो भण्णति ।

---

१ गा० २६७३ । २ गा० २६७३ ।

अहवा – कज्जत्थी उवचरति इति उवचारो, किं चि ज्ञानादिकं तत्समीपादीहतीत्यर्थः ।

अहवा – पच्छित्तं मा मे भविस्सति त्ति निर्जरार्थः एस उपचारः ॥२९७४॥

इदाणि "[1]सड्ढि" त्ति दारं – धम्मसड्ढाए गिलाणं पडियरंतो णिज्जरालाभं लभिस्सामि त्ति –

सोऊण वा गिलाणं, तुरंतो आगतो दवदवस्स ।
संदिसह किं करेमी, कम्मि व अट्ठे निउंजामि ॥२९७५॥

"तुरंतो" त्ति – श्रवणानन्तरमेव त्वरितं तत्क्षणात् दवदवस्स प्रतिपन्नो शीघ्रगत्या इत्यर्थः ।

जत्थ गिलाणा तत्थ गंतूण गिलाणं गिलाणपडियरगं आयरियं वा भणाति – संदिसह, किं करेमि ? किं वा वेयावच्चट्ठे अप्पाणं णिउंजामि – योजयामीत्यर्थः ॥२९७५॥

पडियरिहामि गिलाणं, गेलण्णे वावडाण वा काहं ।
तित्थाणुसज्जणा खलु, भत्ती य कया भवति एवं ॥२९७६॥

संजोगदिट्ठपाढी, उवलद्धा वा वि दव्वसंजोगा ।
सत्थं व तेणऽहीयं, वेज्जो वा सो पुरा आसी ॥२९७७॥

अहमनेनाभिप्रायेणायातः गिलाणं पडियरिस्सामि, गिलाणवेयावच्चेण वा वावडे जे साहू तेसिं भत्त-पाण-विस्सामणादिएहिं वेयावच्चं काहामि । एवं करेंतेहिं तित्थाणुसज्जणा तित्थकरभत्ती कता भवति॥२९७७॥

एवं तेण भणिते जति ते पहुप्पंति तो भणंति – अज्जो ! वच्च तुमं, अम्हे पहुप्पामो । ण सो तेहिं णिव्वेरबुद्धीए णिव्विसियव्वो । अह ते ण पहुप्पंति, कुसलो वा सो आगंतुगो, संजोगदिट्ठपाढी, वेज्जसत्थं वा तेणाधीतं, पुव्वासमेण वा सो वेज्जो, तो ण विसज्जेंति –

अत्थि य से जोगवाही, गेलण्ण-तिगिच्छणाए सो कुसलो ।
सीसे वावारेत्ता, तेइच्छं तेण कायव्वं ॥२९७८॥

अह तस्स आगंतुगो जोगवाही अत्थि, जति य गेलण्णतिगिच्छणाए सो कुसलो तो ससिस्से वावारेत्ता इति – वावारणं कुल-गण-संघप्पओयणे वादकज्जपेसणे वत्थपातुप्पायणे गिलाणकिच्चे सुत्तत्थपोरिसिप्पयाणे वा जो जत्थ जोगो तं तत्थ सण्णिउज्जोएत्ता अप्पणा सव्वपयत्तेण तेइच्छं कायव्वं ॥२९७८॥

सुत्तत्थपोरिसीवावारणे इमा विधी –

दाऊणं वा गच्छति, सीसेण व तेहिं वा वि वायावे ।
तत्थऽण्णत्थ व काले, सोही य समुद्दिसति हट्ठे ॥२९७९॥

अप्पणा सुत्तत्थपोरिसीओ दाउं कालवेलाए गंतुं तेइच्छं करेइ ।

अह दूरं तो सुत्तपोरिसिं दाउं अत्थपोरिसीए सीसे वावारेत्ता तेइच्छं करेति ।

अह दूरतरं आसुकारी वा पओयणं ताहे सीसेण दो दावेति, अप्पणा तेगिच्छं करेति ।

अह अप्पणो सीसो वायणाए असत्तो ताहे जेसिं सो गिलाणो तेहिं वायावेइ । उभयतो वि वायंतस्स असती य अणागाढजोगस्स जोगो णिक्खिप्पइ ।

1 गा० २९७२ ।

आगाढजोगिणं पुण इमा विधी –

"तत्थऽण्णत्थ व" त्ति – जत्थ सो गिलाणो खेत्ते तत्थ वा खेत्ते ठिता।

अहवा – "तत्थ" त्ति – सगच्छे ठिता अण्णगच्छे वा ठिया आयरिएण भणिया – जहाकालं सोधिज्जह, ताहे जत्तियाणि दिवसाणि कालो सोधितो तत्तियाणि दिवसाणि उद्दिसणकालो एक्कदिवसेणं उद्दिसति। "हट्ठे" त्ति गिलाणे पगुणीभूते जत्तियाणि दिवसाणि पमादो कालग्गहणे कतो, ण वा सुद्धो ते उद्देसणकाला ण उद्दिसिज्जंति। अण्णत्थ ठिता सेसं विधिं कप्पागसमीवे सव्वं करेंति ॥२९७९॥

अण्णत्थ खेत्ते ठायंताण इमो विधी –

णिग्गमणे चउभंगो, अद्धा सव्वे व णेंति दोण्हं पि।
भिक्खवसधी य असती, तस्सणुमए ठवेज्जा उ ॥२९८०॥

इमो चउभंगो –

वत्थव्वा संथरंति, णो आगंतुगा।

णो वत्थव्वा, आगंतुगा संथरंति।

णो वत्थव्वा, णो आगंतुगा संथरंति।

वत्थव्वा वि, आगंतुगा वि संथरंति।

एत्थ पढमभंगे आगंतुगाणऽद्धा जावतिया वा ण संथरंति ते णिंति।

वितियभंगे वत्थव्वाण अद्धा जावतिया वा ण संथरंति ते णिंति।

ततियभंगे दोण्ह वि अद्धा जावतिया वा ण संथरंति ते णिंति।

एवं भिक्खवसहीण असति निग्गच्छंति।

"तस्से" त्ति-गिलाणस्स जे अणुमता ते गिलाणपडियरगा ठविज्जंति, सेसा निर्गच्छन्तीत्यर्थः ॥२९८०॥ "सड्ढि" त्ति गतं।

इदाणिं "[1]इच्छाकार" त्ति दारं –

अभणितो कोइ ण इच्छति, पत्ते थेरेहिं को उवालंभो।
दिट्ठंतो महिड्ढीए, सवित्थरारोवणं कुज्जा ॥२९८१॥

कोइ साहू वेयावच्चे कुसलो, सो य परेण जति भण्णति – अज्जो ! एहि इच्छाकारेण गिलाणवेयावच्चं करेहि, तो करेति। माणित्तणेणं अभणितो ण इच्छति काउं। सो य सोच्चा गिलाणं णागतो। कुलगणसंघथेरा य जे कारणभूता कत्थ सामायारीओ उस्सप्पंति, कत्थ वा सीदंति, पडिजागरहेउं हिंडंति ते तत्थ पत्ता।

तेहिं सो पुच्छित्तो – अज्जो ! उस्सपंति ते णाणदंसणचरित्ताणि, अत्थि वा अब्भासे केति साधुणो, तेसिं वा णिरावाहं, गिलाणो वा ते कोति कत्थ ति सुतो ? सो भणति – अत्थि इओ अब्भासे।

---

१ गा० २९७२।

साहू – जाणसि तेसिं वट्टमाणी ? जाणामि, अत्थि तेसिं गिलाणो । थेरेहिं उवालद्धो – "तुमं तत्थ किं ण गतो ? ।।२९८१।।

बहुसो पुच्छिज्जंतो, इच्छाकारं ण ते मम करेंति ।
पडिमुंडणा वि दुक्खं, दुक्खं च सलाहितुं अप्पा ।।२९८२।।

बहु वारा पुच्छिज्जंतो भणाति – ते मम इच्छाकारं ण करेंति । अण्णं च अहं अणब्भत्थितो गतो तेहिं "पडिमुंडिओ" त्ति तेहिं णिसिट्ठो पडिमुडियस्स माणसं दुक्खं भवति । दुक्खं वा पडिमुंडणा सहिज्जति, अप्पावि दुक्खं सलाहिज्जति। जारिसं अहं गिलाणवेयावच्चं करेमि एरिसं अण्णो ण करेति तो किमहं अणब्भत्थितो गच्छामि ।

एत्थ थेरा महिड्ढिय-दिट्ठंतं करेंति ।

"[1]महिड्ढिओ" त्ति राया । एगो राया कत्तियपुण्णिमाए मरुगाण दाणं देति । एगो य मरुगो चोद्दसविज्जाट्ठाणपारगो ।

भोतियाए भणितो – तुमं सव्वमरुगाहिवो, वच्च रायसमीवं, उत्तमं ते दाणं दाहिति ।

सो मरुगो भणाति – एगं रायकिव्विसं गेण्हामि, वीयं अणामंतितो गच्छामि, जति से पितिपितामहस्स अणुग्गहेण पओयणं तो मे आगंतुं णेहीति, इह ठियस्स वा मे दाहिति ।

भोतिताए भणितो – तस्स अत्थि वहू मरुगा तुज्झ सरिच्छा अणुग्गहकारिणो । जति अप्पणो ते दविणेण कज्जं तो गच्छ ।

जहा सो मरुतो अव्भत्थणं मग्गतो इहलोइयाण कामभोगाण अणाभागी जाओ । एवं तुमं पि अव्भत्थणं मग्गंतो णिज्जरालाभस्स चुक्किहिसि । सवित्थरं च परितावणादियं चउगुरु आरोवणं पाविहिसि । एवं चगडेउं आउट्टस्स चउगुरुं पच्छित्तं देति ।।२९८२।। इच्छाकार त्ति गतं ।

इदाणिं "[2]असते" त्ति दारं । कुल-गण-संघ-थेरेहिं आगतेहिं पुच्छित्तो भणति –

किं काहामि वराओ, अहं खु ओमाणकारओ होहं ।
एवं तत्थ भणंते, चाउम्मासा भवे गुरुगा ।।२९८३।।

लोगो जो सव्वहा असत्तो पंगुवत् सव्वस्साणुकंपणिज्जो सो "वराओ" भण्णति । सो हं वराओ तत्थ गतो किं काहामि ? णवरमहं तत्थ गतो ओमाणकारओ होहं । एवं भणंतस्स चउगुरुगा सवित्थारा भवंति ।।२९८३।।

सो य एवं भणंतो इमं भण्णति –

उव्वत्त खेल संथार जग्गणे पीस भाण धरणे य ।
तस्स पडिजग्गताण व, पडिलेहेतुं पि सि असत्तो ।।२९८४।।

किं तुमं गिलाणस्स उव्वत्तणं पि काउं असत्तो ? खेलमल्लगस्स भाणपरिट्ठवणे, संथारग-धुयण-वंधण-परितावणे, राओ जग्गणे, ओसहिपीसणे, सयाण-भोयण-भायणाण संघट्टणे, "तस्से" त्ति गिलाणस्स गिलाण-पडिजागराण वा उवहिं पि पडिलेहिउं तुमं असमत्थो ? ।।२९८४।। "असमत्थ" इति दारं गतं ।

---

१ गा० २९८१ । २ गा० २९७२ ।

इदाणिं [1]"सुहिए" त्ति दारं –

सुहियामो त्ति य भणती, अच्छह वीसत्थया सुहं सव्वे ।
एवं तत्थ भणंते, पायच्छित्तं भवे तिविहं ॥२६८५॥

मासकप्पविहारट्ठिएहिं सुअं जहा – अमुगोऽत्थ गिलाणो । तत्थ केती साहू भणंति – गिलाणपडियरगा वच्चामो ।

तत्थेगे भणंति – "सुहियामो" त्ति अम्हे सुहिए, मा दुक्खिए करेह । तुब्भे वि सव्वे वीसत्था अणुव्विग्गा सुहं सुहेण अच्छह । किं अप्पाणं दुक्खे णिओएह, मा अ याणुय चोद्दसरिच्छा होह । एवं भणंताण तिविधं पच्छित्तं ।

इमं जइ एवं आयरिओ भणति – तो चउगुरुं । उवज्झाओ भणति – तो चउलहुं । भिक्खुस्स मासगुरुं ॥२६८५॥ "सुहिते" त्ति गयं ।

इदाणिं [2]"ओमाणे" त्ति दारं –

भत्तातिसंकिलेसो, अवस्स अम्हे वि तत्थ ण तरामो ।
काहिंति कत्तियाणं, तेण चिय ते य अद्दण्णा ॥२६८६॥

तहेव मासकप्पट्ठिया गिलाणं सोच्चा एगे भणंति – वच्चामो गिलाणपडियरगा ।

अण्णे तत्थ भणंति – अण्णे वि तत्थ गिलाणं सोच्चा पडियरगा आगया, तत्थ भत्तातिसंकिलेसो महंतो । अम्हे वि तत्थ गता, "अवस्सं" – णिस्संदिद्धं "ण तरामो" – ण संथराम – इत्यर्थः । गिलाणपडियरणट्ठा आगताण वा केत्तियाण पायधोयण-अब्भंगण-विस्सामण-पाहुण्णगं वा काहिंति । तेणं चिय गिलाणेण ते अद्दण्णा विषादीकृता इत्यर्थः ॥२६८६॥

अम्हेहि तहिं गएहिं, ओमाणं उग्गमातिणो दोसा ।
एवं तत्थ भणंते, चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥२६८७॥

गिलाणट्ठया बहुसमागमे णियमा ओमं उग्गमदोसा य तत्थेव भवंति । एवं भणंते चउगुरुगा सवित्थारा ॥२६८७॥

इदाणिं "[3]लुद्धे" त्ति दारं –

अम्हे मो णिज्जरट्ठी, अच्छह तुब्भे वयं से काहामो ।
अत्थि य अभाविता णे, ते वि य णाहिंति काऊणं ॥२६८८॥

मासकप्पट्ठितेहिं सुयं जहा अमुगम्मि गामे अमुगायरियस्स गिलाणो अत्थि । जत्थ य सो गिलाणो तं खेत्तं वसहि-भत्त-पाण-थंडिल्लमादिएसु सव्वगुणेसु उववेयं रमणिज्जं सुहविहारं जेहिं सुयं ते चिंतेंति-अण्णहा तं ण सक्केति पेल्लिउं गिलाणलक्खं मोत्तुं । ताहे गिलाणलक्खेण गंतुं भणंति – "अम्हे वि गिलाणवेयावच्चट्ठयाए णिज्जरट्ठी आगता, तं तुब्भे अच्छह, अम्हे गिलाणवेयावच्चं करेमो । अवि य अम्हं अभाविता सेहा, अम्हे वि ता वेयावच्चं करेंते दट्ठुं ते वेयावच्चं काउं जाणिहिंति" ॥२६८८॥

---

१ गा० २६७२ । २ गा० २६७२ । ३ गा० २६७२ ।

एवं गिलाणलक्खेण, संठिता पाहुण त्ति उक्कोसं ।
मग्गंता चमढेंति, तेसिं चारोवणा चउहा ॥२६८६॥

एवं गिलाणलक्खेणं ति गिलाणपडियरणा कवडेण ठिता लोगे "पाहुणग" त्ति काउं देंति, अदेंतेसु वि उक्कोसदव्वं मग्गंति । एवं तं खेत्तं चमढेंति। चमढिए य खेत्ते गिलाणपाउग्गं ण लब्भति, ताहे तेसिं चमढगाणं चउव्विहा आरोवणा कज्जति – दव्व-खेत्त-काल-भावणिप्फण्णा ॥२६८६॥

तत्थिमा दव्वणिप्फण्णा –

फासुगमफासुगे वा, अचित्त-चित्ते परित्तऽणंते य ।
असिणेह-सिणेहगते, अणहाराहार लहुगुरुगा य ॥२६६०॥

खेत्ते चमढणदोसेण अलभंता गिलाणस्स इमं गेण्हंति ओभासणाए[1] "इह फासुगं एसणिज्जं ति" ति । सेसा कंठा । फासुग-अचित्त-परित्त-असिणेह-अणाहारिमे य चउलहुगा । एतेसिं पडिपक्खे गुरुगा ॥२६६०॥ एयं दव्व-णिप्फण्णं ।

इमं खेत्त-णिप्फण्णं ।

लुद्धस्सऽब्भंतरओ, चाउम्मासा हवंति उग्घाया ।
बहिता य अणुग्घाता, दव्वालंभे पसज्जणता ॥२६६१॥

उक्कोसदव्वलोभेण खेत्तं चमढेत्ता गिलाणपाओग्गं खेत्तब्भंतरे अलभंताण चउलहुगा, अंतो अलब्भमाणे बहिं मग्गंता ण लब्भंति चउगुरुगा ।

दव्वालंभे पसज्जण त्ति अस्य व्याख्या – अंतो गिलाणपाउग्गे दव्वे अलभंते बहिं खेत्ते पसज्जणा पच्छित्तं ॥२६६१॥

खेत्ता जोयणवुड्ढी, अद्धा दुगुणेण जाव बत्तीसा ।
गुरुगा य छच्च लहुगुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥२६६२॥

खेत्तबहिं अद्धजोयणातो आणेति चउगुरुं । बहिं जोयणातो आणेति छल्लहुं । दुजोयणा [2]फ्रुं । (फ्रा) चउजोयणाओ छेदो । अट्ठजोयणाओ मूलं । सोलसजोयणाओ अणवट्ठो । बत्तीसजोयणाओ पारंचियं ॥२६६२॥

अहवा –दव्वालाभे पसज्जणा ।

पच्छित्तं इमं –

अंतो बहिं ण लब्भति, ठवणा फासुग-महत-मुच्छ-किच्छ-कालगए ।
चत्तारि छच्च लहुगुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥२६६३॥

अंतो बाहिं वा गिलाणपाउग्गे अलब्भंते ताहे फासुयं परियासंति ड्क । अफासुयं परियासंति ड्का । ताहे सो गिलाणो तेण पारियासियत्तेण अणागाढं परिताविज्जति ड्क । गाढं परिताविज्जति ड्का । महंतग्गहणेण दुक्खादुक्खे फ्रुं । मुच्छामुच्छे फ्रा । किच्छपाणे छेदो । किच्छुस्सासे मूलं । समोहते अणवट्ठो । कालगते चरिमं ॥२६६३॥ गतं खेत्त-पच्छित्तं ।

[1] यावनया । [2] छग्गुरु ।

इदाणिं कालणिप्फण्णं –

पढमं राइं ठवेंते, गुरुगा बितियाति-सत्तहिं चरिमं ।
परितावणाति भावे, अप्पत्तिय कूवणादीया ॥२६६४॥

पढमरातीए परियासेंतस्स ङ्का। बितियरातीए फ्रा। तइयरातीए फ्रा। चउत्थरातीए छेदो। पंचमीए मूलं। छट्ठीए णवमं। सत्तमीए चरिमं ॥२६६४॥ गतं कालपच्छित्तं।

इदाणिं भावपच्छित्तं – "परितावणाति" गाहापच्छद्धं अस्य व्याख्या –

अंतो वहिं ण लब्भति, परितावण-महत-मुच्छ-किच्छ-कालगते ।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥२६६५॥

व्याख्या पूर्ववत्। अपत्तियं करेति ङ्क। [1]कूवति – आदिग्गहणेणं अणाहो हं ति भणेज्जा, ण देंति वा मे, उड्डाहं वा करेज्जह, ङ्का ॥२६६५॥ एवं आहारे भणियं ।

इदाणिं उवधीए अतिचमढिए खेत्ते संथारगे अलब्भंते ।

अंतो वहिं ण लब्भति, संथारग-महत-मुच्छ-किच्छ-कालगते ।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥२६६६॥

पूर्ववत् ॥२६६६॥ लुद्धे त्ति गतं।

इदाणिं "[1]अणुयत्तणे" त्ति दारं –

अणुअत्तणा गिलाणे, दव्वट्ठा खलु तहेव वेज्जट्ठा ।
असतीते अण्णत्तो, आणेउं दोहि वी करणं ॥२६६७।

"दव्वट्ठ" त्ति द्रव्यार्थेन गिलाणो अणुयत्तिज्जति पत्थदव्वं उप्पायं तेहिं दव्वाणुअत्तणा। "वेज्जट्ठि" त्ति वेज्जस्स अट्ठमुप्पाएंतेहिं वेज्जमणुयत्तंतेहिं य गिलाणो अणुयत्तितो भवति। सग्गामे असति दव्ववेज्जाण दो वि अण्णत्तो गिलाणस्स किरिया कायव्वा ॥२६६७॥

अहवा – दव्वाणुयत्तणा इमा –

जायंते तु अपत्थं, भणंति जायामो तं ण लब्भति णे ।
विणियट्टणा अकाले, जा वेल ण वेंति तु ण देमो ॥२६६८॥

जइ गिलाणो अपत्थदव्वं मग्गति तो भण्णति – अम्हे जायामो तं ण लब्भति। एवं भणंतेहिं अणुवत्तितो भवति। तस्सग्गतो वा उग्गाहेउं गच्छंति अंतरा नियट्टंति। तस्सग्गतो उल्लावं करेंति – "ण लद्धं। णे "अकाले वा जाइयं" ति जेण ण लब्भति, अकाले वा जायंते गिलाणे भणंति – जाव वेला भवति ताव उदिक्खाहि, ताहे आणेत्तु दाहामो, ण भणंति - ण देमो त्ति ॥२६६८॥

खेत्तओ –

तत्थेव अण्णगामे, वुत्थंतरऽसंथरंत जयणाए ।
असंथरणेसणमादी, छण्णं कडजोगि गीयत्थे ॥२६६६॥

---

१ गा० २६७२।

"तत्थेव" त्ति तस्मिन्नेव ग्रामे यत्र स्थिता ते ।।२९९९।।

अस्य व्याख्या –

पडिलेहपोरिसीओ, वि अकाउं मग्गणा तु सग्गामे ।
खेत्तंतो तद्दिवसं, असति विणासे व तत्थ वसे ।।३०००।।

जइ सुलभं दव्वं तो पडिलेहणियं, सुत्तं अत्थं पोरिसिं च काउं मग्गंति, एवं असइ अत्थं हाविंति, एवं पि असइ सुत्तं हाविंति, एवं असइ दुल्लभे य दव्वे पडिलेहण सुत्तत्थपोरिसीओ वि अकाउं सग्गामे अणोभट्ठं मग्गंति – उत्पादयंतीत्यर्थः ।

"[1]अण्णग्गामि" त्ति अस्य व्याख्या । पच्छद्धं । सकोसजोयणखेत्तस्संतो अण्णगामे पडिदिणं अणोभट्ठं उप्पादेंति । एत्थ वि सुत्तत्थ-पोरिसी परिहावणा दट्ठव्वा। असति अणोभट्ठस्स सग्गामपरग्गामेसु खेत्तंतो ओभट्ठं उप्पाएंति । तद्दिवसं सग्गामे परग्गामे सखेते असति –

खेत्तबहिता व आणे, विसोहिकोडिं वऽतिच्छितो काढे ।
पतिदिणमलब्भमाणे, कम्मं समतिच्छितो ठवए ।।३००१।।

खेत्तबहिया वि तद्दिवसं अणोभट्ठं असति ओभट्ठं विसुद्धं आणेयव्वं ।

"[2]वुत्थंतरं"ति अस्य पदस्य व्याख्या–"विणासे च तत्थ व" । सखेत्तबहिता जतो आणिज्जति, जति तं दूरतरं, खीरादि वा तं विणासि दव्वं, पच्चूसगतेहिं उच्चउण्हे ण लब्भति, विणस्सति वा, ताहे अवरण्हे गता तत्थेव वुत्था सूरोदयवेलाए घेत्तुं बितियदिणे अविणट्ठं आणेंति ।

अहवा – दूरतरे अविणासि दव्वं, "वुत्थंतरं" ति अंतरवुत्था आनयन्तीत्यर्थः । एसा सव्वा विही एसणिज्जेण भणिया । "[3]असंथरते जयणाए" त्ति जति एवं गिलाणं पडुच्च एसणिज्जेण न संथरंति तो गिलाणस्स सखेत्ते सग्गामे पणगहाणीए तद्दिणं उप्पाएंति, सखेत्ते परग्गामे य पणगपरिहाणीए तद्दिणं उप्पाएंति । तत्थ वि असतीए खेत्तबहिया वि पणगपरिहाणीए तद्दिवसं उप्पाएंति ।

एवं जाहे पच्छित्ताणुलोमेण कीतादिविसोधिकोडीं अतिच्छितो ताहे जति गिहत्थेहिं संजयट्ठाए परिवासियं दहिमादि, जति य तं गिलाणस्स पत्थं तो सग्गामातो आणेंति । असति सग्गामे परग्गामातो खेत्तवहियातो य आणेंति तद्दिवसं ।

एवं जाहे पच्छित्ताणुलोमेण अविसोहिं पत्ता ताहे चउगुरुएसु वि अप्पबहुत्तं णाउं ताहे अण्णेण कड्ढावेति, सयं वा कड्ढेति । एसा गिलाणं पडुच्च जयणा भणिया । "[4]असंथरंतेसणमादि" त्ति जइगिलाणट्ठाए वावडाणं परक्खेत्तं वा वयंताणं अप्पणो हिंडंताणं गिलाणपडियरगाण असंथरं भवति तो ते वि एसणमादि पणगपरिहाणिजयणाए अप्पणो गेण्हंति ।

एवं जाहे गिलाणं पडुच्च आधाकम्मं पि "समइच्छितो" प्रतिदिनं न लभतीत्यर्थः ।

ताहे "[5]छण्णं कडजोगी गीयत्थ"त्ति अस्य व्याख्या – "ठवए"त्ति । सुद्धमविसुद्धं वा गिलाण-पाउग्गं दव्वं पडिदिणं अलब्भंतं उप्पाएतुं घयादियं ठवयंति पर्युवासयंतीत्यर्थः, तं च छण्णपदेसे कडजोगी गीयत्थो वा ठवेति । श्रुतार्थप्रत्युच्चारणासमर्थः कृतयोगी । यस्तु श्रुतार्थप्रत्युच्चारणसमर्थः स गीतार्थः । जं तं परियासिज्जति तं पुण केरिसे ठाणे ठविज्जति ।

---

१ गा० २९९९ । २ गा० २९९९ । ३ गा० २९९९ । ४ गा० २९९९ । ५ गा० २९९९ ।

उव्वरगस्स तु असती, चिलिमिलि उभयं च तं जह ण पासे ।
तस्सऽसति पुराणातिसु, ठवेंति तद्दिवसपडिलेहा ॥३००२॥

तं पुण अण्णम्मि गेहोव्वरए ठविज्जति, असति उव्वरयस्स तत्थेव वसहीए अपरिभोगे कोणे कडगचिलिमिलीहिं आवरेत्ता ठविज्जति जहा "उभयं ण पस्सति" त्ति गिलाणो अगीयत्थो य । गिलाणो अब्भवहरेज्ज, अगीयाणं अप्पच्चयो भवति, तम्हा अप्पसागारिए ठवेज्ज। "तस्स" त्ति अपरिभोगट्ठाणस्स असति पुराणघरे ठवति, आदिसद्दातो भावियसड्ढघरे वा, तद्दिवसं च उभयकालं पडिलेहा कज्जति ॥३००२॥

फासुगमफासुगेण य, सचित्त इतरे परित्तऽणंते य ।
आहार तद्दिणेतर, सिणेह इतरेण वा करणं ॥३००३॥

अहवा – "दोहिं वि" त्ति सग्गामपरग्गामातो आणेउं कायव्वं । अहवा – फासुगेण वा अफासुगेण वा सचित्तेण वा अचित्तेण वा परित्तादिएसु ॥३००३॥ गिलाणाणुअत्तणा गता ।

इदाणिं वेज्जाणुअत्तणा । सो गिलाणो भणेज्ज –

वेज्जं ण चेव पुच्छह, जाणंता तस्स वेंति उवदेसा ।
डक्कपिलग्गातिएसु य, अजाणगा पुच्छए वेज्जं ॥३००४॥

तत्थ जति संजया चेव तिगिच्छं करेंति ताहे भणंति – अम्हेहिं पुच्छितो वेज्जो, "तस्स"त्ति-वेज्जस्स उवदेसेण करेमो । सप्पडक्के पिडगं गंडं आदिसद्दातो सीतलिगा दुट्ठवातो-तेसु एसेव विधी । सव्वेसु अजाणगा वेज्जं पुच्छंति ॥३००४॥

सीसो पुच्छति –

किह उप्पण्णो गिलाणो, अट्ठमउण्होदगातिया वुड्ढी ।
किंचि बहुभागमद्धे, ओमे जुत्तं परिहरंतो ॥३००५॥

बहुविहा रोगातंका जेहिं गिलाणो उप्पज्जति । अहवा – कयपयत्ते वि दीहगेलण्णं उप्पज्जं, जतो भणति – अट्ठमउण्होदगादिगा वुड्ढी ॥३००५॥

अस्य व्याख्या –

जाव ण मुक्को तावऽणसणं तु असहुस्स अट्ठ छट्ठं वा ।
मुक्के वि अभत्तट्ठो, णाऊण रुयं तु जं जोग्गं ॥३००६॥

विसेसेणासज्झे रोगे अजिण्णजरगादिगे जाव ण मुच्चति ताव अब्भत्तट्ठं करेति, मुक्को व उवरिं अभत्तट्ठं करेति एवं सहुस्स । जो पुण असहू जहण्णेण अट्ठमं छट्ठं वा करेति, रोगं वा णाउं – विसेसेण रोगस्स जं पत्थं तं कीरेति, जहा वायुस्स घतादिपाणं, अवभेयगे वा घयपूरभक्खणं । "[1]उण्होदगादिया वुड्ढ त्ति" असहु रोगेण अमुक्को जता पारेति तदा इमो कमो –

उसिणोदए कूरसित्था णिच्छुब्भिउं ईसिं मलेउं पारेति ।

एवं सत्तदिणे "[2]किं चि" त्ति उसिणोदगे महुरोल्लणं थोवं छुब्भति तेण उदगेण पारेति ।

---

१ गा० ३००५ । २ गा० ३००५ ।

एएण वि सत्तदिणे "बहु"त्ति ततियसत्तगे किं चि मत्तातो बहुयरं महुरोल्लणं उसिणोदगे छुब्भति । एतेण वि सत्तगं ।

"भागे" त्ति तिभागो मधुरोल्लणस्स दो भागा उसिणोदगे, एतेण वि सत्तगं ।

"अद्धं" त्ति अद्धं महुरोल्लणस्स अद्धं उसिणोदगस्स । एतेण वि सत्तगं ।

ततो परं तिभागो उसिणोदगस्स महुरोल्लणस्स दो भागा । एवं पि सत्तगं ।

ततो ऊणो तिभागो उसिणोदगस्स समहिगा दो भागा महुरोल्लणस्स । एवं पि सत्तगं ।

ततो किंचि-मेत्तं उसिणोदगं सेसं महुरोल्लणं । एवं पि सत्तगं ।

ततो एतेण कमेण महुरोल्लणं अंबकुसणेण भिंदति ।

एवं कीरमाणे जइ पगुणो तो लट्ठं ।।३००६।।

एवं पि कीरमाणे, वेज्जं पुच्छंत्तऽठायमाणे वा ।
वेज्जाणं अट्ठयं ते, अणिड्ढि इड्ढि अणिड्ढितरे ।।३००७।।

एवं पि कीरमाणा "अठायमाणे" त्ति रोगे अणुवसंते रोगे वेज्जं पुच्छति । ते य अट्ठ वेज्जा भवंति तेसिं च दो णियमा अणिड्ढी, इयरे सेसा छ, ते य इड्ढी अणिड्ढी वा भवंति ।।३००७।।

इमे ते अट्ठ वेज्जा –

संविग्गासंविग्गे, लिंगी तह सावए अहाभद्दे ।
अणभिग्गहमिच्छेयर, अट्ठमए अण्णतित्थी य ।।३००८।।
संविग्गमसंविग्गे, दिट्ठत्थे लिंगि सावते सण्णी ।
अस्सण्णि इड्ढि गतिरागती य कुसलेण तेइच्छं ।।३००९।।

संविग्गो, असंविग्गो, लिंगत्थो, गहीयाणुव्वओ सावगो, अविरयसम्मद्दिट्ठी सण्णी । असण्णिग्गहणातो तओ घेत्तव्वा-अणभिग्गहियमिच्छो, अभिग्गहियमिच्छो, अण्णतित्थी य । दिट्ठत्थग्गहणातो गीयत्थो गहितो ।

एत्थ संविग्गगीयत्थेहिं चउभंगो कायव्वो – पुव्वं पढमभंगिल्लेण कारवेयव्वं । असति बितिएण, तस्स असति ततियभंगेण, तस्सासति चरिमेण । तस्सऽसति लिंगमादिसु छसु कमेण इड्ढीसु अणिड्ढीसु वा सव्वेसु कुसलेसु । एस विधी इड्ढी-अणिड्ढीसु दोसु वि कुसलेसु अणिड्ढिणा कारवेयव्वं, ण इड्ढीमंतेण । दुः प्रवेशादिदोषत्वात् । एगदुबहुअतरं कुसलेण तेइच्छं कारवेज्जा, पच्छा अकुसलेण । एसा चेव गतिरागती जहाभिहियविहाणातो ।।३००९।।

वोच्चत्थे चउलहुया, अगीयत्थे चउरो मासऽणुग्घाया ।
चउरो य अणुग्घाया, अकुसलकुसलेण करणं तु ।।३०१०।।

संविग्गं गीयत्थं मोत्तुं असंविग्गेण गीयत्थेण कारवेति एवमादि वोच्चत्थे चउलहुगा । गीयत्थं कुसलं मोत्तुं अगीयत्थेण अकुसलेण कारवेति चउगुरुगा । कुसलं मोत्तुं अकुसलेण कारवेति एत्थ वि चउगुरुगा चेव ।।३०१०।।

वेज्जसमीवं गच्छतो इमा विधी –

चोयगपुच्छा[1] गमणे[2] पमाण[3] उवकरण[4] सउण[5] वावारे[6] ।
संगारो[7] य गिहीणं, उवएसो[8] चेव तुलणा[9] य ॥३०११॥

पाहुडिय त्ति य एगे, णेयव्वो गिलाण तो उ वेज्जघरं ।
एवं तत्थ भणंते, चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥३०१२॥

चोदगो पुच्छति–"किं गिलाणो वेज्जसगासं निज्जउ, अह वेज्जो चेव गिलाणसमीवं आणिज्जउ ?" एवं पुच्छिओ आयरियदेसिगो भणति – "समीवं वेज्जे आणिज्जंते पाहुडियदोसो भवति, तम्हा – गिलाणो चेव वेज्जघरं णिज्जउ" ।

आयरिओ भणति – एवं भणंतस्स चेव चउगुरुगा भवंति ॥३०१२॥

लिंगत्थमादियाणं, छण्हं वेज्जाण णिज्जतो मूलं[1] ।
संविग्गमसंविग्गे, उवस्सग्गं चेव आणेज्जा ॥३०१३॥

लिंगत्थो सावगो सण्णि अणभिग्गहियमिच्छो य अभिग्गहियमिच्छो य अण्णतित्थिओ य एतेसि छण्हं पिं गिहं गच्छउ गिलाणं घेत्तुं, णो उवस्सयं एते आणिज्जंति । अधिकरणदोपभयात् । संविग्गो असंविग्गो य एते दो वि उवस्सयं चेव आणिज्जंति ॥३०१३॥

चोदगो भणति – "[2]पाहुडिय" त्ति अस्य व्याख्या –

रह-हत्थि-जाण-तुरगे, अणुरंगादीहि एंते कायवहो ।
आयमण-मट्टि-उदए, कुरुकुय सघरे तु परजोगे ॥३०१४॥

हत्थितुरगादिगमेव जाणं ।

अहवा – रहादिगं सव्वं जाणं भण्णति ।

अहवा – सिविगादिगं जाणं भण्णति, अणुरंगा गड्डी, एवं आगच्छंते पुढवादिकायवधो भवति । वेज्जेण य परामुसिए, गंडादिफालणे वा कते आयमंतस्स मट्टिय-उदगस्स य कुरुकुयकरणे वधो भवति । सघरे पुण वेज्जस्स परजोग्गातो णाधिकरणं भवतीत्यर्थः ॥३०१४॥

आचार्याह –

वातातवपरितावण, मय मुच्छा सुण्ण किं सुसाणकुडी ।
सव्वे व य पाहुडिया, उवस्सए फासुगा सा तु ॥३०१५॥

गिलाणो वेज्जघरं णिज्जंतो वातेण आयवेण य परिताविज्जति, लोगो य पुच्छति – "किं एस मतो णिज्जति" ।

"सुण्ण" त्ति अंतरा णिज्जंतो मतो, वेज्जेण य उग्घाणिते मुहे मतो दिट्ठो भणति – "किं मज्झ घरं सुसाणकुडी, जेण मतं आणेह" । ततो वेज्जो सचेलो ण्हाएज्ज, सव्वम्मि य फलिहए छगणपाणियं देज्ज ।

---

१ (ते घेत्तुं ?) । २ गा० ३०१२ ।

हे चोदग। गिलाणे णिज्जंते समतिरेगा सव्वेव पाहुडिया। उवस्सए पुण फासुएण करेज्ज ॥३०१५॥ "चोदगपुच्छ" त्ति दारं गतं।

इदाणि "[1]गमणे" त्ति दारं –

उग्गहधारणकुसले, दक्खे परिणामिए य पियधम्मे।
कालण्णू देसण्णू तस्साणुमए य पेसेज्जा ॥३०१६॥

वेज्जोवदेसउग्गहणसमत्थो, अविस्सरणेण धारणासमत्थो, लिहणदव्वभागट्ठावणे य कुसलो, शीघ्र-करणत्वात् दक्षो, अववादसद्दहणातो परिणामगो, निर्मिथ्यकरणत्वात् धर्मप्रियो, वेज्जसमीवपवेसे कालण्णू, देसग्रहणात् रिक्तक्षण:, क्षेत्रे – आसन्नं वा परिगृह्यते तं देसं जानातीति देसण्णू। एरिसा गिलाणस्स य अणुमता ते वेज्जसमीवं पेसेज्जा।

अहवा – "तस्से" ति वेज्जस्स जे अणुमता ते वेज्जसमीवे पेसेज्ज। वैद्यस्य यैः सार्धं न विग्रहः लोकयात्रा इत्यर्थः ॥३०१६॥

एयगुणविप्पमुक्के, पेसंतस्स चउरो अणुग्घाया।
गीतत्थेहि य गमणं, गुरुगा य इमेहिं ठाणेहिं ॥३०१७॥

एयगुणविप्पमुक्के आयरिओ जति पेसति तो चउगुरुं पच्छित्तं, ते य गीयत्थे पेसेज्ज ॥३०१७॥

इदाणि "[2]पमाणे" त्ति दारं –

एक्कं दुगं चउक्कं, दंडो दूआ तहेव णीहारी।
किण्हे नीले मलिणे, चोल-रय-णिसेज्ज-मुहपोत्ती ॥३०१८॥

एगो दंडो, दो जमदूओ, चउरो णीहारी। एयपमाणे पेसवेंतस्स चउगुरुं।

इदाणि "[3]उवकरणे" त्ति दारं –

किण्होवकरणा जति गच्छंति णीलेण वा मलिणेण वा। किं च तं उवकरणं – चोलपट्टे रयहरणं णिसेज्जा मुहपोत्तिया य, एत्थ निर्योगोपकरणमलिने चतुगुरुमित्यर्थः, तस्मात् शुद्धं शुक्लं गृहीतव्वं ॥३०१८॥

इदाणि "[4]सउणे" त्ति दारं –

मइलकुचेले अब्भंगिएल्लए साणु खुज्ज वडभे य।
कासायवत्थकुच्चं-धरा य कज्जं न साहेंति ॥३०१९॥

"साणे" त्ति मंदपादो सुक्लपादो वा। कुज्जं वा सरीरं अस्य उद्धुलिता ससरक्खा – एते णिगम-पवेसेसु दिट्ठा कज्जं ण साहेंति ॥३०१९॥

इमे साहेंति –

नंदीतूरं पुण्णस्स, दंसणं संख-पडह-सद्दो य।
भिंगार वत्थ चामर, एवमादी पसत्थाइं ॥३०२०॥

---

१ गा० ३०११। २ गा० ३०११। ३ गा० ३०११। ४ गा० ३०११।

णंदीमुखस्स मउंदादीतूरस्स, वहु आउज्जसमुद्दातो वा तूरं भण्णति, संखस्स पडहस्स य सद्दसवणं पसत्थं, पुण्णकलसस्स भिंगारस्स छत्तस्स य चामराण य, आदिसद्दातो सीहासणस्स दधिमादियाण य दरिसणं पसत्थं ॥३०२०॥

आवडणमादिएसु, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाया ।
एवं ता वच्चंते, पत्ते य इमे भवे दोसा ॥३०२१॥

उंबरमादी सिरेण घट्टेति त्ति आवडणं भण्णति । आदिसद्दातो पडति वा पक्खलति वा अण्णेण वा रक्खमादिए वेत्तुं [1]अक्कंचितो कहिं वा वच्चसि त्ति पुच्छिओ छीयं वा अमणुण्णसद्दसवणं एवमादिएसु जइ गच्छति तो चउगुरुं पच्छित्तं । एस ताव अंतरा वच्चंतस्स विही भणितो । वेज्ज घरं पत्तेण इमे दोसा परिहरितव्वा ॥३०२१॥

इदाणिं "[2]वावारे" त्ति दारम् –

साडऽब्भंगण उव्वलण, लोयछारुक्करडे य छिंद भिंदंते ।
सुह आसण रोगविही, उवदेसो वा वि आगमणं ॥३०२२॥

एगसाडो वेज्जो अप्पसत्थो ण पुच्छिज्जति, तेल्लादिणा अब्भंगितो, कक्कादिणा उव्वलितो, लोयकरणे वा अद्धकम्मिज्जितो, छारंगारकेयारादीण वा उवरि ठितो, दारुमादि वा किंचि छिंदति, खुरप्पगादिणा वा कस्स ति दूसियभंगं छिंदति, घडकमलाउं वा कस्स ति भिंदति सिरोवेहं वा । एरिसेसु अप्पसत्थजोगेसु ण पुच्छिज्जति । गिलाणस्स वा जति किं चि छिंदियव्वं भिंदियव्वं वा तो पुच्छिज्जति ।

इमेरिसो पुच्छियव्वो – सुहासणत्थो रोगविधी-वेज्जसत्थं वा पढंतो पुच्छिज्जति । सो य वेज्जो पुच्छितो संतो गिलाणोवत्थं सोउं उवदेसं वा देति आगच्छति वा गिलाणसमीवं ॥३०२२॥

इदाणिं "[3]सिंगारे" त्ति दारं –

पच्छाकडे य सण्णी, दंसणऽधाभद्दाणसड्ढे य ।
मिच्छादिट्ठी संबंधिए य परितित्थिए चेव ॥३०२३॥

पुराणो पच्छाकडो, गिहीयाणुव्वतो सावगो सण्णी, दंसणसंपण्णो अविरतो सम्मद्दिट्ठी, दंसणविरहितो अरहंतेसु तस्सासणे साधू उभयभद्दसीलो अहाभद्दो भण्णति, दानं प्रति सड्ढी गृहस्थः, साक्यादिसासनं प्रतिपन्नो मिथ्यादृष्टिः, स्वजनः संबंधी, सरक्खादिलिंगट्ठिता परतित्थिणो । च सद्दो समुच्चए । एवसद्दो पुरिसाभावे इत्थि-णपुंसेसु दट्ठव्वो । एसिं सिंगारो कज्जति – जाहे वेज्जो आणिज्जति गिलाणट्ठा तुब्भे तत्थ सण्णिहिता होह, जं सो भणति तं तुब्भे सव्वं पडिवज्जह ॥३०२३॥

वेज्जसमीवं पट्ठविता जे ते वेज्जस्स इमं कहिंति –

वाहि-णिदाण-विकारे, देसं कालं वयं च धाउं च ।
आहार अग्गि धिति बलं, समुइं वा तस्स साहंति ॥३०२४॥

जरादिगो वाही, णिदाणं रोगुत्थाणकारणं, प्रवर्धमानरोगविशेषो विगारः । स गिलाणो अमुगम्मि देसे जातो, वसंताइ केइ काले जातो, रोगुत्थाणकालं वा से कहेंति, इमो से यौवनादिको वयः, वातादियाण य

---

१ असंचित्तो, अखंचित्तो पा० । २ गा० ३०११ । ३ गा० ३०११ ।

धातूण इमो से उक्कडो, आहारे अप्पभोगी त्ति कहेंति, सामर्थ्यं अस्ति नास्तीति, धृतिबलं समुच्चयभावः । एवं सव्वं वेज्जस्स कहेंति ॥३०२४॥

इयाणिं "[1]उवदेसे" त्ति दारं –

सव्वं सोउं वेज्जो सगिहत्थो चेव दव्वादिगं उवदेसं देज्ज –

कलमोयणो य खीरं, ससक्करं तूलियादिया दव्वे ।
भूमिघरट्टग खेत्ते, काले अमुगीइ वेलाए ॥३०२५॥

दव्वओ कलमसालिओदणो, खीरं च खंडसक्कराचितं, सस्सदेहअत्थरणं तूली । आदिसद्दातो पल्लंको, पाउरणं रल्लगादि । खेत्तओ भूमिघरे वा । कालतो पढमपहरादिएसु देह ॥३०२५॥

इच्छाणुलोमभावे, ण य तस्सऽहियाऽहवा जहिं विसया ।
अहवा खित्तादीसू, पडिलोमा जा जहिं किरिया ॥३०२६॥

भावओ जं से इच्छओ अणुलोमं तं से देह ।

अथवा – ण य तस्सऽहिया जहिं विसया प्रतिलोममित्यर्थः ।

अहवा – दित्तचित्तस्स अवमाणो कज्जति, खित्तचित्तस्स अवमाणो कज्जति, जक्खाइट्ठस्स वि अणुलोमं पडिलोमं वा कज्जति, जाव जम्मि रोगे प्रभाविता किरिया सा तत्थ कज्जति ॥३०२६॥

अहवा – तस्स गिलाणस्स सण्णायगो कोइ भणेज्ज –

णियएहिं ओसहेहि य, कोइ भणेज्जा करेसहं किरियं ।
तस्सप्पणो य थामं, नाउं भावं च अणुमण्णे ॥३०२७॥

अप्पणिज्जेहिं ओसहगणेहिं करेमि किरियं कारवेमि वा, विसज्जह मे व गिहं । एवं भणिए किं कायव्वं ? "तस्से" त्ति गिहत्थस्स भावं णाउं जइ उग्गिवक्कमणाभिप्पाएण करेति तो ण विसज्जेंति, धम्महेउं करेंतस्स अणुण्णवति, गिलाणस्स वा अप्पणो जइ दढो भावो तो अणुण्णवेति, इहरहा णो ॥३०२७॥

अहवा – वेज्जो भणेज्ज –

जारिसयं गेलण्णं, जा य अवत्था तु वट्टए तस्स ।
अद्दट्ठूण ण सक्का, वोत्तुं तो गच्छिमो तत्थ ॥३०२८॥

जारिसं तुब्भेहिं गेलण्णमक्खायं, जारिसा य तस्स वट्टमाणी अवत्था कहिता, एरिसाए गिलाणं अदट्ठूण ण सक्केति किरितोवदेसो दाउं, किरियं व काउं, तो हं तत्थेव वच्चामि ॥३०२८॥

इयाणिं "[2]तुलणे" त्ति ? दारं ।

सगिहट्ठियस्स गिलाणसमीवागयस्स वा उवदेसं देंतस्स वेज्जस्स –

अपडिहणंता सोउं, कयलोगाऽलंभे तस्स किं देमो ?
जह विभवा तेइच्छा, जा लाभो ताव जूहं ति ॥३०२९॥

१ गा० ३०११ । २ गा० ३०११ ।

दव्वादियं वेज्जुवदेसं समग्गमप्पडिहणंता सोउं अप्पाणं तुलेंति किमेयं लभिस्सामो ण वेति ? जति धुवो लाभो अत्थि तो ण भणंति किं चि ।

अहवा – संकिते भणंति – जति एयं कते जोगे ण लभामो तो किं देमो ? वेज्जसत्थे य जह विभावा तेइच्छा भणिता सापवादेत्यर्थः, एवं ताव उसारेति जाव जम्मि अव्वे धुवो लाभो भविस्सति । जहण्णेणं जाव कोदवोदणो, जूहं च कांजिकमित्यर्थः । तंडुलोदग मुदगरसो वा जूहं भणगति ॥३०२९॥

वेज्जागमणे वेज्जस्स गिलाणस्स य कितिकम्मकरणे इमा विवी –

एगो संघाडो वा, पुव्वं गंतूणुवस्सयम्मि करे ।
लिंपण-सम्मज्जणयं, गिलाणजोग्गं च आणेति ॥२०३०॥

विज्जस्स य पुष्फादी, विरइत्ता आसणे य दोण्णि तहिं ।
वाइत्ता य गिलाणं, पगासे ठवइत्तु अच्छंति ॥२०३१॥

अब्भुट्ठाणे[1] आसण, दावण[2]-भत्ते[3] भती य आहारे ।
गिलाणस्स आहारे, णेयव्वो आणुपुव्वीए ॥२०३२॥ दा० गा०

अब्भुट्ठाणे गुरुगा, तत्थ वि आणादिया भवे दोसा ।
मिच्छत्तं रायमादी, विराहणा कुल-गणे संघे ॥२०३३॥

आयरिओ जति वेज्जस्स आगच्छंतो अब्भुट्ठाणं देति तो चउगुरुगा आणादिया दोसा । राया-राय-अमच्चो वा चोप्पगसमीवातो सोउं सयं वा दट्ठुं "आयरिओ वेज्जस्स अब्भुट्ठितो" त्ति, "अम्हं गव्वेण अब्भुट्ठाणं ण देति, अम्हं भिच्चस्स णीयतरस्स य अब्भुट्ठाणं देति, अहो ।" "दुट्ठधम्मं" मिच्छत्तं गच्छे, पदुट्ठो वा कुल-गण-संघस्स पत्थारं करेज्ज ॥२०३३॥

अणब्भुट्ठाणे गुरुगा, तत्थ वि आणादिणो भवे दोसा ।
मिच्छत्तं सो वि अन्नो, गिलाणमादी विराहणया ॥२०३४॥

जइ आयरिओ वेज्जस्स अब्भुट्ठाणं ण देति तो चउगुरुगा, आणादिणो य दोसा । सयं वेज्जो अण्णो वा "अहो तवस्सिणो वि गव्वमुव्वहंति" त्ति मिच्छत्तं गच्छे ।

अहवा – पदुट्ठो गिलाणस्स णो किरियं कुज्जा, गिलाणस्स वा अप्पयोगं करेज्ज, एवं गिलाण-विराहणा, आदिसद्दातो रायवल्लभो गिलाणं पि वेध-वधादिएहिं विराहेज्ज ॥२०३४॥

जम्हा एते दोसा तम्हा –

गीयत्थे आणयणं, पुव्वं उट्ठिंतु होति अभिलावो ।
गिलाणस्स दायणं, सोहणं च चुण्णाइगंधे य ॥२०३५॥

गियत्थेहिं वेज्जो पुव्वुत्तविहाणेण आणेयव्वो जया य आगच्छति तदा तिण्हं एगो, पंचण्हं दो जणा आगंतु अग्गतो गुरुणो कहेंति – "वेज्जो आगच्छइ" त्ति ।"

ताहे गुरवो दो आसणे ठावेंति, आयरिओ चंकमणालवखेण पुव्वुट्ठितो अच्छति । गीयत्थेहिं य कहेयव्वं – एस वेज्जो आगतो त्ति । गुरुणा य पुव्वुट्ठिएण सो पुव्वं अणालवंतो वि आलवेयव्वो । पुव्वण्णत्थे आसणे उवणिमंतेयव्वो, ततो आयरिओ वेज्जो य आसणेसु उवविसंति । "अब्भुट्ठाण आसणे त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]वायणे" त्ति दारं –

गिलाणस्स जति किंचि सरीरे उवकरणं वा अ्रसुइं तं पुव्वमेव धोवेयव्वं, खेलमल्लगो काइयसण्णा-साधीय अवणेयव्वो, भूमी उवलिपियव्वा । तहा वि दुगंधे पडवासमादि चुण्णागं धूवणेयव्वा । एवं गिलाणो सुतीकतो सुक्किलवासपाउओ दरिसिज्जति । जति किं गंडो ति फाडेयव्वं, तम्हि फालिए उसिणोदगादिफासुअं हत्थधोवणं दिज्जति, अणिच्छे व पच्छाकडादिया मट्टिया उदगं यच्छंति, गंधपुप्फचुण्णं तंबोलादियं च से पयच्छंति ॥२०३५॥

इदाणिं "[2]भत्ते भती य आहारे" त्ति पच्छद्धस्स इमं वक्खाणं ।

वेज्जो भणति –

चउपादा तेइच्छा, को भेसज्जाइ दाहिती तुब्भं ?
तहियं तु पुव्व पत्ता, भणंति पच्छाकडा दम्हे ॥२०३६॥

चउप्पादा तेइच्छा भवति। गिलाणो, पडियरगा, वेज्जो, भेसज्जाणि य । तुब्भ को भेसज्ज पयच्छि-हिति त्ति ? । तत्थ पच्छा-कडादि पुव्वं संगारदिण्णं पत्ता भणंति – अम्हे सव्वं दाहामो ॥२०३६॥

कोयी मज्जणग विही, सयणं आहार उवहि केवडिए ।
गीयत्थेहि य जयणा, अजयण गुरुगा य आणादी ॥२०३७॥

कोइ वेज्जो भणेज्ज–"मज्जणं" – ण्हाणं, विधी-विभवेण स्नातुमिच्छति इत्यर्थः । सयणं पल्लंकादियं, आहारमुक्कोसं, उवहिं तूलित्तमादी, "केवडियं" ति-[3]केवगा । एवं गिलाणस्स मज्झं वा को दाहिति ? एवं सव्वं पच्छाकडादिएहिं अब्भुवगंतव्वं । पच्छाकडाण य अभावे गीयत्थेहिं य जयणाए अब्भुवगंतव्वं। जति अजय-णाए अब्भुवगच्छंति पडिसेहिति वा तो चउगुरुगा, आणादिया य दोसा भवंति । एतेसु मज्जणादिसु दिज्जंतेसु अदिज्जंतेसु वा भद्दो किरियं करेति चेव, जो पुण अभद्दो सो संवुद्धे अब्भुवगते णिक्काइयतरं करेति ॥२०३७॥

एयस्स णाम दाहिह, को मज्जणगाइ दाहिती मज्झं ?
ते चेव णं भणंति, जं इच्छसि तं वयं सव्वं ॥२०३८॥

एयस्सेति गिलाणस्स मज्जणादि सव्वं तुब्भे दाहिह, मज्झं पुण को दाहिति ? एवं भणितो चेव पच्छाकडादि भणंति – जं जं इच्छसि तं तं सव्वं अम्हे दाहामो ॥२०३८॥

जं एत्थ सव्व अम्हे, पडिसेहे गुरुग दोस आणादी ।
पच्छाकडा य असती, पडिसेहे गुरुग आणादी ॥२०३९॥

जे ते पुव्वपच्छाकडादिया पण्णविता तेहिं एवं भणितो – "जं एत्थ गिलाणस्स तुज्झ दायव्वं तं सव्वं अम्हे दाहामो," एवं भणिते जो ते अधिकरणभया पडिसेहेंति तस्स चउगुरुगा, आणादिणो य दोसा ।

१ गा० २०३२ । २ गा० २०३२ । ३ कियत् ।

पच्छाकडादियाण वा असतीए जो वेज्जं पडिसेहेति तस्स वि एते एव चउगुरुगा आणादिया य दोसा भवंति ॥३०३९॥

जुत्तं सयं ण दाउं, अण्णे देंते व णं णिवारेंति ।
ण करेज्ज गिलाणस्सा, अवप्पयोगं च से देज्जा ॥३०४०॥

वेज्जो ते पडिसेहिज्जंते सोउं भणति – अपरिग्रहत्वात् साधूनां युक्तं युज्यते अदाणं । जं पुण अण्णे वि देंते णिवारेति, तेण पदुट्ठो य गिलाणकिरियं ण करेज्ज, अवप्पयोगं करेज्ज, तस्मादन्यान्न निवारियेदित्यर्थः ॥३०४०॥

"[1]गीयत्थेहि" य जयणाए त्ति अस्य व्याख्या –

दाहामो त्ति व गुरुगा, तत्थ वि आणादिणो भवे दोसा ।
संका व सूयएहिं, हियणट्ठे तेणए वा वि ॥३०४१॥

पच्छाकडादियाण असति जति साहू भणाति-अवस्सं ते भत्तं दाहामो तो चउगुरुगा आणादिया दोसा ।

अहवा – इमे दोसा । एते अहिरण्णा कतो दाहिंति, अण्णेण विहिते सो संकिज्जति, णट्ठे वा दविणजाते एतेण गहियं ति संकिज्जति, तेणगो वा एस त्ति संकिज्जति, सूयगेहिं वा राउले सूइज्जति-अत्थि से दविणजायं ति जेण वेज्जस्स देंति त्ति ॥३०४१॥

पडिसेहेऽजयणाए, दोसा जयणा इमेहि ठाणेहिं ।
भिक्खण इड्ढी वितियं, रहिते जं भणिहिसी जुत्तं ॥३०४२॥

पच्छाकडादियाण असति जइ वेज्जं अजयणाए पडिसेहेति-"णेति भत्ति भत्तं वा" दोसा तो चउगुरुगा, आणादिया दोसा, तम्हा जयणा कायव्वा । इमेहिं ठाणेहिं भिक्खाणियं काउं दाहामो – इड्ढिणे वि णिक्खमंते जं णिक्खितं तं घेत्तुं दाहामो, वितियपदेण वा कारणजाते गहिओद्धरियं दाहामो, "रहिए" त्ति पच्छाकडादिएहिं रहिए एयं भणंति – जं तुमं भणीहिसि तं जहासत्तीए सव्वं दाहामो, जम्हं जुत्तं तं काहामो, एवं साहारणं ठवेंति ॥३०४२॥

कयाति सो वेज्जो एवं भणेज्ज –

अहिरण्ण गच्छ भगवं, सक्खी ठावेह देंति जे पउणं ।
थंतं पि दुद्धकंखी, ण लहइ दुद्धं अ-धेणू ते ॥३०४३॥

इह साक्षी प्रतिभू वा गृह्यते (धं) वंतं पि णिरायं पि भणियं पि होति, अधेणू विसुक्खली वंज्झा च, न तस्मात् क्षीरं प्राप्स्यतीत्यर्थः ॥३०४३॥

एयं भणंते –

पच्छाकडादि जयणा, दावण कज्जेण जे भणिय पुव्वि ।
सड्ढा विभवविहूणा, ते चिय इच्छंतया सक्खी ॥३०४४॥

---

[1] गा० ३०३७ ।

इह जयणग्गहणातो कम्मे घेप्पति, दवावणकज्जेण जे आणिता ते "चेव" सद्द-विरहिता, विभव-विच्छिण्णा य दाणस्स भावे इंच्छंता ते चेव सक्खी वतिज्जति, जहा – "अम्हेहिं भिक्खुणिय काउं जहालद्धं एयस्स दाहामो अम्ह य जं जुत्तं तं करेहामो–धर्माविरुद्धमित्यर्थः । तुम्हे एत्थ सक्खी प्रतिभू वाचा" ॥२०४४॥

अहवा – [1]"इड्ढि" त्ति अस्य व्याख्या –

कोइ इड्ढिमंतो पव्वइतो ताहे सो भणति –

पंचसतदाणगहणे, पलालखेलाण छड्डणं च जहा ।
सहस्सं च सयसहस्सं, कोडी रज्जं च अमुगं वा ॥२०४५॥

वेज्जस्स पुरओ इड्ढिमं भणति – जहा पलालखेला अकिंचिकरा णिप्पिवासचित्तेहिं छड्डिज्जंति एवं तडियकप्पडिएसु अहं पंचसया देता इतो "गहणे" त्ति पंचसयाणं लाभे वि रूपकस्याष्टादशीमिव कलां मन्यमाना ग्रहणं कृतवन्त, एवं सहस्से कोडि रज्जं वा अमुगं च अनिर्दिष्टं संख्यास्थानं ग्रहीतव्यं ॥२०४५॥

एवं ता गिहवासे, आसी य इदाणि तु किं भणीहामि ।
जं तुज्झऽम्ह य जुत्तं, ओगाढे तं करीहामो ॥२०४६॥

एवं अम्ह गिहवासे आसी इदाणिं पुण अकिंचणा समणा पव्वइया किं भणामो, तहावि गिलाणे "ओगाढे" त्ति अद्वीभूते जं अहं जुत्तं अणुरूवं तं तुज्झ काहामो ॥२०४६॥

परसक्खियं णिबंधति, धम्मावणे तत्थ कइयदिट्ठंतो ।
पासाए कूवादी, वत्थुक्कुरुडे ठितो दाई ॥२०४७॥

भणिए इड्ढिणा एवं आगंतुगो वेज्जो जति परसक्खियं णिबंधति तो णिबंधतो चेव एवं भणति – धम्मावणो, एस अत्थं जं संभवति घेत्तव्वं, कइय-दिट्ठंतसामत्थेण, जहा-कोति णगरं गतो जत्थावणे सुवण्णं रययं वा तत्थ गेण्हति, एवं गंधियावणे चंदणादियं, णेसत्थिएसु मुसलिमादियं, पोतिएसु (सालिमादियं) खज्जगविसेसो । एवं धम्मावणे तुमे धम्मो घेत्तव्वो । एवं पण्णवितो वि जति णेच्छति ता ओहिमादि पुच्छिउं पासाद-कूव-वत्थु-वक्कुरुडादिएसु ठियं दव्वं घेत्तुं दायव्वं, ण य पडिसेहियव्वो ॥२०४७॥

अंतो पर-सक्खीयं, धम्मादाणं पुणो वि णेच्छंते ।
सच्चेव होति जयणा, अरहितरहितम्मि जा भणिता ॥२०४८॥

अणागंतुगे वि वेज्जे एस चेव विधी । धम्म एव आदाणं धम्मादाणं "पुणो" त्ति पुणो पुणो भण-माणो, जया तं णेच्छति तदा सच्चेव जयणा जा पच्छाकडादिएसु अरहिते रहिते वा पुव्वं आदीए भणिता । इह आदीए च्चेव सगच्छावणे सा चेव विधी ॥२०४८॥

जइ सग्गामे वेज्जो ण होज्ज तो अण्णगामातो वि आणेयव्वो तत्थ ।

को विसेसो ? उच्यते –

पाहिज्जे णाणत्तं, बाहिं तु भणीए एस चेव गमो ।
पच्छाकडादिएसु, अरहितरहिते य जो भणितो ॥२०४९॥

पाहेज्ज णाम कंटामदावणियं, तं वत्थव्वस्स ण भवति, एयं "णाणत्तं" विसेसो, "बाहिं तु" त्ति अन्यग्रामगतस्येत्यर्थः । शेषं पूर्ववत् ॥२०४९॥

इमा जयणा –

मज्जणगादीच्छंते, बाहिं अब्भिंतरे व अणुसट्ठी ।
धम्मकह-विज्ज-मंते, निमित्त तस्सट्ठमण्णो वा ॥३०५०॥

मज्जणं स्नानं, आदिसद्दातो अब्भंगुव्वट्टणादि आहार-सयणादि वा, "बाहिं" ति पंथे आगच्छंतो त्ति गिलाणसगासे पच्छाकडादिया कारविज्जंति, तेसऽसति अप्पाणेण कज्जति ।

अहवा – पच्छाकडादियाण असती भणंति – बाहिं कूवतडागादिएसु ण्हायह, बाहिं अणिच्छंते अब्भिंतरे ण्हाणमिच्छंते अणुसट्ठीमादि कज्जति, विज्जामंतणिमित्तं वा तस्साउंटणणिमित्तं पयुंजति, अण्णो वा तहिं आउट्टेउं तस्स करेज्जति ।

अहवा – बाहिरवेज्जस्स अब्भंतरवेज्जस्स वा अणुसट्ठिमादीणि कहिज्जंति ॥३०५०॥

[1]"धम्मकहि" त्ति अस्य व्याख्या –

तह से कहेंति जह, होति संजओ सन्नि दाणसड्ढो वा ।
बहिया तु अण्हायंतो, करेंति खुड्डा सिमं अंतो ॥३०५१॥

अक्खेवणादियाहिं कहाहिं तहा से धम्मं कहेंति जहा सो पव्वयति, गिहियाणुव्वतो वा सावगो भवति । अविरयसम्मद्दिट्ठी वा दाणसड्ढो वा मुहा वा जेण किरियं करेति ।

धम्मकहालद्धिअभावे विज्जामंतेहि वसीकज्जिति, विज्जामंतेहिं वा से ण्हाणादि आणिज्जति, णिमित्तेण वा आउट्टिज्जति ।

असति सव्वेसिं अणिच्छे वा आमलगा से दिज्जंति भणंति य बाहिं कूवतडागादिएसु ण्हायह । तेसु वि अणिच्छंते चेव इमं से खुड्डगा अंतो उवस्सगस्स करेंति ॥३०५१॥

उसिणे[1] संसट्ठे[2] वा, भूमी-फलगाइ[3]-भिक्ख[4]-चड्डादि ।
अणुसट्ठी धम्मकहा, विज्जणिमित्ते य अंतो बहिं ॥३०५२॥
तेल्लुव्वट्टण ण्हावण, खुड्डासति वसभ-अण्णलिंगेणं ।
पट्टदुगादी भूमी, अणिच्छ जा तूलि पल्लंको ॥३०५३॥

खुड्डगा तं वेज्जं तेल्लेण अब्भंगेउं कक्केण उव्वट्टेउं उसिणोदगेण संसट्ठियं अण्णेण वा फासुएण ण्हाणेंति, असती फासुगस्स जयणाए तावेंति ण्हाणोदगं । खुड्डगासतीए य वसभा करेंति, गच्छस्स सुभासुभ-कारणेसु भारुव्वहणसमत्था वसभा भण्णंति, ते सलिंगपरिच्चाएण गिहिमाति अण्णलिंगट्ठिता सव्वं ण्हाणादियं वेज्जस्स करेंति । एस ण्हाणं पति जयणा भणिता ।

इयाणिं "[2]भूमीफलगाति" त्ति अस्य व्याख्या –

"पट्टदुगादी" पच्छद्धं । भूमीए संथारपट्टे उत्तरपट्टे य सुवति, अणिच्छे भूमीए तप्पे सोविज्जति । तत्थ वि अणिच्छे फलगसंथारुत्तरपट्टं अत्थरिय सोविज्जति । तत्थ वि अणिच्छे उत्तरोत्तरं णेयं जाव तूली पल्लंकेपि से दिज्जति ॥३०५३॥

---

१ गा० ३०५० । २ गा० ३०५२ ।

इदाणि "[1]भिक्खे" त्ति अस्य व्याख्या –

समुदाणि ओयणो, मत्तओ य णेच्छंत वीसु तवणा वा ।
एवं पणिच्छमाणे, होंति अलंभे इमा जयणा ॥३०५४॥

समुदाणि ओदणं भिक्खकूरो से दिज्जति, से तम्मि अणिच्छंते मत्तगं से वट्टाविज्जति, तम्मि अणिच्छंते पि हि ओदणं वंजणं विविहं घेप्पति नाविज्जति तं पि अणिच्छंते अलंभे वा इमा जयणा ॥३०५४॥

तिगसंवच्छरतिगदुग, एगमणेगे य जोणिघाए य ।
संसट्ठमसंसट्ठे, फासुगमफासुगे जयणा ॥३०५५॥

"तिगसंवच्छरे" त्ति – जेसिं सालिविहिमातियाण तिसु वरिसेसु पुण्णेसु अबीयसंभवो भणितो, ताणं जे तंदुला ते तिच्छडा घेत्तव्वा ।

असति दुच्छडा घेत्तव्वा ।

असति एगच्छडा घेत्तव्वा ।

असति तिसंवच्छराण दुवरिसाते वि ति-दु-एगच्छडा कमेण घेत्तव्वा ।

असति दुसंवत्सरियाण एगवरिसाते वि ति-दु-एगच्छडा कमेण घेत्तव्वा ।

असति "अणेगे" य त्ति तिवरिसातो बहुतरकालं जेसिं ठिती भणिता ते वि ति-दु-एगच्छडा कमेण घेत्तव्वा । वरिसद्दाणि दट्ठव्वा ।

वक्कंतजोणियाण असती, जोणिघाए त्ति जोणिघातेण जे तिदुएगच्छडा कता ते कमेण घेत्तव्वा ॥३०५५॥

अस्यैवार्थस्य व्याख्या –

वक्कंतजोणि तिच्छड, दुगएक्कछडणे वि एस चेव गमो ।
एमेव जोणिघाते, तिगाति इतरेण रहिते वा ॥३०५६॥

वक्कंतजोणि तिच्छडा गतार्थं ।

दुग एग अस्य व्याख्या –

दुगएगच्छडाण वि एस चेव गमो । वक्कंतजोणिरिति अनुवर्तते ।

"[3]जोणिघाए यं" ति अस्य व्याख्या – "एमेव जोणिघाते तिगाति" छडिता । एते सव्वे अहा-कडा तंदुला घेत्तव्वा ।

अहाकडाण असति तिवरिसिगाति कंडावेयव्वा ।

असति कंडेतस्स "इतरेण"त्ति परलिंगेण "रहिते" त्ति असागारिए ठाणे स्वयमेव कंडयतीत्यर्थः । स्वलिंगेण वा असागारिए ठाणे । कुरुकुडगं पाणियं इमेरिसं "[4]संसट्ठ" पच्छद्धं । दहिमट्ठिगादिभायणधोवणं संसट्ठधोवणं, असंसट्ठ-फासुयं उण्होदगं तंदुलधोवणानि वा फासुयं, असति फासुगस्स अफासुगं पि जयणाए जं तसरहियं तं घेत्तव्वं ॥३०५६॥

---

१ गा० ३०५२ । २ शेषा व्याख्या अग्रिम गाथायाम् । ३ गा० ३०५५ । ४ गा० ३०५५ ।

पुव्वाउत्ता उवचुल्लचुल्लि सुक्खघणमज्झुसिरमविद्धे ।
पुव्वकय असति दाणे, [1]ठवणा लिंगे य कल्लाणा ॥३०५७॥

"पुव्वं – पढमं गिहिहिं दारुयपक्खेवण समाउत्ता "पुव्वाउत्ता" भण्णति ।

का सा अवचुल्ली चुल्ली वा ? चुल्लीए समीवे अवचुल्ली । ताए पुव्वं तत्ताए रंधवेंति। अवचुल्ला-सतीए चुल्लीए । पुव्वतत्तासतीए दारुयपक्खेवे इमेरिसा पक्खिवति – "सुक्खा" नार्द्रा, "घना" न पोल्ल। वंशवत् । "अज्झुसिरा" न स्फुटिता, त्वचा युक्ता वा, घुणेहि ण विद्धा ॥३०५७॥

एतेसिं दारुआणं इमं पमाणं –

हत्थद्धमेत्तदारुय, निच्छल्लियमघुणिता अहाकडगा ।
असती य सयं करणं, अघट्टणोवक्खडमहाउं ॥३०५८॥

हत्थद्धं बारसंगुलदीहा, अवगयच्छल्ली, घुणेहिं अविद्धा । एरिसा अहाकडा घेत्तव्वा, असती अहाकडाणं हत्थऽद्धमेत्ता सयं करेति णिच्छल्लेति य । उवक्खडेंतो ण घट्टेति । उम्मुए परोप्पराओ उवक्खडिये ण विज्झवेति । अहाउयं पालेत्ता स्वयमेव विज्झायति ॥३०५८॥

इमं से य पियणे पाणियं ण्हाणे पाणियं ।

कंजिय चाउलउदए, उसिणे संसट्ठमेतरे चेव ।
ण्हाणपियणाइं पाणग, पायासति चीर दद्दरए ॥३०५९॥

कंजियं अवश्रावणं, चाउलधोयणमुयगं, उसिणोयगं वा, संसट्ठिपाणगं वा,"मेतरं"फासुगं, मद्दणातिएसु अणिच्छस्स अफासुगं पि जाव कप्पूरवासियं । एयं ण्हाणपियणादिकज्जेसु दिज्जति। एयं पाणगं पाए ठविज्जति, असति अणिच्छे वा वारगे ठविज्जति, घणेण चीरेण दद्दरति य ॥३०५९॥ "भिक्खे" त्ति गयं ।

इदाणि "[2]चड्डुगे" त्ति –

चड्डुग सराव कंसिय, तं वरयत्ते सुवण्ण मणि सेले ।
भोत्तुं स एव धोवति, अणिच्छ किडि खुड्ड वसभा वा ॥३०६०॥

चड्डुगं अठगेण कज्जति । तत्थ भुंजति । तत्थ वि अणिच्छे सरावे भुंजति । तत्थ वि अणिच्छंते कंसभायणे, तंबभायणे वा । अणिच्छे रयथाले सुवण्णथाले वा मणिसेले वा भायणे भुंजति । भुत्ते सो चेव सरावेति, अणिच्छे किड्ढि-साविया धोवति, तस्साऽसति खुड्डिया, खुड्डियासति वसभा ॥३०६०॥

सीसो पुच्छति – कहं असंजयस्स संसट्ठभायणं संजओ सारवेति ?

आचार्याह –

[3]पुयातीणि विमद्दइ, जह वेज्जो आउरस्स भोगत्थी ।
तह वेज्जपडिक्कम्मं, करेंति वसभा वि मोक्खट्ठा ॥३०६१॥ कंठा

---

१ ठवणादित्रिणि द्वाराणि अग्रे व्याख्यातानि गा० ३०६६ । २ गा० ३०५२ । ३ पुगा (पा०) ।

किं चान्यत् –

तेगिच्छिगस्स इच्छा, ऽणुलोमणं जो न कुज्ज सति लाभे ।
अस्संजमस्स भीतो, अलस पमादी च गुरुगा से ॥३०६२॥

आलसेण अण्णतरपमातेण वा जो ण करेति तस्स चउगुरुगा ॥३०६२॥

गिलाणवेयावच्चे इमे कारणा –

लोगविरुद्धं दुपरिच्चयो य कयपडिकियी जिणाणा य ।
अतरंतकारणे ते, तदट्ठते चेव विज्जम्मि ॥३०६३॥

गिलाणस्स जति वेयावच्चं ण कज्जति तो लोगेण गरहियं, लोगुत्तरसंबंधेण य संबंधो दुप्परिच्चयो, कतपडिकतिया य कया भवति । जिणाण य आणा कया भवति । एते अतरंते वेयावच्चकारणा । तदर्थमिति ग्लानार्थं, वैद्यस्य वैयावृत्यकरणे त एव कारणा भवंति ॥३०६३॥

एसेव गमो णियमा, होइ गिलाणे वि मज्जणादीओ ।
सविसेसो कायव्वो, लिंगविवेगेण परिहीणो ॥३०६४॥

गिलाणस्स वि मज्जणाइओ एसेव विधी सविसेसो कायव्वो । नवरं–परलिंगमकर्तव्यमित्यर्थः ॥३०६४॥

इदाणिं संखेवमाह –

को वोच्छिति गेलण्णे, दुविहं अणुयत्तणं निरवसेसं ।
जह जायति सो णिरुओ, तह कुज्जा एस संखेवो ॥३०६५॥

दुविधा अणुयत्तणा – वेज्जे गिलाणे य । शेषं पूर्ववत् ।

इदाणिं वेज्जस्स दाणं दायव्वं । तत्थिमो विधी – पच्छद्धं "अणुसट्ठी – धम्मकहा विज्ज णिमित्ते य अंतो वहिं ।" "अंत" इति स वास्तव्यो वेज्जो, "वहि" रिति आगंतुग ॥३०६५॥

आगंतु पउण जायण, धम्मावण तत्थ कति य दिट्ठंतो ।
पासादे कूवादी, वत्थुकुरुडे तहा ओही ॥३०६६॥

गिलाणे पउणीभूए आगंतुगो जया भत्ति मग्गति तदा अणुसट्ठी से कज्जति, जहा – ण वट्टति जतीण हत्थातो वेयणगं घेत्तुं, मुहा कयाए वहुधम्मो भवति ।

कहालद्धिसंपण्णो वा से धम्मं कहेति । विज्जामंतेण वा वसे कातुं मोयाविज्जति,

निमित्तेण वा आउट्टेउं मिल्लाविज्जति ।

इमो य से दिट्ठंतो कहिज्जति जहा – केण ति कतिएण गंधियावणे रूवगा दिन्ना, भणितं च (मम) मए एतेसिं किंचि भंडजातं दिज्जसि । सो अण्णया तम्मि आवणे मज्जं मग्गति, वणिएण भणितो – मम एयं पण्णं, तं गेण्हसु, णत्थि मे मज्जं । एवं अम्ह वि धम्मावणातो धम्मं गेण्हसु णत्थि णे दविणंजायं ।

तम्मि अणिच्छे "[1]ठवण" त्ति दारं।

सेहेण पव्वयंतेण जं णिगुंजे कहिं च ठवियं तं आणेउं दिज्जति।

तस्सासति ओहिणाणी चोद्दस-दसपुव्वियं वा पुच्छिउं उच्छिन्नसामियं जं कहिं चि पासादे निहणयं, कूवे वा, आदिसद्दातो निद्धमणादिसु, वत्थुकुरुडे जं पडितं, जं वत्थवा निहाणयं।

अहवा – "वत्थुकुरुडं" उव्वसं उस्सन्नवत्थु तं नगरं, तत्थ जं निहाणयं तं घेत्तुं दायव्वं, जोणीपाहुडगपयोगेण वा कातुं दायव्वं ॥३०६६॥

वत्थव्व पउण जायण, धम्मादाणे पुणो अणिच्छंते।
सच्चेव होति जयणा, रहिते पासायमादीया ॥३०६७॥

"रहिए" त्ति पच्छाकडादिएहिं, सेसं तं चेव कंठं ॥३०६७॥

सव्वहा दविणजायस्स अभावे जो उवहिं मग्गति –

उवहिम्मि पडग साडग, संवरणं वा वि अत्थरणगं वा।
दुगभेदादाहिंडण, अणुसट्ठादी परलिंग हंसादी ॥३०६८॥

पडगग्गहणाओ पाउरणं मग्गति। साडगग्गहणातो परिहाणं, जुवलं वा। संवरणग्रहणात् प्रच्छादनपडं णवतगच्छइ वा? अत्थरणग्गहणातो पत्थरणगं तूलिं वा। दुगभेतो संघाडगेण हिंडिउ मग्गित्ता दिज्जति से, संघाडगेण अलब्भंते वंदेण वि हिंडति, सव्वहा अलद्धे अणुसट्ठादी पयुंजंति। से अणुसट्ठिमतिक्कंतेण सलिंगेण य अलब्भंते परलिंगेण उप्पाएउं दिज्जति। हंसादी पूर्ववत् ॥३०६८॥

उवकरणं बितियपदेण ण देज्ज –

बितियपदे कालगते, देसुट्ठाणे व बोहिगादीसु।
असिवादी असतीए य, ववहारपमाण अदसाइं ॥३०६९॥

सो वेज्जो कालगतो गिलाणो वा, देसो वा उव्वसो जातो, बोधिगा मेच्छा, तब्भएण वा दिसोदिसं फुड्डा, आदिसद्दातो परचक्कातिणा असिवं वा जायं, आदिसद्देण दुभिक्खं, रायदुट्टं वा, "असइ" त्ति सव्वहा अलद्धे ववहारं करेंति। ववहारेण वा णिज्जियस्स ण देंति, ववहारेण वा दाविज्जंता पमाणहीणाणि अद्धं (द) साणि य दलयंति। अहं एते चेव सहिणा, णत्थि अण्णाणि ॥३०६९॥

एवं वा ण देज्ज आगंतुगवत्थव्वाण दविणजायं तं मग्गंताण इमो विधी –

कवडगमादी तंबे, रुप्पे पीए तहेव केवडिए।
हिंडण अणुसट्ठादी, पूइयलिंगे तिविहभेदो ॥३०७०॥

कवड्डगा से दिज्जंति, ताम्रमयं वा जं णाणगं ववहरति तं दिज्जति।
जहा दक्खिणावहे कागणीरुप्पमयं,
जहा भिल्लमाले चम्मलातो,
"पीय" त्ति सुवन्नं, जहा पुव्वदेसे दीणारो। केवडिओ यथा तत्रैव केतराता।
संघाडगादिणा हिंडणं, अलद्धे अणुसट्ठाती पयुज्जति।

---

१ गा० ३०५७।

इदाणिं "[1]लिंग" त्ति दारं –

"पूतियलिंगे तिविधे भेदो" त्ति। तम्मि विसए जं तिण्हं लिंगाणं पूतितं तेण हिंडंति पण्णवयंति च। तं च इमं सलिंगं गिहिलिंगं कुलिंगं च ॥३०७०॥

बितियपए कालगए, देसुट्ठाणेसु बोहिगादीसु।
असिवादी असती य, ववहारऽहिरण्णगा-समणा ॥३०७१॥

इदाणिं "[2]कल्लाणे" त्ति दारं –

पउणम्मि य पच्छित्तं, दिज्जति कल्लाणगं दुवेण्हं पि।
वूढे पायच्छित्ते, विसंति ते मंडलिं दोवि ॥३०७२॥

अणुयत्तणा तु एसा, दव्वे वेज्जे य वण्णिया दुविहा।
एत्तो चालणदारं, वोच्छं संकामणं वुभए ॥३०७३॥

जाहे गिलाणो पउणो जातो ताहे से पंच कल्लाणयं दिज्जति। पडियरगाण एक्ककल्लाणयं। आहा-संतरेण वा दुण्ह वि पंच कल्लाणगं। वूढे पच्छित्ते ताहे दो वि मंडले पविसंति ॥३०७३॥ "अणुयत्तण" त्ति मूलदारं गतं।

इयाणिं "[3]चालणे" त्ति दारं –

[4]वेज्जस्स व दव्वस्स व, अट्ठा इच्छंति होति उक्खेवो।
पंथो य पुव्वदिट्ठो, आरक्खियपुव्वभणितो य ॥३०७४॥

पुव्वद्धस्स इमं वक्खाणं –

चतुपाया तेइच्छा, इह वेज्जा णत्थि ण वि य दव्वाइं।
अमुगत्थ अत्थि दोण्णि वि, जति इच्छसि तत्थ वच्चामो ॥३०७५॥

तिगिच्छा चउप्पया भवति। तुमं गिलाणो, अम्हे य पडियरगा अत्थि। इह वेज्जो ओसहदव्वाइं च णत्थि। अमुयत्थ गामे णगरे वा दो वि अत्थि। गिलाणो भणति – जइ तुमं इच्छसि तो तत्थ वच्चामो ॥३०७५॥

गिलाणो भणति –

किं काहिति मे वेज्जो, भत्ताइअकारयं इहं मज्झं।
तुब्भे वि किलेसेमी, अमुगत्थ ममं हरह खिप्पं ॥३०७६॥

इहं वा अण्णत्थ वा जत्थ तुब्भेहिं अभिप्पेयंति तत्थ मे किं वेज्जो काहिति भत्तादिएसु अकारगेसु, तम्हा मा तुब्भे वि किलेसेमि, तो मे अमुगं गामं णगरं वा णेह। तत्थ मे भत्ताइकारगं भविस्सति। एवं भणंतो सो चालितो ॥३०७६॥

---

१ गा० ३०५७। २ गा० ३०.७। ३ गा० २९७२। ४ गा० ३०७९ चूर्णौ व्याख्या।

इमेहिं वा कारणेहिं –

साणुप्पगभिक्खट्ठा, खीणा दुद्धाइगाण वा अट्ठा ।
अब्भिंतरेरा पुण, गोरस सिंभुदय तित्तट्ठा ॥३०७७॥

णागरगिलाणं साणुप्पगभिक्खट्ठा गामं णयति, णगरे वा खीणा दुद्धादिया दव्वा ण लब्भंतीत्यर्थः । 'अब्भिंतर" त्ति णागरा एतेहिं कारणेहिं गामं गिलाणं णयंति । इयरहा पुण गामेव्वयगिलाणस्स गोरसातिएहिं दव्वेहिं सिंभुदतो जातो ताहे उसूरे भिक्खट्ठा तित्त-कटु-कसायदव्वट्ठा य णगरं णयंति ॥३०७७॥

अहवा णागरगिलाणं इमेण कारणेण गामं णयंति –

परिहीणं तं दव्वं, चमढिज्जंतं तु अण्णमण्णेहिं ।
कालातिक्कंतेण य, वाही परिवड्ढितो तस्स ॥३०७८॥

णगरे अण्णोण्णगिलाणसंघाडएहिं ठवणकुला चमढिता, ताहे जं गिलाणपायोग्गं दव्वं परिहीणं तं ण लब्भतेत्यर्थः ।

अहवा – वेज्जेण तस्स साणुप्पए भत्तमाइट्ठं, तं च ण लब्भति, अतो तस्स णगरे कालातिक्कमेण वाही सुट्ठुतरं परिवड्ढितो ॥३०७८॥

एवमाति कारणे जाणित्ता अण्णोण्णं भणंति –

उक्खिप्पत्तगिलाणो, अण्णं गामं वयं तु णेहामो ।
णेऊण अण्णगामं, सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥३०७९॥

णगरातो अण्णं णगरं, णगरातो अण्णं गामं, गामाओ वा णगरं, गामाओ वा अण्णं गामं । इह चतुर्थविकल्पो गृहीतः । पच्छद्धं कंठं । जइ रातीए गंतुकामा ताहे "[1]पंथे पुव्वदिट्ठो" कीरइ जहा रातो गच्छंता ण मुज्झंति । "आरक्खि" डंडवासिओ भण्णति – अम्हे पए गिलाणं णेहामो, तुमे चोरचारियं ति वा णाऊणं ण घेत्तव्वा । जं सो भण्णति तं कायव्वं ॥३०७९॥

इयाणिं "[2]संकमण" त्ति दारं –

सो णिज्जति गिलाणो, अंतरसम्मेलणाए संथोभो ।
नेऊण अण्णगामं, सव्वपमत्तेण कायव्वं ॥३०८०॥

जं दिसं जं च गामं सो गिलाणो णिज्जति ततो य दिसातो ततो य गामातो अण्णो गिलाणो णगरं आणिज्जति । अंतरे ते दो वि मिलिता परोप्परं वंदणं काउं णिराबाहं पुच्छंति । गिलाण संथोभं करेंति । एवं संकामणे "[3]दुहओ" त्ति वुत्तं भवति, णागरा गामगिलाणं गेण्हंति, गामेयगा वि णागरगिलाणं ॥३०८०॥

इमं वोत्तुं –

जारिस दव्वे इच्छह, अम्हे मोत्तूण ते ण लब्भिहह ।
इयरे वि भणंतेवं, णियत्तिमो णेह अतरंते ॥३०८१॥

---

१ गा० ३०७४ । २ गा० २९७२ । ३ गा० २९७२ ।

णागरेहिं गामेयया भणिया जारिसे दव्वे तित्त-कडु-कसायादिए इच्छह तारिसे दव्वे अम्हे मोत्तुं तुब्भे ण लभित्था। इयरे वि गामेयगा णागरे भणंति। तुब्भे अम्हेहिं विणा दधि-घय-खीराइं ण लभिच्छा। ताहे ते परोप्परं बेति – जइ एवं तो तुब्भे इमं णेह, अम्हे वि तुब्भच्चयं णेमो। एवं गिलाणाणुमतेण संछोहो ॥३०८१॥ एवं तेहिं णेतुं [1]परिगिलाणं सव्वपयत्तेण कायव्वं, णो णिद्धम्मयाए एवं चिंतेयव्वं वा –

देवा हु णे पसण्णा, जं मुक्का तस्स णे कयंतस्स।
सो हु अतितिक्खरोसो, अहियं वा वारणासीलो ॥३०८२॥

'हु' शब्दो अवधारणार्थः। "णे" आत्मनिर्देशः। निष्पन्नस्य वस्तुनः कृतस्यान्तकारित्वात् कृतान्तः कृतघ्नत्वात्तत्तुल्येत्यर्थः,। "अतितिक्खरोषः" दृढरोषः पुनः पुनः रोपकारी च, अधिकं च व्यापारे णियुंजति – कृताकृतानि पुनः पुनः कारयतीत्यर्थः ॥३०८२॥

अहवा – णिद्धम्मयाए इमं भाणिऊण ण करेति से वेयावच्चं।

तेणेव साइया मो, एयस्स वि जीवियम्मि संदेहो।
पउणो वि ण एसऽम्हं, ते वि करेज्जा ण व करेज्जा ॥३०८३॥

गिलाणवेयावच्चे तेणं चिय अतीव सातिता, इयाणिं ण सक्केमो करेतुं।

अहवा – एस जीवियसंदेहो किं णिरत्थयं किलिस्सामो। पउणो वि एस अम्हं ण भवति। किं करेमो। ते वि अम्हंतणगिलाणस्स करेज्ज वा ण वा। अतो अम्हे वि ण करेमो ॥३०८३॥

एवमादिएहिं णिद्धम्मकारणेहिं –

जो उ उवेहं कुज्जा, आयरिओ केणती पमाएणं।
आरोवणा तु तस्सा, कायव्वा पुव्वणिद्दिट्ठा ॥३०८४॥

पुव्वणिद्दिट्ठा चउगुरुगा इत्यर्थः।

अहवा – लुद्धदारे दव्वादिया आरोवणा पुव्वणिद्दिट्ठा। इहं पि उवेहाए सच्चेव ॥३०८४॥

यद्यपि कृतो निर्देशः तथापि विशेषज्ञापनार्थं पुनरुच्यते –

उवेहऽपत्तियपरितावण महय मुच्छ किच्छ कालगते।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३०८५॥

गिलाणे उवेहं जो करेति तस्स चतुगुरुगा। उवेहाए कताए गिलाणस्स अप्पत्तियं जातं चउगुरुगा। उवेहकरणे जति गिलाणो अणागाढं परिताविज्जति तो चउलहुगा, गाढपरितावणे चउगुरुगा इत्यर्थः। महत इति महता दुक्खं भवति तो छल्लहुगा। एयं चेव दुक्खा दुक्खं भण्णति। "मुच्छ" त्ति मूर्च्छा उत्पद्यते तो छग्गुरुगा। यदि कृच्छ्रपाणो भवति तो छेदो। जति कृच्छ्रसासो मूलं। मारणंतियसमुग्घातेण समोहते अणवट्ठो भवति। कालगए पारंचिओ भवति। एयं सव्वं उवेहं करेंतस्स पच्छित्तं वुत्तं ॥३०८५॥

उवेहोभासण परितावण महत मुच्छ किच्छ कालगते।
चत्तारि छच लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३०८६॥

---

१ वेयावच्चं।

उवेहाए ओभासेंतस्स य दोसु वि चउलहुगा। उवेहाए कताए सो गिलाणो सयमेव गंतुं गिही ओभासइ। तस्स य सीयवायातवेहिं परिसमेण य परितावणाती ठाणा, तं चेव पच्छित्तं ॥३०८६॥

उवेहोभासण ठवणा, परितावण महत मुच्छ किच्छ कालगते।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३०८७॥

ठवणाए चउगुरुगा सो गिलाणो उवेहाए कताए ओभासिउं ओसहं भत्तपाणं वा ठवेति, "ण सक्केमहं दिणे दिणे हिंडिउं", तस्स तेण सीतलेण परितावणाती ठाणे तं चेव पच्छित्तं ॥३०८७॥

उवेहोभासण वारण, परितावण महत मुच्छ किच्छ कालगए।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३०८८॥

वारणे चउगुरुगा चेव गिलाणं वारेति मा ओभाससु, मा वा ठावेसु। गिही वा वारेति – मा देह ओभासेंतस्स, एवं वारेति तस्स परितावणाई ठाणा, तं चेव पच्छित्तं ॥३०८८॥

उवेहोभासणकरणे, परितावण महत मुच्छ किच्छ कालगए।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३०८९॥

सयं करणे चउगुरुगा। गिहत्थेहिं वा कारवेति एत्थ वि चतुगुरुगा। सयंकरेंतस्स अयाणगेहिं वा करेंतेहिं परितावणाती ठाणा उप्पज्जंति, तं चेव पच्छित्तं भवति ॥३०८९॥

वेहाणस ओहाणे, सलिंगपडिसेवणे णिवारेंते।
गुरुगा य णिवारेंते, चरिमं मूलं च जं जत्थ ॥३०९०॥

अप्पडिजग्गितो गिलाणो जति णिव्वेएण वेहाणसं करेति तो अपडिजग्गंतयाण चरिमं। अह ओहावति तो मूलं। सलिंगट्ठितो जति अकप्पियं पडिसेवति तो चतुगुरुगा। सलिंगट्ठितं अकप्पियं पडिसेवंतं जति वारेति तो चतुगुरुगा। जं "जत्थ" त्ति परितावणादियं पच्छित्तं तं दट्ठव्वं ॥३०९०॥

संविग्गा गीयत्था, असंविग्गा खलु तहेव गीयत्था।
संविग्गमसंविग्गा, णवरं पुण ते अगीयत्था ॥३०९१॥

संविग्गसंजतीओ, गीयत्था खलु तहेवऽगीयत्था।
गीयत्थमगीयत्था, णवरं पुण ता असंविग्गा ॥३०९२॥

संजता वि – संविग्गा गीयत्था। असंविग्गा गीयत्था।

संविग्गा अगीयत्था, असंविग्गा अगीयत्था।

संजतीओ वि – संविग्गा गीयत्थीओ, असंविग्गा गीयत्थीओ।

संविग्गा अगीयत्थीओ, असंविग्गा अगीयत्थीओ य ॥३०९२॥

एतेसु जति तं गिलाणं छड्डेति तो जहा संखेण इमं पच्छित्तं –

चउरो लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहुय गुरुगा य।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥३०९३॥ कंठा

अहवा – इमेसु छड्डति –

संविग्ग णितियवासी, कुसील ओसण्ण तह य पासत्था ।
संसत्ता वेंटा वा, अह छंदा चेव अट्ठमगा ॥३०६४॥

संविग्गा १ णितिया २ कुसीला ३ ओसण्णा ४ पासत्था ५ संसत्ता ६ वेंटा ७ अहाछंदा ८ ॥३०६४॥

एतेसु अट्ठसु जहासंखं इमं पच्छित्तं –

चउरो लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहुग गुरुगा य ।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥३०६५॥

अहवा – इमेसु छड्डेति –

संविग्गो सेज्जायर, सावग तह दंसणे अहाभद्दे ।
दाणे सड्ढी परतित्थगा य परतित्थिगी चेव ॥३०६६॥

संविग्गा संजता, सेज्जातरेसु वा गिहियाणुव्वयसावगेसु वा, अविरयसम्मदिट्ठीसु वा, अहाभद्दएसु वा परतित्थियपुरिसेसु वा, परतित्थियइत्थीसु वा ॥३०६६॥

एतेसु जहासंखं छड्डेंतस्स इमं पच्छित्तं –

चउरो लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहुग गुरुगा य ।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥३०६७॥

खेत्तओ छड्डेंतस्स इमं पच्छित्तं भण्णइ –

उवस्सग णिवेसण, साही गाममज्झे य गामदारे य ।
उज्जाणे सीमाए, सीममतिक्कामइत्ताणं ॥३०६८॥

उडुवासासु खेत्तसंकमणकाले उवस्सगे चेव छड्डेउं गच्छति ।

णिप्फेडिय उवस्सगाओ णिवेसणे छड्डेति ।

णिवेसणातो णिप्फेडिया साहीए छड्डेति ।

गममज्झं जा णेउं छड्डेति ।

गामदारे जा णेउं छड्डेति ।

उज्जाणं जा णेउं छड्डेति ।

गामसीमंते छड्डेति ।

सग्गामसीमं अतिक्कमेउं परग्गामसीमाए छड्डेति ॥३०६८॥

एतेसु जहासंखं इमं पच्छित्तं –

चत्तारि छच्च लहु गुरु, उवस्सगा जाव सीमतिक्कंते ।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥३०६९॥

जम्हा एयं पच्छित्तं आणादिया य दोसा भवंति तम्हा ण छड्डेयव्वो ॥३०९९॥

इमं कालप्पमाणं अवस्सं रक्खियव्वो –

छम्मासे आयरियो, गिलाण परियट्टती पयत्तेणं ।
जाहे ण संथरेज्जा, कुलस्स उ णिवेयणं कुज्जा ॥३१००॥

जेण पव्वावितो, जस्स वा उवसंपण्णो सो आयरिओ सुत्तत्थपोरिसीओ वि मोत्तुं छम्मासं सव्वपयत्तेणं गिलाणं परियट्टति । अण्णाहिं गणचिंताहिं असंथरंतो कुलसमवायं दाउं तस्स णिवेएति – समर्पयतीत्यर्थः ॥३१००॥

संवच्छरा तिन्नि उ, कुलं परियट्टती पयत्तेणं ।
जाहे ण संथरेज्जा, गणस्स उ निवेयणं कुज्जा ॥३१०१॥

कुलं वारग्गहणविन्यासेन एवमाचार्यमभ्यर्थ्य वारगेण वा योग्यभक्तपानकेन औषधगणेन च त्रिवर्ष सर्वप्रयत्नेन संरक्षतीत्यर्थः । परतो असंथरंतो गणस्यार्पयतीत्यर्थः ॥३१०१॥

संवच्छरं गणो वा, गिलाणं सारक्खती पयत्तेणं ।
जाहे ण संथरेज्जा, संघस्स णिवेयणं कुज्जा ॥३१०२॥

कंठा । परतो गणो संघस्स णिवेदयति, सो संघो जावज्जीवं करेति ॥३१०२॥

उक्तार्थस्पर्शनगाथा –

छम्मासा आयरिओ, कुलं पि संवच्छराणि तिण्णि भवे ।
संवच्छरं गणो वी, जावज्जीवाइ संघो वि ॥३१०३॥ कंठा

आगाढे कारणजाते उप्पण्णे गिलाणस्स वेयावच्चं ण करेज्जा । छड्डेज्ज वा गिलाणं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
एएहिं कारणेहिं, अहवा वि कुल गणे संघे ॥३१०४॥

असिवे उप्पण्णे, ओमोयरियाए वा, रायदुट्ठे य जाते, सरीर तेणगभए वा जाते, सव्वो वा गच्छो गिलाणो जाओ, एएहिं कारणेहिं अकरेंतो सुद्धो, कुल-गण-संघ-समप्पणे वा कते अकरेंतो सुद्धो ।

असिवाति कारणेसु इमा जयणा – असिवेण गच्छंतो गिलाणं वहिउं असमत्थो उवकरणं उज्झति, तहावि असमत्थो अण्णेसि पडिबंधट्ठिताण अप्पेंति, सेज्जातरातीयाण वा, थलीसु वा सण्णिक्खिवति, सव्वाभावे असमत्था य उज्झंति गिलाणं । एवं ओमोदरियादिसु वि । रायदुट्ठे जइ एक्कस्स पदुट्ठो तो अण्णेसिं अप्पेंति । अह सव्वेसिं पदुट्ठो तो सावगादिसु णिक्खिविउं वयंति ॥३१०४॥

जे भिक्खू गिलाणवेयावच्चे अब्भुट्ठियस्स सएण लाभेण असंथरमाणस्स जो तस्स न पडितप्पइ, ण पडितप्पंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

भिक्खू गिलाणो य पुव्ववण्णिया । जो साहू गिलाणस्स वेयावच्चकरणे अब्भुट्ठितो सो जाव गिलाणस्स ओसढं पाउग्गं वा भत्तपाणं वा उप्पाएति सरीरगप्पतिकम्मं वा करेति ताव वेलातिक्कमो, वेलातिक्कमे अडंतो

णो फव्वति। एवं तस्स असंथरे अण्णो जो ण पडियप्पति भत्तपाणादिणा तस्स चउगुरुगा। परितावणाती-निप्फण्णं च। गिलाणो य सो य परिचत्तो भवति। तम्हा तस्स पडितप्पियव्वं।

सीसो पुच्छति – गिलाणवेयावच्चे केरिसो साहू णियुज्जति ?

आचार्याह –

खंतिखमं मद्दवियं, असढमलोलं च लद्धिसंपण्णं।
दक्खं सुभरमसुविरं, हियग्गाहिं अपरितंतं ॥३१०५॥

कोहणिग्गहो खंति, अक्कोसमाणस्स वि जस्स खमाकरणे सामत्थमत्थि सो खंतीए खमो भण्णति।

अहवा – खंतीक्षमः अ(आ)वारेत्यर्थः। माणणिग्गहकारी मद्दविओ। मायाणिग्गहकारी असढो। इंदिय-विसयणिग्गहकारी अलोलो, उक्कोसं वा दट्ठुं जो एसणं ण पेल्लेति सो वा अलोलो अलुब्धेत्यर्थः। लद्धिसंपण्णो जहा थयवन्थ(ल्भ)[1]समित्ता। गिलाणातियं सिग्घं करेति दक्खे। अप्पेण अं।पंतेहिं वा जावेति त्ति वा सुभरो-कुल्वासनह इत्यर्थः। असुविरो अणिद्दालू। गिलाणस्स जो चित्तमणुयत्तति अपत्थं च ण करेति सो हियग्गाहि, गिलाणस्स वा अगुतप्पितो जो सुचिरं पि गिलाणस्स करेंतो जो ण भज्जति सो अपरितंतो ॥३१०५॥

सुत्तत्थ अपडिबद्धं, णिज्जरपेहिं जिइंदियं दंतं।
कोउहलविप्पमुक्कं, अणाणुकित्तिं सउच्छाहं ॥३१०६॥

जो य सुत्तत्थेसु अपडिबद्धो – गृहीतसूत्रार्थ इत्यर्थः। णिज्जरापेही णो कयपडिकित्तीए करेति, जितिंदितो जो इट्ठाणिट्ठेहिं विसएहिं रागदोसे ण जाति, सुकर-दुक्करेसु महप्पकारणेसु य जो अविकारेण भरं उव्वहति सो दंतो, इंदियणोइंदिएसु वा दंतो, णडादि-कोउएसु य विप्पमुक्को, काउं जो थिरत्तणेण णो विकत्थति – "को अण्णो एवं काउं समत्थो" त्ति, "तुज्झ वा एरिसं तारिसं मए कयं" ति, जो एवं ण कथयति सो अणाणुकित्ती, अणालस्सो सउत्साहो।

अहवा – अलब्भमाणे वि जो अविसण्णो मग्गति सो स-उच्छाहो ॥३१०६॥

आगाढमणागाढे, सद्दहगणिसेवगं च संठाणे।
आउरवेयावच्चे, एरिसयं तु णिउंजेज्जा ॥३१०७॥

आगाढे रोगायंके अणागाढे वा, आगाढे खिप्पं करणं अणागाढे कमकरणं जो करेति।

अहवा – आगाढजोगिणो अणागाढजोगिणो वा जहा किरिया कायव्वा, जा वा जयणा एवं सव्वं जो जाणति, सो य उस्सग्गाववाए सद्दहति, ते य जो सट्ठाणे णिसेवति, उस्सग्गे उस्सग्गं, अववाए अववायं।

अहवा – सट्ठाणं आयरियाती, तेसिं जं जोग्गं तं तस्स उप्पाएति देति य। एरिसो गिलाणवेयावच्चे णिउंजति ॥३१०७॥

एयगुणविप्पहूणं, वेयावच्चम्मि जो उ ठावेज्जा।
आयरिओ गिलाणस्सा, सो पावति आणमादीणि ॥३१०८॥

वण्णितगुणविवरीतं जो गिलाणवेयावच्चे ठवेति सो आयरिओ आणाती दोसे पावति ॥३१०८॥

---

[1] मंदकः पक्वान्नं वा।

एतेसि परूवणता, तप्पडिपक्खे य पेसवेंतस्स ।
पच्छित्तविभासणता, विराहणा चेव जा जत्थ ॥३१०९॥

एतेसिं खंतिमातियाणं पयाणं यथार्थं प्ररूपणा कायव्वा । तप्पडिपक्खा खंतियखमस्स कोहिणो, मद्दवियस्स माणिणो, असढस्स माई, एवमादियाण पच्छित्तविभासा कायव्वा – व्याख्या इत्यर्थः । अजोग्गेहि य वेयावच्चे णिउज्जंतेहिं जा गिलाणस्स विराहणा सा य वत्तव्व पडिपक्खदोसला ॥३१०९॥

इमं पच्छित्तं –

गव्विय कोहे विसएसु, दोसु लहुगा उ माइणो गुरुगो ।
लोभिंदियाण रागे, चउगुरु सेसेसु लहु भयणा ॥३११०॥

माणिस्स कोहिणो, अजिइंदियस्स विसएसु, दोसु कारिणो चउलहुगा । मायाविणो मासगुरुं । लोभिस्स अजिइंदियस्स य राग-कारिणो चउगुरुगा ।

"सेसेसु" त्ति अलद्धिसंपण्णो अदक्खो दुब्भरो सुविरो हियपडिकूलो परितंतो सुत्तत्थपडिबद्धो अणिज्जरपेही अदंतो कोतूहली अप्पप्पसंसी अणुच्छाही आगाढाणागाढेसु विवरीयकारी असद्दहणगो परट्ठाणा णिसेवी एतेसु लहुमासो ।

"भयण" त्ति एते सव्वे पदा मासलहुपच्छित्तेण भइयव्वा – योजयितव्या इत्यर्थः ।

अहवा – "भयण" त्ति आतेसंतरेण वा चउलहुगा ।

अहवा – "भयण" त्ति अंतराइयकम्मोदएण अलद्धी भवति सो य सुद्धो, जो य पुण सलद्धी अप्पाणं "अलद्धिमं" ति दंसेति तो असामायारिणिप्फण्णं मासलहुं । एवं सेसेसु वि उवउज्ज वत्तव्वं ॥३११०॥

एवं ता पच्छित्तं, तेसिं जो पुण ठवेज्ज ते उ गणे ।
आयरियगिलाणट्ठा, गुरुगा सेसाण तिविहं तु ॥३१११॥

एवं पच्छित्तं पडिपक्खे जे कसाइयदोसा ता तेसिं भणियं । जो पुणो आयरिओ एते गणे गिलाणाति-वेयावच्चकरणे ठवेति तस्स चउगुरुगा । सेसा जइ ठवेंति तेसिं इमं तिविधं पच्छित्तं – उवज्झातो जइ ठवेति तो चउलहुं, वसभस्स मासगुरुं, भिक्खुस्स मासलहुं ।

अहवा – उवज्झायस्स चउलहुं, गीयत्थस्स भिक्खुस्स मासगुरुं, अगीयत्थस्स मासलहुं । एवं वा तिविधं – अखंतिखमातिएसु कलहातिकरेंतेसु गिलाणस्स गाढाति परितावणादिया दोसा ॥३१११॥

इमे य भवंति –

इहलोइयाण परलोइयाण लद्धीण फेडितो होति ।
जह आउगपरिहीणा, देवा लवसत्तमा चेव ॥३११२॥

इह लोइया आमोसहिखेलोसहिमादी, परलोइया सग्गमोक्खा, तेसिं फेडितो भवति । जहा आउगे अपहुच्चंते व लवसत्तमा देवा जाता । एवं गिलाणो वि असमाहीए अट्टज्झाणी अणाराहगो भवति । तिरियाइ-कुगतीसु य गच्छति, ण वा इहलोए आमोसहिमातीओ लद्धीओ उप्पाएति । जम्हा एते दोसा तम्हा वेयावच्चकरो ण ठवेयव्वो ॥३११२॥

एयगुणसमग्गस्स तु, असतीए ठवेज्ज अप्पदोसतरं ।
वेयालणा उ इत्थं, गुणदोसाणं बहुविगप्पा ॥३११३॥

वण्णियगुणसमग्गाभावे अप्पदोसतरं ठवेति, अदोसं पच्छित्ताणुलोमओ जाणेज्जा । दोसवियालणेण य बहु विकप्पा उप्पज्जंति । जहा – कोहे माणो अत्थि वा ण वा । माणे पुण कोहो णियमा अत्थि । तम्हा कोहीओ माणी बहुदोसतरो । तम्हा कोहिं ठवेज्जा णो माणिं । एवं सव्वपदेसु वियालणा कायव्वा ॥३११३॥

इयाणिं सुत्तत्थो –

जे भिक्खू गिलाणस्सा, वेयवच्चेण वावडं भिक्खुं ।
लाभेणऽप्पणएणं, असंथरं तं ण पडितप्पे ॥३११४ ॥

"वावडो" व्यापृतः, अक्षणिकः, तस्य भिक्खुणो अण्णो भिक्खू जो ण पडितप्पति तस्स चउगुरुं परितावणातिणिप्फण्णं च ॥३११४॥

इमं च पावति –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराहणं तहा दुविहं ।
पावति जम्हा तेणं, तं पडितप्पे पयत्तेणं ॥३११५॥

तम्हा तस्स पडितप्पियव्वं सव्व पयत्तेण ॥३११५॥

कारणे ण पडितप्पिज्जा वि –

बितियपदं अणवट्ठो, परिहारतवं तहेव य वहंतो ।
अत्तट्ठियलाभी वा, सव्वहा वा अलंभंते ॥३११६॥

अणवट्ठतवं जो वहति साहू सो ण पडितप्पेज्जा । अणवत्थो वा कारणे गिलाणवेयावच्चकरो कतो तस्स इयरे णो पडितप्पति, एवं परिहारिओ वि वत्तव्वो, अत्ताहिट्ठियजोगी अत्तलाभिओ अण्णस्स संतियलाभं णो भुंजति त्ति अतो अपडितप्पेज्जा, तहावि अलब्भंते अपडितप्पमाणो वि सुद्धो ॥३११६॥

जे भिक्खू गिलाणवेयावच्चे अब्भुट्ठिए गिलाणपाउग्गे दव्वजाए अलब्भमाणे जो तं ण पडियाइक्खइ, ण पडियाइक्खंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

भिक्खू गिलाणो य पूर्ववत्, अब्भुट्ठितो वेयावच्चकरणोद्यतः, पाउग्गं ओसहं भत्तं पाणं वा, तम्मि अलब्भंते जति सो वेयावच्चकरो अण्णेसिं साहूणं ण कहेति आयरियस्स वा, तो चउगुरुगं परितावणदि-णिप्फण्णं च ।

आउरपाउग्गम्मी, दव्वे अलब्भंते वावडे तस्स ।
जो भिक्खू णातिक्खति, सो पावति आणमादीणि ॥३११७॥

वावडो व्यापृतः नियुक्तः, जति अण्णेसिं ण कहेति तो आणादिणो दोसा ॥३११७॥

"दव्वजाए" त्ति अस्य सूत्रपदस्य – व्याख्या –

जायग्गहणे फासु, रोगे वा जस्स जं च पाउग्गं ।
तं पत्थ-भोयणं वा, ओसह-संथार-वत्थादी ॥३११८॥ कंठा

अलब्भमाणे अण्णेसिं मायूणं अकहिज्जंते इमे दोसा –

परितावमहादुक्खे, मुच्छामुच्छे य किच्छपाणे य ।
किच्छुस्सासे य तहा, समोहए चेव कालगते ॥३११९॥

परितावणा दुविधा – अणागाढागाढा, पासे छज्जयाए गाहाए चेव गहिता ॥३११९॥

एसु अट्ठसु पदेसु जहासंखं इमं पच्छित्तं –

चउरो लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहुग गुरुगा य ।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥३१२०॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा आलोएज्जा, संभोइय असति अण्णसंभोए ।
जइऊण य ओसण्णे, सच्चेव उ लद्धिहाणिवरा ॥३१२१॥

आलोयणं णाम अण्णेसिं आख्यानं, तं च आख्यानं सगच्छे, तेसिमसति अण्णगच्छे संभोतियाणं, तेसिमसति अण्णसंभोतियाणं, तेसिमसति पणगपरिहाणीए जतितुं जाहे मासलहुं पत्तो ताहे ओसण्णाणं कहेंति, जइ एवं ण करेति तो सच्चेव इहलोइय-परलोइयलद्धिहाणीदोसा भवति । "इहर" त्ति अणाख्यायंतस्येवेत्यर्थः ॥३१२१॥

भवे कारणं जेण अण्णेसिं ण कहेज्जा वि –

वितियपदं दोच्चे वा, अण्णग्गामे व संभमेगतरे ।
तस्स व अपत्थदव्वे, जायंते वा अकालम्मि ॥३१२२॥

ते दो वि चेव जणा – एगो गिलाणो एगो पडियरगो । सो पडियरगो अण्णाभावे कस्स कहेउ । अण्णगामे वा अण्णे साहुणो कस्स कहेउ । परिचरगो उदगागणि-हत्थि-सीह-बोहिगादी एतेसिं संभमाणं एगतरे वट्टमाणे अण्णं परामूतेसु दिसोदिसं फुडितेसु कस्स साहउ । जं वा दव्वं लब्भति तं गिलाणस्स अपत्थं तेण अण्णेसिं ण कहेंति, गिलाणो वा अपत्थं दव्वं मग्गति तेण वा ण कहेंति, अण्णेसिं अकाले वा जायंते ण साधयति ।

अहवा – गरहियविगतीओ मग्गति ते य अण्णे अपरिणया ताहे ण साधति, मा विप्परिणामिस्संति । एवमादिएहिं कारणेहिं असाहेंतो सुद्धो ॥३१२२॥

जे भिक्खू पढमपाउसम्मि गामाणुगामं दूइज्जति,
दूइज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू वासावासं पज्जोसवियंसि दूइज्जति, दूइज्जंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४१॥

"जे" त्ति णिद्देसे, भिक्खू पुव्ववण्णितो । पाउसो आसाढो सावणो य दो मासा । तत्थ आसाढो पढमपाउसो भण्णति ।

अहवा – छण्हं उतूणं जेण पढमपाउसो वण्णिज्जति तेण पढमपाउसो भण्णति । तत्थ जो गामाणुगामं दूइज्जति, अनु पश्चाद्भावे, दोसु सिसिर-गिम्हेसु रीतिज्जति दूइज्जति, दोसु वा पाएसु रीइज्जति दूइज्जति तस्स चउगुरुं । आणातिणो य दोसा भवंति । एस सुत्तत्थो ।

इयाणिं णिज्जुत्ति –

विहिसुत्ते जो उ गमो, पढमुद्देसम्मि आदिओ सुत्ते ।
सो चेव णिरवसेसो, दसमुद्देसम्मि वासासु ॥३१२३॥

विधिसुत्ते सव्वो चेव आयारो, इह तु विसेसेण आचारांगस्य वितियसुयक्खंधे ततियज्झयणं इरिया भण्णति, तस्स वि पढमुद्देसे तस्स वि आदिसुत्तेसु जो विधी भणितो सो चेव णिरवसेसो णिसीहदसमुद्देसे पढम-पाउससुत्ते विधी वत्तव्वो ।

सो य इमो –

अब्भुवगते खलु वासावासे अभिप्पवुट्ठे इमे पाणा अभिसंभूता बहवे बीया अहुणाभिण्णा अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया जाव ससंताणगा अणभिक्कंता पंथा नो विन्नाया मग्गा सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूतिज्जेज्जा तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा । (आचा० श्रु० २, अ० ३, सू० १११) ॥३१२३॥

तम्मि य पढमपाउसम्मि विहरंतस्स इमं पच्छित्तं –

वासावासविहारे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाया ।
आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमाताए ॥३१२४॥

वास इति वर्षाकालः, द्वितीयवासग्रहणात् वर्षमाने जो विहरति तस्स चउरो मासा अणुग्घाया भवंति । आणादिणो य दोसा, संजमायविराहणा य भवति ।

अधवा – वासा इति वर्षाकालः, द्वितीयवासग्रहणात् निवसनं, तस्मिन् यो विहरति । शेषं गतार्थं ॥३१२४॥

इमा संजमविराहणा –

छक्कायाण विराहण, आवडणं विसम-खाणु-कंटेसु ।
वुज्झण अभिहण-रुक्खो-ल्लसावते तेण उवचरते ॥३१२५॥

"छकायाण विराहण" त्ति अस्य व्याख्या –

अक्खुण्णेसु पहेसु, पुढवी उदगं च होति दुविधं तु ।
उल्लपयावण अगणी, इहरा पणओ हरित कुंथू ॥३१२६॥

अक्खुण्णा अमर्दिताः पंथानः तेसु विहरंतो पुढवीकायं विराहेति, उदगं च दुविधं – वासुदगं भोमुदगं च विराहेति, उल्लुवहिं जइ अगणीए पयावेति तो अगणिविराहणा, यत्राग्निस्तत्र वायोः सम्भवः, अपयावेंतस्स आयविराहणा । इहरा अपयावेंतस्स वा उल्ली समुच्छति तं विराहेति, हरियं च, एवं वणस्सतिविराहणा-संभवो, कुंथुमादिया य बहू तसा पाणा विराहेति । एसा संजमविराहणा भणिता ।

इमा आयविराहणा – वरिसे उल्लणभया रुक्खस्स अहो ठायति, सीरेण आवडइ वडसालमाइएसु, विसमे वा पडइ, पाएण वा खाणुए अप्फडइ, कंटगेसु वा विज्झति, उदगवाहेण वा वुज्झइ, तडिभित्त-रुक्ख-विज्जु-माइएसु अभिहण्णइ, उलंतो वा रुक्खमुवल्लिअंतो सावतेण खज्जति, उल्लुवहिंणा वा अजीरंते आयविराहणा । अवहंतेसु वा पंथेसु तेणगा दुविहा भवंति, अकाले वा विहरंतो उवचरगो त्ति काउं घिप्पइ ॥३१२६॥

इमेहिं कारणेहिं पाउसवासासु रीएज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
आबाहादीएसु तु, पंचसु ठाणेसु रीएज्जा ॥३१२७॥

असिवे· उप्पण्णे गच्छेज्ज, परपक्खोमोदरियाए असंथरंतो गच्छति, रायदुट्ठे विराहणभया गच्छति, बोहिग तेणभए हरणभया गच्छति. अण्णत्थ गिलाणो तप्पडियरणट्ठाए गच्छति । "आबाहातिएसु तु" तु शब्दो अवधारणार्थे, एते चेव असिवाती पंचट्ठाणा इत्यर्थः ।

जत्थ पुणं एवं पढिज्जति – "आबाहातिएसु व" तत्थ आबाहादिता इमे पंचट्ठाणा – १ आबाहं, २ दुभिक्खं, ३ भयं, ४ दओघं, ५ परिभवति वा कोति । सरीरवज्जा पीडा आबाहं, दुब्भिक्खभया पुव्वुत्ता, दओवेण वसही गामो वा तत्थ वूढो, दंडमाती पडिणीतो, कोति परिभवणं तालणं वा करेज्ज ॥३१२७॥

एवं तु पाउसम्मी, भणिया वासासु णवरि चउलहुगो ।
ते चेव तत्थ दोसा, वितियपदं तं चिमं चन्नं ॥३१२८॥

वासासु वि एवं चेव, णवरि चउलहुअं पच्छित्तं । वासासु विहरणे वितियपयं तं चेव ॥३१२८॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
नाणाइतिगस्सट्ठा, वीसुंभण-पेसणेणं वा ॥३१२९॥

पुव्वद्धं पूर्ववत् । इमं च अण्णं – णाणाइ पच्छद्धं, णाणातितिगस्सट्ठा गच्छति । तत्थ णाणणिमित्तं अपुव्वं सुयक्खंधं अण्णस्स आयरियस्स अत्थि । सो य भत्तं पच्चक्खाउकामो भजति । ण घेप्पति तो वोच्छिज्जति, अतो तदट्ठा गच्छेज्ज ।

एवं दंसणपभावगाण वि अट्ठा गच्छे ।

चरित्तट्ठा—तत्थ खेत्ते चरित्तं ण सुज्झइ इत्थीदोसेहिं, एसणा दोसेहिं वा, अतो वासासु अण्णं खेत्तं गच्छे।

"वीसुंभण" त्ति जीवो सरीरातो सरीरं वा जीवातो वीसुं पृथग्भूतं, आचार्यो मृत इत्यर्थः, तम्मि मते गच्छे अण्णो आयरिओ णत्थि अतो गच्छति ।

अह उतिमट्ठं कोइ पडिवज्जिउकामो तस्स विसोहिकरणट्ठताए गच्छिज्जा । एतदेव पेसणं ।

अहवा—आयरिएण अण्णतरे उप्पइयकारणे पेसितो, जहा अज्जरक्खियसामिणा गोट्ठामाहिलो।३१२९।

उक्तविशेषज्ञापनार्थं पुनरुच्यते –

आऊ तेऊ वाऊ, दुब्बलसंकामिते व ओमाणे ।
पाणाइ सप्प कुंथू, उट्ठण तह थंडिलस्सऽसती ॥३१३०॥

आउक्काएण वा वसही प्लाविता, थंडिलाणि वा गामो वाहडो, अगणिक्काएण वा वसही दड्ढा गामो वा, वातेण वा वसधी भग्गा, "दुब्बल" त्ति वासेण तिम्ममाणा दुब्बला वसही जाता, सा पडिउकामा, "संकामित" त्ति सो गामो अण्णस्स पडिणीयस्स दिण्णो,

अहवा – ते वत्थव्वा अण्णत्थ संकामिया तम्मि य गामे अण्णे आवसिता । "ओमाणे" त्ति इंदमहादिएसु तत्थ पंडरंगादतो आगता, तेहिं ओमाणं जातं, उब्भिज्ज-बीय-सावएहि य वसधी संसत्ता, आदिसद्दातो

मक्कोडग-उधेइमादी दट्ठूणा, सप्पो वा वसहीए ठितो, अणुद्धरिकुंथूहिं वा वसही संसत्ता, गामो वा उट्ठितो, वियारभूमि-णिसिहियस्स वा असइ ॥३१३०॥

एवमादि होज्ज वाघाउ त्ति ताहे इमं विहिपुव्वं चेव करेंति –

मूलग्गामे तिण्णि उ, पडिवसभेसु वि य तिण्णि वसधीओ ।
ठायंते पडिलेहा, वियारवाघायमायट्ठा ॥३१३१॥

मूलग्गामो जत्थ साधवो ठिता तम्मि गामे तिण्णि वसहीओ गिण्हंति, भिक्खायरियगामादि पडिवसभा भण्णंति, तेसु वि पत्तेयं तिण्णि तिण्णि वसहीओ पडिलेहेंति । स्यात्-किमर्थं ? जति मूलग्गामे वियारभूमिए वसहीए वा वाघातो भवति तो तेसु पडिवसभेसु ठायतीत्यर्थः ॥३१ १॥

आउक्कायादि वाघाते उप्पण्णे इमा जयणविधी –

उदगागणिवातादिसु, अण्णस्सऽसती य थंभणुद्दवणा ।
संकामितम्मि भयणा, उट्ठण थंडिल्ल अण्णत्थ ॥३१३२॥

उदगेण अगणीए वातेण अहिणा वा वसहीए वाघाते उप्पण्णे अण्णवसहीए ठायंति । असति अण्णवसहीए विज्जाए उदगादिया थंभिज्जति । उद्दवणं णाम विज्जाए सप्पो अन्यत्र नीयते इत्यर्थः, संकामणे भयणा–जति भद्दगो गामसामी लोगो वा तो अच्छंति, पंतेसु गच्छंति, उट्ठिते गामे, थंडिलस्स असतीए अण्णं गामं गच्छंति ॥३१३२॥

ओमाणे इमा जयणा –

इंदमहादीसु समागएसु परतित्थिएसु य जतंति ।
पडिवसभेसु सखेत्ते, दुब्बलसेज्जायए थूणं ॥३१३३॥

इंदमहादिएसु समागतेसु वहुसु परतित्थिएसु, सखेत्ते पडिवसभेसु जतंति अंतरपल्लीसु य, तेसु वि असंथरंता गच्छंति । दुब्बलसेज्जाए पुणं थूणं दलयंति, जं वा दुब्बलं तं करेंति ॥३१३३॥

वसहिपमज्जणे इमो विधी –

दोण्णि उ पमज्जणाओ, उदुम्मि वासासु ततियमज्झण्णे ।
वसहि वहुसो पमज्जति, अतिसंघट्टं तहिं गच्छे ॥३१३४॥

असंसत्ता वि उडुवद्धे दो वारा वसही पमज्जिज्जति – पुव्वण्हे अवरण्हे य । वासासु तिण्णि वारा, सा य मज्झण्हे तइय वारा भवति । उडुवद्धे वासासु वा कुंथुमादिएहिं पाणेहिं संसत्ते जहाभिहियप्पमाणातो अइरित्तपमज्जणाए वहुसो वि पमज्जिज्जति । अतिसंघट्टणेण वा पाणिणं अण्णं गामं गच्छे ॥३१३४॥

एएहिं कारणेहिं, एग-दुगंतर-तिगंतरं वा वि ।
संकममाणो खेत्तं, पुट्ठो वि जतो णऽतिक्कमति ॥३१३५॥

एवमादिकारणेहिं एगगामंतरं तिग्गामंतरं वहुगामंतरं वा संकमंतो अण्णं खेत्तं पुट्ठो वि दोसेहिं "जतो" त्ति यत्नेन आज्ञा मेरं च नातिक्रामतीत्यर्थः ।

अहवा – "जतो" त्ति यतो नातिक्रमति ततः गच्छतीत्यर्थः ॥३१३५॥

पंथं पडुच्च इमा जयणा –

उत्तण-ससावयाणि य, गंभीराणि य जलाणि वज्जेत्ता ।
तलियारहिता दिवसं, अब्भासतरे च जे खेत्ते ॥३१३६॥

उद्धत्तणा उत्तणा दीर्घा तिणा जम्मि पंथे तेण ण गच्छे, सीहवग्घादिएहिं ससावयाणि य तणाणि य जम्मि पंथे ।

अहवा – मगरादिएहिं ससावगा जला जम्मि पंथे, गंभीरा अत्थाघा जला जम्मि पंथे, एते पंथे वज्जेंतो गच्छति । तलियारहिया अणुवाहणा, तं पि दिवसतो गच्छति न रात्री, जं च अब्भासतरं खेत्तं तं गच्छति ॥३१३६॥

जे भिक्खू अपज्जोसवणाए पज्जोसवेति, पज्जोसवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेइ, ण पज्जोसवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४३॥

दो सुत्ता जुगवं वच्चंति ।

इमो सुत्तत्थो –

पज्जोसवणाकाले, पत्ते जे भिक्खू णोसवेज्जाहि ।
अप्पत्तमतीते वा, सो पावति आणमादीणि ॥३१३७॥

जे भिक्खू पज्जोसवणाकाले पत्ते ण पज्जोसवति । "अपज्जोसवणए" त्ति अपत्ते समतीते वा जो पज्जोसवति तस्स आणादिया दोसा चउगुरुं पच्छित्तं ॥३१३७॥ एस सुत्तत्थो ।

॥इमा णिज्जुत्ती –

पज्जोसवणाए अक्खराइं होंति उ इमाइं गोण्णाइं ।
परियायवत्थवणा, पज्जोसवणा य पागइता ॥३१३८॥

परिवसणा पज्जुसणा, पज्जोसवणा य वासवासो य ।
पढमसमोसरणं ति य, ठवणा जेट्ठोग्गहेगट्ठा ॥३१३९॥

"पज्जोसवण" त्ति एतेसिं अक्खराणि इमाणि एगट्ठिताणि गोण्णणामाणि अट्ठ भवंति । तं जहा – परियायवत्थवणा, पज्जोसवणा य, परिवसणा, पज्जुसणा, वासावासो, पढमसमोसरणं, ठवणा, जेट्ठोग्गहो त्ति, एते एगट्ठिता ।

१ एतेसिं इमो अत्थो – जम्हा पज्जोसवणादिवसे पव्वज्जापरियागो व्यपदिश्यते – व्यवस्थाप्यते संखा – "एत्तिया वरिसा मम उवट्ठावियस्स" त्ति तम्हा परियायवत्थवणा भण्णति ।

२ जम्हा उदुबद्धिया दव्व-खेत्त-काल-भावा पज्जाया, एत्थ परि समंता ओसविज्जंति – परित्यजन्तीत्यर्थः, अण्णे य दव्वादिया वरिसकाल-पायोग्गा घेत्तुं आयरिज्जंति तम्हा पज्जोसवणा भण्णति । "पागय" त्ति सव्वलोगपसिद्धेण पागतभिधाणेण पज्जोसवणा भण्णति ।

३ जम्हा एगखेत्ते चत्तारि मासा परिवसंतीति तम्हा परिवसणा भण्णति ।

४ उदुवद्धिया वाससमीवातो जम्हा पगरिसेण ओसंति सव्वदिसासु परिमाणपरिच्छिन्नं तम्हा पज्जुस्सणा भण्णति । पज्जोसवणा इति गतार्थं ।

५ वर्षं इति वर्षाकालः, तस्मिन् वासः वासावासः ।

६ प्रथमं आद्यं बहूण समवातो समोसरणं । ते य दो समोसरणा – एगं वासासु, वितियं उदुवद्धे । जतो पज्जोसवणातो वरिसं आढप्पति अतो पढम समोसरणं भण्णति ।

७ वासकप्पातो जम्हा अण्णा वासकप्पमेरा ठविज्जति तम्हा ठवणा भण्णति ।

८ जम्हा उदुवद्धे एक्कं मासं खेत्तोग्गहो भवति, वासावासासु चत्तारि मासा, तम्हा उदुवद्धियाओ वासे उग्गहो जेट्ठो भवति । एषां व्यंजनतो नानात्वं, नत्वर्थतः ॥३१३९॥

एतेसिं एगट्ठियाणं एगं ठवणापदं परिगृह्यते तम्मि णिक्खित्ते सव्वे णिक्खित्ता भवंति –

ठवणाए णिक्खेवो, छक्को दव्वं च दव्वणिक्खेवे ।
खेत्तं तु जम्मि खेत्ते, काले कालो जहिं जो उ ॥३१४०॥

ठवणाए छव्विहो णिक्खेवो तं जहा – णामठवणा ठवणठवणा दव्वठवणा खेत्तठवणा कालठवणा भावठवणा । णाम-ट्ठवण-ठवणातो गयाओ । दव्वट्ठवणा दुविधा – आगमतो णो आगमतो य । आगमतो जाणए अणुवउत्ते । णो आगमतो तिविधा – तं जहा जाणगसरीरट्ठवणा भवियसरीरट्ठवणा जाणगसरीरभविय-सरीरवतिरित्ता ॥३१४०॥

वतिरित्ता दव्वट्ठवणा इमा –

ओदइयादीयाणं, भावाणं जो जहिं भवे ठवणा ।
भावेण जेण य पुणो, ठवेज्ज ते भावठवणा तु ॥३१४१॥

"दव्वं च दव्वणिक्खेवो" दव्वपरिमाणेन स्थाप्यमाना दव्वट्ठवणा भण्णति, च सद्दोऽणुकरिसणे, किं अणुकरिसयति ? भण्यते – इमं दव्वं वा णिक्खिप्पमाणं, दव्वस्स वा जो निक्खेवो सा ठवणा भण्णति ॥३१४१॥

अस्येमा व्याख्या –

सामित्ते करणम्मि य, अहिकरणे चेव होंति छब्भेया ।
एगत्त-पुहुत्तेहिं, दव्वे खेत्ते य भावे य ॥३१४२॥

सामित्ते पडिवसभगामस्स अंतरपल्लियाए य, करणे खेत्तेण एगत्त-बहुमित्ते दव्वस्स ठवणा दव्वाण वा ठवणा दव्वठवणा ।

तत्थ दव्वस्स ठवणा जहा कोइ साहू एगसंथाराभिग्गहणं ठवेति – गृण्हातीत्यर्थः ।

दव्वाण ठवणा जहा – संथारगतिगपडोआरगगहणाभिग्गहणं आत्मनि ठवेति । करणे जहा दव्वेण ठवणा, दव्वेहिं वा ठवणा । तत्थ दव्वेण आयंबिलदव्वेण चाउम्मासं जावेति । दव्वेहिं कूरकुसणेहिं वा चाउम्मासं जावेति ।

अहवा – चउसु मासेसु एक्कं आयंबिलं पारेत्ता सेसकालं अभत्तट्ठं करेति, एवमात्मानं स्थापयतीत्यर्थः । दव्वेहिं दोहिं आयंबिलेहिं चाउम्मासं जावेति । अधिकरणे दव्वे ठवणा, दव्वेसु वा ठवणा । तत्थ दव्वे जहा एगंगिए फलहिए मए सुवियव्वं, दव्वेसु अणेगंगिए संथारए मए सुवियव्वंति एवं छब्भेया । एगत्त-पुहत्तेहिं दव्वे भणिता ।

इदाणिं खेत्तठवणा "[1]खेत्तं तु जम्मि खेत्ते" त्ति । क्षेत्रं यत् परिभोगेन परित्यागेन वा स्थाप्यते, जम्मि वा खेत्ते ठवणा ठविज्जति सा खेत्तठवणा । सा य सामित्तकरण-अधिकरणेहिं एगत्त-पुहुत्तेहिं छब्भेया भाणियव्वा ।

इयाणिं कालठवणा – "[2]काले कालो जहिं जो उ" त्ति । काले कालो एतेसु जहासंखं इमे पदा – "जहिं जो उ", काले जहिं ठवणा ठविज्जति, कालो वा जो उ ठविज्जति सा कालठवणा । अद्ध इति कालो । तत्थ वि सामित्तकरण-अधिकरणेहिं एगत्त-पुहुत्तेहिं छब्भेया भवंति । भावे छब्भेया ।

सामित्ते–खेत्तस्स एगगामस्स परिभोगो, खेत्ताणं सीमातीणं मूलगामस्स पडिवसभगामस्स अंतरपल्लियाए य ।

करणे – खेत्तेण एगत्ते पुहुत्तेण, एत्थ ण किं चि संभवति ।

अधिकरणे – एगत्तं परं अद्धजोयणमेराए गंतु पडियत्तए, पुहत्ते कारणे दुगादी अद्धजोयणे गंतुं पडियत्तए ।

कालस्स ठवणा उदुबद्धे जा मेरा सा वज्जिज्जति – स्थाप्यतेत्यर्थः ।

कालाणं चउण्हं मासाणं ठवणा ठविज्जति, आचरणत्वेनेत्यर्थः ।

कालेणं आसाढपुण्णिमाकालेणं ठायंति ।

कालेहिं बहूहिं पंचाहेहिं गतेहिं ठायंति ।

कालम्मि पाउसे ठायंति ।

कालेसु कारणे आसाढपुण्णिमातो सवीसइमासदिवसेसु गतेसु ठायंति ।

भावस्सोदतियस्स ठवणा, भावाणं कोह-माण-माया-लोभातीणं ।

अहवा – णाणमादीणं गहणं ।

अहवा – खाइयं भावं संकामंतस्स सेसाणं भावाणं परिवज्जणं भवति ।

भावेण णिज्जरट्ठताए एगखेत्ते ठायंति णो अडंति ।

भावेहिं संगह-उवग्गह-णिज्जरणिमित्तं वा णो अडंति ।

भावम्मि खयोवसमिए खत्तिए वा ठवणा भवति ।

भावेसु णत्थि ठवणा ।

अहवा – खओवसमिए भावे सुद्धातो भावातो सुद्धतरं भावं संकमंतस्स भावेसु ठवणा भवति । एवं दव्वाति-ठवणा समासेण भणिता ॥३१४२॥

इयाणिं एते चेव वित्थारेण भणीहामि ।

तत्थ पढमं कालठवणं भणामि । किं कारणं ? जेण एयं सुत्तं कालठवणाए गतं ।

एत्थ भणति –

कालो समयादीयो, पगयं कालम्मि तं परूवेस्सं ।
णिक्खमणे य पवेसे, पाउस-सरए य वोच्छामि ॥३१४३॥

१ गा० ३१४० । २ गा० ३१४० ।

कलनं कालः, कलिज्जतीति वा कालः, कालसमूहो वा कालः, सो य समयादी, समयो पट्टसाडियाफाडणादिट्ठंतेणं सुत्ताएसेणं परूवेयव्वो। आतिग्गहणातो आवलिया मुहुत्तो पक्खो मासो उदू अयणं संवच्छरो जुगं एवमाइ एत्थ जं "पगयं" ति – अधिकार समयेन सिद्धंतेन तमहं परूवेस्स। उदुवद्धियमासकप्पखेत्तातो पाउसे णिक्खमणं, वासाखेत्ते य पाउसे चेव पवेसं वोच्छं। वासाखेत्तातो सरए णिक्खमणं, उदुवद्धियखेत्ते पवेसं सरए चेव वोच्छामि। अहवा – सरए णिग्गमणं पाउसे पवेस वोच्छामीत्यर्थः ॥३१४३॥

ऊणातिरित्तमासे, अट्ठविहरिऊण गिम्ह-हेमंते।
एगाहं पंचाहं, मासं च जहा समाहीए ॥३१४४॥

चत्तारि हेमंतिया मासा, चत्तारि गिम्हिया मासा, एते अट्ठ ऊणातिरित्ता वा विहरित्ता। कहं विहरित्ता? भण्णति – पडिमापडिवण्णाणं एगाहो। अहालदियाणं पंचाहो। जिणकप्पियाण सुद्धपरिहारियाण थेराण य मासो। जस्स जहा णाण-दंसण-चरित्तसमाही भवति सो तहा विहरित्ता वासाखेत्तं उवेति ॥३१४४॥

कहं पुण ऊणातिरित्ता वा उदुवद्धिया मासा भवंति?

तत्थ ऊणा –

काऊण मासकप्पं, तत्थेव उवागयाण ऊणा उ।
चिक्खल्लवासरोहेण वा वितीए ठिता णूणं ॥३१४५॥

जत्थ खेत्ते आसाढमासकप्पो कतो तत्थेव खेत्ते वासावासत्तेण उवगया, एवं ऊणा अट्ठ मासा। आसाढमासे अनिर्गच्छतां सप्त विहरणकाला भवंतीत्यर्थः।

अववा – इमेहिं पगारेहिं ऊणा अट्ठ मासा हवेज्ज – सचिक्खल्ला पंथा, वासं वा अज्ज वि णोवरमते, णयरं वा रोहितं, बहिं वा असिवादि कारणा, तेण मग्गसिरे सव्वे ठिया, अतो पोसादिया आसाढंता सत्त विरहणकाला भवंति ॥३१४५॥

इयाणिं जहा अतिरित्ता अट्ठ मासा विहारो तहा भण्णति –

वासाखेत्तालंभे, अद्धाणादीसु पत्तमहिगा तु।
साधग-वाघातेण व, अप्पडिक्कमितुं जति वयंति ॥३१४६॥

आसाढे सुद्धवासावासपाउग्गं खेत्तं मग्गतेहिं ण लद्धं ताव जाव आसाढचाउम्मासातो परतो सवीसतिराते मासे अतिक्कंते लद्धं, ताहे भद्दवया जोण्हस्सपंचमीए पज्जोसवंति, एवं णवमासा सवीसतिराता विहरणकालो दिट्ठो, एवं अतिरित्ता अट्ठ मासा।

अहवा – साहू अद्धाणपडिवण्णा सत्थवसेणं आसाढचाउम्मासातो परेण पंचाहेण वा दसाहेण वा पक्खेण वा जाव वीसतिराते वा मासे वासाखेत्तं पत्ताणं अतिरित्ता अट्ठ-मासा विहारो भवति।

अहवा – वासवाघाए अणावुट्ठीए आसोए कत्तिए णिग्गयाण अट्ठ अतिरित्ता भवंति। वसहि-वाघाते वा कत्तियचाउम्मासिय आरतो चेव णिग्गया।

अहवा – आयरियाणं कत्तियपोण्णिमाए परतो वा साहगं णक्खत्तं ण भवति, अण्णं वा रोहगादिकं वि, एस वाघायं जाणिऊण कत्तियचाउम्मासियं अपडिक्कमियं जया वयंति तता अतिरित्ता अट्ठ-मासा भवंति ॥३१४६॥

"[1]एगाहं पंचाहं मासं च जहा समाहीए" अस्य व्याख्या –

पडिमापडिवण्णाणं, एगाहो पंच होतऽहालंदे ।
जिण-सुद्धाणं मासो, णिक्कारणतो य थेराणं ॥३१४७॥

"जिण" त्ति जिणकप्पिया । सुद्धाणं" त्ति सुद्धपरिहारियाणं, एतेसिं मासकप्पविहारो । णिव्वाघायं-कारणाभावे ॥३१४७॥

वाघाते पुण थेरकप्पिया ऊणं अतिरित्तं वा मासं अच्छंति –

ऊणातिरित्तमासा, एवं थेराण अट्ठ णायव्वा ।
इयरेसु अट्ठ रियितुं, णियमा चत्तारि अच्छंति ॥३१४८॥

एवं ऊणातिरित्ता थेराणं अट्ठ मासा णायव्वा । इतरे णाम पडिमापडिवण्णा आहालंदिया विसुद्ध-परिहारिया जिणकप्पिया य जहाविहारेण अट्ठ रीइतुं वासारत्तिया चउरो मासा सव्वे णियमा अच्छंति ॥३१४८॥

वासावासे कम्मि खेत्ते कम्मि काले पविसियव्वं अतो भण्णति –

आसाढपुण्णिमाए, वासावासासु होइ ठायव्वं ।
मग्गसिरबहुलदसमी तो जाव एक्कम्मि खेत्तम्मि ॥३१४९॥

"ठायव्वं" त्ति उस्सग्गेण पज्जोसवेयव्वं, अहवा – प्रवेष्टव्यं, तम्मि पविट्ठा उस्सग्गेण कत्तियपुण्णिमं जाव अच्छंति । अववादेण मग्गसिरबहुलदसमी जाव ताव तम्मि एगखेत्ते अच्छंति । दसरायग्गहणातो अववातो दसितो – अण्णे वि दो दसराता अच्छेज्जा । अववातेण मार्गसिरमासं तत्रैवास्ते इत्यर्थः ॥३१४९॥

कहं पुण वासापाउग्गं खेत्तं पविसंति ?

इमेण विहिणा –

बाहिट्ठिया वसभेहिं, खेत्तं गाहेत्तु वासपाउग्गं ।
कप्पं कहेत्तु ठवणा, सावणबहुलस्स पंचाहे ॥३१५०॥

बाहिट्ठिय त्ति जत्थ आसाढमासकप्पो कतो, अण्णत्थ वा आसण्णे ठिता वाससामायारीखेत्तं वसभेहिं गाहेंति – भावयंतीत्यर्थः । आसाढपुण्णिमाए पविट्ठा, पडिवयाओ आरब्भ पंचदिणाइं संथारग तण-डगल-च्छार-मल्लादीयं गेण्हंति । तम्मि चेव पणग रातीए पज्जोसवणाकप्पं कहेंति, ताहे सावणबहुलपंचमीए वासकालसामायारिं ठवेंति ॥३१५०॥

एत्थ उ अणभिग्गहियं, वीसति राइं सवीसतिं मासं ।
तेण परमभिग्गहियं, गिहिणातं कत्तिओ जाव ॥३१५१॥

"एत्थं" त्ति एत्थ आसाढपुण्णिमाए सावणबहुलपंचमीए वासपज्जोसविए वि अप्पणो अणभिग्गहियं ।

अहवा – जति गिहत्था पुच्छंति – "अज्जो तुब्भे एत्थ वरिसाकालं ठिया अह ण ठिया ?", एवं पुच्छिएहिं "अणभिग्गहियं" ति संदिग्धं वक्तव्यं, इह अन्यत्र वाद्यापि निश्चयो न भवतीत्यर्थः ।

---

१ गा० ३१४४ ।

एवं संदिग्धं कियत्कालं वक्तव्यं ? उच्यते - वीसतिरायं, सवीसतिरायं मासं ।

जति अभिवड्ढियवरिसं तो वीसतिरातं जाव अणभिग्गहियं ।

अह चंदवरिसं तो सवीसतिरायं मासं जाव अणभिग्गहियं भवति । "तेणं" त्ति तत्कालात् परतः अप्पणो, अभिरामुख्येन गृहीतं अभिगृहीतं, इह व्यवस्थितिः इति, गिहीण य पुच्छंताण कहेंति – "इह ठिताओ वरिसाकालं" ति ॥३१५१॥

किं पुण कारणं वीसतिराते सवीसतिराते वा मासे वागते अप्पणो अभिग्गहियं गिहिणातं वा कहेंति, आरतो ण कहेंति ?

उच्यते –

असिवाइकारणेहिं, अहव न वासं न सुट्ठु आरद्धं ॥
अहिवड्ढियम्मि वीसा, इयरेसु सवीसतीमासो ॥३१५२॥

कयाइ असिवं भवे, आदिग्गहणातो रायदुट्ठाइ, वासावासं ण सुट्ठु आरद्धं वासितुं, एवमादीहिं कारणेहिं जइ अच्छंति तो आणातिता दोसा। अह गच्छति तो गिहत्था भणंति – एते सव्वण्णुपुत्तगा ण किं चि जाणति, मुसावायं च भासंति। "ठिताओ" त्ति भणित्ता जेण णिग्गता लोगो वा भणेज्ज – साहू एत्थं वरिसारत्तं ठिता अवस्सं वासं भविस्सति, ततो धण्णं विक्किणंति, लोगो घरातीणि छादेति, हलादिकम्माणि वा संठवेति । अभिग्गहिते गिहिणाते य आरतो कए जम्हा एवमादिया अधिकरणदोसा तम्हा अभिवड्ढियवरिसे वीसतिराते गते गिहिणातं करेंति, तिसु चंदवरिसे सवीसतिराते मासे गते गिहिणातं करेंति ।

जत्थ अधिकमासो पडति वरिसे तं अभिवड्ढयवरिसं भण्णति । जत्थ ण पडति तं चंदवरिसं । सो य अधिमासगो जुगस्स अंते मज्झे वा भवति । जति अंते तो णियमा दोआसाढा भवंति । अह मज्झे तो दो पोसा ।

सीसो पुच्छति – "कम्हा अभिवड्ढियवरिसे वीसतिरातं, चंदवरिसे सवीसतिमासो ?" ।

उच्यते – जम्हा अभिवड्ढियवरिसे गिम्हे चेव सो मासो अतिक्कंतो तम्हा वीसदिणा अणभिग्गहियं तं कीरति, इयरेसु तीसु चंदवरिसेसु सवीसतिमासा इत्यर्थः ॥३१५२॥

एत्थ उ पणगं पणगं, कारणियं जाव सवीसतीमासो ।
सुद्धदसमीठियाण च, आसाढी पुण्णिमोसवणा ॥३१५३॥

एत्थ उ आसाढे पुण्णिमाए ठिया डगलादीयं गेण्हंति, पज्जोसवणकप्पं च कहेंति पंचदिणा, ततो सावणबहुलपंचमीए पज्जोसवेंति । खेत्ताभावे कारणे पणगे संवुड्ढे दसमीए पज्जोसवेंति, एवं पण्णरसीए । एवं पणगवुड्ढी ताव कज्जति-जाव-सवीसतिमासो पुण्णो सो य सवीसतिमासो च भद्दवयसुद्धपंचमीए युज्जति ।

अह आसाढसुद्धदसमीए – वासाखेत्तं पविट्ठा,

अहवा – जत्थ आसाढमासकप्पो कओ तं वासपाउग्गं खेत्तं, अण्णं च णत्थि वासपाउग्गं ताहे तत्थेव पज्जोसवेंति । वासं च गाढं अणुवरयं आढत्तं, ताहे तत्थेव पज्जोवसेंति। एक्कारसीओ आढवेउं डगलादीतं गेण्हंति, पज्जोसवणाकप्पं कहेंति, ताहे आसाढपुण्णिमाए पज्जोसवेंति । एस उस्सग्गो ।

सेसकालं पज्जोसवेंताणं अववातो । अववाते वि सवीसतिरातमासातो परेणं अतिक्कमेउं

ण वट्टति। सवीसतिराते मासे पुण्णे जति वासखेत्तं ण लब्भति तो रुक्खहेट्ठा वि पज्जोसवेयव्वं। तं च पुण्णिमाए पंचमीए दसमीए एवमादिपव्वेसु पज्जोसवेयव्वं णो अपव्वेसु।

सीसो पुच्छति "इयाणिं कहं चउत्थीए – अपव्वे पज्जोसविज्जति ?"

आयरिओ भणति – "कारणिया चउत्थी अज्जकालगायरिएण पवत्तिया। कहं ? भण्णते कारणं – कालगायरिओ विहरंतो 'उज्जेणिं' गतो। तत्थ वासावासं ठिओ। तत्थ णगरीए 'बलमितो' राया। तस्स कणिट्ठो भाया 'भाणुमित्तो' जुवराया। तेसिं भगिणी 'भाणुसिरी' णाम। तिसे पुत्तो 'बलभाणू' णाम। सो पगितिभद्दविणीययाए साहू पज्जुवासति। आयरिएहिं से धम्मो कहितो – पडिबद्धो [1]पव्वाविओ य। तेहि य बलमित्त-भाणुमित्तेहिं रुट्ठेहिं कालगज्जो पज्जोसविते णिव्विसतो कतो।

केति आयरिया भणंति – जहा बलमित्त-भाणुमित्ता कालगायरियाणं भागिणेज्जा भवंति। "माउलो" त्ति काउं महंतं आयरं करेंति, अब्भुट्ठाणादियं। तं च पुरोहियस्स अप्पत्तियं, भणाति य एस सुद्दपासंडो, वेतादिबाहिरो, रण्णो अग्गतो पुणो पुणो उल्लावेंतो आयरिएण णिप्पिट्ठपसिणवागरणो कतो। ताहे सो पुरोहितो आयरियस्स पदुट्ठो रायाणं अणुलोमेहिं विप्परिणामेति। एते रिसितो महाणुभावा, एते जेण पहेणं गच्छंति तेण पहेणं जति रण्णो जणो गच्छति पताणि वा अक्कमइ तो असिवं भवति, तम्हा विसज्जेहि, ताहे विसज्जिता।

अण्णे भणंति –

रण्णा उवाएण विसज्जिता। कहं ? सव्वम्मि णगरे किल रण्णा अणेसणा कराविता, ताहे से णिग्गता। एवमादियाण कारणाण अण्णतमेण णिग्गता विहरंता "पतिट्ठाणं" णगरं तेण पट्ठिता। पतिट्ठाणसमण-संघस्स य अज्जकालगेहिं संदिट्ठं – जावाहं आगच्छामि ताव तुब्भेहिं णो पज्जोसवियव्वं। तत्थ य 'सायवाहणो' राया सावतो, सो य कालगज्जं एंतं सोउं णिग्गतो अभिमुहो समणसंघो य, महाविभूईए पविट्ठो कालगज्जो।

पविट्ठेहिं य भणियं – "भद्दवयसुद्ध पंचमीए पज्जोसविज्जति", समणसंघेण पडिवण्णं।

ताहे रण्णा भणियं – तद्दिवसं मम लोगाणुवत्तीए इंदो अणुजाएयव्वो होहीति, साहूचेतिते ण पज्जुवासेस्सं, तो छट्ठीए पज्जोसवणा कज्जउ।

आयरिएहिं भणियं – ण वट्टइ अतिकामेउं।

ताहे रण्णा भणियं – अणागयं चउत्थीए पज्जोसविज्जति।

आयरिएण भणियं – एवं भवउ।

ताहे चउत्थीए पज्जोसवियं। एवं जुगप्पहाणेहिं चउत्थी कारणे पवत्तिता। सच्चेवाणुमता सव्वसाधूणं।

रण्णा अंतेपुरियाओ भणिता – तुब्भे अमावासाए उववासं काउं पडिवयाए सव्वखज्जभोज्जविहीहिं साधू उत्तरपारणए पडिलाभेत्ता पारेह, पज्जोवसणाए अट्ठमं ति काउं पडिवयाए उत्तरपारणयं भवति, तं च सव्वलोगेण वि कयं, ततो पभिति 'मरहट्ठविसए' "समणपूय" त्ति छणो पवत्तो ।।३१५३।।

इयाणिं पंचगपरिहाणिमधिकृत्य कालावग्रहोच्यते –

> इय सत्तरी जहण्णा, असति नउती दसुत्तरसयं च।
> जति वासति मग्गसिरे, दसरायं तिन्नि उक्कोसा ।।३१५४।।

---

१ राजपुत्रत्वात्।

पण्णासा पाडिज्जति, चउण्ह मासाण मज्झओ ।
ततो उ सत्तरी होइ, जहण्णो वासुवग्गहो ॥३१५५॥

इय इति उपप्रदर्शने, जे आसाढचाउम्मासियातो सवीसतिमासे गते पज्जोसवेंति तेसिं सत्तरि दिवसा जहण्णो वासकालोग्गहो भवति ।

कहं सत्तरी ? उच्यते – चउण्हं मासाणं वीसुत्तरं दिवससयं भवति – सवीसतिमासो पण्णासं दिवसा, ते वीसुत्तरसयमज्झाओ सोहिया, सेसा सत्तरी ।

जे भद्दवयबहुलदसमीए पज्जोसवेंति तेसिं असीतिदिवसा मज्झिमो वासकालोग्गहो भवति ।

जे सावणपुण्णिमाए पज्जोसविंति तेसिं णउतिं चेव दिवसा मज्झिमो चेव वासकालोग्गहो भवति ।

जे सावण बहुलदसमीए पज्जोसवेंति तेसिं दसुत्तरं दिवससयं मज्झिमो चेव वासकालोग्गहो भवति ।

जे आसाढपुण्णिमाए पज्जोसविंति तेसिं वीसुत्तरं दिवससयं जेट्ठो वासुग्गहो भवति । सेसंतरेसु दिवसपमाणं वत्तव्वं । एवमादिपगारेहिं वरिसारत्तं एगखेत्ते अच्छिता कत्तियचाउम्मासियपडिवयाए अवस्सं णिग्गंतव्वं ।

अह मग्गसिरमासे वासति चिक्खल्लजलाउला पंथा तो अववातेण एक्कं उक्कोसेणं तिण्णि वा – दस राया जाव तम्मि खेत्ते अच्छंति, मार्गसिरपौर्णमासीयावदित्यर्थः । मग्गसिरपुण्णिमाए जं परतो जति वि सचिक्खल्ला पंथा वासं वा गाढं अणुवरयं वासति जति विप्लवंतेहिं तहावि अवस्सं णिग्गंतव्वं । अह ण णिग्गच्छंति तो चउगुरुगा । एवं पंचमासितो जेट्ठोग्गहो जातो ॥३१५५॥

काउण मासकप्पं, तत्थेव ठियाण तीतमग्गसिरे ।
सालंबणाण छम्मासिओ उ जेट्ठोग्गहो भणितो ॥३१५६॥

जम्मि खेत्ते कतो आसाढमासकप्पो, तं च वासावासपाउग्गं खेत्तं, अण्णम्मि अलद्धे वासपाउग्गे खेत्ते जत्थ आसाढमासकप्पो कतो तत्थेव वासावासं ठिता. तीसे वासावासे चिक्खल्लादिएहिं कारणेहिं तत्थेव मग्गसिरं ठिता, एवं सालंबणाण कारणे अववातेण छम्मासितो जेट्ठोग्गहो भवतीत्यर्थः ॥३१५६॥

जइ अत्थि पयविहारो, चउपडिवयम्मि होइ णिग्गमणं ।
अहवा वि अणितस्स, आरोवणा पुव्वनिद्दिट्ठा ॥३१५७॥

वासाखेत्ते णिव्विग्घेण चउरो मासा अच्छिउं कत्तियचाउम्मासं पडिक्कमिउं मग्गसिरबहुलपडिवयाए णिग्गंतव्वं एस चेव चउपाडिवओ । चउपाडिवए अणिताणं चउलहुगा पच्छित्तं ।

अहवा – अणिताण । अविसद्दातो एमेव चउलहु सवित्थारो जहा पुव्वं वण्णिओ णितीयसुत्ते संभोगसुत्ते वा तहा दायव्वो ॥३१५७॥ चउपाडिवए अप्पत्ते अतिक्कंते वा णिंते कारणे निद्दोसा ।

तत्थ अपत्ते इमे कारणा –

राया कुंथू सप्पे, अगणिगिलाणे य थंडिलस्सऽसती ।
एएहिं कारणेहिं, अप्पत्ते होइ णिग्गमणं ॥३१५८॥

राया दुट्ठो, सप्पो वा वसहिं पविट्ठो, कुंथूहिं वा वसही संसत्ता, अगणिणा वा वसही दड्ढा, गिलाणस्स पडिचरणट्ठा, गिलाणस्स वा ओसहहेउं, थंडिलस्स वा असतीते, एतेहिं कारणेहिं अप्पत्ते चउपाडिवए णिग्गमणं भवति ॥३१५८॥

अहवा – इमे कारणा –

काइयभूमी संथारए य संसत्तं दुल्लभे भिक्खे ।
एएहिं कारणेहिं, अप्पत्ते होति णिग्गमणं ॥३१५६॥

काइयभूमी संसत्ता, संथारगा वा संसत्ता, दुल्लभं वा भिक्खं जातं, श्रायपरसमुत्थेहिं वा दोसेहिं मोहोदओ जाओ, असिवं वा उप्पण्णं, एतेहिं कारणेहिं अप्पत्ते णिग्गमणं भवति ॥३१५६॥

चउप्पाडिवए अइक्कंते निग्गमो इमेहिं कारणेहिं –

वासं न उवरमती, पंथा वा दुग्गमा सचिक्खिला ।
एएहिं कारणेहिं, अइक्कंते होइ णिग्गमणं ॥३१६०॥

अइक्कंते वासाकाले वासं नोवरमइ, पंथो वा दुग्गमो, अइजलेण सचिक्खल्लो य, एवमाइएहिं कारणेहिं चउपाडिवए अइक्कंते णिग्गमणं ण भवति ॥३१६०॥

अहवा – इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
एतेहिं कारणेहिं, अइक्कंते होयऽनिग्गमणं ॥३१६१॥

वाहिं असिवं ओमं वा, बाहिं वा रायदुट्ठं, बोहिगादिभयं वा आगाढं, आगाढकारणेण वा ण णिग्गच्छति । एतेहिं कारणेहिं चउपाडिवए अतिक्कंते अणिग्गमणं भवति ॥३१६१॥ एसा कालठवणा ।

इयाणिं [1]खेत्तठवणा –

उभओ वि अद्धजोयण, अद्धकोसं च तं हवति खेत्तं ।
होति सकोसं जोयण, मोत्तूणं कारणज्जाए ॥३१६२॥

"उभओ" त्ति पुव्वावरेण, दक्खिणुत्तरेण वा ।

अहवा – उभओ त्ति सव्वओ समंता । अद्धजोयणं सह अद्धकोसेण एगदिसाए खेत्तपमाणं भवति । उभयतो वि मेलितं गतागतेण वा सकोसजोयणं भवति । अववायकारणं मोत्तूण एरिसं उस्सग्गेण खेत्तं भवइ । तं वासासु एरिसं खेत्तठवणं ठवेइ – क्षेत्रावग्रहं गृण्हातीत्यर्थः ॥३१६२॥

सो य खेत्तावग्गहो संववहारं पडुच्च छद्दिसिं भवति ।

जओ भण्णति –

उड्ढमहे तिरियम्मि य, सक्कोसं हवति सव्वतो खेत्तं ।
इंदपदमादिएसु, छद्दिसि सेसेसु चउ पंच ॥३१६३॥

उड्ढं, अहो, पुव्वादीयाओ य तिरियदिसाओ चउरो, एतासु छसु दिसासु गिरिमज्झट्ठिताण सव्वतो समंता सकोसं जोयणं खेत्तं भवति । तं च इंदपयपव्वते छद्दिसिं संभवति । इंदपयपव्वतो – गयग्गपव्वतो भण्णति । तस्स उवरिं गामो, अधे वि गामो, मज्झिमसेढीए वि गामो । मज्झिमसेढी ठिताण य चउद्दिसं पि

---

[1] गा० ३१४० ।

गामो, एवं छद्दिसिं पि गामाण संभवो भवति । आतिग्गहणातो अण्णो वि जो एरिसो पव्वतो भवति तस्स वि छद्दिसाओ संभवति । सेसेसु पव्वतेसु चउदिसं पंचदिसं वा भवति । समभूमीए वा णिव्वाघाएण चउद्दिसिं संभवति ॥३१६३॥

वाघायं पुण पडुच्च –

तिण्णि दुवे एक्का वा, वाघाएणं दिसा हवति खेत्ते ।
उज्जाणाउ परेणं, छिण्णमडंबं तु अक्खेत्तं ॥३१६४॥

एगदिसाए वाघाते तिसु दिसासु खेत्तं भवति, दोसु दिसासु वाघाते दोसु दिसासु खेत्तं भवति, तिसु दिसासु वाघाते एगदिसं खेत्तं भवइ । को पुण वाघातो ? महाडवी पव्वतादिविसमं वा समुद्दादि जलं वा, एतेहिं कारणेहिं ताओ चउदिसाओ रुद्धाओ, जेण ततो गामगोकुलादी णत्थि । जं दिसं वाघातो तं दिसं अणुज्जाणं जाव खेत्तं भवइ । परओ अखेत्तं जं छिण्णमंडवं तं अखेत्तं । छिण्णमंडवं णाम जस्स गामस्स णगरस्स वा उग्गहे सव्वासु दिसासु अण्णो गामो णत्थि गोकुलं वा तं छिण्णमंडवं, तं च अखेत्तं भवति ॥३१६४॥

णतिमातिजलेसु इमा विही –

दगघट्टतिण्णि सत्त व, उडुवासासु ण हणंति ते खेत्तं ।
चउरट्ठाति हणंती, जंघद्धेक्को वि तु परेण ॥३१६५॥

दगघट्टो णाम जत्थ अद्धजंघा जाव उदगं ।

उडुबद्धे तिण्णि दगसंघट्टा खेत्तोवघातं ण करेंति, ते भिक्खायरियाए गयागएण छ भवंति, ण हणंति य खेत्तं ।

वासासु सत्त दगसंघट्टा ण हणंति खेत्तं, ते गतागतेण चोद्दस ।

उडुबद्धे चउरो दगसंघट्टा उवहणंति खेत्तं, ते गयागतेण अट्ठ ।

वासासु अट्ठ दगसंघट्टा उवहणंति खेत्तं, ते गतागतेण सोलस । जत्थ जंघद्धातो परतो उदगं तेण एगेण वि उडुबद्धे वासासु उवहम्मति खेत्तं, सो य लेवो भण्णति ॥३१६५॥ गता खित्तट्ठवणा ।

इयाणिं "[1]दव्वट्ठवणा"

दव्वट्ठवणाहारे[1], विगती[2] संथार[3] मत्तए[4] लोए[5] ।
सच्चित्ते[6] अच्चित्ते[7], वोसिरणं गहणधरणादी ॥३१६६॥

आहारे, विगतीसु, संथारगो, मत्तगो, लोयकरणं, सचित्तो सेहो, डगलादियाण य अचित्ताणं उडुबद्धे गहियाणं वोसिरणं, वासावासपाउग्गाण संथारादियाण गहणं, उडुबद्धे वि गहियाण वत्थपायादीण धरणं डगलगादियाण य कारणेण ॥३१६६॥

तत्थ – "[2]आहारे" त्ति पढमद्दारं अस्य व्याख्या –

पुव्वाहारोसवणं, जोगविवड्ढी य सत्तिओ गहणं ।
संचइयमसंचइए, दव्वविवड्ढी पसत्थाओ ॥३१६७॥

---

१ गा० ३१४० । २ गा० ३१६६ ।

जो उडुवद्धितो आहारो सो ओसवेयव्वो ओसारेयव्वो – परित्यागेत्यर्थः। जइ से आवस्सगपरिहाणी ण भवति तो चउरो मासा उववासी अच्छउ। अह ण तरति तो चत्तारि मासा एगदिवसूणा, एवं तिण्णि मासा अच्छित्ता पारेउ, एवं जइ जोगपरिहाणी तो दो मासा अच्छउ, मासं वा, अतो परं दिवसहाणी, जाव दिणे दिणे आहारेउ जोगवुड्ढीए। इमा जोगवुड्ढी जो नमोक्कारइत्तो सो पोरसीए पारेउ, जो पोरिसित्तो सो पुरिमड्ढेण पारेउ, जो पुरिमड्ढइत्तो सो एक्कासणयं करेतु। एवं जहासत्तीए जोगवड्ढी कायव्वा।

किं कारणं ? वासासु चिक्खल्लचिलिविले दुक्खं भिक्खागहणं कज्जति, सण्णाभूमिं च दुक्खं गम्मति, थंडिला हरियमातिएहिं दुव्विसोज्झा भवंति। "आहारट्ठवण" त्ति गयं।

इदाणिं "[1]विगतिट्ठवण" त्ति दारं – "संचइय" त्ति पच्छद्धं। विगती दुविहा – संचतिया असंचितिया य। तत्थ असंचइया – खीरं दधी मंसं णवणीयं, केति ओगाहिमगा य। सेसा उ घय-गुल-मधु-मज्ज-खज्जगविहाणा व संचतिगाओ। तत्थ मधु-मंस-मज्जविहाणा य अप्पसत्थाओ, सेसा खीरातिया पसत्थाओ। पसत्थासु वा कारणे पमाणपत्तासु घेप्पमाणीसु दव्वविवड्ढी कता भवति ॥३१६७॥

णिक्कारणे अणणतरविगतीगहणे दोष उच्यते –

विगतिं विगतीभीतो, विगतिगयं जो उ भुंजए भिक्खू।
विगती विगतिसहावा, विगती विगतिं बला नेइ ॥३१६८॥

विगतिं खीरातियं। विभत्सा विकृता वा गती विगती, सा य तिरियगती णरगगती कुमाणुसत्तं कुदेवत्तं च।

अहवा – विविधा गती संसार इत्यर्थः।

अहवा – संजमो गती, असंजमो विगती, तस्स भीतो। "विगतिगमं" – त्ति विगतिप्रतिकारमित्यर्थः। विगती वा जम्मि वा दव्वे गता तं विगतिगतं भण्णति तं पुण भत्तं पाणं वा। जो तं विगतिं विगतिगतं वा भुंजति तस्स इमो दोसो – "विगती विगतिसभाव" त्ति, खीरातिया भुत्ता जम्हा संजमसभावातो विगतिसभावं करेति, कारणे – कज्जं उवचरित्ता पढिज्जति, विगती विगतिसभावा।

अहवा – विगयसभावा, विकृतस्वभावं विगतसभावं वा जो भुंजति तं सा बला णरगातियं विगतिं णेति प्रापयतीत्यर्थः। जम्हा एते दोसा तम्हा विगतीतो णाहारेयव्वातो उडुवद्धे, वासासु विसेसेण। जम्हा साधारणे काले अतीवमोहुब्भवो भवति, विज्जुगज्जियाइएहिं य तम्मि काले मोहो दिप्पति। कारणे – बितियपदेण – गेण्हेज्जा आहारेज्ज वा – गेलाणे वा आहारेज्ज। एवं आयरिय-बाल-वुड्ढ-दुव्वलस्स वा गच्छोवग्गहट्ठा घेप्पेज्जा ॥३१६८॥

अधवा – सड्ढा णिव्वंधेण णिमंतेज्जा पसत्थाहिं विगतीहिं तत्थिमा विधी –

पसत्थविगतिग्गहणं, तत्थ वि य असंचइय उ जा उत्ता।
संचतिय ण गेण्हंती, गिलाणमादीण कज्जट्ठा ॥३१६९॥

पसत्थविगतीतो खीरं दहिं णवणीयं घयं गुलो तेल्ल ओगाहिगं च, अप्पसत्थाओ महु-मज्ज-मंसा। आयरिय-बाल-वुड्ढाइयाणं कज्जेसु पसत्था असंचइयाओ खीराइया घेप्पंति, संचतियाओ घयाइया ण घेप्पंति, तासु खीणासु जया कज्जं तया ण लब्भति, तेण तातो ण घेप्पंति।

---

1 गा० ३१६६।

अह सड्ढा णिब्बंधेण भणेज्ज ताहे ते वत्तव्वा – "जया गिलाणाति कज्जं भविस्सति तया घेच्छामो, बाल-वुड्ढ-सेहाण य बहूणि कज्जाणि उप्पज्जंति, महंतो य कालो अच्छियव्वो, तम्मि उप्पण्णे कज्जे घेच्छामो" त्ति।

ताहे सड्ढा भणंति – अम्ह घरे अत्थि वित्तं विगतिदव्वं च पभूतमत्थि, जाविच्छा ताव गेण्हह, गिलाणकज्जे वि दाहामो", एवं भणिता संचइयं पि गेण्हंति। गिण्हंताण य अवोच्छिण्णे भावे भणंति – अलाहि पजत्तं। सा य गहिता बाल-वुड्ढ-दुब्बलाणं दिज्जति, बलिय-तरुणाणं ण दिज्जति। एवं पसत्थविगतिग्गहणं ॥३१६९॥

विगतीए गहणम्मि वि, गरहितविगतिग्गहो व कज्जम्मि।
गरहा लाभपमाणे, पच्चयपावप्पडीघातो ॥३१७०॥

महु-मज्ज-मंसा गरहियविगतीणं गहणं आगाढे गिलाणकज्जं "गरहालाभपमाणे" त्ति गरहंतो गेण्हति, अहो! अकज्जमिणं किं कुणिमो, अण्णहा गिलाणो ण पण्णप्पइ, गरहियविगतिलाभे य पमाणपत्तं गेण्हंति, णो अपरिमितमित्यर्थः, जावतिता गिलाणस्स उवउज्जति तंमत्ताए घेप्पमाणीए दातारस्स पच्चयो भवति, पावं अप्पणो अभिलासो तस्स य पडिघाओ कओ भवति, पावदिट्ठीणं वा पडिघाओ कओ भवति, सुवत्तं एते गिलाणट्ठा गेण्हंति ण जीहलोलयाए त्ति ॥३१७०॥ एवं विगतिट्ठवणा गता।

इयाणिं "[1]संथारग" त्ति दारं –

कारणे उडुगहिते उज्झिऊण गेण्हंति अण्णपरिसाडिं।
दाउं गुरुस्स तिण्णि उ, सेसा गेण्हंति एक्केक्कं ॥३१७१॥

उडुवद्धकाले जे संथारगा कारणे गहिता ते वोसिरित्ता अण्णे संथारगा अपरिसाडी वासाजोग्गे गेण्हंति, गुरुस्स तिण्णि दाउं णिवाते पवाते णिवायपवाए। सेसा साधू अहाराइणिया एक्केक्कं गेण्हंति ॥३१७१॥

इयाणिं "[2]मत्तए" त्ति दारं –

उच्चारपासवणखेलमत्तए तिण्णि तिण्णि गेण्हंति।
संजमआएसट्ठा, भिज्जेज्ज व सेस उज्झंति ॥३१७२॥

वरिसाकाले उच्चारमत्तया तिण्णि, पासवणमत्तया तिण्णि, तिण्णि खेलमत्तया। एवं णव घेत्तव्वा। इमं कारणं – जं संजमणिमित्तं वरिसंते एगम्मि वाहडिते बितिएसु कज्जं करेति, असिवादिकारणिएसु अट्ठजायकारणिसु वा आएसिए आगतेसु दलएज्जा, सेसेहिं अप्पणो कज्जं करेंति। एगमादिभिण्णेण वा सेसेहिं कज्जं करेंति। (एस सा) जे उडुवद्धगहिया ते उज्झंति। उभयो कालं पडिलेहणा कज्जति। दिया रातो वा अवासंते जति परिभुजंति तो मासलहुं, जाहे वासं पडति ताहे परिभुंजंति, जेण अभिग्गहो गहितो सो परिट्ठवेति, उल्लो ण णिक्खिवियव्वो, अपरिणयसेहाणं ण वाइज्जति ॥३१७२॥ "मत्तए" त्ति गयं।

इयाणिं "[3]लोए" त्ति –

धुवलोओ य जिणाणं, णिच्चं थेराण वासवासासु।
असहू गिलाणस्स व, तं रयणिं तू णऽतिक्कामे ॥३१७३॥

---

१ गा० ३१६६। २ गा० ३१६६। ३ गा० ३१६६।

उडुबद्धे वासावासासु वा जिणकप्पियाणं धुवलोग्रो दिने दिने कुर्वंतीत्यर्थः। थेराण वि वासासु धुवलोग्रो चेव। ग्रसहुगिलाणा पज्जोसवणरातिं णातिक्कमंति। ग्राउक्काइयविराहणाभया संसज्जणभया य वासासु धुवलोग्रो कज्जति ॥३१७३॥ "लोए" त्ति गतं।

इदाणिं "[1]सचित्ते" त्ति –

मोत्तुं पुराण-भावितसड्ढे सच्चित्तसेसपडिसेहो।
मा होहिति णिद्धम्मो, भोयणमोए य उड्डाहो ।३१७४॥

जो पुराणो भावियसड्ढो वा एते मोत्तुं सचित्ते – सेसा सचित्ता ण पव्वाविज्जति। ग्रह पव्वाविति सेहं सेहिं वा तो चउगुरुं ग्राणातिया य दोसा। वासासु पव्वावितो मा होहिति णिद्धम्मो तेण ण पव्वाविज्जति।

कहं "णिद्धम्मो" भवति ? उच्यते – "वासंते मा णीहि, ग्राउक्कायातियविराधणा भवति"।

ताहे सो भणाति – जइ एते जीवा ती णिसग्गमाणे किं भिक्खं गेण्ह ? वियारभूमिं वा गच्छह ? कहं वा तुब्भे ग्रहिंसगा साहवो य वासासु चलणे ण धोवंति पायलेहणियाए णिल्लिहंति ?

ताहे सो भणाति – ग्रसुद्धं चिक्खल्लं मद्दिऊण पाए ण धोवंति, ग्रसुइणो एते, समलस्स य कग्रो धम्मो।

एवं विप्परिणतो उण्णिक्खमति।

ग्रहवा – सागारियं काउं साहवो पाए धोवंति ततो ग्रसामायारी पाउसदोसो य, ग्रसमंजसं ति काउं ण सहति णिद्धम्मो ग्र भवति।

"भोयणमोए य उड्डाहो" त्ति वासे पडते ग्रभाविते सेहे [2]वहीतो ग्राणितं जइ मंडलीए भुंजति तो उड्डाहं करेति, पाणा इव एए परोप्परं संकट्ठं भुंजंति। ग्रहंपि णेहिं विट्टालितो। ताहे विप्परिणमति। ग्रह मंडलीए ण भुंजति ताहे ग्रसामायारी समया य ण कता भवति। जति वा ते साहवो णिस्सग्गमाणे मत्तएसु उच्चार-पासवणाति ग्रायरंति, सो य तं दट्ठुं विप्परिणामेज्जा, उण्णिक्खमते, उड्डाहं च करेति। ग्रह साहवो सागारियं ति काउं धरेंति तो ग्रायविराहणा। ग्रह णिसग्गंते चेव णिसिरंति तो संजमविराधणा। जम्हा एवमादिदोसा तम्हा वासासु पज्जोसविते ण पव्वावेतव्वो। पुराणसड्ढेसुं पुण एते दोसा ण भवंति, तेण ते पव्वाविज्जंति।

कारणे पज्जोसविते वि पव्वाविज्जंति। ग्रतिसति जाणिऊण जत्थ पुव्वुत्ता दोसा णत्थि तं पव्वावेति। ग्रणतिसति वि ग्रव्वोच्छित्तिमाइकारणेहिं पव्वावेति।

इमं च जयणं करेंति – विचित्तं महतिं वसहिं गेण्हंति, ग्राउक्कायजीवचोदणे पण्णविज्जति, ग्रसरीरो धम्मो णत्थि त्ति काउं, मंडलीमोएसु जत्तं करेंति, ग्रण्णाए वसहीए ठवेंति, जत्तेण य उवचरंति ॥३१७४॥ "सचित्ते" त्ति गयं।

इदाणिं "[3]ग्रचित्ते" त्ति दारं –

डगलच्छारे लेवे, छड्डण गहणे तहेव धरणे य।
पुंछण-गिलाण-मत्तग, भायणभंगाति हेतू से ॥३१७५॥

छार-डगल-मल्लमातीणं गहणं, वासा उडुबद्धगहियाण वोसिरणं, वत्थातियाण धरणं, छाराइयाण वा धरणं, जति ण गेण्हंति तो मासलहुं, जा य तेहिं विणा गिलाणातियाण विराहणा, भायणे वि विराधिते

१ गा० ३१६६। २ वसहीग्रो ग्रणिते। इत्यपि प्रत्यन्तरे। ३ गा० ३१६६।

लेवेण विणा । तम्हा घेत्तव्वाणि । छारो गहितो एककोणे घणो कज्जति । जति ण कज्जं तलियाहिं तो विगिंचिज्जंति । अह कज्जं ताहि तो छारपुंजस्स मज्झे ठविज्जति । पणयमादि-संसज्जणभया उभयं कालं तलियाडगलादियं च सव्वं पडिलेहेंति । लेवं संजोएत्ता अप्पडिभुज्जमाणभायणहेट्ठा पुप्फगे कीरति, छारेण य उग्गुंठिज्जति, सह भायणेण पडिलेहिज्जति, अह अपडिभुज्जमाणं भायणं णत्थि ताहे मल्लगं लिंपिऊण पडिहत्थं भरिज्जति । एवं काणइ गहणं काणइ वोसिरणं काणइ गहणधरणं ॥३१७५॥ "दव्वट्ठवणा" गता ।

इयाणिं "[1]भावट्ठवणा"

इरिएसण[2] भासाणं[3] मणवयसा[4] कायए[5] य[6] दुच्चरिते[7][8] ।
अहिकरणकसायाणं[9][10], संवच्छरिए वि ओसवणं ॥३१७६॥

इरियासमिती एसणासमिती भासासमिती एतेसिं गहणे – आयाण-णिक्खेवणासमिती परिट्ठावणिया-समितीय गहियातो । एतासु पंचसु वि समितीसु वासासु समिएण भवियव्वं ।

एवं उक्ते चोदगाह – "उडुबद्धे किं असमितेण भवितव्वं ? जेण वासासु पंचसु वि समितीसु उवउत्तेण भवियव्वमिति भणसु ?"

आचार्याह –

कामं तु सव्वकालं, पंचसु समितीसु होति जतियव्वं ।
वासासु अहीकारो, वहुपाणा मेदिणी जेणं ॥३१७७॥

"कामं तु" । काममवधृतार्थे, यद्यपि सर्वकालं समितो भवति तहावि वासासु विसेसेण अहिकारो कीरइ जेणं तदा वहुपाणा मेदिणी आगासं च । मेदिणि त्ति पुढवी एवं ताव सव्वासिं सामण्णं भणियं॥३१७७॥

इदाणिं एक्केक्काए समितीए दोसा भणंति –

भासणे संपातिवहो, दुण्णेओ णेहछेदु ततियाए ।
इरितचरिमासु दोसु य, अपेह अपमज्जणे पाणा ॥३१७८॥

"भासणे" त्ति भासासमितीते असमियस्स असमंजसं भासमाणस्स मक्खिगातिसंपातिमाण मुहे पविसंताण वधो भवति, आदिग्गहणातो आउक्कायफुसिता सचित्तपुढविरतो सचित्तवाओ य मुहे पविसति ।

"ततिया" एसणासमिती पडिक्कमणऽज्झयणे सुत्ताभिहिताणुक्कमेण वासासु उवउत्तस्स वि विराहणा, किं पुण अणुवउत्तस्स । उदउल्लपुरेकम्माणं च हत्थमत्ताणं णेहच्छेदं दुक्खं जाणंति, स्निग्धकालत्वात् दुर्ज्ञेयो दुर्विज्ञेय आउक्काइयच्छेदो परिणती – अचित्ती भवतीत्यर्थः ।

"इरिए" त्ति – इरियासमितताए अणुवउत्तो छज्जीवणिकाए विराहेति ।

"चरिमासु दोसु" त्ति – आयाणणिक्खेवणासमिती पारिट्ठावणियासमिती य, एताओ दो चरिमाओ । एयासु अणुवउत्तो जइ पडिलेहणपमज्जणं ण करेति दुप्पडिलेहिय-दुप्पमज्जियं वा करेति ण पमज्जति वा, एयासु वि एवं छज्जिवणिकायविराहणा भवति । पंच समितीओ उदाहरणाओ जहा आवस्सए ॥३१७८॥

---

१ गा० ३१४० ।

मण-वयण-कायगुत्तो, दुच्चरियाति व णिच्चमालोए ।
अहिकरणे तु दुरूवग, पज्जोए चेव दुमए य ॥३१७९॥

मणेणं वायाए काएण य गुत्तो भवति । गुत्तीणं उदाहरणा जहा 'आवस्सए' । जं किं चि मूलगुणे उत्तरगुणेसु समितीसु गुत्तीसु वा उदुबद्धे वासासु य दुच्चरियं तं वासासु खिप्पं आलोएयव्वं ।

इयाणिं – "अधिकरण" त्ति – अधिकरणं कलहो भण्णति, तं च जहा 'चउत्थोद्देसे' वण्णियं तहा इहावि सवित्थरं दट्ठव्वं । तं च ण कायव्वं, पुव्वुप्पण्णं च ण उदीरियव्वं । पुव्वुप्पण्णं जइ कसायुक्कडताए न खामितं तो – पज्जोसवणासु अवस्सं विओसवेयव्वं । अधिकरणे इमे दिट्ठंता दुरूवगामोवलक्खियं, पज्जोतो, दमओ य ॥३१७९॥

तत्थ "दुरूवग" त्ति उदाहरणं – आयरियजणवयस्स अंतग्गामे एक्को कुंभारो । सो कुडगाणं भंडि भरिऊण पच्चंतगा दुरूतगं णामयं गतो । तेहिं य दुरूतगव्वेहिं गोहेहिं एगं बइल्लं हरिउकामेहिं भण्णति –

एगबतिल्लं भंडिं, पासह तुब्भे वि डज्झंतखलहाणे ।
हरणे ज्झामण भाणग, घोसणता मल्लजुद्धेसु ॥३१८०॥

"भो भो पेच्छह इमं अच्छेरं, एगेण बइल्लेण भंडी गच्छति"। तेण वि कुंभकारेण भणियं– "पेच्छह भो इमस्स गामस्स खलहाणाणि डज्झंति" । अतिगया भंडी गाममज्झे ठिता । तस्स तेहिं दुरूवगव्वेहिं छिद्दं लभिऊण एगो बइल्लो हडो । विक्कयं गया कुलाला, ते य गामिल्लया जातिता – देह बइल्लं । ते भणंति – तुमं एक्केण चेव बइल्लेण आगयो । ते पुणो जातिता । जाहे ण देंति ताहे सरयंकाले सव्वधण्णाणि खलधाणेसु कतानि, ताहे अग्गी दिण्णो । एवं तेण सत्त वरिसाणि झामिता खलधाणा । ताहे अट्ठमे वरिसे दुरूवगगामेल्लएहिं मल्लजुद्धमहे वट्टमाणो भाणगो भणितो – घोसिहि भो जस्स अम्हेहिं अवरद्धं तं खामेमो, जं च गहियं तं देमो, मा अम्ह सस्से दहउ । ततो भाणएण उग्घोसियं ॥३१८०॥

ततो कुंभकारेण भाणगो भणितो भो इमं घोसेहि –

अप्पिणह तं बइल्लं, दुरूवगा तस्स कुंभकारस्स ।
मा भे डहिहिति धण्णं, अण्णाणि वि सत्त वरिसाणि ॥३१८१॥

भाणगेण उग्घोसियं तं । तेहि दुरूवगव्वेहिं सो कुंभकारो खामितो । दिण्णो य से बइल्लो ।

इमो य से उवसंहारो –

जति ता तेहिं असंजतेहिं अण्णाणीहिं होंतेहिं खामियं तेण वि खमियं, किमंग पुण संजएहिं नाणीहिं य । जं कयं तं सव्वं पजोसवणाए खामेयव्वं च, एवं करंतेहिं संजमाराहणा कता भवति ॥३१८१॥

अहवा – इमो दिट्ठंतो पज्जोओ त्ति –

चंपा अणंगसेणो, पंचऽच्छर थेर नयण दुम वलए ।
विह पास णयण सावग, इंगिणि उववाय णंदिवरे ॥३१८२॥

वोहण पडिमोद्दायण, पभाव उप्पाय देवदत्तदे ।
मरणुववाते तावस, नयणं तह भीसणा समणा ॥३१८३॥

गंधारगिरी देवय, पडिमागुलियागिलाणपडियरणं ।
पज्जोयहरण पुक्खर, रणगहणे णामश्रो सवणा ॥३१८४॥

इहेव जंबुद्दीवे श्रड्ढभरहे 'चंपा' णाम णगरी, 'श्रणंगसेणो' णाम सुवण्णगारो । सो य श्रतीव थीलोलो । सो य जं रूववइं कण्णं पासति तं बहुं दविणजायं दाउं परिणेइ । एवं किल तेण पंच इत्थिसया परिणीया । सो ताहिं सद्धिं माणुस्सए भोगे भुंजमाणो विहरइ । इतो य 'पंचसेलं' णाम दीवं । तत्थ 'विज्जुमाली' णाम जक्खो परिवसइ । सो य चुतो । तस्स दो श्रग्गमहिसीतो – 'हासा पहासा' य । ताश्रो भोगत्थिणीतो चिंतेति – किंचि उवप्पलोभेमो । ताहिं य दिट्ठो 'श्रणंगसेणो' । सुंदरे रूवे विउव्विऊण तस्स 'श्रसोगवणियाए' णिलीणा । ताश्रो दिट्ठातो श्रणंगसेणेण । ततो य तस्स मणक्खेवकरे विब्भमे दरिसेंति । श्रक्खितो सो ताहिं, हत्थं पसारेउमारद्धो ।

ताहे भणितो – "जति ते श्रम्हेहिं कज्जं तो पंचसेलदीवं एज्जह" त्ति भणित्ता – ताश्रो श्रदंसणं गता ।

इयरो विविहप्पलावीभूश्रो श्रसत्थो रण्णो पण्णगारं दाऊण उग्घोसणपडहं णीणावेति इमं उग्घोसिज्जति – "जो श्रणंगसेणयं पंचसेलं दीवं पावेति तस्स सो दविणस्स कोडिं पयच्छति" । एवं घुस्समाणे णावियथेरेण भणियं – "श्रहं पावेमि" त्ति, छिक्को पडहो । तस्स दिण्णा कोडी ।

ते दुवे गहियसंवला दूरूढा णावं । जाहे दूरं गया ताहे णाविएण पुच्छितो – किं चि श्रग्गतो जलोवरि पाससि ?

तेण भणियं "ण व" त्ति ।

जाहे पुणो दूरं गतो ताहे पुणो पुच्छति, णेतेण भणियं – किंचि माणुससिरप्पमाणं घणंजण-वण्णं दीसति ।

णाविएण भणियं – एस पंचसेलदीवणगस्स धाराए ठितो वडरुक्खो ।

एसा णावा एतस्स श्रहेण जाहित्ति, एयस्स परभागे जलावत्तो ।

तुमं किंचि संवलं घेत्तुं दक्खो होउं वडसालं विलग्गेज्जसि ।

श्रहं पुण सह णावाए जलावत्ते गच्छीहामि ।

तुमं पुण जाहे जलं वेलाए उश्रत्तं भवति ताहे णगधाराए णगं श्रारुभित्ता परतो पच्चोरुभित्ता पंचसेलयं दीवं जत्थ ते श्रभिप्पेयं तत्थ गच्छेज्जसु ।

श्रण्णे भणंति –

(तुमं एत्थ वडरुक्खे श्रारूढो ताव श्रच्छसु, जाव उ संज्झावेलाए महंता पक्खिणो श्रागमिण्यंति पंचसेलदीवातो । ते रातो वसित्ता पभाए पंचसेलगदीवं गमिस्संति । तेसिं चलणविलग्गो गच्छेज्जसु ।)

जाव य सो थेरो एवं कहेति ताव संपत्ता वडरुक्खं णावा ।

'अणंगसेणो' वडरुक्खमारूढो ।

णावियथेरो सह णावाए जलावत्ते गतो ।

एतेसिं दोण्ह पगाराणं अन्नतरेण तातो दिट्ठातो । ताहिं संभट्ठो, भणिओ य ण एरिसेण असुइणा देहेण अम्हे परिभुञ्जामो ।

किंचि वाल-तवचरणं काउं णियाणेण य इहे उववज्जसु, ताहे सह अम्हेहिं भोगे भुंजहसि ।

ताहिं य से सुस्सादुमंते पत्तपुप्फफले य दत्ते उदगं च । सीयलच्छायाए पासुत्तो ।

ताहिं य देवताहिं पासुत्तो चेव करयलपुडे छुभित्ता चंपाए सभवणे क्खित्तो, विबुद्धो य पासति – सभवणं सयणपरिजणं च । आढत्तो पलविउं "हासे पहासे" ।

लोगेण पुच्छिज्जंतो भणाति – दिट्ठं सुयमणुभूयं जं वत्तं पंचसेलए दीवे ।

तस्स य वयंसे णाइलो णाम सावओ, सो से जिणपण्णत्तं धम्मं कहेति – "एयं करेहि । ततो सोधम्माइसु कप्पेसु दीहकालठितीओ सह वेमाणिणीहिं उत्तमे भोगे भुंजिहिसि, किमेतेहिं वधूतेहिं वाणमंतरीएहिं अप्पकालट्ठितीएहिं" ।

सो तं असद्दहंतो सयणपरियणं च अगणंतो णियाणं काउं इंगिणिमरणं पडिवज्जति । कालगओ उववण्णो पंचसेलए दीवे 'विज्जुमाली णाम जक्खो', हासपहासाहिं सह भोगे भुंजमाणो विहरति ।

सो वि णाइलो सावगो सामण्णं काउं आलोइअ-पडिक्कंतो कालं काउं अच्चुत्ते कप्पे सामाणितो जातो । सो वि तत्थे विहरति ।

अण्णया णंदीसरवरदीवे अट्ठाहिमहिमणिमित्तं सयं इंदाणित्तेहिं अप्पणऽप्पणो णितोगेहिं णिउत्ता देवसंघा मिलंति ।

'विज्जुमालि' जक्खस्स य आउज्जणियोगो । पडहमणिच्छंतो वला आणीतो देवसंघस्स य दूरत्थो आयोज्जं वायंतो, णाइलदेवेण दिट्ठो । पुव्वाणुरागेण तप्पडिवोहणत्थं च णाइल देवो तस्स समीवं गतो । तस्स य तेयं असहमाणो पडहमंतरे देति ।

णाइलदेवेण पुच्छितो – मं जाणसि त्ति ।

विज्जुमालिणा भणियं – को तुब्भे सक्काइए इंदे ण याणइ ?

देवेण भणियं – परभवं पुच्छामि, णो देवत्तं ।

विज्जुमालिणा भणियं – "ण जाणामि" ।

ततो देवेण भणियं - "अहं ते परभवे चंपाए णगरीए वयंसओ आसी णाइलो णाम । तुमे तया मम वयणं ण कयं तेण अप्पिड्ढिएसु उववण्णो, तं एवं गए वि जिणप्पणीयं धम्मं पडिवज्जसु । धम्मो से कहितो, पडिवण्णो य ।

ताहे सो विज्जुमाली भणाति – इदाणिं किं मया कायव्वं ?

अच्चुयदेवेण भणियं – वोहिणिमित्तं जिण-पडिमा अवतारणं करेहि । ततो विज्जुमाली अट्ठाहियमहिवत्ते गंतुं चुल्लिहिमवंतं गोसीसदारुमयं पडिमं देवयाणुभावेण णिव्वत्तेति, रयण-

विचित्ताभरणेहिं सव्वालंकारविभूसियं करेति, अण्णस्स य गोसीसचंदणदारुस्स मज्झे पक्खिवति, चिंतेति य "कत्थिमं णिवेसेमि" ।

इतो य समुद्दे वणियस्स पवहणं दुच्चा पुणो गहियं डोल्लति, तस्स य डोलायमाणस्स छम्मासा वट्टति । सो य वणिओ भीतोव्विग्गो धूवकडच्छुयहत्थो इट्ठदेवया-णमोक्कारपरो अच्छति । विज्जुमालिणा भणियं – "भो भो मणुया ! अज्जं पभाए इमं ते जाणपत्तं वीतीभए णगरे कूलं पाविहिति । इमं च गोसीसचंदणदारुं, पुरजणवयं उदायणं च रायाणं मेलेउं भणेज्जासि – एत्थ देवाहिदेवस्स पडिमं करेज्जह" एसा देवाणवत्ती ।

तओ देवाणुभावेण; नावा पत्ता वीईभयं ।

तओ वणिओ अग्घं घेत्तुं गओ रायसमीवं, भणियं च तेण "इत्थ गोसीसचंदणे देवाधिदेवस्स पडिमा कायव्वा" । सव्वं जहावत्तं वणिएण रण्णो कहियं, गओ वणिओ ।

रण्णा वि पुरचतुवेज्जे(वण्णे) मेलेउं अक्खियं अक्खाणयं । सद्दिआ वणकुट्टगा – "इत्थ पडिमं करेहि" त्ति ।

कते अधिवासणे बंभणेहिं भणियं – देवाहिदेवो बंभणो तस्स पडिमा कीरउ, वाहितो कुठारो ण वहति ।

अण्णेहिं भणियं – विण्हु देवाधिदेवो । तहावि तं ण वहति ।

एवं खंद रुद्दाइया देवयगणा भाणेत्ता सत्थाणि वाहिताणि ण वहंति । एवं संकिलिस्संति ।

इतो य पभावतीए आहारो रण्णो उवसाहितो ।

जाहे राया तत्थऽवक्खित्तो ण गच्छती ताहे पभावतीए दासचेडी विसज्जिता – गच्छ, रायाणं भणाहि – वेलाइक्कमो वट्टति, सव्वमुवसाहियं किण्ण भुंजह त्ति ?

गया दासचेडी, सव्वं कहियं ।

ततो राइणा भणियं – सुहियासि, अम्हं इमेरिसो कालो वट्टति । पडिगया दासचेडी । ताए दासचेडीए सव्वं पभावतीए कहियं । ताहे पभावती भणति – "अहो मिच्छद्दंसणमोहिता देवाधिदेवं पि ण मुणंति" ।

ताहे पभावती ण्हाया कयकोउयमंगला सुक्किल्ल-वास-परिहाण-परिहया बलि-पुप्फ-धूव-कडच्छूय-हत्था गता ।

ततो पभावतीए सव्वं बलिमादिकाउं भणियं – "देहाधिदेवो महावीरवद्धमाणसामी, तस्स पडिमा कीरउ" त्ति पहराहि । वाहितो कुहाडो, एगघाए चेव दुहा जातं, पेच्छंति य पुव्वणिव्वत्तियं सव्वालंकारभूसियं भगवओ पडिमं, सा णेउ रण्णा घरसमीवे देवाययणं काउं तत्थ ठिया ।

तत्थ किण्हगुलिया णाम दासचेडी देवयसुस्सूसकारिणी णिउत्ता । अट्ठमि-चाउद्दसीसु पभावती देवी भत्तिरागेणं सयमेव णट्टोवहारं करेति ।

राया वि तयाणुवत्तीए मुरए वाएति ।

अण्णया पभावतीए णट्टोवहारं करेंतीए रण्णा सिरच्छाया ण दिट्ठा । "उप्पाउ" त्ति काउं अमंगुल-चित्तस्स रण्णो णट्टसममुरवक्खोडा (ण) पडंति त्ति रुट्ठा महादेवी "अवज्ज" त्ति काउं ।

ततो रण्णा लवियं - "णो मे अवज्ञा, मा रूससु, इमेरिसो उप्पाओ दिट्ठो, ततो चित्ता-कुलताए मुरवक्खोडयाणचुक्को" त्ति।

ततो पभावतीए लवियं – जिणसासणं पवण्णेहिं मरणस्स ण भेयव्वं।

अण्णया पुणो वि पभावतीए ण्हायकयकोउयाते दासचेडी वाहित्ता "देवगिहपवेसा सुद्धवासा आणेहि" त्ति भणिया।

ते य सुद्धवासा आणिज्जमाणा कुसुंभरागरत्ता इव अंतरे संजाता उप्पायदोसेणं।

पभावतीए अद्दाए मुहं णिरक्खंतीए ते वत्था पणामिता।

ततो रुट्ठा पभावती "देवयायणं पविसंतीए किं मे अमंगलं करेसि त्ति, किमहं वासघर-पवेसिणि" त्ति, अद्दाएणं दासचेडी संखावत्ते आहया। मता दासचेडी खणेण। वत्था वि साभाविता जाता।

पभावती चिंतेति – "अहो मे णिरवराहा वि दासचेडी वावातिया, चिराणुपालियं च मे थूलगपाणाइवायवयं भग्गं, एसो वि मे उप्पाउ" त्ति।

ततो रायाणं विण्णवेति – "तुब्भेहिं अणुण्णाया पव्वज्जं अब्भुवेमि। मा अपरिचत्त-कामभोगा मरामि" त्ति।

रण्णा भणियं – "जति मे सद्धम्मे बोहेहिसि" त्ति।

तीए अब्भुवगया णिक्खंता, छम्मासं संजममणुपालेत्ता आलोइयपडिक्कंता मता उववन्ना वेमाणिएसुं।

ततो पासित्ता पुव्वं भवं पुव्वाणुरागेण संगारविमोक्खणत्थं च बहूहिं वेसंतरेहिं रण्णो जइणं धम्मं कहेति।

राया वि तावसभत्तो तं णो पडिवज्जेति।

ताहे पभावतीदेवेणं तावसवेसो कतो, पुप्फफलोदयहत्थो रण्णो समीवगं गतो। अतीव एगं रमणीयं फलं रण्णो समप्पियं। रण्णा अग्घायं सुरभिगंधं ति, आलोइयं चक्खुणा सुरूवं ति, आसातियं अम(य)रसोवमं ति।

रण्णा य पुच्छित्तो तावसो – कत्थ एरिसा फला संभवंति ?

इतो णाइदूरासण्णे तावसासमे एरिसा फला भवंति।

रण्णा लवियं – दंसेहि मे तं तावासमं, ते य रुक्खा।

तावसेण भणियं – एहि, दुयग्गा वि त वयामो। दो वि पयाता।

राया य मउडातिएण सव्वालंकारविभूसितो गतो पेच्छति य मेहणिगुरंबभूतं वणसंडं। तत्थ पविट्ठो दिट्ठो तावसासमो, तावसाऽऽसमे य पेच्छति स दारे पत्ते गंधं दिव्वं।

दिट्ठिते य मंतेमाणे णिसुणेइ एस राया एगागी आगतो सव्वालंकारो मारेउं गेण्हामो से आभरणं।

राया भीतो पच्छओसक्किउमारद्धो।

तावसेण य कूवियं – धाह धाह एस पलातो गेण्ह।

ताहे सव्वे तावसा भिसियगणे तियंतियकमंडलुहत्था धाविता, हण हण गेण्ह गेण्ह मारह त्ति भणंता – रण्णो अणुमग्गतो लग्गा ।

राया भीतो पलायंतो पेच्छइ – एगं महंतं वणसंडं । सुणेति तत्थ माणुसालावं । एत्थ सरणं ति मण्णमाणो तं वणसंडं पविसति । पेच्छइ य तत्थ चंदमिव सोमं, कामदेवमिव रूववं, णागकुमारमिव सुणेवत्थं, वहस्सतिं व सव्वसत्थविसारयं, वहूणं समणाणं सावगाणं साविगाण य सुस्सरेण सरेणं धम्ममक्खायमाणं समणं ।

तत्थ राया गतो सरणं सरणं भणंतो ।

समणेण य लविय – "ते ण भेतव्वं" त्ति ।

"छुट्टोसि" त्ति भणिता तावसा पडिगता ।

राया वि तेसिं विप्परिणतो इसिं आसत्थो । धम्मो य से कहितो, पडिवण्णो य धम्मं ।

पभावतिदेवेण वि सव्वं पडिसंघरियं ।

राया अप्पाणं पेच्छति सिंघासणत्थो चेव चिट्ठामि, ण कहिं वि गतो आगतो वा, चिंतेति य किमेयं ति ?

पभावतिदेवेण य आगासत्थेण भणियं – सव्वमेयं मया तुज्झ पडिवोहणत्थं कयं, धम्मे ते अविग्घं भवतु, अण्णत्थ वि मं आवतकप्पे संभरेज्जासि त्ति लवित्ता गतो पभावती देवो ।

सव्वपुरजणवएसु पारंपरिणणिग्घोसो णिग्गतो–वीतीभए णगरे देवावतारिता पडिमा त्ति ।

इतो य 'गंधारा' जणवयातो सावगो पव्वइतुकामो सव्वतित्थकराणं जम्मण-णिक्खमण-केवलुप्पाय-णिव्वाणभूमीओ दट्ठुं पडिणियत्तो पव्वयामि त्ति ।

ताहे सुतं 'वेयड्ढगिरिगुहाए' रिसभातियाण तित्थकराणं सव्वरयणविचित्तियातो कणग-पडिमाओ ।

साहू सकासे सुणेत्ता ताओ दच्छामि त्ति तत्थ गतो । तत्थ देवताराधणं करेत्ता विहा-डियाओ पडिमाओ ।

तत्थ सो सावतो थयथुतीहिं थुणंतो अहोरत्तं णिवसितो। तस्स णिम्मलरयणेसु ण मणाग-मवि लोभो जातो ।

देवता चिंतेति – "अहो माणुसमलुद्ध" ति ।

तुट्ठा देवया, "व्रूहि वरं" भणंती उवट्ठिता ।

ततो सावगेण लवियं – "णियत्तो हं माणुसएसु कामभोगेसु, किं मे वरेण कज्जं ति ?

"अमोहं देवतादंसणं" ति भणित्ता देवता अट्ठसयं गुलियाणं जहाचिंतितमणोरहाणं पणामेति ।

ताओ गहिताओ सावतेण, ततो णिग्गतो । सुयं चणेण जहा वीतीभए णगरे सव्वालं-कारविभूसिता देवावतारिता पडिमा । तं दच्छामि त्ति, तत्थ गतो, वंदिता पडिमा । कति विं दिणे पज्जुवासएमि त्ति तत्थेव देवतायणे ठितो, तो य सो तत्थ गिलाणो जातो । "देसितो सावगो" काउं कण्हगुलियाए पडियरितो । तुट्ठो सावगो । किं मम पव्वतितुकामस्स गुलियाहिं ? एस भोगत्थिणी तेण तीसे जहाचिंतयमणोरहाणं अट्ठसयं गुलियाणं दिण्णं, गतो सावगो।

ततो वि किण्हगुलियाए विण्णा(स)णत्थं किमेयाओ सव्वं जहाचिंतियमणोरहाओ उ णेति ? जइ सच्चं तो "हं उत्तत्तकणगवण्णा सुरूवा सुभगा य भवामी" ति एगा गुलिया भक्खिया। ताहे देवता इव कामरूविणी परावत्तियवेसा उत्तत्तकणगवण्णा सुरूवा सुभगा य जाया।

ततो पभिति जणो भासिउमाढत्तो एस किण्हगुलिया देवताणुभावेण उत्तत्तकणगवण्णा जाया, इयाणिं होउ से णामं "सुवण्णगुलिय" त्ति, तं च घुसितं सव्वजणवएसु।

ततो सा सुवण्णगुलिगा गुलिग-लद्धपच्चया भोगत्थिणी एगं गुलियं मुहे पक्खिविउं चिंतेति- "पज्जोयणो मे राया भत्तारो भविज्ज" त्ति।

वीतीभयाओ उज्जेणी किल असीतिमित्तेसु जोयणेसु।

तत्थ व अकम्हा रायसभाए पज्जोयस्स अग्गतो पुरिसा कहं कहंति-"वीतीभते णगरे देवावतारियपडिमाए सुस्सूसकारिगा कण्हगुलिगा देवताणुभावेण सुवण्णगुलिगा जाता, अतीव-सोहग्गलावन्नजुत्ता बहुजणस्स पत्थणिज्जा जाता।"

तं सुणेत्ता पज्जोओ तस्स गुलुम्मातितो दूतं विसज्जेति उदायणस्स - "एयं सुवण्णगुलियं समं विसज्जेसु" त्ति।

गओ दूतो, विण्णत्तो उदायणो।

उदायणेण रुट्ठेण विसज्जितो, अस्सकारियाऽसम्माणितो य दूतो। जहावत्तं दूतेण पज्जोयस्स कहियं।

पुणो पज्जोएण रहस्सितो दूतो विसज्जिओ सुवण्णगुलियाए जइ मं इच्छसि वा तोऽहं रहस्सियमागच्छामि।

तीए भणियं - जति पडिमा गच्छति तो गच्छामि, इयरहा णो गच्छे।

गंतुं दूतेण कहियं पज्जोयस्स।

ततो पज्जोतोऽणलगिरिणा हत्थिरयणेण [1]सण्णद्धणिमियगुडेण अप्पपरिच्छडेणागतो, अहोरत्तेण पत्तो, पओसवेलाए पविट्ठा चरा, कहियं सुवण्णगुलियाते।

तत्थ य बालवसंतकाले लेपगमहे वट्टमाणे पुव्वकारिता पज्जोएण लेपगपडिमा मंडियपसा-धिता गीताओज्जणिग्घोसेण रायभवणं पवेसिता देवतावतारियपडिमाययणं च।

भवियव्वताए छलेण य तम्मि आययणे सा ठविता। इयरा देवावतारियपडिमा कुसुमो-मालियगीयवाइत्तणिग्घोसेण सव्वजणसमक्खे लेप्पगछलेण णिता सुवण्णगुलिगा य।

पडिमं सुवण्णगुलिगं च पज्जोतो हरिउं गतो।

जं च रयणिंऽणलगिरी वीतीभए णगरे पवेसितो तं रयणिं अंतो जे गया तेऽणलगिरिणो गंधहत्थिणो गंधेण आलाणखंभं भंतुं सव्वे वि लुलिया सव्वजणस्स य जायंति।

महामंतिजणेण य उण्णीयं-णूणं एत्थऽणल गिरी हत्थी खंभविप्पणट्ठो आगतो, अण्णो वा कोइ वणहत्थी।

पभाए रण्णा गवेसावियं। दिट्ठोऽणलगिरिस्स आणिमलो। पवंत्तिवाहनेणकहियं-रण्णो

---

१ सन्नद्ध स्थापितकवचेन।

आगतो पज्जोतो पडिगओ य । गवेसाविता सुवण्णगुलिगा य त्ति, णायं तदट्ठा आगतो आसि त्ति । रण्णा भणियं – पडिमं गवेसहि त्ति । गविट्ठा । कुसुमोमालिया चिट्ठइ न व त्ति, देवतावतारियपडिमाए य गोसीसचंदणसीताणुभावेण य कुसुमा णो मिलायंति । ण्हायपयतोतराया मज्झण्ह देसकाले देवाययणं अतिगओ, पेच्छती य पुव्वकुसुमे परिमिलाणे ।

रण्णा चिंतियं – किमेस उप्पातो, उत अण्णा चेव पडिम त्ति ? ताहे अवणेउं कुसुमे णिरिक्खिता, णायं हडा पडिमा ।

रुट्ठो उदायणो दूतं विसज्जेति, जइ ते हडा दासचेडी तो हडा णाम, विसज्जेह मे पडिमं ।

गतपच्चागतेण दूतेण कहियं उदायणस्स – ण विसज्जेति पज्जोओ पडिमं ।

ततो उदायणो दसहिं मउडवद्धरातीसह सव्वसाहण-वलेण पयातो । कालो य गिम्हो वट्टति । मरुजणवयमुत्तरंतो य जलाभावे सव्वखंधवारो ततियदिणे तिसाभिभूतो विसण्णो । उदायणस्स रण्णो कहियं ।

रण्णा वि अप्पवहुं चिंतिउं णत्थि अण्णो उवातो सरणं वा, णत्थि परं पभावतिदेवो सरणं ति, पभावतिदेवो सरणंसि कओ । पभावतिदेवस्स कयसिंगारस्सासणकंपो जाओ, तेण ओही पउत्ता, दिट्ठा उदायणस्स रण्णो आवत्ती ।

ततो सो आगतो तुरंतो पिणद्ध खं परं जलधरेहिं पुव्वं अप्पातितो जणवओ पविरल-तुसारसीयलेण वायुणा । ततो पच्छा वालपरिक्खितं व जलं जलधरेहिं मुक्कं सरस्स तं च जलं देवता-कय-पुक्खरणीतिए संठियं, देवयकयपुक्खरणि त्ति अबुहजणेणं "ति पुक्खरं" ति तित्थं पवत्तियं ।

ततो उदायणो राया गतो उज्जेणिं । रोहिता उज्जेणी ।

वहुजणक्खए वट्टमाणे उदायणेण पज्जोतो भणिओ – तुज्झं मज्झ य विरोहो । अम्हे चेव दुअग्गा जुज्झामो, किं सेसजणवएणं माराविएणं ति ।

अब्भुवगयं पज्जोएण । दुअग्गाण वि दूतए संचारेण संलावो – कहं जुज्झामो ? किं रहेहिं गएहिं अस्सेहिं ? ति ।

उदायणेण लवियं – जारिसो तुज्झऽणलगिरी हत्थी एरिसो मज्झ णत्थि, तहा तुज्झ जेण अभिप्पेयं तेण जुज्झामो ।

पज्जोएण भणियं – गएहिं असमाणं तुज्झं ति, कल्लं रहेहिं जुज्झामो त्ति । दूवग्गणे वि अवट्टियं ।

विदियदिणे उदायणो रहेण उवट्ठितो, पज्जोओऽणलगिरिणा हत्थि-रयणेण । सेसखंधा-वारो सेण्णच्चपरिवारो पेच्छगो य उदासीणो चिट्ठति ।

उदायणेण भणियं – एस भट्ठपडिवण्णो हतो मया, संपलग्गं जुद्धं, आगतो हत्थी ।

उदायणेण चक्कभमे च्छूढो, चउसु वि पायतलेसु विद्धो सरेहि, पडिओ हत्थी ।

एवं उदायणेण रणे जित्ता गहिओ पज्जोओ । भग्गं परवलं । गहिया उज्जेणी । णट्ठा सुवण्णगुलिया । पडिमा पुण देवताहिट्ठिता संचालेउं ण सक्किता । पज्जोतो य ललाटे सुणहपाएण अंकितो ।

इमं च से णामयं ललाटे चेव अंकितं -

दासो दासीवतिओ, छेत्तट्ठी जो घरे य वत्तव्वो ।

आणं कोवेमाणे, हंतव्वो बंधियव्वो य ॥३१८५॥

कंठा। उदायणो ससाहणेण पडिणियत्तो, पज्जोओ वि बद्धो खंधावारे णिज्जति । उदायणो आगओ, जाव दसपुरोद्देसे[1] तत्थ वरिसाकालो जातो । दस वि मउडबद्धरायाणो णिवेसेण ठितो । उदायणस्स उवजेमणाए भुंजति पज्जोतो ।

अण्णया पज्जोसवणकाले पत्ते उदायणो उववासी, तेण सूतो विसज्जितो । पज्जोओ अज्ज गच्छसु, किं ते उवसाहिज्जउ त्ति ।

गतो सूतो, पुच्छिओ पज्जोओ । आसंकियं पज्जोतस्स ।

"ण कयाति अहं पुच्छिओ, अज्ज पुच्छा कता । णूणं अहं विससम्मिसेण भत्तेण अज्ज मारिज्जिउकामो । अहवा - किं मे संदेहेण, एयं चेव पुच्छामि ।"

पज्जोएण पुच्छिओ सूतो - अज्ज मे किं पुच्छिज्जति । किं वा हं अज्ज मारिज्जिउकामो ?

सूतेण लवियं-ण तुमं मारिज्जसि । राया समणोवासओऽज्ज पज्जोसवणाए उववासी । तो ते जं इट्ठं अज्ज उवसाहयामि त्ति पुच्छिओ ।

तओ पज्जोतेण लवियं-"अहो सपावकम्मेण वसणपत्तेण पज्जोसवणा वि ण णाता, गच्छ कहेहि राइणो उदायणस्स जहा अहं पि समणोवासगो अज्ज उववासिओ भत्तेण ण मे कज्जं ।"

सूतेण गंतुं उदायणस्स कहियं - सो वि समणोवासगो अज्ज ण भुंजति त्ति ।

ताहे उदायणो भणति - समणोवासगेण मे बद्धेण अज्ज सामातियं ण सुज्झति, ण य सम्मं पज्जोसवियं भवति, तं गच्छामि समणोवासगं बंधणातो मोएमि खामेमि य सम्मं, तेण सो मोइओ खमिओ य ललाटमंकच्छायणट्ठया य सोवण्णो से पट्टो बद्धो । ततो पभिति पट्टबद्ध-रायाणो जाता ।

एवं ताव जति गिहिणो वि कयवेरा अधिकरणाइं ओसवंति, समणेहिं पुण सव्वपावविरतेहिं सुट्ठुतरं ओसवेयव्वं ति । सेसं सवित्थरं जीवंतसामिउप्पत्तीए वत्तव्व ॥३१८६॥

अहवा - इमं उदाहरणं -

खद्धादाणि य गेहे, पायस दमचेडरूवगा दट्ठुं ।

पितरोभासण खीरे, जाइय रद्धे य तेणा तो ॥३१८६॥

खद्धि आदाणि जेसु गिहेसु ते खद्धादाणीयगिहा - ईश्वरगृहा इत्यर्थः । तेसु खद्धादाणी-यगिहेसु, खणकाले पायसो णवगपयसाहितो । तं दट्ठुं दमगचेडा दमगो-दरिद्दो तस्स पुत्तभंडा इत्यर्थः पितरं ओभासंति - "अम्ह वि पायसं देहि" त्ति भणितो । तेण गामे दुद्धतंदुले ओहारिऊण समप्पियं भारियाए - "पायसमुवसाहेहि" त्ति । सो य पच्चंतगामो, तत्थ चोरसेणा पडिता, ते य गामं विलुलिउमाढत्ता ।

---

१ उद्देशः स्थानं आदेशो वा ।

पायसहरणं छेत्ता, पच्छागय असियएण सीसं तु ।
भाउयसेणाहिवखिं, सणाहिं सरणागतो जत्थ ॥३१८७॥

तस्स दमगस्स सो य पायसो सह थालीए हडो । तं वेलं सो दमगो छेत्तं गतो । सो य छेत्तातो तणं लुणिऊणं आगतो, तं चिंतेति – "अज्ज चेडरूवेहिं समं भोक्खेमि" त्ति घरंगणपत्तस्स चेडरूवेहिं कहितं ततो "वप्प" त्ति भणंतेहि सो य पायसो हडो । सो तणपूलियं छड्डेऊण गतो कोहाभिभूतो, पेच्छति सेणाहिवस्स पुरतो पायसथालियं ठवियं । ते चोरा पुणो गामं पविट्ठा, एगागी सेणाहिवो चिट्ठइ । तेण य दमगेण असिएण सीसं छिण्णं सेणावतिस्स णट्ठो दमगो । ते य चोरा हण्णायगा णट्ठा । तेहिं य गतेहिं मयकिच्चं काउं तस्स डहरतरतो भाया सो सेणाहिवो अभिसित्तो । तस्स मायभगिणीभाउज्जाइयातो अ खिसंति – "तुमं भाओवरतिए जीवंते अच्छति सेणाहिवत्तं काउं, धिरत्थू ते जीवियस्स । सो अमिरसण गतो गहितो -- दमगो जीवगेज्झो, आणितो निगडियवेढिगो सयणमज्झगतो आसणट्ठितो वणगं गहाय भणति – अरे अरे भातिवेरिया, कत्थ ते आहणामि त्ति ।

दमगेण भणियं "जत्थ सरणागता पहरिज्जंति तत्थ पहराहि" त्ति ।

एवं भणिते सयं चिंतेति – "सरणागया णो पहरिज्जंति ।" ताहे सो माउभगिणीसयणाणं च मुहं णिरिक्खति ।

तेहिं ति भणितो – "णो सरणागयस्स पहरिज्जति", ताहे सो तेण पूएऊण मुक्को ।

जति ता तेण सो धम्मं अजाणमाणेण मुक्को, किमं गु पुण साहुणा परलोगभीतेण अब्भुवगयवच्छल्लेण अब्भुवगयस्स सम्मं ण सहियव्वं ? खामियव्वं ति ।

इयाणिं "[1]कसाय" त्ति दारं ।

तेसिं चउक्कणिक्खेवो जहावट्ठाणे कोहो चउव्विधो उदगराइसमाणो वालुआराइसमाणो पुढवीराइ-समाणो पव्वयगराइसमाणो, दारं ।

वाओदएहि राई, नासति कालेण सिगयपुढवीणं ।
णासति उदगस्स सतिं, पव्वतराई तु जा सेलो ॥३१८८॥

वाएण उदएण य राती णासइ जहा सक्खं सिगयपुढवीणं । "कालेण" त्ति कालविशेपप्रदर्शनार्थं, उदगराती सकृत् नश्यति, तत्क्षणादित्यर्थः । जा पुण पव्वतराती सा जाव पव्वतो ताव चिट्ठति अंतरा नापगच्छतीत्यर्थः ॥३१८८॥

इयाणि रातीहिं कोव-अवसंवारणत्थं भणति –

उदगसरिच्छा पक्खेणऽवेति चतुमासिएण सिगयसमा ।
वरिसेण पुढविराती, आमरण गती य पडिलोमा ॥३१८९॥

उदगराइसमाणो जो रुसितो तद्दिवसं चेव पडिक्कमणवेलाए उवसमति जाव पक्खे वि उवसमंतो उदगरातिसमाणो भण्णति ।

जो पुण दिवसपक्खिएसु अणुवसंतो जाव चउमासिए उवसमति सो सिगतरातिसमाणो कोहो भवति ।

---

१ गा० ३१७६ ।

जो दिवसपक्खचाउम्मासिएसु अणुवसंतो संवच्छरिए उवसमति सो पुढविराइसमाणो ।

जहा पुढवीए सरदे फुडियातो दालिग्रो पाउसे पवुट्ठे मिलंति एवं तस्स वि वरिसेण क्रोधो अवेति ।

जो पुण पज्जोसवणाए वि णो उवसमति सो पव्वयरातीसमाणो कोहो ।

जहा पव्वयस्स राती ण मिलति एवं तस्स वि आमरणंतो कोहो णोवसमति ।

एतेसि गतीतो पडिलोमं वत्तव्वाओ ।

पव्वयरातीसमाणस्स णरगगती, पुढवीसमाणस्स तिरियगती, सिगयसमाणस्स मणुयगती, उदगसमाणस्स देवगती, अकसायस्स मोक्खगती ॥३१८९॥

एमेव थंभकेयण, वत्थेसु परूवणा गतीओ य ।
मरुय अचंकारि य पंडरज्जमंगू य आहरणा ॥३१९०॥

एवं सेसा कसाया चउभेया वत्तव्वा ।

थंभे त्ति थंभसमाणो माणो । सो चउव्विहो अत्थि ।

सेल-ऽट्ठि-थंभदारुयलया य वंसे य मेंढ गोमुत्ती ।
अवलेहणि किमि कद्दम कुसुंभरागे हलिद्दा य ॥३१९१॥
चउसु कसातेसु गती, नरय तिरिय माणुसे य देवगती ।
उवसमह णिच्चकालं, सोग्गइमग्गं वियाणंता ॥३१९२॥

सेलथंभसमाणो माणो अत्थि, अट्ठिथंभसमाणो माणो अत्थि, कट्ठथंभसमाणो माणो अत्थि, तिणिसलयासमाणो माणो अत्थि ।

गतीतो पडिलोमं वत्तव्वातो ।

"केयणं" ते छज्जियालेवणगंडो केयणं ति भण्णति, सो य वंको तस्समा माया ।

अहवा – यत् कृतकं तं पाययसेलीए केयणं भण्णइ, कृतकं च माया । माया चउव्विहा –

अवलेहणियाकेयणे, गोमुत्तियाकेयणे, घणवंशमूलसमकेयणे, मेढसिंगकेयणे वि ।

गतीतो पडिलोमं वत्तव्वाओ ।

"वत्थे" त्ति वत्थरागसमाणो लोभो । सो चउव्विहो ।

हरिद्दारागसमाणो लोभो, कुसुंभरागसमाणो लोभो, कद्दमरागसमाणो लोभो, किमिरागसमाणो लोभो।

गतीओ पडिलोमातो वत्तव्वाओ ।

इमे उदाहरणा – कोहे मरुओ, माणे अच्चंकारियभट्टा, मायाए पंडरज्जा, लोभे अज्जमंगू ॥३१९२॥

कोहे इमं –

अवहंत गोण मरुते, चउण्हे वप्पाण उक्करो उवरिं ।
छूढो मओ उवट्ठा, अतिकोवे ण देमो पच्छित्तं ॥३१९३॥

एत्थ एसेव दमगो ।

अथवा – एगो मरुगो, तस्स इक्को वइल्लो । सो य तं गहाय केयारे हलेण वाहेमि त्ति गतो । सो य परिस्संतो पडितो, ण तरति उट्ठेउं ।

ताहे तेण धिज्जातिएण हणंतेण तस्स उवरिं तुत्तगो भग्गो, तहावि ण उट्ठेति । अण्णकट्ठाभावे लेट्ठुएहिं हणिउमारद्धो, एगकेयारलेट्ठुएहिं, तहावि णोट्ठितो, एवं चउण्ह केयाराण उक्करेण आहतो, णो उट्ठितो ।

तो तेण लेट्ठुपुञ्जो कतो, मओ सो गोणो ।

ताहे सो वंभणो गोवज्झविसोहणत्थं धिज्जातियाणमुवट्ठितो । तेण जहावत्तं कहियं, भणियं च तेण – अज्ज वि तस्सोवरिं मे कोहो ण फिट्टति ।

ताहे सो धिज्जातिएहिं भणिओ – तुमं अतिक्कोही, णत्थि ते सुद्धी, ण ते पच्छित्तं देमो, सव्वलोगेण वज्जितो सोऽसिलोगपडितो जातो ।

एवं साहुणा एरिसो कोवो ण कायव्वो । अह करेज्ज तो उदगरातीसमाणेण भवियव्वं । जो पुण पक्खिय-चाउम्मासिय-संवच्छरिएसु ण उवसमति तस्स विवेगो कायव्वो, जहा धिज्जातियस्स ।

माणे इमं –

धणभूयमच्चंकारिय-भट्टा अट्ठसु य मग्गतो जाया ।
चरणपडिसेव सचिवे, अणुयत्ती हिं पदाणं च ॥३१८४॥

णिवचिंत विकालपडिच्छणा य दाणं ण देमि णिवकहणं ।
खिसा णिसि णिग्गमणं, चोरा सेणावती गहणं ॥३१८५॥

नेच्छति जलूग वेज्जे, गहणं तं पि य अणिच्छमाणी तु ।
गेण्हावे जलूगवणा, भाउयदूए कहण मोए ॥३१८६॥

'खितिपतिट्ठिय' णगरं । 'जियसत्तू' राया । 'धारिणी' देवी । 'सुबुद्धी' सचिवो । तत्थ णगरे 'धणो' णाम सेट्ठी । तस्स 'भद्दा' णाम भारिया । तस्स य धूया भट्टा । सा य माउपिय-भाउयाण य उवातियसयलद्धा । मायपितीहि य सव्वपरियणो भण्णति – "एसा जं करेउ ण केण ति किंचिच्चंकारेयव्वं" ति । ताहे लोगेण से कयं णाम अच्चंकारियभट्टा । सा य अतीवरूववती, बहुसु वणियकुलेसु वरिज्जति ।

धणो य सेट्ठी भणति – जो एयं ण चंकारेहिति तस्सेसा दिज्जिहिति त्ति । एवं वरगे पडिसेहेति ।

अण्णया सचिवेण वरिता । धणेण भणियं – जइ ण किंचि वि अवराहे चंकारेहिसि तो ते पयच्छामो । तेण य पडिसुयं । तस्स दिण्णा । भारिया जाता । सो य ण चंकारेति ।

सो य अमच्चो रातीते जामे गते रायकज्जाणि समाणेउं आगच्छति । सा तं दिणे दिणे खिसति सवेलाए णागच्छसित्ति । ततो सवेलाए एतुमाढत्तो ।

अण्णया रण्णो चिंता जाता – किमेस मंती सवेलाए गच्छति त्ति ।

रण्णो अण्णेहिं कहियं – एस भारियाए आणाभंगं न करेति त्ति ।

अण्णया रण्णा भणियं – इमं एरिसं तारिसं च कज्जं च सवेलाए तुमे ण गंतव्वं ।

सो ओसुअभूतो वि रायाणुअत्तीए ठितो ।

सा य रुट्ठा वारं वंधेउं ठिता । अमच्चो आगतो उस्सूरे, "दार-मुग्घाडेहि" त्ति वहुं भणिता वि जाहे ण उग्घाडेति ताहे तेण चिरं अच्छिऊण भणिता – "तुमं चेव सामिणी होज्जासि त्ति अहो मे आलो अंगीकतो" ।

ताहे सा "अहमालो" त्ति भणिया दारमुग्घाडेउं पियघरं गता । सव्वालंकारविभूसिता अंतरा चोरेहिं गहिता । तोसे सव्वालकारं घेत्तुं चोरेहिं सेणावतिस्स उवणीता ।

तेण सा भणिता – मम महिला होहि त्ति । सो तं वला ण भुंजति, सा वि तं णेच्छति ।

ताहे तेण वि सा जल्लगवेज्जस्स हत्थे विक्कीता ।

तेण वि सा भणिता – मम भज्जा भवाहि त्ति । तं पि अणिच्छंतीए तेण वि रुसिएण भणिता –"वणं" – पाणीयं, तातो जलूगा गेण्हाहि" त्ति । सा अप्पाणं णवणीएण मक्खेउं जलमवगाहति, एवं जलूगातो गेण्हति । सा तं अणणुरूवं कम्म करेति ण य सीलभंगं इच्छति । सा तेण रुहिरसावेण विरूवलावण्णा जाया । इतो य तस्स भाया दूयकिच्चेण तत्थागतो, तेण सा अणुसरिस त्ति काउं पुच्छिता, तीए कहियं, तेण दव्वेण मोयाविया आणिया य । वमणविरेयणेहिं पुण णवसरीरा जाता ।

अमच्चेण य पच्चाणेउं घरमाणिया सव्वसामिणी ठविया । ताए सो कोहपुरस्सरस्स माणस्स दोसं दट्ठुं अभिग्गहो गहितो – "ण मे कोहो माणो वा कायव्वो ॥३१९४॥३१९५॥३१९६॥

सयगुणसहस्सपागं, वणभेसज्जं जतिस्स जायणया ।
तिक्खुत्त दासिभिंदण, ण य कोहो सयं च दाणं च ॥३१९७॥

तस्स घरे सयसहस्सपागं तेल्लमत्थि, तं च साहुणा वणसंरोहणत्थं ओसढं मग्गियं ।

ताए य दासचेडी आणत्ता, – "आणेहि" त्ति । ताए आणंतीए सहतेल्लेण एगं भायणं भिण्णं । एवं तिण्णि भायणाणि भिण्णाणि । ण य सा रुट्ठा । तिसु य सयसहस्सेसु विणट्ठेसु चउत्थवाराए अप्पणा उट्ठेऊणं दिण्णं ।

जइ ताए कोहपुरस्सरो मेरुसरिसो माणो णिज्जितो तो साहुणा सुट्ठुतरं णिहंतव्वो इति ॥३१९७॥

मायाए इमं –

पासत्थि पंडरज्जा, परिण्ण-गुरुमूल-णातअभिओगा ।
पुच्छा तिपडिक्कमणे, पुव्वब्भासा चउत्थं पि ॥३१९८॥

णाणातितियस्स पासे ठिता पासत्थी, सरीरोवकरणव(पा)उसा णिच्चं सुक्किल्लवासपरिहरित्ता विचिट्ठइ त्ति । लोगेण से णामं 'कयं पंडरज्ज' त्ति ।

सा य विज्जा-मंत-वसीकरणुच्चाटणकोउएसु य कुसला जणेसु पउंज्जति ।

जणो य से पणयसिरो कयंजलितो चिट्ठति ।

अद्धवयातिक्कंता वेरग्गमुवगता गुरुं विण्णवेति – "आलोयणं पयच्छामि" त्ति ।

आलोइए पुणो विण्णवेति – "ण दीहं कालं पवज्जं काउं समत्था" ।

ताहे गुरुहिं अप्पं कालं परिकम्मवेत्ता विज्जामंतादियं सव्वं छड्डावेत्ता "परिण्ण" त्ति-अणसणगं पच्चक्खायं । आयरिएहिं उभयवग्गो वि वारितो ण लोगस्स कहेयव्वं ।

ताहे सा भत्ते पच्चक्खाते जहा पुव्वं वहुजणपरिवुडा अच्छित्ता इयाणिं न तहा अच्छति, अप्पसाहुसाहुणिपरिवारा चिट्ठइ । ताहे से अरती कज्जति । ततो ताए लोगवसीकरणविज्जा मणसा-आवाहिता ।

ताहे जणो पुप्फधूवगंधहत्थो अलंकितविभूसितो वंदवदेहिं ।

उभयवग्गो पुच्छितो – किं ते जणस्स अक्खायं ?

ते भणंति – "ण व" त्ति ।

सा पुच्छित्ता भणति – मम विज्जाए अभिओइयं एति ।

गुरुहिं भणिता – "ण वट्टति" त्ति ।

ताहे पडिक्कंता । सयं ठितो लोगो आगंतुं । एवं तओ वारा सम्मं पडिक्कंता, चउत्थवाराते पुच्छित्ता ण सम्ममाउट्टा भणति य – पुव्वब्भासाऽहुणा आगच्छंति ॥३१९८॥

अपडिक्कमसोहम्मे, अभिउग्गा देवसक्कओसरणे ।

हत्थिणि वाउस्सग्गे, गोयम-पुच्छा तु वागरणा ॥३१९९॥

अणालोएउ कालगता सोहम्मे एरावणस्स अग्गमहिसी जाता । ताहे सा भगवतो वद्ध-माणस्स समोसरणे आगता, धम्मकहावसाणे हत्थिणिरूवं काउं भगवतो पुरतो ठिच्चा महतासद्देण वातं कम्मं करेति ।

ताहे भगवं गोयमो जाणगपुच्छं पुच्छति ।

भगवया पुव्वभवो से वागरितो । मा अण्णो वि को ति साहु साहुणी वा मायं काहिति, तेणेयाए वायकम्मं कतं, भगवता वागरियं ।

तम्हा एरिसी माया दुरंता ण कायव्वा ।

लोभे इमं उदाहरणं – "लुद्धणंदी" अहवा "अज्जमंगू" –

मधुरा मंगू आगम वहुसुय वेरग्ग सड्ढपूया य ।

सातादि-लोभ-णितिए, मरणे जीहाइ णिद्धमणे ॥३२००॥

अज्जमंगू आयरिया वहुस्सुया अज्झागमा वहुसिस्सपरिवारा उज्जयविहारिणो ते विहरंता महुरं णगरीं गता । ते "वेरग्गिय" त्ति काउं सड्ढेहिं वत्थातिएहिं पूइता, खीर-दधि-घय-गुलातिएहिं दिणे दिणे पज्जतिएण पडिलाभयंति ।

सो आयरिओ लोभेण सातासोक्खपडिवद्धो ण विहरति । णितिओ जातो । सेसा साधू विहरिता ।

सो वि अणालोइयपडिक्कंतो विराहियसामण्णो वंतरो णिद्धम्मणा जक्खो जातो।

तेण य पदेसेण जदा साहू णिग्गमण-पवेसं करेंति, ताहे सो जक्खो पडिमं अणुपविसित्ता महापमाणं जीहं णिल्लालेति।

साहूहिं पुच्छितो भणति – अहं सायासोक्खपडिबद्धो जीहादोसेण अप्पिड्ढिओ इह णिद्धम्मणाओ भोमेज्जे णगरे वंतरो जातो, तुज्झ पडिबोहणत्थमिहागतो तं मा तुब्भे एवं काहिह।

अण्णे कहेंति – जदा साहू भुंजंति तदा सो महप्पमाणं हत्थं सव्वालंकारं विउव्विऊण गवक्खदारेण साधूण पुरतो पसारेति।

साहूहिं पुच्छितो भणाति – सो हं अज्जमंगू इड्ढिरसपमादगरुओ मरिऊण णिद्धम्मणे जक्खो जातो, तं मा कोइ तुब्भे एवं लोभदोसं करेज्ज ॥३२००॥

एवं कसायदोसे णाउं पज्जोसवणासु अप्पणो परस्स वा सव्वकसायाण उवसमणं कायव्वं।

इमं च वासासु कायव्वं –

अब्भुवगयगयवेरा, णातुं गिहिणो वि मा हु अहिगरणं।
कुज्जाहि कसाए वा, अविगडियफलं व सिं सोउं ॥३२०१॥

पच्छित्तं वहुपाणा, कालो बलिओ चिरं च ठायव्वं।
सज्झाय-संजम-तवे, धणियं अप्पा णियोतव्वो ॥३२०२॥

अट्ठसु उदुबद्धिएसु मासेसु जं पच्छित्तं संचियं ण वूढं तं वासासु वोढव्वं।

किं कारणं तं वासासु वुज्झते ? भण्णते - जेण वासासु बहुपाणा भवंति, ते हिंडंतेहिं वहिज्जंति, सीयाणुभावेण य कालो बलितो, सुहं तत्थ पच्छित्तं वोढुं सक्कति।

एगक्खेत्ते चिरं अच्छियव्वं तेण वासासु पच्छित्तं वुज्झति।

अवि य सीयलगुणेण बलियाइं इंदियाइं भवंति। तदप्पणिरोहत्थं तवो कज्जति। पंचप्पगारसज्झाए उज्जमियव्वं, सत्तरसविहे य संजमे, बारसविहे य तवे अप्पा धणियं सुट्ठु णिओएयव्वो, णिउंजितव्यमित्यर्थः ॥३२०२॥

पुरिमचरिमाण कप्पो, तु मंगलं वद्धमाणतित्थम्मि।
तो परिकहिया जिणगण-हरा य थेरावलिचरित्तं ॥३२०३॥

पुरिमा उसभसामिणो सिस्सा, चरिमा वद्धमाणसामिणो। एतेसिं एस कप्पो चेव जं वासासु पज्जोसविज्जंति, वासं पडउ मा वा।

मज्झिमयाणं पुण भणितं – पज्जोसवेंति वा ण वा, जति दोसो अत्थि तो पज्जोसवेंति, इहरहा णो। मंगलं च वद्धमाणसामितित्थे भवति। जेण य मंगलं तेण सव्वजिणाणं चरितानि कहिज्जंति, समोसरणाणि य, सुधम्मातियाण थेराणं आवलिया कहिज्जति ॥३२०३॥

एत्थ सुत्तणिबंधे य इमो कप्पो कहिज्जति –

सुत्ते जहा णिबंधो, वग्घारियभत्तपाणमग्गहणं।
णाणट्ठि तवस्सी यऽणहियासि वग्घारिए गहणं ॥३२०४॥

"णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा वग्घारिय-वुट्ठिकायंसि गाहावति-कुलं भत्ताए वा पाणाए वा णिक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ।

कप्पइ से अप्पवुट्ठिकायंसि संतरुत्तरंसि गाहावइ-कुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा । (कल्प सूत्र) ।

वग्घारियं णाम जं तिण्णवासं पडति, जत्थ वा णिव्वं वासकप्पो वा गलति, जत्थ वासकप्पं भेत्तूण अंतो कायो य उल्लेति, एयं वग्घारियं वासं । एरिसे ण कप्पति भत्तपाणं घेत्तुं । सुत्ते जहा णिग्गंथो तहा न कप्पते इत्यर्थः ।

अवग्घारिए पुण कप्पंति भत्तपाणग्गहणं कार्ड ।

कप्पति से अप्पवुट्ठिकायंसि संतरुत्तरंसि, संतरमिति अंतरकप्पो, उत्तरमिति वासकप्पकंबली ।

इमेहिं कारणेहिं बितियपदे वग्घारियवुट्ठिकाये वि भत्तपाणग्गहणं कज्जति "णाणट्ठी" पच्छद्धं । "णाणट्ठि" त्ति जदा को ति साहू अज्झयणं सुतक्खंधमंगं वा अहिज्जति, वग्घारियवासं पडति, ताहे सो वग्घारिए वि हिंडति ।

'तवस्सी' त्ति अहवा – छुहालू अणधियासो वग्घारिए हिंडति । एते तिण्णिहि वग्घारिते संतरुत्तरा हिंडंति । संतरुत्तरस्य व्याख्या पूर्ववत् ।

अहवा – इह संतरं जहासत्तीए चउत्थमादी करेंति । उत्तरमिति "बालेसुत्तादिए" ण अडंति ॥३२०४॥

संजमखेत्तचुयाणं, णाणट्ठि-तवस्सि-अणहियासाणं ।
आसज्ज भिक्खकालं, उत्तरकरणेण जइयव्वं ॥३२०५॥

संजमखेत्त-चुया जे णाणट्ठि तवस्सी अणधियासी य जो, एते सव्वे भिक्खाकाले उत्तरकरणेण भिक्खग्गहणं करेंति ॥३२०५॥

केरिसं पुण संजमखेत्तं –

उण्णियवासाकप्पा, लाउयपातं च लब्भती जत्थ ।
सज्झा एसणसोही, वरिसइकाले य तं खेत्तं ॥३२०६॥

जत्थ खेत्ते उण्णियवासाकप्पा लब्भंति,

जत्थ अलाबु पाता चाउक्कालो य सुज्झति सज्झाओ,

जत्थ य भत्तादीयं सव्वं एसणासुद्धं लब्भति,

विविधं च धम्मसाहणोवकरणं जत्थ लब्भति ।

कालवरिसी णाम – रातो वासइ, ण दिवा ।

अहवा – भिक्खवेलं सण्णाभूमिगमणवेलं च मोत्तुं वासति ।

अहवा – वासासु वासति णो उडुबद्धे एस कालवरिसी । एयं संजमखेत्तं ॥३२०६॥

तओ असिवादिकारणेहिं चुता ।

"[1]णाणट्ठि तवस्सि अणधियासे" त्ति तिण्णि वि एगगाहाते वक्खाणेति –

पुव्वाहीयं णासति, णवं च छातो ण पच्चलो घेत्तुं ।
खमगस्स य पारणए, वरसति असहू य बालादी ॥३२०७॥

छुमाभिभूयस्स परिवाडिं अकुव्वतो पुव्वाधीतं णासति, अभिणवं वा सुतत्थं च्छातो ग्रहीतुमसमर्थो भवति, खमगपारणए वा तवसि, बालादी असहू वा, वासंते असमत्था उववासं काउं ॥३२०७॥

ताहे इमेण उत्तरकरणेण जतंति –

वाले सुत्ते सूती, कुडसीसगछत्तए य पच्छिमए ।
णाणट्ठि तवस्सी अण-हियासि अह उत्तरविसेसा ॥३२०८॥

वरिसंते उववासो कायव्वो । असहु कारणे वा "वाले" त्ति उण्णियवासाकप्पेण पाउतो अडति ।

उण्णियस्स असति उट्टिएण अडति ।

उट्टियासति कुतवेणं ।

जाहे एयं तिविधं पि वालयं णत्थि ताहे जं सोत्तियं थिरं घणं मसिणं तेण हिंडति ।

सोत्तियस्स असति ताल-सूइं उवरिं काउं हिंडति ।

कुडसीसयं पलासं पत्तेहिं वा गंडेणविणा छत्तयं कीरइ, तं सिरं काउं हिंडति ।

तस्सऽसति विदलमादीछत्तएणं हिंडति ।

एसो संजमखेत्तचुतादियाण वासासु वासंते उत्तरकरणविसेसो भणितो ॥३२०८॥

सव्वो य एस पज्जोसवणाविधी भणितो –

बितियपदेण पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेंति अपज्जोसवणाए वा पज्जोसवेज्जा इमेहिं कारणेहिं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, दोसु वि सुत्तेसु अप्पवहुं ॥३२०९॥

पज्जोसवणाकाले पत्ते असिवं होहित्ति त्ति णातूण ण पज्जोसवेंति, ओमोयरिएसु वि एवं अतिक्कंते वा पज्जोसविज्जा । महल्लठाणातो वा चिरेण णिग्गया ते ण पज्जोसवणाए पज्जोसवेज्जा, बोहियभए वा णिग्गता अतिक्कंता पज्जोसवेंति । एवं दोसु वि सुत्तेसु अप्पाबहुं णाउं ण पज्जोसविंति । अपज्जोसवणाए वा पज्जोसवेंति ॥३२०९॥ –

जे भिक्खू पज्जोसवणाए गोलोमाइं पि वालाइं उवाइणावेइ –
उवाइणावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

गोलोममात्रा पि न कर्तव्या किमुत दीर्घा ।

अहवा – हस्तप्राप्या अपिशब्देन विशेष्यंति । उवातिणावेति त्ति पज्जोसवणारयणिं अतिक्काम-तीत्यर्थः । तस्स चउगुरुगं पच्छित्तं । आणादिया य दोसा ।

---

१ गा० ३२०५ ।

गोलोमविशेषणार्थमाह –

पज्जोसवणा केसे, गावीलोमप्पमाणमेत्ते वी ।
जे भिक्खूवातिणावती, सो पावति आणमादीणि ॥३२१०॥

ण वि सिंगपुंछवाला, ण अत्थि पुंछे ण वत्थिया वाला ।
सुजवसणीरोगाए, सेसं गुरु हाणि हाणीए ॥३२११॥ कंठा

वासासु लोमए अकज्जंते इमे दोसा –

णिसुढंते आउवग्रो, उल्लेसु य छप्पदीउ मुच्छंति ।
ता कंडूय विराहे, कुज्जा व खयं तु आयाते ॥३२१२॥

ग्राउक्काए णिसुढंते ग्राउविराहणा, उल्लेसु य वालेसु छप्पयाग्रो सम्मुच्छंति, कंडुअंतो वा छप्पदादि विराहेति, कंडुअंतो वा खयं करेज्जा। तत्थ ग्रायविराहणा ॥३२१२॥

जम्हा एते दोसा तम्हा

धुवलोग्रो उ जिणाणं, वरिसासु य होइ गच्छवासीणं ।
उडु तरुणे चउमासो, खुर-कत्तरि छल्लहू गुरुगा ॥३२१३॥

उडुबद्धे वासासु वा जिणकप्पियाणं धुवलोग्रो, थेरकप्पियाण वासासु धुवलोग्रो, धुवलोयासमत्थो वा तं रयणि णातिक्कमे। थेरकप्पितो तरुणो उडुबद्धे उक्कोसेणं चउण्हं मासाणं लोयं करावेति, थेरस्स वि एवं, णवरं – उक्कोसेणं छम्मासा ।

जति उडुबद्धे वासासु वा खुरेण कारवेति तो – मासलहुं, कत्तीए मासगुरुं, आणादिया य दोसा, छप्पतिगाण विराहणा पच्छकम्मदोसा य। आदेसंतरेण कारवेति तो छल्लहु, कत्तीए चउगुरुगा। लोयं करावेंतेण एते दोसा परिहारिया भवंति ॥३२१३॥

पक्खिय-मासिय-छम्मासिए य थेराण तू भवे कप्पो ।
कत्तरि छुर-लोए वा, वितियं असहू गिलाणे य ॥३२१४॥

वितियं ति वितियपदेणं लोयं ण कारवेज्जा। असहू लोयं न तरति अधियासेउं सिरोरोगेण वा मंदचक्खुणा वा लोयं असहंतो धम्मं छड्डेज्जा। गिलाणस्स वा लोग्रो न कज्जति, लोए वा करेंते ते गिलाणो हवेज्ज। एवमादिएहिं कारणेहिं जइ कत्तिए करेति तो पक्खे पक्खे। अह छुरेण तो मासे मासे। पढमं छुरेण, पच्छा कत्तिए। लोयकरस्स महुरोदयं हत्थधोवणं दिज्जति पच्छाकम्म परिहरणत्थं। अववादेण लोग्रो छमासेण कारवेयव्वो। थेराण एस कप्पो संवच्छरिए भणितो ॥३२१४॥

जे भिक्खू पज्जोसवणाए इत्तिरियं पि आहारं आहारेति,
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

इत्तरियं पि आहारं, पज्जोसवणाए जो उ आहारे ।
तयभूइ-बिंदुमादी, सो पावति आणमादीणि ॥३२१५॥

इत्तरियं णाम थोवं एगसित्थमवि अद्धलंवणादि वा ।

अथवा – आहारे तयामेत्तं, सातिमिमिरियं चुण्णगादि भूतिमेत्तं, पाणगे विंदुमत्ते । "तये" त्ति तिलतुसतिभागमेत्तं । "भूति" रिति यत् प्रमाणमंगुष्ट-प्रदेशनीसंदंसकेन भस्म गृह्यते, पानके विंदुमात्रमपि, आदिग्गहणातो खातिमं पि थोवं जो आहारेति पज्जोसवणाए सो आणादिया दोसा पावति चउगुरुं च पच्छित्तं।।३२१५।।

पव्वेसु तवं करेंतस्स इमो गुणो भवति –

उत्तरकरणं एगग्गया य आलोयचेइवंदणया ।
मंगलधम्मकहा वि य, पव्वेसु तवगुणा होंति ।।३२१६।।

अट्ठम छट्ठ चउत्थं, संवच्छर-चाउमास-पक्खे य ।
पोसहियतवे भणिए, वितियं असहू गिलाणे य ।।३२१७।।

उत्तरगुणकरणं कतं भवति, एगग्गया य कता भवति, पज्जोसवणासु वरिसिया आलोयणा दायव्वा वरिसाकालस्स य आदीए मंगलं कतं भवति, सड्ढाण य धम्मकहा कायव्वा । पज्जोसवणाए – जइ अट्ठमं ण करेइ तो चउगुरुं, चाउम्मासिए छट्ठं ण करेति तो चउलहुं, पक्खिए चउत्थं ण करेति तो मासगुरुं । जम्हा एते दोसा तम्हा जहाभणितो तवो कायव्वो ।

वितियं अववादेण ण करेज्जा पि । उववासस्स असहू ण करेज्ज, गिलाणो वा ण करेज्जा, गिलाणपडियरगो वा, सो उववासं वेयावच्चं च दोवि काउं असमत्थो, एवमादिएहिं कारणेहिं पज्जोसवणाए आहारेंतो सुद्धो ।।३२१७।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा पज्जोसवेति,
पज्जोसवेंतं वा सातज्जिति ।।सू०।।४६।।

पज्जोसवणा कप्पं, पज्जोसवणाए जो तु कड्ढेज्जा ।
गिहि अण्णतित्थि ओसण्ण, संजतीणं च आणादी ।।३२१८।।

पज्जोसवणा पुव्ववण्णिता । गिहत्थाणं अण्णतित्थियाणं – गिहत्थीणं अण्णतित्थीणीणं, ओसण्णाण य संजतीण य – जो एते पज्जोसवेति, एतेषामग्रतो पर्युषणाकल्पं पठतीत्यर्थः । तस्स चउगुरुं । आणादिया य दोसा ।।३२१८।।

गिहि अण्णतित्थि ओसण्ण दुगं ते गुणेहणुववेया ।
सम्मीसवास-संकादिणो य दोसा समणिवग्गे ।।३२१९।।

गिहत्था गिहत्थीणीओ एयं दुगं ।

अहवा – अण्णतित्थिगा, अण्णतित्थिणीतो ।

अहवा – ओसण्णा ओसण्णीओ एते दुगा, संजमगुणेहिं अणुववेया, तेण तेसिं पुरतो ण कड्ढिज्जति ।

अहवा – एतेसिं सम्मीसवासे दोसा भवंति । इत्थीसु य संकमादिया दोसा भवंति । संजतीओ जइ वि संजमगुणेहिं उववेयाओ तथापि सम्मीसवासदोसो संकादोसो य ।।३२१९।।

दिवसतो ण चेव कप्पति, खेत्तं च पडुच्च सुणेज्जमण्णेसिं ।
असती य व इतरेसिं, दंडिगमादत्थितो कड्ढे ॥३२२०॥

पज्जोसवणाकप्पो दिवसतो कड्ढिउं ण चेव कप्पति । जत्थ वि खेत्तं पडुच्च कड्ढिज्जति जहा दिवसतो आणंदपुरे मूले चेतियघरे सव्वजणसमक्खं कड्ढिज्जति, तत्थ वि साहू ण कड्ढेंति, पासत्थो कड्ढति, तं साहू सुणेज्जा, ण दोसो । पासत्थाण वा कड्ढकस्स असति डंडिगेण वा अब्भट्ठिओ सड्ढेहिं वा ताहे दिवसतो कड्ढति ।

पज्जोसवणाकप्पकड्ढणे इमा सामायारी – अप्पणो उवस्सए पादोसिए आवस्सए कते कालं घेत्तुं काले सुद्धे वा पट्ठवेत्ता कड्ढिज्जति, एवं चउसु वि रातीसु । पज्जोसवणारातीए पुण कड्ढीए सव्वे साधू समप्पावणीयं काउसग्गं करेंति, "पज्जोसवणकप्पस्स समप्पावणीयं करेमि काउस्सग्गं जं खंडियं जं विराहियं जं ण पूरियं सव्वो दंडओ कढियव्वो जाव वोसिरामि त्ति ।" लोगस्सुज्जोयकरं चिंतेण उस्सारेत्ता पुणो लोयस्सुज्जोयगरं कड्ढित्ता सव्वे साहवो णिसीयंति । जेण कड्ढितो सो ताहे कालस्स पडिक्कमति, ताहे वरिसाकालठवणे ठविज्जति ॥३२२०॥ एस विधी भणिता ।

कारणे गिहत्थ-अण्णतित्थिय-पासत्थे य पज्जोसवेति ।

कहं ? भण्णति –

वितियं गिहि ओसण्णा, कड्ढियं तम्मि रत्ति एज्जाहि ।
असती य संजतीणं, जयणाए दिवसतो कड्ढे ॥३२२१॥

जति कड्ढिज्जंति गिहत्था अण्णतित्थिया ओसण्णा वा आगच्छेज्जा तो वि ण ठवेज्जा । एवं सेज्जियमादिइत्थीसु वि । संजतीतो वि अप्पणो पडिस्सए चेव रातो कड्ढंति । जइ पुण संजतीए संभोतियाण कड्ढंतिया ण होज्ज तो आहापहाणाणं कुलाणं आसण्णे सपडिदुवारे संलोए साहु साहुणीण य अंतरे चिलिमिलं दाउं दिवसतो कड्ढिज्जति पूर्ववत् ॥३२२१॥

जे भिक्खू पढमसमोसरणुद्देसे पत्ताइं चीवराइं पडिग्गाहेति,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति
तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घातियं ॥सू०॥४७॥

वितियं समोसरणं उडुबद्धं । तं पडुच्च वासावासोग्गहो पढम-समोसरणं भण्णति । सेसा सुत्तपदा कंठा । तं वत्थपादादिग्गहणं सेवमाणे आवज्जति प्राप्नोति, चउमासेहिं णिप्फण्णं चाउम्मासियं, अणुग्घातियं गुरुगं पावति ।

इमो सुत्तत्थो –

पढमम्मि समोसरणे, वत्थं पायं च जो पडिग्गाहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥३२२२॥

जो गेण्हइ सो आणाइक्कमं करेति, अणवत्था य तेण कता भवति । मिच्छत्तं च जणेति "न यथावादिनस्तथाकारिणः इति । आयविराहणं च पावति ॥३२२२॥

पढमोसरणे उवही, ण कप्पति पुव्वगहिय अतिरित्ते ।
अप्पत्ताण उ गहणं, उवहिस्सा सातिरेगस्स ॥३२२३॥

जइ पढमसमोसरणे ण कप्पति उवही घेत्तुं तो किं कायव्वं ?

उच्यते – पुव्वगहितो अतिरित्तो उवधी परिभोक्तव्यः ।

कथं पुण सो अतिरेगो उवधी घेत्तव्वो ?

उच्यते – 'अप्पत्तेहिं' ति खेत्त-काले अप्पत्तपत्तेहिं चउभंगो कायव्वो ।

सो इमो चउभंगो – खेत्तओ णामेगे पत्ता णो कालओ । कालतो णामेगे पत्ता ण खेत्ततो ।
एगे खेत्तओ वि कालओ वि पत्ता । एगे णो खेत्तओ णो कालओ पत्ता ।

इमो पढमभंगो – उदुवद्धितो चरिममासकप्पो जत्थ कतो, अण्णखेत्तासतीए कारणतो वा तत्थेव वासं काउमाणा खेत्ततो पत्ता ण कालतो ।

इमो वितियभंगो – अद्धाण पडिवण्णयाण वाघातो, अणंतरा चेव आसाढपुण्णिमा जाता, एते कालतो पत्ता ण खेत्ततो ।

इमो ततियभंगो – जे वरिसखेत्तं आसाढपुण्णिमाए पविट्ठा ते उभएण वि पत्ता ।

आसाढपुण्णिमं अपत्ताण अंतरे अद्धाणे अ वट्टमाणाण एवं उभएण वि अपत्ताण चरिमभंगो भवति ॥३२२३॥

केवति पुण अतिरित्तो उवहिं घेत्तव्वो ? अतो भण्णति –

दोण्हं जइ एक्कस्सा, णिप्फज्जति वासजोग्गमेत्तुवही ।
वासाजोग्गं दुगुणं, अगेण्हतो गुरुग आणादी ॥३२२४॥

एक्केक्को साहु अड्ढाइज्जे पडोआरे गेण्हति । जइ कारणा अद्धाणणिग्गता विवित्ता आगच्छेज्ज ताहे दो साहू एगस्स संपुण्णं पडोयारं देंति, तेसिं च अप्पणो पडोयारो चिट्ठति । एवं अण्णे वि दो एगस्स एवं सव्वेसिं दायव्वं । एवं जति अप्पणो दुगुणं ण गेण्हेज्ज तो चउगुरुं पच्छित्तं । आणादिणो य दोसा भवंति ॥३२२४॥

अतिरित्तोवकरणगहणे किं कारणं ?

एत्थ भण्णति इमो दिट्ठंतो –

दव्वोवक्खरणेहादियाण तह खार-कडुय-भंडाणं ।
वासावासे कुडुंबी, अतिरेगं संचयं कुणति ॥३२२५॥

दव्वोवक्खरो – उपस्करद्रव्यमित्यर्थः ।

अहवा – द्रव्यमिति हिरण्यं, उवक्खरो सूर्पादिकः, स्नेहो घृतं तैलं वा, आदिसद्दातो वासा, तेल्लं एरंडादि, वणतेल्लादि वा, खारो वत्थुल्लादिगो लोणं वा, कटुकादि सुंठमादीणि कटुयं वा, घरपिट्ठगादिया भंडा ।

अहवा – कडुयं भंडं कुच्छिभरिं कुटुंबिणो वि वासासु एतेसु अतिरित्तं संचयं करेंति ॥३२२५॥

स्यात् – किं कारणं ? अतो भण्णति –

वणिया ण संचरंती, हट्टा ण वहंति कम्मपरिहाणी ।
गेलण्णाएसेसु य, किं काहिति अगहिते पुव्वं ॥३२२६॥

कक्खपुडियवणिया गामेसु ण संचरंति, पट्टणेसु वि वासवद्दलेण हट्टा ण वहंति । अह सो कुटुंबितो अतिरित्तं ण गेण्हति, उप्पण्णे य पओयणे कयविक्कयस्स हट्टं गच्छति, ताहे से हलकरिसणकम्मसंजोगा परिहायंति । गेलण्णे वा उप्पण्णे, आदेसे वा आगते, अतिरित्ताऽभावे किं पच्छा ओयणपाहुण्णादी करेउ ॥३२२६॥

तह अण्णतित्थियादी, जो जारिसओ तस्स संचयं कुणति ।
इह पुण छण्ह विराहण, पढमम्मि य जे भणियदोसा ॥३२२७॥

अण्णतित्थिया वि जो जारिसो सो अप्पणो लिंगाणुरूवस्स संगहं करेति । जहा सरक्खस्स दगसोआरामट्टियाए, पाडिया छगण-लोणाण य, तव्वण्णियवत्थरागणिमित्तं अज्जुणं कंदलयमादियाणं छल्लिविधीणं । "इहे" त्ति इह जिणसासणे जति अतिरित्तोवकरणं ण गेण्हंति तो छण्हं जीवणिकायाणं विराहणा भवति, अह वासासु उवधिं गेण्हति तो जे पढमसमोसरणे गेण्हतो उग्गमादिदोसा भणिता ते पावति ॥३२२७॥

कहं दुगुण निज्जोआभावे छण्हं विराहणा भवति ।

अतो भण्णति –

रयहरणेणोल्लेणं, पमज्जणे फरुसगेह पुढविवहो ।
गामंतरे पगलणे, पुढवी उदगं च दुविधं तु ॥३२२८॥

फरुस इति कुंभकारसालाए पट्ठिता । तत्थ य सचित्तपुढवी-संभवो भवति । तत्थ वितियरयोहरणाभावे उल्लेण चेव रयहरणेण पमज्जति तो पुढवीविराहणा । अण्णं वा गामं भिक्खायरियादि गच्छतो आगच्छतो अंतरा अतिप्पवुट्ठे मलिणरयोहरणोदगे पगलमाणे पुढविविराहणा, अंतरिक्खोदगं भोमोदगं च एवं विराहेति ॥३२२८॥

अहवा अंबीभूते, उदगं पणओ पतावणा अगणी ।
उल्लंडगबंध तसा, ठाणादी केण व पमज्जे ॥३२२९॥

वितियरयोहरणाभावे उल्लरयोहरणं जति सुक्खवेति ता उग्गहाउ फिट्टइ, अणुव्वविज्जं तं अंबी भवति । तम्मि अंबे उदग-विराहणा, पणओ य सम्मुच्छति ।

अह एतद्दोसपरिहरणत्थं अगणीए तावेति तो अगणिविराहणा ।

अह उल्लेण पमज्जणं करेइ तो दसियंतेसु उल्लंडगा परिवज्झंति मृद्गोलकमित्यर्थः । एतेसु पडिवद्धेसु जति पमज्जणं करेइ तो तस-विराहणा ।

अह उल्लंडग त्ति काउं न पमज्जति तो संजमविराहणा । ठाणादाण-णिक्खेवं वा करेंतो केण पमज्जउ ॥३२२९॥

एमेव सेसगम्मि वि, संजमदोसा तु भिक्खणिज्जोए ।
चोलेणिसेज्जा उल्ले, अजीरगेलण्णमाताए ॥३२३०॥

भिक्खाणिज्जोगो पडलापत्तगबंधो य तेसु दुगुणेसु अघेप्पंतेसु संजमविराधणा, यथा रयोहरणेनेत्यर्थः। चोलपट्टे रयोहरणणिसेज्जाए य दुगुणे अघेप्पंते उल्लेसु णिच्चभोगेण अजीरंतो गेलण्णं भवति, एत्थ आयविराहणा पूर्ववत् ॥३२३०॥

अप्पणो दुगुणपडोआरातो अतिरित्तं अगेण्हंतो इमे दोसा –

अद्धाणणिग्गतादी, परिता वा अहव णट्ठगहणम्मि ।
जं च समोसरणम्मी, अगिण्हणे जं च परिभोगे ॥३२३१॥

छिण्णाछिण्णद्धाणणिग्गया, आदिग्गहणातो असिवातिकारणविणिग्गता वा जति परिज्झोवकरणा हियणट्ठोवकरणा वा जति पढमसमोसरणे उवहिग्गहणं करेंति तो "जं च" त्ति – जे दोसा अभिहिता तान् प्राप्नुवंति अतिरिक्तं अगृण्हंतो इत्यर्थः। पढमसमोसरणं वा काउं उवकरणमगेण्हतो "जं च" त्ति-जे दोसा तणादिपरिभोगे तांश्च प्राप्नुवंति ॥३२३१॥

एष एवार्थ व्याख्याग्रंथेनोच्यते –

अद्धाणणिग्गतादीणमदेंते होंति उवहिणिप्फण्णं ।
जं ते [1]तणेसणग्गिं, सेवे देंतऽप्पणा जं च ॥३२३२॥

अतिरित्ताभावे अदेंताण उवहिणिप्फण्णं प्रायश्चित्तं भवति। जहण्णे पणगं। मज्झिमे मासलहुं। उक्कोसे चउलहुया। जं ते अद्धाणादि-विणिग्गया झुसिराझुसिरतणं अणेसणीयं वा किंचि सेवंति ते तं अदेंता पावेंति।

अह अप्पणोवकरणं तेसिं दलयंतो अप्पणो परिहाणी, जं ते अप्पणा तणमणेसणादी सेवंति ॥३२३२॥

"[2]गहणे" त्ति अस्य व्याख्या –

अत्तट्ठ परट्ठा वा, ओसरणे गेण्हणे य पण्णरस ।
दाउ परिभोग छप्पति, डउरे उल्ले य गेलण्णं ॥३२३३॥

अप्पणो परस्स वा अट्ठा पढमसमोसरणे उवहिं गेण्हमाणस्स अहाकम्मादिया पण्णरस उग्गमदोसा भवंति।

"[3]परिभोग" त्ति अस्य व्याख्या –

अंतो बहिं अद्धाणादियाण दाउं एगपडोआरस्स णिच्चपरिभोगेण छप्पदाओ भवंति। छप्पदादिसु यऽन्नादिपडियखद्धासु दगोदरं भवति – जलोदरमित्यर्थः। एगपडोयारस्स वा उल्लस्स णिच्चपरिभोगेण अजीरंतो गेलण्णं भवति ॥३२३३॥

तम्हा उ गिण्हियव्वं, बीतीयपदं तहा ण गेण्हेज्जा ।
अद्धाणे गेलण्णे, अहवा वि हवेज्ज असतीए ॥३२३४॥

तस्मात् कारणादात्मदुगुणपडोआरतो अतिरित्तं गेण्हियव्वं। वितियपदेण इमेहिं कारणेहिं गेण्हेज्जा। अद्धाणपडिवण्णो गिलाणो वा असतीते व ण गेण्हेज्जा अतिरित्तं ॥३२३४॥

---

१ अणेसणग्गिं ? २ गा० ३२३२। ३ गा० ३२३२।

एते तिण्णि वि एगगाहाते वक्खाणेति –

कालेणेवतिएणं, पाविस्सामंतरे उ वाघाते ।
गेलण्णातपरे वा, दुविहा पुण होइ असती उ ॥३२३५॥

गिम्हस्स चरिममासे श्रद्धाणपडिवण्णा चिंतेति च जाव ण आसाढपुण्णिमाकालो एति ताव अम्हे खेत्तं पाविस्सामो, अंतरा य णतिमातिवाघातेण रुद्धा, आसाढपुण्णिमाकाले अतिक्कंते पत्ता, अतो दुगुणो अतिरित्तो वा ण गहितो । अप्पणा गिलाणेण गिलाणवावडेण वा अतिरित्तो ण गहितो । दुविधाए वा संतासंतसतीए ण गहितं । संतासती अणेसणिज्जं लब्भति ।

अहवा – बहु साहू अकप्पिया एगो कप्पियो, सव्वेसिं अतिरित्तो उवधिं घेत्तुं ण पारेति । बहु वा बालवुड्ढा असंतासती अप्पत्ता पि ण लब्भति । एतेहिं कारणेहिं पुव्वं अतिरित्तोवही ण गहितो होज्जा॥३२३५॥

इमो पढमभंगो –

गहिए व अगहिए वा, अप्पत्ताणं तु होइ अतिगमणं ।
उवही-संथारग-पादपुंछणादीण गहणट्ठा ॥३२३६॥

अतिरित्तोवहिधारणे गहिते अगहिते वा कालओ अप्पत्ताणं – वासखेत्ते अतिगमणं कर्तव्यं इत्यर्थ । अप्पत्ते काले किमर्थं वासखेत्तं पविसंति । उवही पच्छद्धं कंठा ।।३२३६॥

पढम-चरिमभंगप्रदर्शनार्थमेवोच्यते –

कालेण अपत्ताणं, पत्ताऽपत्ताण खेत्तओ गहणं ।
वासाजोग्गोवहिणो, खेत्तम्मि उ डगलमादीणि ॥३२३७॥

कालेण अपत्ताणं खेत्ततो पत्ताणं पढमभंगो । कालेण खेत्तेण य अपत्तो चरिमभंगो । पडलपत्तबंधमादि-वासाजोग्गोवधिणो दुविधभंगे वि गहणं भवति । कालतो पत्ताण णियमा । खेत्ततो पत्तापत्ताण डगलादियाण गहणं करेंति । बितियभंगा गहिया ॥३२३७॥

डगलादिया इमे –

डगलग-ससरक्ख-कुडमुह-मत्तग-तिग-लेव-पायलेहणिया ।
संथार-फलग-पीढग-णिज्जोगो चेव दुगुणो तु ॥३२३८॥

उपलदुगचीरादि-डगला खेल-मल्लग-सण्णा-समाधिकाद्दया धूवट्ठा य सरक्खो घेप्पति ।

गिलाणोसहकातिया समाहिट्ठवणट्ठा कुडमुहे घेप्पति ।

कातियसण्णा खेलमत्तगो एयं तिगं भायणाविणट्ठा लेवो । वासासु कद्दमणिल्लिहणट्ठा पायलेहणिया । पडिसाडि अपरिसाडि संथारगो दुविधो वि सयणट्ठा । सीयलजवादिरक्खणट्ठा य छगणादी । पिढगं उववेसणट्ठा । चंपगपट्टादियं फलयं । सव्वे वि एते खेत्ते घेप्पंति ।

दुगुणोवधी जइ बाहिं ण गहितो कारणेण तो सो वि खेत्ते चेव घेप्पति ॥३२३८॥

चत्तारि समोसरणे, मासा किं कप्पती ण कप्पति वा ।
कारणिय पंचरत्ता, सव्वेसिं मल्लगादीणं ॥३२३९॥

डगलादिसु गहिएसु आसाढपुण्णिमाए पज्जोसवेति चत्तारि मासा, किं घेत्तुं कप्पति ण कप्पइ त्ति पुच्छा।

आयरियाह – उस्सग्गेणं ण कप्पति, कारणे अववादेण कप्पति, खेत्तस्स अलंभे अद्धाण-णिग्गया वा आसाढपुण्णिमाए पत्ता ताहे पंचदिणे डगलगादियं गेण्हंति, पंचमीए पज्जोसवेंति।

अह पंचमीए पत्ता तो उवरिं जाव दसमी ताव डगलगादियं गेण्हंति। एवं कारणे पंचराइंदिय – वुड्ढी कज्जति। मल्लगादीणं अट्ठा-जाव-भद्दवदसुद्धपंचमीए गहिते अगहिते वा डगलगादिए णियमा पज्जोसवेयव्वं ॥३२३९॥

तेसिं तत्थ ठियाणं, पडिलेहोच्छुद्ध चारणादीसु।
लेवादीण अगहणे, लहुगा पुव्विं अगहिते वा ॥३२४०॥

तेसिं साहूणं, तत्थेति वासाखेत्ते ति, ताण इमा सामाचारी-जं सभा-पवा-ऽऽराम-देवकुल-सुण्णगिहमा-दिएहिं वत्थं उच्छुद्धं पंथिगादिएहिं तं पडिलेहंति, जदा अप्पणो परस्स वाघातो उप्पण्णो तदा तं घेप्पंति। तस्सासति चारणादिएसु। वासासु जति लेवं गेण्हंति, आदिग्गहणातो वत्थं पादं वा तो चउलहुगा। पुव्वं वा लेवादिएसु अगहिएसु चउलहुगा चेव ॥३२४०॥

वासाण एस कप्पो, ठायंता चेव जाव तु सकोसं।
परिभुत्त विप्पतिण्णे, वाघायट्ठा णिरिक्खंति ॥३२४१

सकोसजोयणब्भंतरे जं कप्पडिएसु पडिभुत्तं अकिंचित् करंति परिट्ठवंति तं णिरिक्खियव्वं।

एसा सामाचारी –

अद्धाणणिग्गयट्ठा, झामिय सेहे व तेण पडिणीए।
आगंतु वाहि पुव्वं, दिट्ठं असण्णि-सण्णीहिं ॥३२४२॥

अद्धाण णिग्गया जे तेसिं अट्ठाए अप्पणो वा उवही झामितो होज्जा, सेहो वा उवट्ठितो, तेणगपडिणीएहिं वा उवही हडा जदा, तदा एएसु मग्गति ॥३२४२॥

"आगंतु वाहि" पच्छद्धं वक्खाणं –

तालायरे य धारे, वाणिय खंधार सेण संवट्टे।
लाउलिग-वइग-सेवग, जामातु य पंथिगादीसु ॥३२४३॥

भंडा चेडाणडादिया तालायरा, धारइ त्ति देवच्छत्तधरा, वाणिय त्ति वालंजुओ, रायविंयसहियं सचक्कं परचक्कं वा खंधावारो, रायविवरहिया सेणा, चोरधाडिभएण बहू गामा एगट्ठिता णागयाहिट्ठिता य संवट्टो भण्णति, लाउलिगा डुंगरपेच्छगयं, वइ त्ति गोउलं, सेवगा चार भडा, जामाउगा पसिद्धा, पंथिगा बहुवत्थदेसं जे पेच्छिया ते वा मग्गितव्वा ॥३२४३॥

अद्धाणादिकारणेसु उप्पण्णेसु तालायरादिसु मग्गंति इमेण विधिणा।

"[1]आगंतु वाहि पुव्वं" ति अस्य व्याख्या –

आगंतुएसु पुव्वं, गवेसती चारणादिसू वाहिं।
पच्छा जे सग्गामे, तालायरमातिणो होंति ॥३२४४॥

---

१ गा० ३२४२।

मूलवसभगामं मोत्तुं जे अण्णे पडिवसभगामा सकोसजोयणब्भंतरे सह अंतरपल्लीए एतेसु वाहिरगामेसु जे आगंतुगा तालायरादिणो तेसु पुव्वं मग्गति। असति वाहिरगामेसु चारणादियाण, ततो पच्छा जे मूलवसभगामे आगंतुगा चारणादिणो एंति ॥३२४४॥

खंधावार-सेण-संवट्टे गोउलमज्झेसु चारणादिसु वत्थसंभवो भण्णति –

लद्धूण णवे इतरे, समणाणं दिज्ज से व जामादी।
चारण-धार-वणीणं, पडंति सव्वे वि सड्ढियरा ॥३२४५॥

स च राजामादिया नवे वत्थे लद्धूण इतरे पुराणे साहूण देज्जा, चारणाणं देवच्छत्तधराणं डुंगराण वच्चंताणं वत्थे पडंति, ते वा पुराणा वा साहूणं देंति, वालंजुयवणियाणं वलजंताणं वत्था पडंति। एते पुण सव्वे वि सावगा इतरे वा असावगा ॥३२४५॥

वहिग्गाम-सग्गामादिएसु आगंतुगचारणादियाण असती इमा विधी।

"[1]दिट्ठमसण्णिसण्णीसु" त्ति अस्य व्याख्या –

वहि अंतऽसन्निसन्निसु, जं दिट्ठं तेसु चेव जमदिट्ठं।
केइ दुहओ वऽसन्निसु, गिहिसु सण्णीसु दिट्ठितरे ॥३२४६॥

"वहि" त्ति-खेत्तब्भंतरे पडिवसभगामेसु जे असण्णी तेसु जं पुव्वदिट्ठं वत्थं तं मग्गंति ॥१॥

तस्सासति वाहिरगामेसु चेव सण्णीसु जं पुव्वदिट्ठं वत्थं तं मग्गंति ॥२॥

तस्सासति वाहिरगामादिएसु चेव असण्णीसु जमदिट्ठं तं मग्गंति ॥३॥

तस्सासति वाहिरगामेसु चेव सण्णीसु जमदिट्ठं वत्थं तं मग्गंति ॥ङ्क(४)॥

तस्सासति "अंत" त्ति अंतो मूलवसभगामे असण्णीसु जं पुव्वदिट्ठं तं वत्थं मग्गंति ॥१॥

तस्सासति अंतो चेव सण्णिसु जं पुव्वदिट्ठं वत्थं तं मग्गंति ॥२॥

तस्सासति अंतो चेव असण्णिसु जमदिट्ठं वत्थं तं मग्गंति ॥३॥

तस्सासति अंतो चेव सण्णिसु जमदिट्ठं वत्थं तं मग्गंति ॥ङ्क(४)॥

केति पुण आयरिया एवं भणंति – वाहि असण्णिसु दिट्ठं ॥१॥ असति चेव जमदिट्ठं ॥२॥ असति अंतो असण्णि दिट्ठं ॥३॥ असति तेसु चेव जमदिट्ठं ॥ङ्क(४)॥ एवं सण्णिसु वि चउरो विकल्पाः ॥ङ्क(४)॥ इतरं – अदृष्टमित्यर्थः। दिट्ठे आहाकम्म-उक्खेव-णिक्खेवणादिया आसंकादोसा परिहारिया भवंति। तेण पुव्वं दिट्ठस्स गहणं, पच्छा इयरस्स ॥३२४६॥

कोई तत्थ भणेज्जा, वाहिं खेत्तस्स कप्पती गहणं।
गंतुं ता पडिसिद्धं, कारणगमणे वहुगुणं तु ॥३२४७॥

कोति चोदगपक्खासितो – तत्थेति पुव्ववक्खाणे, इमं भणेज्ज–"जइ मूलगामातो पडिवसभगामेसु दूरत्वात्कल्प्यं भवति। एवं तर्हि दूरत्वात् क्षेत्रवहिर्ग्रहीतव्यमित्यर्थः।"

[1] गा० ३२४२।

आचार्याह – खेत्तवहिवासासु ताव गंतुं पडिसिद्धं किं पुण वत्थादिग्गहणं । अह कारणे वासासु खेत्तवहिया गच्छति तत्थ गओ जइ वासकप्पाइणा णिमंतिज्जति तं संजमे बहुगुणकारियं ति काउं तं पि गेण्हति ॥३२४७॥

एवं णामं कप्पती, जं दूरे तेण बाहि गेण्हंतु ।
एवं भणंते गुरुगा, गमणे गुरुगा व लहुगा वा ॥३२४८॥

पूवार्ध गतार्थम् । आचार्याह–"गंतु खेत्तस्स बहिया घेप्पउ" त्ति, एवं तुज्झ भणतो चउगुरुगा । अह गच्छति तो जति णवपाउसो तो चउगुरुगा, सेसवासकाले चउलहुगा ॥३२४८॥

"[1]कारणगमणे बहुगुणं तु" अस्य व्याख्या –

संबंधभाविएसुं, कप्पइ जा पंचजोयणे कज्जे ।
जुण्णं व वासकप्पं, गेण्हति जं बहुगुणं चऽण्णं ॥३२४९॥

आयरियादी कारणे साहम्मियसंबंधेसु अपरोप्परं गमागमभावितेसु वासासु कप्पति गंतुं-जाव-पंच जोयणाणि, तस्स चिरायणे जुण्णो वासाकप्पो, णवेण य वासाकप्पेण णिमंतितो, ताहे तं वासासु बहुगुणं ति काउं गेण्हति । एवं कारणतो कारणावेक्खं अण्णं पि जं पडलादिकं बहुगुणं तं पि गेण्हति ॥३२४९॥

णिक्कारणगमणे गेण्हतो य इमे दोसा –

आहाकम्मुद्देसिय, पूतीकम्मे य मीसजाए य ।
ठवणा पाहुडियाए, पाओतर कीय पामिच्चे ॥३२५०॥
परियट्टिए अभिहडे, उब्भिण्णे मालोहडे ति य ।
अच्छेज्जे अणिसट्ठे, धोते रत्ते य घट्ठे य ॥३२५१॥

साहुअट्ठा मलिणं धोवंति, भट्ठिमादियासु वा रत्तं वालिभद्दगंडियाए व पोम्हणट्ठा घट्ठं, एते तिण्णि वि एक्को दोसो ॥३२५१॥

एए सव्वे दोसा, पढमोसरणेण वज्जिया होंति ।
जिणदिट्ठे अगहिते, जो गेण्हति तेहि सो पुट्ठो ॥३२५२॥

एते सव्वे वि आहाकम्मादिया दोसा पढमसमोसरणे वत्थादि गेण्हंतेण वज्जिया भवंति । पुव्वं वा दप्पेण अगहिते उवकरणे पढमसमोसरणे जो गेण्हति तस्स जिणेहिं दिट्ठा कम्मबंधणदोसा, तेहिं सो पुट्ठो भवति ।

अहवा – जिणेहिं जे दिट्ठा संजमगुणा, कारणेण पुव्वं अगहिते उवकरणे, पच्छा पढमसमोसरणे जो गेण्हति, तेहिं गुणेहिं सोऽपुट्ठो भवति ॥३२५२॥

पढमम्मि समोसरणे, जावतियं पत्त-चीवरं गहितं ।
सव्वं वोसिरितव्वं, पायच्छित्तं च वोढव्वं ॥३२५३॥

जं णिक्कारणे दप्पेण गहियं तं सव्वं वोसिरियव्वं, तस्स य दोसणिरिहरणत्थं पच्छित्तं वोढव्वं ॥३२५३॥

---

[1] गा० ३२४७ ।

अद्धाण णिग्गया वा, झामिय सेहे य तेण पडिणीए ।
आगंतु बाहि पुव्वं, दिट्ठं असण्णि-सण्णीसु ॥३२५४॥

तालायरे य धारे, वाणिय खंधार सेण संवट्टे ।
लाउल्लिय वतिय सेवग, जामाउग-पंथिमादीसु ॥३२५५॥

द्वावप्येतौ गमौ केषुचित् पुस्तकेषु पुनः संति तेष्विमोऽभिप्रायः –

सज्झायट्ठा दप्पेण, वा वि जाणंतकेवि पच्छित्तं ।
कारणगहियं तु विऊ, धरंतऽगीएसु उज्झंति ॥३२५६॥

अद्धाणणिग्गतादिकारणा जो तं णिरवेक्खो तालायरादिसु कमुक्कमेण वा बाहिं अंतो, दिट्ठादिट्ठविकप्पेण वा जो संजमणिरवेक्खो गेण्हति, सज्झायट्ठा दप्पेण वा, तत्थ जाणंतगे वि पच्छित्तं, जाणंतगो गीयत्थो, किमुत अगीतस्येत्यर्थः । जं पुण कारणे विधीए गहियं तं जति सव्वे गीयत्था तो धरेंति, ण परिट्ठवेंति ।

अह गीयत्थमीसा अपरिणामगा य तो अण्णम्मि उवकरणे लद्धे तं उज्झंति । एस वासासु गहणे विधी भणितो ॥३२५६॥

अह अत्थिपदविधारो, चतुपाडिवगम्मि होति णिग्गमणं ।
अहवा वि अणंतस्सा, आरोवण पुव्वणिद्दिट्ठा ॥३२५७॥

पुण्णम्मि णिग्गयाणं, साहम्मि य खेत्तवज्जिए गहणं ।
संविग्गाण सकोसं, इतरे गहियंमि गेण्हंति ॥३२५८॥

पुण्णेसु चउसु मासेसु पदवियारे विज्जंते अवस्सं चउपाडिवए णिग्गंतव्वं, अणिग्गच्छंताणं चउलहुआ । णिग्गया साहम्मियखेत्तं वज्जेउं अण्णेसु गामणगरादिएसु उवकरणस्स गहणग्गाहणं करेंति । जे संविग्गा संभोगा ताणं जं खेत्तं सकोसजोयणपरिमाणं तं परिहरंति, इयरे पासत्थादिया तेहिं जत्थ खेत्ते पज्जोसवियं तत्थ तेहिं गहिए उवकरणे पच्छा संविग्गा गेण्हंति न दोष इत्यर्थः ॥३२५८॥

इतरेसिं जं खेत्तं तं दो मासे ण वज्जिज्जति ।

इमेण कारणेण –

वासासु वि गेण्हंती, णेव य णियमेण इतरे विहरंति ।
तेहिं तु सुद्धमसुद्धे, गहिते जं सेसगं कप्पे ॥३२५९॥

पासत्थादी वासासु वि उवकरणं गेण्हंति, ण य चउपाडिवए पुण्णे णियमा विहरंति, तेण कारणेण तेहिं सुद्धे असुद्धे वा उवकरणे गहिते जं सेसगं सड्ढगा पयच्छंति तं सव्वं संविग्गाण कप्पति घेत्तुं ॥३२५९॥

स-परक्खेत्तेसु इमो परिहारकालो –

सक्खेत्ते परखेत्ते, दो मासे परिहरित्तु गेण्हंति ।
जं कारणं ण णिग्गय, तं पि वहिं झोसियं जाणे ॥३२६०॥

दो मासे परिहरित्तु ततियमासे गेण्हंति ।

अहवा – चउपाडिवए कारणे ण णिग्गया उवकरणावेक्खं जावतियं कालं अणुवासं वसंति तं पि खेत्ता वाहिरज्झोसियं – क्षपितमित्यर्थः ॥३२६०॥

चउपाडिवए इमेहिं कारणेहिं ण णिग्गया –

चिक्खल्ल वास असिवातिएसु [1]जति कारणेसु गेण्हंति ।
देंते पडिसेहेत्ता, गेण्हंति तु दोसु पुण्णेसु ॥३२६१॥

सचिक्खल्ला पंथा, वासं वा णोवरमते, वाहिं वा असिव-ओमदुब्भिक्खादिया । एवमादिकारणेहिं ण णिग्गया, तत्थ दोसु मासेसु अपुण्णे जति कोति वत्थाणि देज्ज ते पडिसेहेयव्वा । जाहे दो मासा पुण्णा भवंति ताहे गेण्हंति ॥३२६१॥

कम्हा दोसु मासेसु पुण्णेसु वत्थग्गहणं कज्जति ? अतोच्यते –

भावो तु णिग्गए सिं, वोच्छिज्जति देंति वा वि अण्णस्स ।
अत्तट्ठंति व ताइं, एमेव य कारणमणिते ॥३२६२॥

जे इह खेत्ते वासावासं ठिता तेसिं वत्थे दाहामो त्ति सड्ढयाण जो भावो सो णिग्गएसु साहुसु वोच्छिज्जति । साहूण वा जे वत्था संकप्पिता ते अण्णसाधूणं अण्णपासऽत्थाण वा देंति । अप्पणा वा – "अत्तट्ठं" ति परिभुंजति वा । चउप्पाडिवए कारणतो अणितेसु वसंतेसु अगेण्हंतेसु य एमेव भाववोच्छेदो भवति ॥३२६२॥

अपुण्णेसु वि दो मासेसु कारणे गहणं कज्जति ।

के य ते कारणा ? इमे –

वालऽसहु-वुड्ढ-अतरंत-खमग-सेहाउलम्मि गच्छम्मि ।
सीयं अविसहमाणे, गेण्हंति इमाए जयणाए ॥३२६३॥

असहू अशक्तिष्टः, अतरंतो गिलाणो, [2]लल्लक्कं वा सीतं पडंतं ण सहंति, एवमादिएहिं कारणेहिं दोहिं मासेहिं अपुण्णेहिं इमाए जयणाए गेण्हंति ॥३२६३॥

पंचूणे दोमासे, दसदिवसूणे दिवड्ढमासं वा ।
दसपंचहियं मासं, पणवीसदिणे व वीसं वा ॥३२६४॥

पण्णरस दस व पंच व, दिणाणि परिहरिय गेण्ह एक्कं वा ।
अहवा एक्केक्कदिणं, अउणट्ठि दिणाणि आरब्भ ॥३२६५॥

दो मासा पोसपुण्णिमाए पूरंति । जत्थ वासं ठिता तत्थ उस्सग्गेण माहवहुलपडिवयाए तत्थ गहणं कायव्वं । कारणं अणागाढं गाढतरं अवेक्खिऊण ओमंथगपणगपरिहाणीए गहणं कायव्वं । एगं वा चउपाडिवए एगदिणं परिहरेत्ता गेण्हंति ।

---

१ नहि कारणेसु उण णिति (पा०) । २ भयंकर ।

ग्रहवा – जत्थ वासं ठिता तत्थ चउपाडिवयदिणादारब्भ सट्ठिदिणा वत्थग्गहणं कायव्वं ।

कारणे पुण ग्रोमंथगपरिहाणीए ग्रउणसट्ठिदिणारब्भ एक्केक्कपरिहाणीए जाव कत्तियपोण्णिमपाडिवयं एक्कं परिहरिय गेण्हंति । वासावासं जत्थ ठिता तत्थ सा विघी भणिता ॥३२६५॥

उडुवद्धियमासकप्पं ठिता तत्थिमा विघी –

बितिए वि समोसरणे, मासा उक्कोसगा दुवे होंति ।
ओमंथगपरिहाणी, य पंच पंचेग य जहण्णे ॥३२६६॥

उडुवद्धियमासकप्पो सव्वो वितियसमोसरणं भण्णति, तत्थ वि उक्कोसेण्णं दो मासा परिहरियव्वा ।

कारणे ग्रोमंथ-एग-पणगेगदिणपरिहाणी पूर्ववत्, पणगपरिहाणीए पणगं जहण्णं, एगदिणपरिहाणीए एगदिणो जहण्णो, तं परिहरिय गेण्हंति ॥३२६६॥

एसेवऽत्थोवक्खाणगाहा –

अपरिहरंतस्सेते, दोसा ते चेव कारणे गहणं ।
बाल-वुड्ढाउले गच्छे, असति दस पंच एक्को य ॥३२६७॥

उडुवद्धियखेत्ते एते दोमासे ग्रपरिहरंतस्स जे वासाखेत्ते दोसा भणिता ते चेव भवंति । उडुवद्धिय-खेत्ते बालादिकारणेहिं, ग्रसति वा उवकरणस्स, ग्रोमंथगपरिहाणीए जहण्णपक्खे दस पंच वा एगं वा दिणं परिहरिय गेण्हंति ॥३२६७॥

परक्खेत्ते संविग्गसंतिए दोहिं मासेहिं पुण्णेहिं उवरिं जहण्णेण पंचहि य दिणेहिं खेत्तिएहिं उवकरणे ग्रगहिए ग्रण्णेसिं ण कप्पति किं चि घेत्तुं ।

जो गेण्हति तस्सिमो दोसो –

कारणाणुपालगाणं, भगवतो आणं पडिच्छमाणाणं ।
जो अंतरा उ गेण्हति, तट्ठाणारोवणमदत्तं ॥३२६८॥

कारणं क्रिया, पिंडविसोहियादिया । "पिंडस्स जा विसोही" गाहा

पुव्वरिसीहिं पालियं जे पच्छा पालयंति ते कारणाणुपालया । भगवतो वद्धमाणस्स ग्राणं पडिच्छति यथा भगवता उक्तं – ग्रभिलाप्यादिपदार्थप्ररूपणा तथा प्रतिपत्या ग्राज्ञाप्रतिपन्ना भवति । एरिसगुणजुत्ताणं साहूणं ग्रंतराऽगृहीते उवकरणे जो गेण्हति साहू तस्स पच्छित्तं तट्ठाणारोवणा – चाउम्मासुक्कोसे, मासियं मज्झे य, पंच जहण्णे, भगवया ग्रणणुणायं ति ग्रदत्तादानं भवति ॥३२६८॥

उवरिं पंच अपुण्णे, गहणमदत्तं गत त्ति गेण्हंति ।
अणपुच्छ दुपुच्छा, तं पुण्णे गत त्ति गेण्हंति ॥३२६९॥

परखेत्ते दोण्ह मासाणं उवरिं पंचसु दिणेसु ग्रपुण्णेसु जति गेण्हति तत्थ वि तट्ठाणारोवणमदत्तं भवति । ग्रह जाणंति णिस्संदिद्धं खेत्तसामिणो परं विदेसं गता तो दो मासोवरि पंचदिणेसु गेण्हंति, खेत्तिएहिं वत्थग्गहणं कयं ण कयं ति ग्रणापुच्छा ॥३२६९॥

दुपुच्छा इमा –

गोवालवच्छवाला, [1]कासगआएस वालवुड्ढा य ।
अविधी विही उ सावग, महतरधुवकम्मि लिंगत्था ॥३२७०॥

जे गोसे णिग्गया ते पदोसे पविसंति, ते पुच्छंति गोवालमादिए किं समणेहिं वत्थग्गहणं कतं ण कतं ति । एसा अविधिपुच्छा ।

सावगादिया, धुवकम्मी लोहकारो रहकारो कुंभकारो तंतुकारो य । एवंविधपुच्छाए णाउं वत्थादिग्गहणं करेंति वा ण वा । पुच्छिए वा सयं वा परदेसगए (णाउं) दोमासासु अपुण्णेसु गेण्हंति ॥३२७०॥

परखेत्तग्गहणे इमा विधी –

उप्पण्णकारणे गंतु, पुच्छिउं तेहि दिण्ण गेण्हंति ।
तेसागतेसु सुद्धेसु जत्तियं सेस अग्गहणं ॥३२७१॥

केइ आयरिया – वहुवालवुड्ढसेहादिया ताण वत्थग्गहणकारणे उप्पण्णे य सखेत्ते य वत्थासती ते परखेत्ते वत्थग्गहणं काउकामा गंतुं खेत्तसामिए पुच्छंति, तेहिं अब्भणुण्णायं जत्तियं जप्पमाणं वा तत्तियं तप्पमाणं गेण्हंति, अतिरित्तं ण गेण्हंति ।

विहिपुच्छाए पुच्छिते सुद्धभावेण सुद्धे गहिते उवकरणे जति पुव्वखेत्तिया सुद्धा आगच्छेज्ज तो जं गहियं तं समप्पेंति. सेसस्स य अग्गहणं ॥३२७१॥

कहं पुण खेत्तियाण सुद्धासुद्धागमो भवति ?

अतो भण्णति –

पडिजग्गंति गिलाणं, ओसहहेतूहि अहव कज्जेहिं ।
एएहिं होंति सुद्धा, अह संखडिमादि तह चेव ॥३२७२॥

खेत्तिया पुण्णेसु वि दोसु मासेसु णो आगता, इमेहिं कारणेहिं – गिलाणं पडिजग्गमाणा, गिलाणस्स वा ओसहगहणं संपिछित्ता, अहवा – कुलगणसंघकज्जेण वा वावडा, एवमादिएहिं कारणेहिं अगता सुद्धा ।

अह संखडिणिमित्तं ठिता, वइयाइसु वा पडिवज्जंतमागता, तो जं खेत्तिएहिं गहियं गहियमेव, ण पुव्वखेत्तियाण देंति, सेसं पि गिण्हंति ॥३२७२॥

इमे विसुद्धकारणा –

तेणभय-सावयभया, वासे णईए य वा वि रुद्धाणं ।
दायव्वमदेंताणं, चउगुरु तिविहं व णवमं वा ॥३२७३॥

पुव्वद्धं कंठं । जं गहियं तं दायव्वं । अह ण देंति तो चउगुरुं । उवकरणणिप्फण्णं वा तिविधं 'नवमं' अणवट्ठतं वा भवति ॥३२७३॥

---

[1] कृपिवल ।

"[2]तं पुण्णे गय त्ति गिण्हति" अस्य व्याख्या –

परदेसगए णातुं, सगं वं सेज्जायरे व पुच्छित्तुं ।
गेण्हंति असढभावा, पुण्णेसुं दोसु मासेसु ॥३२७४॥ कंठा

अववादतो गेण्हेज्जा, ण देज्ज वा –

बितियपयमणाभोगे, सुद्धा देंता अदेंत गुरुगा उ ।
आउट्टिया गिलाणादि जत्तियं सेस अग्गहणं ॥३२७५॥

"किं एत्थ साधू आसिणो" त्ति अणाभोगा परखेत्ते गेण्हेज्ज, पच्छा णाए तं दायव्वं । अह ण देंति तो चउगुरुं उवकरणणिप्फण्णं वा । आउट्टिए वा गिलाणस्स जतिएण कज्जं तं गेण्हंति सेसमतिरित्तं (ण) गेण्हतीत्यर्थः ॥३२७५॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए दसमओ उद्देसो समत्तो ॥

एकादश उद्देशकः

उक्तो दशमोद्देशकः । इदानीमेकादशः प्रारभ्यते ।

अस्याभिसंबंधो इमो –

> वुत्तं वत्थग्गहणं, दसमे एगारसे उ पादस्स ।
> कालस्स व पडिसेहो, वुत्तो इणमो उ भावस्स ॥३२७६॥

दशमे अंतसूत्रेषु वस्त्रग्रहणमुक्तं, एकादशे आद्यसूत्रे पात्रग्रहणमुच्यते । एष संबंधः ।

अहवा – दशमसूत्रे कालप्रतिषेध उक्तः । इह एकादशाद्यसूत्रे भावप्रतिषेध उच्यते ॥३२७६॥

जे भिक्खू अय-पायाणि वा तंब-पायाणि वा तउय-पायाणि वा कंस-पायाणि वा रुप्प-पायाणि वा सुवण्ण-पायाणि वा जायरूव-पायाणि वा मणि-पायाणि वा कणग-पायाणि वा दंत-पायाणि वा सिंग-पायाणि वा चम्म-पायाणि वा चेल-पायाणि वा संख-पायाणि वा वइर-पायाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खू अय-पायाणि वा तंब-पायाणि वा तउय-पायाणि वा कंस-पायाणि वा रुप्प-पायाणि वा सुवण्ण-पायाणि वा जायरूव-पायाणि वा मणि-पायाणि वा कणग-पायाणि वा दंत-पायाणि वा सिंग-पायाणि वा चम्म-पायाणि वा चेल-पायाणि वा संख-पायाणि वा वइर-पायाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू अय-पायाणि वा तंब-पायाणि वा तउय-पायाणि वा कंस-पायाणि वा रुप्प-पायाणि वा सुवण्ण-पायाणि वा जायरूव-पायाणि वा मणि-पायाणि वा कणग-पायाणि वा दंत-पायाणि वा सिंग-पायाणि वा चम्म-पायाणि वा चेल-पायाणि वा संख-पायाणि वा वइर-पायाणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अय-बंधणाणि वा तंब-बंधणाणि वा तउय-बंधणाणि वा कंस-
बंधणाणि वा रुप्प-बंधणाणि वा सुवण्ण-बंधणाणि वा जायरूव-
बंधणाणि वा मणि-बंधणाणि वा कणग-बंधणाणि वा दंत-
बंधणाणि वा सिंग-बंधणाणि वा चम्म-बंधणाणि वा चेल-बंधणाणि वा
संख-बंधणाणि वा वइर-बंधणाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति॥सू॥४॥

जे भिक्खू अय-बंधणाणि वा तंब-बंधणाणि वा तउय-बंधणाणि वा कंस-
बंधणाणि वा रुप्पबंधणाणि वा सुवण्ण-बंधणाणि वा जायरूव-
बंधणाणि वा मणि-बंधणाणि वा कणग-बंधणाणि वा दंत-
बंधणाणि वा सिंग-बंधणाणि वा चम्म-बंधणाणि वा चेल-बंधणाणि वा
संख-बंधणाणि वा वइर-बंधणाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति॥सू॥५॥

जे भिक्खू अय-बंधणाणि वा तंब-बंधणाणि वा तउय-बंधणाणि वा कंस-
बंधणाणि वा रुप्प-बंधणाणि वा सुवण्ण-बंधणाणि वा जायरूव-
बंधणाणि वा मणि-बंधणाणि वा कणग-बंधणाणि वा दंत-बंधणाणि
वा सिंग-बंधणाणि वा चम्म-बंधणाणि वा चेल-बंधणाणि वा संख-बंध-
णाणि वा वइर-बंधणाणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति॥सू॥६॥

अयमादिया कंठा । हारपुंडं णाम, (?) अयमाद्या: पात्रविशेषाः मौक्तिकलताभिरुपशोभिता । मणिमादिया कंठा, मुक्ता शैलमयं चेलमयं प (वा) सेप्पतो खलियं वा पुडियाकारं कज्जइ ।

[1]प्रथमसूत्रे स्वयमेव करणं कज्जइ ।
द्वितीयसूत्रे अन्यकृतस्य धरणं ।
तृतीयसूत्रे अयमादिभिः स्वयमेव बंधं करोति ।
चतुर्थसूत्रे अन्येन अयमादिभिर्बद्धं धारयति ।

अयमाई पाया खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तब्बंधणबद्धा वा, ताण धरेंतम्मि आणादी ॥३२७७॥

करणे धरणे आणाणवत्थमिच्छत्तविराहणा य भवइ । चतुगुरुगं च से पच्छित्तं ॥ २७६॥

इमो य भावपडिसेहो भण्णति –

तिण्हट्ठारसवीसा, सतमड्ढाइज्जा य पंच य सयाणि ।
सहसं च दससहस्सा, पण्णास तहा य सयसहस्सा ॥३२७८॥
मासो लहुओ गुरुओ, चउरो मासा हवंति लहुगुरुगा ।
छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३२७९॥

---

१ तृतीय-षष्ठ सूत्रे चूर्णौ न गृहीते ।

एगादिया-जाव-तिन्नि कहावणा जस्स मुल्लं, एयं धरंतस्स मासलहुं । चउरादिया-जाव-अट्ठारस कहावणा जस्स मोल्लं, एयं धरंतस्स मासगुरु । वीसाए चउलहुं । इक्कीवीसाइ-जाव-सयं पूरं एत्थ चउगुरुगा । एगुत्तरादियसयाओ-जाव-अड्ढाइज्जा सया एत्थ छल्लहुगं । तदुवरि एगुत्तरवुड्ढीए-जाव-पंचसया एत्थ छग्गुरुगा । एवं सहस्से छेदो । दससहस्सेसु मूलं । पन्नासाए सहस्सेसु अणवट्ठो । सयसहस्से पारंचियं । एक्केक्के ठाणे आणाइया दोसा ॥३२७९॥

इमे आयसंजमविराहणादोसा –

भारोभयपरितावण, मारणे अहिकरण अहियकसिणम्मि ।
पडिलेहाणालोवो, मणसंतावो तुवादाणं ॥३२८०॥

पमाणातिरित्ते भारो भवति ।

अथवा – भारभया ण विहरति । भएण वा ण विहरइ – "मा मे एयं उक्कोसं पत्तं हीरेज्जा" । भारेण वा परिताविज्जति ।

तेणगेहिं वा तदट्ठा गहिओ परिताविज्जति । "मा एस चेव यं काहेति" त्ति तेणगा या मारेज्ज । तेणगेहिं य गहिए पाए अहिकरणं ।

अथवा – अइरित्तं अनुपयोगित्वात् अधिकरणं । एते गणणाधिके पमाणाधिके मुल्लाधिके य दस-दोसा भणिया । मुल्लपमाणकसिणं च जइ पडिलेहंति तो तेणगा पट्ठ्याय त्ति हरंति य ते, अतो अपडिलेहिए उवहिणिप्फण्णं संजमविराहणा य ।

गणणाइरित्तं जइ पडिलेहेइ तो सुत्तत्थपलिमंथो, अप्पडिलेहिए उवहिणिप्फण्णं संजमविराहणा य । अतिरित्तगहणाए अप्पडिलेहणाए य आणालोवो कओ भवति । कसिणावराहे मणसंतावो भवइ । एरिसं तारिसं मज्झ पायं आसि त्ति, खित्तादि वा भवे, कसिणं च गेहस्स उण्णिक्खिवितुकामस्स उवादाणं भवइ । जम्हा एते दोसा तम्हा [1]महद्धणमोल्लाइं पायाइं ण धरेयव्वाइं ॥३२८०॥

बितियपदं गेलण्णे, असतीए अभाविते य गच्छम्मि ।
असिवादी परलिंगे, परिक्खणट्ठा विवेगो वा ॥३२८१॥

अगदोसहसंजोगो, तं चिय रजतादि अहव वेज्जेट्ठा ।
मल्लगमभावितम्मी, पइदिणदुलभे व रयतादी ॥३२८२॥

अयमाइपाते वेज्जुवदेसेण गिलाणस्स ओसहं ठविज्जति. संजोइए वा वेज्जट्ठा वा घेप्पइ । राया रायमच्चो वा पव्वाविओ सिया, तस्स य कणगमाइपादोवचियस्स कंगभायणे मा छड्डी गेलन्नं वा भवेज्ज तेण कणगादि घेप्पेज्ज । "असइ" त्ति लाउयमादियाभावे अयमादियं गेण्हेज्ज । तत्थ वि अप्पमुल्लं । गच्छे वा अभाविया अत्थि, तेसिं अट्ठाए मुल्लगं गिण्हेज्ज । पतिदिणं अलभंते दुल्लभे वा रयतादि गेण्हेज्ज॥३२८२॥

गच्छे व करोडादी, पतावणट्ठा गिलाणमादीणं ।
असिवे सपक्खपंते, रायदुट्ठे व परलिंगे ॥३२८३॥

---

[1] "महद्धणे अप्पगणे य वत्थे" इति बृह० उद्दे० ३ गाथा ३९९७ ।

उवग्गहट्ठा वा [1]करोडगाई गच्छे धरिज्जति। गिलाणस्स वा किंचि ओसढं छोढुं उण्हे पयाविज्जति, आदिग्गहणाओ ओमरायदुट्ठादिसु, कारणे वा परलिंगं करेंतो गेण्हेज्ज ॥३२८३॥

भुंजइ ण व त्ति सेहो, परिक्खणट्ठा व गेण्ह कंसादी।
विसरिसवेसनिमित्तं, होज्ज व पंडादिपव्वइओ ॥३२८४॥

सेहस्स वा परिक्खणणिमित्तं पाडिहारियं घेप्पेज्जा।

अहवा – कोइ अपव्वावणिज्जो कारणेण पव्वाविओ, तस्स य विसरिसो वेसो कायव्वो, कारणे समत्ते तस्स विवेगो कायव्वो ॥३२८४॥

जे भिक्खू परं अद्धजोयणमेराओ पायवडियाए गच्छइ,
गच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

मूलवसभगामाओ-जाव-अद्धजोयणं ति मेरा भवइ। अद्धजोयणाओ परओ जइ जाइ पायग्गहणं करेति तो आणादिया दोसा भवंति।

परमद्धजोयणाओ, संथरमाणेसु णवसु खेत्तेसु।
जे भिक्खू पायं खलु, गवेसती आणमादीणि ॥३२८५॥

उस्सग्गेणं जाव उब्भामगखेत्तं तम्मि पायं गवेसियव्वं, परतो आणादिया दोसा, तम्हा णो परतो उप्पाएज्जा ॥३२८५॥

भिक्खुवसहीसु जह चेव णवसु तह चेव पायवत्थादी।
जोयणमद्धे चउगुरु, अद्धुट्ठेहिं भवे चरिमं ॥३२८६॥

उडुबद्धे अट्ठसु मासखेत्तेसु वासाखेत्ते य एतेसु णवसु खेत्तेसु जह चेव भत्तपाणमुप्पाएइ तहा पायवत्थादिए वि ॥३२८६॥

जइ पुण संथरंतो परतो अद्धजोयणाओ आणेति तो इमं पच्छित्तं –

अंतरपल्ली लहुगा, परतो खलु अद्धजोयणे गुरुगा।
ततियाए गवेसेज्जा, इतराहिं अट्ठहिं सपदं ॥३२८७॥

जइ अंतरपल्लीआओ आणेइ तो चउलहुगा। अंतरपल्लीआओ परओ अद्धजोयणमेत्ताओ, मूलवसभगामाओ तं च जोयणं, एत्थ चउगुरुगा। खेत्तबहि जोयणे छल्लहुं। दिवड्ढे छग्गुरुं। दोहिं छेदो। अड्ढाइज्जेहिं मूलं। तिहिं अणवट्ठो। अद्धट्ठेहिं पारंचियं। आणादिणो य दोसा। दुविहा य विराहणा। तत्थ आयविराहणा कंटऽट्ठिखाणुमाइया, संजमे छक्कायादिया। तम्हा खेत्तबहिं ण गवेसियव्वं।

खेत्ततो अद्धजोयणऽब्भंतरे गवेसंतो, कालतो सुत्तत्थपोरिसी काउं तइयपोरिसीए गवेसइ। जइ इतराहिं गवेसइ तो अभिक्खासेवाए चतुलहुगा, अट्ठमवाराए पारंचियं पावइ ॥३२८७॥

---

१ कटोरा।

खेत्तब्भंतरे अलब्भमाणे विहरंते चेव भायणभूमिं गंतव्वं –

वितियपदं गेलण्णे, वसही भिक्खमंतरे ।
सज्झायगुरूजोगे, सुणणा वत्तणा गणे ॥३२८८॥

गेलण्णाइयाण इमा व्याख्या –

दुहओ गेलणम्मी, वसही भिक्खं च दुल्लभं उभए ।
अंतरविगिट्ठिसज्झाओ णत्थि गुरूणं व पाउग्गं ॥३२८९॥

दुहतो गेलन्नं अप्पणो परस्स ।

अहवा – अणागाढं गाढं ति । "दुहतो" त्ति खेत्तकालेसु अतिक्कमं करेति ।

गिलाणकारणेण – सयं गिलाणो गिलाणवावडो वा ण तरति गंतुं जत्थ भायणा उप्पज्जंति, ताहे-दूरातो वि भायणा अंतरपल्लीयासु आणिज्जंति, अन्नतरपोरिसीए वा गेण्हेज्जा ।

अहवा – भायणदेसे भिक्खं दुल्लभं, वसही वा दुल्लभा, उभयं वा दुल्लभं ।

अहवा – उभए गिलाणस्स गच्छस्स य भिक्खवसही य दुल्लभा ।

अहवा – "उभए" त्ति पायोग्गं नत्थि सुत्तत्थपोरिसीतो वि अकाउं पादग्गहणं करेंति ।

अहवा – बालवुड्ढा उभयंतेहिं आउलो गच्छो संकामेउं ण सक्कति, गामंतराणि वा विगिट्ठाणि ।

अहवा – तम्मि भायणदेसे सज्झातो न सुज्झति । गुरूण व भत्तपाणादीयं पायोग्गं णत्थि, आगाढ जोग्गं वा वहंति ॥३२८९॥

अणुओगो पट्ठविओ, अहिणवगहियं च ते उ वत्तेंत्ति ।
अप्पा वा ते खेत्ता, गच्छस्स व णत्थि पाओग्गं ॥३२९०॥

"अणुओगो पट्ठविउ" त्ति अत्थं सुणेति त्ति वुत्तं भवति, अभिणवधारितं वा सुत्तत्थं वा वत्तेति । भायणभूमीए वा मासकप्पपाउग्गा खेत्ता अप्पा – गच्छस्स आधारभूता न भवंतीत्यर्थः । सबालवुड्ढस्स वा गच्छस्स वत्थपातोग्गं णत्थि ॥३२९०॥

एएहिं कारणेहिं, गच्छं आसज्ज तिन्नि चतुरो वा ।
गच्छंति निब्भयं भाणभूमि वसहादिएसु सुहं ॥३२९१॥

एवमादिएहिं कारणेहिं भाणभूमिं गच्छो ण गच्छइ । "गच्छमासज्ज" ति-त्रिचतुरो वा साहू णिब्भयं भाणभूमिं गच्छंति । ते य गीयत्था वसभा वच्चंति । तेसिं अप्पाणं सुलभं भत्तपाणवसहीमादी भवति ॥३२९१॥

गणणाप्रमाणातिरिक्तमपि ग्रहीतव्यं, कुतः ? –

आलंबणे विसुद्धे, दुगुणो तिगुणो चउग्गुणो वा वि ।
खेत्ताकालादीओ, समणुण्णाओ व कप्पम्मि ॥३२९२॥

विसुद्धे आलंबणे दुगुणो तिगुणो वा चउग्गुणो वा पादपडोयारो घेतव्वो, प्रविसद्दातो वत्थादियो वि ।

खेत्तातीश्रो श्रद्ध-जोयणातो परतो ।

कालातीतो वासासु गहणं करेति, दुमासं वा श्रपूरेत्ता गहणं करेंति, राश्रो वा । एतं सव्वं कारणे विसुद्धे श्रणुण्णायं । पकप्पे पकप्पो गच्छवासो । श्रहवा – णिसीहज्भयणं ॥३२९२॥

जे भिक्खू परमद्धजोयणमेरातो सपच्चवायंसि पायं श्रभिहडं श्राहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

श्रद्धजोयणातो परतो सपच्चवातेण पहेण श्रभिहडं श्रभिराभिमुख्ये 'हृञ् हरणे' श्रभिमुखं हृतं श्रानीतमित्यर्थः । जो भिक्खू श्राणावेइ तं पडिग्गाहेति वा सो श्राणादी पावति चउगुरुं च से पच्छित्तं ।

एसो चेव – श्रत्थो इमो –

परमद्धजोयणाश्रो, सपच्चवायम्मि श्रभिहडाणीयं ।
तं जे भिक्खू पायं, पडिच्छते श्राणमादीणि ॥३२९३॥ कंठा

इमेहिं वा सावायो पथो –

सावततेणा दुविधा, सव्वालजला महानदी पुण्णा ।
वणहत्थि दुट्ठसप्पा, पडिणीया चेव तु श्रवाया ॥३२९४॥

सीहादिया सावया, तेणा दुविहा – सरीरोवकरणे ।

जले – गाहमगराईएहिं सव्वाला महाणदी वा श्रगाधा पुण्णा ।

वणहत्थी वा दुट्ठो पहे, कुंभाकारादिसप्पा वा पहे विज्जंति, गिहीण वा वेरियादिपडिणीया संति ॥३२९४॥

एवमातिश्रववातेहिं इमे दोसा –

तेणादिसु जं पावे, तं वा पावंति श्रंतरा काया ।
वद्धहितमारिते वा, उड्डाहपदोसवोच्छेदो ॥३२९५॥

सो गिहत्थो श्राणित्तो तेणगसमीवातो जं घातादि पावति । श्रादिसद्दातो सिहवग्घादियाण वा समीवातो जं पावति, सो वा गिहत्थो श्रासुरत्तो जं कंढादिए[1] तेणादिपहारे पावति, श्रंतरा वा पुढवादिकाए विराहेज्ज, वंदिग्गहतेणेहिं वा वद्धो, हिश्रो वा, जुज्झतो वा मारितो, ताहे सयणादिजणो भासति – संजयाण पादे णेंतो सावगो मारिउ त्ति, एवं उड्डाहो, तस्स वा सयणिज्जा पदोसं गच्छेज्जा, तद्दव्वणगदव्वस्स वा वोच्छेदं करेज्ज, सो वा पदोसं गच्छे, वोच्छेदं वा करेज्ज । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा श्राहडं णो गेण्हेज्जा, श्रप्पणा गवेसेज्ज ॥३२९५॥

वितियपदेण गिहत्थाणीतं पि गेण्हेज्जा –

श्रसिवे श्रोमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्तसावय, भए य जयणा इमा तत्थ ॥३२९६॥

---

१ यट्टि ।

सव्वखेत्ते पादासतीए दुल्लभेसु वा असिवेहितो वा गंतुमसमत्थो, अहवा पादभूमीए अंतरा वा असिवं ओमं वा रायदुट्ठबोहिगभयं वा सयं गिलाणवावडो वा, सेहस्स वा तत्थ सागारियं, मा सो सीदेज्जा, चरित्त-दोसा वा, तत्थ अणेसणादिया दोसा, सावयभयं वा तत्थ ॥३२९६॥

एवमादिकारणेहिं इमं जयणं करेंति –

अप्पाहेंति पुराणातिगाण सत्थे आणयह पातं ।
तेहि य सयमाणीए, गहणं गीतेतरे जयणा ॥३२९७॥

अप्पाहणं संदेसो, पुराणस्स संदिसंति । आदिग्गहणेणं गिहीताणुव्वयसावगस्स वा सम्मदिट्ठिणो संदिसंति – पादं सत्थेण आणयह । तेहिं वा आणिता जदि सव्वे गीयत्था तो गेण्हंति । इतरे अगीयत्था तेसु जयणं करेंति, पुव्वं पडिसेहित्ता छिन्ने भावे तेहिं य जयंता जता अत्तट्ठिया तदा गेण्हंति ॥३२९७॥

एसेव गमो णियमा, आहारे सेसते य उवकरणे ।
पुव्वे अवरे य पदे, सपच्चवाएतरे लहुगा ॥३२९८॥

जो पादे विही भणितो एसेव विधी आहारे, सेसोवगरणे य दट्ठव्वो । सपच्चवाते, इतरे पुण णिपच्च-वाते सव्वत्थ चउलहुगा ॥३२९८॥

जे भिक्खू धम्मस्स अवण्णं वदति वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

"धृञ् धारणे", धारयतीति धर्मः, ण वण्णो अवण्णो णाम अयसो अकीर्तिरित्यर्थः । "वद व्यक्तायां वाचि" ।

दुविहो य होइ धम्मो, सुयधम्मो खलु चरित्तधम्मो य ।
सुयधम्मो सज्झाओ, चरित्तधम्मो समणधम्मो ॥३२९९॥

सुयधम्मो खलु दुविहो, सुत्ते अत्थे य होइ णायव्वो ।
दुविहो य चरणधम्मो, य अगारमणगारियं चेव ॥३३००॥

पंचविधो सज्झातो सुयधम्मो । सो पुण दुविहो – सुत्ते अत्थे य । चरित्तधम्मो दुविहो – अगारधम्मो अणगारधम्मो य । एक्केक्को दुविहो – मूलुत्तरगुणेसु ॥३३००॥

दुविहो तस्स अवण्णो, देसे सव्वे य होंति णायव्वो ।
सुत्तणिवातो देसे, तं सेवंतम्मि आणादी ॥३३०१॥

देसे सव्वे वा सुयस्स अवण्णं वदति । एवं चरित्ते वि दुविहो अवण्णो । सुत्तस्स देसे चउलहुगा, अत्थस्स देसे चउगुरुगा । सव्वसुयस्स अवण्णे भिक्खुणो मूलं । अभिसेयस्स अणवट्ठो । गुरुणो चरिमं । एवं दाण पच्छित्तं । आवज्जणाए तिण्ह वि सव्वे सुत्ते अत्थे वा पारंचियं ।

गिहीणं मूलगुणेसु जति देसे अवण्णं वदति तो चउगुरुगं, सव्वहि मूलं ।

गिहीणं उत्तरगुणेसु जति देसे अवण्णं वदति तो चउलहुगा ।

गिहीणं सव्वुत्तरगुणेसु चउगुरुगा ।

साहूणं मूलगुणेसु उत्तरगुणेसु य जति देसे अवण्णं वदति तो चउगुरुगा, दोसु वि सव्वेसु मूलं ।

एत्थ अत्थस्स देसे गिहीण य, मूलगुणदेसे साहूण य, उत्तरगुणदेसे सुत्तणिवादो भवति । एवं अवण्ण-वयणं सेवंतस्स आणादिया दोसा भवंति ॥३३०१॥

मूलगुण-उत्तरगुणे, देसे सव्वे य चरणधम्मो उ ।
सामादियमादी उ, सुयधम्मो जाव पुव्वगतं ॥३३०२॥

सामाइयमाईए, एक्कारसमाउ जाव अंगातो ।
अह देसो एत्थ लहुगा, सुत्ते अत्थम्मि गुरुगादी ॥३३०३॥

पूव्वद्धं गतार्थत्वात् कंठं । सुयस्स सामादियादि-जाव-एक्कारसअंगा-ताव-देसो, एयं चेव सह पुव्वगएण सव्वसुयं ॥३३०३॥

सव्वम्मि तु सुयणाणे, भूया वाते य भिक्खुणो मूलं ।
गणि आयरिए सपदं, दाणं आवज्जणा चरिमं ॥३३०४॥

गिहिणं मूलगुणेसु, देसे गुरुगा तु सव्वहिं मूलं ।
उत्तरगुणेसु देसे, लहुगा गुरुगा तु सव्वेसिं ॥३३०५॥

मूलगुणे उत्तरगुणे, गुरुगा देसम्मि होंति साहूणं ।
सव्वम्मि होंति मूलं, अवण्णवायं वयंतस्स ॥३३०६॥

कहं पुण वदंतो आसादेति ?

जीवरहिते व पेहा, जीवाउलमुग्गदंडता मोयं ।
को दोसो य परकडे, चरणे एमातिया देसे ॥३३०७॥

जीवेहिं विरहिते जाव पडिलेहणा कज्जति सा निरत्थिया ।

जीवाउले वा लोगे चंकमणादिकिरियं करेंतो कहं णिद्दोसो ? परित्तेगिंदियाण य संघट्टणे मासलहुदाणे, एवं अप्पावराहे उग्गदंडया अजुत्ता ।

जं व बितियपदे णु मोयायमणं भणियं तं पि अजुत्तं, –

आहाकम्मादिएसु परकडेसु को दोसो ? एवमादि चरणस्स देसे अवण्णो । सर्वं यम-नियमात्मकं चारित्रं कुशलपरिकल्पितं एष सर्वावर्णवादः ॥३३०७॥

इमेरिसं सुत्ते अवण्णं वदति –

काया वया य तच्चिय, ते चेव पमाय अप्पमादा य ।
जोतिस-जोणि-णिमित्तेहिं किं च वेरग्गपरयाणं ॥३३०८॥

अयुत्तं पुणो पुणो कायवयाण वण्णणं पमादप्पमायाण य । किं वा वेरग्गपवण्णाणं, जोतिसेण जोणीपाहुडेण वा णिमित्तेण वा । सव्वं वा पागतभासाणिबद्धं, एवमादि सुय-आसायणा । एवं अवन्नं वदंतो

आणाइया य दोसा, सुयदेवता वा खित्तादिचित्त करेज्ज, अन्नेण वा साहुणा सह असंखडं वा भवे– "कीस अवन्नं भाससि" त्ति । जम्हा एते दोसा तम्हा णो अवण्णं वदे ॥३३०८॥

कारणे वदेज्जा वि –

बितियपदमणप्पज्झे, वएज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादिसू चेव ॥३३०९॥

अणपज्झो खेत्तादियो वएज्ज, अप्पज्झो वा अविकोवितो सो वा वएज्जा । 'तव्वादि' त्ति जो अवन्नवादपक्खग्गहणं करेति सो य रायादि वलवंतो तब्भया वदेज्जा, णो दोसो ॥३४०९॥

जे भिक्खू अधम्मस्स वण्णं वयति, वयंतं वा सातिज्जति ।सू०॥१०।

इह अहम्मो भारह-रामायणादि पावसुत्तं, चरगादियाण य जे पंचग्गितवादिया [1]वयविसेसा ।

अहवा – पाणातिवायादिया मिच्छादंसणपज्जवसाणा अट्ठारस पावट्ठाणा, एतेसिं वण्णं वदतीत्यर्थः ।

एसेव गमो नियमा, वोच्चत्थे होति तु अहम्मे वि ।
देसे सव्वे य तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥३३१०॥

वोच्चत्थे विपक्खे, वन्नवायं वदतीत्यर्थः । सेसं कंठं ।

इहरह वि ताव लोए, मिच्छत्तं दिप्पए सभावेणं ।
किं पुण जति उववूहति, साहू अजयाण मज्झम्मि ॥३३११॥

"इहरहवि" त्ति सहावेण प्रदीपते प्रज्वलते, किमिति निर्देशे, पुनः विशेषणे, किं विशेषयति ? सुतरां दीप्यत इत्यर्थः । यदीत्यभ्युपगमे, अजयाणं अग्गतो उववूहति ताहे थिरतरं तेसिं मिच्छत्तं भवतीत्यर्थः। शेषं पूर्ववत् ॥३३११॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उवट्टेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति॥सू.१४

---

१ तव ।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

❀　　❀　　❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स गारत्थियस्स वा कायं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उवट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा, उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

❀　　❀　　❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वणं संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वणं तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वणं फुमेज्ज वा रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा
अच्छिंदेंतं वा विच्छिंदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा,
आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३३।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता
अण्णयरेणं धूवणजाएणं धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा
धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३४।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पालु-किमियं वा कुच्छि-किमियं वा अंगुलीए निवेसिय निवेसिय नीहरइ,
नीहरंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३५।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाओ नह-सीहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।३६।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३७।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३८।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३९।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं उत्तरोट्ठाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं अच्छिपत्ताइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि-फुमेज्ज वा रएज्ज वा
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं भुमग-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छिमलं वा कण्णमलं वा
दंतमलं वा नहमलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायाओ सेयं वा जल्लं वा
पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सीस-दुवारियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६३।।

पायप्पमज्जणादी, सीसदुवारादि जे करेज्जाहिं ।
गिहि-अण्णतित्थियाण व, जो पावति आणमादीणि ।।३३१२।।

चउगुरु से पच्छित्तं, आणादिया य दोसा भवंति। मिच्छत्ते थिरीकरणं । सेहादियाण य तत्थ गमणं । पवयणस्स य ओभावणा । जम्हा एते दोसा तम्हा एतेसिं वेयावच्चं णो कायव्वं ।।३३१२।।

कारणे पुण कायव्वं –

बितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, परलिंगे सेहमादीसु ।।३३१३।।

कारणे परलिंगपवण्णो करेज्जा, सेहो वा अणलो विगिंचियव्वो तस्स करेंतो सुद्धो, तस्सग्गतो वा पन्नवणं करेंतो सुद्धो ।

अहवा – सेहो आगतो परिस्संतो दव्वलिंगेण, तस्स विस्सामणादि कायव्वं । अप्पसागारिए जयणं करेंतो सुद्धो ।।३३१३।।

जे भिक्खू अप्पाणं वीभावेति, वीभावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।

जे भिक्खू परं वीभावेति, वीभावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६५।।

उभयं वा । अनन्यभावे आत्मैवात्मा, पृथग्भावे आत्मव्यतिरिक्तः परः, आत्मपरव्यपदेशेनोभयं भवति । ऐहिकपारत्रिकं भयोत्पादनं वीभावनं, चउगुरुं पच्छित्तं आणादिया य दोसा भवन्ति ।

दिव्व-मणुय-तेरिच्छं, भयं च आकम्हिकं तु णायव्वं ।
एक्केक्कं पि य दुविहं, संतमसंतं च णायव्वं ।।३३१४।।

भयं चउव्विहं उप्पज्जति – पिसायादिएहिंतो दिव्वं, तेणादिएहिं तो माणुस्सं, आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइयाइएहिं तो य तेरिच्छं, निर्हेतुकं चउत्थं अकस्मादभयं भवति । एक्केक्कं पुणो दुविहं – संतासंतभेएण । पिसाय-तेण-सिवाइएसु दिट्ठेसु जं भयं उप्पज्जति तं संतं, अदिट्ठेसु असंतं । अकस्मादभयं संतं, आत्मसमुत्थं मोहनीयभयप्रकृत्युदयादुद्भवति असंतं, अकस्मादभयं भयकारणसकल्पिताभिप्रायोत्पन्नं ।।३३१४।।

चोदकाह – ननु इहलोकभयं परलोकभयं आदाणभयं आजीवणाभयं अकस्मादभयं मरणभयं असिलोगभयं एयं सत्तविहं भयमुत्तं, कहं चउव्विहं भणह ?

आचार्याह –

कामं सत्तविकप्पं, भयं समासेण तं पुणो चउहा ।
तत्थादाणं समणे, ण होज्ज अहवा वि देहुवही ।।३३१५।।

कामं शिष्याभिप्रायानुमतार्थे, तदेव सत्तविहं भयं संखिप्पमाणं चउव्विधं भवति ।

कहं पुण संखिप्पति ?

उच्यते – इहलोगभयं मणुयभए समोतरति, परलोगभयं दिव्व-तिरियभएसु समोतरति । आदाणे आजीवण-मरण-असिलोगभयं च-एते चउरो वि तिसु दिव्वादिएसु समोतरंति ।

कथम् ?

उच्यते – जतो आदाणेण हत्थट्ठितेण दिव्व-मणुय-तेरिच्छयाण बिभेति । आजीवणं वित्ती, सा च दिव्व-मणुय-तेरिच्छान्यतमाधीना । मरणं प्राणपरित्यागः, अत्रापि दिव्य-मनुष्य-तिर्यगन्यतमभावावस्थस्येति । णारका किल मरणभयमिच्छन्त्येव । अकस्मात् कारणात् त्रिविधमेव मरणभय । असिलोगो वि दिव्व-मणुएसु संभवति । सन्नीसु य पंचेंदियतिरिएसु अकस्माद्भयं सट्ठाणे समोतरति । एवं सत्तभया चउसु भएसु समोतारिता । एत्थ समणस्स आदाणभयं ण होज्ज ।

अहवा – समणो वि देहोवही चेव, आदाणभयं भवति ।।३३१५।।

चोदगाह – कहं देहुवही आदाणभयं ?

उच्यते –

एगेसिं जं भणियं, महब्भयं एतदेव विहिसुत्ते ।
तेणादाणं देहो, मुच्छासहियं च उवकरणं ।।३३१६।।

बंभचेरा विधिसुत्तं, तत्थ भणियं – एतदेवेगेसिं महद्भयं भवति, एतदेव सरीरं, एगेसिं अविरय-जीवाणं महंतं भयं भवति, तेण कारणेण देहो आदाणं भवति, उवगरणं च मुच्छासहियं आदाणं भवति, न सेसं ।।३३१६।।

रक्खस-पिसाय-तेणाइएसु उदयग्गि-जङ्गमाईसु ।
तव्विवरीयमकम्हा, जो तेण परं च अप्पाणं ।।३३१७।।

रक्खस-पिसायादियं दिव्वं, तेणादियं माणुसं, उदय-ग्गि-जङ्गमादियं तेरिच्छं, अकस्माद्भयं च । एतेण चउव्विहेण जो अप्पाणं परं उभयं वा ।।३३१७।।

बीहावेती भिक्खू, संते लहुगा य गुरुमसंतम्मि ।
आणादी मिच्छत्तं, विराहणा होति सा दुविहा ।।३३१८।।

संते लहुगा, असंतेसु चउगुरुगा इत्यर्थः । दुविहा आय-संजमविराहणा ।।३४१८।।

नोवेक्खति अप्पाणं, ण इव परं खेत्तमादिणो दोसा ।
भूएहि व घेप्पेज्जा, भेसेज्ज परं च जं चऽण्णं ।।३३१९।।

अप्पाणं परं वीहावेंतो अप्पाणं परं च णावेक्खति, वीहंतो सयं परो वा खित्तचित्तो भवेज्ज, तत्थ मूलं, गिलाणारोवणा य । भीओ वा संतो तं चेव वीमावेंतो हणेज्ज, भीतो वा भूतेण घेप्पेज्जा, गहग्गहितो वा परं भीसेज्ज, तत्थ पि बहु पंतावणादिया दोसा । "जं चऽण्णो" त्ति खेत्तादिअणपज्झो छक्कायविराहणं करेज्ज, एत्थ से कायणिप्फण्णं ।।३३१९।। जम्हा भए कज्जमाणे एते दोसा तम्हा भयं ण कायव्वं ।

इमं कारणं –

जह मोहप्पगडीणं कोहातीणं विवज्जणा सेया ।
तह चउकारणमुदयं, भयं पि न हु सेवितं सेयं ।।३३२०।।

जह मोहणिज्जस्स कोहादियाण उत्तरपगडीणं वज्जणा सेया भवति तहा भयं चउव्विहं मोहस्स उत्तरपगडी विवज्जेउं श्रेयं भवतीत्यर्थः ॥३३२०॥

भयउत्तरपगडीए, सेसा मोहस्स सूतिया पगडी ।
मोहपगडीए सेसा, तु सूतिता मूलपयडीतो ॥३३२१॥

एयं भयं मोहणिज्जस्स उत्तरपयडी, एयाए गहियाए सेसाओ मोहणिज्जस्स उत्तरपगडीतो सूचितातो भवंति । एवं सव्वा चेव मोहपगडिगहिया । मोहमूलपगडीए सेसा सत्त णाणावरणाइया मूलपगडीतो सूचिया भवंति ॥३३२१॥

ता जेहि पगारेहिं, वज्झंती णाणणिण्हवादीहिं ।
णिक्कारणम्मि तेसू, वट्टंते होति पच्छित्तं ॥३३२२॥

ता इति अट्ठमूलपगडीओ, पंचाणउइं वा उत्तरपगडीतो, सम्यक्त्वमिश्रयोर्बन्धो नास्तीत्येवं पंचनवति । एयातो दोहिं वंधहेउप्पगारेहिं वज्झंति तेसु वट्टंतस्स पच्छित्तं भवति ।

ते य इमे ।

१ णाणं जस्स समीवे सिक्खियं तं निण्हवति ।

२ नाणिपुरिसस्स पडिणीओ ।

३ अधिज्जंतो वा अंतरायं करेति ।

४ जीवस्स वा णाणोवघायं करेति ।

५ णाणिपुरिसे वा पदोसं करेति ।

एवमादिएहिं पंचविहं णाणावरणं वज्झइ ।

एतेसु चेव सविसेसेसु नवविधं दंसणावरणं वज्झति ।

भूताणुकंपयाते वयाणुपालणाते खंतिसंपण्णयाए दाणरईए गुरुभत्तीते एतेहिं सातावेदणिज्जं वज्झति । विवरीयहेऊहिं असातं ।

मोहणिज्जं दुविधं – दंसणमोहं चरित्तमोहं च ।

तत्थ दंसणमोहे अरहंतपडिणीययाए एवं सिद्ध-चेतिय-तवस्सि-सुय-धम्म-संघस्स य पडिणीयत्तं करेंतो दंसणमोहं वंधति ।

तिव्वकसायताए वहुमोहयाते रागदोससंपन्नयाते चरित्तमोहं वंधति ।

आउयं चउव्विहं – तत्थ णिरयाउयस्स इमो हेऊ – मिच्छत्तेण महारंभयाते महापरिग्गहाते कुणिमाहारेणं णिस्सीलयाते रुद्दज्झाणेण य णिरयाउं णिवंधति ।

तिरियाउयस्स इमो हेतू –
उम्मग्गदेसणाते संतमग्गविप्पणासणेणं माइल्लयाते सढसीलताते ससल्लमरणेणं एवमादिएहिं तिरियाउयं निबंधति ।

इमे मणुयाउयहेतवो –

विरयविहूणो जो जीवो तणुकसातो, दाणरतो, पगतिभद्दयाए मणुयाउयं बंधति ।

देवाउयहेतू इमे –

देसविरतो सव्वविरतो बाल-तवेण अकामणिज्जराए सम्मद्दिट्ठियाए य देवाउयं बंधति ।

णामं दुविहं – सुभासुभं ।

तत्थ सामण्णतो असुभे य इमे हेतू – मण - वय - कायजोगेहिं वंको मायावी तिहिं गारवेहिं पडिबद्धो । एतेहिं असुभं णामं वज्झति । एतेहिं चेव विवरीएहिं सुभं णामं वज्झइ ।

सुभगोत्तस्स इमे हेतू –

अरहंतेसु य साहूसु य भत्तो, अरहंतपणीएण सुएण जीवादिपदत्थे य रोयंतो, अप्पमाययाए संजमादिगुणप्पेही य उच्चागोयं बंधति । विवरीएहिं णीयागोयं ।

सामण्णतो पंचविहंतराए इमो हेतू –

पाणवहे मुसावाते अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे य एतेसु रइबंधगरे, जिणपूयाए विग्घकरो, मोक्खमग्गं पवज्जंतस्स जो विग्घं करेति । एतेसु अंतराइयं बंधति ।

विसेसहेउ उववुज्ज वत्तव्वा । एतेसु हेऊसु णिक्कारणे वट्टंतस्स पच्छित्तं भवति ॥३३२२॥

चोदगाह – जाव बायरसंपरातो ताव सव्वजीवा आउयवज्जातो सत्त कम्मपयडीतो णिच्चकालं सप्पभेदा बंधंति, कहं अप्पायच्छित्ती भवति ? सपायच्छित्तस्स य सोही णत्थि, सोही अभावे य मोक्खाभावो ।

आचार्याह –

कामं आउयवज्जा, णिच्चं बज्झंति सव्वपगडीतो ।
जो बादरो सरागो, तिव्वासु तासु पच्छित्तं ॥३३२३॥

तीव्रेषु हेतुषु वर्तमानस्य प्रायश्चित्तं भवति, न मंदेषु । शेषं कंठं ॥३३२३॥

उत्तरप्रकृतीरधिकृत्योच्यते –

अहिकिच्च उ असुभातो, उत्तरपगडीतो होति पच्छित्तं ।
अनियाणेण सुभासु, न होति सट्ठाणपच्छित्तं ॥३३२४॥

अट्ठण्हं पगडीणं जा असुभातो ताणं हेतुसु वट्टंतस्स पच्छित्तं, जहा णाणपदोसादिएसु । जा पुण सुभातो तासु ण भवति पच्छित्तं, जहा अण्णाणे पदोसं करेति तित्थगरादिपडिणीएसु वा । अनिदाणेण वा सुभं बंधंतस्स पायच्छित्तं ण भवति, जहा तित्थगरनामगोतहेतुसु [1]"अरहंतसिद्ध" कारग-गाहा – जम्मि भेदे जं पच्छित्तं भणियं तं तस्स सट्ठाणपच्छित्तं ॥३३२४॥

तं च इमं भण्णति –

देसपदोसादीसुं, साते लोभे अ असरिसे फासे ।
लहुओ लहुआ पुण हास अरतिनिद्दाचउक्कम्मि ॥३३२५॥

---

१ आवश्यक-निर्युक्ती ।

णाणस्स जति देसे पदोसं करेंति, आदिग्गहणातो णाणस्स चेव जदि देसे पडिणीयत्तं अंतरायं मच्छरं णिण्हवणं करेति, सायावेयणिज्जस्स निदाणादिएहिं अपसत्थज्झवसातो जदि हेतूए वट्टति, लोभकसायस्स य जइ बंधहेऊए वट्टति तो मासलहुं।

असरिसफासे पुरिसस्स इत्थि-णपुंसकफासा असरिसा, इत्थीए पुरिस-णपुंसगफासा असरिसा, णपुंसगस्स थी-पुरिसफासा असरिसा, एत्थ असरिसा फासा बंधस्स जति हेऊए वट्टति एतेसु सव्वेसु चउलहुगा पच्छित्तं। हासं अरती निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला एयाणं छण्हं पगडीणं जति हेऊसु वट्टति तो मासलहुं पच्छित्तं ॥३३२५॥

सव्वे णाणपदोसादिएसु थीणे य होति चरिमं तु।
निरयाउ कुणिमवज्जे, मिच्छे वेदे य मूलं तु ॥३३२६॥

णाणस्स जति सव्वस्स पदोसं करेति पडिणीयादिहेतूसु वा वट्टति, थीणगिद्धिणिद्दाए य जति हेऊए वट्टति तो पारंचियं पच्छित्तं। णिरयाउयस्स कुणिमहेउं एक्कं वज्जेउं सेसेसु महारंभादिएसु जति वट्टति, मिच्छत्तस्स, तिविहवेदहेऊए य वट्टंतस्स मूलं पच्छित्तं। कुणिमाहारे रागे गुरुगा, दोसे लहुगा ॥३३२६॥

तिरियाउ असुभनामस्स चेव हेतूसु मासियं गुरुयं।
सेसासु अप्पसत्थासु, होंति सव्वासु चउलहुगा ॥३३२७॥

तिरियाउयस्स हेऊहिं सव्वेहिं, णामस्स जा असुभा पगटीतो ताण य हेऊए वट्टति तो मासगुरुं पच्छित्तं। सेसासु त्ति चउरो दंसणभेया, लोभवज्जा पन्नरस कसाया, हासादिछक्के य हास अरति वज्जा चउरो भेदा, नीयागोयं, पंचविहं च अंतरायं। एयाण अप्पसत्थाण बंधहेउसु वट्टंतस्स चउलहुगा पच्छित्तं ॥३३२७॥

चोदकाह –

सक्का अपसत्थाणं, तु हेतवो परिहारित्तु पयडीणं।
सादादिपसत्थाणं, कहं णु हेतू परिहरेज्जा ॥३३२८॥

अप्रशस्तप्रकृतिहेतवो वर्जितुं शक्यन्ते, अशुभाध्यवसायवर्जनात्। कथं नित्यकालशुभाध्यवसितः साधुः शुभप्रकृतिहेतून् वर्जयति, तेषां शुभाध्यवसायबन्धात् ॥३३२८॥

चोदक एवाह –

जति वा बज्झति सातं, अणुकंपादीसु तो कहं साहू।
परमणुकंपाजुत्तो, वच्चति मोक्खं सुहणुबंधी ॥३३२९॥

जति सातं बज्झति भूयाणुकंपयाते, आदिसद्दातो वयसंपन्नताते संजमजोगुज्जमेण खंतिसंपन्नताते दाणरुईए गुरुभत्तिरागेण य तो साहू एतेहिं अणुकंपादिएहिं जुत्तो पुन्नबंधी कहं मोक्खं गच्छति? जतो पुन्न मोक्ख-गमणविग्घाय हवति ॥३३२९॥

किं चान्यत् –

सुहमवि आवेदंतो, अवस्समसुभं पुणो समादियति।
एवं तु णत्थि मोक्खो, कहं च जयणा भवति गम्मं ॥३३३०॥

सुहं आवेदंतो अवस्सं पावं बंधति, पुन्नपावोदया य अवस्सं संसारो भवति, अतो एवं साहुस्स मोक्खो णत्थि । कहं वा एत्थ साहुणा जतियव्वं – घटितव्यमित्यर्थः ।।३३३०।।

अहवा ण चेव वज्झति, पुण्णं नावि असुभोदयं पावं ।
सव्व अणिड्डियकम्मो, उववज्जति केण देवेसु ।।३३३१।।

अहवा – अणुकंपादिएहिं पुण्णं ण वज्झति, ण वा पावं, सव्वहा अपरिक्खीणकम्मे य पुण्णाभावे देवेसु केण हेतुणा उववज्जति ? ।।३३३१।।

एवं चोदकेणोक्ते आचार्याह –

पुव्वतव-संजमा होंति, रागिणो पच्छिमा अरागस्स ।
रागो संगो वुत्तो, संगा कम्मं भवे तेणं ।।३३३२।।
भण्णति जहा तु कोती, महल्लपल्ले तु सोधयति पत्थं ।
पक्खिवति कुभं तस्स उ, णत्थि खतो होति एवं तु ।।३३३४।।
अन्नो पुण पल्लातो, कुंभं सोहयति पक्खिवेति पत्थं ।
तस्स खओ भवतेवं, इय जे तु संजया जीवा ।।३३३४।।
तेसिं अप्पा णिज्जर, वहु वज्झइ पाव तेण णत्थि खओ ।
अप्पो वंधो जयाणं, वहुणिज्जर तेण मोक्खो तु ।।३३३५।।

पूर्वा इति प्रथमा । के ते ? तपः संयमश्च । यत्र तपः तत्र नियमात्संयमः, यत्र संयमः तत्रापि नियमात् तपः । उभयोरव्यभिचारप्रदर्शनार्थं तपः संयमग्रहणं । यथा यत्रात्मा तत्रोपयोगः, यत्रोपयोगस्तत्रात्मा इति । सामाइयं छेदोवट्ठावणियं परिहारविसुद्धियं सुहुमसंपरागं च एते पुव्वतवसंजमा । एते णियमा रागिणो भवंति । पश्चिमा तव-संजमा अरागिणो भवंति । तं च अहाखयातचारित्रं इत्यर्थः ।

अहवा – अणसणादीया जाव सुक्कज्झाणस्स आदिमा दो भेया, पुहुत्तवितक्कसंवियारं एगत्तवियक्कं अवियारं च, एते पुव्वतवा ।

सामाइय-छेद-परिहारसुहुमं च एते पुव्वतवसंजमा णियमा रागिणो भवंति ।

सुहुमकिरियानियट्टी वोच्छिन्नकिरियमप्पडिवाइं च एते पच्छिमा तवा, अहक्खायचारित्तं पच्छिमसंजमो, एते पच्छिमतवसंजमा नियमा अरागिणो भवंति । एतेहिं पुव्वतवसंजमेहिं देवेहिं उववज्जति सरागित्वात् । रागो त्ति वा संगो त्ति वा एकार्थं । यतो भणितं – "[1]रागो संगो वुत्तो" ।

अहवा – कम्मजणितो जीवभावो रागो, कम्मुणा सह संजोययंतो स एव संगो वुत्तो । संगातो पगतिभदेण णिव्वत्तमाणं कम्मं भवति, तेण कम्मुणा उदिज्जमाणेण भवो भवति –, संसार इत्यर्थः । ते य सरागसंजता पल्लधण्णपक्खेवदिट्ठंतेणं वहुसोधगा अप्पबंधी कमेण पच्छिमे तवसंजमे पप्प मोक्खं गच्छंति । एवं सुभपगडिबंधेसु साहवो जतंति । जम्हा पगडिहेतवेसु पवत्ततस्स एते दोसा तम्हा ण बीभे, ण वा परं बीहाविज्जा ।।३३३६।।

---

१ गा० ३३३२ ।

वितियपदमणप्पज्झे, वीभे अप्पज्झ हीणसत्ते वा।
खेत्तं दित्तं च परं, पवाति-पडिणीय-तेणं वा ॥३३३६॥

अणप्पज्झो खित्तदित्तो सयं वा वीभेति, परं वा वीभावेइ, हीणसत्तो वा अप्पज्झो वीभेज्ज, खित्तादियं वा परप्पवादिं वा पडिणीयं वा अणुवसमंतं सरीरोवगरणतेणं दुविहं वीभावेंतो निद्दोस इत्यर्थः ॥३३३६॥

जे भिक्खू अप्पाणं विम्हावेति, विम्हावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे भिक्खू परं विम्हावेति, विम्हावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

विस्मयकरणं विम्हावणा, आश्चर्यं – कुहकपराक्षेपकरणमित्यर्थः ।

विम्हावणा तु दुविधा, अभूयपुव्वा य भूयपुव्वा य।
विज्जा तव इंदजालिय-णिमित्तवयणादिसुं चेव ॥३३३६॥

विज्जाए मंतेण वा तवोलद्धीए वा इंदजालेण वा तीताणागतपडुप्पण्णेण वा णिमित्तवयणेण आदिसद्दातो अंतद्धाण-पादलेवजोगेण वा ।

अहवा – वयणं मरहट्ठय-दमिल-कुडुक्क-गोल्लय-कीरडुग-सेंववातीयाण य कुट्टिकरणं ॥३३३७॥

इमं अभूतभूतपुव्वाण वक्खाणं –

जो जेण अकयपुव्वो, अस्सुयपुव्वो अदिट्ठपुव्वो वा।
सो होतऽभूयपुव्वो, तव्विवरीयो भवे भूतो ॥३३३८॥

जेण पुरिमेण जो विज्ज-मंतजोग-इंदजालादिओ पयोगो अप्पणा अकयपुव्वो अन्नेण वा कज्जमाणो न दिट्ठो असुतो वा सो तस्स अभूयपुव्वो भन्नति। तव्विवरीयो पुण जो सयं कतो दिट्ठो सुतो वा सो भूतपुव्वो भण्णति। एत्थ सब्भूते चउलहुं, असब्भूए चउगुरुं, नेमित्ते अतीते चउलहुं, पडुप्पण्णाणागतेगु चउगुरुं ॥३३३८॥

एत्थ निमित्तवयणे असब्भूते इमं उदाहरणं –

दिव्वं अच्छेरं विम्हओ य अतिसाहसं अतिसओ य।
कत्तो से णाउं जे, किं णाहिति किं सुहं णातुं ॥३३३९॥

दो जणामिलिउं कित्तियादियाण सत्तण्हं णक्खत्ताणं इमं णामसंगारं करेंति–दिव्वं, अच्छेरं, विम्हतो, अतिसाहसं, अतिसतो, "कत्तो से णातुं जे, किं णाहित्ति, किं सुहं णाउं" एवं। एवं मघादि अणुराहादि धणिट्ठादि। एवं संगारं करित्ता बहुजणमज्झे एवं भासति–जो जं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं अन्नतरं छिवति तमहं जाणामि, तं परोक्खं कातुं छिक्कं, इतरो संगारसाहू भणाति – जदि पुव्वदारियं तो पुव्वामुहो ठिच्चा, अहो दिव्वं नाणं ताहे जाणति कित्तिया। एवं अन्नम्मि वि संगारणामे उक्कित्तित्ते जाणति। एवं सव्वणक्खत्ते जाणति ॥३३३९॥

एत्तो एगतरेणं, विम्हतकरणेण संतसंतेणं।
अप्पपरं विम्हावे, सो पावति आणमादीणि ॥३३४०॥

विज्जामंतादियाण एगतरेण विम्हावेंतस्स आणादिया ॥३३४०॥

इमे य दोसा –

उम्मायं पावेज्जा, तदट्ठजायण अदाण पडिणीए ।
खेत्तं व परं कुज्जा, तवणिव्वहणं च माया य ॥३३४१॥

एरिसं मया कतं त्ति सयमेव दित्तचित्तो भवेज्जा, तं वा विम्हावणकरणट्ठा जएज्जा । दिन्ने अहिगरणं । अदिज्जंते पडिणीतो परो वा विम्हावितो खित्तचित्तो भवति । विज्जाजीवणप्पयोगेण य तवो णिव्वहती – विकलीभवतीत्यर्थः । असब्भूते या मायाकरणं मुसावादो य । जम्हा एते दोसा तम्हा णो विम्हावेज्जा ॥३३४१॥

इमेहिं कारणेहिं विम्हावेज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए विम्हयावेज्जा ॥३३४२॥

असिवअवणयणेण विम्हावेज्जा ।

अहवा – असिवे ओमे य – अप्फव्वंतो विम्हावेज्जा, रायदुट्ठे भये य आउंटणणिमित्तं विम्हावेज्जा । गेलण्णे वि विज्ज आउंटणट्ठा ओसहट्ठा वा। रोधगअद्धाणेसु वि अप्फव्वणादिगाणि वहूणि कारणाणि अवेक्खिऊणं विम्हावेज्जा । तं च जयणाते । सा इमा – पुव्वं संतेण, पच्छा असंतेण, पणगादिजयणाए वा जाहे चउलहु पत्तो ताहे विम्हावेज्जा ॥३३४२॥

जे भिक्खू अप्पाणं विप्परियासेइ, विप्परियासंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥
जे भिक्खू परं विप्परियासेइ, विप्परियासंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

विपर्ययकरणं विप्परियासणा, तं कुव्वंतो चउगुरुगा ।

सा य विप्परियासणा चउव्विहा दव्वादिया इमा –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य चउव्विहो विवच्चासो ।
एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥३३४३॥

दव्वम्मि दाडिमंवाडिएसु खेत्ते दुणाममादीसु ।
काले गेलण्णोग्गही, भावम्मि य णिव्वुयादीसु ॥३३४४॥

अजाणयस्स पुच्छंतस्स दालिमं अंवाडियं, अंवाडियं दालिमं कहेति ।

खेत्ते विवज्जासं – दुणामे कए जहा आणंदपुरं अक्करथली, अक्करथली आणंदपुरं ।

कालविवज्जासो – अणागाढे गेलन्ने अगाढगेलण्णकहणं । आगाढगेलण्णे [1]अणागाढगेलण्णकहणं । उवहिं वा अकाले गेण्हति, काले ण गेण्हति । भावम्मि य अप्पाणं अनिवुत्तं णिव्वुयं दंसेति, निव्वुयं परं अनिव्वुयं पगासेति । आदिसद्दातो खमादिया भावा वत्तव्वा ॥३३४४॥

---

१ अणागाढकालकहणं ।

जो जेण पगारेणं, भावो णियओ तमण्णहा जो तु ।
मण्णति करेति वदति व, विप्परियासो भवे एसो ॥३३४५॥

भाव इति द्रव्यादिको भावः, नियत्तो त्ति ठितो, तं अण्णहा जो साहू मणसा भण्णति किरियाए वा करेति अन्नस्स वा अग्गतो पण्णवेंतो वदति । एसो विपर्यासः ॥३३४५॥

तत्थ दव्व-भावविप्परियासो इमो –

चेयणमचेयणं वा, वएज्ज कुज्जा व चेयणमचित्तं ।
वेसग्गहणादिसु वि, थी-पुरिसं अण्णहा दव्वे ॥३३४६॥

सचित्तपुढवाइयं दव्वं अचित्तं वदति, अचित्तं वा भस्मादियं सचित्तं वदति, करेति वा इंदजालादिणा, इत्थिं वा पुरिसनेवत्थं करेति वदति, पुरिसं च इत्थिनेवत्थं करेति वदति वा अन्याकारमित्यर्थः ॥३३४६॥

खेत्तभावे "[1]दुणाममादिसु" त्ति अस्य व्याख्या –

साएता णाऽओज्झा, अहवा ओज्झातोऽहं ण साएता ।
वत्थव्वमवत्थव्वो, ण मालवो मागधो वाऽहं ॥३३४७॥

कोति साहू अओज्झ-णगरातो पाहुणगो गतो, सो वत्थव्वगसाधूणा पुच्छितो – अओज्झातो आगतो सि ?

ताहे सो भणति – णो अतोज्झाओ, साएयातो आगतोमि । सो वत्थव्वगसाहू तं बितियणामं ण याणति । एवं साएते पुच्छिते अउज्झा भासति ।

अहवा – "वत्थव्वगो सि" त्ति पुच्छिते अवत्थव्वं अप्पाणं कहेइ । अवत्थव्वओ वा अप्पाणं वत्थव्वं कहेइ । मालवविसयुप्पन्नो वा पुच्छितो मगहविसयुप्पणोऽहं कहेति । एवं मागधः पृष्टः मालवमन्यं वा विपर्यं कथयति ॥३३४७॥

कालभावविवच्चासो इमो –

वरिसा णिसासु रीयति, इतरेसु ण रीयते वदति मण्णे ।
वयपरिमाणं व वए, परियायं वा विवच्चासं ॥३३४८॥

वरिसाकाले रीयति णो उडुबद्धे ।

अहवा – णिसासु रीयति णो दिवसतो पन्नवेति, वासासु रातो वा विहरियव्वं, इयरेसु य उडुबद्धे दिवसे य णो विहरियव्वं । मनुते मन्यते वा वासासु रातो य विहरणं श्रेयमिति । वयपरिमाणं वा विवरीयं करेति वदति वा, जहा – नडो थेरो तरुणवेसं करेति तरुणो वा थेरं करेति । अप्पं पव्वज्जपरियागं वा विवरीयं वदति जहा – वीसतिवास-परियागो पंचवीसतिवास-परियागं अप्पाणं कहेति । पंचवीसतिवास-परियागो वीसतिवास-परियागं कहेति ॥३३४८॥

भावविवच्चासो इमो –

अतवस्सिणं तवस्सिं, देहगिलाणो मि णो वि हु ण तिण्णो ।
सारिक्खे सो वि अहं, न वि त्ति सर-वण्णभेदं वा ॥३३४९॥

---

[1] गा० ३३४४ ।

कोति साहू सभावकिसो सरीरेण, पुच्छितो–सो तुमं तवस्सी ? सो अप्पाणं अतविस्सं तवस्सिं कहेति।

अहवा – सभावकिसो अगिलाणो वि सड्ढे जायति विगतिमादियं, "देहि मे गिलाणो" त्ति। सड्ढे हिं वा पुच्छितो – "सो तुमं गिलाणो" ? आमं ति वदति।

अहवा – सड्ढे हि पुच्छितो – "कयरो सो गिलाणो ? देमि से पातोग्गं।" ताहे अप्पाणं वदति, अन्नं वा किसं साधुं दंसेति अगिलाणं। लुद्धो वा हट्ठे वि गिलाणे गंतुं सड्ढे जायति – "सो गिलाणो अज्ज वि ण तरति, देह से दधिखीरादियं पाओग्गं"। कोइ चिरप्पवासी सयणो तस्स सरिसयं साधुं दट्ठुं भणेज्ज – एस साहू तस्स सारिक्खो"।

ताहे सो साहू भणेज्ज – "सो मि अहं।" सब्भूतं वा पच्चभिण्णातो अवलावं करेति – "ण वि" त्ति। सर-वन्नभेदकरणीहि गुलियाहिं वा अप्पाणं अन्नहा करेज्ज ॥३३४९॥

एतेसिं कारणाणं, एयतराएण जो विवच्चासे।
अप्पाणं च परं वा, सो पावति आणमादीणि ॥३३५०॥

दव्वादिविवच्चासं, अहवा वी भिक्खुणो वदंतस्स।
अहिगरणाइ परेहिं, मायामोसं अदत्तं च ॥३३५१॥

आणादिया य दोसा, संजमविराहणा य मायाकरणं च, बादरमुसावायभासणं च, "कीस वा अवलवसि ?" त्ति असंखडं भवे ॥३३५१॥

वितियपदं गेलण्णे, खेत्तसतीए व अपरिणामेसु।
अण्णस्सद्धा दुलभे, पत्तेयं चउसु वि पदेसु ॥३३५२॥

"गेलन्नं" ति दव्वाववादो। "खेत्तसतीए" त्ति खेत्तावववादो। "अपरिणामेसु" त्ति कालाववादो। "अण्णस्सद्धे दुल्लभे" त्ति भावाववादो।

चउसु वि दव्वादिएसु पदेसु पत्तेयं एते अववादपदा इमेण विधिणा –

तत्थ गेलन्ने अचित्तस्स अलंभे फलाइयं मिस्सं सचित्तं वा आणियं, तं च गिलाणो णेच्छति, ताहे सो भणति – "एयं अचित्तं।" अहवा अचित्तं चेव ओसढं पलंबादियं आणियं च गिलाणस्स अप्पत्थं तम्हा ते भन्नंति – "एयं मिस्सं सचित्तं संसत्तं वा।"

जदि गिलाणो भणेज्जा – "कीस मेऽदो एयं गहियं ?" भन्नति – "अणाभोगा, इयाणि एयं परिट्ठवेयव्वं।"

"खेत्तासतीए त्ति" – अतोऽणाए मासकप्पो कतो वासावासो वा, पुन्ने मासकप्पे वासाकाले वा अन्नखेत्तासतीए तत्थेव ठिता, ताहे ततो खेत्तातो अन्नो कोति गीतत्थो अन्नं खेत्तं अपरिणामगाणं सकासं पाहुणगो गतो. तेहि य अपरिणामगेहिं पुच्छितो कतो आगतो सि ? ताहे सो गीयत्थो चिंतेति – "मा एते अपरिणामगा जाणिसंति, एते णितियवासं वसति" त्ति। ताहि सो गीयत्थो भणति – आगतोऽहं साएयातो।

इदाणिं कालतो – "अपरिणामगेसु" त्ति कारणे अणुदियत्थमिते घेत्तव्वो, चंदं आएच्चं भणेज्जा, अणुदियं वा उदियं भणेज्जा, उदिते कारणे वा उदितं अणुदितं भणेज्ज, अत्थंगतं वा भणेज्ज धरति त्ति।

भावतो "अन्नसट्ठा दुल्लभे" त्ति दुल्लभे गिलाणादिपातोग्गे अप्पणो अन्नस्स वा अट्ठा परव्ववएसं करेति । अतवस्सी वि सो तवस्सि त्ति अप्पाणं भणेज्जा, तस्स वा तवस्सिस्स अट्ठाते णेमि, अगिलाणं वा गिलाणं अप्पाणं भणेज्ज, जेणं वा परववदेसेण लभति तं वदे, वेसग्गहणं वा करे ।

जे भिक्खू मुहवण्णं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

"मुहं" ति पवेसो, तस्स चउव्विहो णामाती णिक्खेवो । णाम-ठवणातो गतातो । दव्वमुहं गिहादि-वत्थुपवेसो । तिन्निसया-तिसट्ठा पावा दुरासया भावमुहं । तस्स भावमुहस्स वन्नं अणतीति वन्नं आदत्ते – गृण्हातीत्यर्थः ।

कथं पुण सो मुहवन्नं करेति –

कुतित्थ-कुसत्थेसू , कुधम्म-कुव्वय-कुदाणमादीसु ।
जे मुहवण्णं कुज्जा, उम्मग्गे आणमादीणि ॥३३५३॥

वितियगाहाए जहासंखं उदाहरणं –

गंगाती सक्कमया, गणधम्मादी य गोव्वयादीया ।
भोमादी दाणा खलु, तिण्णि तिसट्ठा उ उम्मग्गा ॥३३५४॥

गंगा आदिग्गहणातो पहास-प्रयाग-अवक्खंड-[1]सिरिमाय (ल) केयारादिया एते सव्वे कुतित्था ।

शाक्यमतं कपिलमतं ईसरमतादिया सव्वे कुसत्था ।

मल्लगणधम्मो सारस्सयगणधम्मो कूयसभादिया सव्वे कुधम्मा ।

गोव्वयादिया दिसापोक्खया पंचग्गितावया पंचगव्वासणिया एवमादिया सव्वे कुव्वया।

भूमिदाणं गोदाणं आस-हत्थि-सुवण्णादिया य सव्वे कुदाणा । कुत्सितार्थाभिधारणे खलु शब्दः ।

तिन्निसया तिसट्ठा पावा दुरासया जत्तीण वज्जा सेसा सव्वे उम्मग्गा । जो जत्थ भत्तो तदणुकूलं भासंतस्स आणादिया दोसा, चउगुरुगं पच्छित्तं, मिच्छत्ते य [2]पवत्तीकरणं, पवयणे य ओभावणया – "एते अदिन्नादाणा साणा इव, एते चाडुकारिणो ।" एतद्दोसपरिहरणत्थं । तम्हा णो कुतित्थियाणं मुहवण्णं करेज्ज ॥३३५४॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
एएहिं कारणेहिं, जयणाए कप्पती काउं ॥३३५५॥

सपक्खपंतासिवे परलिंगपडिवन्नो पसंसति ।

अहवा – असिवोमेसु असंथरंतो तब्भावियखेत्तेसु थलीसु वा पसंसेज्ज । परलिंगी वा जो रायदुट्ठं पसमेज्जा तदाणुवत्तीए पसंसेज्जा । रायभया वोहिगभएण वा सरणावगतो पसंसेज्ज । अन्नतो गिलाणपाउग्गे अलब्भंतेसु चेव लब्भति पसंसेज्जा ॥३३५५॥

पण्णवणे च उवेहं, पुट्ठो वंभाति वा थरेंतेते ।
आगाढे व अपुट्ठो, भणेज्ज लट्ठो तहा धम्मो ॥३३५६॥

---

[1] सिरमान । [2] थिरी ।

कारणे चरगादिभावितेसु खेत्तेसु ठियस्स जति ते चरगादिया वहुजणमज्झे ससिद्धंतं पन्नवेंति तत्थ उवेहं कुज्जा, मा पडिवहकरणे खेत्तातो णीणिजेज्ज । उवासगादिपुट्ठो – "अत्थि णं एतेसिं भिक्खुयाणं वए वा णियमे वा ?" ताहे तेसिं दाणसड्ढाणं अणुयत्तीए भणिज्ज – "एते वि बंभव्वयं धरेंति, आदिसद्दातो जीवेसु दयालुया ।" अन्नतरे वा आगाढे गिलाणादिकारणे भणेज्ज ।।३३५६।।

इमा पसंसणे जयणा –

जे जे सरिसा धम्मा, सव्वाहिंसादितेहिं उ पसंसे ।
एएसिं पि हु आता, अत्थि हु णिचो कुणाति व त्ति ।।३३५७।।

सरिसधम्मेहिं पसंसति –

तुम्ह वि सच्चवयं, अम्ह वि ।

तुम्ह वि अहिंसा, अम्ह वि ।

तुम्ह वि अदिन्नादाणं वज्जं, अम्ह वि ।

तुम्ह वि अत्थिया, अम्ह वि ।

दव्वत्तेण वा जहा तुम्हं निच्चो, तहा अम्हं पि निच्चो ।

जहा अम्ह वि आता सुहासुहं कम्मं करेइ, तहा तुम्ह वि ।।३३५७।।

एवं ता सव्वादिसु, भणेज्ज वइतूलिकेसिमं वूया ।
अम्ह वि ण संति भावा, इतरेतरभावतो सव्वे ।।३३५८।।

सत् शोभनो वादी सद्वादी, आत्मास्तित्ववादीत्यर्थः । जे पुण वेतुलिया तीसु इमं वूता – विगयतुल्लभावे वेतुलिया – नास्तित्ववादिन इत्यर्थः । सव्वभावा इतरेतरभावतो णत्थि त्ति, नित्यत्वं अनित्यत्वे नास्ति, अनित्यत्वं नित्यत्वे नास्ति । एवं आत्मा अनात्मा, कर्तृत्वमकर्तृत्वं, सर्वगत्वं असर्वगत्वं, मूर्तत्वं अमूर्तत्वं, घटत्वं पटत्वं परमाणुत्वं द्विप्रदेशिकत्वं कृष्णत्वं नीलत्वं गोत्वं अश्वत्वं एवमादि ।।३३५८।।

जे भिक्खू वेरज्ज-विरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं, सज्जं आगमणं, सज्जं गमणागमणं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७१।।

जेसिं राईणं परोप्परं वेरज्जं, जेसिं राईणं परोप्परं गमणागमणं विरुद्धं, तं वेरज्जं विरुद्धरज्जं । सज्जग्गहणा वट्टमाणकालग्गहणं ।

अहवा – अभिक्खग्गहणं करेति । पन्नवगं पडुच्च गमणं, अन्नट्ठाणातो आगमणं, गंतुं पडियागयस्स गमणागमणं । एवं जो करेइ तस्स आणादिया दोसा, चउगुरुं च से पच्छित्तं । एसो सुत्तत्थो । एसा सुत्तफासियणिज्जुत्ती ।

वेरसद्दस्स इमो छव्विहो णिक्खेवो –

नामं ठवणा दविए, खेत्ते काले य भाववेरे य ।
तं महिस वसभ वग्घा, सीहा णरएसु सिज्झणया ।।३३५९।।

णाम-ठवणातो गतातो । दव्वहेतुं जं वेरं तं दव्ववेरं । विरोधिदव्वाण वा जोगो दव्ववेरं, जहा अंबखीराणं ।

जम्मि खेत्ते वेरं वट्टति, खेत्तणिमित्तं वा, जम्मि वा खेत्ते वन्निज्जति तं खेत्तवेरं ।

जम्मि वा काले वेरं वन्निज्जति तं कालवेरं ।

भावेवेरे इमं उदाहरणं –

एगत्थ गामे गावीतो चोरेहिं गहियातो । कुद्धे ण महत्तरो णिग्गतो । अमिया गावीतो, जुज्झं संपलग्गं । चोराहिवो सेणावती महत्तरेण सह संपलग्गो । ते रुद्दज्झाणोवगता एक्कमेक्कं वहेतु मया, पढमपुढवीए णारगा उववन्ना ।

ततो उव्वट्टा ते दो वि अन्नोन्नमहिसजूहेसु महिसवसभा उववन्ना, जूहाविया इत्यर्थः ।

तत्थ वि अन्नमन्नं पासित्ता आसुरुत्ता जुद्धं संपलग्गा, अन्नोन्नं वहित्ता मता, दोच्चपुढवीए णारगा उववन्ना ।

ततो उव्वट्टिता दो वि वग्घा जाता । तत्थ वि अन्नोन्नं वहेत्ता मया, तच्चपुढविं गता । ततो उव्वट्टिता दो वि सीहा उववन्ना । तत्थ वि एक्कमेक्कं वहेत्ता मया, चउत्थपुढवीते णारगा उववन्ना ।

ततो उव्वट्टिता दो वि मणुएसु उववन्ना, तत्थ जिणसासणं पवन्ना, सिद्धा य ॥३३५९॥

इमो वेरज्जसद्दस्स निग्गमो –

वेरं जत्थ उ रज्जे, वेरं जातं व रज्जति व वेरं ।
जं च वि[...]त्ति रज्जं, रज्जेणं विगयरायं वा ॥३३६०॥

जत्थ रज्जे पुव्वपुरिसपरंपरागतं वेरमत्थि तं भण्णति वेरज्जं ।

अहवा – ण पुव्वपुरिसपरंपरागतं, जस्स [1]संपदं राइणो वेरं जातं तं वेरज्जं ।

अहवा – स्वैरसत्ताए अन्नराईण गाम-नगरदाहादिए करेति सो एवं करेंतो वेरुप्पायणे रज्जेति एवं वा वेरज्जं ।

अहवा – जस्स राइणो रज्जे सव्वेसरा विरज्जंति – भृत्या इत्यर्थः, तं रज्जं रज्जेणं विरत्तं भण्णति, एतं वेरज्जं ।

अहवा – विगतो राया मतो पवसितो वा एयं वेरज्जं ॥३३६०॥

जं सुत्ते सज्जग्गहणं कहियं तस्सिमं वक्खाणं –

सज्जग्गहणातीतं, अणागतं चेव वारितं वेरं ।
पण्णवणपडुच्चगयं, होज्जा गमणं च उभयं वा ॥३३६१॥

जहा वट्टमाणवेरं परिहरिज्जति, एवं जत्थ अतीतं वेरं, भविस्सति वा जत्थ खेत्ते वेरं, एतेसु वि गमणादिया ण कायव्वा । सेसं कंठं ॥३३६१॥

वेरज्जग्गहणातो अन्ने वि अत्था सूइया, ते य इमे –

अणराया जुगराया, तत्तो वेरज्जए य दोरज्जे ।
एत्तो एक्कक्कम्मि य, चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥३३६२॥

---

१ साम्प्रतम् ।

एक्केक्के चउगुरुगा पच्छित्तं भवति ।

"अणराया" दियाण चउण्ह वि एवं वक्खाणं –

अणरायं निवमरणे, जुवराया दोच्च जावऽणभिसित्तो ।
वेरज्जं तु परबलं, दाइयकलहो तु वेरज्जं ॥३३६३॥

मते रायाणे जाव मूलराया जुवराया य एते दो वि अणभिसित्ता ताव अणरायं भवति । पुव्वराइणो जो जुवराया अभिसित्तो तेण अधिट्ठियं रज्जं जाव सो दोच्चं जुवरायाणं णाभिसिंचति ताव तं जुवरज्जं भण्णति । परचक्केणागंतुं जं रज्जं विलोलितं तं वेरज्जं । एगरज्जाभिलासिणो दो दाइया जत्थ कडगसंठिया कलहिंति तं दो रज्जं भण्णति ।।३३६३।।

विरज्जे वि इमेरिसे कप्पति गमणादीयं कातुं –

अविरुद्धा वाणियगा, गमणागमणं च होति अविरुद्धं ।
निस्संचारनिरुद्धे, न कप्पती गंधणादीया ॥३३६४॥

जत्थ वाणिया परोप्परं गमणागमणं करेंता अविरुद्धा, सेस-जणवयस्स य जत्थ गमागमो अविरुद्धो, तत्थ साहूणं कप्पइ गंतुं । इमं विरुद्ध-रज्जं जत्थ वणियाणं सेसजणवयस्स य निस्संचारं निरुद्धं (न कप्पइ गंतुं) । तत्थ गोमियाईहिं गहियाण य आयसंजमपवयणोवघायादिया य दोसा वक्खमाणा ।।३३६४।।

सो पुण इमेहि सद्धिं ण गच्छेज्जा –

अत्ताण चोरमेया, वग्गुरसोणहि पलाइणो पहिया ।
पडिचरगा य अहिमरादिय पंथे दिट्ठदिट्ठादी ॥३३६५॥

कोवेण अरिइज्जा कारणावेक्खगामिणो अत्ताणा, कव्वडिया वा । गवादिहारिणो चोरा । चावगहितग्गहत्थादिया रातो य जीवघायणपरा मेता । पासियवज्झप्पयोगेण मयघातया वग्गुरा – लोद्धया । सुणहवितिज्जता सोणहिया । जे भडादिया रण्णो अणापुच्छाने सपुत्तदारधणादिया अन्नरज्जं गंतुकामा ते पलादिणो । णाणाविधगाम-णगर-देसाहिंडगा पहपडिवण्णगा पहिया । गाम-णगर-सेणादियाण भंडिया पडिचरगा । केसिं च वग्गुरसोणहिया एक्कं, तत्थ अधिमरगा अट्ठमगा, अहिवत् अनुपकृतेऽप्यकारे मारका अभिमरा ।।३३६५।।

एतेसु भंगोवदंसणत्थं इमं भण्णति –

अत्ताणमादिएसू, दियपहदिट्ठे य अट्ठिया भयणा ।
एत्तो एगतरेणं, गमणागमणम्मि आणादी ॥३३६६॥

अत्ताणादिसहाएसु अट्ठसु एक्केक्के अट्ठभंगा संभवंति ।

ते य इमे – अत्ताणसहाया दिवसतो गच्छंति पहेण गोमियादिरायपुरिसेहिं दिट्ठा । एस पढमभंगो ।

दिवसतो पहेण अदिट्ठा वितियभंगो ।

दिवसतो उप्पहेण दिट्ठा ततिओ भंगो ।

दिवसतो उप्पहेण अदिट्ठा चउत्थो ।

एवं रातो वि चउरो भंगा । एवं सव्वे अट्ठ । एत्तो अट्ठभंगीतो एगतरेणावि जो गमणादियं करेति तस्स आणादिया दोसा ।।३३६६।।

इमं च से पच्छित्तं –

अत्ताणमादिएसुं, दियपहदिट्ठे य चउलहू होंति ।
राते य पहमदिट्ठे, चउगुरुगाऽतिक्कमे मूलं ॥३३६७॥

आदिल्लेसु चउसु भंगेसु चउलहुगा तवकालविसेसिया । पच्छिमेसु चउसु रातिभंगेसु चउगुरुगा तवकालविसेसिया । जतो रज्जातो पहावितो तम्मि अतिक्कंते मूलं ॥३३६७॥

सव्वभंगपरिमाणजाणणट्ठा भण्णति –

अत्ताणमादियाणं, अट्ठण्हट्ठहिपदेहि भइयाणं ।
चउसट्ठी य पयाणं, विराहणा होतिमा दुविहा ॥३३६८॥

अत्ताणादिएसु अट्ठसु एक्केक्के अट्ठ भंगा, सव्वे चउसट्ठि भंगा । चउसट्ठिं भंगपदाण अण्णतरेण गच्छंतस्स इमा संजमायविराहणा दुविहा ॥३३६८॥

छक्काय-गहण-कड्ढण, पंथं भेत्तूण चेव अतिगमणं ।
सुत्तम्मि[1] य अतिगमणे, विराहणा दोण्ह वग्गाणं ॥३३६९॥

अपहे असत्थोवहयपुढवीए पुढवीकायविराहणा । ओस णदिमादि संतरणे आउक्कायविराहणा । वणदवे सत्थिय-पज्जालिय-विज्झावणे वा अगणिक्कायविराहणा । जत्थ जत्थ अगणी तत्थ तत्थ णियमा वायू हवति । हरियमादिपलंबासेवणे वा वणस्सइविराहणा । पुढवि-आउ-वणस्सतिसमस्सियाण बेइंदियमादियाण विराहणे तसकायविराहणा ॥३३६९॥

इमं कायपच्छित्तं –

छक्कायचउसु लहुगा, परित्तलहुगा य गुरुग साहारे ।
संघट्टण परितावण, लहु गुरु अतिवायणे मूलं ॥३३७०॥

जहा [2]पेढे तहा वत्तव्वा ॥३३७०॥

इयाणिं "[3]गहण-कड्ढणे" त्ति । ठाणइल्ला रायपुरिसा गहण-कड्ढणं करेज्ज ।

ते चउव्विहा, इमे –

संजय-गिहि-तदुभयभद्दगा य तह तदुभयस्स वि य पंता ।
चउभंगो गोम्मितेसू, संजयभद्दा विसज्जेंति ॥३३७१॥

संजयभद्दा, णो गिहिभद्दा । णो संजयभद्दा, गिहिभद्दा ।

संजयभद्दा वि, गिहिभद्दा वि । अण्णे णो संजयभद्दा णो गिहिभद्दा वि ।

गोमिया ठाणइल्ला । संजयभद्दा पढम-ततियभंगेसु ते साहू गच्छंते ण धरेंति – विसर्जयन्तीत्यर्थः ॥३३७१॥

---

१ सुत्तम्मि (पा०) । २ गा० ११७ पीठिकायाम् । ३ गा० ३३६९ ।

संजयभद्दगमुक्के, वितिया घेत्तुं गिही व गेण्हंति ।
जे पुण संजयपंता, गिण्हंती जति गिही मोत्तुं ॥३३७२॥

पढमभंगे संजयभद्दा, तेहिं भद्दत्तणेण संजता मुक्का, न निरुद्धा । वितियभंगिल्ला संजयपंता, (वितियभंगिल्ला) ते संजते घेत्तुं पढमठाणपालगे गिही वि गिण्हंति, कीस भो एते संजते मुक्क त्ति ? जे पुण वितियभंगे ते संजयपंता, ते पंतत्तणेण साहूसहेज्जे गिहत्थे मोत्तुं साहू गिण्हंति, मा गच्छह त्ति वंचणादियं वा करेज्ज ॥३३७२॥

पढम-ततियमुक्काणं, रज्जे दिट्ठाण दोण्ह वि विणासो ।
पररज्जपवेसेवं, जतो न णेंती तहिं पेवं ॥३३७३॥

पढम-तइएसु भंगेसु ठाणपालया संजयभद्दा, तेहिं भद्दत्तणेणं मुक्का साहू "गच्छह त्ति न वारेमो" । ताहे ते साहू पररज्जे पविट्ठा, दिट्ठा य रायपुरिसेहिं पुच्छिया – "कओ आगता" कहं केण वा पहेण उप्पहेण वा ? जति साहू भणंति – उप्पहेण आगता तो उम्मग्गगामिणो त्ति सदोसा ।

अह साहू भणंति – पहेण ठाणपालपुरिसेहिं विसज्जिया आगता – ताहे दोण्ह वि विणासो, साहूण य ठाणइल्लाण य । एवं पररज्जपवेसे गेण्हणकड्ढणादिया दोसा दिट्ठा । जतो विरज्जातो णिंति तत्थ वि एते गेण्हण-कड्ढण-पंतावणादिया दोसा दट्ठव्वा ॥३३७३॥

रक्खिज्जति वा पंथो, जति तं भेत्तूण जणवयमतिंति ।
गाढतरं अवराहो, सुत्ते सुण्णे व दोण्हं पि ॥३३७४॥

अह धाडि चोरभंडियअभिमरमादिभया पंथा रक्खिज्जंति ण वा कस्स ति गमागमं देति, ताहे साहू अत्ताणादिएहिं समाणं जा रन्ना मेरा कता, न गमागमो केण य कायव्वो त्ति, तं जति भेतूणं पररण्णो जणवयं अइंति प्रविशंति, जणमेरं वा भेत्तूण जति अतिंति, तो गाढतरेण अवराहेण साहू जुज्जंति । एत्थ साहूणं चेव दोसो, ण थाणइल्लाणं । अह सुत्तेसु थाणपालेसु सुण्णे वा थाणपालगे गच्छंति तो "दोण्ह वि" त्ति संजयाणं थाणपालयाण य ।

अहवा – संजयाण सहायाण य गेण्हण-कड्ढणादिया दोसा ॥३३७४॥

इमं पच्छित्तं –

गेण्हणे गुरुगा छम्मासा कड्ढणे छेदो होति ववहारे ।
पच्छाकडम्मि मूलं, उड्डाह-विरुंगणे णवमं ॥३३७५॥
उद्दावणणिव्विसए, एगमणेगे पओस पारंची ।
अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारंचिओ होति ॥३३७६॥

थाणयणिउत्तेहिं अनिउत्तेहिं वा रायपुरिसेहिं गहियाण साहूण चउगुरुगा । हत्थे गहिउं कड्ढिएसु छल्लहुगा । कड्ढविकड्ढकरणे – छग्गुरुगा । "ववहारे" त्ति – करणसालाए रोहिएसु ववहारेज्जमाणेसु छेदो । "पच्छाकडे" त्ति णिज्जित्तेसु ववहारे मूलं । "उड्डाहे" त्ति पेच्छह भो परलोगठिता जणरायसीमा अतिक्कमं करेंति, चोरादिएहिं वा सद्धिं ओधावेंति, कण्णच्छि-नास-कर-पादविरंगिते वा, एतेसु दोसु पदेसु नवमं अणवट्ठं । उद्दवणे णिव्विसते वा एतेसु वि दोसु वि पदेसु पउट्ठेणं रन्ना कए पारंचियं भवति ॥३३७६॥

अहवा – "पओसे" त्ति एरिसे पगरिसदोसदुट्ठे पारंचियं भवतीत्यर्थः । अत्ताणसहायाणं एते सव्वे दोसा भणिया ॥३३७६॥

एमेव सेसएसु वि, चोरादीहि समगं तु वच्चंते ।
सविसेसतरा दोसा, पत्थारो जाव भंसणता ॥३३७७॥

चोरादिएसु समयं वच्चंतस्स ते च्चिय गेण्हण-कड्ढण-ववहारादिया, इमे य अन्ने सविसेसा दोसा । पत्थरणं पत्थारो सविस्तरमित्यर्थः । तस्स वा एगस्स वा ससहायस्स वा तग्गच्छियाणं अन्नगच्छियाणं वा कुल-गण-संघस्स वा गेण्हणादिता करेज्ज । एस पत्थारो । जीवित-चरणे य भंसणपत्थारं करेज्ज । जाव सद्दग्गहणातो सरीरविरुंगणाभेदा दट्ठव्वा । तेसु वि पत्थारो भाणियव्वो ॥३३७७॥

सविसेसदोसदरिसणत्थं भण्णति–

तेणट्ठम्मि पसज्जण, णिस्संकिते मूलमहिमरे चरिमं ।
जति ताव होंति भद्दग, दोसा ते तं चिमं अण्णं ॥३३७८॥

तेणगादिएहिं समाणं गच्छंतो तेणगादिअट्ठेसु कयकारिताणुमतेण तेणट्ठादिसु पसज्जति – स्तैन्यं करोतीत्यर्थः । जति ते णट्ठे संकिज्जति तो चउगुरुगा, णिस्संकिते मूलं । अभिमरट्ठे णिस्संकिते पारंचियं । जदि वा ते भद्दया थाणपालया, तेहिं विसज्जियाण पररट्ठं पविट्ठाणं ते च्चिय गेण्हणादिया दोसा । तं चेव चउगुरुमादियं पच्छित्तं ।

इमं चऽण्णं दोसुब्भवकारणं ॥३३७८॥

आयरिय उवज्झाए, कुल गण संघे य चेइयाइं य ।
सव्वे वि परिच्चत्ता, वेरज्जं संकमंतेणं ॥३३७९॥

इमं च से वक्खाणं –

किं आगतऽत्थ ते बिंति, संति णे एत्थ आयरियमादी ।
उग्घाएमो रुक्खे, मा एतु फलत्थिणो सउणा ॥३३८०॥

ते साहू रायपुरिसेहिं पुच्छिज्जंति – तुब्भे किमत्थमागता साहू ? बेंति – "संति" विज्जंते "णे" – अस्माकं, इह आचार्यादयः सन्ति तेनागता वयं । ताहे रायपुरिसा दिट्ठंतं वयंति – जम्हा फलत्थिणो सउणा रुक्खमागच्छंति तम्हा ते च्चेव रुक्खे "उग्घाएमो" छिंदामो त्ति वुत्तं भवति, जेण ते फलत्थिणो सउणा णागच्छंति, एतेण दिट्ठंतसामत्थेण आयरियादी उग्घाएमो जेण कोति तदट्ठा णागच्छति ॥३३८०॥

जम्हा एते दोसा तम्हा –

एयारिसे विहारे, न कप्पती समणसुविहियाणं तु ।
दो सीमे ऽतिक्कमति, जणसीमं रायसीमं च ॥३३८१॥

सीमा मेरा मज्जाता, तं जणमेरं रायमेरं च दुविहं पि अतिक्कमति – लंघयतीत्यर्थः ॥३३८१॥

रायसीमाइक्कमे इमे दोसा –

वंधं वहं च घोरं, आवज्जति एरिसे विहरमाणो ।
तम्हा तु विवज्जेज्जा, वेरज्ज-विरुद्ध-संकमणं ॥३३८२॥

णिगडादितो वंधो, कसघातादितो वहो । "घोर" मिति भयानको अतीव वधवंधी इत्यर्थः । वेरज्जे जम्हा एरिसे दोसे पावति तम्हा वेरज्जे विहारं वज्जेज्जा ॥३३८२॥

इमेण वितियपदेण विहरेज्जा –

दंसणणाणे माता, भत्तविसोही गिलाणमायरिए ।
अहिकरण वाद रायकुल-संगते कप्पए गंतुं ॥३३८३॥

"दंसण-णाणे" त्ति अस्य व्याख्या –

सुत्तत्थतदुभयविसारयम्मि पडिवण्णउत्तमट्ठम्मि ।
एयारिसम्मि कप्पति, वेरज्ज-विरुद्ध-संकमणं ॥३३८४॥

दंसणप्पभावगाण सत्थाण सम्मदियादि सुतणाणे य जो "विसारदो" णिस्संकियसुत्तत्थो त्ति वुत्तं भवति । जो य उत्तिमट्ठपडिवण्णो सो य खेत्ते ठिओ तत्थंतरा वा वेरज्जं, मा तं सुत्तत्थं वोच्छिज्जतु त्ति अतो तग्गहणट्ठयाए कप्पति वेरज्जविरुद्धं संकमणं काउं ।

माता पितं वा कस्सा ति निक्खिमिउकामं ।

आयरिएण वा केण ति भत्तं पच्चक्खायं । भत्तं वा पच्चक्खाउकामो एयारिसे वा कज्जे संकमेज्ज । अहवा – कोइ साहू भत्तं पच्चक्खाउकामो ।

"विसोधि" त्ति सो आलोयणं दातुकामो ताहे सो गीयत्थसमीवं गच्छे, अजंगमस्स वा गीयत्थो पासं गच्छति ।

गिलाणस्स वा पडियरणट्ठा गम्मति । गिलाणपायोग्गोसढहेउं वा ।

आयरियादिसमीवं वा आयरियादिपेसणेण वा गच्छति ।

अहवा – कस्स ति साहुणो गिहिणा सद्धिं अधिकरणे उप्पण्णे सो य गिही णोवसमति, ताहे सलद्धीतो तस्सुवसामणट्ठा गच्छति ।

अहवा – सो अण्णरज्जे परप्पवादी उवट्ठितो तस्स निग्गहट्ठा गच्छति ।

रायदुट्ठे वा रन्नो उवसमणट्ठा सलद्धितो गच्छे ।

अहवा – रायकुलसंगतं केण ति अधिकरणं कतं तदुवसामणट्ठा गच्छे ।

अहवा – "कुलसंगत" त्ति कुल-संघ-कज्जेण । एवमादिसु कज्जेसु कप्पते वेरज्जविरुद्धसंकमणं काउं ॥३३८४॥

इमेण विधिणा –

आपुच्छिय आरक्खिय सेट्ठी सेणावती अमच्चरायाणं ।
अभिगमणे निग्गमणे, एस विही होइ णायव्वो ॥३३८५॥

अस्य व्याख्या –

आरक्खितो विसज्जेति, अहव भणिज्जा तु पुच्छह तु सेट्ठिं ।
जाव णिवे ता णेयं, मुद्दा पुरिसे व दूतेणं ॥३३८६॥

वेरज्जविरुद्धरज्जं गच्छंता साहू दंडपासियं पुच्छंति, जति तेण विसज्जिया लट्ठं ।

अह सो भणेज्ज – अहं ण याणामि, सेट्ठि पुच्छह । ताहे सेट्ठि पुच्छंति । जदि तेण विसज्जिया तो लट्ठं ।

अह सो भणेज्ज – अहं ण याणामि, सेणावइं पुच्छह । ताहे सेणावतिं पुच्छंति । जदि तेण विसज्जिया तो लट्ठं ।

अह सो भणेज्ज – अहं ण याणामि अमच्चं पुच्छह । एवं परंपरेण णेयं जाव णिवो राया इत्यर्थः । वेरज्जातो णिग्गच्छंतस्स वेरज्जं वा पविसंतस्स एस संकमणे विही भणितो । रायमातिणो य एते मुद्दापट्टयं दूतपुरिसं वा मग्गिज्जंति, रायदूतेण वा सद्धिं गम्मति, जतो रज्जातो णिग्गच्छंति तत्थेसा विही ॥३३८६॥

जत्थ वि य गंतुकामा, तत्थ वि कारेंति तेसि णायं तु ।
आरक्खिगा वि ते विय, तेणेव कमेण पुच्छंति ॥३३८७॥

जं रज्जं गंतुकामा तत्थ जे साहू तेसिं लेहसंदेसगेण पुव्वामेव णायं करेंति – अम्हे इतो आगंतुकामा, तुब्भे इत्थ आरक्खियादि पुच्छह । जाहे तेहिं पुच्छिया अणुण्णायं च ताहे इयरे आगच्छंतीत्यर्थः ॥३३८७॥ एसो अतिगमे प्रवेशे निर्गमे च विधिरुक्तः ।

इदाणिं "[1]आयरिए" त्ति दारस्य व्याख्या –

राईण दोण्ह भंडण, आयरिए आसियावणं होति ।
कतकरणे करणं वा, णिवेय जयणाए संकमणं ॥३३८८॥
अब्भरहियस्स हरणे, उज्जाणादिट्ठियस्स गुरुणो य ।
उव्वट्टणासमत्थे, दूरगए वा वि सव्वि बोलं ॥३३८९॥

भंडणं कलहो । दोण्हं रातीणं कलहे वट्टमाणे तत्थेगस्स रण्णो आयरितो आसन्नसेवगो-प्रिय इत्यर्थः ।

इतरो य राया तं जाणिऊण अप्पणो सभाए भासति – "को सो तं अब्भरिहियमायरियं आणेज्ज मा सादत्तणं से कयं होति" ।

ताहे को ति सूरवीरविक्कंतो भणेज्ज – "अहमाणेमि" त्ति । सो गंतु आयरियस्स आसियावणं करेति – हरतीत्यर्थः ॥३३८८॥

अब्भरहितो आसन्नो, निग्गयस्स गुरुणो सभापवारामुज्जाणादिसुवट्ठियस्स आयरियस्स हरणं ।

तत्थिमं करणिज्जं – "[2]कतकरणे करणं", धणुवेदादिएसु सत्थेसु जेण सिक्खाकरणं कयं गिहिभावट्ठितेण सो साहू कयकरणो भण्णति – स तत्र करणं करेति समत्थो जुद्धं कातुं उवट्ठेति । मोहणि-थंभणि-विज्जादिपयोगेण वा उट्ठेति । तस्स अभावे असमत्थो वा खणमेत्तं तुण्हिक्का अच्छंति साहू । जाहे आयरितो दूरं हडो ताहे सेस साहू बोलं करेंति – "आयरितो णे हडो, धाह धाह" त्ति । आसन्नट्ठिते बोलं ण करेंति, मा जुज्झं भविस्सति । जुद्धे य बहुजणक्खयो भवति ॥३३८९॥

---

१ गा० ३३८३ । २ गा० ३३८८ ।

साधूहिं तओ राया भणितो, अभणितो वा हारेंतेहिं रातिणो दूतं विसज्जेति, "पेसेहि णे आयरियं।" तेण जति पट्ठवितो तो लट्ठं –

पेसवितम्मि अदेंते, रण्णा जति ते विसज्जिया सीसा।
गुरुणा णिवेदितम्मी, हारिंतगरातिणो पुव्वं ॥३३६०॥

जति दूते पेसविते आयरियं ण विसज्जेति ताहे साहू दो तिन्नि वा दिणे रायाणं पासेत्ता विण्णवेंति – "अम्हे विसज्जेह, गच्छामि गुरुसमीवं, केरिसा अम्हे गुरुविरहिया अच्छमाणा ? ण सरति सज्झायादि अम्हं।"

जदि ते रन्ना विसज्जिया तो साधू ताहे आयरियस्स संदिसंति "अम्हे आगच्छामो।"

ताहे आयरिया हारेंतगराइणो निवेदेंति। एवं निवेदिते पुव्वं पच्छा साहू पुव्वुत्तविहाणेण जयणाए संकमंति ॥३३६०॥

जे भिक्खू दियाभोयणस्स अवण्णं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे भिक्खू रातिभोयणस्स वण्णं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

दियाभोयणस्स अवण्णं दोसं भासति, रातीभोयणस्स वण्णं गुणं भासति।

दियरातो भोयणस्सा, अवण्णवण्णं च जो वदे भिक्खू।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥३३६१॥

आणादिया य दोसा चउगुरुं च से पच्छित्तं ॥३३६१॥

कहं पुण दियाभोयणस्स अवण्णं भासति ?

अबलकरं चक्खुहतं, अपुट्ठिकरं च होति दियभत्तं।
विवरीयं रातीते, दो वि वदंतस्स चउगुरुगा ॥३३६२॥

दियभत्तस्स अवण्णं, जे तु वदे रातिभोयणे वण्णं।
चउगुरु आणादीया, कहं ति अवण्णं व वण्णं वा ॥३३६३॥

वायायवेहि सुसति, ओयो हीरति य दिट्ठिदिट्ठस्स।
मच्छियमातिणिवातो, बलहाणी चेव चंकमणे ॥३३६४॥

दियाभोयणं वातेण आतवेण य सुसियं अबलकरं भवति। ओयो तेयो भण्णति। दिट्ठिणा दिट्ठं दिट्ठिदिट्ठं। परजण-दृष्टि दृष्टस्यान्नस्य ओजापहारो भवतीत्यर्थः। दिवसतो मच्छियमादी णिवडंति, उड्ढे वग्गुलियादी दोसा। दिवसतो य भुंजित्ता कम्मचेट्ठासु अवस्सं चंकम्मियव्वं, तत्थ पस्सेदो भवति, आयासोसासो बहुं च दवमादियति, एवं तं अबलकरं भवति ॥३३६४॥

इमं राती-भोयणस्स वण्णं वदति –

आउं बलं च वड्ढति, पीणेति य इंदियाइ णिसिभत्तं।
णेव य जिज्जति देहो, गुणदोस विवज्जओ चेव ॥३३६५॥

रातो भुत्ते अकम्मस्स सत्थिंदियस्स चिट्ठतो सुभपोग्गलोवचयो भवति। सुभपोग्गलोवचयाओ आयु-बलइंदियाण वुड्ढी भवति, रसायनोपयोगवत्। किंच सुभपोग्गलोवचयातो शीघ्रं देहो न जीर्यते। एते गुणा रातीभोयणे। एयस्स विवज्जतो दिवसे। तो तम्मि चेव गुणा विवरीया दोसा भवंति ॥३३९५॥

इमम्मि कारणजाते वएज्जा –

वितियपदमणप्पज्भे, वएज्ज अविकोविते व अप्पज्भे।
जाणंते वा वि पुणो, कारणजाते वएज्जा तु ॥३३९६॥

अणप्पज्भो अणप्पवसो खित्तादितो सो दियाभोयणस्स अवन्नं वदेज्जा, राईभोयणस्स वा वण्णं वएज्ज। अविकोवितो वा अगीयत्थो अप्पज्भो वि वएज्ज, बहुसु वा असिवोम-गिलाण-रायदुट्ठादिएसु कारणेसु गुणवुड्ढिहेउं गीयत्थो वि अवन्नं वन्नं वा वएज्ज ॥३३९६॥

जे भिक्खू दिया असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता दिया भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे भिक्खू दिया असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता रत्तिं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

जे भिक्खू रत्तिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता दिया भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू रत्तिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता रत्तिं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू० ७७॥

चउसु वि भंगेसु आणादिया य दोसा, चउगुरुं च पच्छित्तं तवकालविसेसियं दिज्जति।

तम्मि य –

चउभंगो रातिभोयणे, तु पढमम्मि चोलपट्टमतिरेगे।
परियावण्ण-विगिंचण, दर-गुलिया-रुक्ख-घरसुण्णे ॥३३९७॥

यदुक्तं सूत्रे एतदेव चतुर्विधं। पढमभंगसंभवो इमो – दिया घेत्तुं णिसिं संवासेतुं तं वितियदिणे भुंजमाणस्स पढमभंगो भवति ॥३३९७॥

सा ठवणा इमेहिं पगारेहिं –

"चोलपट्टे" त्ति अस्य व्याख्या –

खमणं मोहतिगिच्छा, पच्छित्तमजीरमाण खमओ वा।
गच्छइ सचोलपट्टो, पच्छा ठवणं पढमभंगो ॥३३९८॥

एगेण साहुणा खमणं कतं – तं पुण मोहतिगिच्छिं करेति, पच्छित्तविसुद्धं वा करेति, भत्ते वा अज्जीरंते, कतं।

अहवा – सो एगंतरादिखमगो, जद्दिवसं च तेण उववासो कतो तद्दिवसं च तस्स सण्णायगाण जंबापरिजिण्णसड्ढीणं वा विरूवरूवा संखडी, तेहिं साहू आमंतिया, भिक्खग्गहणकाले य सो खमगसाहू तेसिं साहूणं दवावेमि त्ति कातुं अणुग्गाहितेण चोलपट्टबितिज्जो गच्छति। ते मे वरं जाणिस्संति – जह से जेट्ठज्जो उववासितो, मे संविभागं ठविस्संति। तेहिं अणुग्गाहितेण दिट्ठो, पुच्छितो य किं उववासी जेट्ठज्जो ?

भणियं च तेण – "आमं" त्ति, ताहे तस्स उग्गाहिमगादि सव्वं संविभागं अवुत्ता वि ठवेंति, कल्ले दाहामो। एवं भावतो गहियं। बितियदिणे गहणभोगं करेंतस्स पढमभंगो भवति ॥३४९८॥

"[1]अतिरेगे परियावन्न-विगिंचण-दर-गुलिया-रुक्ख-सुन्नघरे" त्ति अस्य व्याख्या –

कारणगहिउव्वरियं, आवलिय विही य पुच्छिऊण गतो ।
भोक्खं सुए दरादिसु, ठवेंति साभिग्गहऽण्णो वा ॥३३९९॥

अतिप्पमाणं भत्तं गहियं। सहसा लाभे, संखडी वा उच्छूरलंभे, अणुचित्तखेत्ते वा गुरुगिलाणादियाण सव्वसंघाडगेहिं भत्तगाऽवट्ठाविता एवमादिकारणेहिं अतिरित्तं गहियं, तं च उव्वरियं, उववासिगमादी आवलिया ते संभोतिगादिआवलियाए य पुच्छिऊण परिट्ठवणाए गतो, एतदेव परियावन्नं भवति, उक्कोस-अविणासिदव्व-लोभेण कल्ले भोक्खामि त्ति चिंतेऊण दरे ठवेति, "गुलिग" त्ति लोलगे काउं रुक्खकोटरे वा ठवेति, सुन्नघरे वा ठवेति, एवं करेति, एवं अभिग्गहितो अणभिग्गहितो वा थेरिमणुकंपाए सुए वा भोक्खामि त्ति थेरिघरे ठवेति ॥३३९९॥

थेरिय दुण्णिखित्ते, पाहुणए साण-गोणखइए वा ।
आरोवण कायव्वा, बंधस्स परूवणा चेव ॥३४००॥

थेरिघरे ठवितं जति पाहुणएण खइयं, साणेण वा खतितं, गोणस्स वा गोभत्ते दिण्णं, एत्थ पच्छित्तं वत्तव्वं, अणुसमयं कम्मबंधपरूवणा य कायव्वा ॥३४००॥

इमं पच्छित्तं –

[2]बिले मूलं गुरुगा वा, अणंतगुरु सेस लहुय जं चऽण्णं ।
कुल-णाम-ठियमाउं, मंसाजिण्णं ण जाऽऽउट्टे ॥३४०१॥

वसिमे बिले जति ठवेति तो मूलं पच्छित्तं। उव्वसे व चउगुरुगा। अणंतवणस्सतिकायकोट्टरे चउ-गुरुगा। "सेस" त्ति गुलिय, परित्तवणस्सति सुन्नघरे थेरीए वा सन्निखित्ते एतेसु चउलहुगा। "जं चऽण्णं" ति आयविराहणा संजमविराहणा महुविदोवक्खाणं च। सव्वेसु पच्छित्तं वत्तव्वं।

इमा कम्मबंधपरूवणा – थेरिघरे ठवियं जति पाहुणएण खतियं जाव तस्स पाहुणगपुरिसस्स आसत्तमो कुलवंसो ताव तस्स साहुस्स अणुसंततो कम्मबंधो।

अण्णो भणति – जाव तस्स णामसंताणो।

अण्णो भणति – जाव तस्स अट्ठीणि धरेंति।

अण्णो भणति – जाव तस्साउं धरेति।

अण्णो भणति – जाव तस्स तप्पच्चतो मंसोवचयो धरेति।

---

1 गा० ३३९७। 2 मूलं बिले इति भाष्यप्रतौ।

अण्णो भणति -- जाव तं भत्तं ण जीरति ताव तस्स साहुस्स कम्मबंधो ।

आयरिओ भणति - "एते सव्वे अणाएसा, इमो सिद्धंतस्स भावो -"जाव नाउट्टति ताव से कम्मबंधो" । सब्भावाउट्टस्स आलोइएऽणालोइए वा कम्मबंधो वोच्छिज्जतीत्यर्थः ॥३४०१॥ पढमभंगो गतो ।

[1]सेसा तिण्णि भंगा इमे -

संखडिगमणे बितितो, वीयारगयस्स ततियओ होइ ।
सण्णातगमे चरिमो, तस्स इमे वण्णिया भेदा ॥३४०२॥

अवरण्हसंखडीए दिया गहियं रायो भुत्तं बितियभंगो ।

अणुदिते सूरिये बाहिं वियारभूमिं गयस्स देव-उवहार-बलिणिमंतणे रातो गहिते दिया भुत्ते ततियभंगो ।

सण्णायगकुलगताणं सण्णायगवयणेण अप्पणो बलव्वताते[2] रातो घेत्तुं रातो भुंजंताण चरिमभंगो, भेदा जुण्हादिया वक्खमाणा इत्यर्थः ॥३४०२॥

गिरिजण्णगमादीसु य, संखडिउक्कोसलंभे बितिओ उ ।
अग्गिट्टि-मंगलट्ठी-पंथिग-वतिगातिसु ततिओ ॥३४०३॥

बितियभगे अवरण्हसंखडी गिरिजण्णयं, आदिसद्दातो कूव-तलाग-नाग-गण-जक्खादि जण्णसंखडीते उक्कोसं लद्धं, अस्तमिते सूरिए भुंजताणं बितियभंगो । दक्खिणापहे अट्ठकुडवमेत्तसमिताते एगो महप्पमाणो मंडगो कज्जति । सो गुलघएणमग्गो अरुणोदयवेलाए धूलिजंघस्स दिज्जति, एस अग्गट्ठियबंभणो भण्णति, एयं गेण्हंतस्स ततियभंगो भवति । सड्ढो वा पए गंतुकामो अणुग्गते सूरिते पडिलाभेज्ज मंगलट्ठा । वीयारणिग्गयस्स वा साहुस्स अणुग्गते सूरिते कोति अद्धाणपडिवण्णो अद्धाणकप्पं देज्ज । एवमादि ततियभंगो ॥३४०३॥

इमो य चरिमभंगो -

छंदिय सइं गयाण व, सण्णायसंखडी य वीसरणं ।
दिण्णग कए संभरणं, भोयणकल्लं ण एण्हिंति ॥३४०४॥

णिमंतिया, अहाभावेण वा सयं, सण्णायगसंखडिं केइ साहू गता तो तत्थ णिमंतिया - अज्ज मे भिक्खा विस्सामो - तो तेसिं सण्णायगाणं भोयणकाले विस्सरिया, दिण्णे जणवयस्स "कए" त्ति परिवेसणाए समत्ताए तेहिं सण्णायगेहिं रातो साहू संभरिया ।

ते य भणंति - भगवं परिवेसणवग्गेहिं ण संभरिता तुम्हे, खमह अम्हं अवराधं, गेण्हह इयाणिं भत्तपाणं ।

साहू भणंति - कल्ले घेच्छामो, एण्हिं राती त्ति ॥३४०४॥

ताहे तेहिं गिहत्था जोण्हादीए ते उवणिस्संति -

जोण्हा-मणी-पतीवे, उद्दित्त जहण्णगाइ ठाणाइं ।
चउगुरुगा छग्गुरुगा, छेदो मूलं जहण्णम्मि ॥३४०५॥

एतेसु चउसु वि ठाणेसु जहासंखं पच्छद्धेण जहन्नम्मि पदे जहन्नं पच्छित्तं भणियं ॥३४०५॥

---

१ सूत्र ७५, ७६, ७९ । २ लावन्नयाए इत्यपि पाठः ।

सण्णायगेसु रातो णिमंतितेसु साहू भणंति –

संसत्ताति न सुज्झति, णणु जोण्हा अवि य दो वि उसिणाइं ।
कालेऽभंतरए वा, मणिदीवुद्दीविए विंति ॥३४०६॥

रातो भत्तादिग्गहणं ण सुज्झति, जतो संसत्तासंसत्तं ण सुज्झति, दायगस्स य गमागमो न दीसइ, मत्तगस्स उक्खेवनिक्खेवादी ।

गिहिणो भणंति – णणु दिवससमा जोण्हा, सव्वं दीसइ । अह कालपक्खो, जोण्हा वा अब्भादिएहिं छादितो चंदो, ताहे रयणं मणिं वा दिप्पंतं ठवेंति, जोतिं वा पज्जालेंति, एतेसु पगासितेसु सव्वं दीसति । अपि य भत्तं पाणगं च दो वि उसिणाइं, णत्थि संसत्तदोसो । एवं भणंतेसु केइ साहू रातो घेत्तुं भुंजिज्जा । तत्थिमं णावासंठियं पच्छित्तं ।

[1]जोण्हासुज्जोवियं ति काउं भुंजतस्स चउगुरुगा ।

तस्साहो मणीउज्जोतियं काउं भुंजंतस्स छग्गुरुगं ।

तस्साहो दीवमुज्जोतियं काउं भुंजंतस्स छेदो ।

तस्साहो उद्दितुज्जोवियं काउं भुंजंतस्स मूलं । एते मूलपच्छित्ता ॥३४०६॥

अतो परं बहिपच्छित्तं तं चिमं ।

भोत्तूण य आगमणं, गुरुहि वसभेहि कुलगणे संवे ।
आरोवण कायव्वा, वितिया वि अभिक्खगहणेणं ॥३४०७॥

सन्नातगसंखडीते असंखडीए वा अण्णत्थ वा रातो जोण्हादिएसु भोत्तूणागता, आगतेहिं चेव आलोयणपरिणयेहिं अणालोयणाए वा गुरूण कहियं ।

गुरूहिं भणियं – 'दुट्ठुं[2] भे कयं" ति । जति सम्मं आउट्टा तो छग्गुरुगं चेव, अणाउट्टंताण गुरुवयणातिक्कमे छग्गुरुगा । ततो वसभेहिं भणिता – अज्जो कीस गुरुवयणं अतिक्कमह ? जति वसभेहि भणिता सम्मं आउट्टा तो छग्गुरुगं चेव । वसभवयणातिक्कमे छेदो । एवं कुलेण कुलथेरेहिं वा चोदितो सम्मं आउट्टंतस्स छेदो चेव, कुलातिक्कमे मूलं । गणेण गणथेरेहिं वा चोदिते आउट्टंतस्स मूलं चेव, अणाउट्टंतस्स अणवट्ठं चेव, अणाउट्टंतस्स पारंचियं । एसा गुरुमातिवयणातिक्कमे दाहिणेण वुड्ढी बितीया वामेण एतेसु चेव पच्छित्तठाणेसु अभिक्खसेवाए वुड्ढी कायव्वा । एवं मणिम्मि वि वुड्ढी । गुरु-वसभ-कुल-गणातिक्कमे चउहिं पदेहिं छेदादी जाव चरिमं णायव्वं, वामेण बितिया पि अभिक्खसेवाए कायव्वा । एव दीवे गुरु-वसभ-कुलातिक्कमे तिहिं पदेहिं मूलादि जाव चरिमं । बितिया वि अभिक्खसेवाते । एवं उद्दिते त्ति गुरु-वसभातिक्कमे दोहिं पदेहिं अणवट्ठपारंची, वितिया वामेण अभिक्खसेवाते कायव्वा । एसा पढमा णावा ॥३४०७॥

कुलादिथेरेहिं कुलादीहिं वा जं कयं कज्जं तं को अतिक्कमेति नातिक्कमति वा ?
एतेणाभिसंबंधेण इमं भण्णति –

तिहि थेरेहि कयं जं, सट्ठाणे तत्तियं ण वोलेति ।
हिट्ठिल्ला वि उवरिमे, उवरिथेरा तु भइयव्वा ॥३४०८॥

---

१ जोण्हाइयं पा० । २ अन्नं पा० ।

तिहिं – कुलगणसंघथेरेहिं जं आभवंतादि कज्जं कयं, ठवणा वा काति ठविता, तं कज्जं सट्ठाणं नातिक्कमति । सट्ठाणं कुलथेराणं कुलगणथेराणं गणसंघथेराणं, संघो एयं तिगं अण्णहा ण करोतीत्यर्थः ।

अहवा – तत्तियं वा तन्मात्रमेव कार्यं व्यवहरन्ति न उपरिष्टाद् व्यवहारं संवर्धयन्ति, [1]अत्तं वा ठवणं ठवेंति । हेट्ठिमा कुलथेरा ते वि जं उवरिमेहिं गणसंघथेरेहिं कतं तं नातिक्कमंति । गणथेरा वि संघथेरेहिं कयं नातिक्कमंति । उवरिमथेरा उ भतियव्वा ।

का भअणा ?

इमा – कुलथेरेहिं जं कयं अरत्तदुट्ठेहिं य तं उवरिमा गणसंघथेरा अन्नहा ण करेंति, अह अणागमेण कतं रत्तदुट्ठेहिं वा तं अन्नहा करेंति । एसा भयणा । एवं कुलगणसंघकज्जेसु वि दट्ठव्वं ॥३४०८॥

गुरुमादिएहिं चोइज्जंतो इमं भणति –

चंदुज्जोए को दोसो, अप्पप्पाणे य फासुए दव्वे ।
भिक्खू वसभाऽऽयरिए, गच्छम्मि य अट्ठ संघाडा ॥३४०९॥

पुव्वद्धं कंठं । पच्छद्धेण [2]वितिय-ततियनावागहितातो । तेसु चेव जोण्हादिसु पढमणावागमेण भिक्खु-वसभ-आयरिय-कुल-गण-संघ एतेसु छसु पदेसु अतिक्कममाणे छल्लहुगा-जाव-चरिमं दट्ठव्वं । एसा दाहिणतो पच्छित्तवुड्ढी । वितिया वामतो अभिक्खसेवाते । मणिमादिसु पच्छित्त-वुड्ढी, अभिक्खसेवाए य पूर्ववत् । अट्ठसंघाडग्गहणातो एत्थेव पुरिसअविभागेण ततियनावा दंसिज्जति, तस्स विसेसो वक्खमाणो, जोण्हामणीसु पच्छित्तवुड्ढी एक्को संघाडगो । पदीवुद्दित्तेसु वितितो संघाडगो, वामतो अभिक्खसेवाए वि दो संघाडा, एवं वितिय-णावाते चतुरो संघाडा, ततिय-णावाए वि चउरो, दो चतुक्का अट्ठ संघाडा भवन्तीत्यर्थः ।

अहवा – जोण्हातो पच्छित्तवुड्ढीते वामतो अभिक्खसेवाए य एक्को संघाडो । एवं मणिदीव-उद्दीवितेसु वि । एवं वा वितियणावाते चउरो संघाडा । ततियणावाए वि चउरो, एवं अट्ठ संघाडा । अन्ने पुण पढम-वितियणावासु एवं चेव अट्ठ संघाडा भवंति । चउत्थणावाते ते भिक्खू वसभ आयरिय गच्छो कुलं गणो संघो य एतेसु सत्तसु वि पदेसु अतिक्कमणे पढमणावागमेण चउगुरुगादि जाव चरिमं दाहिणतो वुड्ढी, वितिया वामतो । मणिमादिसु पूर्ववत् ॥३४०९॥

अहवा – पुरिसजोण्हादिसु अविसेसतो इमं पच्छित्तं –

सण्णायग आगमणे, संखडि रातो य भोयणे मूलं ।
वितिए अणवट्ठप्पो, ततियम्मि य होति पारंची ॥३४१०॥

सन्नातगकुलमागता अन्नत्थ वा संखडिते साहू जति रातो भुंजति तो मूलवयविराहण त्ति कातुं मूलपच्छित्तं, बितियवारा भुंजति तो अणवट्ठो, ततियवारे पारंची ॥३४१०॥

"[3]फासुयदव्वे" त्ति सीसस्स इमे दोसा दंसिज्जंति –

जति वि य फासुगदव्वं, कुंथूपणगादि तह वि दुप्पस्सा ।
पच्चक्खणाणिणो वि हू, रातीभत्तं परिहरंति ॥३४११॥

---

१ अन्नं पा० । २ पुव्वणावागहितातो पा० । ३ गा० ३४०९ ।

यद्यपि स्वत ओदनादि प्राशुकं द्रव्यं तथाऽप्यागन्तुका कुन्थ्वादयः पनकाश्चयदत्र तद्युत्था अविशुद्धकाले दुर्दृश्या भवंति । किं च येऽपि प्रत्यक्षज्ञानिनो ते विशुद्धं भक्तापानं पश्यंति तथाऽपि रात्रौ न भुंजते, मूलगुणभंगत्वात् ॥३४११॥

जोण्हामणीदीवुद्दित्तालंबणप्रतिषेधार्थमिदमाह –

जति वि य पिवीलगादी, दीसंति पतीव-जोतिउज्जोए ।
तह वि खलु अणाइण्णं, मूलव्रयविराहणा जेणं ॥३४१२॥

तीर्थंकरगणधराचार्यरनाचीर्णत्वात्, जम्हा छट्ठो मूलगुणो विराहिज्जति तम्हा ण रातो भोत्तव्वं ।

अहवा – रातीभोयणे पाणातिवायादियाणं मूलगुणाणं जेण विराहणा भवति अतो रातीए ण भोत्तव्वं ॥३४१२॥

"[1]गच्छं" ति य अस्य पदस्य व्याख्या –

गच्छग्गहणे गच्छो, भणाति अहवा कुलादिओ गच्छो ।
गच्छग्गहणे व कए, गहणं पुण गच्छवासीणं ॥३४१३॥

गच्छो चोदयति जहा चउत्थं पदं चउत्थणावाए कुलगणसंघा वा पत्तेयगच्छो ते चोदयंति जहा सव्वणावासु गच्छग्गहणातो वा इमं पच्छित्तं गच्छवासीण भणितं – न जिनकल्पानामित्यर्थः ॥३४१३॥

वितियणावाए इमं वक्खाणं –

वितियादेसे भिक्खू, भणंति दुट्ठु मे कयं ति बोलेंति ।
छल्लहु वसभे छग्गुरु, छेदो मूलादि जा चरिमं ॥३४१४॥ गतार्था

वितिय-ततियनावाए विसेसो वितियाए सयं कहेंति, तईयाए इमं –

ततियादेसे भोत्तूण, आगता णेव कस्सइ कहेंति ।
ते अण्णओ व सोच्चा, खिंसंतह भिक्खुणो तेसु ॥३४१५॥

तईयादेसो तृतीयनावा, जे ते भोत्तूण आगया तेसि णेव परोप्परं संलवंताणं . भिक्खूहि सुयं – ते चोदयंति । "अण्णओ" त्ति जे ते भोत्तूण आगया तेहिं जहा वसभेण अण्णस्स कहितं, तस्संतिए भिक्खुणो सोच्चा, अण्णो वा गिहत्थो तस्संतिते भिक्खुणो सोच्चा खिसवयणेण चोदेति ॥३४१५॥

तत्थ अतिक्कमंते इमा पच्छित्त-वुड्ढी भवति –

भिक्खुणो अतिक्कमंते, छल्लहु वसभस्सु होंति छग्गुरुगा ।
गुरु-कुल-गण-संघादीक्कमे य छेदाइ जा चरिमं ॥३४१६॥

आयरिया भिक्खूण य, वसभाण गणस्स कुल गणे संघे ।
गुरुगादतिक्कमंते, जा सपदं चउत्थ आदेसे ॥३४१७॥ गतार्था

---

1 गा० ३४०६ ।

"[1]खिसंतह भिक्खुणो" त्ति अस्य व्याख्या –

पेच्छह तु अणाचारं, रत्तिं भोत्तुं ण कस्सइ कहेंति ।
एवं एक्केक्क-निवेयणेण वुड्ढी उ पच्छित्ते ॥३४१८॥

भिक्खुहिं चोदिओ जाहे नाउट्टति ताहे भिक्खुणो वसभाण कहेंति । वसभा गुरूण कहेंति । गुरू वि कुलस्स । कुलं पि गणस्स । गणो वि संघस्स । एवं एक्केक्कणिवेदणेण पच्छित्तवुड्ढी भवति ॥३४१८॥

अहवा – अन्येन प्रकारेण प्रायश्चित्तवृद्धिदर्शनार्थमाह –

को दोसो को दोसो, त्ति भणंत लग्गती वितियठाणं ।
अहवाऽभिक्खग्गहणे उ अहवा वत्थुस्स अइयारो ॥३४१९॥

उत्तरोत्तरप्रदानेन अभीक्ष्णासेवनेन वा भिक्षादिवस्तुव्यतिक्रमेण वा प्रायश्चित्तवृद्धिः ॥३४१९॥

जम्हा निसिभोयणे वहू दोसो पच्छित्तं च तम्हा न भोत्तव्वं ।

कारणे पुण भोतव्वं । तं च इमं कारणं –

वितियपदं गेलण्णे, पढमवितिए य अणहियासम्मि ।
फिट्टति चंदगवेज्झं, समाहिमरणं च अद्धाणे ॥३४२०॥

गिलाणो अगिलाणो वा पढमवितियपरीसहेहिं अद्दित्तो असहू वा, सिरिइंगियमादिउत्तिमट्ठपडिवन्नो वा, चग्गहणातो ओमे वा अद्धाणे वा, चउभंगजयणाए भुंजेज्जा ॥३४२०॥

तत्थिमं "[2]गिलाणे" –

पतिदिवसमलब्भंते, विसोहि वोलीणे पढमभंगो उ ।
अद्धाणादिसु जुयलोदयम्मि सूलादिया वितिओ ॥३४२१॥

जया गिलाणस्स पतिदिणं विसुद्धं ण लब्भति तया पणग-परिहाणीए विसोहिकोडीए पइदिवसं गेण्हेज्जा ।

जाहे तं पि वोलीणो ताहे पढमभंगो दियागहियं दिया भोत्तं ।

अद्धाणादिपवत्तस्स वालवुड्ढजुयलस्स पढमवितियपरीसहोदए वितियभंगो ।

आगाढे वा सूलादिगेलन्ने चतुर्थभंगो रातो गहियं रातो भुत्तं ॥३४२१॥

एमेव ततियभंगो, आति तमो अंतए पगासो उ ।
दुहतो पि अप्पगासो, अद्धाणसुयाइसु चउत्थो ॥३४२२॥
पढमवितियातुरस्स य असहुस्स हवेज्ज अहव जुयलस्स ।
कालम्मि दुरहियासे, भंगचउक्केण गहणं तु ॥३४२३॥

"एमेव" त्ति आगाढे अहिडक्कादिसु ततियभंगो रातो गहियं दिया भोत्तं ।

अद्धाणपडिवण्णगाण आगाढे वा गेलन्ने चतुर्थभंगो रातो गहियं रातो भुत्तं ति । "गिलाणो" त्ति गतं ।

---

१ गा० ३४१५ । २ गा० ३४२० ।

इदाणि "[1]चंदगवेज्झं" –

एमेव उत्तिमट्ठे, चंदगवेज्झसरिसे भवे भंगा।
उभयपगासे पढमे, आदीयंते य सव्वतमो ॥३४२४॥

चक्राष्टकमुपरिपुत्तलिकाक्षिचन्द्रिकावेधवत् दुराराध्यमनशनं, तस्मात्तदाराधने समाधिनिमित्तं चत्वारो भंगकाः। पदार्थसिद्धाः ॥३४२४॥

इयाणि "[2]अद्धाण" त्ति –

अद्धाणम्मि व हुज्जतु, भंगा चउरो तु तं न कप्पति उ।
दुविहा य होंति उदरा, पोट्टे तह धण्णभाणा य ॥३४२५॥

तं अद्धाणं उद्दरे गंतुं न [3]कप्पति, उर्द्धं दरा उद्दरं, ते दरा ऊर्द्धं पूर्णा – धान्यस्य भरिता इत्यर्थः। धण्णभायणा कडपल्लादि ॥३४२५॥

उद्दरे सुभिक्खे, अद्धाण व वज्जणं तु दप्पेणं।
लहुगा पुण सुद्धपदे, जं वा आवज्जती तत्थ ॥३४२६॥

सुलभं भिक्खं सुभिक्खं, उद्दंदरसुभिक्खेसु चउरो भंगा कायव्वा। पढम-ततियभंगेसु जो दप्पेण अद्धाणं पडिवज्जति तस्स जति वि किं चि अवराहं णावज्जति तहा वि से चउलहुगं, जं वा संजमविराहणं आवज्जति तं वा पच्छित्तं ॥३४२६॥

पढम-ततिएसु वि भंगेसु इमेण कारणेण गम्मति –

णाणट्ठ दंसणट्ठा, चरित्तट्ठा एवमाइ गंतव्वं।
उवगरणपुव्वपडिलेहितेण सत्थेण जयणाए ॥३४२७॥

आयारादी णाणं, गोविंदणिज्जुत्तिमादि दंसणं, जत्थ विसए चरित्तं ण सुज्झति ततोऽन्नमणं चरित्तट्ठा। उवकरणपडिलेहणं आलोच्य योग्यस्य ग्रहणं, भंडिमादिएण विसुद्धसत्थेण समं गंतव्वं ॥३४२७॥

णाणदंसणट्ठा गम्ममाणे इमेण विहिणा गम्मति –

सगुरु कुल सदेसे वा, णाणे गहिते सती य सामत्थे।
वच्चति उ अण्णदेसं, दंसणजुत्तादि अत्थे वा ॥३४२८॥

स्वगुरुसमीवे जमत्थि णाणं तम्मि गहिते ततो सदेसे स्वकुले घेत्तव्वं, जाहे सदेसे णत्थि ताहे अन्नदेसं गच्छंति, तत्थ वि आसन्नतरेसु एगवायणेसु गिण्हंति। गहिते णाणे अप्पणो बुद्धिसामत्थे विज्जमाणे दंसणविसुद्धकारगसत्थट्ठं गम्ममाणे एसेव गमो ॥३४२८॥

इयाणि चरित्तट्ठा –

पडिकुट्ठ देस कारण गता उ तदुपरमे णिंति चरणट्ठा।
असिवाई व भविस्सति, भूते व वयंति परदेसं ॥३४२९॥

---

1 गा० ३४२० । 2 गा० ३४२० । 3 सक्कति पा० ।

असंजमविसओ जो देसो सो भगवया पडिसिद्धो, तत्थ ण विहरियव्वं । तं देसं असिवादिकारणेसु जदि गता तम्मि कारणे उवसंते ततो असंजमविसयातो णिगच्छंति । तं संजमविसयं चरणट्ठा गच्छंति । तत्थ वा वसंताण णिमित्तेण णातं जहा असिवं एत्थ भविस्सति, उप्पन्नं वा असिवं, ततो परदेसं वयंति ॥३४२९॥

पढम-ततियभंगेहिं एवमादिकारणेहिं वयंता गच्छुवग्गहकरं इमं उवगरणं घेत्तुं वयंति –

चम्मादि[१] लोहग्गहणं[२], णंदीभाणे[३] य धम्मकरए[४] य ।
परतित्थिय[५] उवगरणे, गुलियातो[६] खोलमादीणि ॥३४३०॥

चम्मादिलोहग्गहणं एतेसिं दोण्हं दाराणं जहक्कमेण इमा पुव्व-पच्छद्धवक्खा –

तलिय पुडग वद्धेया, कोसग कत्ती य सिक्कए काए ।
पिप्पलग सूइ आरिय-नक्खच्चणिसत्थकोसो य ॥३४३१॥

"तलियपुडवद्धाण" इमा व्याख्या –

तलिया तु रत्तिगमणे, कंटुप्पह तेणसावते असहू ।
पुडगविवच्चि सीते, वद्धो पुण छिण्णसंधट्ठा ॥३४३२॥

अचक्खुविसए रातो गम्ममाणे सत्थवसा उप्पहेण गम्ममाणे सावयतेणभएण वा तुरियं गम्ममाणे सुकुमालपादो वा असहू कंटगसंरक्खणत्थं कमणीओ पादेसु बंधति, सीतेण वि पव्वीसु वियाउआसु फुट्टंतीसु खल्लगादि पुडगे बंधति, तलिगादि तुट्टसंधणट्ठा वध्नो (द्धो) घेप्पति ॥३४३२॥

कोसग णहरक्खट्ठा, हिमादिकंटादिसू तु खपुसादी ।
कत्तीओ विकरणट्ठा, विवित्त पुढवादिरक्खट्ठा ॥३४३३॥

अंगुलिकोसगो णहभंगादिरक्खट्ठा, हिमअहिकंटादिरक्खट्ठा खपुसवग्गुरिअद्धजंघातियाओ घेप्पंति । कत्ती चम्मं तत्थ पलंबादि विकरणा कज्जंति, मा धूलीए लोलिहिंति । विवित्ता वा वासकप्पाभावे अत्थंडिले सचित्तपुढविमादिरक्खट्ठा तत्थ उद्धट्ठाणादिं करेंति ॥३४३३॥ "चम्मे" त्ति गयं ।

आदिसद्दाओ सिक्ककायादिग्गहणं तेसिं इमा वक्खा –

तहि सिक्कएहिं हिंडंति, जत्थ विवित्ता व पल्लिगमणं वा ।
परलिंगग्गहणम्मि व, णिक्खवणट्ठा व अन्नत्थ ॥३४३४॥

जत्थ मुसिता तत्थ पत्तबंधाभावे चोरपल्लीसु वा भिक्खायरियाए गम्ममाणे लाउए सिक्कगेसु काउं गम्मइ, चक्कधरादि वा परलिंगं सिक्कएण कज्जति, अद्धाणकप्पादि वा तत्थ काउं निक्खिप्पति, पलंबादि वा सिक्कए आणेउं अन्नत्थ थेरमादिसु सण्णिक्खिवंति अगीयत्थासंकाए ॥३४३४॥

जे चेव कारणा सिक्कगस्स ते चेव होंति काए वि ।
कप्पुवही वालाइ व, वहंति तेहिं पलंबे वा ॥३४३५॥

"काए" त्ति कवोडी । अहवा – कवोडिसिक्कगाणं इमो उवयोगो – अद्धाणकप्पे वालवुड्ढअसहु-आयरियाण उवहिं, वालवुड्ढे वा सूलविद्धं वा पलंबाईणि वा वहंति ॥३४३५॥ "सिक्कग" त्ति गतं ।

इयाणिं "[1]लोहग्गहणं" –

पिप्पलग विकरणट्ठा, विवित्तजुण्णे य संधणं सूई ।
आरिग तलि-संधणट्ठा, णक्खच्चणणक्ख-कंटादी ॥३४३६॥

पलंबविकरणट्ठा पिप्पलगो, मुसितसेसवत्थस्स भावजुण्णस्स वा सिव्वणट्ठा सूई, तुट्टोवाणहसिव्वणट्ठा आरा, सल्लकंटुद्धरणट्ठा णहरणी वेप्पति ॥३४३६॥

इमो सत्थकोसो – पत्थणसत्थयं अंगुलिसत्थयं सिरावेहसत्थयं कप्पणसत्थयं लोहकंटिया संडासओ अणुवेहसलागा वीहिमुहं सूइमुहं । एवमादिसत्थकोसस्स इमो उवओगो –

कोसाऽहि-सल्ल-कंटग, अगतोसढमाइयं तुवग्गहणं ।
अहवा खेत्ते काले, गच्छे पुरिसे य जं जोग्गं ॥३४३७॥

अहिडक्कं पच्छिज्जइ, सल्लुद्धरणं वा सत्थगेण कज्जति । अगदमेव ओसढं । अहवा अणेगदव्वेहिं अगदो, एगंगितं ओसढं । खेत्ते जं जहिं णत्थि, गिम्हकाले वा सतुगादिशीतलं महल्लगच्छे केलगादिसाधारणं जं च जस्स पुरिसस्स (ख)समति तं घित्तव्वं ॥३४३७॥

इयाणिं "[2]णंदिभायणं धम्मकरओ य" जुगवं भन्नइ –

एक्कं भरेमि भाणं, अणुकंपा णंदिभाण दरिसंति ।
णेंति व तं वइगादिसु, गालेंति दवं तु करएणं ॥३४३८॥

अद्धाणे कोति भणेज्ज – "अहं मे दिणे दिणे एगं भायणं भरेमि", तत्थ णंदीभायणं उवट्ठवेंति ।

अहवा – तं णंदिभायणं भिक्खायरियाए गोउलं णेति, फासुगाफासुगं वा दवं धम्मकरएणं गालेंति ॥३४३८॥

इयाणिं "[3]परतित्थोवकरणं" –

परतित्थियउवगरणं, खेत्ते काले य जं तु अविरुद्धं ।
तं रयणि पलंबट्ठा, पडिणीए दिया व कोट्टाती ॥३४३९॥

परलिंगे ठिया भत्तपाणं गेण्हंति, पलंबे वा जत्थ पडिणीया तत्थ परवेसछन्ना गच्छंति, भत्तादि वा उप्पाएंति, मिच्छकोट्टं दिवसतो गता परवेसच्छन्ना पोग्गलादि अकप्पं गेण्हंति । फलाणि व जत्थ पच्चंति तं कोट्टं, तत्थ परलिंगट्ठिया फलादि गेण्हंति ॥३४३९॥

इयाणिं "[4]गुलिग" त्ति तुवररुक्खचुण्णगुलिगाओ कज्जंति । गोरसभाविता पोत्ता खोलो भण्णति –

गोरसभावियपोत्ते, पुव्वकते दवस्स संभमे धोवे ।
असती य तु गुलित मिगे, सुण्णे णवरंगदतियाओ ॥३४४०॥

जत्थ फासुयदवस्स असंभवो तत्थ गोरसभाविते पोत्ते धुवंति, अगीयत्थपच्चयाय भणति–गोउलाओ

१ गा० ३४३० । २ गा० ३४३० । ३ गा० ३४३० । ४ गा० ३४३० ।

उसित्तियपाणगमाणीतं, असति गुलियाणं अगीतचित्तरक्खणट्ठा सुन्ने य गामे पडिसत्थियमादियाण। णवरंग – दतियातो गहितं ति भण्णति ।।३४४०।।

एमादि अणागयदोसरक्खणट्टा अगेण्हणे गुरुगा ।
अणुकूले णिग्गमओ, पत्ता सत्थस्स सउणेणं ।।३४४१।।

उवगरणस्स अगेण्हणे ङ्का । अणुकूले चंदे तारावले णिग्गमगो गच्छति, जाव सत्थं ण पावंति ताव सउणं गिण्हंति, जदा सत्थं पत्ता तदा सत्थसंतिएण सउणेण गच्छंति, णो पत्तेयं सउणं गेण्हंति ।।३४४१।।

अप्पत्ताण णिमित्तं, पत्ते सत्थम्मि तिण्णि परिसातो ।
सुद्धे त्ति पत्थियाणं, अद्धाणे भिक्खपडिसेहो ।।३४४२।।

कडजोगि सीहपरिसा, गीयत्थ थिरा उ वसभपरिसाओ ।
सुत्तकडमगीयत्था, मिगपरिसा होति नायव्वा ।।३४४३।।

जदा सत्थं पत्ता तदा तिन्नि परिसाओ करेंति-सीह-वसभमिगपरिसा य । गीयत्था सीहपरिसा । गीया वलवंतो वसभपरिसा । अधीतसुत्ता अगीतत्था मिगपरिसा । सत्थो सुद्धो त्ति काउं पट्ठिया । जया अडविं पवन्ना तदा कोति पडिणीओ भिक्खपडिसेहं करेज्ज ।।३४४२–४३।।

अणुण्णवणकाले सत्थवाहो एवं वोत्तव्वो –

सिद्धत्थगपुप्फे वा, एवं वोत्तुं पि णिच्छुभति पंतो ।
भत्तं वा पडिसिद्धं, तिण्हऽणुसत्थादि तत्थ इमा ।।३४४४।।

"जहा सिद्धत्था चंपयपुप्फं वा सिरट्ठियं किंचि पीडं न करेति एवं तुम्हे वि अम्हं न किं चि पीडं करेह, वच्चह भंते !" पच्छा पंतो अडविमज्झे भिक्खं पडिसेहेति, सत्याओ वा णिच्छुभइ, तत्थ जयणाए "तिण्हं" – सत्थस्स सत्थवाहस्स आतिअत्तियाण ।।३४४४।।

अणुसट्ठी धम्मकहा, विज्जणिमित्ते पभुस्स करणं वा ।
परतित्थिया व वसभा, सयं व थेरी य चउभंगो ।।३४४५।।

इहलोगअववायदरिसणत्थं अणुसट्ठी, इहपरलोगेसु कम्मविवागदरिसणं धम्मकहा, विज्जमंतेहिं वा वसीकज्जति । सहस्सजोही – वलवं सत्थाहं वंधित्तु सयमेव सत्थं अधिट्ठेइ – प्रभुत्वं करोतीत्यर्थः । एसा णिच्छुभणे विही ।

भिक्खापडिसेधे इमो विही -- सव्वहा असंथरणे वसभा परतित्थिगा होतु पन्नवेंति, भत्ताइ वा उप्पाएंति, राओ गेण्हंति ।।३४४५।।

"[1]सयं व" त्ति अस्य व्याख्या –

पडिसेहे अलंभे वा, गीयत्थेसु सयमेव चउभंगो ।
थेरिसगासं तु मिगे, पेसे तत्तो य आणीतं ।।३४४६।।

---

१ गा० ३४४५ ।

सत्थाहेण पडिसिद्धा तेणेहिं वा सत्थे विलुलिते अलब्भमाणे जइ ते सव्वे गीयत्था तो चउभंगेण[1] जतंति । अह गीयमिस्सा तो सलिंगेण चेव । जति भद्दिता तत्थ सत्थे थेरी अत्थि तो तस्समीवे ठावेंति,[2] अगीतेहिं वा थेरिसमीवातो आणवेंति, थेरिसमीवातो आणियं ति भणंति ॥३४४६॥

कत्तो ति पल्लिगादी, सड्ढा थेरि पडिसत्थगातो वा ।
णायम्मि य पण्णवणा, ण हु असरीरो हवति धम्मो ॥३४४७॥

मिगेसु पुच्छंतेसु इमं उत्तरं – "पल्लीओ वा पडिसत्थातो सड्ढेहिं वा दिन्नं" । एवं चउभंगेण जयंता जति मिगेहिं णाता तो, ते मिगा पन्नविज्जंति "असरीरो धम्मो न भवति, तम्हा सव्वपयत्तेण सरीरं रक्खियव्वं, पच्छा इमं च अन्नं च पच्छित्तेण विसोहिस्सामो" ॥३४४७॥

परिसागमणे इमो विधी –

पुरतो य वच्चंति मिगा, मज्झे वसभा उ मग्गतो सीहा ।
पिट्ठतो वसभऽण्णेसिं, पडिताऽसहुरक्खणा दोण्हं ॥३४४८॥

पुव्वद्धं कंठं । अण्णे भणंति – पिट्ठतो वसभा गच्छंति, इमं कारणं मिगसीहाणं एएसि जे असहू, खुहापिवासापरिस्सहेहिं पीडिता तेसि रक्खणट्ठा ॥३४४८॥

वसभोवतोगो इमो –

पुरतो य पासतो पिट्ठतो य वसभा वहंति अद्धाणे ।
गणपतिपासे वसभा, मिगाण मज्झम्मि वसभेगो ॥३४४९॥

वसभा सीहेसु मिगेसु, चेव थामावहारविजढा तु ।
जो जत्थ होइ असहू, तस्स तह उग्गहं कुज्जा ॥३४५०॥

थामो बलवं, जत्थे त्ति जेण पिवासाइणा असहू तेण उवग्गहं कुव्वंति ॥३४५०॥

तं च इमं –

भत्ते पाणे विस्सामणे य उवगरण-देहवहणे य ।
थामाविहारविजढा, तिण्णि वि उवगेण्हते वसभा ॥३४५१॥

खुहितस्स भत्तं देंति, पिवासियस्स पाणं, परिस्संतस्स विस्सामणं, उवकरणसरीरे वोढुं असमत्थस्स, तेसिं वहणं करेंति, "तिण्णि वि" मिगसीहवसभे वसभा उवगिण्हंति ॥३४५१॥

जो सो उवगरणगणो, पविसंताणं अणागयं भणितो ।
सट्ठाणे सट्ठाणे, तस्सुवओगो इहं कमसो ॥३४५२॥

चम्मादिपुव्वुत्तमेव सट्ठाणं, जेण जया कज्जं तं तदा पयोत्तव्वं । एसेव कमो ॥३४५२॥

असतीते गम्ममाणे, पडिसत्थे तेण-सुण्णगामे वा ।
रुक्खाईण पलोयण, असती णंदी दुविहदव्वे ॥३४५३॥

---

१ दियागहियमादि । २ आहारादि, इत्यर्थः ।

सत्थेण गम्ममाणे सत्थे असती भत्तपाणस्स इमेसु मग्गंति – पडिसत्थे, "तेण" पल्लीसु, सुण्णगामे वा, रुक्खमूलेसु वा पलंबे पलोएंति – गृण्हंतीत्यर्थः । संथरणासति "णंदी" हरिसो, दुविधं दव्वं – परित्ताणंतादि, असंथरे उत्क्रमेणापि तद्द्रव्यं गृण्हन्ति, येन नन्दी भवतीत्यर्थः ।।३४५३।।

"[1]पडिसत्थो" अस्य व्याख्या –

भत्तेण व पाणेण व, णिमंतएऽणुग्गए व अत्थमिते ।
आइच्चो उदितो त्ति य, गहणं गीयत्थसंविग्गे ।।३४५४।।

सत्थेणं गम्ममाणे असंथरे जति पडिसत्थो मिलेज्ज रातो तत्थ अहाभद्दा दाणरुइणो सड्ढा वा जति भत्तेण पाणेण वा निमंतिया अणुग्गए सूरिए अत्थमिते वा ताहे जति सव्वे गीता तो गिण्हंति चेव ।

अह अगीतमिस्सा ताहे गीता भणंति – "वच्चह तुब्भे, अम्हे उदिते सूरिए इमं भत्तपाणं घेत्तुं पच्छा एहामो ।" पट्ठिएसु मिगेसु ते गीया तक्खणमेव रातो घेत्तुं अणुमग्गतो गच्छंति, थिए सत्थे मिगपुरतो आलोएंति – "आइच्चे उदिए गहणं कातुं आगता" । एयं सव्वं जयणं गीयत्थो संविग्गो करेति ।।३४५४।।

गीयत्थग्गहणेणं, राते गेण्हतो भवे गीतो ।
संविग्गग्गहणेणं, तं गेण्हंतो वि संविग्गो ।।३४५५।।

"तेणपल्लीसु पिसितं" संभवति । तत्थ इमा जयणा –

पोग्गल बेंदियमादी, संथरणे चउलहू तु सविसेसा ।
ते चेव असंथरणे, विवरीय सभाव साहारे ।।३४५६।।

जइ संथरणे पोग्गलं बेंदियसरीरनिप्फन्नं गेण्हंति तो चउलहुगं, दोहि वि तवकालेहिं लहुयं। तेइंदिएसु कालगुरु । चउरिंदिएसु तवगुरुं । पंचिंदिएसु दोसु गुरुगं ।

अस्यैवापवादो – असंथरणे बेइंदियादिकमेण घेत्तव्वं । अह असंथरणे विवरीतं उक्कमेण गेण्हंति तो ते चेव चउगुरुगा ।

अववादे अपवाद: – उक्कमेणापि जं सभावेण साधारणं तं गेण्हंति ।।३४५६।।

पिसितग्गहणे इमा जयणा –

जत्थ विसेसं जाणंति, तत्थ लिंगेण चतुलहू पिसिए ।
अण्णाते उग्गहणं, सत्थम्मि वि होति एमेव ।।३४५७।।

जत्थ सत्थे गामे वा जणो विसेसं जाणति – जहा साहू पिसितं न भुंजंति, तत्थ जति सलिंगेण पिसितग्गहणं करेंति तो चउलहुं । "अन्नाए" त्ति-जत्थ विसेसं न जाणंति तत्थ सलिंगेणेव गहणं । अह परलिंगं करेइ तो मूलं । पडिसत्थमादिसु वि एमेव । रात्रौ भिक्षागहणे भोजने च इदमेव द्रष्टव्यं ।।३४५७।।

---

१ गा० ३४५३ ।

इयाणि "[1]सुण्णगामे" त्ति –

कप्पडियादीहि समं, तेणगपल्लिं तु सिक्कए घेत्तुं ।
गहणं सति लाभम्मि य, उवक्खडे अण्णलिंगेण ॥३४५८॥
अद्धाणासंथरणे, सुण्णे दव्वम्मि कप्पती गहणं ।
लहुओ लहुया गुरुगा, जहण्णए मज्झिमुक्कोसे ॥३४५९॥

अद्धाणपडिवन्नाणं असंथरणे जाते सुण्णे गामे जहन्नमज्झिमुक्कोसस्स दव्वस्स अदिन्नस्स कप्पति गहणं कातुं ।

अह संथरणे गेण्हति तो इमं "ओहेण" पुरिसअविभागेण पच्छित्तं, जहन्ने मासलहुं, मज्जिमे चउलहुं, उक्कोसे चउगुरुं ॥३४५९॥

जहन्नमज्झिमुक्कोसदरिसणत्थं इमं –

उक्कोसं विगतीओ, मज्झिमगं होति कूरमादीणि ।
दोसीणाति जहण्णं, गेण्हंती आयरियमादी ॥३४६०॥

आयरिय-वसभ-भिक्खूणं गेण्हंताणं आणादिया दोसा ॥३४६०॥

इमं च पुरिसविभागेण पच्छित्तं –

अद्धाणे संथरणे, सुण्णे गामम्मि जो उ गिण्हेज्जा ।
छेदादी आरोवण, णेयव्वा जाव मासो उ ॥३४६१॥

अद्धाणपडिवन्नो संथरणे जो सुन्नगामे विगतिमादियं गेण्हति तस्स अंतो मासस्स वहिं वा दिट्ठादिट्ठं आयरियमादियाण छेदादि आरोवणा ताव णेयव्वा जाव मासियं अंते ॥३४६१॥

सा य छेदादिआरोवणा इमा –

छेदो छग्गुरु छल्लहु, चउगुरु चउलहु गुरु लहूमासो ।
भिक्खू वसभायरिए, उक्कोसे मज्झिम जहण्णे ॥३४६२॥

इमो चारणापगारो – आयरियस्स विगइमाइ उक्कोसं सुन्नगामे अंतो दिट्ठं गिण्हंतस्स छेदो, अंतो चेव अदिट्ठे छग्गुरु । वाहिं दिट्ठे छग्गुरुगा चेव । वाहिं अदिट्ठे छल्लहुगा ।

आयरियस्सेव ओदणादि मज्झिमे अंतो दिट्ठे छग्गुरुगा, अदिट्ठे छल्लहु । वाहिं दिट्ठे छल्लहुगा चेव, अदिट्ठे चउगुरुगा ।

आयरियस्सेव अंतो जहण्णे दोसीणादियम्मि दिट्ठे छल्लहुगा, अदिट्ठे चउगुरुगा, वाहिं दिट्ठे चउगुरुगा चेव अदिट्ठे चउलहुगा ।

वसभस्स एवं चेव – चारणाप्पगारेण छग्गुरुगादि मासगुरुए ठायति ।

भिक्खुस्स वि एवं चेव छल्लहुगादि मासलहुगे ठायति ।

"भिक्खुवसभायरिए" त्ति जं पुरिसविवच्चासगहणं कतं तं विपरीतचारणाप्रदर्शनार्थम् ।

---

१ गा० ३४८३ ।

भिक्खुस्स गामबाहिं जहन्नं अदिट्ठं गेण्हंतस्स मासलहुं, दिट्ठे मासगुरुं, अंतो अदिट्ठे मासगुरुं चेव, दिट्ठे चउलहुं। एवं मज्झे मासगुरुगादि चउगुरुगे ठायति। उक्कोसे चउलहुगादि छल्लहुगे ठायति।

वसभस्स एवं चेव मासगुरुगादि छग्गुरुगे ठायति।

आयरियस्स चउलहुगादि छेदे ठायति। तम्हा पच्छित्तं परियाणमाणो संथरणे ण गेण्हेज्जा ॥३४६२॥

असंथरणे इमेण विविणा सुन्नगामे सुन्नं दव्वं गेण्हेज्जा –

उद्दूढसेस बाहिं, अंतो वा पंत गेण्हति अदिट्ठं।
बहि अंतो ततो दिट्ठं, एवं मज्झे तहुक्कोसं ॥३४६३॥

उद्ढसेस नाम जं लुंटागेहिं अप्पणट्ठा बाहिं णीतं, तं भोत्तुं सेसं छड्डियं, तत्थ जं जहण्णं तं अदिट्ठं गेण्हंति।
तस्स असति अंतो गामस्स पंतं चेव अदिट्ठं गेण्हंति।
तस्स असति बाहिं पंतं दिट्ठं गेण्हंति।
तस्स असति अंतो पंतं दिट्ठं गेण्हंति।
तस्स असति मज्झिमं। एवं चेव चारेयव्वं।
तस्स असति उक्कोसं एवं चेव ॥३४६३॥

जघन्यमध्यमोत्कृष्टविकल्पप्रतिषेधार्थमिदमाह –

तुल्लम्मि अदत्तम्मि, तं गेण्हसु जेण आवतिं तरसि।
तुल्लो तत्थ अवाओ, तुच्छफलं वज्जते तेणं ॥३४६४॥

जहन्नमज्झिमुक्कोसेसु दव्वेसु अविसुद्धभावतो तुल्लं अदत्तादानं, संजमायविराहणा वा, तो गेण्हण-कड्ढणादि अवायो तत्थ तुल्लो चेव भवति, तम्हा तुच्छफलं दव्वं वज्जेउं जेण दव्वेण भुत्तेण तं आवतिं तरसि तं गेण्हसु ॥३४६४॥

असुन्नदव्वे इमा विही –

बिलउलए य जायइ, अहवा कडवालए अणुण्णवए।
इयरेण व सत्थभया, अण्णभया वुट्ठिए कोट्टे ॥३४६५॥

लुंटागा, विलउलगा तो जायति। अहवा – जे तत्थ सुण्णगामे वुड्ढादि अजंगमा गिहपालगा ठिता, ण णट्ठा ते मग्गंति, अणुण्णवेत्ता वा सयं गिण्हंति।

कहं पुण सो गामो सुन्नो जाओ?

तत्थिमे सुन्नहेऊ – "इतर" त्ति, चोरभयं महल्लसत्थभएण व अन्नभयं णाम परचक्कभयं, एतेहिं उट्ठिओ गामो। कोट्टं वा जं अटविमज्झे भिल्ल-पुलिंद-चाउव्वन्न-जणवयमिस्सं दुग्गं वसति, वणिया य जत्थ ववहरंति तं कोट्टं भन्नति, तम्मि सुन्ने दव्वग्गहणं वुत्तं ॥३४६५॥

"[1]नंदि" त्ति अस्य व्याख्या –

णंदंति जेण तवसंजमेसु णेव य [2]दरत्ति [3]रिज्जंति।
जायंति न दीणा वा, नंदी खलु समयसण्णा वा ॥३४६६॥

---

१ गा० ३४५३। २ दुयति दिप्पंति पा०। ३ खिज्जंति इति बृ० क० उ० १, गा० २९२०।

येनाभ्यवहृतेन तवे संजमे वा नंदति स एव नंदी, येनाभ्यवहृतेन न द्रुतं पप्पति स नंदी । अथवा– येनाभ्यवहृतेन न दीना भवंति स णंदी । समयसण्णाए वा संथरणं णंदी भण्णति । यथा येन वा संथरणं भवति तथा कर्तव्यमित्यर्थः ॥३४६६॥

"[1]रुक्खादीण पलोयण" त्ति अस्य व्याख्या –

फासुगजोणिपरित्ते, एगट्ठि अबद्धभिण्णऽभिण्णे य ।
बद्धट्ठिए वि एवं, एमेव य होंति बहुबीए ॥३४६७॥

एमेव होंति उवरिं, बद्धट्ठिय तह होंति बहुबीए ।
साहारणस्स भावा, आदीए बहुगुणं जं च ॥३४६८॥

एयाओ दो वि गाहाओ जहा पेढे वणस्सतिकायस्स कप्पियपडिसेवाए ॥३४६७–६८॥

इयाणिं राओ पाणगजयणा, जहा भत्तं तहा पाणं पि वत्तव्वं ।

ग्रहणं प्रति इमो विसेसो –

परिणिट्ठियजीवजढं, जलयं थलयं सचित्तमियरं वा ।
एयं तु दुविहदव्वं, पाणयजयणा इमा होइ ॥३४६९॥

तुवरे फले य पत्ते, रुक्ख-सिला-तुप्प-मद्दणादीसु ।
पासंदणे पवाते, आयवतत्ते वहे अवहे ॥३४७०॥

जड्डे खग्गे महिसे, गोणे गवए य सूयर मिगे य ।
दुप्परिवाडीगहणे, चाउम्मासा भवे लहुया ॥३४७१॥

एयाओ दो वि गाहाओ जहा पेढे आउक्कायस्स कप्पियडिसेवणाए ॥३४७०–७१॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परिवासेइ, परिवासेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

"अश् भोजने", "खाद भक्षणे", "पा पाने", "स्वद आस्वादने" । एते चउरो, तिण्णि, दो अण्णयरं वा जो रातो अणागाढे – ण आगाढं अणागाढं, तम्मि जो परिवासेति तस्स चउगुरुं, आणाति विराहणा य भवति ।

इमा णिज्जुत्ती –

जे भिक्खू असणादी, रातो अणागाढे णिक्खवेज्जाहि ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥३४७२॥

---

१ गा० ३४५३ ।

किंपुण आगाढं आणागाढं वा ?

तत्थिमं आगाढं समासतो चउव्विहं –

अद्धाणे ओमे वा, गेलण्ण परिण्ण दुल्लभे दव्वे ।
आगाढं णायव्वं, सुत्तं पुण होतऽणागाढे ॥३४७३॥

इमं खेत्तागाढं – अद्धाण-पडिवण्णगाणं सव्वहा जं असंथरणं तं आगाढं ।

इमं कालागाढं – ओमकाले जं असंथरणं तं आगाढं ।

इमे – गिलाण-परिण्णी दो वि भावागाढं ।

गिलाणस्स तद्दिवसं पायोग्गं जति न लब्भति गिलाणागाढं ।

परिण्णस्स असमाधाणे उप्पण्णे दिया रातो वा परिण्णागाढं । इह राती अहिकारो ।

इमं दव्वागाढं – "दुल्लभदव्वे" त्ति – सतपाग-सहस्सपागं, घयं, तेल्लं, तेण साहुणो कज्जं, तम्मि अलब्भंते दुल्लभदव्वागाढं । एवंविधं आगाढं णायव्वं । पडिपक्खे अगाणाढं । इमं सुत्तं – अणागाढे परिवासेति, तस्स य सोही, संजमायविराहणादोसा य ॥३४७३॥

तत्थ संजमे इमा विराहणा –

सम्मुच्छंति तहिं वा, अण्णे आगंतुगा व लग्गंति ।
तक्केंति परंपरतो, परिगलमाणे वि एमेव ॥३४७४॥

असणादिए परिवेसाविते किमिरसगादी पाणा सम्मुच्छंति, अण्णे वा मच्छिय-मसग-मक्कोड-पिवीलिगादी पडंति, तक्केंति, परंपरतो वा भवंति । तं परिवासिदव्वं मच्छिग-मुइंग-मूसगादी तक्केंति, मच्छियाओ गिहकोइलिगा तक्केति, गिहकोइलगं मज्जारो तक्केति, मज्जारं साणो तक्केति, एस तक्केंति परंपरओ ।

अह तं भायणं परिगलति, तत्थ वि परिगलिए एवं चेव तक्केंति परंपरओ । अत्र मधुविन्दो रुपाख्यानं द्रष्टव्यम् । एसा संजमविराहणा ॥३४७४॥

इमा आयविराहणा –

लाला तया विसे वा, उंदरपिंडी व पडण सुक्कं वा ।
घरकोइलाइमुत्तण, पिवीलिगा मरण णाणाता ॥३४७५॥

भत्ते पाणे वा परिवासिठविते सप्पादिणा जिघमाणेण लाला विससम्मिस्सा मुक्का हवेज्जा, तया विसेण वा फुसितं हवेज्जा ।

उंदराणि वा संवासगताणि तत्थ पडेज्जा । तेहिं वा संवासगतेहि वीयं निसट्ठं, तं पडेज्जा ।

घरकोइलो वा मुत्तेज्जा । गिहकोकिल-अवयवसम्मिस्सेण भुत्तेण पोट्टे किल गिहकोइला सम्मुच्छंति ।

मुइंगादी वा पडेज्ज । एत्थ मुइंगासु मेहा परिहायति । मेहापरिहाणीए णाणविराहणा । सेसेसु आयविराहणा । परियावणादि जाव चरिमं पावति ॥३४७५॥

बितियपदे आगाढकारणे निक्खवंतो अदोसो । तं च इमं –

बितियपदं गेलण्णे, अद्धाणोमे य उत्तिमट्ठे य ।
एतेहिं कारणेहिं, जयणाए णिक्खवे भिक्खू ॥३४७६॥

गिलाणस्स पतिदिणं अलब्भंते, अद्धाण पवण्णाणं असंथरणे, दुब्भिक्खे य असंथरंतो, उत्तिमट्ठ-पडिवण्णस्स असमाहाणे तक्खणमलंभे एमादिकारणेहिं जयणाते परिवासेज्जा ।।३४७६।।

इमा जयणा –

सवेंटऽप्पमुहे वा, दद्दर मयणादि अपरिभुंजंते ।
उंदरभए सरावं, कंटियउवरिं अहे भूती ।।३४७७।।

लाउए सवेंटे छुब्भति, अप्पमुहे वा कुडमुहादिसु, तत्थ छोढुं चम्मेण घणेण वा चीरेण दद्दरेति, दद्दरासति सरावादिपिधाणं दातुं संधिं मयणेण लिंपति, छगणेण, मट्टिआए वा, ततो अव्वाबाहे एगंते ठवेति, जत्थ उंदरभयं तत्थ सिक्कए काउं वेहासे ठवेति, जइ रज्जूए उंदरा अवतरंति तत्थंतरा सरावं ठवेंति, कंटकाओ वा कद्दमे उद्धमुहा करेंति, भायणस्स वा मुहे कंटिका करेंति, एसा उवरि रक्खा । भूमिठियस्स वा अहो भूती करेंति, परिगलणभया वेहासठियस्स अहो भूति करिज्जति ।।३४७७।।

जत्थ पिवीलिगभयं, मूसगा य णत्थि, रज्जूए वा मूसगेहिं छिंदणभयं,

तत्थिमा आलयण-विधी –

ईसिं भूमिमपत्तं, आसण्णं वा वि छिण्णरक्खट्ठा ।
पडिलेह उभयकालं, अगीय अतरंत अण्णत्थ ।।३४७८।।

भूमीए ईसिं अपत्तं रज्जूए ओसारेंति, आसण्णं वा हेट्ठा अणप्फिडंतं ठवेंति ।

किमेवं ठविज्जति ?

जदि मूसगेण रज्जू छिज्जति तो सपाणभोयणं भायणं पडितं पि ण भिज्जत्ति, रक्खियं भवति, पुव्वावरासु य संझासु पडिलेहणपमज्जणा करेंति । अगीतगिलाणा जत्थ वसतीए संति न तत्थ ठवेंति । ते वा अगीयगिलाणा अण्णत्थ ठवेंति ।।३४७८।।

जे भिक्खू परिवासियस्स असणस्स वा पाणस्स वा खाइमस्स वा साइमस्स वा तयप्पमाणं वा भूइप्पमाणं वा बिंदुप्पमाणं वा आहारं आहारेइ, आहारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७९।।

जे भिक्खू मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा मच्छखलं वा आहेणं वा पहेणं वा सम्मेलं वा हिंगोलं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं विरूवरूवं हीरमाणं पेहाए ताए आसाए ताए पिवासाए तं रयणिं अण्णत्थ उवातिणावेति, उवातिणावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८०।।

जम्मि पगरणे मंसं आदीए दिज्जति पच्छा ओदणादि, तं मंसादिं भण्णति ।

मंसाण वा गच्छंता आदादेव पारणे करेंति तं वा मंसादि ।

आणिएसु वा मसेसु आदावेव जणवयस्स मंसपगरणं करेंति पच्छा सयं परिभुंजंति तं वा मंसादी भण्णति । एवं मच्छादियं पि वत्तव्वं । मंसखलं जत्थ मंसाणि सोसिज्जंति, एवं मच्छखलं पि ।

जमन्नगिहातो आणिज्जति तं आहेणं, जमन्नगिहं णिज्जति तं पहेणगं ।

अहवा – जं वहूगिहातो वरगिहं णिज्जति तं आहेणं; जं वरगिहातो वहूवरं णिज्जति तं पहेणगं।

अहवा – वरवहूण जं आभव्वं परोप्परं णिज्जति तं सव्वं आहेणकं, जमन्नतो णिज्जति तं पहेणगं। सव्वाण मंसादियाणं जं हिज्जति-णिज्जति त्ति तं हिंगोलं, हुज्जति वा तं हिंगोलं।

अहवा – जं मतभत्तं [1]करडुगादियं तं [2]हिंगोलं। वीवाहभत्तं सम्मेलो।

अहवा – सम्मेलो गोट्ठी तिए भत्तं सम्मेलं भण्णति।

अहवा – कम्मारंभेसु ण्हासिता जे ते सम्मेलो। तेसि जं भत्तं तं सम्मेलं।
गिहातो उज्जाणादिसु हीरंतं – नीयमानमित्यर्थः, प्रेहा पेक्ष्य, तं लप्स्यामीत्याशा।

अहवा – ओदनादि अशितुमिच्छा तदासा, द्राक्षापानकादि पातुमिच्छा पिपासा।

अहवा – ताए प्रदेशाए – प्रतिश्रयादित्यर्थः, जो त्ति साहू जम्मि दिणे पगरणं भविस्सति तस्स आरतो जा रयणी तं जो अण्णत्थ प्रतिश्रये उवातिणावेति – नयतीत्यर्थः। अन्नं वा नयंतं सादिज्जति, तस्स चउगुरुं आणादिणो य दोसा, आयसंजमविराहणा। उक्तः सूत्रार्थः।

इदाणिं णिज्जुत्ती। सा प्रायशो गतार्थैव।

मंसाइ पगरणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
सेज्जायरेतराण व, जे तत्थासागते भिक्खू ॥३४७९॥

तं पगरणं सेज्जातरस्स, इतरस्स वा असेज्जातरस्स, जे भिक्खू तत्थ भत्ते आसा तत्थासा, तत्थासाते अण्णं वसहिं आगते आणादयो दोसा भवंति ॥३४७९॥

तं रयणिं अण्णत्था, उवातिणा एतरेसु वा तत्थ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥३४८०॥

सेज्जायरभत्तो सेज्जायरपिंडो अकप्पिउ त्ति काउं अन्नवसहिं गच्छंति, इयरेसु तत्थ गंतुं वसंति परि (च) जयट्ठा ॥३४८०॥

मंसाण व मच्छाण व, गच्छंता पारियम्मि वयगादी।
आणेंति संखडिं पुण, खलगा जहियं तु सोसंति ॥३४८१॥

गच्छमाणा संखडिं करेंति, कत्तियमासादि अमंसभक्खणवते गहिते तम्मि पुण्णे मंसादिपगरणं काउं धिज्जातियाण दाउं पच्छा सयं पारेंति।

अहवा – मंसादिभक्खणविरतिव्वयं घेत्तुं तस्स रक्खणट्ठा आदिए संखडिं करेंति, आणिए वा मंसे संखडिं करेंति। खलगं जत्थ मंसं सोसंति ॥३४८१॥

आहेणं दारगइत्तगाण वधुइत्तगाण व पहेणं।
वरइत्तादि वहेणं, पहेणगं णेंति अण्णत्थ ॥३४८२॥
सम्मेलो वडा भोज्जं, जं वा अत्थारगाण पकरेंति।
हिंगोलं जं हिज्जति, सिवढोढसिवाइ करडं वा ॥३४८३॥

---

१ श्राद्धविशेषः। २ गा० ३४८३।

हीरंतं णिज्जंतं, कीरंतं वा वि दिस्स तु तयासा ।
अण्णत्थ वसति गंतुं, उवस्सतो होति तुवएसो ॥३४८४॥
सेज्जायरस्स पिंडो, मा होहिति तेण अण्णहिं वसति ।
इतरेसु परिजयट्ठा अणागयं वसति गंतूणं ॥३४८५॥ गतार्थाः

तत्थ गच्छमाणस्स अंतरा छक्कायविराहणा कंटट्ठिविसमादिएहिं वा आयविराहणा ।

इमे य दोसा तत्थ –

दुण्णीय दोण्णि विट्ठा, मत्तुम्मत्ता य तत्थ इत्थीओ ।
दट्ठुं भुत्ताभुत्ते, कोउयसरणेहि गमणादी ॥३४८६॥

उप्पाउयं दुन्नियत्थं वा दुन्नीतं अवाउडा, दुन्निविट्ठा विब्भला, णिब्भरा मत्ता, मदक्खए ईसिं सवेयणा सविकारचेट्ठकारी उम्मत्ता, भुत्तभोगिणो तातो दट्ठुं सतिकरणं, इयराण कोउयं, ततो पडिगमणादि करेज्ज । जम्हा एते दोसा तम्हा तत्थ ण गंतव्वं ॥३४८६॥

बितियपदेण वा गच्छेज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, अप्परिणामेसु जयणाए ॥३४८७॥

असिवादी सत्तसु कारणेसु जति गीयत्था ततो पणगपरिहाणीए वसहिठिता चेव गिण्हंति ॥३४८७॥

जतो भण्णति –

परिणामतेसु अच्छति, आउलछम्मेण जाइ इतरेसु ।
जे दोसा पुव्वुत्ता, सा इतरे कारणे जयणा ॥३४८८॥

अगीया वि जति परिणामगा तो अच्छंति । अह अगीता अपरिणामिया तो सेज्जायरसंखडीते आयरिओ भणति – एत्थ कल्लं जणाउलं भविस्सति, इतो निग्गच्छामो अन्नवसहीए ठामो, असेज्जायरसंखडीए पुण संवासभद्दया भविस्संति त्ति काउं अन्नवसहीए वि वसेज्जा ॥३४८८॥

जे भिक्खू निवेयणपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

उवाइयं अणोवाइयं वा जं पुण्णभद्द माणिभद्द सव्वाणजक्ख[1]महुंडिमादियाण निवेदिज्जति सो निवेयणापिंडो । सो य दुविहो – साहुणिस्साकडो अणिस्साकडो य । णिस्साकडं गेण्हंतस्स चउगुरुं, अनिस्साकडे मासलहुं आणादिया य दोसा ।

सव्वाणमाइयाणं, दुविहो पिंडो निवेयणाए उ ।
णिस्साएऽणिस्साए, णिस्साए आणमादीणि ॥३४८९॥

सव्वाणादिया जे अरहंतपक्खिया देवता ताण जो पिंडो निवेदिज्जति सो दुविधो – णिस्समणिस्साकडो य । णिस्साकडं पिंडं गेण्हंतस्स आणादिया ॥३४८९॥

---

१ पाहुणियादियाण पा० ।

इमेण विहिणा णिस्साकडं करेंति –

चरुगं करेमि इहरा, समणा णेच्छंतुवक्खडं भोत्तुं ।
सद्धाकतं ठवेंति व, णिस्सापिंडम्मि सुत्तं तु ॥३४९०॥

दाणरुई सड्ढो वा णिवेयणचरुववदेसं कातुं साधूण देति, आधाकम्मं ठवितं च ।

अहवा – "जाव साहू अच्छंति ताव उवातियं देमो, सुहं साहू गिण्हंति", एत्थ ओसक्कण-मीसजाय-ठवियदोसा । जया वा साहू आगमिस्संति तदा दाहेमो, एत्थ ओसक्कण-मीसजात-ठवियदोसा । सद्धाकडं साहुणिस्साए वा ठवेंति, एत्थ ठवियगदोसो । केवलो एस णिस्साकडो । एत्थ सुत्तणिवातो । इमो अणिस्साकडो साहू होउ वा मा वा देवताते पुव्वपवत्तं ठवेंति । सो य ठवितो साहू य पत्ता, एसो कप्पति ॥३४९०॥

णिस्साकडो वि कप्पति –

इमेहिं कारणेहिं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥३४९१॥

पणगपरिहाणिजयणाते गेण्हंति, जहा वा अगीतअपरिणामगा ण याणंति तहा गीयत्था गेण्हंति॥३४९१॥

जे भिक्खू अहाछंदं पसंसति, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८२॥

जे भिक्खू अहाछंदं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

"अहाछंदे" त्ति – जकारव्यंजनलोपे कृते स्वरे व्यवस्थिते भवति अहाछंदः, छंदोऽभिप्रायः, यथा स्वाभिप्रेतं तथा प्रज्ञापयन् अहाछंदो भवति. तं जो पसंसति वंदति वा तस्स चउगुरुगं आणादिया य दोसा ।

केरिसा पुण अहाछंदपडिवत्तीतो –

उस्सुत्तमणुवइट्ठं, सच्छंदविगप्पियं अणणुवादी ।
परतत्ति-पवत्ते तिंतिणे य इणमो अहाछंदो ॥३४९२ ॥

उस्सुत्तं णाम सुत्तादवेतं, अणुवदिट्ठं णाम जं णो आयरियपरंपरागतं, मुक्तव्याकरणवत् ।

सीसो पुच्छति – किमण्णं सो परूवेति ?

आचार्याह – "सच्छंदविगप्पियं", स्वेन छंदेन विकल्पितं स्वच्छन्दविकल्पितं, तं च "अणणुपाती"-न क्वचित् सूत्रे अर्थे उभए वा अनुपाती भवति, ईदृशं प्ररूपयन्ति । किं च परो गृहस्थस्तस्य कृताकृतव्यापारवाहकः, परापवादभाषी वा, स्त्रीकथादिप्रवृत्तो वा, परतप्तिवृत्तिः । तिंतिणो – दव्वे भावे य । दव्वे तुंबुरुगादि कट्ठं अगणिपक्खितं तिणितिणेति । भावे तिंतिणो आहारोवहिसेज्जाओ इट्ठातो अलभमाणो सोयति – जूरति तिप्पति । एवं दिवसं पि तिणितिणितो अच्छति अद्धित्ति । इमा अहाच्छंदे प्रतिपत्तयः ॥३४९२॥

सो य अहाछंदो तिहा उस्सुत्तं दंसेति – परूवण-चरण-गतीसु ।

तत्थ परूवणे इमं –

पडिलेहण-मुहपोत्ती, रयहरण-णिसिज्ज-पात-मत्तए पट्टे ।
पडलाइ चोल उण्णादसिया पडिलेहणा पोत्ते ॥३४९३॥

पादपडिलेहणिमुहपोत्तियाणं एगंतरं भवतु, जतो स्वकायपमज्जणा भायणपमज्जणा य एयाए चेव कज्जति, न विरोहो अप्पोवगरणया य भवति, तम्हा सव्वे व पडिलेहणिगा सव्वे व मुहपोत्तिया कज्जतु।

रयहरणपट्टगो चेव बाहिरणिसेज्जाकज्जं करेति। किं निसेज्जागहणं कज्जति ?

एक्कं चेव पादं पडिग्गहं भवतु। किं मत्तयगहणं कज्जति ? पडिग्गहेणं चिय मत्तयकज्जं कज्जति, भणियं च – [1]तरुणो एगं पादं गेण्हेज्जा।

"[2]पट्टे" त्ति उत्तरपट्टो, सो रातो अत्थुरणं कज्जति, भिक्खाग्गहकाले तं चेव पडलं कज्जति।

अहवा – रातो उत्तरपट्टे, दिवा सो चेव चोलपट्टो कज्जति।

किं कक्खडफासाहिं उन्नदसियाहिं ? खोमिया चेव मिउफासा भवंतु।

जति जीवदयत्थं पडिलेहणा कज्जति तो एगवत्थस्स उवरिं सव्वपडिलेहणा कज्जउ। तं वत्थं बाहिं शीतले पदेसे पडिलेहिज्जतु। एवं जीवदया भवति ॥३४६३॥

दंतच्छिण्णमलित्तं, हरियट्ठि पमज्जणा य णिंतस्स।
अणुवादि अणणुवादी, परूवणा चरण-गतीसु च ॥३४६४॥

दंतेहिं णहा छेत्तव्वा, नहहरणं ण घेत्तव्वं, अधिकरणसंभवात्।

पादं अलित्तं धरेयव्वं, लेवग्गहणे बहू आयसंजमविराहणा भवति।

हरितोवरि ठितं डगलादि घेत्तव्वं, ते जीवा भारावकंता आसासिया भवंति, अण्णहा अदयालुत्तं भवति।

जहा णिंतो जीवदयत्थं पमज्जति जाव छन्नं तहा परतो पि पमज्जतु, जीवदयत्थमेव ण दोसो। एत्थ किं चि अणुवादि जहा पडिलेहणिमुहपोत्ती।

अहवा – पडिलेहणा पोत्ते। किं च अणणुवादी, जहा – "पट्टे पडलादि चोले" त्ति, छप्पतिय-उंदरसंभवात्।

अहवा – सव्वे पदा अगीतस्सऽणुवादी य प्रतिभासन्ति, गीतार्थस्य अननुपाति, अनभिहितत्वात् – सदोषत्वाच्च। एषा परूवणा भणिता।

इयाणि चरण-गतीसु भण्णति ॥३४६४॥

तत्थ चरणे –

सागारियादिपलियंकणिसेज्जासेवणा य गिहिमत्ते।
णिग्गंथिचिट्ठणादी, पडिसेहो मासकप्पस्स ॥३४६५॥

सेज्जातर-रातपिंडे, उग्गमसुद्धाइ को भवे दोसो।
पडिवत्ति दुविहधम्मे, सेज्जं नवए य पलियंके ॥३४६६॥

अणुट्ठाहो गिहिमत्ते, निग्गंथीचिट्ठणे च्च सव्वत्थ।
दोसविमुक्को अच्छे, मासहियं ऊण चरणेवं ॥३४६७॥

---

१ आचा० श्रुत० २ अध्य० ६ उद्दे० १ सू० १५२। २ गा० ३४६३।

सेज्जातरपिंडो उग्गमादिसुद्धो भोत्तव्वो, आदिग्गहणातो रायपिंडो, न तत्र दोषः ।

णवे पलियंके मंकुणाइजीवविरहिते सोयव्वं, न दोसा ।

गिहिनिसिज्जाए को दोसो ? अवि य साहू तत्थ निसण्णो धम्मं कहेज्जा, ते य दुविहं धम्मं – गिहिधम्मं साधुधम्मं च, एवं बहुतमो गुणो गिहिणिसेज्जाते ।

गिहिमत्तसेवणे को दोसो ? अवि य उड्डाहपच्छादणं कतं भवति ।

णिग्गंथीणं उवस्सए दोसविमुक्को कुसलचित्तो चिट्ठणादिपदे किं न करेति ? अह तत्थ ठियस्स अकुसलचित्तसंभवो भवे, अन्नत्थ वि अकुसलचित्तस्स दोसो भवत्येव ।

जत्थ न दोसो तत्थ मासाहियं पि वसतु, जत्थ दोसो तत्थ ऊणे वि मासे गच्छउ, एवं मासकप्पेण न किं चि पयोयणं । एवं चरणे परूवणं करेति ।।३४९७।।

किं चान्यत् –

चारे वेरज्जे वा, पढमसमोसरण तह य णितिए य ।
सुण्णे अकप्पिए वा, अणाउंछे य संभोए ।।३४९८।।

चरणं चारः । विगतरायं वेरज्जं, जं भणियं "णो कप्पइ णिग्गंथाणं वेरेज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं" तदयुक्तं । कम्हा ? जम्हा परीसहोवसग्गा सोढव्वा । अवि य पव्वयंतेण चेव अप्पा परिचत्तो ।

पढमसमोसरणम्मि उग्गमादिसुद्धं वत्थपत्तं किं ण घेप्पति ? को दोसो णिम्ममस्स ?

णितियावासे को दोसो ? अवि विहरंताणं सीउण्हपरीसहाइया य दोसा ।

निपच्चवाते सुण्णा वसही किं न कज्जति ? को दोसो ?

अकप्पिएण उग्गमादिसुद्धं आणियं पिंडवत्थादि, किं न भुंजति ?

अन्नायउंछं अडंतस्स पिवास-खुद्द-परिस्समा बहुतरा दोसा, तम्हा ससड्ढादिसु कुलेसु चेव उग्गमादिसुद्धं गेत्तव्वं ।

अन्नसंभोइओ पंचमहव्वय-अड्ढारससीलंगसहस्सधारी तिगुत्तो पंचसमितो य, तेण सद्धिं किं न भुंजति ? न य अन्नकिरिया अन्नस्स संकामति । एवं चरणे उस्सुत्तं परूवेइ करेति य ।।३४९८।।

इयाणिं गतिदिट्ठंतमाह –

खेत्तं गतो य अडविं, एक्को संचिक्खए तहिं चेव ।
तित्थकरो ति य पियरो, खेत्तं तू भावओ सिद्धी ।।३४९९।।

इमं अहाछंदो दिट्ठंतो परिकप्पेति । तं जहा – एगो कुटुंबी तस्स चउरो पुत्ता । तेण सव्वे संदिट्ठा – "गच्छह खेत्ते, किसिवावारं करेह" ।

तत्थेगो जहुत्तं खेत्तं कम्मं करेइ ।

बीओ गामा णिग्गंतुं अडवीए उज्जाणादिसु सीयलच्छायाट्ठितो अच्छति ।

ततिओ गिहा णिग्गंतुं गामे चेव देवकुलादिसु जूआदिपमत्तो चिट्ठति ।

चउत्थो गिहे चेव किंचि वावारं करेंतो चिट्ठति ।

अण्णया तेसिं पिया मतो । ताण जं पिइसंतियं किंचि दव्वं छेत्ते वा उप्पण्णं तं सव्वं समभागेण भवति ।

इयाणि दिट्ठंतोवसंहारो ।

पच्छद्धं – कुडुंबिसमा तित्थगरा, भावतो खेत्तं सिद्धी ।

पढमपुत्तसमा मासकप्पविहारी उज्जमंता, बितियपुत्तसमा णितियवासी ।

ततियपुत्तसमा पासत्था, चउत्थपुत्तसमा सावगधम्मठिता गिहिणो । तित्थकरपितिसंतियं दव्वं णाणदंसणचरित्ता । जं च तुब्भे खेत्तं पडुच्च दुक्करं किरियकलावं करेह तं सव्वं अम्ह णितियादिभावट्ठियाणं सुहेण चेव सामण्णं ॥३४९९॥

कहं पुण अहाछंदं पसंसति ? उच्यते –

वेरग्गितो विवित्तो य, भासए य सहेउयं ।
सासणे भत्तिमं वादी, एवमाई पसंसणा ॥३५००॥

विरागो अग्गं जस्स स वेरग्गितो, विगतरागो वा वेरग्गितो । उज्जमंतो मूलुत्तरगुणेसु विसुद्धो विवित्तो । "उस्सुत्तं पन्नवेंतो वि एस जुज्जमाणं सहेउगं भासति, जिणसासणे जिणाणं जिणसासणपवन्नाण य सव्वेसिं एस भत्तिमंतो वन्नवादी य" ॥३५००॥

एवं तु अहाछंदे, जे भिक्खू पसंसए अहव वंदे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥३५०१॥

कंठा । जं सो समायरति तं सव्वं अणुण्णायं भवति । अहाछंदसेहाण य अहाछंदभावे थिरीकरणं कयं भवति, सेहो वा तत्थ गच्छति ॥३५०१॥

कारणे पुण पसंसति वंदति वा –

बितियपदमणप्पज्झे, पसंस अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादि गच्छट्ठा ॥३५०२॥

अहाछंदो कोइ राइस्सिओ, तब्भया तं पसंसति वंदति वा । "तव्वादि" त्ति कश्चिदेवं वादी प्रमाणं कुर्यात् – "अहाछंदो न वंद्यो, नापि प्रशस्य" इति प्रतिज्ञा ।

कस्माद्धेतोः ? उच्यते – कर्मबन्धकारणत्वात् ।

को दृष्टान्तः ? अविरतमिथ्यात्ववंदनप्रशंसनवत् । ईदृशप्रमाणस्य दूषणे न दोषमावहति प्रशंसवंदन-परूवणं कुर्वन् । "गच्छट्ठ" त्ति कोइ अहाछंदो ओमाइसु गच्छरक्खणं करेति, तं वंदति पसंसति वा ण दोसो ॥३५०२॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा अणलं वा
पव्वावेइ, पव्वावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

णायगो स्वजनः, अनायगो अस्वजनः ।

अहवा – नातगो प्रज्ञायमानः, अनायगो अप्रज्ञायमानः ।

न अलं अनलं अपर्याप्तः – अयोग्य इत्यर्थः, पव्वावेंतस्स चउगुरू आणादिया य दोसा ।

इमा णिज्जुत्ती ण सुत्तक्कमेण अणाणुपुव्वीए वक्खाणेति –

सावुं उवासमाणो, उवासतो सो वती व अवती वा ।
सो पुण णायग इतरो, एवऽणुवासे वि दो भंगा ॥३५०३॥

उवासगो दुविहो – वती अवती वा ? जो अवती सो परदंसण-संपण्णो ।

एक्केक्को पुणो दुविहो – नायगो अनायगो वा । अणुवासगो पि नायगमनायगो य । एते चेव दो विकप्पा ॥३५०३॥ [1]अनलमित्यपर्याप्तः ।

चोदकाह – "ननु अलंशब्दः त्रिष्वर्थेषु दृष्टः, तद्यथा – पर्याप्ते भूषणे वारणे च ।

आचार्याह –

कामं खलु अलसद्दो, तिविहो पज्जए तहिं पगतं ।
अणलो अपच्चलो त्ति य, होति अजोगो य एगट्ठा ॥३५०४॥

यद्यपि त्रिष्वर्थेषु दृष्टः तथापि अर्थवशादत्र पर्याप्ते दृष्टव्यः । न अलो अनलः, अयोग्यश्च एकार्थाः ॥३५०४॥

ते य पव्वज्जाए अजोग्गा –

अट्ठारसपुरिसेसुं, वीसं इत्थीसु दस नपुंसेसु ।
पव्वावणा अणरिहा, इति अणला इत्तिया भणिया ॥३५०५॥

सव्वे अडयालीसं ।

जे ते अट्ठारसपुरिसेसुं ते इमे –

बाले[1] वुड्ढे[2] णपुंसे[3] य, जड्डे[4] कीवे[5] व वाहिए[6] ।
तेणे[7] रायावकारी[8] य, उम्मत्ते[9] य अदंसणे[10] ॥३५०६॥

दासे[11] दुट्ठे[12] य मूढे[13] य, अणत्ते[14] जुंगिए[15] इ य ।
उबद्धए[16] य भयए[17], सेहणिप्फेडियाइ[18] य ॥३५०७॥

जो पुरिसनपुंसगो सो पडिसेवति पडिसेवावेति । जा ता वीसं इत्थीसु ता इमा – बाला वुड्ढी जाव सेहणिप्फेडिया, एते अट्ठारस ।

इमाओ य दो –

गुव्विणि बालवच्छा य, पव्वावेउं ण कप्पती ।
एएसिं तु परूवणा, कायव्वा दुपयसंजुत्ता ॥३५०८॥

णपुंसगदारे विसेसो – इत्थीणपुंसिया इत्थिवेदो वि से नपुंसकवेदमपि वेदेति । "एएसिं" गाहापच्छद्धं ।

"दुपदसंजुत्त" त्ति अस्य व्याख्या –

कारणमकारणे वा, कारण जयणेतरा पुणो दुविहा ।
एस परूवण दुविहा, पगयं दप्पेणिमं सुत्तं ॥३५०९॥

---

१ सू० ८४ ।

कारणे णिक्कारणे वा पव्वावेति। कारणे जयणाते अजयणाए वा। जो दप्पेण पव्वावेति तस्स चउगुरुगं आणादिया य दोसा ॥३५०९॥

"[1]वाले" त्ति दारस्स इमा वक्खा –

तिविहो य होति बालो, उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य।
एतेसिं पत्तेयं, तिण्हं पि परूवणं वोच्छं ॥३५१०॥

तिविहबालस्स पत्तेयं इमं वक्खाणं –

सत्तट्ठगमुक्कोसो, छप्पणमज्झो तु जाव तु जहण्णो।
एवं वयणिप्फण्णं, भावो वि वयाणुवत्ती वा ॥३५११॥

जम्मणतो सत्तऽट्ठवरिसो जो सो उक्कोसो बालो, छ-पंचवरिसो मज्झिमो, एगादि जाव चउवरिसो एस जहण्णो। एवं बालत्तं वतनिप्फण्णं, प्रायसो भावो वयाणुवत्ती भवति, वा सद्दो वयाणुवत्ति त्ति।

कहं? जहा बालो स-बालभावो – कारग गाहा –

अहवा – वा सद्दो णवभेदो – जहण्णजहण्णो, जहण्णमज्झो, जहण्णुक्कोसो। एवं मज्झिमुक्कोसेसु तिन्नि तिन्नि भेदा वत्तव्वा ॥३५११॥

इमं तिविहबालकरणं लक्खणं च –

उक्कोसो दट्ठूणं, मज्झिमओ ठाति वारितो संतो।
जो पुण जहण्णबालो, हत्थे गहितो वि ण वि ठाति ॥३५१२॥

जं पुण ते वारिता करेंति तं केरिसं?

छिंदंतमछिंदंता, तिण्णि वि हरिताति वारिता संता।
उक्कोसो जति छिंदति, ताणि पुणो ठाति तो दिट्ठो ॥३५१३॥

आदिसद्दातो पुढवादिसु आलिपण-सिंचण-तावण-वीयण-संघट्टणादि दट्ठव्वा।

उक्कोसो जति तेसु छेदणादिसु पयट्टति तो गुरुणा अण्णेण वा दिट्ठमेत्तो चेव अवारिओ ठायति।

मज्झिमो पुण यदा वारितो तदा ठायति।

जहण्णबालो जदा हत्थे घेत्तुं धरितो तदा ठायति, तहावि वामहत्थेण छिंदति पादेण वा ॥३५१३॥

इदाणिं ते केरिसं बाला मेरं धरेंति? तिविहं बाललक्खणं च भण्णति –

मंडलगम्मि वि धरितो, एवं वा दिट्ठ चिट्ठति तहेव।
मज्झिमओ मा छिंदसु, ठाइति ठाणं णहिं चेट्ठे ॥३५१४॥

मंडलमालिहंति, "मेरं अलंघित्ता एत्थ चिट्ठह" त्ति भणिता ठिया णिसण्णा णिवण्णा वा, हरितादि वा अच्छिंदंता उक्कोसो जहेव भणितो तहेव ठितो। मज्झिमो वि हरितादि छिंदंतो जदा वारितो तदा चिट्ठति, मंडले वि निरुद्धो मेरं लंघेत्तुं पासे चिट्ठति ॥३५१४॥

---

1 गा० ३५०६।

इमो जहण्णो --

दाहिणकरम्मि गहितो, वामकरेणं स छिंदति तणाणि ।
न य ठाति तहिं ठाणे, अह रुज्झति विस्सरं रुवति ।।३५१५।।

हरितादिसु पुव्वद्धं गतार्थम् । जहण्णवालो मंडलेणं निरुद्धो ण तम्मि मंडलट्ठाणे चिट्ठति, पाएण वा मंडलं भंजेति । अह वालो रुज्झति मंडले तो चडप्फडंतो विस्सरं रुवति ।।३५१५।।

एसेवत्थो इमाए गाहाए भण्णति –

जह भणितो तह [1]चिट्ठइ, पढमो बितिएण फेडियं ठाणं ।
ततितो ण ठाति ठाणे, एस विही होति तिण्हं वि ।।३५१६।।

कंठा । एस तिण्हं पि वालाणं लक्खणे सव्वे वि परूवणाविही वक्खाओ ।।३५१६।।

एयं तिविहं वालं जो पव्वावेति[2] तस्स सिक्खावेंतस्स असिक्खावितस्स वा इमं पच्छित्तं –

एगूणतीस वीसा, एगुणवीसा य तिविहवालम्मि ।
पढमे तवो बितिए मीसो, ततिए छेदो व मूलं वा ।।३५१७।।

उक्कोसे वाले अउणत्तीसा, मज्झिमे वीसा, जहण्णे एगूणवीसा ।

"पढमे" त्ति उक्कोसे जदा सव्वे तवट्ठाणगता तया तेसु चेव ठाणेसु छेदो पयट्टेति ।

"बितिए" त्ति मज्झिमे तवछेदो जुगवं गच्छंति, एयं मीसं भण्णति ।

"ततिए" त्ति जहण्णेण [तवो] छेदो चेव केवलो भवति, पव्वावेंतस्स वा मूलं चेव ।।३५१७।।

उक्कोसवालस्स अउणत्तीस" त्ति जं वुत्तं तस्सिमा चारणविही –

एगूणतीस दिवसे, सिक्खावेंतस्स मासियं लहुयं ।
उक्कोसगम्मि वाले, ते चेव असिक्खणे गुरुगा ।।३५१८।।

अण्णे वि अउणतीसं, गुरुगा सिक्खमसिक्खे य चउलहुगा ।
पुणरवि अउणत्तीसं, लहुगा सिक्खेतरे गुरुगो ।।३५१९।।

अण्णे वि अउणतीसं, गुरुगा सिक्खे असिक्ख छल्लहुगा ।
छल्लहुगा सिक्खम्मी, असिक्खगुरुगा अउणतीसं ।।३५२०।।

एमेव य छेदादी, लहुगा गुरुगा य होति मासादी ।
सिक्खावेंतमसिक्खे, मूलेक्कदुगं तहेक्केक्कं ।।३५२१।।

एतेसिं चउण्ह गाहाणं इमा सवित्थरा वक्खाणभावणा –

उक्कोसगवालं पव्वावेत्ता सिक्खावेंतस्स एगूणतीसं दिवसा मासलहू, असिक्खावेंतस्स मासगुरू ।

अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरुं असिक्खावेंतस्स चउलहु ।

---

1 तुट्टिए इत्यपि पाठः । 2 सूत्र ८४ ।

अण्णे य एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहु असिक्खावेंतस्स चउगुरु ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउगुरु असिक्खावेंतस्स छल्लहु ।
अन्ने एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छल्लहु असिक्खावेंतस्स छग्गुरु ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छग्गुरु असिक्खावेंतस्स मासलहुछेदो ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहुछेदो असिक्खावेंतस्स मासगुरुछेदो ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरुछेदो असिक्खावेंतस्स चउलहुछेदो ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहुछेदो असिक्खावेंतस्स चउगुरुछेदो ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउगुरुछेदो असिक्खावेंतस्स छल्लहुछेदो ।
अण्णे एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहुछेदो असिक्खावेंतस्स छग्गुरुछेदो ।
अन्ने एगूणतीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छग्गुरुछेदो असिक्खावेंतस्स एगदिण मूलं ।
ततो सिक्खावेंतस्स एगदिणमूलं असिक्खावेंतस्स एगदिणं अणवट्ठं ।
ततो सिक्खावेंतस्स एगदिणं अणवट्ठं असिक्खावेंतस्स पारंची ।
ततो सिक्खावेंतस्स पारंची ॥३५१८॥३५१९॥३५२०॥३५२१॥

अहवा एसेव गमो, दिणेहिं सिक्खेतरवज्जितो होति ।
मासादि तवच्छेदा, मूलादिए दिणेक्केक्कं ॥३५२२॥

अहवा एसेव तवो, छेदो पणगादितो लहू गुरुगो ।
जा छम्मासे णेओ, तत्तो मूलं दुगे चेव ॥३५२३॥

अहवा – उक्कोसेण बालस्स तवो मासादी चेव । छेदो पुण लहुगुरुगो पणगादि ताव-णेयव्वो-जाव-छम्मासे सिक्खासिक्खेसु । मूलादिया एक्केक्कदिणं तहा ।

अथवा – उक्कोसं बालं पव्वावेंतस्स अउणत्तीसं दिवसे मासलहुं तवो । अण्णे अउणत्तीसं दिवसे मासगुरुतवो । एवं अउणत्तीसं अच्छ्रुतेहिं चउलहुगा चउगुरू छल्लहु छग्गुरू तवा छेदा य नेयव्वा, मूलादि एक्केक्कं दिणं, एत्थं सिक्खासिक्खा न कायव्वा ॥३५२२॥३५२३॥

मज्झिमवीसं लहुगो, सिक्खमसिक्खस्स मासिओ छेदो ।
अण्णे वीसं सिक्खे, लहुओ छेदितरे मासगुरू ॥३५२४॥

अण्णे वीसं सिक्खे, मासगुरू तवो असिक्खे सो छेदो ।
पुणरवि सिक्खे छेदो, गुरुओ असिक्खम्मि चउलहुगा ॥३५२५॥

एवं अट्ठोक्कंती, नेयव्वं जाव छग्गुरू छेदो ।
तेण परं मूलेक्कं, दुगं च एक्केक्कयं जाण ॥३५२६॥

एतेसिं दो (ति) ण्हं गाहाणं इमा भावणा –

मज्झिमं पव्वावेंतस्स वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहु तवो, असिक्खावेंतस्स मासलहु छेदो ।
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहु छेदो, असिक्खावेंतस्स मासगुरू तवो ।
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरू छेदो असिक्खावेंतस्स मासगुरु छेदो ।

अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरु छेदो, असिक्खावेंतस्स चउलहु तवो।
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहु तवो, असिक्खावेंतस्स चउलहु छेदो।
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहु छेदो, असिक्खावेंतस्स चउगुरु तवो।
एवं अड्ढोवक्कंतीए तवछेदो णेयव्वो जाव छग्गुरुछेदो।
ततो सिक्खासिक्खेसु मूलऽणवट्ठपारंचिया एक्केक्कदिणं णेयव्वा ॥३५२४॥३५२५॥३५२६॥

अहवा सिक्खासिक्खे, तवछेदा मासियादि जा लहुगा।
एवं जा छम्मासा, मूलेक्कदुगं तहेक्केक्कं ॥३५२७॥

दो लहुया दो गुरुया, तवछेदा जाव हुंति छग्गुरुगा।
तेण परं मूलेक्कं, दुगं च एक्केक्कयं जाणे ॥३५२८॥

अहवा – मज्झिमे अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहु तवो, असिक्खावेंतस्स मासलहु छेदो ॥१॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहुछेदो असिक्खावेंतस्स मासगुरु तवो ॥२॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरु तवो, असिक्खावेंतस्स मासगुरु छेदो ॥३॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरुछेदो, असिक्खावेंतस्स चउलहुतवो ॥४॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहु तवो, असिक्खावेंतस्स चउलहु छेदो ॥५॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स चउलहु छेदो, असिक्खावेंतस्स छल्लहु तवो ॥६॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छल्लहु तवो, असिक्खावेंतस्स छल्लहु छेदो ॥७॥
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छल्लहु छेदो, असिक्खावेंतस्स छग्गुरुतवो ॥८॥
[[1]अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छग्गुरुतवो, असिक्खावेंतस्स छग्गुरुछेदो।
अण्णे वीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स छग्गुरु छेदो, असिक्खावेंतस्स एगदिणं मूलं।]
तओ सिक्खावेंतस्स एगदिणं मूलं, असिक्खावेंतस्स एगदिणं अणवट्ठो।
ततो सिक्खावेंतो एग दिणं अणवट्ठो, असिक्खावेंतो पारंची।
ततो सिक्खावेंतो एगदिणं पारंची।

इदाणि जहण्णो –

एगुणवीसजहण्णे, सिक्खावेंतस्स मासिओ छेदो।
सो च्चिय असिक्ख गुरुओ, एवऽड्ढोक्कंति जा चरिमं ॥३५२९॥

अहवा पढमे छेदो, तद्दिवसं चेव हवति मूलं वा।
एमेव होंति बितिए, ततिए पुण होइ मूलं तु ॥३५३०॥

जहण्णं पव्वावेंतो एगूणवीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासलहुछेदो, असिक्खावेंतस्स मासगुरुछेदो।

---

१ इदं पाठद्वयं पुण्यपत्तनस्थभाण्डारकरइंस्टिट्यूटप्रतौ नास्ति।

अण्णे एगूणवीसं दिवसे सिक्खावेंतस्स मासगुरुछेदो, असिक्खावेंतस्स चउलहुछेदो ।

एवं छेदो अड्ढोक्कंतीए णेयव्वो, मूलऽणवट्ठपारंचिया एक्केक्कदिणं णेयव्वा ।

अहवा – उक्कोसबालं पव्वावेंतस्स छेदो भवति मूलं वा । एवं बितिए त्ति-मज्झिमे । जहण्णे पुण मूलमेव ।

चोदकाह – कहं छेदो मूलं वा ?

आचार्याह – यदि चरणसंभवो ततः छेदो, चरणाभावे मूलं । जघन्ये पुनः चरणाभाव एव, न मूलं ३५२९॥३५३०॥

तिविधं वालं पव्वावेंतस्स आणादिया, इमे दोसा उड्डाहादी –

बंभस्स वतस्स फलं, अयगोले चेव होंति छक्काया ।
राईभत्ते चारग, अयसंतराए य पडिबंधो ॥३५३१॥

तं बालं दट्ठुं अतिसयवयणेण भणंति गिहिणो – "अहो । इमेसिं समणाणं इह भवे चेव बंभवयस्स फलं दीसति" ।

अहवा – एतेसिं चेव जणिउ त्ति संकाए चउगुरुं, निस्संकिते मूलं । अयगोलो विव अगणिपक्खित्तो सुधमंतो अगणिपरिणतो जत्तो जत्तो छिप्पइ तत्तो तत्तो डहति । एवं सो बालो अयगोलसमाणो मुक्को जतो हिंडति ततो छक्कायवहाय भवति । सो य राओ भत्तं पाणं ओभासति । जति राओ देंति तो रातिभोयणं विराधितं । अह ण देंति तो परियावणाणिप्फण्णं ।

भणति य लोगो – इमस्स बालत्तणे चेव बंधणागारो उववण्णो । इमे य समणा चारगपालत्तणं करेंति, जेण एवं बालं णिरुंभति । अयसो य अहो ! णिरणुकंपा समणा बला य बाले णिरुंभंते" । अंतरायं भवति, बालपडिबंधेण य ते ण विहरंति, जे णितियवासे दोसा ते वा भवंति ॥३५३१॥

किं चान्यत् –

ऊणट्ठे णत्थि चरणं, पव्वावेंतो वि भस्सते चरणा ।
मूलावरोहिणी खलु, णारभति वाणितो चेट्ठं ॥३५३२॥

ऊणट्ठवरिसे बाले चरित्तं ण विज्जति, जो वि य पव्वावेति सो णियमा चरित्ताउ भस्सति ।

अत्र प्रतिपेधद्वारेण दृष्टान्तः – जहा लाभत्थी वणिओ मूलं जेण तुट्टति तारिसं पण्णं णो किणाति, जत्थ लाभं पेच्छति तं किणाति ।

एवं जेण चरित्तातो भस्सति तं न पव्वावेइ, जेण ण भस्सति तं पव्वावेति ॥३५३२॥
बालं पव्वावेंतस्स य जम्हा इमं तवोकम्मं भवति तम्हा न पव्वावेति ।

उग्घायमणुग्घायं, णाऊणं छव्विहं तवोकम्मं ।
तवगुणलक्खणमेयं, जिणचउदसपुव्विए दिक्खा ॥३५३३॥

लहु उग्घायं, गुरु अणुग्घायं, एतेहिं दोहिं भेदेहिं छव्विहं ॥३५३३॥

कहं पुण छव्विहं तवोकम्मं भवति ?

उच्यते –

उग्घायमणुग्घातो, मासो चउ छच्च छव्विह तवो उ ।
एमेव छव्विहो वी, छेयो सेसाण एक्केक्कं ॥३५३४॥

ो उग्घातो अणुग्घातो । एवं चउमासछम्मासादि उग्घाताणुग्घाता । एवं छव्विहं तवोकम्मं । ेसो चेव छव्विहो । सेसा मूलादिया एक्केका भवंति । तप आत्मको गुणः, तप एव वा ोगुण, तपोगुणस्य लक्षणं तपोलक्षणं । लक्षतेऽनेनेति लक्षणं । मासेनोपलक्षितः मासिकलक्षणः त ाः । चतुर्मासषण्मासेष्वपि । एतदेव षड्विधं तपोगुणलक्षणं बालप्रव्राजने भवति – न पंचकादिरित्यर्थः ॥३५३४॥

बितियपदेण बालो पव्वाविज्जति । "[1]जिणचोद्दसपुव्विए दिक्ख" त्ति अस्य व्याख्या –

पव्वावेंति जिणा खलु, ोद्दसपुव्वी य जो य अइसेसी ।
एए अव्ववहारी, गच्छगए इच्छिमो णाउं ॥३५३५॥

जिण चोद्दसपुव्वी अतिसेसी वा पव्वावेंति ।

शिष्याह – अम्हं एते अव्ववहारी, जहा गच्छगतो पव्वावेति तहा मे अक्खह ।

के वा जिणादीहिं पव्वाविता ? ॥३५३५॥

अतो भण्णति –

सत्थाए अइमुत्तो, मणओ सेज्जंभवेण पुव्वविदा ।
पव्वाविओ य वइरो, छम्मासो सीहगिरिणा वि ॥३५३६॥

"शास्ता" तीर्थंकरः, तेण अतिमुत्तकुमारो पव्वावितो । चोद्दसपुव्वविदेण सिज्जंभवेण अत्तणो पुत्तो मणगो पव्वावितो । अवितहणिमित्तअतिसयट्ठितेण[2] सीहगिरिणा वइरो पव्वावितो ॥३५३६॥

बालपव्वावणे इमं गच्छवासिकारणं –

उवसंते[1] वि महाकुले, णातीवग्गे[2] वि सण्णि[3] सेज्जतरे[4] ।
अज्ञा[5] कारणजाते[6], अणुणाता बालपव्वज्जा ॥३५३७॥

"उवसंते वि महाकुले, नातीवग्गे" एतेसिं दोण्ह वि दाराणं इमं वक्खाणं –

विपुलकुले अत्थि बालो, णातीवग्गे व सेवगादिमते ।
जणवातरक्खतो सारवेंति आसण्णबालाइं ॥३५३८॥

किं पि विउलं विच्छिण्णकुलं "[3]उवसंतं" पवज्जापरिणतं, णवरं – तत्थ बालपडिबंधो, "जइ अम्हं एतं बालं पव्वावेह तो सव्वे पव्वयामो" । ते वत्तव्वा – "णिययसमीवे बालं ठवेह, तुब्भे पुण पव्वयह" । जति ण ठवेंति, णीया वा ण इच्छंति तो सह बालेण सव्वे पव्वाविज्जंति, बहुगुणतरं ति काउं, मा तप्पडिबंधेण सव्वाणि अच्छंतु ।

---

१ गा० ३५३३ । २ जुत्तेण । ३ गा० ३५३७ ।

अहवा – कस्सति साधुस्स [1]णातिवग्गो सव्वो असिवादिणा मओ, णवरेक्कं वालं जीवति। न य तस्स कोति वावारवाहओ अत्थि। ताहे सो साधू अयसवायरक्खाहेउं तं वालं आसन्नं पुत्तं भातियं पव्वावेत्ता संरक्खति ॥३५३८॥

एवं [2]सणि तराण वि, अज्जा य व डिडिवंध पडिणीए।
कज्जं करेमि सचिवो, जति मे पव्वावयह वालं ॥३५३९॥

सम्मदिट्ठिसंतियं वालं अणाहं तं पि एवं चेव सारवेंति। "[3]तरो" त्ति सेज्जातरो, तस्स वि संतियं वालं अणाहं पव्वावेंति।

"[4]अज्जा पडिणीएण कामातुरेण वा केण ति बला परिभुत्ता। तस्स य समावुत्तीते डिडिवंधो जातो गर्भसंभव इत्यर्थः। सा य संजमत्थी न परिच्चइयव्वा, विहिणा संरक्खियव्वा, जया पसूया तया वालं पव्वावेयव्वं, सत्यकिवत्।

"[5]कारणजाते" त्ति कुल-गण-संघकज्जे अन्नम्मि वा गच्छादिते कज्जे "सचिवो" मंती, सो भणेज्जा— "अहं वो तुज्झ इमं कज्जं करेमि, जइ मे इमं वालं अलक्खणं मूलणक्खत्तियं वा पव्वावेह", ताहे पव्वावेज्जा।

जाइसद्दग्गहणातो असिवकंतारादिसु वि को ति भणेज्जा – अहं भे परितप्पामि जइ मे इमं वालं पव्वावेह, एवमादिकारणेहिं अणुण्णाता वालपव्वज्जा गच्छवासीणं ॥३५३९॥

पव्वावियाण य तेसिं इमा वड्ढावणविही –

भत्ते पाणे धोवण, सारण तह वारणा णिउंजणता।
चरण-करण-सज्झायं, गाहेयव्वो पयत्तेणं ॥३५४०॥

णिद्धं मधुरं रिउक्खमं च से भत्तं देति, पाणं पि से मधुरादि इट्ठं दिज्जति, रातो वि भत्तपाणं ठवेति, "धोवण" त्ति अब्भंगणुव्वट्टणण्हाणं च से फासुएण कीरति, कप्पकरणेण य तेयस्सी भवति, लेवाडाति वा सव्वं से धोवंति, पडिलेहणादिसु वकहितेसु अत्थेसु पुणो पुणो सारणा कज्जति, असमायारिकरणं करेंतो हरियाइं वा छिंदंतो खेल्लंतो वा वारिज्जति, चरणकरणेसु य णिउज्जति, सज्झायं च पयत्तेणं गाहिज्जति ॥३५४०॥

णिद्ध-मधुर-भत्तगुणा इमे –

णिद्धमधुरेहि आउं, पुस्सति देहिंदिपाडवं मेहा।
अच्छंति जत्थ णज्जति, सड्ढातिसु पीहगादीया ॥३५४१॥

चोदकाह – कथमायुषः पुष्टिः ?

आचार्याह – यथा देवकुरोत्तरासु क्षेत्रस्य स्निग्धगुणत्वादायुषो दीर्घत्वं, सुसमसुसमायां च कालस्य स्निग्धत्वाद्दीर्घत्वमायुषः, तथेहापि स्निग्धमधुराहारत्वात् पुष्टिरायुषो भवति, सा च न पुद्गलवृद्धेः, किन्तु प्रतग्रासग्रहणात्, क्रमेण भोग इत्यर्थः। देहस्य च पुष्टिरिन्द्रियाणां च पटुत्वं भवति। मेधा च खीरादिणा भवति। जत्थ य सो वालो णज्जति अमुगस्स पुत्तो त्ति तत्थ गामे णगरे देसे रज्जे वा अच्छंति जाव महल्लो जातो। सड्ढाइकुलेसु य अंतरपाणगपीहगादी सव्वं से अहाकडं भवति। इत्थी वि वाली एवं चेव ॥३५४१॥ "वाले" त्ति दारं गयं।

---

1 गा० ३५३७। 2 गा० ३५३७। 3 गा० ३५३७। 4 गा० ३५३७। 5 गा० ३५३७।

इदाणि "[1]वुड्ढे" त्ति तस्सिमे भेदा –

तिविहो य होइ वुड्ढो, उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य।
एएसिं पत्तेयं, परूवणा होंति तिण्हं पि ॥३५४२॥ कंठा

किं परिमाणसेसे आउए वुड्ढो भवति ? अतो भण्णति –

दस आउविवागदसा, अट्ठमवरिसाइ दिक्खपढमाए।
सेसासु छसु वि दिक्खा, पब्भाराईसु सा ण भवे ॥३५४३॥

जं जम्मि काले आउयं उक्कोसं दसधा विभत्तं दस आउविवागदसा भवंति। प्रतिसमयभोगत्वेन आयातीत्यायुः, विपचनं विपाकः, आयुषो परिहाणीत्यर्थः। अनुभागेन युक्तो विभागो दशा उच्यते, ततो य दस दसाओ दसवरिसपमाणातो वरिससयाउसो भवंति – बाला किड्डा मंदा बला य पन्ना हायणी पवंचा पब्भारा मुम्मुही सायणी य। एयातो जहाणामाणुभावा य पल्वेयव्वा। पढमदसाए अट्ठवरिसोवरिं नवमदसमेसुं दिक्खा, आदेसेण वा गब्भट्ठमस्स दिक्खा जम्मणओ अट्ठमवरिसे। कीड्डादि एवं च पवंचासु छसु वि दिक्खा अणुण्णाता, पब्भारादियासु तिसुं वुड्ढो त्ति काउं नाणुण्णाता दिक्खा ॥३५४३॥

जहण्णमज्झिमुक्कोसे वुड्ढपरूवणत्थं इमं –

अट्ठमि दस उक्कोसो, मज्झो णवमीइ जहण्ण दसमीए।
जं तुवरिं तं हेट्ठा, भयणा व बलं समासज्ज ॥३५४४॥

अट्ठमिदसाए जहण्णो वुड्ढभावो अल्प इत्यर्थः, नवमीए मज्झो, दसमीए उक्कोसो वुड्ढभावो, पुनर्बालभवनादित्यर्थः।

अहवा – जं उवरिं तं हेट्ठा कायव्वं। अट्ठमदसाए उक्कोसो, चेष्टाबुद्ध्यादि बहुगुणत्वात्। नवमीए मज्झो मध्यमगुणत्वात्। दसमीए जहण्णो अल्पगुणत्वात्।

अहवा – बलं समासज्ज भयणा कायव्वा। सा इमा – अट्ठमदसातो जो जहन्नबलो भिक्ख-गियारपडिलेहणादिसु असत्तो सो जहण्णो, मज्झबलो मज्झिमो, उक्कोसबलो उक्कोसो। एवं नवम-दसमीसु वि दसासु वत्तव्वं ॥३५४४॥

बाला मंदा किड्डा, पबला पण्णा य हायणी।
पवंचा पब्भारा या, मुम्मुही सायणी तहा ॥३५४५॥

केसिं चि एवं वाती, वुड्ढो उक्कोसगो उ जा सयरी।
अट्ठमदसा वि मज्झो, नवमीदसमीसु तु जहन्नो ॥३५४६॥

एवं ब्रुवते, तेषामयमभिप्रायः – षष्टिवर्षादूर्ध्वं प्रबलेंद्रियहानीरित्यर्थः ॥३५४६॥

असमायारीकरणे पुव्विं णिसिद्धो, पुणो असमायारिं करेंतो गुरुणा अन्नेण वा दिट्ठो ताहे इमं करेति –

उक्कोसो दट्ठूणं, मज्झिमओ ठाति वारितो संतो।
जो पुण जहण्णवुड्ढो, हत्थे गहितो नवरि ठाति ॥३५४७॥

---

१ गा० ३५०५।

जह भणितो तह उट्ठितो, पढमो बितिएण फेडितं ठाणं ।
ततितो न ठाति ठाणे, एस विही होति तिण्हं पि ॥३५४८॥

पूर्ववत् व्याख्येया ॥३५४८॥

वुड्ढं पव्वावेंतस्स इमं पच्छित्तविहाणं –

एगूणतीस वीसा, एगुणवीसा य तिविहवुड्ढम्मि ।
पढमे तवो बितिए मीसो छेदो मूलं च ततियम्मि ॥३५४९॥

दसमदसाठियं पव्वावेंतस्स एगूणतीसा, नवमदसट्ठिते वीसा, अट्ठमदसट्ठिते एगूणवीसा । एयं जहा न बाले तहा सव्वं अविसेसेण णेयव्वं ॥३५४९॥

वुड्ढपव्वावणे इमे दोसा –

आवासग छक्काया, कुसत्थ सोए य भिक्खपलिमंथो ।
थंडिल्लअपडिलेहा, अपमज्जण पाढकरणजढो ॥३५५०॥

वुड्ढत्तणेण आवस्सगकरणं न सक्केति गाहेतुं, लोगकुसुइभावितो पुढवादिकाए ण सद्दहति, ण तरति वा ते परिहरितुं, कुसत्थभावितो वा तं भावणं ण मुंचति, इमम्मि य जिणप्पणीए भावं ण गेण्हति, अतिसोयवाएणं पुढविं गेण्हति, बहुणा य दवेण आयमति, चउत्थरसादिणा वा दवेणायमितुं णेच्छति, भिक्खं ण हिंडति, हिंडंतो वा एसणं न सोहेति, हिंडणे वि अदक्खो, बितियस्सावि पलिमंथो. थंडिलसामायारी ण सद्दहति, थंडिलं वा ण पडिलेहेति, ण पमज्जति, पाढे दुम्मेहो मंदबुद्धित्तणओ य गहणजड्डो, करणकिरियासु य करणजड्डो ॥३५५०॥

थंडिल्लं न वि पासति, दुब्बलगहणी य गंतुं ण चएति ।
अण्णस्स वि वक्खेवो, चोदणे इहरा विराहणता ॥३५५१॥

चक्खुविगलत्तणओ "इमं थंडिलं न व" त्ति न पासति, दुब्बलग्गहणी वा थंडिलं गंतुं न चएति, अंतरा चेव अथंडिले वोसिरति, पडिलेहणादिसु किरियासु पाढे य अभिक्खणं विणासेंतस्स चोदणा, अण्णस्स वि वक्खेवो । "इहर" त्ति अचोदणे संजमविराहणता भवति ॥३५५१॥

किं चान्यत् –

उट्ठेंत निवेसंते, चंकम्मेंते अवाउडियदोसा ।
पडिलेह-भिक्खगहणे, पातवहो उवहिवीसरणं ॥३५५२॥

वुड्ढत्तणओ चोलपट्टं ण धरेति सम्मं, तो उट्ठेंतनिवेसंतो चंकमंतो य अवाउडो, ततो हसति लोओ उड्डाहो य । उवगरणाइ पडिलेहं न करेइ न सद्दहति वा, दोसेहिं वा करेति, जडत्तणओ भिक्खगहणे पादं भंजति । जत्थ वीसमति तत्थ उवहिं वीसारेति छड्डेति वा पंथे वच्चंतो ॥३५५२ ।

किं चान्यत् – वुड्ढो चरणकरणं सज्झायं गाहिज्जंतो य चेतिज्जंतो भणति –

लोयस्सऽणुग्गहकरा, चिरपोराण त्ति वन्निमो अम्हे ।
चरण-करण-सज्झाए, दुक्खं वुड्ढो ठवेउं जे ॥३५५३॥

लोगपवादो – "वरिससयाउणा दिट्ठेण पावं खरति" त्ति एवं वयं लोगाणुग्गहकारी, अम्हे य चिरजीवित्ता जे परस्स पावं खवेमो तो अप्पणो ण खवेस्सामो ? दीहाउत्तणओ, चिरायुस्सेव विसेसणं, पुराणकालसमाण त्ति, पोराणगा इह गच्छे, अम्हे पुराणतरा अज्जा इत्यर्थः ।

अधवा – पोराण त्ति जस्स पपोत्तादिभावो अत्थि स पोराणो, सो य वुड्ढो भवति, तुब्भे सव्वे पपोत्तसमाणा, किं सिक्खावेह ? किं वा जाणह ? एवं वुड्ढो चरण-करण-सज्झाए दुक्ख ठवेज्जति ।

अहवा – स वुड्ढो ओमरातिणिओ भोयणमंडलीए अंते णिवेसिज्जंतो भणति – "अम्हे लोगस्स अणुग्गहकरा चिरपोराणा य, तं अम्हेहिं अणिविट्ठेहिं को अन्नो आदीते – निवेसिउमिच्छति" त्ति ॥३५५३॥

उग्घायमणुग्घायं, नाऊणं छव्विहं तवोकम्मं ।
तवगुणलक्खणमेयं, जिणचोद्दसपुव्विए दिक्खा ॥३५५४॥ पूर्ववत्

पव्वावेंति जिणा खलु, चउदसपुव्वी य जे य अइसेसी ।
एए अव्ववहारी, गच्छगए इच्छिमो नाउं ॥३५५५॥ पूर्ववत्

सत्थाए पुव्वपिता, चोद्दसपुव्वीण जंबुनाम पिता ।
तं मज्झेणं जणओ, दिक्खिओ रक्खियऽज्जेहिं ॥३५५६॥

शास्ता तीर्थंकरः, पुव्वपिता माहणकुण्डग्गामे सोमिलो(?) बंभणो । जंबु णामेण पिता पव्वावितो उसभदत्तो । तं मज्झेणं त्ति नवपुव्विणा रक्खिय ऽज्जेण पिता पव्वावितो सोमदेवो णाम ॥३५५६॥

चोदको भणति – एते अव्ववहारी, जहा गच्छवासी पव्वावेंति तहा भणह ।

आचार्याह –

उवसंते वि महाकुले, णातीवग्गे य सण्णिसेज्जासु ।
अज्जा कारणजाते, अणुणाया वुड्ढपव्वज्जा ॥३५५७॥

जहा बाले तहेत्र व्याख्या : नवरं – इमो विसेसो – खेताओ खेत्तं अज्जाणं णत्थि, वुड्ढो हृतसंको "संकामिस्सति" त्ति अतो पव्वावेति ॥३५५७॥

एवमादिकारणेहिं पव्वावियस्स जयणाते इमं कायव्वं –

भत्ते पाणे सयणासणे य उवही तहेव वंदणए ।
चरण-करण-सज्झायं, अणुयट्टमाण य गाहणया ॥३५५८॥

भत्तपाणगं से समाहिकारगं दिज्जति, सयणीयं से समभूमीए मउयसंथारगे, वासो वि से उब्वो कज्जति, आसणं पि, से पादपुंछणं दिज्जति, पीढगं वा तं पि से उच्चं उवहिं जत्तियं तरति वोढुं जत्तिएण वा सीतं न भवति तत्तियं दिज्जति, उक्कोसों वाहिज्जति, अद्धाणे वा से उवहिं वुज्झति, वड्ढमुट्ठणं काउमसमत्थो त्ति वंदणं ण दवाविज्जति, सागारिएण वा (न) दवाविज्जति, चरण-करण-सज्झायं पयत्तेण गाहिज्जति, "अणुयट्टमाणेहिं" कुसत्थ सोयमादिएसु अवग्गहेसु सणियं अणुयट्टमाणेहिं समयं गाहिज्जति ॥३५५८॥

अववादेण बालवुड्ढपव्वावणविही, कारणं च भणइ –

उवजुंजिउं णिमित्ते, दुण्हं पि तु कारणे दुवग्गाणं ।
होहिंति जुगप्पवरा, दोण्ह वि अट्ठा दुवग्गाणं ॥३५५९॥

ओहिमणा उववज्जिय, परोक्खणाणी णिमित्त घेत्तूणं ।
जति पारगा तो दिक्खा, जुगप्पहाणा व होहिंति ॥३५६०॥

ओहिमाइपच्चक्खणाणी णाणे उवउज्जति. परोक्खणाणी णिमित्तविसएण उवउज्जति । किमर्थं उवउज्जति ? अतो भन्नति – बालवुड्ढाण दोण्ह पि य कारणा, "किं नित्थारगा ण व ? त्ति । जति [1]पारगा जुगप्पहाणा वा तो दिक्खा। ते य बालवुड्ढा "दुवग्गाणं" भवंति – इत्थीपुरिसवग्गाणं ति, तदर्थमुपयुज्जंतीत्यर्थः।

इमं कारणं – ते बालवुड्ढा जुगप्पवरा होंति त्ति, तेण तेसिं दिक्खा कज्जति ।

अहवा – दुण्हट्ठा सुत्तत्थाणं, कालियस्स पुव्वगयस्स वा ।

अहवा – समणसमणीवग्गाणं दोण्ह वि आधारा भविस्संतीति । जेण तेसिं दिक्खा दिज्जति॥३५६०॥ वुड्ढे ण त्ति गतं ।

इदाणिं "[2]णपुंसगे" त्ति दारं । तस्सिमे सोलस भेदा –

पंडए[1] वातिए[2] कीवे[3], कुंभी[4] इस्सालुए[5] त्ति य ।
सउणी[6] तक्कम्मसेवी[7] य, पक्खियापक्खिते[8] ति य ॥३५६१॥

सोगंधिए[9] य आसित्ते[10], वद्धिए[11] चिप्पिते[12] ति य ।
मंतो[13]सही[14] उवहते, इसिसत्ते[15] देवसत्ते[16] य ॥३५६२॥

चिट्ठउ ता, एतेसिं सरूवं कहिज्जति । केणं पव्वावेयव्वा ण वा ? अओ भन्नति –

पव्वावण गीयत्थे, गीयत्थे अपुच्छिऊण चउगुरुगा ।
तम्हा गीयत्थस्सा, कप्पति पव्वावणा पुच्छा ॥३५६३॥

गीतो पव्वावेति णो अगीतो । जति अगीतो पव्वावेति तो चउगुरुयं । गीतो वि जति अपुच्छिउं पव्वावेति तस्स वि चउगुरुगं । तम्हा गीयत्थस्स पुच्छा, सुद्धे कप्पति पव्वावणा । इमा पढमपुच्छा कोसि तुमं ? को वा ते णिव्वेदो जेण पव्वयसि ? ॥३५६३॥

एवं पुच्छिते –

सयमेव कोइ साहति, मेत्तेहि व पुच्छितो उवाएणं ।
अहवा विलक्खणेहिं, इमेहि णाउं परिहरेज्जा ॥३५६४॥

सरिसे मणुस्सते मम एरिसो वेदोदयो त्ति सयमेव साहति ।

अहवा – मेत्तेहिं से कहियं णिव्वेदकारणं – एस ततियो त्ति । पव्वावगेण वा उवायपुव्वं पुच्छितो कहेति – ततिओ त्ति ।

अहवा – पंडगलक्खणेहिं णातुं ण पव्वावेति ॥३५६४॥

---

1 गा० ३५६० । 2 गा० ३५०५ ।

सा य पुच्छा इमेरिसे कज्जति –

णज्जंतमणज्जंते, णिव्वेयमसड्ढपढमता पुच्छे ।
अण्णातो पुण भण्णति, पंडाइ ण कप्पए अम्हं ॥३५६५॥

असावगे णज्जंते अणज्जंते वा पढमं णिव्वेदो पुच्छिज्जति । जो पुण अन्नातो स सामण्णेण भण्णति – "पंडाई ण कप्पति अम्हं पव्वावेउं" ॥३५६५॥

सो य जदि पंडगो तो एवं चिंतेति –

नातो मि त्ति पणासति, णिव्वेयं पुच्छिता व से मित्ता ।
साहेंति एस पंडो, सयं च पंडो त्ति निव्वेयं ॥३५६६॥

अहमेतेहिं णातो त्ति पणासति, सेसं गतार्थम् ॥३५६६॥

पुव्वमुल्लिंगिता पंडगलक्खणा ते य इमे –

महिलासहावो[१] सरवन्नभेओ[२], मेंढं[३] महंतं मउया उ वाणी[४] !
ससद्दगं[५] मुत्तमफेणगं[६] च, एताणि छप्पंडगलक्खणाणि ॥३५६७॥

पंडगो महिलासभावो भवति । पुंसस्वराद् भिन्नो भवति स्त्रीस्वरः ।

अहवा – न पुंसस्वरः नापि स्त्रीस्वरः, मध्य इत्यर्थः । वर्णग्रहणात् गंधरसस्पर्शा गृह्यन्ते, यादृशा स्त्रीपुंसयोस्तयोर्विमध्याः तस्य भवंति । मेंढं अंगादाणं, तच्च तस्य महंतं भवति । वाणी य मउया भवइ । ससद्दगं मुत्तं मुत्तेति स्त्रीवत्, अफेनगं च मूत्रयतः फेनं न भवतीत्यर्थः । एयाणि छ पंडगलक्खणाणि ॥३५६७॥

"[१]महिलासहावो" त्ति अस्य व्याख्या –

गती भवे पच्चवलोइयं च, मिदुत्तया सीयलगत्तया य ।
धुवं भवे दोक्खरनामधेओ, संकारपच्चंतरिओ ढकारो ॥३५६८॥

गती से मंदा पदाकुला सशंका य, पासपिट्ठतो पच्चवलोइयं करेंतो गच्छति, तस्स शरीरत्वचा मृदुर्भवति, गातं च शीतफरिसं भवति । जो एरिसो सो धुवं दुअक्खरणामो भवति । ते य अक्खरा संकारो, संकारप्रत्यन्तरे अनंतर इत्यर्थः, ढकारो भवति ॥३५६८॥

गति-भास-अंग-कडि-पट्ठि-बाहु-भमुहा य केसऽलंकारे ।
पच्छण्ण-मज्जणं पि य, पच्छण्णतरं च नीहारो ॥३५६९॥

किं चान्यत् –

भासते हत्थपल्लवेहिं दाहिणकोप्परं वामकरतले काउं दाहिणकरतले वदणं णसितुं भासति स्त्रीवत् । अंगं च से समाउक्कं, अभिक्खं च कडिथंभयं करेति, मट्टावेइ य अभिक्खणं पिंडं, इत्थी व जहा अभिलसित-पुरिसं दट्ठुं पट्ठिं परामुसति, बाहुविक्खेवंतो बोल्लेत्ति, वत्थाभावे बाहाहिं उरं पाउणति, भासंतो य सविब्भमं

१ गा० ३५६७ ।

भमुहाजुयलं उक्खिवति, चसद्दातो परिहरणं पाउरणं वा जहा इत्थी तहा परिहेति, इत्थी जहा केसे तहा श्रामोडेति, जुवतिअलंकारं व से पियं अलंकरेति, ण्हायति य पच्छण्णे, पच्छण्णतरे उच्चारपासवणं करेति ॥३५६९॥

किं चान्यत् –

पुरिसेसु भीरु महिलासु संकरो पमयकम्मकरणो य।
तिविहम्मि वि वेयम्मी, तिगभंगो होइ णायव्वो ॥३५७०॥

संकितो सभओ य पुरिसमज्झे विचिट्ठति, इत्थीण मज्झे निस्संको निब्भओ चिट्ठति स्त्रीपर्यंतसमागमे-इत्यर्थः। पमदाकम्मं करेति, पियं च से तं च कंडण-दलणुप्फण-पयण-परिवेसण-वत्थायंचण-सोय (?) दगाहरण-पमज्जणादी। एमादिवाहिरलक्खणं। अंतो से नपुंसगवेदो लक्खणं। सो पुण णपुंसवेदो तिविहे भेदे भवति।

कहं ? जओ भन्नति – "तिविहम्मि वि" पच्छद्धं।

कहं पुण तिविहे वि वेदे एक्केक्के तिगभंगो भवति ?

उच्यते – पुरिसो पुरिसवेदं वेदेति, पुरिसो इत्थिवेदं वेदेति, पुरिसो णपुंसगवेदं वेदेति। एवं इत्थी-णपुंसगा वि भाणियव्वा ॥३५७०॥

इमं वेयाणं सलक्खणं –

उस्सग्गलक्खणं खलु, फुंफुगमादि सरिसं तु वेदाणं।
अववाततो तु भइओ, एक्केक्को दोसु ठाणेसु ॥३५७१॥

अभिप्रेतवस्तुस्वरूपं निर्वाच्यं, कारणनिरपेक्षमुत्सर्गः, तिसु वि वेदेसु।

इमं उत्सर्गलक्षणं।

बाहिं अणुवलक्खो अंतो अणुसमयडाहो अणुवसंतो वि घट्टिज्जमाणदिप्पंतो फुंफुअग्गिसमाणो इत्थिवेदो।

पवण-विकोवित-पत्तिघणंतरजलिय-तिव्वपलाल-दवग्गिसमाणो वत्तलक्खणो पुरिसवेदो।

तण-कट्ठ-महासंचय-विविधिधण-घोर-जलियमणुवसंतोऽतत्तलक्खणो महाणगरडाहसमाणो णपुंसगवेदो।

अववादं पुण पप्प एक्केक्को वेदो दोसु दोसु ठाणेसु भइयव्वो पूर्ववत् ॥३५७१॥

एस लक्खणपंडगो गत्याद्यवलोयणेण भवति।

अथवा इमं पंडगलक्खणं –

दुविहो य पंडतो खलु, दूसिय-उवघाय-पंडओ चेव।
उवघाए वि य दुविहो, वेदे य तहेव उवगरणे ॥३५७२॥

णपुंसगो दुविधो – दूसिओ उवघायपंडगो य। दूसिओ दुविधो – ऊसित्तो आसित्तो य। उवघाय-पंडगो वि दुविहो – वेदे उवकरणोवघाते य ॥३५७२॥

"[1]दूसि" त्ति अस्य व्याख्या –

दूसियवेदो दूसी, दोसु वि वेदेसु सज्जए दूसी।
दो सेवति वा वेदे, थीपुंसु व दूसते दूसी ॥३५७३॥

१ गा० ३५७२।

दूसितो वेदो जस्स स दूसी भण्णति, दोसु वा थी-पुरिसवेदेसु रज्जति जो सो वा दूसी, दो वा थी-पुरिसवेदे सेवति जो सो दूसी, जो थी-पुरिसवेदो दो वि दूसति सो वा दूसी ।।३५७३।।

आसित्तो ऊसित्तो, दुविहो दूसी य होइ णायव्वो ।
ऊसित्तो अणवच्चो, सावच्चो होति आसित्तो ।।३५७४।।

पुव्वद्धं गतार्थं । णो जस्स अवच्चं उप्पज्जति निव्बीओ सो उस्सित्तो, जस्स पुण अवच्चं उप्पज्जति सबीओ सो आसित्तो ।।३५७४।।

"[1]वेदोवघातपंडओ" इमो –

जह हेमो तु कुमारो, इंदमहे णगरवालिग णिमित्तं ।
मुच्छिय गढिओ उ मओ, वेदो वि य उवहतो तस्स ।।३५७५।।

हेमपुरिसे णगरे हेमकूडो राया । हेमसंभवा भारिया । तस्स पुत्तो वरतवियहेमसन्निभो हेमो णाम कुमारो । सो य पत्तजोव्वणो अण्णया इंदमहे इंदट्ठाणं गतो । पेच्छइ य तत्थ णगर-कुल-वालियाणं रूववतीणं पंचसते । वलिपुप्फधूवकडच्छुयहत्था इंदाभिमुहीओ दट्ठुं सेवगपुरिसे पुच्छति – "किमेयाओ आगयातो, किं वा अभिलसंति ?"

तेहि लवियं – "इंदं मग्गंति वरं, सोभग्गं च अभिलसंति ।"

भणिया य तेण सेवगपुरिसा – "अहमेतेसिं इंदेण वरो दत्तो, देह एयाओ अंतेउरम्मि" । तेहिं ताओ घेत्तुं सव्वातो अंतेउरे छूढा । ताहे णागर-जणो रायाणं उवट्ठितो – "मोएह" त्ति ।

तओ रण्णा भणियं – "किं मज्ज पुत्तो ण रोयति तुमं जामाउओ ?" ततो णागरा तुण्हिक्का ठिता । एयं रण्णो सम्मतं ति अविपण्णं गता णागरा । कुमारेण य ता सव्वा परिणीता । सो य तासु अतीव पसत्तो । पसत्तयस्स तस्स सर्व्ववीर्यनीगालो जातो, ततो तस्स वेदोवघातो जातो, मओ य ।

अन्ने भणंति –

ताहिं चेव अप्पडिसेवगो त्ति रूसियाहिं मारितो ।।३५७५।। वेदोवघाय त्ति गतं ।

इयाणिं "[2]उवकरणोवहतो" भण्णति –

उवहत-उवकरणम्मि, सेज्जायर भूणिया निमित्तेणं ।
तो कविलगस्स वेदो, ततिओ जातो दुरहियासो ।।३५७६।।

सुट्ठिया आयरिया । तेसिं सीसो कविलो णाम खुड्डगो । सो सेज्जातरभूणियाते सह खेड्डं करेति । तस्स तत्थेव अज्झोववादो जातो । अण्णया सा सेज्जातरभूणिया एगागिणी णातिदूरं गावीण दोहणवाडगं गता । सा ततो दुद्ध-दधि-घेत्तूण गच्छति । कविलो य तं चेव भिक्खायरियं गच्छति । तेणंतरा असागारिए अणिच्छमाणी वला भारिया उप्पाइता । तीए कप्पट्ठियाते अदूरे पिता छित्ते किंसि करेइ । तीए तस्स कहियं । तेण सा दिट्ठा जोणिब्भेए रुहिरोक्खित्तो महिय-लोलिया य । सो य कुहाडहत्थगतो रुट्ठो । कविलो य तेण कालेण भिक्खं अडितुं पडिनियत्तो । तेण

---

१ गा० ३५७२ । २ गा० ३५७२ ।

य दिट्ठो, मूलतो से सागारियं सह जलधरेहि छिन्नं निक्कत्तियं। सो य आयरियसमीवं ण गतो, उन्निक्खंतो। तस्स य उवकरणोवघाएण ततिओ वेदो उदिण्णो। सो य जुण्णाकोट्टणीयाए संगहिओ। तत्थ से इत्थीवेदो उदिण्णो। एस उवकरणोवघातपंडगो भणितो ॥३५७६॥

एस वेदोवकरणघातो वहुकम्मोदएणं जायति।

जतो भण्णति –

पुव्वं दुच्चरियाणं, कम्माणं असुभफलविवागेणं।
तो उवहम्मति वेदो, जीवाणं मंदपुण्णाणं ॥३५७७॥

कंठा। सो य णपुंसगवेदोदया पोसासएसु पडिसेवगो भवति, न वेदोदयं तरति णिरुंभिउं ॥३५७७॥

एत्थ दिट्ठंतो गोणो –

जह पढमपाउसम्मी, गोणो वातो उ हरितगतणस्स।
अणुमज्जति [1]कोट्टिंवं, वावण्णं दुब्भिगंधीयं ॥३५७८॥ कंठा

इमो उवसंहारो –

एवं तु केइ पुरिसा, भोत्तूणं भोयणं पतिविसिट्ठं।
ताव ण भवंति तुट्ठा, जाव ण पडिसेविया पोसे ॥३५७९॥

लक्खणदूसिं उवघायपंडगं तिविहमेव जो दिक्खे।
पच्छित्तं तिसु वि मूलं, इमे य अण्णे भवे दोसा ॥३५८०॥

वेदुक्कडया एते जाव ण पडिसेवति पुरिससागारियं आयभावं वा ताव धितिं ण लभति। लक्खण-वेददूसिं उवघातपंडगं च जो एयं तिविधं पव्वावेति तस्स मूलं पच्छित्तं, आणाइया य दोसा ॥३५८०॥

इमा संजमविराहणा –

गहणं च संजयस्स, आयरियाणं च खिप्पमालोए।
वहिया व णिग्गयस्सा, चरित्तसंभेदणिं च कहा ॥३५८१॥

अध पव्वावितो एवं नाउं "गहणं च" गाधा। पडिसेवणाभिप्पातेण संजतो तेण गहितो, तेण य संजतेण आयरियाणं खिप्पमालोएयव्वं। जति नालोएति तो चउगुरुं।

अहवा – अंतो विरहं अलभमाणो बाहिं वियारादियगयाणं चरित्तसंभेदणिं कहं कहेज्जा ॥३५८१॥

छंदिय-गहिय-गुरूणं, जो ण कहेति कहियम्मि च उवेहं।
परपक्ख सपक्खे वा, जं काहिति सो तमावज्जे ॥३५८२॥

तेण णपुंसगेण जो संजयो "छंदिउ" त्ति – णिमंतितो "मं पडिसेवाहि त्ति, अहं वा पडिसेवामि" त्ति। जो य गहितो एते जति गुरूणं ण कहेंति कहिते वा यदि गुरवो उवेहं करेंति तो सव्वेसिं चउगुरुगा।

१ नावं।

जं वा सो नपुंसगो परपक्खे सपक्खे वा उड्डाहं करेज्जा पडिसेवणं करेंतो, तं सो अकहेंतो उवेहंतो य पायच्छित्तं पावति ।।३५८२।।

"[1]चरित्तसंभेदणि" त्ति अस्य व्याख्या –

इत्थिकहाओ कहेति, तासि अवण्णं पुणो पगासेति ।
समला सावि दुगंधा, खेदो य ण एतरे ताणि ।।३५८३।।

इत्थिकहातो कहेति – तासु वा जं सुहं, जहा य परिभुज्जंति, पुणो । तासिं अवण्णं भासति – तासिं जोणी समला सावी दुग्गंधा य, तासु य परिभुंजमाणीसु पुरिसस्स खेदो जायति । अम्हं पुण आसए मलादिदोसा खेदो य ण भवति, तो वरं अम्हेहिं सह अणायारो कतो ।।३५८३।।

पंडगस्स इमे भावा, सो इमेहिं वा भावेहिं पंडगो लक्खियव्वो –

सागारियं णिरक्खति, तं च मलेऊण जिंघते हत्थं ।
पुच्छति सेविमसेवी, अति सुहं अहं वि य दुहावि ।।३५८४।।

अंगादाणं सागारियं, तं अप्पणो परस्स व णिरिक्खति, तं च सागारियं अप्पणो परस्स वा हत्थेहिं मलिउण तं हत्थं जिंघति, भुत्तभोगं साधुं रहे पुच्छति – नपुंसगो किं पडिसेवियपुव्वो ण वा ?

तम्मि पडिसेविज्जंते अतीव सुहं भवति ।

ततो साधुभावं णाउं भणाति – अहं वि य से दुविहा वि आसए पोसए य ।

तत्थ केइ पडिसेविज्जा ?

ते य पडिगमणादी करेज्ज । तत्थायरिओ एग-दुग-तिसु मूलऽणवट्ठपारंचिया पावति ।।३५८४।।

अहवा –

सो समणसुविहितेहिं, पवियारं कत्थ ती अलभमाणो ।
तो सेवितुमाढत्तो, गिहणो य परप्पवादी य ।।३५८५।।

सो पंडगो समणेसु सज्झायझाणणिरतेसु मेहुणपवियारं अलभंतो ताहे गिहिणो परतित्थिए य आदि-सद्दातो भड-णट्ट-चट्ट-मेंठ-आरामिय-सोल्ल-घोंड-गोवाल-चक्किय-जंति-खरगे सेवेज वेदोदएण ।।३५८५।।

तत्थिमे दोसा –

अयसो य अकित्तीया, तम्मूलागं तहिं पवयणस्स ।
तेसिं पि होति संका, सव्वे एयारिसा मण्णे ।।३५८६।।

वायाघाओ अयसो । अवण्णवायभासणं अकित्ती । जिणपवयणस्स तम्मूला तन्निमित्ता तद्धेतुका अयस-अकित्तीतो हवेज्जा , जे य तं पडिसेवंति तेसिं संका भवति – सव्वे इमे समणा एरिसा – संकया मन्यते इत्यर्थः ।

अधवा – तेसिं पंडगाणं संका भवति जहा अम्हे ततिया तहा इमे समणा – सव्वे एरिसा मणेण मन्नंते ।।३५८६।।

---

१ गा० ३५८१ ।

"[1]अयसअकित्तीणं" इमं वक्खाणं –

एरिससेवी एयारिसा व एतारिसो चरति सद्दो ।
सो एसो ण वि अण्णो, असंखडं घोडमादीहिं ॥३५८७॥

बहुजणसमुदए लोगो एवंवादी भवति – एते समणा एरिससेवी, सयं वा एरिसा – "णपुंसग" त्ति वुत्तं भवति । एरिसो अयसकित्तीसद्दो लोगो "चरति" प्रकाशतीत्यर्थः ।

साधवो वा भिक्खावियारादिणिग्गते दट्ठुं तरुणा जुवाणगा भणंति – अरे अरे भद्द गोमिय ! सो एसो सिरिमंदिरकारओ ।

अन्नो भणइ – ण वि एसो, अन्नो सो ।

अहवा – ते तरुणा जुवाणा भणेज्ज – एह समणा तुब्भे वि तारिसं करेह । एवं भणितो को वि असहुणो असंखडं घोडमादीहिं सह करेज्जा । तम्मि य णिच्छूढे को ति संजतो संसत्तो चिताए डज्झिउमिच्छति उन्निक्खमति मरति वा ।

एत्थ आयरियस्स पव्वावेंतस्स पच्छित्तं वत्तव्वं ।

एवमादिदोसपरिहरणत्थं पंडगो ण दिक्खेयव्वो ॥३५८७॥ "पंडग" त्ति गतं ।

इदाणिं "[2]कीवो" –

कीवस्स गोण्णणामं, कम्मुदएणं तु जायए ततिओ ।
तम्मि वि सो चेव गमो, पच्छित्तुस्सग्गअववाते ॥३५८८॥

विलद्यते इति क्लीवः । गुणणिप्फण्णं गोण्णं । मेहुणाभिप्पाए अंगादाणं विगारं भयति, वीयं थिवुएहिं य गलति, स महामोहकम्मोदएण भवति । एवं गलमाणे जति णिगेधेति तो णिरुद्धवत्थी कालंतरेण ततिओ भवति । जे पंडगे दोसा पच्छित्तं च एत्थ वि उस्सग्गेण ते चेव । अववाए पव्वावेयव्वा ॥३५८८॥

"[3]इयाणिं वातिओ" –

उदएण वातिगस्स, सन्निकारं ताव जा असंपत्ती ।
तच्चन्नियऽसंवुडिए, दिट्ठंतो होतऽलब्भंते ॥३५८९॥

वाइतो णाम जाहे सो मोहकम्मोदएणं सागारियं कसाइयं भवति ताहे सो ण सक्केति धरेतुं, ण य सभावत्थं ताव भवति जाव न कयं जं न कायव्वं ।

एत्थ तच्चन्निएण दिट्ठंतो –

एगत्थ जलतरणणावारूढो तच्चन्नितो । तत्थ तस्सऽग्गतो आसन्ना अहाभावेण अगारी असंवुडा निविट्ठा । तस्स य तच्चन्नियस्स तं दट्ठुं थद्धं सागारियं, तेण वेउक्कडयाए असहमाणेण जणपुरतो पडिग्गहिता अगारी । तं च पुरिसा हंतुमारद्धा । तहावि तेण ण मुक्का । जाहे से वीयणिसग्गो जातो ताहे मुक्का ॥३५८९॥

---

१ गा० ३५८६ । २ गा० ३५६१ । ३ गा० ३५६१ ।

सागारियणिस्साए, अलंभतो वातिओ अणायारं ।
कालंतरेण सो वि हु, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५९०॥

सागारिय त्ति अंगादाणं, तं मोहुक्कडयाए पुणो पुणो थब्भति, वाउदोसेण य तं थद्धं अच्छति, तस्स णिस्साए तन्निमित्तं सो वातिओ अणायारं सेवेइ, कालंतरे णपुंसगभावं परिणमति । तत्थ दोसो जहा पंडगो ॥३५९०॥

इयाणिं "[1]कुंभी" –

दुविहो य होइ कुंभी, जातीकुंभी य वेदकुंभी य ।
जाईकुंभी भइतो, पडिसिद्धो वेदकुंभीओ ॥३५९१॥

जस्स वसणा सुज्झंति सो कुंभी । सो दुविहो – वायदोसेण जस्स सागारियं वसणं वा सुज्झति सो जाइकुंभी रोगीत्यर्थः ।

जस्स पुण मोहुक्कडयाए सागारियं वसणा वा आसेवतो सुज्झति स वेदकुंभी ।

जाइकुंभी पव्वावणे भतितो । का भयणा ? जति से अति महल्ला वसणा तो ण पव्वाविज्जति । अह ईसिमूणा तो पव्वाविज्जति । एस भयणा । वेदकुंभी अच्चंतं पडिसिद्धो पव्वावणे ॥३५९१॥

किं कारणं ? अतो भण्णति –

वत्थिणिरोहे अभिवड्ढमाणे सागारिए भवे कुंभी ।
सो वि य णिरुद्धवत्थी, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५९२॥

अपडिसेवगत्तणं वत्थिणिरोहो, तेण से वसणा वड्ढंति, ते वढ्ढिता अतिप्पमाणा सागारिया से भवंति, अन्नं च से णिरुद्धो कालंतरेण नपुंसगभावं परिणमति । एत्थ दोसो पायच्छित्तं च पूर्ववत् ॥३५९२॥

इदाणिं "[2]ईसालुगो" त्ति –

इस्सालुए वि वेदुक्कडयाए बंभव्वयं धरेमाणो ।
सो वि य णिरुद्धवत्थी, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५९३॥

यस्येर्ष्या उत्पद्यते अभिलापेत्यर्थः, सो ईसालू भण्णइ । पडिसेविज्जंतं दट्ठु ईसा उप्पण्णा, स वेदुक्कडो इत्थिं अलभंतो बंभव्वयं च धरेमाणो सो वि कालंतरेण णिरुद्धो नपुंसगो भवति । दोसा पच्छित्तं पूर्ववत् ॥३५९३॥

इदाणिं "[3]सउणी" –

सउणी उक्कडवेदो, अभिक्खपडिसेवणाणुपगईओ ।
सो वि य णिरुद्धवत्थी, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५९४॥

उक्कडवेदत्तणतो अभिक्खपडिसेवणाए पसत्तो घरचिडओ इव सउणी भवति । दोसा पच्छित्तं च पूर्ववत् ॥३५९४॥

---

१ गा० ३५६१ । २ गा० ३५६१ । ३ गा० ३५६१ ।

इदाणिं "[1]तक्कम्मसेवी" –

तक्कम्मसेवि जो ऊ, सेवियगं चेव लिहइ साणु व्व ।
सो वि य अपरिंचरंतो, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५६५॥

पडिचरती आचरती, उज्झंतो उक्कडेण वेदेण ।
सो वि य अपरिंचरंतो, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५६६॥

पडिचरति त्ति मेहुणमासेवति, जया बीयणिसग्गो जातो तदा साणो इव तं चेव जीहाए लिहति-आचरतीत्यर्थः । स एरिसं विलीणभावं वेदुक्कडत्ता उज्झंतो कोति करेति सुहंगति मन्नंतो । सो वि अपडि-चरणो अणासेवगो कालेण णपुंसगो भवति । दोसो पच्छित्तं च पूर्ववत् ॥३५६६॥

इदाणिं "[2]पक्खियापक्खियो" –

पक्खे पक्खे भावो, होइ अपक्खम्मि जस्स अप्पो उ ।
[3]सो पक्खपक्खितो ऊ, सो वि णिरुद्धो भवे अपुमं ॥३५६७॥

सुक्कपक्खे सुक्कपक्खे जस्स अतीव मोहुब्भवो भवति, अपक्खे त्ति कालपक्खो तत्थ अप्पो भवति । मोहुब्भवपक्खे सो णिरुंभंतो णपुंसगो परिणमति ।

अहवा – सुक्कपक्खे किण्हपक्खे वा पक्खभेत्तं अतीव उदयो भवति । "अपक्खो" त्ति तति यमेव कालं अप्पोदयो भवति । दोसादि सेसं पूर्ववत् ॥३५६७॥

इदाणिं "[4]सोगंधिय" त्ति –

सागारियस्स गंधं, जिंघति सागारियस्स गंधाए ।
कालंतरेण सो वि हु, णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३५६८॥

सुभं सागारियस्स गंधं मण्णतीति सोगंधी । सो सागारियं जिंघति, मलेऊण वा हत्थं जिंघति, स महामोही तेण सागारियागंधग्घाणेण पच्छा लिहति जीहाए वि, स पच्छा वि पडिसेवणमलभंतो कालंतरेण नत्तिओ भवति । दोसा पच्छित्तं पूर्ववत् ॥३५६८॥

इदाणिं "[5]आसित्तो" ।

इत्थिसरीरासत्तो आसित्तो, जो वत्थि सरीरं वा पण्णासंसति जो वा अस्स आसत्तो –

विग्गहमणुप्पवेसिय, अच्छति सागारियंसि आसित्तो ।
सो वि य णिरुद्धवत्थी, होती वेदुक्कडो समणो ॥३५६९॥

विग्गहं अंगादाणं, तं अणुप्पवेसित्ता अच्छति इत्थिसागारियंसि चीनो इत्यर्थः । एस आसित्तो । सो य मोहुक्कडयाए अतीव समणो णिरुद्धवत्थी । अलभंतो कालंतरेण णपुंसगो भवति । दोसा पच्छित्तं च पूर्ववत् ॥३५६९॥

---

१ गा० ३५६१ । २ गा० ३५६१ । ३ सो वि य णिरुद्धवत्थी, नपुंसगत्ताए परिणमति ॥पा०॥ ४ गा० ३५६२ । ५ गा० ३५६२ ।

इदाणिं "[1]वद्धिता" दि भण्णति –

> वद्धिय चिप्पिय अविते, मंतोसहिउवहते वि य तहेव ।
> इसिसत्त देवसत्ता, अव्वसणि णपुंसगा भज्जा ॥३६००॥

वद्धिओ णाम जस्स वालस्सेव छेज्जं दातुं वसणा गालिया ।

[2]चिप्पितो णाम जस्स जायमेत्तस्सेव अंगुट्ठपदेसिणीमज्झियाहिं चड्ढिज्जंति जावक्कताः । एते दो णियमा अवीया ।

अण्णस्स [3]मंतेण वेदो उवहतो । अन्नस्स [4]ओसहेण । एतेसिं जाव पडिभेओ ण भवति ताव तह चेव सवीया ण भवंति ।

[5]रिसिणा [6]देवेण वा रुट्ठेण वा सावो दिण्णो – "मम तवाणुभावा वयणाओ ण ते पुरिसभावो भविस्सति" त्ति । एते छावि अव्वसणी वसणी वा । तत्थ जे अव्वसणी णपुंसगा ते भज्जा, "भज् सेवायां," ते पव्वावेयव्वा इति ।

अहवा – छ एते णपुंसगा अवसणी वसणी वा एवं भयणिज्जा – जे अव्वसणी ते पव्वावणिज्जा णो इतरे ॥३६००॥

इयाणिं एतेसु पच्छित्तं भण्णति –

> दससु वि मूलायरिए, वयमाणस्स वि हवंति चउगुरुगा ।
> सेसाणं छण्हं पी, आयरिते वदंते चतुगुरुगा ॥३६०१॥

दस आदिल्ले जो पव्वावेति आयरितो तस्स दससु वि पत्तेयं मूलं । ते च्चिय जो दसं वदति – "पव्वावेह" त्ति, तस्स चउगुरुगं । वद्धितादी सेसा छ, ते पव्वावेंतस्स आयरियस्स चउगुरुगा, ते वि य छ जो "पव्वावेह" त्ति भणति तस्स वि चउगुरुगं ॥३६०१॥

सीसो इमाए उववत्तीए भणति "पव्वावेह" त्ति –

> थीपुरिसा जह उदयं, धरेंति झाणोववासणियमेणं ।
> एवमपुमं पि उदयं, धरेज्जति को तहिं दोसो ॥३६०२॥

जहा थीपुरिसा झाणणियमोववासेसु उवउत्ता वेदोदयं धरेंति एवमपुमं पि जदि वेदोदयं धरेज्जा ते पव्वाविते को दोसो हवेज्जा ॥३६०२॥

> अहवा ततिते दोसो, जायति इतरेसु सो ण संभवति ।
> एवं खु णत्थि दिक्खा, सवेयगाणं न वा तित्थं ॥३६०३॥

अथवा – तुज्झमभिप्पाओ तस्स वेदोदएण चारित्तभंगदोसो जायति -

इतरेसु थीपुरिसेसु वेदोदएण किं न भवति चरित्तदोपो ? तेष्वपि भवत्येव । खीणमोहादिया मोत्तुं सेसा सव्वे संसारत्था जीवा सवेदगा, सवेदगा य दोसदरिसणा न दिक्खियव्वा, तेसिं च दिक्खाभावे ण भवइ तित्थं, णावि तित्थसंतती ॥३६०३॥

---

१ गा० ३५६१ । २ गा० ३५६१ । ३ गा० ३५६१ । ४ गा० ३५६१ । ५ गा० ३५६१ । ६ गा० ३५६१ ।

आचार्याह –

थीपुरिसा पत्तेयं, वसंति दोसरहितेसु ठाणेसु ।
संवासफासदिट्ठे, इयरे वच्छं व दिट्ठंतो ॥३६०४॥

इत्थी पव्वाविता इत्थीणं मज्झे निवसति, पुरिसो वि पुरिसाणं, एवं ते पत्तेगा दोसरहितेसु ठाणेसु वसंता णिद्दोसा । इतरो यदि इत्थीणं मज्झे वसति तो संवासतो फासतो दिट्ठिओ य दोसा भवंति । एवं तस्स पुरिसेसु वि दोसो ।

तस्सेवं उभओ संवासे दिट्ठंतो – "[1]अपत्थं अंबगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए" ।

अथवा – वच्छंबगदिट्ठंता दो वत्तव्वा ।

वच्छस्स मातरं दट्ठुं थणाभिलासो भवति, माताऽवि पुत्तं पण्हाति ।

अंबं वा दट्ठुं खज्जमाणं वा अंबयं दट्ठुं जहा अण्णस्स मुहं पण्हाति । एवं तस्स संवासादिएहिं वेदोदएण अभिलासो भवति । भुत्ताभुत्तसाहवो वा तमभिलसंति । तम्हा णपुंसगो ण दिक्खियव्वो ॥३६०४॥

वितियपदेण इमेहिं कारणेहिं सव्वे दिक्खेज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।
गेलण्ण उत्तमट्ठे, नाणे तह दंसणे चरित्ते ॥३६०५॥

सो असिवं उवसामेहि त्ति, असिवग्गहियाण वा तप्पिस्सति, सलद्धिओ वा सो ओमे भत्तपाणेण गणस्स उवग्गहं करेस्सति ॥३६०५॥

रायदुट्ठभएसू, ताणट्ठ णिवस्स चेव गमणट्ठा ।
विज्जो व सयं तस्स व, तप्पिस्सति वा गिलाणस्स ॥३६०६॥

रायदुट्ठे ताणं करेस्सति, रायवल्लभो वा सो रायाणं गमेस्सति, बलवं कयकरणो स बोहिगादि भए आगाढे ताणं करेस्सति, सत्तविहागाढे वा पव्वाविज्जति । वेज्जो वा सो सयं गिलाणस्स किरियं करेस्सति ।

अहवा – विज्जस्स गिलाणस्स वा तप्पिस्सति । उत्तिमट्ठपडिवण्णगस्स असहायस्स कुसहायस्स वा मे सहायो भविस्सति, तप्पिस्सति वा सो वा उत्तिमट्ठं पडिवज्जति ॥३६०६॥

गुरुणो व अप्पणो वा, णाणादी गेण्हमाण तप्पिहिति ।
अचरणदेसा णेंते, तप्पे ओमासिवेहिं वा ॥३६०७॥

गुरुणो अप्पणो वा णाणं गेण्हंतस्स असणादिवत्थादिएहिं तप्पिहिति । एवं दंसणे वि । चरित्तं जत्थ देसे ण सुज्झइ चरणट्ठा ततो णितस्स एस मे सहायो भविस्सति तप्पिस्सति वा ॥३६०७॥

एएहिं कारणेहिं, आगाढेहिं तु जो उ पव्वावे ।
पंडाती सोलसगं, कए तु कज्जे विगिंचणता ॥३६०८॥

जेण कारणेण सो पव्वावितो तम्मि समाणिते पच्छा सो विगिंचियव्वो ॥३६०८॥

---

१ उत्त० अ० ७ गा० ११ ।

कारणजाते य पव्वाविज्जंतस्स इमा विही –

दुविहो जाणमजाणी, अजाणगं पण्णवेंति तु इमेहिं ।
जणपच्चयट्ठया वा, नज्जंतमणज्जमाणे वि ॥३६०९॥

जाणि त्ति जाणति, जहा "साहूण न कप्पति ततियं दिक्खेउं", तमुवट्ठियं पन्नवेंति "णो तुज्झ दिक्खा, अवत्तवेसधारी सावगधम्मं पडिवज्जसु, अन्नहा ते णाणादिविराधणा भवति ।" अजाणगं पुण जणपच्चयट्ठा कडिपट्टमादिएहिं पण्णवेंति । सो पुण अजाणगो तत्थ जणे णज्जति ण वा ॥३६०९॥

एवं दुविधे वि इमा जयणा –

कडिपट्टए य छिहली, कत्तरिया भंडु लोय पाढो य ।
धम्मकहसन्निराउल-ववहारविगिंचणं कुज्जा ॥३६१०॥

पुव्वद्धस्स इमा वक्खा –

कडिपट्टओ अभिणवे, कीरति छिहली य अम्ह चेवासि ।
कत्तरिया भंडू वा, अणिच्छे एक्केक्कपरिहाणी ॥३६११॥

चोलपट्टो से वज्झति, णो अग्गतो चरयं करेति, सिरे से "छिहलि" त्ति सिहं से मुच्चति ।

जइ सो भणइ – किं मे अग्गतो चरयं न करेह, सव्वं मुंडं वा ?

ताहे सो भण्णति – णवधम्मो चेव एवं कीरति ।

वसभा य भणंति – अम्ह वि णवधम्माण एवं चेव आसि । तं पुण मुंडं कत्तरिमणिच्छंतस्स, "भंडु" त्ति खुरो, तेण सो मुंडिज्जति । खुरं पि अणिच्छंतो एवं एक्कगहाणीते पच्छा से लोओ कज्जति । सव्वेसु छिहली मुंचति ॥३६११॥

छिहलीं तु अणिच्छंतो, भिक्खूमादीमयं पि णेच्छंति ।
परतित्थिय वत्तव्वं, उक्कमदाणं ससमए वि ॥३६१२॥

छिहलिं पि अणिच्छंते सव्वं वा से मुंडं कज्जति, ततो सिक्खविज्जति । सा सिक्खा दुविहा – आसेवणसिक्खा गहणसिक्खा य । आसेवणसिक्खाए से किरियाकलावो ण दंसिज्जति ।

इमा गहणसिक्खा – "[1]पाढे" त्ति अस्य व्याख्या –

भिक्खुमादिपरतित्थियाणं ससमयवत्तव्वयं पाढिज्जति, तम्मि अणिच्छंते सिंगारकव्वं पाढिज्जति, तम्मि अणिच्छंते धम्मकहागंडियाओ पाढिज्जति, तम्मि अणिच्छंते समए जे परतित्थियवत्तव्वयसुत्ता ते पाढंति, तम्मि अणिच्छे ससमयं उक्कमेण विलुलियं पाढंति ॥३६१२॥

इमा से कारणे विही –

वीयार-गोयरे थेरसंजुओ रत्तिदूरे तरुणाणं ।
गाहेह ममं पि तओ, थेरा गाहेंतऽजत्तेणं ॥३६१३॥

---

१ गा० ३६११ ।

वियारभूमिं गच्छंतो गोयरं वा हिंडंतो थेरसंजुत्तो हिंडति । रातो दूरे तरुणाण सेविज्जति चिट्ठति वा, तं च न पाढेति साहवो । जति भणेज्ज – ममं पि पाढेह त्ति ताहे थेरा वंचणाणि करेंति, अयत्तेण गाहिंति ॥३६१३॥

तं पि इमेरिसं गाहिंति –

वेरग्गकहा विसयाण णिंदया उट्ठनिसीयणे गुत्ता ।
चुक्कखलिते य बहुसो, सरोसमिव चोदते तरुणा ॥३६१४॥

जे सुत्ता वेरग्गकहाए ठिता विसयनिंदाए य ते सुत्तं गाहिज्जति ।

ग्रहवा – तस्स पुरतो वेरग्गकहा विसयणिंदकहा कहिज्जा । उट्ठेंतनिवेसंता य साहवो संवुडा भवंति जहा अंगादाणं ण पस्सति । तस्स जइ सामायारीए किं चि चुक्कयं कयं खलितं वा विणट्ठं कयं ताहे तरुणा भिक्खू ते निठुट्टरं सरोसं चोदंति, बहुवारा बहुसं, एवं कएसु तरुणेसु अणुबंधं ण गच्छति ॥३६१४॥

धम्मकहा पाढेंति य, कयकज्जा वा से धम्ममक्खंति ।
मा हण परं पि लोयं, अणुव्वया तुज्ज नो दिक्खा ॥३६१५॥

गतत्थो पढमो पदो । इदाणिं पच्छद्धस्स वक्खाणं – जेण कज्जेण सो दिक्खिग्रो तम्मि समत्ते कज्जे धम्मो से कहिज्जति, बोहिउवघायकारणा य से कहिज्जंति, तुमं च रयोहरणादिलिंगट्ठितो य परभव-बोहीए उवघायकारणाय वट्टसि, तं मा हण परं पि लोगं, मुंच रयोहरणादि लिंगं, तुज्झ सावगाणुव्वता ते गेण्हसु, न साधुदिक्खा भवति ॥३६१५॥

एवं पन्नविते जति साधुलिंगं मुंचति तो लट्ठं ।

ग्रह ण मुंचति ताहे "[1]सन्निराउलं" ति अस्य व्याख्या –

सन्नि खरकम्मिग्रो वा, भेसेत्ति कग्रो इहेस कंचिच्चो ।
निवसिट्ठे वा दिक्खितो, एएहि अणाये पडिसेहो ॥३६१६॥

सण्णी जो खरकम्मितो सो पुव्वं पणविज्जति – "ग्रम्हेहिं कारणे ततिग्रो पव्वावितो. सो इयाणिं लिंगं णेच्छए मोत्तुं, तं तुमं भेसेहि" । पच्छा सो ग्रागंतु गुरवो वंदितुं णिविट्ठो, सव्वे णिरिक्खति पुंजते ।

ताहे तं पुव्वकहियचिंधोवलक्खितं करमलण-भूमफालण-सिरकंपण-फरुसवयण-खरदिट्ठावलोयणेण भमितो भणाति – "कतो एस तुज्झ मज्झे कंचिच्चो ? ग्रवसराहि त्ति, मा तेण वाएस्सं ।

एवं च जदि ण मुंचति, खरकम्मियस्स वा ग्रसति, तेण व रण्णो कहितं, एत्थ वि सो ववहारेण जेतुं विकिंचियव्वो ।

इमो ववहारो – जदि सो भणेज्ज एतेहिं दिक्खितोमि त्ति, एत्थ जति जणेण न णातं एएहिं दिक्खितो त्ति तो ग्रणातं पडिसिज्झति ग्रवलप्यत इत्यर्थः ॥३६१६॥

ग्रह सो भणेज्ज –

ग्रब्भाविग्रोमि एतेहिं चेव पडिसेहो किं वऽर्धांयंते ।
छलिगकहाती कड्ढति, कत्थ जती कत्थ छलियाइं ॥३६१७॥

---

1 गा० ३६११ ।

अहमेतेहिं चेव अज्झावितो, जणेण अण्णाते एत्थ वि पडिसेहो ।

अहवा भन्नति – "किं तुमे अधीतं" ति, ताहे सो परसमए छलियकव्वकहादि कड्ढति ।

ताहे साहवो भणंति – "कत्थ जती, कत्थ छलिगादि कव्वकहा ? साहवो वेरग्गमग्गट्ठिता सिंगारकहा ण पढंति – न युज्जतेत्यर्थः" ॥३६१७॥

इमेरिसं साहवो सव्वण्णुभासियं सुत्तं पढंति –

पुव्वावरसंजुत्तं, वेरग्गकरं सतंत-अविरुद्धं ।
पोराणमद्धमागहभासा णिययं हवति सुत्तं ॥३६१८॥

पुव्वसुत्तणिबद्धो पच्छासुत्तेण अवरुज्झमाणो पुव्वावरसंजुत्तं भन्नति, विसएसु विरागकरं, स्वतंत्रं स्वसिद्धान्तः तम्मि अविरुद्धं – सव्वहा सव्वत्थ सव्वकालं णत्थि आया तो सतंतविरुद्धं भन्नति, तित्थयरभासितो जस्सऽत्थो गंथो य गणधरणिबद्धो तं पोराणं ।

अहवा – पाययबद्धं पोराणं, मगहऽद्धविसयभासणिबद्धं अद्धमागहं ।

अधवा – अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागधं भवति सुत्तं, "णियतं" ति निबद्धं ॥३६१८॥

किं चान्यत् –

जे सुत्तगुणा वुत्ता, तव्विवरीयाणि गाहते पुव्वं ।
णिच्छिण्णकारणाणं, सा चेव विगिंचणे जयणा ॥३६१९॥

सुत्तस्स गुणा इमे –

णिद्दोसं सारवंतं च, हेउकारणचोइयं ।
उवणीयं सोवयारं च, मितं महुरमेव च ॥३६२०॥

अप्पग्गंथ महत्थं च, बत्तीसादोसवज्जियं ।
अच्छोभणमवज्जं च, सुत्तं सव्वण्णुभासियं ॥३६२१॥

एते सुत्तगुणा, एतेहिं विवरीतं आदावेव सुत्तं पढाविज्जति ।

एवं पाढिए को गुणो ?

भन्नति – निच्छिन्नकारणाणं सव्वो विगिंचणविही भवति, एस ववहारविगिंचणविही भणिता ॥३६२१॥

जो ववहारेण विगिंचितुं न सक्कति तस्सिमा विही –

कावालिए सरक्खे, तच्चणिययवसभलिंगरूवेणं ।
वड्डंवगपव्वइए, कायव्वं विहीए वोसिरणं ॥३६२२॥

गीया अविकारिणो वसभा कावाल-सरक्ख-तच्चन्निय-वेसग्गहणेणं तं परिट्ठवेंति । बहुसयणो वडंवगो, तम्मि एसा परिट्ठावणविही ॥३६२२॥

इमेसु य –

णिवचल्लभबहुपक्खम्मि वा वि तरुणवसभा मिथो बेंति ।
भिण्णकहातो भट्ठो, न घडति इह वच्च परतित्थिं ॥३६२३॥

जो णिवस्स वल्लभो, जो य बहुमित्तसयणपक्खितो, तेसु वि एस चेव परिट्ठावणविही ।

जया सो नपुंसगो मिथो रहस्से तरुणभिक्खुं ओभासति, भिन्नकहाओ वा करेति, तदा तरुणभिक्खू भणंति – "इह जतीण मज्झे ण घडति एरिसं तुमं, तुमं यदि एरिसं काउकामो सि तो उन्निक्खमाहि परतित्थिएसु वा वच्चं" ॥३६२३॥ जति सो एवं गतो तो लट्ठं ।

अह सो भणेज्जा –

> तुमए समगं आमं, ति निग्गतो भिक्खमातिलक्खेणं ।
> नासति भिक्खुगमादी, छोढूण ततो व्वि विपलाति ॥३६२४॥

स णपुंसगो तं तरुणवसभं भणेज्ज – "तुमं समगं वच्चामि, ममं तत्थ छोढुं आगच्छेज्जासि ।"

ताहे साधू भणेज्ज – "आमं ति, एहि वयामो ।"

ताहे भिक्खुमादिलिंगलक्खेण गंतुं भिक्खुमादिएसु छोढुं तं साधू णासति । जो पुण नीतो भिक्खुमादिएसु तं साधुं न मुंचति तं रातो सुत्तं नाउं विपलाति । तम्मि वा भिक्खादिणिग्गए विपलाति, साहू वा भिक्खादिणिग्गतो ततो च्चिय विपलाति ॥३६२४॥ "नपुंसगो" त्ति गतं ।

"[1]जड्डे" त्ति –

> तिविहो य होइ जड्डो, सरीर-भासाए करणजड्डो उ ।
> भासाजड्डो तिविहो, जल मम्मण एलमूओ य ॥३६२५॥

तिविहो जड्डो – सरीरजड्डो, करणजड्डो, भासाजड्डो य ।

एत्थ भासाजड्डो पुणो तिविहो, – जलमूगो मम्मणमूगो एलमूगो य, चसद्दा दुम्मेहजड्डो य ।

जहा जले निब्बुड्डो उल्लावेति बुडबुडेति वा जलं एवं जलमूगो अव्वत्तं भासति ।

एलमूगो भासइ एलगो जहा बुडबुडति, एवं एलमूगो भासति ।

अंतरंतरे खलति वातो जस्स अविप्पट्ठभासी बोब्बडो य स मम्मणो ।

घोसंतस्स वि जस्स गंथो न ठायति स दुम्मेहो माषतुषवत् ॥३६२५॥

एते पव्वावेंतस्स इमं पच्छित्तं –

> जलमूए एलमूए, सरीरजड्डे य करणजड्डे य ।
> एएसु चउगुरुगा, सेसकजड्डम्मि मासलहुं ॥३६२६॥

जलं एलं अतिसरीरे करणजड्डं च, एते पव्वावेंतस्स चउगुरुगा, "सेस" त्ति नातिसरीरजड्डो, मम्मणो दुम्मेहो य, एतेसु तिसु मासलहुं ॥३६२६॥

जल-एल-मूएसु इमे दोसा –

> दंसण-णाण-चरित्ते, तवे य समितीसु करणजोगे य ।
> उवदिट्ठं पि ण गेण्हति, जलमूओ एलमूओ य ॥३६२७॥

---

१ गा० ३५०६ ।

दंसणसरूवं, दंसणपभावगाणि वा सत्थाणि, दंसणं वा पडुच्च जो उवदेसो दिज्जति । एवं णाणे चरणे तवे समितीसु करणेसु जोएसु य तिन्नि तिन्नि भेया कायव्वा । तेसुवइट्ठं ण गेण्हति जलमूगो एलमूगो य । अतो ते ण दिक्खियव्वा ।।३६२७।।

किं च –

णाणादट्टा दिक्खा, भासाजड्डो अपच्चलो तस्स ।
सो बहिरो वि णियमा, गाहणउड्डाह अहिकरणं ।।३६२८।।

दिक्खा णाणादट्ठा इच्छिज्जति। सो य भासाजड्डो दुविहो वि तस्स गहणे अपच्चलो असमर्थेत्यर्थः । सो य दुविहो वि नियमा बहिरो भवति । तम्मि महता सद्देण गाहिज्जंते उड्डाहो भवति । तम्मि अगिण्हंते कोवो भवति, ततो अधिकरणं ।।३६२८।।

इयाणिं सरीरजड्डे दोसा –

तिविहो सरीरजड्डो, पंथे भिक्खे य होति वंदणए ।
एतेहि कारणेहिं, जड्डस्स ण दिज्जती दिक्खा ।।३६२९।।

सरीरजड्डो न सरीर भेदेण तिविहो, क्रियाभेदेण तिविहो इमो – पंथे, भिक्खाडणे, वंदणपयाणकाले य ।।३६२९।।

एयस्स तिविहस्स वि इमा वक्खा –

अद्धाणे पलिमंथो, भिक्खायरियाए अपडिहत्थो य ।
दोसो सरीरजड्डे, गच्छे पुण सो अणुण्णाओ ।।३६३०।

पंथे छड्डिज्जति, ऊरुघंसो य से भवति, सावयतेणभयं च से भवति, अह साधवो पडिक्खंति ताहे तेसिं पि पलिमंथो भिक्खायरियाए, वंदणे अपरिहत्थो, एत्थ वि अन्नंमि पलिमंथो । एवमादि सरीरजड्डे दोसा । तेण से दिक्खा पडिसिद्धा । "गच्छे पुण सो अणुण्णातो" त्ति पुव्विं पव्वावणकाले किसो आसी पच्छा सरीरजड्डो जातो, तस्स गच्छे परियट्टणा अणुण्णाया न परित्याज्येत्यर्थः ।

अन्ने भणंति – नातिसरीरजड्डस्स महल्लगच्छे पव्वज्जा अणुण्णाता इत्यर्थः ।।३६३०।।

किं चान्यत् –

उड्ढस्सासो अपरिक्कमो य गिलाणऽलाघव अग्गि अहि उदए ।
जड्डस्स य आगाढे, गेलण्णऽसमाहिमरणं वा ।।३६३१।।

सरीरजड्डस्स अद्धाणादिसु उड्ढं सासो भवति । खलादिलंघणेसु य अप्पपरक्कमो भवति । जहा से गिलाणस्स तहा सव्वं कायव्वं । गिलाणो वा सो अभिक्खं भवति । तस्स सरीरलाघवं न भवति ।

अहवा – अहि-अग्गि-उदगादिसु आवतंतेसु नासितव्वे अलाघवं भवति । सरीरजड्डस्स आगाढे गेलण्णे उवचितरीरस्स डाहजरादिणा असमाहिमरणं भवति ।।३६३१।।

किं चान्यत् –

सेएण कक्खमातो-कुच्छणधुवणुप्पिलावणे पाणो ।
णत्थि गलभोअ चोरो, णिंदियमुंडा य वातो य ।।३६३२।।

उवचितसरीरस्स गिम्हादिसु कक्खोरुउदरंतराणि सेदेण कुच्छेज्जा, ते य अधोवंतस्स व्रणी हवेज्ज। अह धोवति उप्पिलावणे पाणिणो वहो भवति। जणो इमं भासति – गलपरिगुत्तं जतोवस्सं कज्जंतरे पगडं भवति, तेण णत्थि सो चोरो जेणिमे समणा एवं उवचितदेहा, तेण णज्जति जहा एते परिणतरसभोयिणो णेव य इंदियमुंडा – न जितेन्द्रिया इत्यर्थः ॥३६३२॥

इयाणि करणजड्डो –

इरियासमिती भासेसणा य आदाणसमितिगुत्तीसु।
न वि ठाति चरणकरणे, कम्मुदएणं करणजड्डो ॥३६३३॥

पंचसु समितीसु तीसु य गुत्तीसु एयासु अट्ठसु पवयणमादीसु तहा सवित्थरे चरणे – "वयसमणधम्मसंजमकरणग" गाहा। तहा करणे सवित्थरे "पिंडविसोहीसमिति" गाहा, एवं उवदिट्ठं जो ण गेण्हति चारित्तावरणकम्मोदएण एतेसु ण चिट्ठति एस करणजड्डो। जो वेतं गाहेति तस्स वि सुत्तेसु पलिमंथो। एमादिदोसपरिहरणत्थं जड्डो ण दिक्खियव्वो ॥३६३३॥

अथ कारणे अजाणया वा दिक्खितो तस्स परिपालणे इमा विही –

मोत्तुं गिलाणकिच्चं, दुम्मेहं पाढे जाव छम्मासा।
एक्केक्के छम्मासा, जस्स य दुट्ठं विगिंचणया ॥३६३४॥

जति दुम्मेहो गिलाणट्ठा पव्वावितो तो जाव गिलाणकिच्चं ताव परियट्टंति पाढेंति य। जो पुण मोत्तुं गिलाणकिच्चं अजाणया पव्वावितो तं छम्मासे पाढेंति।

अह दुम्मेहो पव्वावितो एक्कं गिलाणकिच्चं मोत्तुं सेसं सव्वं पमादित्ता दियाराओ य पढाविज्जति जाव छम्मासा।

जति छम्मासेण णमोक्कारं सामातिसुत्तं वा गेण्हति तो ण छड्डिज्जति।

अह ण गेण्हति तो अन्ने दो आयरिता संकमति, जं आयरियं दट्ठुं दुम्मेहत्तणं छड्डेति तस्स आयरियस्स। सो अह ण गाहितो तेहिं अतोपरि विगिंचणया परित्यागेत्यर्थः ॥३६३४॥

छम्मासकरणजड्डं, परियट्टति दो वि जावजीवाए।
अन्ने दो आयरिता, तेसिं दट्ठुं विवेगो य ॥३६३५॥

करणजड्डं अप्पणो आयरितो छम्मासे परियट्टति पच्छा अन्ने दो आयरिता संकमति, दुम्मेहवत्। मम्मणं णातिसरीरजड्डं च एते दो जावज्जीवं परियट्टति ॥३६३५॥

इदमेवार्थं किंचिद्विशेपयुक्तमाह –

जो पुण करणे जड्डो, उक्कोसं तस्स होंति छम्मासा।
कुलगणसंघणिवेयण, एयं तु विहिं तहिं कुज्जा ॥३६३६॥

करणजड्डं अप्पणो आयरिओ उक्कोसेण छम्मासे परियट्टति। अह अन्नो नत्थि आयरिओ, णेच्छति वा, ताहे कुलगणसंघसमवातं काउं "जस्स मे रुच्चति सो गेण्हउ" एवं विगिंचति।

अन्ने भणंति – अन्नायरियाभावे अप्पणो चेव अट्ठारसमासे परियट्टति ततो पच्छा कुलादिएसु विगिंचति ॥३६३६॥ "जड्डे" त्ति गतं।

इदाणि "[1]कीवो" –

तिविहो य होति कीवो, अभिभूतो णिमंतणा अणभिभूतो ।
चउगुरुगा छग्गुरुगा, ततिए मूलं तु बोधव्वं ॥३६३७॥

अहवा –

दुविहो य होइ कीवो, अभिभूतो चेव अणभिभूतो य ।
अभिभूतो वि य दुविहो, णिमंतणाऽऽलिद्धकीवो य ॥३६३८॥

अभिभूतो अणभिभूतो य । अभिभूतो पुणो दुविहो – णिमंतणाकीवो आलिद्धकीवो य ।

अणभिभूतो वि दुविधो – सद्दकीवो दिट्ठिकीवो य । एस चउव्विहो कीवो । इमा परूवणा – इत्थीते णिमंतितो भोगेहिं ण तरति अहियासेउं, एस णिमंतणाकीवो । जतुघडो जहा अग्गिसन्निकरिसेण [2]विलयति एवं जो हत्थोरुकक्खपयोवरेहिं आलिद्धो पडिसेवति, एस आलिद्धकीवो ॥३६३८॥

इमो दिट्ठिकीवो –

दुविहो य अणभिभूतो, सद्दे रूवे य होइ णायव्वो ।
अभिभूतो गच्छगतो, सेसा कीवा उ पडिकुट्ठा ॥३६३९॥

संफासमणुप्पत्तो, पडती जो सो उ होति अभिभूतो ।
णिवतति य इत्थिणिमंतणेण एसो वि अभिभूतो ॥३६४०॥

दट्ठूण दुण्णिविट्ठं, णिगिणमणायारसेविणं वा वि ।
सद्दं व सोतु ततिओ, सज्जं मरणं व ओहाणं ॥३६४१॥

"दट्ठूण" उवरिसरीरमप्पाउयं दुव्वियडं "दुन्निविट्ठ" असंवुडं "णिगिणं" ति, णग्गं मेहुणमणायार-सेविणं वा जो खुब्भति सो दिट्ठिकीवो ।

इमो सद्दकीवो – "सद्दं सोउं" त्ति, भासा-भूसण-गीत-परियारण-सद्दं च सोतुं जो खुब्भति सो सद्दकीवो । "ततिओ" त्ति एस ततिओ कीवो ।

अहवा – एते निरुज्झमाणा "ततिओ" त्ति णपुंसगा भवंति, सज्जं वा मरंति, ओहाविंति वा ॥३६४१॥

इमं दिट्ठिकीवे भण्णति –

साहम्मि अण्णहम्मि य, गारत्थियइत्थियाओ दट्ठूणं ।
तो उप्पज्जति वेदो, कीवस्स ण कप्पती दिक्खा ॥३६४२॥

एया तिविधित्थीओ दट्ठुं उक्कडवेदत्तणओ पुरिसवेदो उदिज्जति । उदिण्णे य बला इत्थिग्गहणं करेज्ज । उड्डाहादी दोसा तम्हा न दिक्खेयव्वो ।

---

१ गा० ३५०६ । २ विगलति ।

दिक्खंतस्स इमं पच्छित्तं – आलिद्धकीवे चउगुरुं, णिमंतणकीवे छग्गुरुं, दिट्ठीकीवे छेदो, सद्दकीवे मूलं, अहवा – सामन्नेण कीवे मूलं ॥३६४२॥

एते जति पव्वाविता अजाणताए तो इमा जयणा परियट्टणे –

> संवाडगाणुबद्धा, जावज्जीवाए णियमियचरित्ते ।
> दो कीवे परियट्टति, ततियं पुण उत्तिमट्ठम्मि ॥३६४३॥

सदा संवाडगाणुबद्धा सवितिज्जा एवं अतीव [1]नियमिया कज्जति । अभिभूतो दुविधो वि एवं परियट्टिज्जति । ततिओ अणभिभूतो सो परं (पुण) उत्तिमट्ठे पव्वाविज्जति ॥३६४३॥

एसेवऽत्थो अन्नहा भण्णइ –

> अभिभूतो पुण भतितो, गच्छे सवितिज्जओ उ सव्वत्थ ।
> इयरे पुण पडिसिद्धा, सद्दे रूवे य जे कीवा ॥३६४४॥

पुणसद्देण अभिभूतो दुविधो वि, भयणसद्दो सेवाए ।

अथवा – जति गच्छे वितिज्जगा अत्थि तो ते पव्वाविज्जंति, सवितिज्जा सव्वत्थ गच्छे गच्छंति, इयरे पुण जे सद्द-दिट्ठिकीवा ते दो वि पडिसिद्धा, तेसिं परं उत्तिमट्ठे दिक्खा ॥३६४४॥ "कीवे" त्ति गयं ।

इयाणि "वाहिते" त्ति –

> रोगेण व वाहीण व, अभिभूतो जो तु अभिलसे दिक्खं ।
> सोलसविहो उ रोगो, वाही पुण होइ अट्ठविहो ॥३६४५॥ कंठा

इमो सोलसविहो रोगो –

> वेवग्गि पंगु वडभं, णिम्मणिमलसं च सक्करपमेहं ।
> वहिरंधकुंटवडभं, गंडी कोटीक्खते सूई ॥३६४६॥

इमो अट्ठविहो वाही –

> जर-सास-कास डाहे, अतिसार भगंदरे य सूले य ।
> तत्तो अजीरघातग, आसु विरेचा हि रोगविही ॥३६४७॥

आसुघातित्वाद् व्याधिः, चिरघातित्वाद्रोगः, तं रोगत्थ वाहिग पव्वावेंतस्स दोसा आणादी इमे य–

> छक्कायसमारंभो, नाणचरित्ताण होति परिहाणी ।
> घंसण पीसण पयणं, दोसा एवंविहा होंति ॥३६४८॥

जति तस्स तिगिच्छं आउट्टति तो छक्कायविरावणा । एस चरित्तपरिहाणी । गिलाणवावडवेयावच्चस्स सुत्तत्थपोरिसीओ अकरेंतस्स णाणपरिहाणी । चंदणादियाण घसणं, वडछल्लिमादियाण पीसणं, घयमादीयाण पयणं, एवमादि पलिमंथदोसेहिं अप्पणो सव्वकिरियापरिहाणी । अध न करेति से किरियं तो चउगुरुं । जं से वा पावति पावेहिं वा तं च पावति दिक्खिते ॥३६४८॥

---

१ नियंतिया । २ गा० ३५०६ ।

किं चान्यत् –

जाता अणाहसाला, समणा वि य दुक्खिया पडियरता ।
ते चि य पउणा संता, होज्ज व समणा ण वा होज्जा ॥३६४६॥

"अणाहसाल" त्ति आरोगसाला गच्छवासो अणाहसालावत् । तत्थ साहवो अन्नस्स वमणं, अण्णस्स विरेयणं, अन्नस्स (स)मसणं, अन्नस्स पाणयं, अण्णस्स घयाईणं, एवमादि उग्गमेत्ता दुक्खिया जाता । पच्छद्धं कंठं ॥३६४६॥ "रोगि" त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]तेणा" –

अक्कंतितो य तेणो, पागतितो गाम-देस-अद्धाणे ।
तक्करखाणगतेणो, परूवणा होति कायव्वा ॥३६५०॥

अडाडाए बला हरंतो अक्कंतिओ, राते अवहरंतो पागतितो ।

अधवा – राउलवग्गस अक्कंतितो, पागयजणस्स हरंतिओ पागतिओ, गामतो हरंतो गामतेणो, सदेस परदेसे व हरंतो देसतेणो, गामदेसंतरेसु हरंतो अंतरतेणो, पंथे मुसंतो अद्धाणतेणो । तदेविक्कं करोतीति तक्करो, नो अन्नं किं चि किसिमादी करोती ति । खेत्तं खणंतो खाणगतेणो ॥३६५०॥

सो समासेण चउव्विहो तेणो –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य तेणगम्मि णिक्खेवो ।
एएसिं तु चउण्हं, पत्तेयपरूवणं वोच्छं ॥३६५१॥ कंठा

इमो दव्वतेणो –

सच्चित्ते अच्चित्ते, य मीसए होति दव्वतेणो उ ।
साहम्मि अण्णधम्मिय, गारत्थीहिं च नायव्वो ॥३६५२॥

सचित्तं दुपदचतुप्पदापदं । अचित्तं हिरन्नादि । मीसं सभंडमत्तोवगरणं अस्सादि, फलादि वा देसोवचितावचितं । तं पुण सचित्तादि दव्वं साहम्मियाण अण्णधम्मियाण गारत्थियाण वा अवहरंतो दव्वतेणो । सो तिविहो – उक्कोस-मज्झिम-जहण्णो । हय-गय-रायित्थी-माणिक्के हरंतो उक्कोसो, गो-महिस-खत्तखण-खरियादि वा हरंतो मज्झिमो, पहियजणमोसगो गंठभेदगो असणादि वा हरंतो जहन्नो ।

एत्थ एक्केक्के चउप्पगारा इमे – तेणो तेणतेणो पडिच्छगो पडिच्छगपडिच्छगो ॥३६५२॥

इयाणिं खेत्त-काल-भावतेणा तिन्नि वि जुगवं भन्नति –

सगदेस परदेस विदेसे, अंतरतेणो य होति खेत्तम्मी ।
राइंदिया व काले, भावम्मि य नाणतेणो तु ॥३६५३॥

सदेसतो, परदेसतो, एतेसिमंतरे वा हरंतो खेत्ततेणगो । रातो वा दिया वा हरंतो कालतेणो । भावतेणो णाणदंसणचरित्ते हरंतो ॥३६५३॥

---

१ गा० ३५०६ ।

हयगयलंचिक्काइं, तेणंतो तेणओ उ उक्कोसो ।
खेत्तखण कण्हवण्णिय, गोणातेणो य मज्झिमतो ॥३६५४॥

गंठीछेदगपहियजणदव्वहारी जहण्ण तेणो उ ।
एक्केक्को वि य दुविहो, पडिच्छगपडिच्छगो चेव ॥३६५५॥

इमे उदाहरणा तिसु वि –

गोविंदऽज्जो णाणे, दंसणसत्थट्ठहेतुगट्ठा वा ।
पावादिय उव्वरगा, उदायिवहगातिया चरणे ॥३६५६॥

गोविंदो णाम भिक्खू । सो एगेणायरिएण वादे जितो अट्ठारस वारा । ततो तेण चिंतियं सिद्धंतसरूवं जाव एतेसिं ण लब्भति ताहे ते जेतुं न सक्केंतो, ताहे सो णाणावरणहरणट्ठा तस्सेवायरियस्स अंते णिक्खंतो । तस्स य सामाइयादि पढेंतस्स सुद्धं सम्मत्तं ।

ततो गुरुं वंदित्ता भणति – देहि मे वते । णणु दत्ताणि ते वताणि । तेण सब्भावो कहितो । ताहे गुरुणा दत्ताणि से वयाणि । पच्छा तेण एगिंदियजीवसाहणं गोविंदणिज्जुत्ती कया । एस णाणतेणो ।

एवं दंसणपभावगसत्थट्ठा कक्कडगमादिहेतुगट्ठा वा जो णिक्खमति सो दंसणतेणो ।

जो एवं च करणट्ठा चरणट्ठा चरणं गेण्हति, भंडिओ वा गंतुकामो, जहा वा रण्णो वहणट्ठा उदायिमारगेण चरणं गहियं । आदिसद्दातो "मधुरकोण्डइला" एते सव्वे चरित्ततेणा ॥३६५६॥ एते दव्वादितेणा समण-समणी ण कप्पंति पव्वावेतुं –

सच्चित्तं अच्चित्तं, च मीसगं तेणियं कुणति जो उ ।
समणाण व समणीण व, न कप्पती तारिसे दिक्खा ॥३६५७॥

पव्वाविते इमे दोसा –

वहबंधण उद्दवणं, च खिंसणं आसियावणं चेव ।
णिव्विसयं च णरिंदो, करेज्ज संघं च सो रुट्ठो ॥३६५८॥

तस्स वा पव्वायगायरियस्स व सव्वस्स व गच्छस्स लतकसादिएहिं वहं करेज्ज, बंधणं णियलादिएहिं, उद्दवणं मारणं, खिंसा "धिरत्थु ते पव्वज्जाते" त्ति, आसियावणं पव्वज्जातो, गामणगरातो वा धाडेज्ज ।

अहवा – णरेंदो रुट्ठो णिव्विसयं करेज्ज, कुलगणसंघाण वा वहादिए वि पगारे करेज्जा ॥३६५८॥

किं चान्यत् –

अयसो य अकित्ती या, तं मूलागं भवे पवयणस्स ।
तेसिं पि होइ एवं, सव्वे एयारिसा मण्णे ॥३६५९॥ पूर्ववत्

णवरि – तेणत्थे वत्तव्वा ॥३६५९॥

जो पव्वावेति तस्स आणादिया दोसा, इमं च से पच्छित्तं –

सग्गामपरग्गामे, सदेस परदेस अंतो बाहिं च ।
दिट्ठादिट्ठे सोही, मासलहु अंतमूलाइं ॥३६६०॥

सग्गामे परग्गामे सदेसे परदेसे एतेसिं अधो उक्कोस-मज्झिम-जहण्णा ठविज्जंति, एतेसिं अंतो बाहिं ठविज्जति एतेसिं अहो दिट्ठादिट्ठादि । एतस्सऽधो मूलं ॥३६६०॥

मूलं छेदो छग्गुरु, छल्लहु चत्तारि गुरुगलहुगा य ।
गुरुगलहुओ य मासो, सग्गामुक्कोसगातीणं ॥३६६१॥

मूलादि जाव मासलहुं ताव ठविज्जति ।

इमा चारणा –

सग्गामे उक्कोसं अंतो दिट्ठं जो अवहरति तं जो पव्वावेति तस्स मूलं । अदिट्ठे छेदो । बाहिं दिट्ठे छेदो, अदिट्ठे छग्गुरु ।

मज्झिमे छेदातो छल्लहुए ठायति ।

जहण्णे छग्गुरुगातो चउगुरुगे ठायति ।

एवं परग्गामे अड्ढोक्कंति चारणाए छेदाढत्तं चउलहुए ठायति ।

सदेसे छग्गुरुआढत्तं मासगुरुए ठायति ।

परदेसे छल्लहु आढत्तं मासलहुए ठायति । अन्नधा वि चारिज्जते एतदेव भवति ।

जम्हा एते दोसा तम्हा ण पव्वावेयव्वो तेणो ॥३६६१॥

कारणतो पव्वावे –

मुक्को व मोइओ वा, अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं ।
अद्धाणपरविएसे, दिक्खा से उत्तिमट्ठाते ॥३६६२॥

बंधणागारसोधणे मुक्को, सयणेणमण्णेण वा दंडेण मोइओ, रण्णा वा विसज्जितो – जहा पभवो ।

अहवा – मेयज्जऋषिघातवत् । अद्धाणे परदेसे वा उत्तिमट्ठं वा पडिवज्जंतो दिक्खिज्जति ॥३६६२॥ तेणे त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]रायावकारे" त्ति । इमो रायावकारी –

रण्णो ओरोहातिसु, संबंधे तह य दव्वजायम्मि ।
अब्भुट्ठितो विणासाय होति रायावकारी तु ॥३६६३॥

अंतेउरे अवरद्धो, सयणो वा, किं चि दव्वजातं वा अवहितं रण्णो, रयणदव्वस्स वा विणासाय अब्भुट्ठितो रायावकारी ॥३६६३॥

सच्चित्ते अच्चित्ते, व मीसए कूडलेहवहकरणे ।
समणाण व समणीण व, ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥३६६४॥

---

१ गा० ३५०६ ।

जे रण्णो सच्चित्तं दव्वं पुत्तादि, अचित्तं हारादि, मीसं वा, दूतत्तणेण वा विरोहो कतो, कूडलेहेण वा रायविरुद्धं कयं, दंडियविरोहे वा पुत्तादि से वहितो, एरिसो ण कप्पति पव्वावेउं ॥३६६४॥

आसा हत्थी [1]खरिगाति वाहिता कतकतं च कणयादी ।
दोच्चविरुद्धं च कयं, लेहो वहितो य से कोई ॥३६६५॥ कंठा

तं तु अणुट्ठियदंडं, जो पव्वावेति होति मूलं से ।
एगमणेगपदोसे, पत्थारपओसओ वा वि ॥३६६६॥

वहबंधण उद्दवणं, च खिंसणं आसियावणं चेव ।
णिव्विसयं च णरिंदो, करेज्ज संघं च सो रुट्ठो ॥३६६७॥

अयसो य अकित्ती या, तं मूलागं भवे पवयणस्स ।
तेसिं पि होइ एवं, सव्वे एयारिसा मण्णे ॥३६६८॥

एवमादिदोसा । जो पव्वावेति मूलं ॥३६६८॥

कारणे वा पव्वावेज्जा –

मुक्को व मोइतो वा, अहवा वीसज्जितो नरिंदेणं ।
अद्धाणपरविदेसे, दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥३६६९॥ पूर्ववत्

इदाणिं "[2]उम्मत्तो" –

उम्मादो खलु दुविधो, जक्खाएसो य मोहणिज्जो य ।
अगणी आलीवणता, आतवयविराहणुड्डाहो ॥३६७०॥

जक्खेण आविट्ठो, मोहणिज्जकम्मोदएण वा से उम्मादो जातो । एते दो वि ण पव्वावेयव्वा ।

इमे दोसा – अगणीए पयावणादि करेज्ज, पलीवणं करेज्ज, अप्पाणं वयाणि वा विराहेज्ज, [3]खरियादिग्गहणेण वा उड्डाहं करेज्ज ॥३६७०॥

छक्काए ण सद्दहति, सज्झाय-ज्झाण-जोग-करणं वा ।
उवदिट्ठं पि ण गेण्हति, उम्मत्ते ण कप्पती दिक्खा ॥३६७१॥

काए ण सद्दहति, सज्झायज्झाणं न करेति, अप्पसत्थे मणादिजोगे करेति, पडिलेहणसंजमादिकरण-जोगे ण करेति । अन्नं पि विविधं चक्कवालसामायारीए उवदिट्ठं ण करेति । एवमादिदोसेहिं उम्मत्ते न कप्पति दिक्खा ॥३६७१॥

इयाणिं "[4]अदंसणो" –

दुविहो अदंसणो खलु, जातीउवघायओ य णायव्वो ।
उवघातो पुण तिविधो, वाही उप्पाड अंजणता ॥३६७२॥

---

१ दासी । २ गा० ३५०६ । ३ दासी । ४ गा० ३५०६ ।

जातिओ जम्मांधो, तिमिरादिवाहिणा अंधो, अवराहियस्स वा उप्पाडियाणि, तत्तसलागाए वा अंजियाणि, अन्ने एएणेव पसंगेण "थीणद्धी" भन्नति । जाति-वाहि-अंजितंऽधो य तिसु वि चउगुरुगा । उड्डितणयणे छग्गुरु, चरिमं थीणद्धीए ॥३६७२॥

[1]उवहत उड्डिय णयणे, अदंसणे अहव थीणगिद्धीए ।
चउगुरुयं छग्गुरुयं, तइए पारंचितो होति ॥३६७३॥

इमे दोसा –

छक्कायविराहणता, आवडणं खाणुकंटमादीसु ।
थंडिल्ले अपडिलेहा, अंधस्स ण कप्पती दिक्खा ॥३६७४॥

अप्पेच्छंतो छक्काए विराहेति, विसमे खाणुकंटेसु आवडइ, अप्पेच्छंतो थंडिलसामायारिं ण करेति, अंधत्वादेव ॥३६७४॥

इमा थीणद्धिदोसो –

आवहति महादोसं, दंसणकम्मोदएण ततिओ उ ।
एगमणेगपदोसे, पत्थारपओसओ वा वि ॥३६७५॥

महंतं दोसं आवहति – पावति । कम्हा भन्नति ? दंसणकम्मोदएण को दोसो संपावइ थीणद्धी ? भण्णति – इमे य दोसा, सो थिणद्धीए दुट्ठो गिहिसाहूणं एगमणेगाण वा वध-बंधण-मारणं करेज्ज, जं चऽन्नं किंचि काहि त्ति आलोवणादियं । सव्वं पव्वावेंतो पावति पच्छित्तं ॥३६७५॥ "अंधि" त्ति गतं ।

इयाणिं "[2]दासे" । तस्सिमे भेदा –

गब्भे कीते अणए, दुभिक्खे सावराहरुद्धे वा ।
समणाण व समणीण व, ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥३६७६॥

"गब्भे" त्ति – उगालिदासो, किणित्ता दासो कतो, रिणं अदेंतो दासत्तणेण पविट्ठो, दुब्भिक्खे छातो दासत्तणेण पविट्ठो, किमिति कारणे अवराधी दंडं अदिंतो रण्णा दासो कतो, बंदिग्गहे णिरुद्धो, दविणं अदेंतो दासो कतो, एते दिक्खेतुं ण कप्पंति ॥३६७६॥

इमे दोसा –

उवसंतो रायमच्चो, समणाणं वंदणं तु कुणमाणो ।
दट्ठूण दुवक्खरगं, सव्वे एयारिसा मन्ने ॥३६७७॥

एगो रायप्रतिमो, राया वा, उवसंतो अहिणवसड्ढो, तस्स संतितो दासो एगेणायरिएण अन्नाओ पव्वावितो । ते य विहरंता तं णगरमागता जत्थ सो राया । वंदणं करेंतेण सो दिट्ठो दासो । विप्परिणतो णिस्सारं पवयणं ति । चिंतेति य सव्वे एरिसा एते ॥३६७७॥

---

१ गा० २२६ ।

अहवा – इमं करेज्ज –

वहबंधण उद्दवणं, च खिंसणं आसियावणं चेव ।
णिव्विसयं च णरिंदो, करेज्ज संघं पि परिकुवितो ॥३६७८॥

तं अन्नं वा उन्निक्खावित्ता दासत्तणं करेज्ज । सेसं कंठं ॥३६७८॥

अयसो य अकित्ती य, तं मूलागं तहिं पवयणस्स ।
तेसिं पि होइ संका, सव्वे एयारिसा मण्णे ॥३६७९॥

मुक्को व मोतिओ वा, अहवा वीसज्जिओ नरिंदेण ।
अद्धाणपरविदेसे, दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥३६८०॥ पूर्ववत्

इदाणिं "[1]दुट्ठो"

दुविहो य होइ दुट्ठो, कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य ।
दुविहो कसायदुट्ठो, सपक्खपरपक्खचउभंगो ॥३६८१॥

कोहं करेंतो कसायदुट्ठो, विसयासेवी विसयदुट्ठो । कसायदुट्ठो पुणो दुविहो – सपक्खे परपक्खे य । एत्थ चउभंगो कायव्वो ॥३६८०॥

इमो पढमभंगो –

सासवणाले मुहणंतए य उलुगच्छि सिहिरिणि सपक्खे ।
परपक्खम्मि य रन्नो, उद्दवओ होइ नायव्वो ॥३६८२॥

पुव्वद्धेण चउरो उदाहरणा पढमभंगो, पच्छद्धेण वितियभंगो ॥३६८२॥

"[2]सासवणाले" इमं उदाहरणं –

सासवणाले छंदणं, गुरु सव्वं भुंजे एतरे कोवो ।
खामण य अणुवसंते, गणि ठ्वेंतऽण्णहि परिन्नो ॥३६८३॥

एगेण साहुणा सासवणालुस्सेल्लयं सुसंभृतं लद्धं, तत्थ से अतीव गेही, तेण य तं गुरुणो उवणीयं, तं च गुरुणा सव्वं भुत्तं, इयरस्स कोवो जातो भटियं च ।

गुरुणा सो खामितो, तदावि णोवसंतो ।

भणति य – भंजामि ते दंता ।

गुरुणा विचिंतियं – मा एस मे असमाविमरणेण मारिस्सइ त्ति, गणे अन्नं आयरियं ठवेत्ता अन्नं गणं गंतुं अणासगं पडिवण्णं ॥३६८३॥

पुच्छति य ते साहू "कत्थ मे गुरवो ?"

पुच्छंतमणक्खाए, सोव्वऽण्णओ गंतु कत्थ से सरीरं ।
गुरुणा पुव्वं कहिते, दायिते पडिचरणदंतवहो ॥३६८४॥

---

[1] गा० ३५०७ । [2] गा० ३६८२ ।

पुच्छति कहिं गतो गुरू ? न कहेंति साहवो । सो अन्नश्रो सोच्चा गतो जत्थ गुरवो । तहिं कहियं – अज्ज चेव कालगतो परिट्ठवितो ।

ताहे ते पुच्छति – कत्थ से सरीरयं ?

गुरुणा पुव्वकहितो चिंधेहिं उवलक्खितो – सो एसो पावो त्ति ।

तेण किं करेसि? पेच्छामि से सरीरं ति। ताहे दंसितो, सह ते साहुणा गुविलट्ठाणठिता ण पडिचरितो "किमेस काहिति" त्ति पेच्छंति । उवट्ठितो तु गोलोवलं कड्ढिऊण दंते व घंतो भणाति – "सासवणालं खासि" त्ति, एयं करेंतो दिट्ठो ।

इयाणिं "[1]मुहणंतगे" त्ति –

मुहणंतगस्स गहणे, एमेव य गंतु निसि गलग्गहणं ।
सम्मूढेणितरेण वि, गलते गहितो मया दो वि ॥३६८५॥

एगेण साहुणा अतीव लट्ठं मुहणंतगं आणियं, तं गुरुणा गहियं । एत्थ वि सव्वं पुव्ववक्खाणगसरिसं ।

णवरं – तं मुहणंतगं च पच्चप्पिणंतस्स ण गहियं । जीवंते य गतो रायो साधुविरहं लभित्ता "मुहणंतगं गेण्हसि" त्ति भणंतो गाढं गले गिण्हति, संमूढेण गुरुणा वि सो गहितो, दो वि मता ॥३६८५॥

इयाणिं "[2]उलुगच्छि" त्ति –

अत्थंगए वि सिव्वसि, उलुगच्छी अच्छि उक्खिणामि तुहं ।
पढमगमो नवरि इहं, उलुयच्छीउ त्ति ढोक्केति ॥३६८६॥

एगो साहू अत्थंगते सूरिए सिव्वंतो गुरुणा भणितो "पेच्छसि त्ति उलुगच्छी ?"

सो रुट्ठो भणाति "एवं भणंतस्स ते दो वि अच्छीणि उद्धरामि" ।

एत्थ वि सव्वं पढमसरिसं । णवरं-रयोहरणातो अयोमयं कीलियं कड्ढिऊण दो वि अच्छीणि उद्धरितु ढोक्केति ॥३६८६॥

इयाणिं "[3]सिहिरिणि" त्ति –

सिहिरिणि लंभाऽऽलोयण, छिंदिते सव्वातियंते उग्गिरणा ।
भत्तपरिण्णा अण्णं, ण गच्छती सो इहं णवरं ॥३६८७॥

एगेण साहुणा उक्कोसा भज्जिता लद्धा, गुरुणो आलोइया, णिमंतेति, गुरुणा सव्वा आदिता । सो साधू पत्थरं उक्खिवित्ता आगतो, अन्नेहि वि वारितो, तहावि अणुवसमंते गुरुणा चेव भत्तं पच्चक्खायं, नो अन्नं गण गतो । एते चउरो वि लिंगपारंची ॥३६८७॥ गतोपढमभंगो ।

इदाणिं वितियभंगो – सपक्खे परपक्खे दुट्ठो, जहा उदायि मारगो । एसो वि कुल-गण-संघ-रक्खट्ठा लिंगं हातुं णिच्छुभति । एते पव्वाविता नाया । पव्वज्जकरणं पडुच्च अणरिहा ।

---

1 गा० ३६८३ । 2 गा० ३६८३ । 3 गा० ३६८३ ।

परपक्खे उ सपक्खो, उदायिणिवमारतो जह य दुट्ठो ।
सो पवयण-रक्खट्ठा, णिच्छुभति लिंग हातूणं ॥३६८८॥

इदाणिं ततियभंगो –

परपक्खो उ सपक्खे, भइतो जइ होइ जउणराया उ ।
तं पुण अतिसयणाणी, दिक्खंतधिकारणं नाउं ॥३६८९॥

परपक्खो सपक्खे दुट्ठो जहा मधुराए जउणराया । श्रवखाणगं जहा जोगसंगहेसु । एवं अति-सयणाणी जति उवसंतो तो दिक्खंति । अणुवसंतो एसेव भयणा । अणतिसती ण दिक्खंति, दिक्खंति वा अविगारिणं णातुं ॥३६८९॥

चउत्थभंगो –

परपक्खो परपक्खे, दंडिकमादी पदुट्ठो परदेसे ।
उवसंते वा तत्थ उ, दमगादि पदुट्ठो भतितो उ ॥३६९०॥

दंडियादी जे परोप्परं पउट्ठा ते तत्थेव न दिक्खेयव्वा, मा एगतरो एगस्स घातं काहिति । ते पउट्ठा जत्थ परोप्परं न पस्संति तेण परदेसे दिक्खा दोसु वि परोप्परे उवसंतेसु । ईसरो वा उवसंते दम-गमणुवसंतं तत्थेव दिक्खेत्ति, भयणा वा, अतिरुट्ठो ओरसवीरियं दमगं पि तत्थेव ण दिक्खेति । एस भयणा ॥३६९०॥

इयाणिं विसयदुट्ठो भण्णति –

तिविहो उ विसयदुट्ठो, सलिंगि गिहिलिंगि अण्णलिंगी य ।
एत्तो एक्केक्को वि य, णेगविहो होति णायव्वो ॥३६९१॥

सलिंगट्ठितो विसयदुट्ठो, एवं गिहिलिंगअण्णलिंगट्ठितो विसयदुट्ठो । एक्केक्के अणेगभेदा इमे – सलिंगी सलिंगे, सलिंगी गिहिलिंगे, सलिंगी अण्णलिंगे । एव गिहिलिंगे अण्णलिंगे य तिण्णि तिण्णि भेदा कायव्वा ॥३६९१॥

अह सपक्खपरपक्खेहिं चउभंगो कायव्वो ।

पढमभंगो इमो –

सपरिपक्खो विसयदुट्ठो, सपक्खे पारंचिओ उ कायव्वो ।
आउट्टस्स उ एवं, हरेज्ज लिंगं अठायंते ॥३६९२॥

जो पउट्ठो सो आउट्टो पारंचिओ कायव्वो, अट्ठायंते पुण लिंगं हरंति । बितियभंगो वि एवं चेव वत्तव्वो ॥३६९२॥

इमो ततियभंगो वि –

परपक्खं तु सपक्खे, विसयपदुट्ठं न तं तु दिक्खंति ।
सेज्झियमादिपदुट्ठं, न य परपक्खं तु तत्थेव ॥३६९३॥

परपक्खं सपक्खे दुट्ठं ण पव्वावेंति, मा तेणेव पसंगेण पुणो पुणो पडिसेविस्सति, उवसंतं वा परदेसे। पच्छद्धेण चरिमभंगो भण्णति – परपक्खं परपक्खे। सेज्झियादिसु पउट्ठं तत्थेव ण दिक्खंति, अन्नत्थ दिक्खंति। पागतित्थीसु अविरतं पव्वावेंति चउगुरुं, कोडुंबे मूलं, दंडिए पारंची, तम्हा विरतो पव्वावेयव्वो ॥३६९३॥

इयाणि "[1]मूढो" –

दव्वदिसखेत्तकाले, गणणा सारक्खि अभिभवे वेदे।
वुग्गाहणमण्णाणे, कसायमत्ते व मूढपदं ॥३६९४॥

इमो दव्वमूढो –

धूमादी बाहिरितो, अंतो धत्तूरगादिणा दव्वे।
जो दव्वं व ण याणति, घडियावोद्दोवदिट्ठं पि ॥३६९५॥

बाहिरितो धूमेणाकुलितो मुज्झति, अंतो धत्तूरगेण मदणकोद्दवोदणेण वा भुत्तेण मुज्झति। जो वा पुव्वदिट्ठं दव्वं कालंतरेण दिट्ठम्मि ण याणति सो दव्वमूढो [2]घडिगावोद्रवत्।

अज्झावगभज्जा कवडविणीता दुस्सीला वा अणाहगमडगं गिहे छोढूण दहितुं धुत्तेण सह पलाया। सो भत्ता तीसे गुणा संभरंतो अट्ठी घडियाते छोढुं घेत्तुं गंगं पयातो, तीए अंतरा दिट्ठो।

अणुकंपाए कहितं – "अहं सा।" "सव्वं सारिक्खा तीए, पुण इमाणि से अट्ठीणि, ण पतिज्जति"।

ताए सव्वं कहियं तेति "जहा पुव्व-भुत्तं जंपियं च"।

ताहे भणाति – "सव्वं सच्चं, इमाणि से अट्ठीणि, ण पतिज्जति"। एस दव्वमूढो ॥३६९५॥

दिसिमूढो पुव्वावर, भण्णति खेत्ते उ खेत्तवच्चासं।
दियरातिविवच्चासो, काले पिंडारदिट्ठंतो ॥३६९६॥

[3]दिसिमूढो विवरीतदिसा गेण्हति, जहा पुव्वं अवरं मण्णति।

[4]खेत्तमूढो जं खेत्तं ण याणति जम्मि वा खेत्ते मुज्झति रातो वा परसंथारं अप्पणो मण्णति।

[5]कालमूढो दिवसं वा रत्तिं मण्णति। एत्थ पिंडारदिट्ठंतो – एगो पिंडारो उब्भामिगासत्तो अब्भवद्दले माहिसं दधिं दुद्धं निसट्ठं पातुं सुत्तुट्ठितो निद्दाकमढितो जोण्हं मण्णमाणो दिवा चेव महिसीतो घरं संचारिते छोढुं वतिज्झाडंतरेण ओणतो उब्भामियघरं पट्ठितो। "किमेयं" ति जणेण कलकलो कतो, विलक्खो जातो। एस कालमूढो ॥३६९६॥

ऊणाहियमण्णंतो, उट्टारूढो य गणणतो मूढो।
सारिक्खे थाणुपुरिसो, महतरसंगामदिट्ठंतो ॥३६९७॥

जो गणेंतो ऊणं अहियं वा भण्णति सो [6]गणणमूढो, जहा – एगो उट्टपालो, उट्टे ते एगवीसं

---

१ गा० ३५०७। २ तरुण। ३ गा० ३६९४। ५ गा० ३६९४। ६ गा० ३६९४।

रक्खति, एगत्थारूढो तं ण गणेति, सेसे वीसं गणेति, पुणो वि गणिते वीसा, णऽत्थि मे एगो उट्टो त्ति अण्णे पुच्छति, तेहिं भणितो जत्थारूढो एस ते इगवीसइमो ।

[1]सारिक्खामूढो जहा – खाणुं पुरिसं मण्णति ।

एत्थ महतरसेणावति संगामदिट्ठंतो – एगम्मि गामे चोरा पडिया, महत्तरो कुडेण लग्गो । चोरकुट्टियाण य जुद्धं । महत्तरो सेणाहिवेण सह लग्गो, तेण सेणाहिवो मारितो, सो वि पडितो । सेणाहिवो सारिक्खेण मतो, कुट्टिएण गामं णेतुं दड्ढो, चोरेहिं वि सारिक्खेण महतरो नीतो ।

तत्थ सो भणति – "णाहं सेणाहिवो",

चोरा भणंति – "एस रणपिसाओ" त्ति पलवति, अण्णदा सो नासिउं सग्गामं गतो । ते भणंति–को सि तुमं पेतो पिसातो ? तेण पडिरूवेणं आगतो । साभिण्णाणे कहिते पच्छा संगहितो । उभयो वि सयणा सारिक्खमूढा ॥३६६७॥

अभिभूतो सम्मुज्झति, सत्थग्गीवादिसावतादीहिं ।
अच्चुदयअणंगरती, वेदम्मि उ रायदिट्ठंतो ॥३६६८॥

खग्गादिणा सत्थेण, आलीवणादिसु अग्गिणा, वादकाले वादिणा, अरण्णे सावयतेणगेसु, [1]अभिभूओ भया सम्मुज्झति ।

[2]वेदमूढो अतीवउदयो, अब्भुदएण अणंगे रती करेति, जहा पुरिसो करग्गीवजुगच्छिड्डादिसु, इत्थी वि करंगुलिफलादिसु ।

अहवा – सरिसवेदे – पुरिसो पुरिसं आसपोसादिसु पडिसेवति, असरिसवेदे पुरिसो – इत्थिं आसखरादिसु पडिसेवति ॥३६६८॥

भद्दवाहुकया गाहा दव्ववेदवुग्गाहणमूढे भण्णति –

वणियं महिलामूढं, माईमूढं च जाण रायाणं ।
दीवे य पंचसेले, अंधलगसुवण्णकारे य ॥३६६९॥

"वणियं महिलामूढं" ति, एत्थ सावगभज्जा वत्तव्वा । एस दव्वमूढो ।

वेयमूढो रायपुत्तो उदाहरणं – आणंदपुरं णगरं, जितारी राया, वीसत्था भारिया, तस्स पुत्तो अणंगो णाम । बालत्ते अच्छिरोगेण गहितो निच्चं रुयंते अच्छति । अण्णया जणणीते सयणीए णिगिणट्ठियाए अहाभावेण जाणुऊरुअंतरे छोढुं उवग्गूहितो, दो वि तेसिं गुज्झा परोप्परं समुप्फिडिता, तहेव तुण्हिक्को ठितो । लद्धोवाय रूवंतं पुणो तहेव करेति, ठायति रूयंतो, पवड्ढमाणो तत्थेव गिद्धो । माउं पि य अणुप्पियं, पिता से मतो, सो रज्जे ठितो, तहावि तं मायरं परिभुंजति, सचिवादीहिं वुच्चमाणो वि णो ठितो । एस वेदमूढो ।

दीवे, पंचसेले, अंधलग, सुवन्नगारे य एते चउरो वि वुग्गाहणे मूढा ॥३६६९॥

"[3]दीवो" त्ति –

पुव्वं वुग्गाहिता केती, नरा पंडितमाणिणो ।
णेच्छंति कारणं सोउं, दीवजाए जहा णरे ॥३७००॥ कंठा ।

---

१ गा० ३६६४ । २ गा० ३६६४ । ३ गा० ३६६६ ।

इमं तु उदाहरणं – एगो वणिगो, तस्स महिला अतीव इट्ठा, सो वाणिज्जेण गंतुकामो तं आपुच्छति।

तीए भणियं–अहं पि गच्छामि, तेण सा नीता, सा गुव्विणी, समुद्दमज्झे विणट्टं जाणवत्तं, सा फलगं विलग्गा। अंतरा दीवे उक्कूलिता, तत्थेव पसूता दारगं। स दारगो संवुड्ढो, सा तत्थेव संपलग्गा। बहुणा कालेणऽवतरिते तत्थ जाणवत्ते दुरुहिता सणगरमागता। सो तीए वुग्गाहितो – "ण ते लोगवुत्तेण अहं जणणि त्ति काउं परिच्चइयव्वा।"

स लोगेण भण्णति – "अगम्मगमणं मा करेहि, परिच्चयाहि", तहावि णो परिच्चयति।

"पंचसेले" त्ति जहा – अणंगसेणो पंचसेलं गतो, हासप्पहासऽच्छरादिवुग्गाहितो बालमरणेण मराहित्ति, पडियागतो मित्तसयणेहिं भण्णमाणो वि इंगिणीपडिवण्णो सवित्थरं सव्वं कहेयव्वमिति।

"[1]अंधलग" त्ति – अंधपुरं नगरं, तत्थ अणंधो णाम राया। सो य अंधभत्तो, तेण अंधा खाणपाणादिएहिं परिग्गहिया। सव्वेसु य तेसिं दाणं देति। दिट्ठा य ते धुत्तेण। "मुसामि" त्ति चिंतेउं स ते मिच्छोवयारेण अतीव उवचरति। भणति य "अहं अंधलगदासो, जत्थऽम्हे निवसामो तत्थ राया अतीव अंधभत्तो। तत्थ जे अंधा ते दिवलोगं विलंबेंति। तुब्भेत्थ दुक्खिया, जदि भे अत्थि इच्छा तो भे तत्थ णेमि। तेहिंच्छितं।" तेण रातो नीणित्ता नातिदूरे भणिता – इह त्थि चोरा। जति भे किं चि अंतद्धणं अत्थि तो अप्पह। तेहिं वीसंभेण अप्पियं, भणिया य पत्थरे गेण्हह, जो भे अल्लिय त्ति तं पहणेज्जाह, जति भे को ति भणिज्जा "मुसिया केण वि अंधा डोंगरं भामिता"। जाणह ते चोरे। पहणेज्जाह, सो वि महंतं सीलं छिण्णटंकं डोगरं समं भमित्ता पुरिल्लं मग्गिल्लस्स लाइत्ता सणियं पलातो। ते य दिट्ठा गोवालमादीहिं, भणंति य – "मुद्धा वरागा डोंगरं भामिता", एते चोरा, पत्थरे खिवंति, न देंति य ढोयं।

"[2]सुवण्णगारे" त्ति – एगो पसुपालबोद्दो। तेण उवज्जियं सुवण्णं। तं तेण अप्पियं सुवण्णगारस्स, घडेहि मे एत्थ मोरंगाइं। तेण घडिता, तस्स दंसिता।

कलादेण य सो भणितो – "तुज्झते मा हीरिज्जिहि त्ति, जहि ते रोयति छाएमि"। तेण पडिवण्णं। कलाएण हडं सुवण्णं, तंबिता तस्स घडेउं अप्पिया, भणिओ य जणो ते भणिहि त्ति "कलाएण मुट्ठो वराओ, न ते पत्तिज्जियव्वं"। इमं च भणिज्जासि – "जो एत्थ परमत्थो तमहं जाणे"। कलायणामो य सयमेव भण्णति। एते वुग्गाहणमूढा।

[3]अन्नाणमूढो – जो सक्कादिमता अन्नाणा णाणबुद्धीते गेण्हति, णो जतिणं हेउसतेहिं दंसियं पि घडमाणमत्थं[4] गिण्हंति।

[5]कसायमूढो – कसायोदया हिताहितं, इहपरलोगेसु कज्जमकज्जं वा ण याणति।

[6]मदमूढो दुविहो – दव्वे भावे य। दव्वे मज्जादिएहिं मूढो कज्जाकज्जं वच्चावच्चं गम्मागम्मं ण याणति। भावे अट्ठविहमयमूढो परलोगहियं ण पस्सति ॥३७००॥

अन्नाण कुतित्थिमते, कोहे माणातिमत्तेण वि चेतो।
वियडेण व जो मत्तो, ण वेयती एस बारसमो ॥३७०१॥

---

१ गा० ३६९९। २ गा० ३६९९। ३ गा० ३६९९। ४ सत्थं। ५ गा० ३६९९। ६ गा० ३६९९।

मूढपदे पव्वज्जारिहा भन्नंति –

मोत्तूण वेदमूढं, आदिल्लाणं तु नत्थि पडिसेहो ।
वुग्गाहणमण्णाणे, कसायमूढा तु पडिकुट्ठा ॥३७०२॥

वेदमूढो अणरिहो। वेदपदस्स जे आदिल्ला पदा ते सव्वे अरिहा पव्वज्जाए वुग्गाहण-अन्नाण-कसायमूढा तब्भावणपडिकुट्ठा। मत्तो वि मदत्थो पडिकुट्ठो। वेदवुग्गाहण-अन्नाण-कसाय-मत्तगमूढं च पव्वावेंतस्स चउगुरुगं आणादिया य दोसा अयस अकित्ती य, वितियपदं असिवादी ॥३७०२॥ "मूढे" त्ति गयं ।

इदाणिं "[1]अणत्ते" –

सच्चित्तं अच्चित्तं, व मीसगं जो अणं तु धारेति ।
समणाण व समणीण व, ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥३७०३॥ कंठा

इमे दोसा –

अयसो य अकित्ती या, तम्मूलागं तहिं पवयणस्स ।
अण पोच्चड झंझडिया, सव्वे एयारिसा मण्णे ॥३७०४॥

अणं रिणं, पोच्चडं मइलं, दव्वमइलं चक्कियादिपरिहणं, भावे अण्णाणपोच्चडो। "झंझडिए" त्ति झंझडिया रिणे अदिज्जंते वणिएहिं अणेगप्पगारेहिं दुव्वयणेहिं झडिया झंझडिया, लताकसादिएहिं वा झडिता । सव्वे एयारिसा एते गेण्हणकड्ढणादिया दोसा ॥३७०४॥

इमं वितियपदं –

दाणेण तोसितो वा, अहवा वीसज्जितो पहूणं तु ।
अद्धाणपरविदेसे, दिक्खा से उत्तमट्ठे वा ॥३७०५॥

अद्धपदत्ते दाणेण तोसिएण धणिएण विसज्जितो, "पभु" त्ति धणितो, सव्वम्मि अदिन्ने तेण विसज्जितो पव्वाविज्जति ॥३७०५॥ सेसं कंठं। अणे त्ति गतं ।

इयाणिं [2]जुंगितो –

जाती कम्मे सिप्पे, सारीरे जुंगियं वियाणाहि ।
समणाण व समणीण व, ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥३७०६॥

जातिजुंगितो णियमा कुलेण जुंगितो त्ति तम्हा दो वि एकं पदं ॥३७०६॥

सो जुंगितो चउव्विहो इमो –

चउरो य जुंगिया खलु, जाती कम्मे य सिप्प सारीरे ।
णेक्कारपाणडोंबा, वरुडा वि य जुंगिता जाती ॥३७०७॥

जातिजुंगितो पच्छद्धेण भण्णति। जुगुच्छितो कोलिगजातिभेदो णेक्कारो ।

अण्णे भणंति – लोहकारा हरिएसा मेया पाणा आगासवासिणो डोंबा सुप्पादिया रज्जं करेत्ता वरुडा तंतिवरत्ता उवलित्ता। एते सव्वे जातिजुंगिता ॥३७०७॥

---

१ गा० ३५०७। २ गा० ३५०७।

कम्मजुंगिता –

पोसग-संपर-णड-लंख-वाह-सोगरिग-मच्छिया कम्मे ।
पदकारा य परीसह, रयगा कोसेज्जगा सिप्पे ॥३७०८॥

हत्थी-मयूर-कुक्कुडपोसगा, संपरा ण्हाविगा, सोधगा, णडा णाडगाणि णाडेन्ता, लंखा वंसवरत्तारोहगा, वाहो एग-दुग-तिगादिणो वणुवग्गहत्था, मिगलुद्धगा मिए वागुराहिं वहेत्ता, वागुरिया सुणकारगा, सोगरिगा खट्टिका, मच्छगगाहगा मच्छिक्का, एते कम्मजुंगिता ।

पदकारा चम्मकारा, परीपहा ण्हाविता, वत्थसोहगा रयगा, वेडयकारिणो कोसेज्जा । एते सिप्पजुंगिता ॥३७०८॥

सरीरजुंगिता इमे –

हत्थे पाए कण्णे, नासा उट्ठे विवज्जिया चेव ।
वामणग-वडभ-खुज्जा, पंगुल-कुंटा य काणा य ॥३७०९॥

सर्वगात्रहीनं वामनं, पृष्टतोऽग्रतो वा विनिर्गतसरीरं वडभं, सर्वगात्रमेगपार्श्वहीनं कुब्जं गंतुमसमर्थः, पादजंघाहीनः पंगु, हीनहस्तः कुंटः, एकाक्षः काणः ॥३७०९॥

पच्छा वि होंति विगला, आयरियत्तं न कप्पती तेसिं ।
सीसो ठावेयव्वो, काणगमहिसो य णिण्णम्मि ॥३७१०॥

जदि पच्छा सामण्णभावट्ठितो सरीरजुंगितो हवेज्जा सो अपरिवज्जो, जति सो आयरियगुणेहिं उववेओ तहावि आयरिओ न कायव्वो ।

अह पच्छा आयरितो विगलो हवेज्ज तेण सीसो ठावेयव्वो । अप्पणा अप्पगासभावो चिट्ठति । जो चायरिओ स काणगमहिसो । जहा सो घणे गड्डाए वा अप्पगासे चिट्ठति, तहा गुरू वि । आणादी अयस अकित्तिमादी य दोसा भवंति तम्हा णो दिक्खियव्वो ॥३७१०॥

वितियपदे दिक्खेज्जा –

जाहे य माहणेहिं, परिभुत्ता कम्मसिप्पपडिविरता ।
अद्धाणपरविदेसे, दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥३७११॥

जाहे जातिजुंगितो महायणमाहणेहिं परिभुत्तो ताहे दिक्खिज्जति, कम्म-सिप्पजुंगिता कम्मसिप्पविरता माहणादिभुत्ता तया दिक्खिज्जंति । सरीरजुंगितो अदिक्खियव्वो । उत्तिमट्ठे वा ॥३७११॥ "जुंगिए" गतं ।

इदाणिं "[1]उव्वद्धो" –

कम्मे सिप्पे विज्जा, मंते जोगे य होंति उवचरओ ।
उव्वद्धओ उ एसो, न कप्पए तारिसे दिक्खा ॥३७१२॥

एस पंचविधो उवचरगभावेण वद्धो उपचारकः, प्रतिजागरक इत्यर्थः, ॥३७१२॥

---

१ गा० ३५०७ ।

कम्मे सिप्पे विज्जा, मंते य परूवणा चउण्हं पि ।
गोवालउड्डमादी, कम्मम्मि उ होंति उव्वद्धा ॥३७१३॥

कम्मसिप्पाणं दोण्हं विज्जामंताण य दोण्हं भेयपरूवणा कज्जति । तेणं चउगहणं । अणुवएसपुव्वगं गोपालातिकम्मं, आयरिओवएसपुव्वगं रहगारतुन्नगारादी सिप्पं । लेहादिया सउणरुयपज्जवसाणा बावत्तरि कलाओ विज्जा, देवयसमयनिवद्धो मंतो । अहवा – इत्थिपुरिसाभिहाणा विज्जामंता । अहवा – ससाहणा विज्जा, पढणसिद्धो मंतो । दुगमादि दव्वनियरा विद्देसण-वसीकरण-उच्चाटण-रोगावणयणकरा व जोगा । इत्थ गोपालादीकम्मे छिन्नगा कालतो, मुल्ले गहिते अगहिते वा, काले असंपुन्ने ण कप्पति दिक्खिउं, पुन्ने कप्पति, अच्छिन्नकालतो कए कम्मे गहिते वा अगहिते वा मुल्ले कप्पति ॥३७१३॥

सिप्पाई सिक्खंतो, सिक्खावेंतस्स देति जो सिक्खे ।
गहियम्मि वि सिक्खम्मी, जच्चिरकालं तु ओवद्धो ॥३७१४॥

आदिग्गहणातो विज्जामंतजोगा सिक्खंतो सिक्खवेंतस्स केवगादि दव्वं देति, सो य जति तेण एवं उव्वद्धो जाव सिक्खा ताव तुम ममायत्तो । तम्मि असिक्खिते न कप्पति, सिक्खिए कप्पति । अध एव उव्वद्धो सिक्खिए वि उवरि एत्तियं कालं ममायत्तेण भवियव्वं, तम्मि काले अपुन्ने ण कप्पति पुन्ने कप्पति, ॥३७३४॥

एमेव य विज्जाए, मंते जोगे य जाव ओवद्धो ।
तावति काले ण कप्पति, सेसयकालं अणुण्णातो ॥३७१५॥

अंतरा पव्वावेंतस्स इमे दोसा –

वंध-वहो रोहो वा, हवेज्ज परिताव-संकिलेसो वा ।
ओवद्धगम्मि दोसा, अवण्णसुत्ते य परिहाणी ॥३७१६॥ कंठा

वितियपदं –

मुक्को व मोइतो वा, अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं ।
अद्धाणपरविदेसं, दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥३७१७॥ कंठा ।

गतो उव्वद्धो ।

उव्वद्ध-भयगाणं इमो विसेसो – "कुणतु व संपदं उवद्धो, भयओ पुण भत्तीए घेप्पते ।
उव्वद्धग-भयगाणं, एस विसेसो मुणेयव्वो ॥

इयाणि "[1]भयगो" –

दिवसभयए य जत्ता, कव्वाले चेव होंति उच्चत्ता ।
भयतो चउव्विहो खलु, न कप्पती तारिसे दिक्खा ॥३७१८॥

भयगो चउव्विहो – दिवसभयगो जत्ताभयगो कव्वालभयगो उच्चत्तयभयगो य । एस ताव संखेवतो चउव्विहो वि न कप्पति दिक्खेउं ॥३७१८॥

---

1 गा० ३५०७ ।

एतेसिं चउण्ह वि सरूवमिणं –

दिवसभयओ उ घिप्पति, छिण्णेण धणेण दिवसदेवसियं ।
जत्ता उ होति गमणं, उभयं वा एत्तियधणेणं ॥३७१६॥

काले छिण्णो सव्वदिणं धणं पच्छिण्णं रूवगेहिं तुमे मम कम्मं कायव्वं । एवं दिणे दिणे भयगो घेप्पति । सो दिणे अपुण्णे णो कप्पति पव्वावेतुं ।

इमो जत्ताभयगो – दसजोयणाणि मम सहाएण एगागिणा वा गंतव्वं एत्तिएण धणेण, ततो परं ते इच्छा । अन्ने उभयं भणंति – "गंतव्वं कम्मं च से कायव्वं" ति ॥३७१६॥

इमो कव्वालभयगो –

कव्वाल उड्डमादी, हत्थमितं कम्ममेत्तियधणेणं ।
एच्चिरकालोच्चत्ते, कायव्वं कम्म जं बेंति ॥३७२०॥

कव्वालो, खितिखाणतो उड्डमादी, तस्स कम्ममप्पिणिज्जति, दो तिण्णि वा हत्था छिन्नं अछिन्नं वा एत्तियं ते धणं दाहामि त्ति ।

इमो उच्चत्तभयगो – तुमे ममं एच्चिरं कालं कम्मं कायव्वं जं जं अहं भणामि, एत्तियं ते धणं दाहामि त्ति ॥३७२०॥

इमा जत्ताभयगे पव्वावणविही –

कतजत्तगहियमोल्लं, गहिते अकयम्मि नत्थि पव्वज्जा ।
पव्वावेंते गुरुगा, गहिते उड्डाहमादीणि ॥३७२१॥

कयाए जत्ताए गहिए मोल्ले अगहिए वा कप्पइ पव्वावेउं, गहिए मुल्ले अकयाए जत्ताए णो कप्पति । सेसं कंठं । कव्वालो वि एवं चेव ।

उच्चत्तभयगो वि काले अपुन्ने न दिक्खिज्जति ॥३७२१॥

इयाणि कम्मोबद्धभयगाण य जे कप्पंति न कप्पंति वा ते भंगविगप्पेण विसेसिता भणंति –

छिण्णमछिण्णे व धणे, वावारे काल इस्सरे चेव ।
सुत्तत्थजाणएणं, अप्पाबहुयं तु णायव्वं ॥३७२२॥

पुव्वद्धस्स इमा विभासा –

वावारे काल धणे, छिण्णमछिण्णे व अट्ठ भंगा तु ।
सावित गहिते अकए, मोत्तुं सेसेसु दिक्खंति ॥३७२३॥

छिण्णो वावारो, छिण्णो कालो, छिण्णं धणं, छिण्णं नाम अमुगं कम्मं कायव्वं, एत्तिगं कालं एत्तिएण धणेणं ति । एस पढमभंगो ।

बितियभंगे – धणं अछिण्णं एवं अट्ठभंगा कायव्वा । एतेसिं अट्ठण्हं भंगाणं वावारे छिण्णे अछिण्णे वा काले वि छिण्णाच्छिण्णे सक्खीण पुरतो साविते धणे छिण्णे गहिते अकए य कम्मे न दिक्खंति, सेसेसु दिक्खेंति। ते य सेसा वि चउत्थ-छट्ठभंगा ।

अधवा – "सेस" त्ति-अट्ठसु वि भंगेसु सक्खिपुरतो असाविए धणे छिण्णे अछिण्णे वा अगहिते कए अकए वा कम्मे दिक्खेंति ॥३७२३॥

इदाणि पुणो एयं चेव विसेसेति –

गहिते व अगहिते वा, छिण्णधणे साविए ण दिक्खंति ।
अछिण्णधणे कप्पति, गहिते वा अगहिते वा वि ॥३७२४॥

पढम-ततिय-पंचम-सत्तमे य वावारकालेसु छिण्णाछिण्णेसु सक्खिपुरतो सावितेसु गहिते अगहिते वा छिण्णे धणे ण दिक्खंति ।

किं कारणमुच्यते – सो भणेज्ज – "मए सक्खिपुरतो सावितं" ति, अन्नं च "मए अन्नो वि न गहितो तुज्झ अब्भाए" त्ति । अछिण्णे पुण धणे कप्पति, किं कारणं ? जम्हा मोल्लस्स परिमाणं न कयं, अकते य परिमाणे ववहारो लब्भति ॥३७२४॥

"[1]इस्सरे" त्ति अस्य व्याख्या –

जत्थ पुण होति छिन्नं, थोवो कालो व होति कम्मस्स ।
तत्थ अणिस्सरे दिक्खा, ईसरो बंधं पि कारेज्जा ॥३७२५॥

धणं च छिण्णं, बहुं च कम्मं कयं, थोवं च सेसं, कालो वि थोवो अच्छति, एरिसे कम्मे कप्पति जति अणीसरो तो दिक्खिज्जति । ईसरो पुण थोवं कम्मसेसं बला बंधितुं पि कारावेज्ज ॥३७२५॥

किं कारणं – इस्सरे ण कप्पति । अणीसरे कप्पइ ?

ततो भन्नति –

घेत्तुं समयसमत्थो, रायकुले अत्थहाणि कड्ढंते ।
फेल्लस्स तेण कप्पति, रोद्दोरसवीरिते वा वि ॥३७२६॥

तं पव्वावितं सेहं सो दरिद्दो सयं अप्पणो घेत्तुमसमत्थो । अध सो दरिद्दो रायकुलं गच्छति दूतगेण कड्ढति, तत्थ धणक्खतो भवति, द्रव्याभावात्तं ण करोति फेल्लो दरिद्दो, तस्स तेण कप्पति । इस्सरो पुण कड्ढइ, अभिणिवेसा उक्कोडं (चं) पि दातुं । जो पुण दरिद्दो रौद्रः उरस्सेण वा बलेण जुत्तो मा वधबंधोद्दवणं करेस्सति, तेण फेल्लस्स वि ण कप्पति ॥३७२६॥ "भयगे" त्ति गतं ।

इयाणिं "[2]सेहणिप्फेडिता" –

ततियव्वयाइयारे, णिप्फडग तेणियं वियाणाहि ।
अतिसेसियम्मि भयणा, अमूढलक्खे य पुरिसम्मि ॥३७२७॥

सेहणिप्फेडियं जो करेति सो ततियं वयं अदिण्णादाणवेरमणं अतिचरति । तं केरिसं ? कहं वा णिप्फडेंतो ततियव्वतं अतिचरति ?

---

१ गा० ३७२२ । २ गा० ३५०७ ।

अपडुप्पण्णो बालो, बिअट्ठवरिसूणो अहव अणिविट्ठो ।
अम्मापितु-अविदिण्णो, ण कप्पति तत्थ वऽण्णत्थ ॥३७२८॥

अपडुप्पण्णो अट्ठवरिसो किं वाधिको वा बिअट्ठवरिसूणं वा सोलसवरिसूणं अवंजणजातं ।

अहवा – अणिविट्ठं अविवाहितं एतप्पगारं अम्मापितिअविदिण्णं । तत्थ वा गामे अण्णत्थ णेतुं ण कप्पति पव्वावेतुं । अह णिप्फेडे तो तं णिप्फेडगतेणं वियाणाहि ॥३७२८॥

इमे एत्थ तेणगविगप्पा –

तेणे य तेणतेणे, पडिच्छगपडिच्छगे य णायव्वे ।
एते तु सेहणिप्फेडियाए चत्तारि उ विगप्पा ॥३७२९॥

इमं वक्खाणं –

जो तं तु सयं णेती, सो तेणो होति लोगउत्तरिते ।
भिक्खातिए गतम्मि उ, हरमाणो तेणतेणो उ ॥३७३०॥

अपडुप्पन्नं बालं हरंतो तेणो । स तेणो तं सेहं बाहिं गामादियाण ठवेत्ता अप्पणा भिक्खस्स पविट्ठो, एत्थंतरे जो तं सेहं अण्णो उप्पोसेत्ता हरति सो तेणतेणो ॥३७३०॥

तं पुण पडिच्छमाणो, पडिच्छतो तस्स जो पुणो मूला ।
गेण्हति एगंतरितो, पडिच्छगपडिच्छगो सो उ ॥३७३१॥

तेणस्स तेणतेणस्स वा जो पडिच्छति स पडिच्छगो, पडिच्छगस्स जो पुणो अन्नो पडिच्छाति स पडिच्छगपडिच्छगो भण्णति । इह संतरमेव एगंतरं भण्णति ।

अन्ने भणंति – "गेण्हति एगंतरिउ" त्ति, तेणस्स पडिच्छमाणो तेणपडिच्छओ एक्केक्केण अंतरिता पडिच्छगा भवंतीत्यर्थः ॥३७३१॥ सेहणिप्फेडियं करेंतस्स चउगुरुं ।

आणादी दोसा इमे य –

अम्मा पियरो कस्स ति, विपुलं घेत्तूण अत्थसारं तु ।
रायादीणं कहए, कहियम्मि य गिण्हणादीया ॥३७३२॥ कंठा

विप्परिणमेव सण्णी, कोई संबंधिणो भवे तस्स ।
विप्परिणता य धम्मं, मुएज्ज कुज्जा व गहणादी ॥३७३३॥

सेहमवहडं नातुं सन्नी विपरिणमेज्जा, सेहस्स वा संबंधी ते य विपरिणता धम्मं मुएज्ज, रायमादिएहिं वा गहणादि कारवेज्जा ॥३७३३॥

णिप्फेडणे सेहस्स तु, सुयधम्मो खलु विराहितो होति ।
सुयधम्मस्स य लोवा, चरित्तलोवं वियाणाहि ॥३७३४॥

आयरिय उवज्झाया, कुलगणसंघो तहेव धम्मो य ।
सव्वे वि परिच्चत्ता, सेहं णिप्फेडयंतेणं ॥३७३५॥

रायादि रुट्ठो स तेसिं कडगमद्दं करेज्ज । तम्हा मातापित्रेण अदत्ता सेहणिप्फेडिया ण कायव्वा ॥३७३५॥

वितियपदेण य करेज्जा ।

"[1]अतिसेसगम्मि भयणे" त्ति अस्य व्याख्या –

> होहिति जुगप्पहाणो, दोसा य न केयि तत्थ होहिंति ।
> तेणऽतिसेसी दिक्खे, अमोहहत्थो उ तत्थेव ॥३७३६॥

जो ओहिमादिअतिसयणाणी जाणति एस नित्थारगो जुगप्पहाणो होहिति दोसा य ण केति भविस्संति, तेण अतिसयी दिक्खंति । अह जाणाति होहिति दोसा तो ण पव्वावेति । एस भयणा ।

अमूढलक्खो वा आयरिओ अमोहहत्थो जं सो पव्वावेति सो अवस्सं णित्थरति न य केति दोसा उप्पज्जंति तं च नान्यत्र नयन्तीत्यर्थः ॥३७३६॥ सेहणिप्फेडिता [2]अट्ठारस पुरिसेसु त्ति गतं ।

इयाणिं [3]णपुंसया दस – ते पुरिसेसु चेव वुत्ता नपुंसगदारे ।
जे जति पुरिसेसुं वुत्ता ते चेव इहं पि । किं कतो भेदो ?
भन्नति – तहिं पुरिसाकिती, इह गहणं सेसयाण भवे ।
इयाणिं "[4]वीसं इत्थीओ, तस्स वालादी अट्ठारस इत्थीतो जहा पुरिसा ।

इयाणिं गुव्विणी वालवच्छा य –

> जे केइ अणलदोसा, पुव्वं भणिता मए समासेणं ।
> ते चेव अपरिसेसा, गुव्विणि तह वालवच्छाए ॥३७३७॥

जे एते हेट्ठा अणलाणं वालादी दोसा वन्निया ते गुव्विणी वालवच्छाए भाणियव्वा । कहं ? उच्यते – गुव्विणीए वालदोसो भविस्सो, वालवच्छाए पुण वट्टमाणो चेव वालदोसो, नपुंसगा वि ते होज्जा ॥३७३७॥

सेसा वि भइयव्वा इमे मोत्तुं –

> मोत्तूण णवरि वुड्ढं, सरीरजड्डं च चोरमवगारिं ।
> दासमणत्तं च तहा, ओवद्धाती य जे पंच ॥३७३८॥

उव्वद्धाइ पंच इमे – उव्वद्धगो भयगो सेहणिप्फेडिया गुव्विणी वालवच्छा य । एतेसु सव्वेसु न भवंति ॥३७३८॥

> अवसेसा पुण अणला, भइयव्वा तह य गुव्विणी य भवे ।
> कायभवत्थो विंबं, विकित वेयणम्मि व मरेज्जा ॥३७३९॥

अविसेसा सिय अत्थि सिय नत्थि । इमे गुव्विणीते चेव दोसा, स्त्रीकाये भवति आस्या कायभवस्थो उक्कोसेण द्वादशवर्षाणि गर्भत्वेन तिष्ठतीत्यर्थः । हस्त-पाद-कर्ण-नासाक्षिविवर्जितं बिंबं मृगावती पुत्रवत्, वैकृतं सर्पादिवत् भवेत्, पसवकाले वेदणाए वा मरेज्ज ॥३७३९॥

---

१ गा० ३७२७ । २ गा० २२७ । ३ गा० २२७ । ४ गा० ३५०७ ।

एतेसामण्णतरं, अणलं जो णायगाइ पव्वावे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥३७४०॥ कंठा

अणलं पव्वावेंतस्स इमं पच्छित्तं –

तेणे कीवे रायाऽवगारिदुट्ठे य जुंगिते दासे ।
सेहे गुव्विणि मूलं, सेसे चतुरो सवित्थारा ॥३७४१॥

"सेहे" त्ति सेहणिप्फेडिया एएसु जहुद्दिट्ठेसु मूलं, सेसेसु सव्वेसु चउगुरुगा सवित्थारा ॥३७४१॥

अहवा – अन्नपरिवाडीते इमं भन्नइ –

अहवा –

कीवे दुट्ठे तेणे, गुव्विणि रायावगारि सेहे य ।
मूलं चउ पारंची, मूलं वा होति चउगुरुगा ॥३७४२॥

कीवे मूलं दुट्ठादिएसु चउसु पारंचियं ।

अहवा – दुट्ठादिएसु चेव चउसु मूलं,तेणे व चउगुरुगा ॥३७४२॥

सुत्तणिवातो एत्थं, चउगुरुयं जेसु होति ठाणेसु ।
उच्चारितत्थसरिसा, सेसा तु विकोवणट्ठाए ॥३७४३॥

बाले वुड्ढे किवे, जड्ड मत्ते य जुंगियसरीरे ।
गच्छे पव्वइयाणं, संवासो एगतो भइतो ॥३७४४॥

बालवुड्ढा कारणे पव्वाविया, कीवो अभिभूतो, सरीरजड्डो, उम्मत्तो, सरीरजुंगितो, अदंसणो, एते सव्वे पव्वाविया संता एरिसा जाता । एतेसिं संवासो एक्कतो चेव, न पुढो । जदि ते अण्णवसहीए ठविज्जंति तो ते विसादं गच्छंति, तम्हा गच्छगता चेव विधीए परियट्टिज्जंति ।

गुव्विणी कहंचि अणाता पव्वाविता जहा – करकंडुमाता पउमावती ।

पडिणीएण वा जहा पेढालेण जेट्ठा । सा विहीए भावितसड्ढकुलेसु संगुप्पति, सड्ढा णिसेसवट्टमाणिं च वहंति, अंतरंतरे साहवो य ॥३७४४॥

जिणवयणपडिक्कुट्ठे, जो पव्वावेति लोभदोसेणं ।
चरितट्ठी य तवस्सी, लोवेति तमेव तु चरित्तं ॥३७४५॥

अडयालीसं पडिकुट्ठा सिस्सलोभेण अप्पणो चरित्तवुड्ढिणिमित्तं परो पव्वावितो अप्पणो वि चरित्तघायं करेंति ॥३७४५॥

इमं वितियपदं –

पव्वाविओ सियत्ति य, सेसं पणगं अणायरणजोग्गं ।
अहवा समायरंतो पुरिमपदनिवारिते दोसे ॥३७४६॥

जति अणलो पव्वावितो "सिग्र" त्ति अजाणया जाणया वा कारणेण सेसं पणगं णायराविज्जति। तं च इमं मुंडावण सिक्खावण उट्ठावण संभुंजण संवासे त्ति। सो एयस्स पणगस्स णायरणजोगो। अध आयरा-वेति तो पव्वावणपदे पुव्ववन्निए दोसे पावति –

जत्थ जत्थ चउगुरु तत्थ तत्थ सुत्तणिवातो। सेसा पच्छित्ता सीसविकोवणट्ठा कहिया ॥३७४६॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा अणलं उवट्ठावेइ उवट्ठावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

नायगमनायगं वा, सावगमस्सावगं तु जे भिक्खू।
अणलमुवट्ठावेई, सो पावति आणमादीणि ॥३७४७॥

सूत्रार्थः पूर्ववत्। अणलं उव्वट्टावेंतस्स आणादी दोसा चउगुरुगं च। चिट्ठउ ताव उवट्ठावणाविही। पव्वावणाविही ताव णाउमिच्छामि ॥३७४७॥

पुच्छा[1] सुद्धे[2] अट्ठा[3], वा सामाइयं च तिक्खुत्तो।
सयमेव उ कायव्वं, सिक्खा य तहिं पयत्तेणं ॥३७४८॥

जाव उवट्ठाति पव्वज्जाए सो पुच्छिज्जति – "कोसि तुमं, किं पव्वयसि, किं च ते वेरग्गं? एवं पुच्छितो जति अणलो ण भवति तो सुद्धो पव्वज्जाए कप्पणिज्जो।

ताहे से इमा साहुचरिया कहिज्जति ॥३७४८॥

गोयरमचित्तभोयणसज्झायऽण्हाणभूमिसेज्जादी।
अब्भुवगय थिरहत्थो, गुरू जहण्णेण तिण्णट्ठा ॥३७४९॥

गोयरे त्ति दिणे दिणे भिक्खं हिंडियव्वं। जत्थ जं लब्भइ तं अचित्तं घेत्तव्वं, तं पि एसणादि-सुद्धं, आणियं पि बालवुड्ढसेहादिएहिं सह संविभागेण भोत्तव्वं। निच्चं सज्झायज्झाणपरेण होयव्वं। सदा अण्हाणगं, उदुवद्धे सया भूमिसयणं, वासासु फलगादिएसु सोतव्वं। अट्ठारससीलंगसहस्सा धरेयव्वा, लोयादिया य किलेसा अणेगे कायव्वा। एयं सव्वं जति अब्भुवगच्छति तो पव्वावेयव्वो ॥३७४९॥ एसा पव्वावणिज्जपरिक्खा पव्वावणा भण्णति।

इयाणिं "मुंडावणा" – सोहणे दिवसे चेतियाण पुरओ पव्वावणिज्जं। अप्पणो वामगपासे ठवित्ता चेइए वंदित्ता परिहियचोलपट्टस्स रयहरणं देंति।

ताहे "[2]अट्ट" त्ति अस्य व्याख्या – जो थिरहत्थो आयरितो तिन्नि अट्ठातो गेण्हति, समत्थो वा सव्वं लोयं करेति, असति आयरियस्स थिरहत्थस्स, अन्नो पव्वावेति ॥३७४९॥

थिरहत्थो तस्स लोयकरणं सामाइयं च इमेरिसे ठाणे कज्जति –

दव्वादी अपसत्थे, मोत्तु पसत्थेसु फासुगाहारं।
लग्गाति व तुरंते, गुरुअणुकूले बऽहाजायं ॥३७५०॥

---

१ गा० ३७४६। २ गा० ३७४८।

अट्ठिमादि अप्पसत्थदव्वा, ऊसरमादि अप्पसत्थखेत्तं, रित्तातिहिमादी अप्पसत्थकालो, विट्ठिमादी अप्पसत्थो भावो। एते अप्पसत्थे मोत्तुं पसत्थेसु दव्वादिएसु पव्वाविज्जति। तस्स गुरुणो य अणुकूलेसु तारा-बलचंद्रबलेसु। जाव य दव्वादिया पसत्था ण लब्भंति ताव फासुगाहारं धरेंति। सन्नातगभया वा तुरंतो पसत्थलग्गबलेण पव्वावविज्जति। उभयसाहगे अलब्भमाणे गुरू अणुकूले पव्वाविज्जति। "अहजातेण" त्ति सणिसेज्जं रयोहरणं मुहपोत्तिया चोलपट्टो य एयं अहाजातं दातुं वा। (सूरी सेहं विज्जाए अभिमंतइ सत्तवारा)

वामपासट्ठियस्स आयरितो भणाति – इमस्स साधुस्स सामाइस्स आरुहावणं करेमि काउस्सग्गं।

अण्णे भणंति – उच्चारावणं करेमि; उभयधा वि अविरुद्धं, अन्नत्थूससिएणं जाव वोसिरामि त्ति, लोगस्सुज्जोयगरं चिंतित्ता णमोऽरहंताणं ति पारित्ता, लोगस्सुज्जोयगरं कड्ढित्ता पच्छा पव्वावणिज्जेण सह सामाइयसुत्तं तिक्खुत्तो कड्ढति, पच्छा सेहो इच्छामि खमासमणो त्ति वंदति।

वंदिय पुव्वुट्ठितो भणाति – "संदिसह किं भणामो" ? गुरुवयणं "वंदित्ता पवेदेहि",

ताहे वंदिय पच्चुट्ठितो भणाति – "तुम्हेहिं मे सामाइयं आरुहियं, इच्छामि अणुसट्ठिं।" गुरुवयणं – 'नित्थारगपारगो गुरुगुणेहिं वड्ढाहि" त्ति ॥३७५१॥

तिगुणपयाहिणपादे, नित्थारो गुरुगुणेहि वड्ढाहि।
अणहिंडंते सिक्खं, सम्मयणीतेहि गाहेंति ॥३७५१॥

ताहे वंदति, वंदित्ता णमोक्कारमुच्चारंतो पयाहिणं करेति, पादेसु णिवडति। एवं बितियं ततियं च वारा। ताहे साधूण णिवेदाविज्जति।

एक्केक्कस्स तरंतो वा समुदिताण वंदिउं सो भणाति – "गुरुहिं आरुहियं मे सामाइयं, इच्छामि अणुसट्ठिं"।

ते भणंति – "नित्थारगपारगो होहि, आयरियगुणेसु वड्ढसु" एसा मुंडावणा।

इयाणिं [1]सिक्खा "[2]सिक्खा य तहिं पयत्तेणं" ति, सा दुविहा – आसेवण-गहणसिक्खा य। दुविहं पि सिक्खं अणहिंडंतो गाहिज्जति।

को तं गाहेति ? जे तस्स सम्मता णीता य ते गाहिंति, तेसिं असति अणीतो वि सम्मतो, तेसिं पि असति अण्णो वि गाहेति। एते एक्केक्के वितहं करेमाणो चउलहु[3]। सिक्खा य गाहा ॥३७५१॥

इयाणिं "[4]उवट्ठावणा" –

अप्पत्ते[1] अकहित्ता[2], अणभिगत[3]ऽपरिच्छ[4]तिक्कमे पासे[5]।
संथरणे हिंडावण, एक्केक्के हुंति चउगुरुगा ॥३७५२॥

"अप्पत्ते" त्ति अस्य व्याख्या –

अप्पत्तं उ सुतेणं, परियाए उट्ठवेंते चउगुरुगा।
आणादी कायवहो, ण य पढति अकप्पिओ जं च ॥३७५३॥

---

१ गा० ३७४६ चू०। २ गा० ३७४६। ३ गुरु। ४ गा० ३७४६ चू०।

पुव्विं जाहे सत्यपरिण्णा सुत्ततो अधीता ताहे उवट्ठावणापत्तो भवति । दसवेयालियमुप्पत्ति-कालतो पुण जाहे छज्जीवणिया अधीता तं जो सुत्तेण अप्पत्ते पव्वज्जापरियाते उवट्ठवेति तस्स उवट्ठवेंतस्स चउगुरुं तवकालेहिं दोहिं गुरुगं। उच्चे ट्ठावणा उत् प्रावल्येन वा ठावणा उट्ठावणा । "आणादी" विराधणा, अयाणंतो वा छज्जीवनिकाए वहेति, "उट्ठावितोमि" त्ति सेसं ण पढति, अपढंतो य पिंडादियाण अकप्पितो, तेणाणियस्स य परिभोगे पच्छित्तं जं तं च पावति, उवट्ठवेंतो न वेयावच्चं करिज्जति "अकप्पिउ" त्ति ॥३७५३॥

"[1]अकहेत्ता" अस्य व्याख्या –

सुत्तत्थे अकहेत्ता, जीवाजीवे य पुण्ण पावं च ।
उवट्ठाणे चउगुरुगा, विराहणा वहुगजाणंते ॥३७५४॥

सुत्तस्स अत्थो सुत्तत्थो, इमे पुढवादिया जीवा, इमे धम्मादिया अजीवा,. आसवो, वंधो, पुण्णं, पावं, संवरो, णिज्जरा, मोक्खो, नवपयत्था समेदा कम्मवंधभेदहेतवो कहेति । जो एवं सुत्तत्थं अकहेत्ता उवट्ठावेंतस्स चउगुरुं तवगुरुं, अत्थं च असुणेंतो वहुविहं विराहणं करेति, सा य अप्पत्तसुत्त भणिया ॥३७५४॥

"[2]अणभिगते" त्ति अस्य व्याख्या –

अणभिगयपुण्णपावं, उवट्ठवेंतस्स चउगुरू होंति ।
आणादिणो विराहण, मालाए होति दिट्ठंतो ॥३७५५॥

पुण्णपावग्गहणातो नवपयत्था गहिता, अणभिग्गाहिता जस्स णो सद्दहति त्ति णेयगहणत्तणेण वा कहिज्जमाणे णो लद्धा तं च उवट्ठावेति तस्स चउगुरुं कालगुरुं । आणादी दोसा । असद्दहंतो वा छज्जीव-निकायविराहणं करेज्ज । सो य महव्वयाण अजोग्गो ।

कहं दिट्ठंतो होति मालाए ? – जहा पंचवण्णसुगंधपुप्फमाला पउमुप्पलोवसोभिया उद्ध-सुक्कखाणु मालइता ण सोभति तहा पंचमहव्वयमाला सभावेणोवसोभिता तस्स न सोभति ॥३७५६॥

"[3]अपरिच्छि" त्ति अस्य व्याख्या –

उल्लम्मि य पारिच्छा, अभिगए णाऊण तो वए देंति ।
एक्केक्कं तिक्खुत्तो, जो ण कुणति तस्स चउगुरुगा ॥३७५६॥

उल्लम्मि य परिच्छति एस आउक्काते परिच्छा गहिता, तदग्रहणातो सेसकाएसु वि परिच्छा कायव्वा ॥३७५६॥

जतो भण्णति –

उच्चाराति अथंडिल, वोसिरठाणादि वा वि पुढवीए ।
नदिमादि दगसमीवे, सागणि उद्दित्त तेउम्मि ॥३७५७॥

जदा उच्चारपासवणं करेति तदा से अथंडिलं सचित्ता य पुढवि दंसिज्जति । "एत्थ वोसिराहि" त्ति । एवं उद्दट्ठाण-णिसीय-तुयट्टणं करेंतस्स जति णेच्छति तो सद्दहति ।

---

१ गा० ३७५२ । २ गा० ३७५२ । ३ गा० ३७५२ ।

अह तं असत्थोवहतं दट्ठूं ण विमंसति तो णज्जति अणभिगतो आउक्काएण त्ति । तलागादीणं उदगसमीवे उल्लपुढवीए एवं चेव परिच्छा । तेउक्काए सागणीए वसहीए ठायंति, तत्थ भण्णति – पदीवं उस्सक्केहि, वास-सीते उदिते पयावेहि त्ति भण्णति ॥३७५७॥

वियणऽभिधारण वाते, हरिते जह पुढविए तसेसुं च ।
एमेव गोयरगते, होति परिच्छा उ काएसु ॥३७५८॥

वाते धम्मत्तो भण्णति–वियणं तालवेंटादिणा विएहि, इतो वातं एहि अभिधारणं करेहि । हरियतसेसुं जहा पुढवीए परिच्छा । एवं भिक्खागतो पि काएसु परिच्छिज्जति । ससरक्खुदउल्लेहिं हत्थेहिं अगणिसंघट्टणं हरिततसगतहत्थातो य भिक्खं गिण्हाविज्जति । यत्राग्निः तत्र वायुः । उण्णं वा शीतीकृत्य दाप्यते । एवं अपरिच्छित्ता जे उवट्ठवेति तस्स चउगुरुं दोहिं वि लहुं । पत्ते कहितत्थे अभिगतत्थे परिच्छितत्थे णातुं पत्ते देंते ।

"[1]पासे" त्ति उवट्ठाविज्जमाणे आयरिओ अप्पणो वामपासे ठवेति, अन्नहा चउगुरुं । जति अत्थि ताहे चेतिए वंदित्ता महव्वयकहणा य काउस्सग्गं करेति, तत्थ चउवीसत्थयं चिंतेति, णवक्कारेण पारेत्ता चउवीसत्थयं फुडवियडं वायाते कड्ढित्ता ताहे महव्वयउच्चारणं करेंति । सव्वत्थ पि तहेव चउगुरु ।

"[2]इक्कमे" त्ति अस्य व्याख्या – "एक्केक्कं तिक्खुत्तो" पच्छद्धं कंठं । एक्केक्कं महव्वयं ततो वारा अतिक्कमति ।

अण्णे भणंति – ततो वारा अपुरेत्ता अतिक्कमंतस्स चउगुरुं । जति [3]संथरणे हिंडावेति तो चउगुरुं ॥३७५८॥

सा उवट्ठावणा इमेरिसे कायव्वा –

दव्वातिसाहए ता, तहेव ण तु गंतु उवरिमे हेट्ठा ।
दुविहा तिविहा य दिसा, आयंबिल जस्स वा जं तु ॥३७५९॥

दव्व-खेत्त-काल-भावपसत्थेसु तारा-चंद-बलेसु य साहगेसु सेसं वंदण-निवेयण-नित्थारग-पयाहिणकरण-साधुणिवेदणं च जहा सामातिए तहेव कायव्वं, णो पंच महव्वए सइं कढित्ता पुणो हेट्ठा दो ततियं वारा कड्ढति, किंतु एक्केक्कं वतं तिन्नि वारा कढिज्जति । जाहे सम्मत्ता उवट्ठावणा ताहे उवट्ठावियस्स साधुस्स आयरियउवज्झाया दुविहा दिसा दिज्जति ।

इत्थियाए तइया – पवत्तिणीदिसा दिज्जति । जद्दिवसं उवट्ठावितो तद्दिवसं केसिं चि अभत्तट्ठो भवति, केसिंचि निव्वितियं, केसिं चि आयंबिलं, केसिं चि न किं चि । जस्स वा जं आयरियपरंपरागतं छट्ठट्ठमातियं कारविज्जति । एसा उवट्ठावणा ।

इयाणिं "[4]संभुंजणा" – जतो मंडलिसंभोगट्ठा सत्त आयंबिले कारविज्जति, णिव्वितिए वा, जस्स वा जं आयरियस्स परंपरागयं ॥३७५९॥

बितियपदेण अपत्तं अकधित्ता वि उवट्ठाविज्जति –

बितियपदं संबंधी, कक्खड वहिभाव ओम संवासे ।
पत्तं व अपत्तं वा, अणलमुवट्ठावते भिक्खू ॥३७६०॥

बितियपदेण सुत्तेण अपत्तं पि उवट्ठवेज्ज ।

---

१ गा० ३७५२ । २ गा० ३७५२ । ३ गा० ३७५२ । ४ गा० ३७४६ ।

सो संबंधी सयणिज्जग्रो पुत्तादी, जदि सो एवं चिंतिज्जा –

भुंजिसु मए सद्धिं, इयाणि णेच्छंति सा हु वहिभावं ।
अहियं खंति व ओमे, पच्छण्णं जेण भुंजंति ॥३७६१॥

पुव्वं गिहवासे मए सद्धिं एगभायणे भुंजिसु. इयाणिं एगभायणे भोत्तुं णेच्छंति, जति एएण कारणेण सुट्ठु वहिभावं [1]कक्खडं गच्छति तो अपत्तंपि सुएण उवट्ठवेंति ।

"[2]ओम" त्ति अस्य व्याख्या – तं अणुवट्ठवियं मंडलीए [अणोयवियं] पुव्वं भुंजावित्ता वाहिं णीणंति, सो तत्थ णीणिग्रो चिंतेति – ममं णीणित्ता अप्पणा किं पि अहियं खायंति जेण पच्छण्णे भुंजंति । जति एतेण कारणेण कक्खडं वहिभावं गच्छति ॥३७६१॥

ग्रहवा – "ओमि" त्ति किं चि सुंदरं पडुप्पण्णं अणेसणिज्जं "सेहस्स दिज्जिहिति" त्ति तं गहियं, तं च तस्स दिण्णं सो भणेज्ज – एयं आयरियपायोग्गं किं मम दिज्जति ?

तत्थ कोति भणेज्जा –

तव कप्पति ण तु अम्हं, अणुवट्ठवितस्सऽणेसियं सिट्ठे ।
जति गच्छति वहिभावं, अणुलोमा उड्डवट्ठवणा ॥३७६२॥

तव अणुवट्ठवियस्स एयं कप्पति, ण उ अम्हं, ताहे सो चिंतेति "अस्समणो हं किमेत्थ अच्छामि", जति सो कक्खडं वहिभावं गच्छेज्जा तो अणुलोमेहिं पन्नवेत्ता पच्चाउट्ट अपत्तं चेव उवट्ठवेंति ॥३७६२॥

अहवा –

वासादिसु वा ठाओसि णत्थि वहि अंतो भुज्जमाणेसु ।
संवासो तु न कप्पति, एगस्सऽणलं पि तु ठवेंति ॥३७६३॥

अणुवट्ठवित्तो त्ति मंडलीए ण भुंजति, सागारिउ त्ति वा कातुं पुव्वभुत्तो वाहिं ठविज्जति, वहिं पि वासासु वासंते मंडवियादि ट्ठाणं णत्थि, भुंजताण वा सागारिउ त्ति अप्पत्तं चेव उवट्ठवेंति ।

"[3]संवासे" त्ति अस्य व्याख्या – पच्छद्धं । अणुवट्ठवितेण सह एगट्ठं संवासो ण कप्पति, तस्स य पुढो वसंतस्स वासासु उदुवद्धे वा वसही सहाग्रो वा णत्थि, पुढो य एगस्स वसितुं ण कप्पति, इत्थिमादि दोसा भवंति, तम्हा एवमादिकारणेहिं पत्तापत्तस्स वा अणलस्स अज्झयणुद्देसणादीं कातुं उवट्ठावेउं संभुंजेज्ज संवासेज्ज वा ॥३७६३॥

इयाणिं पत्तं जति अतिक्कामेति – जत्तियाणि दिवसाणि अतिक्कामेति तत्तियाणि दिवसाणि चउगुरुगादि पच्छित्तं । सत्तरत्तं तवो गाहा ।

वितियपदेण अतिक्कामेज्जा ण दोसो –

पिय-पुत्त खुड्ड-थेरे, खुड्डगथेरे अपावमाणम्मि ।
सिक्खावण पण्णवणा, दिट्ठंतो दंडिगादीहिं ॥३७६४॥

दो पिता पुत्ता पव्वतिया, जति ते दो वि जुगवं पत्ता तो जुगवं उवट्ठाविज्जंति । अह "खुड्डे" त्ति खुड्डे सुत्तादीहिं अपत्ते, "थेरे" त्ति थेरे सुत्तादीहिं पत्ते थेरस्स उवट्ठावणा । "खुड्ड" त्ति जदि पुण

१ गा० ३७६० । २ गा० ३७६० । ३ गा० ३७६० ।

खुड्डगो सुत्तादीहिं पत्तो थेरे पुण अपावमाणम्मि तो जाव सुज्झंतो उवट्ठावणादिणो एति ताव थेरो पयत्तेण सिक्खाविज्जति, जदि पत्तो तो जुगवं उवट्ठाविज्जंति ॥३७६४॥

अह तहावि ण पत्तो थेरो, ताहे इमा विही –

थेरेण अणुण्णाए, उवट्ठऽणिच्छे ठवेंति पंचाहं ।
ति पण परमणिच्छे वी, वत्थुसभावे य जाऽहीयं ॥३७६५॥

थेरेण अणुण्णाए खुड्डं उवट्ठावेंति ।

अह णेच्छति ताहे थेरो पण्णविज्जति "[1]दंडियदिट्ठंतेण", आदिसद्दातो अमच्चादी । जहा-एगो राया रज्जपरिब्भट्ठो सपुत्तो अण्णं रायाणं उलग्गिउमाढत्तो । सो रायपुत्तस्स तुट्ठो । तं से पुत्तं रज्जे ठवेतुं इच्छति, किं सो पिता णाणुजाणाति ? एवं तव जदि पुत्तो महव्वयरज्जं पावति, किं न मन्नसि ? एवं पि पन्नवितो जदि नेच्छति ताहे ठंति पंचाहं, पुणो वि पन्नविज्जति, अणिच्छे पंचाहं ठंति, एवं तिपण कालेण जदि पत्तो तो जुगवं उवट्ठावणा । अओ परं थेरो अणिच्छेति खुड्डो उवट्ठाविज्जति ।

अहवा – "वत्थुसभावे वि जाऽधीतं" ति वत्थुस्स सहावो वत्थुस्सभावो माणी "अहं पुत्तस्स ओमतरो होज्जामि" त्ति उन्निक्खमेज्जा, गुरुस्स खुड्डुस्स वा पदोसं गच्छेज्जा, ताहे तिण्ह पंचाहाण परतो वि संचिक्खाविज्जति जाव अधीयं ति ॥३७६५॥

अह दो पिता पुत्ता जुवलगाणि तो इमा विही –

दो थेर खुड्ड थेरे, खुड्डगथेरे अपावमाणम्मि ।
रण्णो अमच्चमादी, संजतिमज्झे महादेवी ॥३७६६॥

दो थेरा सपुत्ता समग पव्वाविता, "एत्थ दो थेरे" त्ति दो वि थेरा पत्ता ण ताव खुड्डगा, थेरा उवट्ठावेयव्वा । "खुड्डग" त्ति दो खुड्डा पत्ता ण थेरा, एत्थ वि पन्नवणविधी तहेव । "थेरखुड्डगो" त्ति-दो थेरा खुड्डगो य एगो एत्थ उवट्ठावणा, अह दो खुड्डा थेरो य एगो पत्तो, एगे थेरे अपावमाणम्मि॥३७६६

इत्थ इमं गाहासुत्तं –

दो पत्त पिया पुत्ता, एगस्स उ पुत्तो पत्त ण उ थेरो ।
गहितो स पंच वियरति, राइणिओ होउ एस वि ता ॥३७६७॥

पुव्वद्धं कंठं । आयरिएहिं वसभेहिं वा पन्नवणं गाहितो वितरति, सयं वा वितरति, ताहे खुड्डगो उवट्ठाविज्जति, अणिच्छे रायदिट्ठंतं पन्नवणा तहेव, इमो विसेसो ।

सो अपत्तथेरो भण्णति – एस ते पुत्तो परममेधावी एत्तो उवट्ठाविज्जउ, जइ तुमं न विसज्जेसि तो एते दो वि पिता पुत्ता रातिंणिता भविस्संति, तं एयं विसज्जेहि, एस वि ता होउं एतेसिं राइणिउ त्ति । अतो परं अणिच्छे तहेव विभासा ।

इयाणिं [2]पच्छद्धं – रण्णो अमच्चो य समगं पव्वाविता जहा पिता पुत्ता तहा असेसं भाणियव्वं ।

---

[1] गा० ३७६४ । [2] गा० ३७६६ ।

आदिग्गहणेणं सेट्ठिसत्थवाहाणं रन्ना सह भाणियव्वं । संजतिमज्झे वि दोण्हं माताधितीणं, दोण्ह य माताधिती जुवलयाणं, महादेवी अमच्चीण य, एवं चेव सव्वं भाणियव्वं ॥३७६७॥

राया रायाणो वा, दोण्णि वि समपत्त दोसु ठाणेसु ।
ईसर सेट्ठि अमच्चे, निगम घडा कुल दुवे चेव ॥३७६८॥

रायारायाणो त्ति एगो राया, बितिओ रायराया सम पव्वाइया । एत्थ वि जहा पितापोत्ताणं तहा दट्ठव्वं, एतेसिं जो अहियरो रायादि इतरम्मि अमच्चादिए ओमे पत्ते उवट्ठाविज्जमाणे अपत्तियं करेज्जा, पडि भज्जेज्ज वा, दारुणसभावो वा उदुरुसेज्जा, ताहे सो अप्पत्तो वि इतरेहिं समं उवट्ठाविज्जति ॥३७६८॥

एएहि कारणेहिं, अज्झयणुद्देसमाइए काउं ।
अणधीए वि कहेत्ता, उवट्ठावेऊण संभुंजे ॥३७६९॥

अहवा – राइत्ति जत्थ एगो राया सो अमच्चादियाण सव्वेसिं राइणितो कज्जति । रायाणो त्ति दुप्पभिति रायाणो समं पव्वइया समं च पत्ता ते उवट्ठाविज्जंता समराइणिया कायव्वा त्ति दोसु पासेसु ठाविज्जंति ॥३७६९॥

एसेवऽत्थो भणति –

समगं तु अणेगेसू, पत्तेसू अणभिओगमावलिया ।
एगतो दुहतो व ठिता, समराइणिया जहासण्णा ॥३७७०॥

पुत्तादिसंबंधिणो असंबंधेसु बहूसु समगं उवट्ठाविज्जमाणेसु गुरुणा अन्नेण वा अभियोगो न कायव्वो "इओ इओ वाह" त्ति । एवं एगतो दुहतो वा ठितेसु जो जहा गुरुस्स आसण्णो सो तहा जेट्ठो उभयपासट्ठियसमा समराइणिया । एवं दो ईसरा, दो सेट्ठी, दो अमच्चा, "[1]निगम" त्ति दो वणिया, "घड" त्ति – गोट्ठी दो गुट्ठीओ गोट्ठिया वा पव्वतिया, दो महाकुलेहिंतो पव्वइया, सव्वे समा समगातिणिया कायव्वा, एतेसिं चेव पुव्वपत्तो, पुव्वं चेव उवट्ठावेयव्वा ॥३७७०॥

ईसिं अधोणता वा, वामे पासम्मि होति आवलिया ।
अहिसरणम्मि उ वड्ढी, ओसरणे सो व अन्नो वा ॥३७७१॥

ते उवट्ठाविज्जमाणा गुरुणो वामपासे ठितो एगो अणेगा वा ईसिं अधो ओणता – गजदंतवत् अवनता इत्यर्थः । "अहिसरणे" त्ति ते जदि गुरुं तेण अग्गतो अभिसरंति तो गच्छवुड्ढी–अन्योऽपि प्रव्रजतीत्यर्थः ।

अह पच्छतो बाहिरेण वा ओसरंति तो सो वा अन्नो वा उन्निक्खमति, ओदाथि वा एयं निमित्तं ॥३७७१॥

जे भिक्खू नायगेण वा अनायगेण वा उवासएण वा अणुवासएण वा अणलेण वेयावच्चं कारावेइ, कारावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

कारवेंतस्स चउगुरुं पच्छित्तं आणादिया य दोसा ॥

पुव्वं चिय पडिसिद्धा, दिक्खा अणलस्स कहमियाणिं तु ।
वेयावच्चं कारे, पिंडस्स अकप्पिए सुत्तं ॥३७७२॥

वेयावच्चे अणलो, चउव्विहो होइ आणुपुव्वीए ।
सुत्तत्थ अभिगमेण य, परिहरणा एव नायव्वा ।।३७७३।।

वेयावच्चं प्रति अणलो चउव्विहो – सुत्ते, अत्थे, अभिगमे, परिहरणे । सुत्ततो जेण पिंडेसणा ण पढिता । अत्थतो जेण तस्सेव अत्थो ण सुत्तो । अभिगमणं – जो वेयावच्चं ण सद्दहति । परिहरणे – जो अकप्पियं ण परिहरति ।

चोदकाह – "णणु जो पव्वज्जातो अणलो स वेयावच्चस्स वि अणलो, किं पुढो सुत्तकरणं ?"

उच्यते – जो पव्वज्जाए अणलो स वेयावच्चस्स णियमा अणलो, जो पुण पव्वज्जाए अलो स वेयावच्चस्स अलो वा अनलो वा । अतो पिहसुत्तकरणं ।।३७७३।।

एएसामण्णतरं, अणलं जो णाइगाति कारेज्जा ।
वेयावच्चं भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ।।३७७४।। कंठा

वितियपए एगागी, गेलण्णऽसहू यऽलद्धिमंते य ।
ओमे य अणहियासे, गिहीसु वा मंदधम्मेसु ।।३७७५।।

गच्छे एक्को चेव पिंडादि कप्पितो सव्वेसिं कातुं ण तरति, जे कप्पिया ते गिलाणा असहू वा, अलद्धिमंता वा ओमे वा असंथरतो अणलेण कारविज्ज । "अणहियास" त्ति अन्ने जाव भिक्खादिगया ण एंति ताव कोति भिक्खू छुहालू अणलेण कारविज्जा । गिहिणो वा मंदधम्मा पाउग्गं न देंति, सो य अणलो लद्धिसंपण्णो ।।३७७६।।

ताहे –

एएहि कारणेहिं, पिंडस्सुस्सारकप्पियं काउं ।
वेयावच्चमलंभे, कारेज्जऽसढो तु अणलेणं ।।३७७६।।

एवं असढो कारवेंतो सुद्धो ।।३७७६।।

जे भिक्खू सचेले सचेलगाणं मज्झे संवसइ, संवसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८७।।
जे भिक्खू सचेले अचेलगाणं मज्झे संवसइ, संवसंतं वा सातिज्जति।।सू०।।८८।।
जे भिक्खू अचेले सचेलगाणं मज्झे संवसइ, संवसंतं वा सातिज्जति।।सू०।।८९।।
जे भिक्खू अचेले अचेलगाणं मज्झे संवसइ, संवसंतं वा सातिज्जति।।सू०।।९०।।

सचेला संजता, सचेलाओ संजतीओ, चउभंगसूत्रं व्याख्येयं । चउसु वि भंगेसु चउगुरुं तवकालविसिट्ठं ।

जे भिक्खू सचेलो तू, ठाण-निसीयण-तुयट्टणं वा वि ।
चेतिज्ज सचेलाणं, सो पावति आणमादीणि ।।३७७७।। कंठा

वीसत्थादी दोसा, चउत्थुद्देसम्मि वन्निया जे तु ।
ते चेव निरवसेसा, सचेलमज्झे सचेलस्स ।।३७७८।।

कारणे वसेज्जा –

वितियपदमणप्पज्झे, गेलण्णुवसग्गरोहगऽद्धाणे ।
समणाणं असतीए, समणीपव्वाविते चेव ॥३७७९॥

अणप्पज्झो वसेज्जा, गिलाणं वा पडियरंतो वसेज्जा, उवसग्गे वा जहा सो रायकुमारो संगुत्तो रोहए वा एक्का वसही लद्धा, अद्धाणपडिवण्णो वा संजयाण असती संजतिवसहीए वसेज्जा, अहवा – दो वि वग्गा अद्धाणपडिवन्ना वसेज्जा ।

अथवा – समणाण असतीते समणीहिं माया पिया वा पव्वाविओ सो वसेज्जा ॥३७७९॥

एमेव वितियभंगे, कंतारादीसु उवहिवाघाते ।
समणीणं ततियम्मि तु, वाघातो होति समणाणं ॥३७८०॥

वितियभंगे समणीण उवधीउवघातो । ततियभंगे समणाण उवहिउवघाओ ॥३७८०॥

चतुसु वि भंगेसिमे दोसा –

संचरिते वि हु दोसा, किं पुण एगतरणिग्गिणि उभओ वा ।
दिट्ठमदट्ठव्वं मे, दिट्ठिपयारे भवे खोभो ॥३७८१॥

पढमभंगे उभये वि संचरिते वीसत्थादि आलावातिया य दोसा, किं पुण वितिय-ततिय-उभयणिग्गिणे य, सविसेसा दोसा । संजतो संजती वा चिंतेति – दिट्ठं अदट्ठव्वं मे अंगादाणादि । सागारिए य दिट्ठिपयारेणं चित्तक्खोभो भवति । खुभिओ अणायारपडिसेवणं करेज्ज ॥३७८१॥

आयपर उभयदोसा, वितिए भंगे न कप्पती वितियं ।
विहिमुट्ठवत्थदाणं, ठाणाति चएति एगत्थ ॥३७८२॥

एमेव ततियभंगे, अद्धाणे उवसयस्स तु अलंभे ।
खुड्डातिमज्झे समणी सावयभयचिट्ठणादिसु ॥३७८३॥

एमेव चरिमभंगे, दोसा जयणा तु दब्भमादीहिं ।
सभयम्मि मज्झे समणी, णिरवाए मग्गतो एति ॥३७८४॥

पुव्वद्धं कंठं ।

दुहतो वाघातो पुण, चतुत्थभंगम्मि होति नायव्वो ।
एमेव य परपक्खे, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मी ॥३७८५॥

पुव्वद्धं कंठं । परपक्खो गिहत्थिअन्नतित्थिणीओ । तेसु एवं चेव चउभंगो दोसा य । एगतरे उभयपक्खे वा विवित्ते वत्थाभावे खंडपत्त-दब्भ-चीवर-हत्थगिहणादि जयणा कायव्वा । सावयभयादीसु य संजइओ मज्झे छोढुं ठाणाती चेतेज्जा ॥३७८५॥

दुहतो वि अचेलाणं पंथे इमा गमणविही –

दुहतो वावायम्मी, पुरतो समणा तु मग्गतो समणी ।
खुड्डे हि भणावेंति, कज्जे देयं ति दावेंति ।।३७८६।।

अग्गतो साहू गच्छंति, पिट्ठतो समणीओ । जति संजतीओ किं चि वत्तव्वाओ खुड्डेहिं भणावेंति । जं किं चि देयं तं खुड्डेहिं चेव दवावेंति । सभए पुण पिट्ठओ अग्गतो पासतो वा संजया गच्छंति, न दोसो । बिइयचउत्थेसु भंगेसु सव्वपयत्तेण संजतीण वत्था दायव्वा ।।३७८६।।

समणाणं जो उ गमो, अट्ठहि सुत्तेहि वन्निओ एसो ।
सो चेव णिरवसेसो, वोच्चत्थो होति समणीणं ।।३७८७।।

चउरो संजतिसुत्ता, चउरो गिहत्थऽन्नतित्थिणीएसु । एते अट्ठ संजतीण वि, संजतेसु चउरो सुत्ता गिहत्थऽन्नतित्थिएसु चउरो । एसेव विवच्चासो, दोसा य वत्तव्वा ।।३७८७।।

जे भिक्खू पारियासियं पिप्पलिं वा पिप्पलिचुण्णं वा सिंगवेरं वा सिंगवेरचुण्णं वा
बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं आहारेइ,
आहारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६१।।

पारियासियं णाम रातो पज्जुसियं । अभिण्णा पिप्पली, सा एयसुहुमा भेदकता चुण्णा । एवं मिरीय-सिंगवेराणं पि । सिंगवेरं सुंठी । जत्थ विसए लोणं णत्थि तत्थ ऊसो पच्चति, तं बिललोणं भण्णति । उब्भेतिमं पुण सयंरुहं जहा सामुद्दं सिंधवं वा । एवमादिपरिवासितं आहारेंतस्स आणादी दोसा, चउगुरुं च ।

इमा णिज्जुत्ती –

परियासियमाहारस्स मग्गणाऽऽहारो को भवे अणाहारो ।
आहारो एगंगिओ, चउव्विहो जं चऽतीति तहिं ।।३७८८।।

एत्थ सीसस्स मती उप्पन्ना – परियासियआहारस्स मग्गणा । अम्हे ण याणामो को आहारो को वा अणाहारो ? तं इच्छामो आहाराणाहारं णातुं ।

आयरितो भणति – आहारो एगंगितो असणादी चउव्विहो, जं वा अन्नं तत्थ अतीति सो – आहारो चउव्विहो ।।३७८८।।

एगंगितो आहारो –

कूरो णासेइ खुधं, एगंगी तक्कउदगमज्जाती ।
खातिमे फलमंसादी, सातिमे महुफाणितादीणि ।।३७८९।।

कुरादी एक्कं चेव खुधं णासेति ।

पाणे तक्क-खीर-उदग मज्जादी एगंगि तिसं णासेंति आहारकिच्चं च करेंति ।

खाइमे एगंगिया फलमंसादी आहारकिच्चं च करेंति ।

साइमे वि मधु-फाणिय-तंबोलादिया एगंगिया खुहं णासेंति ।।३७८९।।

"[1]जं च अतीति तहिं" ति अस्य व्याख्या –

जं पुण खुहापसमणे, असमत्थेगंग सो उ लवणाती ।
तं पि य होताहारो, आहारजुतं व विजुतं वा ॥३७६०॥

जं एगंगियं खुहापसमणे असमत्थं आहारे य अतीति तं आहारेण संजुत्तं असंजुत्तं वा आहारो चेव नायव्वो, जहा अलोणे लोणं हिंगु जीरयं कडुगं भंडं च ॥३७६०॥

उदए कप्पूरादी, फले सुत्तादीणि सिंगवेरगुलो ।
ण य ताणि खवेंति खुहं, उवकारित्ता तो आहारो ॥३७६१॥

उदए कप्पूरं गच्छति, अंबादिसु फलेसु [2]सुत्तं, सुंठीए गुलो, एमादि खुहापसमणे असमत्थं पि उवकारित्तणओ आहारो चेव वत्तव्वो । सेसं अणाहारिमं ॥३७६१॥

अथवा आहारिम-ऽणाहारिमभेदो इमो –

अहवा जं भुक्खत्तो, कद्दमउवमाए पक्खिवति कोट्ठे ।
सव्वो सो आहारो, ओसहमादी पुणो भतिओ ॥३७६२॥

बुभुक्षया आर्तः बुभुक्षार्तः, जं किं चि भुंजति सो सव्वो आहारो, कद्दमोवमो । "अपि कर्दमपिंडानां कुर्यात् कुक्षिं निरंतरं ।" ओसहमादी भयणा – जं घतपूरादी ओसढत्तं आहार एव, जं पुण तिफलादियं दव्वं सव्वं अणाहारिमं, यस्मात् तदुपरिष्टात् पुनराहारं करिष्यतीत्यर्थः ॥३७६२॥

अहवा –

जं वा भुक्खत्तस्स उ, संकसमाणस्स देति आसादं ।
सव्वो सो आहारो, अकामणिट्ठं चऽणाहारो ॥३७६३॥

संकसमाणस्स संग्रसतः कवलप्रक्षेपं कुर्वतः अथवा संकसमाणस्स आस्वादयतः आस्वादं प्रयच्छति एस आहारो । जं पुण अकामं अभ्यवहारामीत्येवं न कामयति, अनिष्टं शोभनमपि न रोचते, एरिसं अणाहारो भवति ॥३७६३॥

तं पुण इमं अणाहारिमं –

अणहार मोय छल्ली, मूलं पत्त फल जं चऽणाहारो ।
सेसं तयभूति तोये, बिंदुमत्ते वि चउगुरुगा ॥३७६४॥

काइयं मोयं, णिंबादीणं छल्ली, णिंबोलियमादी फला, तस्सेव मूला, जंचऽण्णं घोसाडगादी, देवदालिनिगिगिच्छमादीयाणं पत्तपुप्फफलबीया, एवमादि सव्वं अणाहारिमं । "सेसं" ति आहारो । तस्स जति तिल-तुस-तयामेत्तं पि पगिवासियं आहारेति, सत्तुगादिसुक्कचुण्णाणि एगमंगुलीए जत्तिया भूती लग्गति । "तोयमि" ति पाणगं, तस्स य बिंदुमित्ते वि चउगुरुगा ॥३७६४॥

---

१ गा० ३७८८ । २ द्रव्यविशेषः ।

अण्णे य इमे दोसा –

मिच्छत्ता संचतिए, विराहणा सुक्खे पाणजाती य ।
सम्मुच्छणा य तक्कण, दव्वे य दोसा इमे होंति ॥३७९५॥

असणादिपरिवासिज्जमाणं दट्ठुं सेधो वा अण्णो वा मिच्छत्तं गच्छेज्जा, न जधावादी तधाकारि त्ति । उड्डाहं वा करेज्जा – "णिस्सण्णिधिसंचया समणं त्ति, इमे पुण सव्वं करेंति" । परिवासिए य आयसंजमविराहणा । सत्तुगादिए सुक्के धरिए ऊरणिगादी सम्मुच्छंति, उंदरो वा तत्थ तक्केंतो पासतो परिपालेंतो बिडालादिणा खज्जति, एवमादी संजमे । आयविराहणा सप्पो कोइला विसो लालं मुंचति । तयाविसो वि उस्सिंघमाणो णिस्सासेण विसीकरेज्जा, उंदरो वा लालं मुत्तं सुक्कं वा मुंचेज्जा, एवमादी दोसे सम्मुद्दिट्ठे आयविराहणा भवति ॥३७९५॥

"[1]मिच्छत्ता संचइय" त्ति अस्य व्याख्या –

सेह-गिहिणा व दिट्ठे, मिच्छत्तं कहमसंचया समणा ।
संचयमिणं करेंती, अण्णत्थ वि णूण एमेव ॥३७९६॥

गतार्था । "सव्वाओ रातीभोयणाओ वेरमणं' ति जधा एयं पडिमं पडिवज्जेत्ता पादं च वंदित्ता जदा एयं अण्णधा करेंति तदा अण्णत्थ वि पाणवधादिसु "णूणं" वितक्के, एवमेवेत्यवधारणे, सव्वं समायरंति ॥३७९६॥

"[2]दव्वे य दोसा इमे होंति" अस्य पदस्य व्याख्या –

णिद्धे दवे पणीए, अपमज्जणपाणतक्कणा झरणा ।
आहारे दिट्ठ दोसा, कप्पति तम्हा अणाहारो ॥३७९७॥

घयातिए णिद्धे, "दवे" त्ति पाणगे ।

अहवा – णिद्धमेव दव्वं, जधा खीरं घतं तेल्लं दधि तक्कं मधुं ति । "पणीते" त्ति असणादि णेधावगाढं । एरिसं रातो ठवितं जं भायणे तं पमज्जितुं ण तरति, अह पडिलेहेति तो रयहरणं विणासेज्जति, अपडिलेहणाए य दसहिं दिवसेहिं भायणं उवहयं भवति, तत्थ वा पाणजाती सम्मुच्छंति पडेंति वा, तक्कणा सच्चेव, झरंते य हेट्ठा पाणजादी पडंति, मधुबिंदोवक्खाणेण वा तक्केंत-परंपरदोसा भवंति ।

एत्थ चोदगाह – "आहारे दिट्ठदोसा तम्हा अणाहारो कप्पतु ठवेतुं ॥३७९७॥

आचार्याह –

अणहारो वि ण कप्पति, लहुगा दोसा य जे भणितपुव्विं ।
तद्दिवसं जयणाए, बितियं कडजोगिसंविग्गो ॥३७९८॥

जति अणाहारिमं ठवेति तो चउलहु पच्छित्तं, आणादिया विराहणा य । अणाहारिमं च सुक्खं दवं च, सुक्कं छल्लिमादि, दवं णिवकरंजिततेल्लादी । एत्थ अणाहारिमे ठविज्जमाणे दोसा जे आहारिमे पुव्ववण्णिता त एव भवंति । तम्हा अणाहारिमं पि णो ठवेज्जा । जाधे पयोयणं ताधे तद्दिवसं चेव मग्गिज्जति । विभेलय-हरितकीमादीण य छल्ली अह ण लब्भति, दुल्लभलंभे वा, दिणे दिणे मग्गंता वा गरहिता, ताधे

१ गा० ३७९५ । २ गा० ३७९५ ।

जयणाए ठवेंति । जया अगीय-सड्ढमादी ण याणंति तया वितियपदेण कडजोगी संविग्गो ठवेति । मयणेणा-लिंपति, घणचीरेण चम्मेण वा दद्दरे त्ति, जया पाणादी ण णिलेंति, पासओ छारेण ओगुंडिज्जति, निव्वाघाए पदेसे ठविज्जति, उभयतो कालं पमज्जिज्जति । एवं णिद्दोसो भवति ॥३७९८॥

जह कारणे अणाहारो, तु कप्पति तह ठवेज्ज इतरो वि ।
वोच्छिण्णम्मि मडंबे, वितियं अद्धाणमादीसु ॥३७९९॥

जधा कारणे अणाहारो दिट्ठो ठवेतुं तहा ठविज्ज "इयरो" त्ति आहारो । सो वि कारणे कप्पति ठवेतुं । तं पुण इमेरिसे कारणे वोच्छिण्णे मडंबे ठिता, तत्थ दुल्लभं पिप्पलीमादीति सव्वं संवसाविज्जा, तं पि गच्छकारणा ओसधभेसज्जादीनिमित्तं, तं पि जति मासकप्पं वासावासं वा ठिता तत्थ ण मग्गंति, अण्णखेत्ते मग्गंति, जाहे अण्णहि ण लब्भंति ताहे तत्थेव मग्गंति. जहा एयाणि कारणे दिट्ठाणि तहा असणाइ वि कारणे ठवेज्जा, विइयपदेण अद्धाणकप्पं ठवेज्जा । आदिसद्दाओ पडिवण्णउत्तिमट्ठस्स वा गिलाणस्स वा पाणगाइ ॥३७९९॥

वोच्छिण्णम्मि मडंबे, सहसरुयुप्पाय-उवसमणिमित्तं ।
दिट्ठत्था ते तं चिय, गेण्हंती तिविहमेसज्जं ॥३८००॥

"सहसरुय" मूलविसूयाति, तस्स उवसमणणिमित्तं, दिट्ठत्था गीयत्था, ते तं चिय दव्वं गेण्हंति जेणोवसमो भवइ, तिविह भेसज्ज वायपित्तसिंभो य ॥३८००॥

जे भिक्खू गिरि-पडणाणि वा मरु-पडणाणि वा भिगु-पडणाणि वा तरु-पडणाणि वा १ गिरि-पक्खंदणाणि वा मरु-पक्खंदणाणि वा (भिगु-पक्खंदणाणि वा) तरु-पक्खंदणाणि वा २ जल-पवेसाणि वा जलण-पवेसाणि वा ३ जल-पक्खंदणाणि वा जलण-पक्खंदणाणि वा ४ विस-भक्खणाणि वा ५ सत्थो-पाडणाणि वा ६ वलय-मरणाणि वा ७ वसट्टाणि वा ८ तब्भवाणि वा ९, अंतो सल्लाणि वा १० वेहाण-साणि वा ११ गिद्ध-पट्ठाणि वा १२ जाव अण्णयराणि वा तहप्प-गाराणि वा बालमरणाणि पसंसति,
पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९२॥
तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।

एषां व्याख्या ग्रंथेनैव –

गिरिपडणादी मरणा, जेत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसिं अण्णतरागं, पसंसते आणमादीणि ॥३८०१॥

तेसिं सुत्ताभिहियाणं दुवालसण्हं बालमरणाणं अण्णतरागं पसंसइ, आणादिया दोसा, चउगुरुं च पच्छित्तं ॥३८०१॥

गिरि-मरु-तरु-भिगूणं चउण्ह वि इमं वक्खाणं –

जत्थ पवातो दीसति, सो तु गिरी मरु अदिस्समाणो तु ।
नदितडमादी उ भिगू, तरु य अस्सोत्थवडमादी ॥३८०२॥

गिरिमरूणं विसेसो – जत्थ पव्वए आरूढेहिं अहो पवायठाणं दीसइ सो गिरी भण्णइ, अदिस्समाणे मरू । भिगू णदितडी आदिसद्दातो विज्जूक्खायं, अगडो वा भन्नइ । पिप्पलवडमादी तरू । एतेहिंतो जो अप्पाणं मुंचइ मरणं ववसिउं तं पवडणं भन्नइ । एते चउरो वि पडणसामन्नाओ एक्को मरणभेदो ॥३८०२॥

एतेसु चेव चउसु पक्खंदणं । पवडण-पक्खंदणाण इमो भेदो –

पडणं तु उप्पतित्ता, पक्खंदण धाविऊण जं पडति ।
तं पुण गिरिम्मि जुज्जइ, णदितडभिगूहिं वा पडणं ॥३८०३॥

थाणत्थो उड्ढं उप्पइत्ता जो पडइ वक्कडेवने डिंभकवत्, एयं पवडणं । जं पुण अदूरओ आधावित्ता पडइ तं पक्खंदणं ।

अहवा – ठिय-णिसन्न-णिवन्नस्स अणुप्पइत्ता पवडमाणस्स पवडणं, उप्पाइत्ता जो पडइ पक्खंदणं । तं पुण पडणं पक्खंदणं वा गिरिम्मि जुज्जइ घडतीत्यर्थः । णदितडिभिगूहिं वा पडणं पक्खंदणं च जुज्जइ॥३८०३॥

तरुसु कहं पक्खंदणं जुज्जइ अओ भण्णति –

ओलंबिऊण समपाइतं च तरुओ उ पवडणं होति ।
पक्खंदणुप्पतित्ता, अंदोलेऊण वा पडणं ॥३८०४॥

हत्थेहिं सालाए लग्गिउं अहो लंबिउं पडंतस्स पवडणं, रुक्खग्गओ वा समपादठियस्स अणुप्पइत्ता पवडमाणस्स पवडणं । रुक्खट्ठियस्स जं उप्पइत्ता पडणं तं पक्खंदणं, हत्थेहिं वा लंबिउं जं अंदोलइत्ता पडइ तं वा पक्खंदणं । चउरो वि पवखंदणा पक्खंदण सामन्नओ विइओ मरणभेदो ॥३८०४॥

जल-जलणपवेसो पवेससामण्णओ तइओ मरणभेदो । जल-जलणपक्खंदणे चउत्थो मरणभेदो । सेसा विसभक्खणाइया वा अट्ठ पत्तेयभेदा । विसलक्खणं पसिद्धं, सत्थेण अप्पाणं विवाएइ ।

"[1]वलय-वसट्टाणं" इमं वक्खाणं –

वलयं वलयायमाणो, जो मरणं मरति हीणसत्ततया ।
सोतिंदियादिवसतो, जो मरइ वसट्टमरणं तु ॥३८०५॥

संजमजोगेसु वलंतो हीणसत्तयाए जो अकामगो मरइ एयं वलयमरणं, गलं वा अप्पणो वलेइ । इंदियविसएसु रागदोसवसट्टो मरंतो वसट्टमरणं मरइ ॥३८०५॥

"तब्भव-अंतोसल्लाणं" इमं वक्खाणं –

तम्मि चेव भवम्मी, मयाण जेसिं पुणो वि उप्पत्ती ।
तं तब्भवियं मरणं, अविगडभावं ससल्लं तु ॥३८०६॥

---

१ सू० ९२ ।

जम्मि भवे वट्टइ तस्सेव भवस्स हेउसु वट्टमाणो आउयं बंधित्ता पुणो तत्थोवज्जिउकामस्स जं मरणं तं तब्भवमरणं, एयं मणुयतिरियाण चेव संभवइ । अंतोसल्लमरणं दुविहं – दव्वे भावे य । दव्वे णारायादिणा सल्लियस्स मरणं, भावे मूलुत्तराइयारे पडिसेवित्ता गुरुणो अणालोइत्ता पलिउंचमाणस्स वा भावसल्लेण सल्लियस्स एरिसस्स अविगडभावस्स अंतो सल्लमरणं । वेहाणसं रज्जुए अप्पाणं उल्लंबेइ । गिद्धेहिं पुट्ठं गिद्धपुट्ठं गृद्धैर्भक्षितव्यमित्यर्थः, तं गोमाइकलेवरे अत्ताणं पक्खिवित्ता गिद्धेहिं अप्पाणं भक्खावेइ ।

अहवा – पट्टोदरादिसु अलत्तपुडगे दाउं अप्पाणं गिद्धेहिं भक्खावेइ ॥३८० ॥

एते दुवालस बालमरणा पसंसमाणस्स इमे दोसा –

मिच्छत्तथिरीकरणं, सेहपरीसहपराइतेक्कतरं ।
णिक्किवया सत्तेसु य, हवंति जे जत्थ य पडंती ॥३८०७॥

अहो इमे साधू एगंतसुट्ठियप्पा इमे गिरिपवडणादी मरणे पसंसंति, धुवं एते करणिज्जा, नत्थेत्थ दोसो, एवं मिच्छत्ताइठियाणं मिच्छत्ते थिरीकओ भावो भवति । पसंसियबालमरणे सेहो परीसहपराजिओ बारसण्हं एगतरं पडिवज्जेज्जा । जे य बालमरणे पसंसिए अप्पाणं अइवाएज्जा तेसु सत्तेसु णिग्घिणया कया भवति । तव्विराहणाणिप्फण्णं च पच्छित्तं पावेइ । तम्हा णो पसंसेज्जा ॥३८०७॥

कारणे वा पसंसेज्जा ।

इमं य ते कारणा –

बितियपद्मणप्पज्झे, पसंसे अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥३८०८॥ कंठा

ते य बहुप्पगारा कज्जा इमे –

कयम्मि मोहभेसज्जे, अट्टायंते तहावि तु ।
जुंगियं आमए वा वि, असज्झं पण्णवेंति उ ॥३८०९॥

साहुस्स उदित्तमोहस्स णिव्विइयादिमोहभेसज्जे कए तह वि मोहणिज्जे अट्टायमाणे, कण्णऽच्छिनासहत्थपादादि जुंगियं वा, कुट्ठवाहिणा वा असज्झेण गहियं, गोणसमाइक्खयं वा असज्झं, पंडियमरणे असत्तं, एते इमेण विधिणा बालमरणेण पन्नवेंति ॥३८०९॥

तत्थ दसण्ह अवाते, आदिल्लाण मरणाण दंसेत्ता ।
दोण्णि पसंसंति विदू, वेहाणस गद्धपट्ठं च ॥३८१०॥

पवडणादीया अंतोसल्लपज्जवसाणा एते दस । एतेसिं जीववव्वरोवणादि अवाए दंसेत्ता ते पडिसेहित्ता दोण्हं विहाणसगद्धपट्ठमरणाणं गुणे आगमविदू पसंसंति, पंडियमरणमसत्तेण ते प्रतिपत्तव्या इत्यर्थः ॥३८१०॥
भणियं दुवालसविहं बालमरणं ।

इदाणिं पंडियमरणं । तस्सिमो संबंधो –

बालमरणेण य पुणो, पंडितमरणे कया हवति सूया ।
भत्तपरिण्णा इंगिणि, पादोपगमे य णायव्वे ॥३८११॥

तं तिविहं – भत्तपरिण्णा इंगिणि पाउवगमणं च । एते कमेण-जहण्णमज्झिमुक्कोसा ।

तत्थ एक्केक्कं दुहा पडिवज्जइ – अहाणुपुव्वीए अणाणुपुव्वीए य । पव्वज्जासिक्खापयादिकमेण मरणकालं पत्तस्स आणुपुव्वी, अत्थग्गहणाईए पदे अप्फासेत्ता अणाणुपुव्वी ।

पुणो एक्केक्कं दुविहं – सपरिक्कमं अपरिक्कमं च । सपरिक्कमो – जो भिक्खू वियारं अण्णगामं वा गंतुं समत्थो, इतरो अपरिक्कमो ।

पुणो एक्केक्कं दुविहं – णिव्वाघाइमं वाघाइमं च । णिरुअस्स अक्खयदेहस्स णिव्वाघाइमं, इतरस्स वाघाइमं । वाघाओ दुविहो – चिरघाइ आसुघाइ य ॥३८११॥

एत्थ भत्तपरिन्नं ताव भणामि । जं तं आणुपुव्वीए सपरिकम्मं णिव्वाघाइमं तं इमं –

पव्वज्जादी काउं, नेयव्वं ताव जाव वोच्छित्ती ।
पंच तुलेऊण य सो, भत्तपरिण्णं परिणतो य ॥३८१२॥

पुव्वद्धस्स इमा वक्खाणगाहा –

पव्वज्जा सिक्खावय, अत्थग्गहणं च अणियतो वासो ।
णिप्फत्ती य विहारी, सामायारी ठिती चेव ॥३८१३॥

पव्वज्जं अब्भुवगओ सिक्खापदं ति सुत्तं गहियं, अत्थो सुओ वारसमाओ देसदंसणं कयं, सीसा णिप्फातिआ, एसा अव्वोच्छित्ती । ताहे जइ दीहाऊ संघयणधितिसंपण्णो य ताहे अप्पाणं तवेण, सत्तेण, सुत्तेण, एगत्तेण, बलेण य पंचहा तुलेऊण जिणकप्पं अहालदं सुद्धपरिहारं पडिमं वा पडिवज्जइ । अह अप्पाऊ, विहारस्स वा अजोग्गो, ताहे अब्भुज्जयमरणं तिविहं वियालेऊण अप्पणो धितिसंघयणाणुरूवं भत्तपरिन्नं परिणओ ॥३८१३॥

तस्सिमाओ तिन्नि दारगाहओ –

[1]गणि णिस्सिरणे [2]परगणे, [3]सिति [4]संलेहे [5]अगीय[6]ऽसंविग्गे ।
[7]एक्का[8]ऽऽभोयण [9]अन्ने, [10]अणपुच्छ-[11]परिच्छ [12]आलोए ॥३८१४॥
[13]ठाण-[14]वसही-[15]पसत्थे, [16]णिज्जवग्गा [17]दव्वदायणा चरिमे ।
[18]हाण[19]ऽपरितंत [20]णिज्जर, [21]संथारु[22]व्वत्तणादीणि ॥३८१५॥
[23]सारेऊण य [24]कवयं, णिव्वाघाएण [25]चिंधकरणं च ।
[26]अंतोबहि [27]वाघातो, भत्तपरिण्णाए कायव्वो ॥३८१६॥

जाव परिकम्मं करेइ ताव इत्तरं गणणिक्खेवं करेइ, पडिवण्णं परिवज्जउ आवकहं गणणिक्खेवं करेइ । दारं ।

"परगणे त्ति" परगणे गंतुं अणसणं पडिवज्जइ, किं कारणं ? भन्नइ – सिस्सा कलुणभावं करेज्जा, आणाहाणिं वा, उवकरणणिमित्तेण वा वुग्गहणे गणभेदो हवेज्ज, बालाईण वा उचिए अकज्जमाणे हाणि वा

दट्ठुं, एमाइएहिं कारणेहिं सगणे झाणवाघाओ हवेज्ज। परगणे एते दोसा ण हवंति, गुरुकुलवासो य कओ भवति। दारं।

"सीति" दुविहा – दव्वे भावे य। दव्वे जहा णिस्सेणी जहा तीए उवरुवरिं पदारोहं करेइ तहा भावसंजमसीतीए उवरुवरिं संजमठाणा आरुभियव्वा, ते आरभंतो अंतकिरियं वा करेइ। कप्पविमाणोववत्ति वा।

एसा भावसीती जेहिं उवलद्धा ण ते उड्ढगमणकज्जे हिट्ठिल्लपदगमणं पसंसंति। दारं।

"संलेहे" त्ति संलेहो, तिविहो – उक्कोसो मज्झिमो जहन्नो। उक्कोसो बारसवासा, मज्झिमो वरिसादि, जहन्नो छम्मासा।

तत्थ उक्कोससंलेहणाविहिं भणामि –

चत्तारि संवच्छराणि विचित्तं तवं करेइ, पारणए उग्गमाइसुद्धं कप्पणिज्जं सव्वं पारेइ।

अन्ने चत्तारि वरिसे विचित्तं चेव तवो काउं निद्धपणीतवज्जं णिव्वितियं पारेइ।

अन्ने दो वरिसे चउत्थं काउं आयंबिलेण पारेइ।

एक्कारसमे वरिसे पढमं छम्मास अविकिट्ठं तवं कातुं कंजिएण पारेइ।

बिइए छम्मासे विगिट्ठं तवं काउं आयंबिलेण पारेइ।

दुवालसमं वरिसं णिरंतरं हायमाणं उसिणोदएण आयंबिलं करेइ, तं कोडीसहियं भवइ, जेणायंबिलस्स कोडी कोडीए मीलइ। जहा पईवस्स वत्ती तेल्लं च समं णिट्ठाइ तहा बारसमे वरिसे आहारं परिहरेइ, जहा आहारसंलेहणा आउयं च समं णिट्ठाइ।

एत्थ बारसमवासस्स पच्छिमा जे चत्तारि मासा तेसु तेल्लगंडूसं णिसट्ठं धरेतुं खेलमल्लगे णिच्छुभइ, मा अइरुक्खत्तणओ मुहजंतविसंवादो भविस्सति, तस्स य विसंवादे णो सम्मं णमोक्कारमाराहेइ। मज्झिमजहण्णपरिकम्मणासु एसेव विही मासपक्खेहिं णेयव्वो। एत्तो एगयरेणं संलेहित्ता भत्तपरिण्णिंगिणिपाओवगमणं वा पडिवज्जइ। दारं।

"अगीए" त्ति – अगीयस्स पासे जइ भत्तं पच्चक्खाइ तो चउगुरुं।

कम्हा ? जम्हा अगीयत्थो चउरंगं णासेइ, तं च णट्ठं पुणो दुल्लहं भवइ।

तं च किं चउरंगं ? भन्नइ –

> माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं।
> कहं अगीओ णासेइ, भण्णइ सोऽपरिण्णिय॥

पढमबिइयपरीसहपराजितो दिया राओ वा ओभासेज्ज, ते तं अगीयत्था "णिद्धम्मो" त्ति काउं गामस्संतो बहिं दिया राओ वा परिट्ठवेज्जा, सो वि अट्टदुहट्टो पडिगमणं वा करेज्जा, मरिऊण वा तिरियवाणमंतरेसु उववज्जेज्ज, तत्थ पुव्वभववेरं संभरित्ता उवसग्गं करेज्जा।

अहवा – अगीओ "राइ" त्ति काउं पाणगस्स गहणं न करेइ, तिसियस्स मोयं देज्जा, सो य दंडियमाई दुट्ठो मिच्छत्तं गच्छे, कुल-गण-संघपत्थारं वा करेज्जा। जो सो अगीएहिं परिट्ठविओ सो गीएहिं दिट्ठो, आसासिओ, अणुसट्ठो, विहिणा पडियरिओ, अविराहियसामण्णो मओ। एते अन्ने य बहू अगीयत्थे दोसा। तम्हा णो अगीयत्थसमीवे परिन्नं पडिवज्जे। गीयसमीवे पडिवज्जियव्वं। सगच्छे परगच्छे वा जइ वि दूरं तहावि गंतव्वं, जाव पंच वा छ सत्त जोयणसए समहिए वा गीतत्थसमीवं अपरिस्संतेण गंतव्वं। एसा खित्तं पडुच्च परूविया। कालओ अपरिस्संतो एगाहेण वा जाव उक्कोसा उ बारसवासेण गीयत्थसमीवं

गंतव्वं । एसा खेत्तकालं पडुच्च पन्नविया । जेण गीतत्थदुल्लभो कालो भविस्सति गीयत्थेण य सव्वहा उत्तमट्ठ-पडिवन्नस्स समाधी कायव्वा । दारं ।

"असंविग्गो" त्ति – असंविग्गस्स पासे उत्तिमट्ठं पडिवज्जइ तो चउगुरु, असंविग्गो जम्हा चउरंगं नासेइ । इमे य दोसा – अहाकम्मियं पाणगवसहिसंथारगाई देइ, पुप्फमाईहिं अच्चणं करेइ कारवेइ, उवलेवण-समज्जणाई य बहुजणणायं वा करेज्ज, तूरं वा आणेज्ज, एमाई असंविग्गे बहू दोसा, तम्हा गीयत्थस्स संविग्गस्स पासे परिण्णं पडिवज्जे । तस्सासइ असंविग्गस्स गीयत्थस्स, शेषं पूर्ववत् । दारं ।

"एग त्ति" – दारं, एगेण णिज्जावगेण कज्जहाणी इमा – परिण्णी सेहा पवयणं च चत्तं, उड्डाहो वा भवे । कहं पुण एते दोसा ? सो णिज्जवगो तस्स पासतो कारणेण णिग्गतो, परिण्णी य पढमविइयपरीस-होदए ओभासेज्ज, सेसा अगीया ण दिज्ज, एवं सो चत्तो ।

अहवा – सो परिण्णी ते अगीते भणेज्जा – "एत्थं तं मज्झट्ठवि तेल्लयं एतं तो मे देह ।" ताहे ते अगीयपरिणामगा चिंतेज्ज "माई कवडायारा, णत्थेत्थ धम्मो" त्ति, उण्णिक्खमेज्ज, अइपरिणामगा वा तं दट्ठुं "णिद्धम्मा" भवेज्जा, अइपसंगं करेज्ज । अदत्तेसु वा सो कूवेज्जा, "बला मे मारिंति" त्ति उड्डाहं करेज्ज । एवं पवयणं चत्तं, तम्हा जत्थ अणेगे णिज्जवगा तत्थ पडिवज्जियव्वं । दारं ।

"आभोगण" त्ति दारं – पच्चक्खाणकाले आभोएव्वं, अणाभोएंतस्स चउगुरु । जं च तप्पडिबंधे ठिया ता असिवाईहिं पाविहिंति, तम्हा ओहिमाइणा आभोएव्वं, अन्नं वा अइसेसियं पुच्छंति । जइ जाव परिण्णी जीवइ ताव णिरुवसग्गं सो वा णिव्वहइ तो पडिवज्जइ, अन्नहा पडिसेहो ।

देवता वा कहेज्ज – जहा कंचणपुरि खीरं खमगस्स तच्चन्नियं जायं । जइ एवं विहिं ण पकरेंति तो इमा विराहणा – अणाभोइए असिवोमाइ उप्पन्ने जइ परिन्नी उवकरणं च वहंति तो आयविराहणा । अह उवकरणं छड्डेंति तो उवकरणेण विणा जा विराहणा । अह परिन्नी छड्डेंति तो उड्डाहो मिच्छत्ताइया य दोसा । दारं ।

इयाणिं "अन्नि" त्ति दारं – एगेण पच्चक्खाए अन्नो जइ आगतो सो संलेहं कारविज्जइ, तइओ पडिसेहिज्जइ अपहुप्पंतेहिं । अह पहुप्पंति णिज्जावगवेयावच्चकरो तो बहू णिज्जविज्जंति । अह सो परिन्नी पडिभज्जइ ताहे तत्थ अन्नो पुव्विं संलेहिओ ठविज्जति, चिलिमिलिअंतरितो य जणो वंदाविज्जति । दारं ।

"अणापुच्छ" त्ति – गुरुजणस्स अणापुच्छाए जइ परिण्णं पडिवज्जइ पच्चक्खाति वा तो चउगुरु । इमा विराहणा – आयरिएण अणापुच्छाए पडिवन्ने कोइ किंचि वेयावच्चाइ काउं णेच्छइ, अकज्जमाणे तस्स असमाही, अह करेंति तो ते परिताविज्जति, अण्णत्थ वा गच्छंति, कक्खडखेत्ते वा तत्थ भत्तपाणं णत्थि, असइ भत्तपाणस्स जइ तं छड्डितुं गच्छंति तो उड्डाहो, महंतो य पवयणोवघाओ, भत्तपच्चक्खायस्स वा भत्ताइपाउग्गं ण लब्भइ, जा तेण विणा विराहणा तं णिप्फण्णं पावंति तम्हा गच्छो पुच्छियव्वो – "अज्जो ! इमो साहू परिण्णं पडिवज्जइ महंतं णिज्जरद्दारं", एवं पुच्छिए जो जं तरइ सो तं अभिग्गहं गेण्हइ सुलभं वा दुल्लभं वा भत्तपाणाइ गुरूणं कहेति, एवं दोसा परिहरिया भवंति । दारं ।

"परिच्छ" त्ति दारं – आयरिएण परिण्णी परिच्छियव्वो, तेण वि गुरू गच्छो य परिच्छियव्वो । अपरिच्छिणे चउगुरु, विराहणा दुविहा, अपरिच्छए एक्को य जं विराहणं पाविहिति तण्णिप्फण्णं भवइ परिच्छियव्वं दव्वभावेहिं ।

परिन्नी गच्छं परिच्छइ – "अज्जो ! आणेह मे कलमसालीकूरं, खीरं च मे कढियं खंडमच्छंडिय-सक्कराजुयं कल्लाणयं ता भोयणं" ।

जइ हसंति, भणंति वा – "कस्रो अम्हं एरिसं" ? ताहे तत्थ ण पच्चक्खाइ।

अह भणंति – "जोगं करेमो" आणियं वा। उक्कोसं पि आणियं, सो दुगंछइ, जइ तं पडिवज्जंति भणंति वा "अन्नं आणेमो" त्ति तो तेसिं अंतिए पडिवज्जइ। भावपरिच्छाए जइ ते कसाइज्जति ताहे तस्संतिए ण पच्चक्खाइ।

इयाणि गुरू गच्छो य तं परिच्छइ – दव्वे कलमोयणाए दव्वं सभावाणुमयं वा उवणीयं, जइ दुगंछइ तो सुद्धो।

भावेण पुच्छिज्जइ – "अज्जो ! किं संलेहो, कओ ण कउ ?" त्ति। ताहे सो रूसिओ अंगुलिं भंजिऊण दायेइ – "पेच्छह किं कओ, ण कओ त्ति।"

एवं कए गुरू भणइ – "कओ तुमे दव्वसंलेहो, भावसंलेहं करेहि, एत्थ पहाणो भावसंलेहो सपयत्तेण कायव्वो।"

एत्थ गुरू अमच्चकोंकणगदिट्ठंतं कहेति –

रन्ना अमच्चो कोंकणओ य दो वि णिव्विसया आणत्ता। पंचाहस्स परओ जं पस्से तस्स सारीरो णिग्गहो। कंकणो दोद्धिए कंजियं छोढुं तक्खणा चेव णिरवेक्खो गओ। अमच्चो पुण भावपडिबद्धो जाव भंडी वहिलगे कए य भरेइ ताव पंचाहो पुन्नो। रन्ना उवलद्धे णिग्गहो कओ। एवं तुमं पि भावपडिबद्धो असंलिहिअप्पा अमच्चो इव विणिस्सहिसि। एवं परिच्छिते जो सुद्धो सो पडिच्छियव्वो, णो इतरो। दारं।

"आलोए" त्ति दारं – आलोयणा दायव्वा। पव्वज्जदिणा आरब्भ आलोएइ जाव अणासगपडिवत्ति वि दिणो, णाणदंसण चरित्ताइयारं एक्केक्कं दव्वाइ चउक्कसोहीए, दव्वओ सचित्ताचित्तं, खेत्ततो अद्धाणाइएसु, कालओ सुभिक्खदुब्भिक्खेसु. भावओ हिट्ठगिलाणेण, एवं उत्तिमट्ठकाले सव्वं आलोयव्वं।

जहा कुसलो वि विज्जो अप्पणो वाहिं अन्नस्स कहेइ तहा साहू पच्छित्तवियाणगो वि अन्नस्सऽइयारं कहेइ, छत्तीसगुणसमन्नागएण वि आलोयणा दायव्वा।

इमे छत्तीसगुणा – अट्ठविहा गणिसंपया, एक्केक्का चउव्विहा। विणयपडिवत्ती चउव्विहा। एते सव्वे मिलिया छत्तीसं। पंचविहववहारकुसलेण वि परसक्खिया विसोही कायव्वा।

जहा वा वालो उज्जुयं कज्जमकज्जं वा भणइ तहा समत्थं[1] आलोयव्वं।

विसारिएसु पडिसेवणातियारेसु इमं वत्तव्वं –

जे मे जाणंति जिणा, अवराहे णाणदंसणचरित्ते।
ते हं आलोएत्तु, उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥

आलोयणाए इमे गुणा – पंचविहो आयारो पभाविओ भवइ, चरित्तविणओ य कओ भवइ, अप्पा गुरुभावे ठविओ, थेरकप्पो चरित्तकप्पो आलोयणकप्पो वा दिविओ भवइ, अत्तसोही कया, उज्जुसंजमो कओ भवइ, अज्जवं अमायत्तं तं कयं भवइ, मद्दवयाए अमाणत्तं दाइयं, लाघवेण अलोभत्तं कयं, अप्पणो तुट्ठी अप्पणो पल्हादजणणं कयं, बहुवित्थरं एत्थ आलोयणापगयं वत्तव्वं। दारं।

---

१ समस्तम्।

"ठाणं" त्ति दारं – वसही ठाणं, केरिसं तस्स जोग्गं ? भन्नइ – जत्थ झाणवाघाओ ण भवइ । ते य इमे झाणवाघायठाणा – गंधव्वणट्टसाला, सव्वाउज्जसाला, चक्किजंतादिसालाओ, तुरग-गवसालाओ, रायपहो य ।

अहवा – जत्तिया समयविरुद्धा उवस्सया सव्वे वज्जेयव्वा । छक्कायपडिवज्जणाय जत्थ इंदियपडि-संचारो णत्थि. मणसंखोभकरणं च जत्थ णत्थि, तारिसे ठाणे वसही घेत्तव्वा । दारं ।

"वसहि" त्ति दारं – केरिसा पुण सा वसही घेत्तव्वा ? सव्वसाहूण एक्का वसही न कप्पइ । जइ एक्कओ ठायति तो चउगुरुं । तेसु समुद्दिसंतेसु अन्नापाणगंधेणं झाणवाघाओ हवेज्जा, तम्हा दो वसहीओ घेत्तव्वाओ । एगा उत्तिमट्ठपडिवन्नस्स, बिइया सेससाहूणं । दारं ।

"पसत्थ" त्ति दारं – सन्निवेसस्स कम्मि दिसाभागे वसही पसत्था ? सन्निवेसवसभस्स मुहसिर-ककुहपोट्टा पसत्था, सेसेसु अप्पसत्था । दारं ।

"णिज्जवग" त्ति दारं – णिज्जवगा पडियारगा । ते केरिसा केत्तिया वा ? पासत्थातिठाण-विरहिया पियधम्मा अवज्जभीरू दढसंघयणा गुणसंपन्ना वेयावच्चकरणे अपरितंता गीयत्था भरहवासे दुसमाणकालाणुरूवा उक्कोसेण अडयालीसं णिज्जवगा उव्वत्तणादिकायपडियरगा चउरो, अब्भंतरदारमूले चउरो, संथारगवावारे चउरो, तस्सप्पणो धम्मकही चउरो, वादी चउरो, बलसंपन्ना अग्गद्दारे चउरो, इच्छियभत्तणितगा चउरो, पाणगे ङ्क, वियारे चउरो, पासवणे चउरो, बाहिं जणवयस्स धम्मकही चउरो, चउदिसिं सहसजोहा चउरो । एत्ताओ एक्कगपरिहाणी य णेयव्वा जाव जहण्णेण दो जणा एक्को भिक्खाए वच्चइ, बीओ परिण्णिस्स पासे अच्छइ । दारं ।

"दव्वदायणा चरिमि" त्ति दारं – आहारदव्वं दाइज्जइ चरिमाहारकाले । सव्वस्स किर चरिमे काले अईव आहारतण्हा जायइ, तस्स वोच्छेदणट्ठा कालसभावाणुमओ पुव्वज्झुसिओ वा इमो से दंसियइ – णव रसविगइओ, दसमी सवित्थारा, सत्तविहो ओदणो, अट्ठारस वंजणो, पाणगं पि से उक्कोसं दिज्जइ । एवं तण्हावोच्छेदे कए ण पुण तस्स तम्मि मई पवत्तइ, ताहे वोच्छेदे य कए समाही भविस्सति । तं च उग्गमुप्पादणाएसणासुद्धं मग्गिज्जइ, पच्छा पणगपरिहाणीए वितियचउत्थहरियं दट्ठुं कोई संवेगमापन्नो तीरपत्तस्स मे किमेतेणं ? ण चेव भुंजइ, कोइ देसं भुंजई, कोइ सव्वं भुंजइ। "अहो ! इमो साहू चरिमं भुंजइ" – सेससाहूण वि सद्धा कया भवइ, देसं सव्वं वा भोच्चा वि हा "किमेएणं" ति संवेगं गच्छति । संवेगगओ य तिविहं वोसिरइ – आहारं, उवहिं, देहं अहवा आहारोवहिवसही । दारं ।

अन्नो पुण देसं सव्वं वा भोच्चा तं चेवऽणुबंधिज्जा पुणो आणेह त्ति भणेज्जा ।

एत्थ "हाणि" त्ति दारं – तस्स मणुन्नाहारपडिबद्धस्स गुणवड्ढिणिमित्तं दव्वहाणीए तहा वोच्छेदं करेंति । जा तिन्नि दिणे हु समाणं आणे ततो परं भन्नइ – "न लब्भइ" । भणति य –"आहारे ताव गेहिं छिंदसु, पच्छा उत्तिमट्ठं काहिसि । जं वा पुव्वं ण भुत्तं तमिदाणिं तीरपत्तो इच्छसि । तणकट्ठेण व अग्गी जहा ण तिप्पइ, उदही वा जलेण, तहा इमो जीवो आहारेण ण तिप्पति, तं उत्तमसाहसं करेहि" त्ति । दारं ।

"अपरितंते" त्ति दारं – ते पडिचरगा दिवा राओ य अपरितंता कम्मं णिज्जरेमाणा वेयावच्चं करेंति । जो य जत्थ कुसलो समत्थो सो तत्थ उज्जमइ तहा जहा तस्स भावं सुट्ठुतरं दीवेइ । दारं ।

"णिज्जर" त्ति दारं – कम्मणिज्जरा देहवियोगो खिप्पं चिरेण वा होज्ज, पच्चक्खायस्स पडिचारगाण वि दोण्ह वि महती णिज्जरा ।

कहं ? जओ भन्नइ –

कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अन्नतरगम्मि जोगे, सज्झायम्मि विसेसेणं ॥

एवं गाहा वत्तव्वा काउस्सग्गो वेयावच्चे उत्तिमट्ठे य । दारं ।

"संथारगि" त्ति दारं – उत्तिमट्ठपडिवण्णस्स केरिसो संथारो ? उस्सग्गेण ताव भूमीए ठिओ णिवन्नो वा, जया संथरेइ तया संथारुत्तरपट्टे, असंथरे बहुचीरा, तहावि असंथरे अज्झुसिरे कुसुमाई तणे, ततो कोतव-पावारग-णव-तगतुलिय, तहावि असंथरे संथारगो जाव पल्लंको, अहवा जहा तस्स समाही तहा कायव्वं । दारं ।

"उव्वत्तणाईणि" त्ति दारं – उस्सग्गेण य तेण सयमेव उव्वत्तण-परियत्तण-उट्ठ-णिसीयण-णिग्गमण-पवेस-उवकरणपडिलेहण-पाणगाणयणं च कायव्वं, चाउक्कालं सज्झायं च करेइ । जं जहा तरइ तं तहा सयमेव करइ । अह ण तरइ ताहे से सव्वं अन्ने करेंति, अन्तोहितो बाहिं णीणेंति, बाहिरतो वा अंतो पवसेंति, जहा जहा समाही धीई य तहा करेंति । एवं पि कीरमाणे जइ ण तरेज्ज ताहे से इमं कहिज्जइ, [1]धीरपुरिसपन्नते मरणविभत्तिगाहाओ घोसेयव्वाओ, जाव "एयं पाउवगमणं, णिप्पडिकम्मं जिणेहिं पन्नत्तं । जं सोऊण परिन्नी, ववसायपरक्कमं कुणइ । दारं ।

"सारेऊणं" ति दारं – कोइ पढमबिइयपरीसहअट्टिओ दिया राओ वा भासेज्ज ? ताहे से संभारिज्जइ – "कोसि तुमं ?" "समणो हं ।" "किं पडिवन्नो" ? "उत्तिमट्ठं ।" "का वेला" ? कहेइ "दिवसं रातिं वा ।" तो "किं ओभाससि वलियं, मे सज्झाणवाघाओ वट्टइ", एवं से सरिऊण असमाहिपडिघायत्थं समाहिहेतुं च भत्तं पाणं वा दिवा राओ वा दिज्जइ । दारं ।

चोदगाह – 'ण जुत्तं" ।

आयरिओ "कवए" त्ति दिट्ठंतं कहेइ – जाहे किल कालं करेइ जीवो ताहे आहारे गाढं अभिलासो भवइ ।

एत्थ दिट्ठंतो जहा – कोइ सहस्सजोही संगामे वम्मित-कवइओ हत्थिखंधगओ संगामं जोहेइ, अन्ने य से जहा कंडमाईणि ण किं चि आवाहं काउं समत्था । दुमारूढेण य एक्केण से पुरिसेण मत्थए कणएण आहओ, सो कणओ पच्चप्फिडिओ कवयस्स गुणेण, तेण अवलोइयं, दिट्ठो दुमारुढो, अद्धचंदेण य से सिरं अवणीयं ।

जहा सहस्सजोही तहा उत्तिमट्ठपडिवण्णो । जहा य सरवरिसं तहा परिसहोवसग्गा । जहा कणगो तहा साधारणवेदणा । जहा कवयं तहा आहारो । वेदणापडिघाए कए सव्वे परीसहोवसग्गे जिणइ । हत्थिपदाउदिए वा जहा पुरिसो पायं दाऊण खंधं विलग्गइ एवं आउट्टियपदथाणीयं आहारं आहारेत्ता अंतकिरियं वा देवलोगोववत्तिं वा आरूहइ । एह वेदणट्टो आहारं ण करेइ तो अट्टज्झाणोवगो तिरिएसु उववज्जइ, भवणवणएसु वा, तम्हा सव्ववेदणोववायं काउं समाहिणा णमोक्कारेण कालगओ । दारं ।

ताहे स "चिंधकरणं" ति दारं – अह से चिंधकरणं ण करेंति तो चउलहुं । चिंधकरणं दुविहं – सरीरे उवकरणे य । लोयं पुव्वं चेव काऊणं संथरेंति । अह पुव्वं ण कओ पुणो वड्ढिता वा ताहे लोओ से कज्जति, एवं सरीरे । उवकरणे कालगयस्स चोलपट्टो, मुहपोत्तिया मुहे वज्झइ, हत्थपादा य से वज्झति,

---

1 गा० ३९११ से ३९२२ तक ।

अंगुट्ठंतरे लंछिज्जइ त्ति । जदि दिवड्ढखेत्ते नक्खत्ते कालगओ तो दुन्नि पुत्तलगा, समणखित्ते एगो, अवड्ढे णत्थि ।

अचिंधकरणे दोसा – देवेसु उववण्णो मिच्छत्तं गच्छइ, जहा सो सावगो उज्जेणीए, दंडिओ वा चिंधेण विणा दट्ठूणं गामे गिण्हेज्ज । दारं ।

"अंतो बहिं" त्ति एयं भत्तपरिन्नं गामस्स अंतो बहिं वा पडिवज्जइ ण दोसो । दारं ।

"वाघाए" त्ति दारं – जइ से कम्मोदएण वाघातो हवेज्जा तो ण चेव पगासेतव्वो त्ति । इमो विही वाघाते उप्पन्ने अन्नो जो संलिहिओ सो ठविज्जइ । एस गीयत्थाणं उवायो । जो वा अन्नो वा उच्छहइ सो ठविज्जइ । इयरस्स पुण गिलाणपडिकम्मं कीरइ ।

अहवा – तत्थ वसभो ठविज्जइ । तं पि राओ संज्झाछेदे वा परिट्ठवेंति । एसा दंडिय-माईहिं अण्णाए जयणा । तं पुण पडिभग्गं पेसंति सयं वा गच्छंति । जो तं खिंसइ तस्स चउगुरुं ।

जो सपरक्कमे गमो सो चेव अपरक्कमे, णवरं – सो सगच्छे पडिवज्जइ । सपरक्कमा इतरा य एते दो वि भणिया ।

इदाणिं वाघाइमं अणाणुपुव्वी – रोगातंकेहिं वाहिओ वालमरणं मरेज्जा, अत्थभल्लाईहिं वा विरुंगिओ बहूहिं आसुघाइकारणेहिं परक्कममकाऊणं भत्तं पच्चक्खावेइ, सो जइ पंडियमरणेण असत्तो ततो ऊस्सासं णिरुंभइ, वेहाणसं गिद्धपट्ठं वा पडिवज्जइ, तस्स उत्तमा आराहणा । विहरंतो पुण आयारलोवं करेइ ॥३८१६-१७-१८॥ एसो पच्चक्खाणे विही भणितो ।

इयाणिं इंगिणी भन्नइ –

आयपरपडिक्कम्मं, भत्तपरिण्णाए दो अणुण्णाता ।
परवज्जिया य इंगिणि, चउव्विहाहारविरती य ॥३८१७॥

जाव अव्वोच्छित्ती ताव णेयव्वं । पंचधा तुलेऊण इंगिणिमरणं परिणओ । इंगिणीए आयवेयावच्चं परो न करेइ, णियमा चउव्विहाहारविरई । जइ वहिं पडिवज्जइ तो अणीहारिमं, अह गच्छे तो णीहारिमं । पढमविइयसंघयणी पडिवज्जइ, जेण अहियं णवमपुव्वस्स तइयं आयारवत्थुं एक्कारसंगी वा पडिवज्जइ, धितीए वज्जकुड्डसमाणो सव्वाणि उवसग्गाणि अहियासेइ ॥३८१७॥ गया "इंगिणी" ।

इदाणिं "पादवगेमणं" –

णिच्चलणिप्पडिकम्मो, णिक्खिवति जं जहिं जहा अंगं ।
एयं पादोवगमं, णीहारिं वा अणीहारिं ॥३८१८॥

एत्थ पव्वायाई णेयव्वं जाव अव्वोच्छित्ती । पंच तुलेऊणं पादवगमणं परिणओ । धिईए वज्जकुड्ड-समाणो णिच्चलो जहे व णिक्खित्ताणि अंगाणि तहेव अच्छइ । अप्पणा किंचि ण करेइ, परो ण तस्स किंचि वेयावच्चं करेइ । तस्स पडिलेहण-पप्फोडणा णत्थि । जहा – पादवो समविसमे पडिओ चिट्ठइ तहा सो वि परप्पयोगा परं चालिज्जइ । विच्छिन्ने थंडिले तस्स (स) पाण-वीय-हरियरहिए पडिवज्जइ, जत्थ कड्ढविकड्ढि किज्जंते तस-थावराण पीडा न भवइ, एरिसे णिरावराहे पडिवज्जइ, चउव्विहे उवसग्गे अहियासेइ । एयं पि णीहारिमं अणीहारिमं वा ॥३८१८॥

॥ इति णिसीहविसेसचुण्णीए एक्कारसमो उद्देसओ समत्तो ॥

(१) गणि णिसिरणे –

[1]गणि णिसिरम्मि उवही, जो कप्पे वण्णिओ य सत्तविहो ।
सो चेव णिरवसेसो, भत्तपरिण्णाए दसमम्मि ॥३८१६॥

(२) परगणे –

किं कारण चंकमणं, थेराणं तह तवो किलंताणं ।
अप्पज्झयम्मि मरणे, कालुणिया झाणवाघाते ॥३८२०॥

सिणेहो पलवी होइ, णिग्गते उभयस्स वि ।
आहच्च वा वि वाघातो, णेहे सेहादि विउब्भामो ॥३८२१॥

(३) सिती –

दव्वसिती भावसिती, अणुयोगधराण जेसि उवलद्धा ।
ण उड्डगमणकज्जे, हिट्ठिल्लपदं पसंसंति ॥३८२२॥

संजमठाणाणं कंडगाण लेस्सा ठितीविसेसाणं ।
उवरिल्लपरिक्कमणं, भावसिती केवलं जाव ॥३८२३॥

(४) संलेहे –

चत्तारि विचित्ताइं, विगती णिज्जूहियाति चत्तारि ।
एगंतरमायामे, णातिविगिट्ठेऽविगिट्ठे वा ॥३८२४॥

एगंतरियं णिव्विविल्लं तिगं च एगंतरे भवे विगती ।
णिस्सट्ठगल्लधरणं, छारादीछड्डणं चेव ॥३८२५॥

(५) अगीय –

णासेइ अगीयत्थो, चउरंगं सव्वलोगसारंगं ।
णट्ठम्मि य चउरंगे, ण हु सुलभं होइ चउरंगं ॥३८२६॥

पढमवितिएहि छड्डे, अंतो बाहिं व णं विगिंचंति ।
मिच्छदिट्ठे आसांसणा य मरणं जढं तेण ॥३८२७॥

पडिगमणादिपदोसे, तेरिच्छे वाणमंतरंते य ।
मोए दंडिगमादी, असमाहिगती य दिट्ठी य ॥३८२८॥

---

१ इह २६३ अंकमिते पृष्ठे ३८१४, १५, १६ अंकतमानां द्वारगाथानां या चूर्णिः, तस्यां यानि द्वाराणि, तेषु द्वारेषु इमा सर्वा अपि गाथा यथास्थानं युज्यन्तां सुज्ञैः ।

एते अण्णे य तहिं, बहवे दोसा य पच्चवाया य ।
एतेहिं कारणेहिं, अगीयत्थे ण कप्पइ परिण्णा ॥३८२९॥

पंच व छ सत्त सते, अधवा एत्तो वि सातिरेगतरे ।
गीयत्थपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३८३०॥

एगं च दो व तिण्णि व, उक्कोसं बारसे व वरिसाति ।
गीयत्थपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३८३१॥

गीयत्थदुल्लभं खलु, कालं तु पडुच्च मग्गणा एसा ।
ते खलु गवेसमाणा, खेत्ते काले य परिमाणं ॥३८३२॥

तम्हा गीयत्थेणं, पवयणगहियत्थसव्वसारेणं ।
णिज्जवतेण समाही, कायव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥३८३३॥

(६) असंविग्गे –

णासेइ असंविग्गो, चउरंगं सव्वलोगसारंगं ।
णट्ठम्मि य चउरंगे, ण हु सुलहं होइ चउरंगं ॥३८३४॥

आहाकम्मियपाणग, पुप्फा सिंगा य बहुजणे णातं ।
सेज्जासंथारो वि य, उवही वि य होति अविसुद्धो ॥३८३५॥

एते अण्णे य तहिं, बहवो दोसा य पच्चवाया य ।
एतेहिं य अण्णेहिं य, संविग्गे कप्पति परिण्णा ॥३८३६॥

पंच व छ सत्त सते, अहवा एतो वि सातिरेगतरे ।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३८३७॥

अहवा –

एगं च दो व तिन्नि व, उक्कोसं वारिसे व वरिसाइं ।
संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३८३८॥

संविग्गदुल्लभं खलु, कालं तु पडुच्च मग्गणा एसा ।
ते खलु गवेसमाणा, खेत्ते काले य परिमाणं ॥३८३९॥

तम्हा संविग्गेणं, पवयणगहियत्थसव्वसारेणं ।
णिज्जवएण समाही, कायव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥३८४०॥

(७) एक्क –

एगो उ कज्जहाणी, सो वा सेहा य पवयणं चत्तं ।
तव्वऽणिणए णिमित्ते, चत्तो चत्तो य उड्डाहो ॥३८४१॥

तस्सट्टगतोभासण, सेहादि अदाण सो परिच्चत्तो ।
दाउं वा ऽदाउं वा, भवंति सेहा वि णिद्धम्मा ॥३८४२॥

कुप्पति अदिज्जमाणे, मारिंति बल त्ति पवयणं चत्तं ।
सेहा य जं पडिगता, जणो अवण्णं पदाणे वि ॥३८४३॥

(८) आभोयण –

परतो सयं व णच्चा, पारगमिच्छत्त [1]णिरगमिच्छत्तं ।
असती खेमसुभिक्खे, णिव्वाघातेण पडिवत्ती ॥३८४४॥

सयं चेव चिरं वासो, वासावासे तवस्सिणं तेण ।
तस्स विसेसेण या, वासासु पडिवज्जणाणि ॥३८४५॥

कंचणपुर इह सण्णा, दिवे य गुरुणा य पुच्छ कहणा य ।
पारणग खीररुहिरं, आमंतण संघणासणता ॥३८४६॥

असिवादिकारणेहिं, वहमाणा संजता परिच्चत्ता ।
उवहिविणासो जं छत्ताण चत्तो सो पवयणं चेवा ॥३८४७॥

(९) अन्ने –

एगो संथारगतो, संलेहगते य (ततिय) ततियपडिसेहो ।
अण्णाअपुच्छअसमाही, तस्स वा तेसिं च असती य ॥३८४८॥

भवेज्ज जइ वाघातो, वितियं तत्थ था (ठा) वते ।
चिलिमिणा अंतरे चेव, वहि वंदावते जणं ॥३८४९॥

पाणगादीणि जोग्गाइं, जातिं तत्थ समाहिते ।
अलंभे तस्स जा [2]ठाणा, परिक्खे सो य जायणे ॥३८५०॥

असंथरं अजोग्गा वा, जोगवाही व ते भवे ।
एसणादि परिक्केसो, जाया तस्सा विराहणा ॥३८५१॥

---

१ पारतो गुरुणा, इत्यपिपाठः । २ हाणी इत्यपि पाठः ।

(१०) अणपुच्छ –

खीरोदणे य दव्वे, तच्च दुगुंच्छणय तहिं वितरे ।
परिच्छिया सुसंलेहदागमणेऽमच्चकोंकणते ॥३८५२॥

कलमोदणा वि भणिते, हसंति जइ ते तहिं ण पडिवज्जे ।
आणीय कुच्छते जति, करेमी जोग्गं ति तो वितरे ॥३८५३॥

कलमोदणो य पयसा, अण्णं च सहावअणुमयं जस्स ।
उवणीयं जो कुच्छति, तं तु अलुद्धं पडिच्छंति ॥३८५४॥

(११) परिच्छ –

ण हु ते दव्वसंलेहं, पुच्छे पासामि ते किसं ।
कीस ते अंगुली भग्गा, भावं संलिहमातुरं ॥३८५५॥

रण्णा कोंकणगामच्चा, दो वि णिव्विसया कया ।
दोद्धिए कंजियं छोढुं, कोंकणो तक्खणा गतो ॥३८५६॥

हिंडितो वहिले काये, अमच्चो जा भरेति तु ।
ताव पुण्णं तु पंचाहणे पुण्णे णिहणं गतो ॥३८५७॥

इंदियाणि कसाये य, गारवे य किसे कुरु ।
णो वयं ते पसंसामो, किसं साहुसरीरगं ॥३७५८॥

(१२) आलोए –

आयरियपादमूलं, गंतूण संति परक्कमे संते ।
सव्वेण अत्तसोही, कायव्वा एस उवदेसो ॥३८५९॥

जह सुकुसलो वि वेज्जो, अण्णस्स कहेति अप्पणो वाहिं ।
वेज्जस्स य सो सोउं, तो पडिकम्मं समारभते ॥३८६०॥

जाणंतेण वि एवं, पायच्छित्तविहिमप्पणो णिउणं ।
तह वि य पागडतरगं, आलोएयव्वयं होति ॥३८६१॥

छत्तीसगुणसमण्णागएण तेण वि अवस्स कायव्वा ।
परसक्खिया विसोही, सुट्ठु वि ववहारकुसलेणं ॥३८६२॥

जह वालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणति ।
तं तह आलोएज्जा, मायामदविप्पमुक्को उ ॥३८६३॥

उप्पण्णाणुप्पण्णा, माया अणुमग्गतो णिहंतव्वा ।
आलोयण निंदण गरहणा ते ण पुणो वि विइयंति ॥३८६४॥
आयारविणयगुरुकप्पमादीवणा अत्तसोही उज्जुभावो ।
अज्जव मद्दव लाघव, तुट्ठी पल्हायजणणं च ॥३८६५॥
पव्वज्जादी आलोयणा उ तिण्हं चउक्कगविसोही ।
अप्पणो तह परे, कायव्वा उत्तिमट्ठं ति ॥३८६६॥
णाणणिमित्तं आसेवियं तु वितहं परूवियं वा वि ।
चेयणमचेयणं वा, दव्वं सेसेसु इमगं तु ॥३८६७॥
णाणणिमित्तं अद्धाणमेति ओमे वि अच्छइ तदट्ठा ।
णाणं च आगमेस्संति कुणइ परिकम्मणा देहे ॥३८६८॥
पडिसेवती विगतीतो, मज्झे दव्वे य एसती पिवति वा ।
एतस्स वि किरिया, कता उ पणगादिहाणीए ॥३८६९॥
एमेव दंसणम्मि वि, सद्दहणा णवरि तत्थ णाणत्तं ।
एसण इट्ठी दोसे, वयंति चरणे सिया सो वा ॥३८७०॥
अहवा तिगसालंबेण दव्वमादी चउक्कमाहच्च ।
आसेवितं णिरालं, वतो य आलोय एयं तु ॥३८७१॥
पडिसेवणातियारा, जइ वीसरिया कहं वि होज्जा दि ।
तेसु कह वट्टियव्वं, सल्लुद्धरणम्मि समणेणं ॥३८७२॥
जे मे जाणंति जिणा अवराहे जेसु जेसु ठाणेसु ।
तेहं आलोएतुं, उवट्ठितो सव्वभावेणं ॥३८७३॥
एवं आलोयंति विसुद्धभावपरिणामसंजुत्तो ।
आराहतो तह वि सागारवपलिउंचणाहिरतो ॥३८७४॥

(१३) ठाण –

गंधव्वणट्टाउज्जस्स चक्कजंतग्गिकम्मफरुसे य ।
णंतिक्करयगदेवता डोंबा पोंडहिगरायपहे ॥३८७५॥
वारग-कोद्दव-कल्लाण-करय-पुप्फ-फल-दगसमीवम्मि ।
आरामअहे विगडे, णागघरे पुव्वभणिते य ॥३८७६॥

(१४) वसही –

पढमबितिएसु कप्पे, उद्देसेसू उवस्सगा जे तु ।
विहिसुत्ते य णिसिद्धा, तव्विवरीया भवे सेज्जा ॥३८७७॥

(१५) पसत्थ –

इंदियपडिसंचारो, मणसंखोभकरं जहिं नत्थि दारं ।
चाउस्सालाइं दुवे, अणुण्णवेउं य ठायंति ॥३८७८॥

उज्जाणरुक्खमूले, सुण्णघरणिसद्दहरियमग्गे य ।
एवंविधे ण ठायति, होज्ज समाहीइ वाघातो ॥३८७९॥

पाणगजोगाहारे, ठवेंति से तत्थ जत्थ न उवेंति ।
अपरिणता वा सो वा, अणच्चयगिद्धिरक्खट्ठा ॥३८८०॥

भुत्तभोगी पुरा जो वि, गीयत्थो वि य भावितो ।
संते साहारधम्मेसु, सो वि खिप्पं तु खुब्भति ॥३८८१॥

पडिलोमाणुलोमा वा, विसया जत्थ दूरतो ।
ठावेत्ता तत्थ से णिच्चं, कहणा जाणगस्स ते ॥३८८२॥

(१६) णिज्जावग –

पासत्थोसण्णकुसीलठाणपरिवज्जिया उ णिज्जवगा ।
पियधम्मऽवज्जभीरू, गुणसंपण्णा अपरितंता ॥३८८३॥

[1]उव्वत्तणाइ संथारकहगवादी य अग्गदारम्मि ।
भत्तं पाणवियारे, कहग दिसा जे समत्था य ॥३८८४॥

जो जारिसओ कालो, भरहेरवते य होति वासेसु ।
ते तारिसगा ततिया, अडयालीसं तु णिज्जवगा ॥३८८५॥

एवं खलु उक्कोसा, परिहायंता हवंति तिण्णे व ।
दो गीयत्था ततितो, असुण्णकरणं जहण्णेणं ॥३८८६॥

(१७) दव्वदायणा चरिमे –

णवसत्तए दसमवित्थरे य वितियं च पाणगं दव्वं ।
अणुपुव्वविहारीणं, समाहिकामाण उवहणिउं ॥३८८७॥

---

१ उव्वत्तदारसंथा (पा०) ।

कालसभावाणुमतो, पुव्वज्झुसितो सुतो व दिट्ठो वा ।
झोसिज्जति सो सेहा, जयणाए चउव्विहाहारो ॥३८८८॥

तण्हाछेदम्मि कते, ण तस्स तहियं पवत्तते भावो ।
चरमं च एक भुंजति, सद्धाजणणं दुपक्खे वी ॥३८८९॥

किं पत्तो णो भुत्तं मे, परिणामासुयंमुयं ।
दिट्ठसारो सयं जाओ, चोदणे से सीतता ॥३८९०॥

तिविधं वोसिरिओ सो, ताहे उक्कोसगाणि दव्वाणि ।
मग्गंता जयणाते, चरिमाहारं पदेसेंति ॥३८९१॥

पोसिता ताइं कोती, तीरपत्तस्स किं ममेतेहिं ।
वेरग्गमणुप्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥३८९२॥

देसं भोच्चा कोई, धिक्कारं करइ इमेहिं कम्मेहिं ।
वेरग्गमणुप्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥३८९३॥

सव्वं भोच्चा कोतो, धिक्कारं करइ इमेहि कम्मेहिं ।
वेरग्गपणुप्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥३८९४॥

सव्वं भोच्चा कोई, मणुण्णरसविपरिणतो भवेज्जाहि ।
ते चेवऽणुबंधंतो, देसं सव्वं च रोचीया ॥३८९५॥

(१८) हाणि –

विगतीकयाणुबंधो, आहारणुबंधणाते वोच्छेतो ।
परिहायमाणदव्वे, गुणवुड्ढिसमाहि अणुकम्मा ॥३८९६॥

दवियपरिणामतो वा, हावेंति दिणे तु जा तिण्णि ।
वेति ण लब्भति दुलभे, सुलभम्मि व होइमा जयणा ॥३८९७॥

आहारे ताव छिंदाहि, गेहिंतो ण य इस्सति ।
जं वा भुत्तं न पुव्वं तं, तीरं पत्तो न मुच्छसि ॥३८९८॥

(१९) अपरितंते –

वट्टंति अपरितंती, दिया य रातो य सव्वपरिकम्मे ।
पडिचरगाणुगुणचरगा, कम्मरयं निज्जरेमाणा ॥३८९९॥

जो जत्थ होइ कुसलो, सो उण हावेति तं सति बलम्मि ।
उज्जुत्ता सणिश्रोगे, तस्स व दीवेंति तं सड्ढं ॥३९००॥

(२०) णिज्जर –

देह विउगा खिप्पं, च होज्ज अहवा विकालहरणेणं ।
दोण्हं पि णिज्जरा वट्टमाणे गच्छो उ एगट्ठा ॥३९०१॥

कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णतरगम्मि जोगे, सज्झायम्मि विसेसेणं ॥३९०२॥

कम्ममसंखेज्जभवं, खवेति अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णतरगम्मि जोगे, काउसग्गे विसेसेणं ॥३९०३॥

कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णतरगम्मि जोगे, वेयावच्चे विसेसेणं ॥३९०४॥

कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो ।
अण्णतरगम्मि जोगे, विसेसतो उत्तिमट्ठम्मि ॥३९०५॥

(२१) संथार –

भूमिं सिलाए फलए, तणाए संथार उत्तिमट्ठम्मि ।
दोमादि संथरंति, वितियपद अणधियासे य ॥३९०६॥

तणकंबलपावारे, कोयवतूली य भूमिसंथारे ।
एमेव अणहियासे, संथारगमादि पल्लंके ॥३९०७॥

(२२) उव्वत्तणादि –

पडिलेहणसंथारे, पाणगउव्वत्तणादिणिग्गमणं ।
सयमेव करेति सहू, उस्सग्गाणेतरे करते ॥३९०८॥

उव्वत्तणणीहरणं, मश्रो उ अधियासणाए कायव्वो ।
संथारऽसमाहीए, समाहिहेउं उदाहरणं ॥३९०९॥

काओवचिओ बलवं, णिक्खमणपवेसणं व से कुणति ।
तह वि य अविसहमाणं, संथारगयं तु संथारे ॥३९१०॥

धीरपुरिसपण्णत्ते, सप्पुरिसणिसेविते परमरम्मे ।
धण्णा सिलातलगता, णिरावयक्खा णिवज्जंति ॥३९११॥

जइं ताव सावताकुलगिरिमंदरविसमकडगदुग्गेसु ।
साधिंति उत्तिमट्ठं, धितिधणियसहायगा धीरा ॥३६१२॥

किं पुण अणगारसहायएण अण्णोण्णसंगहबलेण ।
परलोइयं ण सक्कइ, साहेउं उत्तिमो अट्ठो ॥३६१३॥

जिणवयणसप्पमेयं, महुरं कण्णाहूति सुणेंतेणं ।
सक्का हु साहुमज्झे, संसारमहोयहिं तरिउं ॥३६१४॥

सव्वे सव्वद्धाते, सव्वण्णू सव्वकम्मभूमीसु ।
सव्वगुरू सव्वहिता, सव्वे मेरुम्मि अभिसित्ता ॥३६१५॥

सव्वाहिं व लद्धीहिं, सव्वे वि परीसहे पराइत्ता ।
सव्वे वि य तित्थगरा, पाओवगया तु सिद्धिगता ॥३६१६॥

अवसेसा अणगारा, तीतपडुप्पण्णणागता सव्वे ।
केई पाओवगया, पच्चक्खाणिंगिणिं केइ ॥३६१७॥

सव्वाओ अज्जातो, सव्वे वि य पढमसंघयणवज्जा ।
सव्वे य देसविरता, पच्चक्खाणेण उ मरंति ॥३६१८॥

सव्वसुहप्पभावातो, जीवियसारातो सव्वजणितातो ।
आहारातो ण तरणं, ण विज्जती उत्तिमं लोए ॥३६१९॥

विग्गहगते य सिद्धे, मोत्तुं लोगम्मि जत्तिया जीवा ।
सव्वे सव्वावत्थं, आहारे हुंति उवउत्ता ॥३६२०॥

तंसारिसगं रयणं, सारं जं सव्वलोगरयणाणं ।
सव्वं परिच्चयित्ता, पाओवगता परिहरंति ॥३६२१॥

एवं पाओवगमं, णिप्पडिकम्मं जिणेहि पण्णत्तं ।
जं सोऊणं खमतो, ववसायपरक्कमं कुणइ ॥३६२२॥

(२३) सारण –

केई परीसहेहिं, वाउलिउवेतणुड्डतो वा वि ।
ओभासेज्ज कयाती, पढमं वितियं च आसज्ज ॥३६२३॥

गीयत्थमगीयत्थं, सारेत्तुं मतिविसोहणं काउं ।
तो पडिवोहिय (छ) अट्ठा, पढमे पगयं सिया बितियं ॥३६२४॥

(२४) कवय –

परीसहचमू, जोहेयव्वा मणेण काएणं ।
तो समरदेसकाले, कवयतुल्लो उ आहारो ॥३६२५॥

संगामदुगपरूवणवेडगएगसरउग्गहो चेव ।
असुरसुरिंदावरणं, संवुभमं रहियकणगस्स ॥३६२६॥

लोवए पवए जोहे, संगामे पंथिए ति य ।
आउरे सिक्खते चेव, दिट्ठंतो कहते ति य ॥३६२७॥

संगामे साहसितो, कणतेण तत्थ आहतो संतो ।
सत्तुं पुव्वविलग्गं, आहणइ उ मंडलग्गेणं ॥३६२८॥

रुक्खविलग्गो रुधितो, पहणइ कणएण कूणियं सीसे ।
अणहो य कूणिओ से, हरति सिरमंडलग्गेणं ॥३६२९॥

सरीरमुज्झयं जेण, को संगो तस्स भोयणे ।
समाहिसंवरणा[1] हेउं, दिज्जती सो उ अंततो ॥३६३०॥

सुद्धं एसित्तु ठावेंति, हाणी उ वा दिणे दिणे ।
पुव्वुत्ताए उ जयणाए, तं तु गोविंति अण्णहिं ॥३६३१॥

(२५) चिंधकरणं –

आयरितो कुंडिपदं, जे मूलं सिद्धिवासवसहीए ।
चिंधकरण कायव्वं, अचिंधकरणे भवे गुरुगा ॥३६३२॥

सरीरे उवकरणम्मि य अचिंधकरणम्मि सो उ रातिणिओ ।
मग्गेण गवेसणाते, गामाणं वायणं कुणति ॥३६३३॥

(२६) अंतोवहि –

न पगासेज्ज लहुत्तं, परिसहउदतेण होज्ज वाघातो ।
उप्पण्णे वाघाते, जो गीतत्थाण उवाघातो ॥३६३४॥

(२७) वाघाते –

दुविधा णायमणाया दुविधा णाया य दंडमादीहिं ।
सयगमणपेसणं वा, खिंसणे चउरो अणुग्घाता ॥३६३५॥

---

१ संधगा (पा०) ।

सपरक्कमे जो उ गमो, णियमा अपरक्कमम्मि सो चेव ।
पुव्वी रोगायंकेहि णवरि अभिभूतो बालमरणं परिणतो य ॥३९३६॥

(इंगिणी) –

आयपरपडिकम्मं, भत्तपरिण्णा य दो अणुण्णाया ।
परिवज्जिया य इंगिणि, चउव्विहाहारविरती य ॥३९३७॥

ठाण-णिसीयण-तुयट्टणमित्तिरयाइं जहा समाधीते ।
सयमेव य सो कुणतीं, उवसग्गपरीसहऽधियासी ॥३९३८॥

संघयणधितीजुत्तो, णवणवपुव्वासु तेण संगाता ।
इंगिणिपाओवगमं, पडिवज्जति एरिसो साहू ॥३९३९॥

पाओवगमं –

पव्वज्जादी काउं, णेयव्वं जाव होति वोच्छित्ती ।
पंच तुलेऊण य सो, पाओवगमं परिणतो य ॥३९४०॥

णिच्चलणिप्पडिकम्मे, णिक्खिवते जं जहिं जहा अंगं ।
एयं पातोवगमं, णीहारिं अणीयहारिं वा ॥३९४१॥

पादोवगमं भणियं, समविसमे पादवो य जह पडितो ।
णवरं परप्पओगा, कंपेज्ज जहा चलतरुस्स ॥३९४२॥

तस-पाण-बीयरहिते, वोच्छिण्ण-वियार-थंडिलविसुद्धे ।
णिद्देसाणिद्देसे, भवंति अब्भुज्जयं मरणं ॥३९४३॥

पुव्वभवियवेरेणं, देवो साहरति कोति पाताले ।
मा सो चरमसरीरो, ण वेदणं किं चि पाविहिसि ॥३९४४॥

उप्पण्णे उवसग्गे, दिव्वे माणुस्सते तिरिक्खे य ।
सव्वे पराजणित्ता, पादोवगता परिहरंति ॥३९४५॥

जह णाम असीकोसी असी वि (कोसी वि दो वि) खलु अण्णे ।
इय मे अण्णो देहो, अण्णो जीवो त्ति मण्णंति ॥३९४६॥

पुव्वावरदाहिणउत्तरेहिं वातेहि आवयंतेहिं ।
जह ण वि कंपइ मेरू, तह ते ज्झाणाओ ण चलंति ॥३९४७॥

पढमम्मि य संघयणे, वट्टंता सेलकुट्टसामाणा ।
तेसिं पि य वोच्छेदो, चोद्दसपुव्वीण वोच्छेदे ॥३९४८॥

दिव्वमणुया उ दुगतिगस्स पक्खेवगंसि आकुज्जा ।
वोसट्ठचत्तदेहो, अहाउअं कोति पालेज्जा ॥३६४९॥

अणुलोमो पडिलोमो, दुगं तु उभयसेहिया तिगं होंति ।
अहवा सचित्तमचित्तं दुगं तिग मीसगसमे य ॥३६५०॥

पुढवि-दग-अगणि-मारुअ-वणस्सति-तसेसु कोति साहरति ।
वोसट्ठचत्तदेहो, अहाउयं को उ पालेज्जा ॥३६५१॥

एगंतणिज्जरा से, दुविहा आराहणा धुवा तस्स ।
अंतकिरया व साहू, करेज्ज देवा पवत्तिं वा ॥३६५२॥

मज्जणगगंधपुप्फोवयारपरियारणं सया कुज्जा ।
वोसट्ठचत्तदेहो, अहाउयं कोति पालेज्जा ॥३६५३॥

पुव्वभवियपेम्मेणं, देवो देवकुरुउत्तरकुरासु ।
कोइं तु साहरेज्जा, सव्वसुहो जत्थ अणुभावो ॥३६५४॥

पुव्वभवियपेम्मेणं, देवो साहरति णागभवणम्मि ।
जहियं इट्ठा कंता, सव्वसुहा होंति अणुभावा ॥३६५५॥

पुव्वभवियवेरेणं, देवो साहरति कोति पायाले ।
मासो चरिमसरीरो, ण वेदणं किं चि पाविहिति ॥३६५६॥

बत्तीसलक्खणधरो, पादोवगतो य पागउसरीरो ।
पुरिसद्देसिणिकण्णा रोयविदिण्णा ण गेण्हेज्जा ॥३६५७॥

मज्जणग-गंध-पुप्फोवयारपरियारणं सया कुज्जा ।
वोसट्ठ-चत्तदेहो, अहाउयं कोति पालेज्जा ॥३६५८॥

णवंगसोत्तपडिबोहयाए, अट्ठारसविरतिसेसकुसलाए ।
बावत्तरीकलापंडियाए चोसट्ठिमहिलागुणेहिं च ॥३६५९॥

सोआती णव सोत्ता, अट्ठारसे होंति देसभासाओ ।
इगतीस रइविसेसा, कोसल्लं एक्कवीसतिहा ॥३६६०॥

चउकण्णम्मि रहस्से, रातेणं रायदिण्णपसराते ।
तिमिगरेहिं व उदहीण खोभितो जा मणो मुणिणो ॥३६६१॥

जाहे पराइया सा, ण समत्था सीलखंडणं काउं ।
णेऊण सेलसिहरं, तो से सिलं मुंचते उवरिं ॥३९६२॥

एगंतणिज्जरा से, दुविधा आराहणा धुवा तस्स ।
अंतकिरियं व साधू, करेज्ज देवोववायं वा ॥३९६३॥

मुणिसुव्वयंतवासी, खंदगदाहे य कुंभकारकडे ।
देवी पुरंदरजसा, दंडति पालक्कमरुते य ॥३९६४॥

पंचसया जातेणं, रुट्ठेण पुरोहितेण मिलियाति ।
रागद्दोसतुलग्गं, समकरणं चिंतियं तेहिं ॥३९६५॥

जंतेण करतेण व सत्थेण व सावतेहि विविधेहि ।
देहे विद्धंसेते, ण य ते ठाणाहि उ चलंति ॥३९६६॥

पडिणीयता य केई, अग्गिं सो सव्वतो पदेज्जाहिं ।
पादोवगमणसंतो जइ चाणक्कस्स व करीसे ॥३९६७॥

पडिणीयया य केई, चम्मंसे खिलतेहि विणिहित्ता ।
महु-घय-मक्खियदेहं, पिपीलियाणं तु देज्जाहि ॥३९६८॥

अह सो विवायपुत्तो, वोसट्ठ णिसिट्ठ चत्तदेहाउं ।
सोणियगंधेहि पिपीलिया चालंकिओ धीरो ॥३९६९॥

जह सो कालासगवेसिउ विमोग्गल्लसेलसिहरम्मि ।
खतितो विउव्विऊणं, देवेण सियालरूवेणं ॥३९७०॥

जह सो वंसिपदेसे, वोसिट्ठ णिसिट्ठ चत्तदेहो उ ।
वंसीपातेहिं विणिग्गतेहिं आगासमुक्खित्तो ॥३९७१॥

जहऽवंतीसुकुमालो, वोसट्ठ निसट्ठ चत्तदेहो उ ।
धीरो सपेल्लियाए, सिवाते खतिओति रत्तेणं ॥३९७२॥

जह ते गोट्ठट्ठाणे, वोसट्ठ णिसिट्ठ चत्तदेहागा ।
उदगेण वुज्झमाणा, वियरम्मि उ संकमे लग्गा ॥३९७३॥

बावीसमाणुपुव्विं, तिरिक्खमणुया व भेसणया (ते) ।
विसयाणुकम्मरक्खा, ण करेज्ज देवा व मणुया वा ॥३९७४॥

जह सा बत्तीसघडा, वोसट्ठणिसट्ठचत्तदेहागा ।
धीरा गतेण उदीविते णदिगलम्मि उ ललिया ॥३९७४॥
एवं पादोवगमं णिप्पडिकम्मं तु व णीणयं सुत्ते ।
तित्थगर-गणधरेहि य, साहूहि य सेवियमुदारं ॥३९७५॥

॥ इति निशीथभाष्ये एकादशमोद्देशकः परिसमाप्तः ॥

"श्रीराजनगरस्थविद्याशालाभाण्डागारसत्कानिशीथभाष्यप्रतावेवेमाः प्रक्षिप्ता गाथाः, अस्मत्पार्श्व-वर्तिनीषु तु सर्वासु अन्यासु भाष्यप्रतिषु नेमाः, अतः सम्भावयामश्च भारतवर्षेऽपि सर्वभाण्डागारवर्तिनिशीथभाष्य-प्रतिषु कस्यामेवेमा गाथा, न तु सर्वासु ।" इति सूचितं टाइप अंकितप्रतौ श्री विजयप्रेम-सूरिभिः ।

द्वादश उद्देशकः

भणिओ एक्कारसमो। इयाणिं बारसमो भन्नइ।

तस्सिमो संबंधो –

जति संसिउं ण कप्पति, अतिवातो किमु परस्स सो कातुं।
बद्धस्स होज्ज मरणं, भणिता य गुरू लहू वोच्छं ॥३९७६॥

"संस" त्ति पसंसा। गिरिपडणाई बालमरणा पाणाइवाउ त्ति काउं जइ संसिउं ण कप्पइ, किं पुण तो अतीवाओ परस्स काउं कप्पिस्सइ? सुतरां न कल्पतेत्यर्थः। बंधो य अइवायहेऊ। बद्धस्स य मरणं हवेज्ज। अओ सुत्तं भन्नइ।

अहवा संबंधो – चउगुरू भणिया, इयाणिं चउलहुं वोच्छं ॥३९७६॥

तत्थिमं पढमं सुत्तं –

जे भिक्खू कोलुणपडियाए अण्णयरिं तसपाणजाइं –
तण-पासएण वा मुंज-पासएण वा कट्ठ-पासएण वा चम्म-पासएण वा
वेत्त-पासएण वा सुत्त-पासएण वा रज्जु-पासएण वा बंधति,
बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खू कोलुणपडियाए अण्णयरिं तसपाणजाइं –
तण-पासएण वा मुंज-पासएण वा कट्ठ-पासएण वा चम्म-पासएण वा
वेत्त-पासएण वा सुत्त-पासएण वा रज्जु-पासएण वा
बद्धेल्लयं वा मुंचति, मुंचंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

भिक्खू पुव्ववण्णिओ। "कोलुणं" कारुण्यं, अणुकंपा, "पडियाए" त्ति प्रतिज्ञा, अनुकंपाप्रतिज्ञया इत्यर्थः। त्रसंतीति त्रसा, ते च [1]तेजो वायू द्वीन्द्रियादयश्च प्राणिनो त्रसा। एत्थ तेऊवाऊहिं णाहिकारो। जाइग्गहणाओ विसिट्ठगोजाइतन्नगाईहिं अहिगारो। तणा दब्भाइया, पासो त्ति बंधणं। दब्भा रज्जू इत्यर्थः। वेत्तपासग्गहणाओ सव्वे वंसभेया गहिया। कट्ठपासग्गहणाओ नियलखोडादिया गहिया। एतमाईहिं बंधंतस्स चउलहुं। बिइयसुत्ते वि बद्धेल्लगं मुयंतस्स चउलहुं चेव।

---

१ तत्त्वा० अ० २ सू० १४।

इमा सुत्तफासिया –

तसपाण तणगादी, कलुणपरिण्णाए जो उ बंधेज्जा ।
तणपासगमादीहिं, मुंचति वा आणमादीणि ॥३६७७॥ गतार्था

इह सेज्जगसेज्जायराई खलगखेत्ताई वच्चंता भणेज्ज –

ओहाणं ता अज्जो, इहइं देज्जा य तणगादीणं ।
अम्हे तुज्झं इहयं, भायणभूता परिवसामो ॥३६७८॥

"ओहाणं" ति उवयोगो, "अज्जो" त्ति आमंतणे, "इह" त्ति घरे। "तन्नगाईणं" आइसद्दाओ गवाइसु विविहोवक्खरेसु य, एवं भणंतेसु साहुणा वत्तव्वं – पच्छन्नं । "भूत" शब्दः भायणतुल्यवाची । जहा [1]अलिंदाइभायणं गिहंतो बाहिरे वा ठियं न किं चि घरवावारं करेति तहेव अम्हे इह परिवसामो ॥३६७८॥

वसहिग्गहणकाले अन्नत्थ वा वसंते जइ गिही किंचि विज्जं पुच्छिज्जा तत्थिमं भासेज्जा –

न वि जोइसं न गणितं, ण अक्खरे णेव किं चि र (व) क्खामो ।
अप्पस्सगा असुणगा, भायण-खंभोवमा वसिमो ॥३६७९॥

घरे किं चि सुणगाइणा अवरज्झंते अपस्सगा अम्हे, गिहिणो संदिसंतस्स असुणगा अम्हे, झाणोवगया वा अण्णं ण पस्सामो सुणेमो वा । सेसं कंठं ॥३६७९॥

"[2]तन्नगगहणं" किमर्थं चेत् ?

थणजीवि तन्नगं खलु, तणगगहणं तु तं बहु अवातं ।
सेसा वि सूइया खलु, तणगगहणेण गोणादी ॥३६८०॥

बालवच्छं तणगं । तं थणजीवी बहु अवायं च, अतः तन्नगगहणं कयं । सुत्ते तन्नगगहणाओ य सेसा वि गोणाई सव्वे सूइया, न बंधियव्वा इत्यर्थः ॥३६८०॥

अह बंधइ तो आणाइया दोसा । इमे य अन्ने य –

अच्चावेढण मरणंतराय फड्ड त आतपरहिंसा ।
सिंगखुरणोल्लणं वा, उड्डाहो भद्द-पंता वा ॥३६८१॥

अईव आवेढियं परिताविज्जइ मरइ वा, अंतराइयं च भवइ । बद्धं च तडप्फडितं अप्पाणं परं वा हिंसइ । एसा संजमविराहणा । तं वा बज्झंतं सिंगेण खुरेण वा काएण वा साहुं णोल्लेज्जा । एवं साहुस्स आयविराहणा । तं च दट्ठुं जणो उड्डाहं करेज्ज – "अहो ! दुद्दिट्ठधम्मा परतत्तिवाहिणो" । एवं पवयणोवघाओ । भद्दपंतदोसा वा भवे –

भद्दो भणाइ – "अहो ! इमे साहवो अम्हं परोवयारेण घरे वावारं करेंति ।"

पंतो पुणो भणेज्जा – "दुद्दिट्ठधम्मा चाडुकारिणो कीस वा अम्हं वच्छे बंधंति मुयंति वा ।"

दिया वा राओ वा णिच्छुभेज्जा, वोच्छेयं वा करेज्ज ॥३६८१॥ एए बंधणे दोसा ।

इमे मुयणे –

छक्काय अगड विसमे, हिय णट्ठ पलाय खइय पीतं वा ।
जोगक्खेमं वहंति मणे बंधणदोसा य जे वुत्ता ॥३६८२॥

---

[1] जलपात्रं, गृहांगणं वा । [2] गा० ३६७८ ।

तन्नगाइमुक्कमडंतं छक्कायविराहणं करेज्ज, अगडे विसमे वा पडेज्ज, तेणेहिं वा हीरेज्ज, नट्ठं अडवीए रुलंतं अच्छेज्ज, मुक्कं वा पलायितं पुणो बंधिउं न सक्कइ, वृगादिसणप्फडे(ए)हिं वा खज्जइ, मुक्कं वा माऊए थणात् खीरं पिएज्जा। जइ वि एमाइदोसा न होज्ज तहावि गिहिणो वीसत्था अच्छेज्ज, अम्हं घरे साहवो सुत्थदुत्थजोगक्षेमवावारं वहंति, "मण" त्ति-एवं मणेण चिंतिता अणुत्तसत्ता अप्पणो कम्मं करेंति। अह तद्दोसभया मुक्कं पुणो बंधंति। तत्थ बंधणे दोसा जे वुत्ता ते भवंति। जम्हा एते दोसा तम्हा ण बंधंति मुयति वा ॥३९८२॥

कारणे पुण बंधणमुयणं करेज्ज –

बिइयपदमणप्पज्झे, बंधे अविकोविते व अप्पज्झे।
विसमऽगड अगणि आऊ, सणप्फगादीसु जाणमवि ॥३९८३॥

अणप्पज्झो बंधइ, अविकोवितो वा सेहो।

अहवा – विकोविओ अप्पज्झो इमेहिं कारणेहिं बंधति –

विसमा अगड अगणि आऊसु मरिज्जिहिति त्ति, वृगादिसणप्फएण वा मा खज्जिहिति, एवं जाणगो वि बंधइ ॥३९८३॥

"मुंचइ" तस्स इमं बितियपदं –

बितियपयमणप्पज्झे, मुंचे अविकोविते वि अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, वलिपासगअगणिमादीसु ॥३९८४॥

वलिपासगो त्ति बंधणो। तेण अईव गाढं बद्धो मूढो वा तडप्फडेइ मरइ वा जया, तया मुंचइ। अगणि त्ति पलीवणगे बद्धं मुंचेइ, मा डज्झिहिति ॥३९८४॥

बंधण-मुयणे इमा जयणा –

तेसुं असहीणेसुं, अहवा साहीणऽपेच्छणे जयणा।
केणं बद्धविमुक्का, पुच्छंति न जाणिमो केणं ॥३९८५॥

"तेसु" त्ति जया घरे गिहत्था असाहीणा तया एयं करेइ, साहीणेसु वा अपेच्छमाणेसु मिगेसु।

अह गिही पुच्छेज्जा – केण तन्नगं बद्धं मुक्कं वा तत्थ साहूहिं वत्तव्वं – न जाणामो अम्हे॥३९८५॥

जे भिक्खू अभिक्खणं अभिक्खणं पच्चक्खाणं भंजइ, भंजंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३॥

अभिक्खं णाम पुणो पुणो, नमोक्काराई पच्चक्खाणं भंजंतस्स चउलहुं आणादिया य दोसा।

इमो सुत्तफासो –

पच्चक्खाणं भिक्खू, अभिक्खणाऽऽउट्टियाए जो भंजे।
उत्तरगुणणिप्फण्णं, सो पावति आणमादीणि ॥३९८६॥

आउट्टिया णाम आभोगो – जानान इत्यर्थः, नमोक्काराई उत्तरगुणपच्चक्खाणं, पंचमहव्वया मूल-गुणपच्चक्खाणं। इह उत्तरगुणपच्चक्खाणेणाहिगारो ॥३९८६॥

इमा अभिक्खसेवा –

सक्किं भंजणम्मि लहुओ, मासो वितियम्मि सो गुरू होति ।
मुत्तणिवातो ततिए, चरिमं पुण पावती दसहिं ॥३९८७॥

"सक्कि" त्ति एक्कसिं भंजमाणस्स मासलहुं, विइयवाराए मासगुरुं, तइयवाराए चउलहुं, एत्थ सुत्तणिवातो । चउत्थवारे चउगुरुं । पंचमवारे छल्लहुं । छट्ठवारे छग्गुरुं । सत्तमवारे छेदो । अट्ठमवारे मूलं । नवमे अणवट्ठं । दसमवारे चरिमं – पारंचीत्यर्थः ॥३९८७॥

आणाइया य दोसा । इमे य –

अप्पच्चओ अवण्णो, पसंगदोसो य अदढता धम्मे ।
माया य मुसावातो, होति पइण्णाइ लोवो य ॥३९८८॥

जहा एस नमुक्कारादि भंजइ तहा मूलगुणपच्चक्खाणं पि भंजइ, एवं अगीयगिहत्थाण य अपच्चयं जणेइ । वर्ण्यते येन स वर्णः तत्प्रतिपक्षः अवर्णः, सो अप्पणो साहूणं च । पच्चक्खाणभंगो पसंगेण मूलगुण वि भंजइ । पच्चक्खाणधम्मे समणधम्मे वा अदढत्तं कयं भवइ । अन्नं पइन्नं पडिवज्जइ, अन्नं वा करेइ त्ति माया । अन्नं भासइ अन्नं करेइ त्ति मुसावाओ । एते दो वि जुगलओ लब्भंति । पोरिसिमाइ-पइण्णाए य लोवो कओ भवइ, एसा संजमविराहणा । पच्चक्खाणं भंजइ त्ति देवया पदुट्ठा खित्ताइ करेज्ज ॥३९८८॥

कारणे पुण अपुन्ने वि काले भुंजइ –

विइयपदमणप्पज्झे, भुंजे अविकोविते व अप्पज्झे ।
कंतारोमगिलाणे, गुरुणिओगा य जाणमवि ॥३९८९॥

अणप्पज्झो सेहो वा अजाणंतो भुंजइ नत्थि दोसो । "कंतारं" त्ति अद्धाणपडिवन्नस्स पच्चक्खाए पच्छा भत्तं पहुप्पन्नं दूरं च गंतव्वं अंतरे य अन्नभत्तसंभवो नत्थि, एवं भुंजंतो सुद्धो ।

"ओमे" वि कल्लं ण भविस्सइ त्ति साहारणट्ठा भुंजइ ।

"गिलाणो" त्ति विगइमाइ पच्चक्खायं वेज्जुवएसा भुंजइ ।

अग्गियग-वाहिमि वा राओ भुंजइ ।

आयरिओवएसेण वा तुरियं कहिं चि गंतव्वं, तत्थ पोरिसिमाइ अपुण्णे भोत्तुं गच्छइ ।

खमओ वा मासाइखमणे कते अईव किलंतो अपुण्णे चेव भुंजाविज्जइ । उप्पूरविगइलंभे निव्वितिए संदिसाविज्जइ, दुब्बलसरीरस्स वा विगइपच्चक्खाणे विगई दिज्जइ । उस्सूरे सेहो दुक्खं गमिस्सइ त्ति काउं नमोक्कारे चेव वितरंति ।

खीराइया वा विणासिदव्वं चिरकालमट्ठाहिं अपुण्णे पोरिसिमाइपच्चक्खाणे णमोक्कारे चेव वितरंति ॥३९८९॥

खमणेण खामियं वा, णिव्वीतिय दुब्बलं व णाऊणं ।
उस्सूरे वा सेहो, दुक्खमठाइं च वितरंति ॥३९९०॥

जे भिक्खू परित्तकायसंजुत्तं आहारेइ आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

परित्तवणस्सइकाएणं संजुत्तं जो असणाई भुंजइ तस्स चउलहुं आणाइणो य दोसा भवंति ।

जे भिक्खू असणादी, भुंजेज्ज परित्तकायसंजुत्तं ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥३९९१॥ कंठा

इमा संजमविराहणा –

तं कायपरिच्चयती, तेण य चत्तेण संजमं चयते ।
अतिखद्ध अणुचितेण य, विसूइगादीणि आताए ॥३९९२॥

तमिति परित्तकायं परिच्चयइ न रक्षति, व्ययतीत्यर्थः । तेण य परिचत्तेण संजमो वहिओ – विराहिओ त्ति वुत्तं भवति । एस संजमविराहणा । तेण य तिगदुगसंजुत्तेण अइप्पमाणेण भुत्तेण अणुवचिएण य अजिन्नविसूइयाए आयविराहणा ॥३९९२॥

असणाइसु इमे उदाहरणा –

भूतणगादी असणे, पाणे सहकारपाडलादीणि ।
खातिमे फलसुत्तादी, साइमे तंबोलपंचजुयं ॥३९९३॥

भूततणं (भूतृणं) अज्जगो भन्नइ, तेण संजुत्तं असणं भुंजइ, आइसद्दाओ करमद्दियादिफला मूलगपत्तं आसूरिपत्तं च, अन्ने य वहु पत्तपुप्फफला देसंतरपसिद्धा ।

पाणगं – सहगार-पाडलानीलुप्पलादीहिं संजुत्तं पिवइ ।

खाइमे सुत्ते – अंवफला पेसिमादिएहिं सह खायइ, कविट्ठविचाइ वा लोणसहियं ।

साइमे – जाइफलं कक्कोलं कप्पूरं लवंगं पूगफलं-एते पंच दव्वा तंवोलपत्तसाहिया खायइ । एत्थ तिन्नि सचित्ता, तिन्नि अचित्ता ।

अहवा – पूगफलं खदिरवत् तं न गणिज्जइ । वीयपूरगतया पंचमा छुब्भइ, सा दुविहा – सचित्ता अचित्ता संभवइ ।

अहवा – संखचुन्नो पूगफलं खइरो कप्पूरं जाइपत्तिया एते पंच अचित्ता, एतेहिं सहियं तंवोलपत्तं खाएइ ॥३९९३॥

कारणे परित्तसहियं भुंजेज्जा –

वितियपदं गेलण्णे, अद्धाणे चेव तह य ओमम्मि ।
एएहि कारणेहिं, जयण इमा तत्थ कायव्वा ॥३९९४॥

गेलन्ने वेज्जुवएसा, अद्धाणे असन्मि अलब्भंते, ओमे असंथरंता एमाइकारणेहिं इमा जयणा कायव्वा ॥३९९४॥

ओमे तिभागमद्धे, तिभागमायंविले चउत्थाई ।
णिम्मिस्से मिस्से वा, परित्तकायम्मि जा जयणा ॥३९९५॥

म्मिस्सं सुद्धं, मिस्सं परित्तकायसंजुत्तं, सेसं जहा पेढे तहा वत्तव्वं ॥३९९५॥

जे भिक्खू सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठेइ, अहिट्ठेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

सह लोमेहिं सलोमं, अहिट्ठेइ नाम "ममेयं" ति जो गिण्हइ तस्स चउलहुं ।

चम्मम्मि सलोमम्मी, ठाण-णिसीयण-तुयट्टणादीणि ।
जे भिक्खू चेतिज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥३९९६॥

सलोमे चम्मे जो ठाणं चेतेइ करेति णिसीयइ तुयट्टइ वा सो आणाइदोसे पावति ॥३९९६॥

इमं च से पच्छित्तं –

गिण्हंते चिट्ठंते, निसियंते चेव तह तुयट्टंते ।
लहुगा चतु जमलपदा, चरिमपदे दोहि वि गुरुगा ॥३९९७॥

गेण्हणादिएसु चउसु ठाणेसु चउलहुगा चउरो भवंति । जमलपयं ति कालतवा, तेहिं विसिट्ठा दिज्जंति । चरिमपयं त्ति तुयट्टणं, तम्मि चरिमपदे दोहिं वि कालतवेहिं गुरुगा इत्यर्थः ॥३९९७॥

अन्ने य इमे दोसा –

अविदिण्णोवहि पाणा, पडिलेहा वि य ण सुज्झइ सलोमे ।
वासासु य संसज्जति, पतावणऽपतावणे दोसा ॥३९९८॥

तित्थकरेहिं अविदिण्णोवही, रोमंतरेसु य पाणा सम्मुच्छंति, सरोमे पडिलेहणा ण सुज्झइ, कुंथुपणगाई तेहिं वासासु संसज्जति । जइ संसज्जणभया पतावेइ तो अगणिविराहणा । अहं न पयावेइ तो संसज्जति । उभयथा वि दोसा ॥३९९८॥

सलोमदोषदर्शनार्थं झुसिरप्रतिपादनार्थं च इदमाह –

अजिण सलोमं जतिणं, ण कप्पती झुसिर तं तु पंचविधं ।
पोत्थगतणपणए या दूसदुविध चम्मपणगं च ॥३९९९॥

अजिनं चर्म्म । जतयो त्ति साहवो । तं तेहिं न कप्पइ, झुसिरदोषत्वात् ।

शिष्याह – किं झुसिरं ? कइविहं वा ? के वा तत्थ दोसा ?

आचार्याह – झुसिरं पोल्लं जीवाश्रयस्थानमित्यर्थः । तं इमं पंचविहं – पोत्थगपणगं, तणपणगं, पणगपणगं, पणगशब्दः प्रत्येकं योज्यः, दूसं वत्थं, तत्थ दो भेदा – अपडिलेहपणगं दुप्पडिलेहपणगं च, चम्मणपणगं च पंचमं ॥३९९९॥

इमं पोत्थगपणगं –

गंडी कच्छवि मुट्ठी, संपुड फलए तहा छिवाडी य ।
साली वीही कोद्दव, रालगऽरण्णे तणाइं च ॥४०००॥

दीहो वाहल्लपुहत्तेण तुल्लो चउरंसो गंडीपोत्थगो ।

अंते तणुओ, मज्झे पिहुलो, अप्पवाहल्लो कच्छवी ।

चउरंगुलदीहो वृत्ताकृती मुट्ठीपोत्थगो ।

अहवा – चउरंगुलदीहो चउरस्सो मुट्ठिपोत्थगो। दुमाइफलगसंपुडं दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पवाहल्लो छेवाडी।

अहवा – तणुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी। रालओ त्ति कंगुपलालं, सामगाइ आरन्नतणा ॥४०००॥

अप्पडिलेहियदूसे, तूली उवहाणगं च नायव्वं।
गंडुवहाणाऽऽलिंगिणि, मसूरए चेव पोत्तमए ॥४००१॥

[1]एगवहुकमेरगा तूली, अक्कडोडुगाइतूलभरिया वा तूली, रूयादिपुन्नं सिरोवहाणमुवहाणगं, तस्सोवरि गंडपदेसे जा दिज्जइ सा गंडुवधाणिगा, जाणुकोप्परादिसु सा आलिंगिणी, चम्मवत्थकतं वा वट्टरूयादिपुन्नं विवसणं मसूरगो ॥४००१॥

इमं दुप्पडिलेहियपणगं –

पल्हवि कोयवि पावारणवतए तह य दाढिगाली उ।
दुप्पडिलेहियदूसे, एयं वितियं भवे पणगं ॥४००२॥

पल्हवी गयात्थरणी जे य वहुत्थरगादिसू इणमा भेदा।
मट्ठरोमा [2]अब्भुत्तरोमा वा ते सव्वे एत्थ निवयंति।

कोयवगो वरक्को, अतो जे अन्ने वा वि भेदा विउलरोमा कंवलादि ते सव्वे एत्थ निवतंति।

पावारगो फुल्लवडपात्रिगादि।

अत्थुरणं पाउरणं वा अकत्तियउन्नाए नवयं कज्जति।

धोयपोत्ति दाढीयाली विरलिमादिभूरिभेदा सव्वे एत्थ निवतंति ॥४००२॥

अय-एलि-गावि-महिसी, मिगाणमजिणं च पंचमं होति।
तलिगाखल्लगवज्झे, कोसगकत्ती य वितिएणं ॥४००३॥

अधवा – वितियाऽऽएसेण पच्छद्धगहियं चम्मपणगं ॥४००३॥

इयाणिं झुसिरदोसा भणंति। तत्थ पढमं पोत्थगे इमा दारगाहा –

पोत्थगजिणदिट्ठंतो, वग्गुर[1]लेवे[2] य जाल[3]चक्के[4] य।
लोहित[5] लहुगा[6] आणादि मुयण संवट्टणा वंधे ॥४००४॥

"झुसिरो" त्ति पोत्थगो ण घेत्तव्वो, जिणेहिं तत्थ वहुजीवोवघातो दिट्ठो।

इमो दिट्ठंतो "[3]वग्गुर" अस्य व्याख्या –

चउरंगवग्गुरा परिवुडो पि फेट्टेज्ज अवि मिओऽरण्णे।
खीर खउर लेवे वा, पडिओ सउणो पलाएज्जा ॥४००५॥

चउरंगिणी सेणा – हत्थी अस्सा रहा पाइक्का, स एव वागुरा, तया परिवृतो आहेडगाहेहिं समंताद्वेष्टित इत्यर्थः। अवि तत्थ मिगो छुट्टेज्ज। न य पोत्यगपत्तंतरपविट्ठा जीवा छुट्टेज्जा। "[3]लेवे" त्ति

१ खंडा। २ प्रदीप्तरोमा इत्यर्थः। उप्लुतरोमा – इत्यपि पाठः। ३ गा० ४००४।

सउणो पक्खी, सो मच्छिगादि, सो खीरे पडिओ, चिक्कणे वा अनंतरं खउरे, अन्नत्थ वा अवश्रावणादिचिक्कणलेवे पडितो पलायेन्नश्येदित्यर्थः। न च पुस्तकपत्रान्तरे ॥४००५॥

"[1]जाले" त्ति अस्य व्याख्या –

सिद्धत्थगजालेण व, गहितो मच्छो वि निप्फिडिज्जाहि ।
तिल कीडगा वि चक्का, तिला व ण य ते ततो जीवा ॥४००६॥

सिद्धत्थगादि जेण जालेण घेप्पंति तं सिद्धत्थगजालं, अवि तत्थ मत्सो न घेप्पेज्ज । ण य पोत्थगे जीवा ण घिप्पिज्जा । "[2]चक्के" ति – अवि तिलपीलगचक्के तिला कीडगा वा छुट्टेज्जा, न य पोत्थगे जीवा ॥४००६॥

"[3]लोहिय" त्ति अस्य व्याख्या –

जति तेसिं जीवाणं, तत्थ गयाणं तु लोहितं होज्जा ।
पीलिज्जंते धणियं, गलिज्ज तं अक्खरे फुसितुं ॥४००७॥

"तत्थ गयाणं ति कंथुमादिजोणिगाणं जहा तिलेसु पीलिज्जंतेसु तेसु तेल्लं णीति तहा यदि तेसिं जीवाणं रुहिरं होज्जा, तो पोत्थगबंधणकाले तेसिं जीवाणं सुदुपीलिज्जंताणं अक्खरे फुसिउं रुहिरं गलेज्ज ॥४००७॥

"लहुग" त्ति अस्य व्याख्या –

जत्तियमेत्ता वारा, मुंचति बंधति य जत्तिया वारा ।
जति अक्खराणि लिहति व, तति लहुगा जं च आवज्जे ॥४००८॥

बंधणमुयणे संघट्टणादि आवज्जति तं च पच्छित्तं । सेसं कंठं ॥४००८॥

इयाणिं तणपणगादिसु दोसा –

तणपणगम्मि वि दोसा, विराहणा होति संजमाऽऽताए ।
सेसेसु वि पणएसुं, विराहणा संजमे होति ॥४००९॥

तणेसु झुसिर त्ति कातुं चउलहू ॥४००९॥

दुविहा विराहणा य इमा –

अहि-विच्छुग-विसकंटगमादिहि खतियं च होति आदाए ।
कुंथादि संजमम्मि, जइ उव्वत्ता तती लहुगा ॥४०१०॥

पुव्वद्धेण आयविराहणा । कुंथुमादिसु विराहिज्जंतेसु संजमविराहणा । जत्तिया वारा उवत्तति परिवत्तति वा आउंचति पसारेति वा तत्तिया चउलहू ।

अह गहियं "झुसिर" त्ति परिच्चयति तो अहिगरणं, न य झुसिरतणेसु पडिलेहणा सुज्झति । सेसा पणगा अप्पडिलेहिय चम्मपणगं च एतेसु गहणेसु चउलहू, धुवा य संजमविराहणा, आयविराहणा जहासंभवा । जम्हा एते दोसा तम्हा पोत्थादि झुसिरा ण कप्पंति घेत्तुं ॥४०१०॥

---

१ गा० ४००४ । २ गा० ४००४ । ३ गा० ४००४ ।

चोदकाह –

दिट्ठ सलोमे दोसा, णिल्लोमं णाम कप्पए घेत्तुं ।
गेण्हणे गुरुगा पडिलेह पणग तसपाण सतिकरणं ॥४०११॥

चोदको भणति – अम्हमुवगतं–सलोमे चम्मे दिट्ठा दोसा, तं मा कप्पतु, अच्छतु आवण्णं, णिल्लोमं कप्पतु ।

आयरितो भणति – णिल्लोमं गेण्हंतस्स चउगुरुगा । चिट्ठतस्स णिसीयंतस्स तुयट्टंतस्स एतेसु वि चउगुरुगा कालतवविसेसिता । तत्थ पडिलेहा ण सुज्झति, णिल्लोमे कुंथुमादिया य तसा सम्मुच्छंति, तं च सुकुमारं इत्थिफासतुल्लं, तत्थ भुत्तभोगीण सतिकरणं भवति, अभुत्तभोगीण इत्थिफासकोउयं जणेति॥४०११॥

इदमेवार्थमाह –

भुत्तस्स सतीकरणं, सरिसं इत्थीण एत फासेणं ।
जति ता अचेयणेऽयं, फासो किमु सचेयणे इतरे ॥४०१२॥

जति ताव अचेयाण चम्मे अयं फरिसो मुहफासो, इतरत्ति सचेयाण इत्थीसरीरे सागारिए वा किमित्यतिशयो भवेत् द्रष्टव्यः । यस्मात् एते दोषाः, तम्हा निल्लोमं पि न घेत्तव्वं ॥४०१२॥

जइ अववादतो चम्मं गेण्हइ तदा पुव्वं सलोमं, तत्थिमं –

बितियपदं तु गिलाणे, बुड्ढे तद्दिवस भुत्त जयणाए ।
णिल्लोम मक्खणट्ठे घट्ठे भिण्णे व अरिसाउ (सु) ॥४०१३॥

"गिलाणे" "वुड्ढे" त्ति अस्य व्याख्या –

संथारगगिलाणे, अमिला-अजिणं सलोम गिण्हंति ।
वुड्ढाऽसहु-बालाण य, अत्थुरणाए वि एमेव ॥४०१४॥

गिलाणस्स अत्थुरणट्ठा घेप्पति, तं च अमिलाइअजिणं । वुड्ढ-असहु-बालाण वि कारणे अत्थुरणट्ठा एमेव घेप्पति ॥४०१४॥

"[1]तद्दिवसभुत्त जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

कुंभार-लोहकारेहिं दिवसमलियं तु तं तसविहूणं ।
उवरिं लोमे कातुं, सोत्तुं पादो पणामेंति ॥४०१५॥

कुंभारादिया तत्थ दिवसतोववेट्ठा कम्मं करेंति, तम्मि तद्दिवसं परिभुज्जमाणे तसादिया पाणा ण भवंति, तद्दिवसंते उट्ठितेसु पडिहारियं गिण्हंति, रातो अत्थुरित्ता "पातो" पभाए पच्चप्पिणंति ॥४०१५॥ एस गहणपरिभोगजयणा ।

इदाणिं अलोमस्सववादो – "[2]णिल्लोम" पच्छद्धं । णिल्लोमं सलोमाभावे गिलाणादि अत्थुरणट्ठा घेप्पति । [3]तेल्लेण वा मक्खणट्ठा, कुलत्थादिपायेसु वा घट्टेसु अत्थुरणट्ठा, भिन्नकुट्ठि-तरिहाणत्थुरणट्ठा वा, अरिसेसु वा सवंतेसु उववेसणट्ठा गिण्हंति ।

---

१ गा० ४०१३ । २ गा० ४०१३ । ३ अवतरणगयाणम्, पा० ।

अस्यैव व्याख्या –

जह कारणे सलोमं, तु कप्पते तह हवेज्ज इतरं पि ।
आगाढे अ सलोमं, आदि कातुं जा पोत्थए गहणं ॥४०१६॥

"इयरं" ति अलोमं, आगाढे कारणे तं अ(स)लोमं आदि कातुं अप्पप्पणो झुसिरपरिभोगट्ठाणेसु पच्छाणुपुव्वीते ताव गाहेयव्वं जाव पोत्थगो त्ति ॥४०१६॥

अलोमगहणकारणाणं वक्खाणं इमं –

अवताणगादि णिल्लोम तेल्ल मक्खट्ठ घेप्पती अजिणं ।
घट्ठा व जस्स पासा, गलंतकोढारिसासुं वा ॥४०१७॥ गतार्था

भिन्नकुट्ठारिसेसु अलोमचम्मगहणं इमेण कारणेण घेप्पति –

सोणितपूयालित्ते, दुक्खं धुवणा दिणे दिणे चीरे ।
कच्छुल्ले किडिभिल्ले, छप्पतिगिल्ले य णिल्लोमं ॥४०१८॥

कच्छू पामा, किडिभं कुट्ठभेदो सरीरेगदेसे भवति, छप्पदातो वा जस्स अतीव संमुच्छंति, स निल्लोमपरिहाणं गेण्हति । एमादिकारणेहिं णिल्लोमं घेप्पति ॥४०१८॥

तणदूसझुसिरगहणे इमा जयणा –

भत्तपरिण्ण गिलाणे, कुसमाति खराऽसती य झुसिरा वि ।
अप्पडिलेहियदूसासती य पच्छा तणा होंति ॥४०१९॥

भत्तपच्चक्खायस्स गिलाणस्स अववादेण जयणाए घेप्पति तदा अज्झुसिरा कुसादि घेत्तव्वा, अह ते खरा असती वा तेसिं ताहे झुसिरा वि घिप्पंति ।

अहवा – भत्तपच्चक्खायस्स गिलाणस्स वा अववातेण अपडिलेहियं दूसगहणं पत्तं तं तूलिमादि घेत्तव्वं, तस्स असती अझुसिरझुसिरा तणा घेत्तव्वा ॥४०१९॥

दुप्पडिलेहियदूसं, अद्धाणादी विवित्त गेण्हंति ।
घेप्पति पोत्थगपणगं, कालिक-णिज्जुत्तिकोसट्ठा ॥४०२०॥

अद्धाणादिसु विवित्ता जहुत्तोवहिं अलभंता दुप्पडिलेहियपणगं गेण्हंति । मेहाउ गहणधारणादिपरिहाणिं जाणिऊण कालियसुयट्ठा कालियसुयणिज्जुत्तिणिमित्तं वा पोत्थगपणगं घेप्पंति । कोसो त्ति समुदायो ॥४०२०॥

जे भिक्खू तण-पीढगं वा पलाल-पीढगं वा छगण-पीढगं वा कट्ठ-पीढगं वा परवत्थेणोच्छन्नं अहिट्ठेइ, अहिट्ठंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

पलालमयं पलालपीढगं, तणमयं तणपीढगं, वेत्तासणगं [1]वेत्तपीढगं, भिसिमादि कट्ठमयं, छगणपीढगं पसिद्धं, परो गिहत्थो, तस्संतिएण वत्थेण उच्छइयं, तं जो साहू अहिट्ठेति निवसतीत्यर्थः । तस्स चउलहू आणाइणो य दोसा ।

१ समुपलब्धासु निशीथसूत्रप्रतिषु मूल सूत्रे 'वेत्त पीढग मितिनैवोपलभ्यते' ।

पीढगमादी आसण, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
परवत्थेणोच्छण्णे, ताणि अहिट्ठेंति आणादी ॥४०२१॥ कंठा

इमे आयविराहणा दोसा –

दुट्ठिय भग्ग पमादे, पडेज्ज तब्भावणा व से होज्जा ।
पवडेंते उड्डाहो, पवंचणट्ठा कते अहियं ॥४०२२॥

परेण तमासणं अजाणंता पडिणीयट्ठया वा पवंचणट्ठा वा दुट्ठियं ठवियं, भग्गं वा ठवियं, एग-दु-ति-सव्वपादविरहियं वा ठवियं, तत्थ वीसत्थो निविट्ठो पडेज्ज वा । निद्दोसे तब्भावणा वा से होज्जा । पडमाणो वा अवाउडो भवति । तत्थ उड्डाहो "समणो पडिउ" त्ति । पवंचणट्ठा दुट्ठितादि कयं आसणं तो अहियतरा उड्डाहपवंचणा दोसा भवंति ॥४०२२॥

इमे संजमदोसा –

गंभीरे तसपाणा, पुव्वं ठविते ठविज्जमाणे वा ।
पच्छाकम्मे य तहा, उप्फोसण धोवणादीणि ॥४०२३॥

गंभीरं गुविलं अप्रकाशं, तत्थ दुन्निरिक्खा कुंथुमादितसा पाणा ते विराहिज्जति ।

एवं पुव्वट्ठविते समणट्ठा ठविज्जमाणे वा इमो दिट्ठंतो –

एगस्स रन्नो पुरतो साहुस्स तच्चन्नियस्स वादो ।

साहू भणति – अरहंतपणीओ मग्गो सुदिट्ठो । इतरो – बुद्धपणीओ त्ति । एवं तेसिं बहु-दिवसा गता ।

अण्णया रण्णो जाव ते णागच्छंति ताव दो आसणा ठवित्ता अंडयाणि वत्थपच्छादियाणि कयाणि । तच्चन्नितो पुव्विं आगतो अपेहित्ता णिविट्ठो । साहू आगतो वत्थं अवणीतं। दिट्ठा अंडता। अण्णासणे पमज्जित्ता णिविट्ठो । तुट्ठो राया – एस सम्मग्गो त्ति । ओहावितो तच्चन्निओ त्ति । "एते" ण णिल्लेवेंति, चउत्थरसेण वा णिल्लेवेंति" । एवं उप्फोसणादि पच्छाकम्मं करेज्ज ॥४०२३॥

इमम्मि कारणे अधिट्ठेज्ज –

बितियपदसणप्पज्झे, अहिट्ठे अविकोविते व अप्पज्झे ।
रातिड्ढिमंतधम्मकहिवादि पराभियोगे य ॥४०२४॥

राया अण्णो वा अमच्चादि इड्ढिमंतो धम्मकही वादी वा रायाभियोगादिणा वा अधिट्ठेज्ज ॥४०२४॥

इमा जयणा –

पीढफलएसु पुव्वं, तेसऽसतीए उ झुसिरपरिभुत्ते ।
पागडितेसु पमज्जिय, भावे पुण इस्सरे णातुं ॥४०२५॥

पीढादि अज्झुसिरे पुव्वं अधिट्ठेति, अज्झुसिराण असती झुसिरे अधिट्ठेति, झुसिरा वि जे गिहीहिं तव्वत्थं पुव्वपरिभुत्ता तत्थ निवसंतो पागडिएसु पमज्जिय निवसति, तत्थ गिहित्थं मग्गेउं अण्णो गिण्हिज्जं दातु

अधिट्ठेति, रायादिइस्सराण घरे जति पमज्जिते तुस्सति तो पमज्जति, अध "कुक्कुडं" ति मन्नति, तो ण पमज्जति । एवं भावाभावं णाउं पमज्जति, ण वा ॥४०२५॥

जे भिक्खू निग्गंथीए संघाडिं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सिव्वावेइ, सिव्वावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

अन्नतित्थिएण गिहत्थेण सिव्वावेति तस्स चउलहुं, आणादिणो य दोसा –

संघाडिओ चउरो, तिपमाणा ता पुणो भवे दुविहा ।
एगमणेगक्खंडी, अहिगारो अणेगखंडीए ॥४०२६॥

प्रायेण संघातिज्जंति त्ति संघाडी, गुणसंघायकारणी वा सघाडी, देसीभासातो वा पाउरणे संघाडी । ततो संखापमाणेण चउरो । पमाणपमाणेन तिपमाणा ।

एगा दुहत्थदीहा दुहत्थवित्थारा सा उवस्सए अच्छमाणीए भवति ।

दो तिहत्थदीहा तिहत्थवित्थारा । तत्थेगा भिक्खायरियाए, वितियं वीयारं गच्छती पाउणति ।

चउत्था चउहत्थदीहा चउहत्थवित्थारा । एया सव्वा वि पासगलद्धा । पुणो एक्केक्का दुविहा । पच्छद्धं कंठं ॥४०२६॥

तं जे उ संजतीणं, गिहिणा अहवा वि अण्णतित्थीणं ।
सिव्वावेति भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥४०२७॥

तं संजतिसंतियं संघाडिं जो आयरितो गिहत्थेण अन्नतित्थिएण वा सिव्वावेति तस्स आणादिणो दोसा ॥४०२७॥

सिव्वावेंतस्स इमे दोसा –

कुज्जा वा अभियोगं, परेण पुट्ठे व सिट्ठे उड्डाहो ।
हीणऽहियं वा कुज्जा, छप्पतिणा संहरिज्जा वा ॥४०२८॥

सो गिही अण्णतित्थी वा तत्थ वसीकरणप्पयोगं करेज्ज ।

अन्नेण वा पुट्ठो कस्स संतियं वत्थं ?

सो कहिज्ज – संजतिसंतियं ।

ताहे तस्स संका भवति, उड्डाहं वा करेज्ज – नूणं को वि संबंधो अत्थि तेण एसो सिव्वेति । पमाणेण हीणमहियं वा करेज्ज । छप्पदातो छड्डेज्ज मारेज्ज वा । तं संघाडिं हरेज्जा । सिव्वंतो वा विद्धो, तत्थ परितावणादिणिप्फण्णं । उप्फोसणादि वा पच्छाकम्मं कुज्जा ॥४०२८॥

जम्हा एते दोसा तम्हा इमो विही –

छिण्णं परिकम्मितं खलु, अगुज्झउवहिं तु गणहरो देति ।
गुज्झोवहिं तु गणिणी, सिव्वेंति जहारिहं मिलितुं ॥४०२९॥

जं अतिप्पमाणं तं छिंदति, उक्कुतिमादिणा परिकम्मियं, अगुज्झोवहिं तिन्नि कप्पा, चउरो संघाटीतो, पातं पायणिज्जोगो य, एवं गणहरो परि कम्मियं देति । सेसो गुज्झोवही, तं गणिणी सरीरप्पमाणं मिलिउं सिव्वेति ॥४०२९॥

कारणे गिहीअन्नतित्थीण वा सिव्वावेति –

वितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा होज्ज केणती असहू ।
गणि गणधर गच्छे वा, परकरणं कप्पती ताहे ॥४०३०॥

गणी उवज्झातो, गणहरो आयरितो, अन्नो वा गच्छे वुड्ढो तरुणो वा वुड्ढसीलो ते सिव्वेज्जा । अह ते असहू होज्जा गच्छे वा नत्थि कुसलो ताहे गिहिअण्णतित्थिणा वा सिव्वावेंति ॥४०३०॥

तत्थ इमो कप्पो –

पच्छाकडसाभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य अस्सण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिएण व, गिहिपुव्वं एतरे पच्छा ॥४०३१॥ पूर्ववत्

सिव्वावणे इमो विही –

अहभावमागतेणं, असती सट्ठाणे गंतु सिव्वावे ।
पासट्ठिय अव्वखित्तो, तो दोसेवं ण जायंति ॥४०३२॥

सो गिहत्थो अण्णतित्थिओ वा साहुसमीवं अहप्पव्वित्तीए आगतो सिव्वाविज्जति । जदि अब्भासागतो ण लब्भति तो तस्स जं ठाणं तत्थ गंतुं सिव्वाविज्जति । जयणाए छप्पदातो पुव्वं अन्नत्थ संकामिज्जंति । तस्स समीवे ठितो णिवण्णो वा ताव चिट्ठति जाव सिव्वियं । एवं पुव्वुत्ता दोसा ण भवंति ॥४०३२॥

जे भिक्खू पुढविकायस्स वा आउक्कायस्स वा अगणिकायस्स वा वाउकायस्स वा वणप्फतिकायस्स वा कलमायमवि समारभइ, समारभंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

"कलमाय" त्ति स्तोकप्रमाणं । अहवा "कलो" त्ति चणओ, तप्पमाणमेत्तं पि जो विराहेति तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा । एवं कढिणाउक्काए तेऊवाऊपत्तेयवणस्सतिसु । दवे पुण आउक्काए विंदूमित्तं ।

वाउक्काते कलमेत्तं कहं ? भणति – वत्थिपूरणे लब्भति ।

जे भिक्खू पुढविकायं, कलायधण्णप्पमाणमेत्तमवि ।
आऊ तेऊ वाऊ, पत्तेयं वा विराहेज्जा ॥४०३३॥

"कलायधन्न" त्ति चणगधन्नं । सेसं कंठं ॥४०३३॥

जो एते काए विराधेति –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं तहा दुविहं ।
पावति जम्हा तेणं, एते उ पदे विवज्जेज्जा ॥४०३४॥

पुढवादि विराहेंतस्स संजमविराहणा । "आहारे" त्ति पंडुरोगादिसंभवे आयविराहणा, सेसं कंठं ॥४०३४॥

सीसो पुच्छति –

"कलमेत्तहीणतरे विराधेति, किं चतुलहू न भवति आणादिया य दोसा ?"

गुरू भणति –

कलमेत्त णवरि णेम्मं, एक्कम्मि वि घातियम्मि चउलहुगा ।
कलमेत्तं पुण जायइ, वणवज्जाणं असंखेहिं ॥४०३५॥

निभमेत्तं नेमं प्रदर्शनमित्यर्थः । वणस्सइकायमेत्तं वज्जित्ता सेसेगेंदियकायाणं असंखेज्जाणं जीव-सरीराणं समुदयसमितिसमागमेणं कलमेत्तं लब्भति ॥४०३५॥

इमं वणस्सतिकाए सरीरप्पमाणं –

एगस्स अणेगाण व, कलाउ हीणाहिगं पि तु तरूणं ।
जा आमलगा लहुगा, दुगुणा दुगुणा ततो वुड्ढी ॥४०३६॥

एगस्स पत्तेयवणस्सतिकायस्स असंखेज्जाण वा कलघन्नप्पमाणमेत्तं सरीरं भवति । कलमेत्ताओ हीणं अहियं वा विराहेंतस्स जाव अद्दामलगमेत्तं ताव चउलहुं, अओ परं दुगुणवुड्ढीए जाव अट्ठुमीगाहिते सते चरिमं । अणंते चउगुरुगादि नेयव्वं ॥४०३६॥

कारणे विराहेज्ज –

बितियं पढमे बितिए, पंचमे अद्धाणकज्जमादीसु ।
गेलण्णाती तइए, चउत्थकाए य सेहादी ॥४०३७॥

बितियं अववादपदं । पढमे त्ति पुढविक्काए, बितिए वि आउक्काए, पंचमित्ति वणस्सतिकाए, एएसु तिसु काएसु, अद्धाणकज्जमादिया जे पेढवणिया कारणा ते इह दट्ठव्वा ।

तइए त्ति तेउक्काइए जे दीहगिलाणादी कारणा भणिया ।

चउत्थे त्ति वाउक्काइए जे सेहादिया कारणा भणिया ते इह दट्ठव्वा ॥४०३७॥

जे भिक्खू सच्चित्तरुक्खं दुरुहइ, दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

आरुहंतस्स चउलहुं । आणादिणो य दोसा । कंठा ।

जे भिक्खू सच्चित्तं, रुक्खं आउट्टियाए दुरुहेज्जा ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥४०३८॥ कंठा

ते य सच्चित्तरुक्खा तिविहा इमे –

संखेज्जजीविना खलु, असंखजीवा अणंतजीवा य ।
तिविहा हवंति रुक्खा, सुत्तं पुण दोसु आणादी ॥४०३९॥

संखेज्जजीवा तालादी, असंखेज्जजीवा अंबादी, अणंतजीवा थोहरादी । संखेज्जासंखेज्जेसु दोसु सुत्तणिवातो, अणंतेसु चउगुरुगा ॥४०३९॥

आरुहंतस्स –

खेवे खेवे लहुगा, मिच्छत्तं पवडणे अहिक्काए ।
परितावणादि आया, सविसेसतरा परिग्गहिते ॥४०४०॥

"खेवे" त्ति, आरुहंतस्स उवरुवरिं हत्थालंबणे खेवा, जत्तिया खेवा तत्तिया चउलहु, अणंते चउगुरुं । तं दट्ठुं कोइ मिच्छत्तं गच्छे । तव्विराधणे संजमविराधणा । आयाए पडेज्ज वा । पडितस्स हत्थादिविराहणा, एत्थ गिलाणारोवणा, पडंतो वा अधिकाए विराहेज्ज । देवमणुयपरिग्गहिते एते चेव सविसेसतरा दोसा, खेत्तादिबंधणादिया इत्यर्थः ॥४०४०॥

कारणे दुरुहेज्ज –

बितियपदमणप्पज्झे, गेलण्णऽद्धाण ओम उदए य ।
उवही सरीर तेणग, सणप्फए जङ्गमादीसु ॥४०४१॥

खेत्तादिया अणप्पज्झ दुरूहेज्ज, गेलण्णे ओसघट्ठा, अद्धाणोमे असंथरंता पलंबट्ठा, उदगपूरे आयर-क्खट्ठा, उवधिसरीरतेणगेसु रायबोधिगादिभएसु वा दुरूहिता णिलुक्कंति, सीहादिसणप्फए जङ्डमि वा वधाय आवतंते आयरक्खणट्ठा दुरूहंति । तत्थ पुव्वं अचित्ते, ततो परित्तमीसे, ततो अणंतमीसे, ततो परित्तसचित्ते, ततो अणंतसचित्ते, एवं कारणा जयणाए ण दोसा ॥४०४१॥

जे भिक्खू गिहिमत्ते भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

गिहिमत्तो घटिकरगादि । तत्थ जो असणादी भुंजति तस्स चउलहुं ।

जे भिक्खू गिहिमत्ते, तसथावरजीवदेहणिप्फण्णे ।
भुंजेज्जा असणादी, सो पावति आणमादीणि ॥४०४२॥

सो गिहिमत्तो दुविहो – थावरजीवदेहनिप्फण्णो वा, तसजीवदेहणिप्फण्णो वा । सेसं कंठं ॥४०४२॥

ते य इमे –

सव्वे वि लोहपादा, दंते सिंगे य पक्कभोमे य ।
एते तसणिप्फण्णा, दारुगतुंबाइया इतरे ॥४०४३॥

सुवन्न-रयत-तंब-कंसादिया सव्वे लोहपादा, हत्थिदंतमया, महिसादिसिंगे वा कयं, कवालियादि वा पक्कं भोमं, एतं सव्वं तसणिप्फण्णं । "इतरं" ति थावरणिप्फण्णं तं दारुयं तुंबघडियं भन्नई, मणिमयं वा ॥४०४३॥

एतेहिं जो भुंजइ तस्स चउलहुं आणादिया इमे दोसा –

पुव्विं पच्छाकम्मे, ओसक्कहिसक्कणे य छक्काया ।
आणण-णयण-पवाहण, दरभुत्ते सहरिय वोच्छेदो ॥४०४४॥

जे भद्दया गिही ते पुव्वं चेव संजयट्ठा धोवेतुं ठवेज्जा, पंतो पच्छाकम्मं करेति, जाव संजयाणं ण भोयणवेला ताव भुंजामो त्ति ओसक्कणा, भुत्तेसु संजएसु भुंजिहामो त्ति अहिसक्कणा । संजता एत्थ भुत्ते त्ति पुणो णिम्मज्जणा, णिमज्जणोवट्टणायमणेसु छक्कायविराहणा । आणिज्जंतं णिज्जंतं वा भज्जेज्ज । पवाहेंत अन्नं पवहावेज्ज । साधुणा वा दरभुत्ते मग्गति तत्थ अदेंतस्स अंतरायदोसा, देंतस्स सवज्जहाणी, णाधूति वा

आणिते हीरेज्ज । एत्थ जा तणफलएसु अवहडेसु विराधणा वुत्ता सा इह गिहिमत्ते भाणियव्वा । सकज्जहाणीए रुट्ठो भणेज्ज – मा पुणो संजयाणं देह त्ति वोच्छेदो ॥४०४४॥ जम्हा एए दोसा गिहिमत्ते ण भुंजियव्वं ।

कारणे भुंजति –

बितियपदं गेलन्ने, असती य अभाविते व खेत्तम्मि ।
असिवादी परलिंगे, परिक्खणट्ठा व जतणाए ॥४०४५॥

वेज्जट्ठा गिलाणट्ठा वा गिहिमत्ता घेप्पंति, भायणस्स वा असती, राया दिक्खित्तो अभावियस्सट्ठा वा, मगच्छे वा उवग्गहट्ठा, असिवे वा सपक्खपंताए परलिंगकरणे घेप्पति, सेहो सद्दहति ण व त्ति तप्परिक्खणट्ठा घेप्पति । "जयणाए" त्ति जहा पुव्वभणिया पच्छाकम्मादिया दोसा ण भवंति तहा घेप्पंति ॥४०४५॥

जे भिक्खू गिहिवत्थं परिहेइ, परिहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

गिहिवत्थं पाडिहारियं भुंजतस्स चउलहुं, आणादिया य दोसा ।

गिहिमत्ते जो उ गमो, नियमा सो चेव होति गिहिवत्थे ।
नायव्वो तु मतिमया, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥४०४६॥ कंठा

इमे विसेसदोसा –

कोट्टिय छिण्णे उद्दिट्ठमइलिते अंकिते व अचियत्तं ।
दुग्गंध-जूय-तावण, उप्फोसण-धोव-धूवणता ॥४०४७॥

मूसगेण कुट्टितं पमाणातिरित्तं छिन्ने दोसा, अच्छिन्ने सकज्जहाणी, घयतेल्लादिणा वा अंकियं । एमाइएहिं कारणेहिं अचियत्तं भवति । साधूणं अण्हाणपरिमलेण वा दुग्गंधं जुगुंछति । "जूय" त्ति छप्पया भवंति, छड्डेति वा । ताव त्ति अगणि उण्हे वा तावेंति । संजतेहिं परिभुत्तं उप्फोसति धोवति वा, दुग्गंधं वा धूवेति ॥४०४७॥

जे भिक्खू गिहिनिसेज्जं वाहेइ, वाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

गिहिणिसेज्जा पलियंकादी, तत्थ णिसीदंतस्स चउलहुं, आणादिया य दोसा ।

गोयरमगोयरे वा, जे भिक्खू णिसेवए गिहिणिसेज्जं ।
आयारकहा दोसा, अववायस्सावबातो य ॥४०४८॥

भिक्खायरियागतो आगतो वा धम्मत्थकामा आयारकहा तत्थ जे दोसा भणिया ते गिहिणिसेज्जं वाहेंतस्स इह वत्तव्वा । अस्थाने [1]अपवादापवादश्च कृतो भवति ॥४०४८॥

किं चान्यत् –

बंभस्स होतऽगुत्ती, पाणाणं पि य वहो भवे अवहे ।
चरगादीपडिघातो, गिहीण अचियत्तसंकादी ॥४०४९॥
खरए खरिया सुण्हा, णट्ठे वट्टक्खुरे य संकेज्जा ।
खणणे अगणिक्काए, दार वती संकणा हरिते ॥४०५०॥

---

१ गा० ४०५३ चू० ।

गिहिणिसेज्जं वाहेंतस्स बंभचेरग्रगुत्ती भवति, अवहे पाणिणं वधो, उदाहरणं – धम्मत्थकामाए चरगादिभिक्खागयाणं साधुसमीवसन्निविट्ठा कहमुट्ठेमि त्ति पडिसेहं करेति, किमेस संजतो णिविट्ठो चिट्ठति त्ति अचियत्तं, मेहुणासंका भवति, दुवक्खरगादीसु य णट्ठेसु स संजतो संकिज्जति। खेत्ते वा खए (खणणे), अगणिणा वा दड्ढे, दारेण वा हरिते, वतीं वा छेत्तुं हरिते, साधू संकिज्जति। जम्हा एते दोसा तम्हा णो गिहिणिसेज्जं वाहेइ ॥४०५०॥

इमेसिं पुण अणुण्णा –

उच्छुद्धसरीरे वा, दुब्बलतवसोसिओ व जो होज्जा।
थेरे जुण्णमहल्ले, वीसंभण वेस हतसंके ॥४०५१॥

वाउसत्तं अकरेंतो मलपंकियसरीरो "उच्छुद्धसरीरो" भन्नति, रोगपीडिओ दुब्बलसरीरो तवसोसियसरीरो वा, जो थेर त्ति सट्ठिवरिसे विसेसेणं जुण्णसरीरे। "महल्ले" त्ति सव्वेसिं वुड्ढतरो संविग्गवेसधारी विसंभणवेसो चेव हतसंको। अहवा – तत्थ णिसन्नो ण संकिज्जति जो केणइ दोसेण सो हतसंको ॥४०५१॥

अहवा ओसहहेउं, संखडि संघाडए व वासासु।
वाघायम्मि उ रत्था, जयणाए कप्पती ठातुं ॥४०५२॥

"अहव" त्ति – अववादकारणभेदप्रदर्शने। ओसधहेतुं दातारं घरे असहीणं पडिच्छति, संखडीए वा वेलं पडिक्खंति, भरियं भायणं जाव मुंचितुं एति ताव संघाडओ पडिच्छति वासे वा पडंते अच्छति, वधुवरादिउव्वहणेण वा रच्छाए वाघातो, जहा पुव्वुत्ता दोसा ण भवंति तहा जयणाए अच्छिउं कप्पति ॥४०५२॥

एएहिं कारणेहिं, अणुण्णवेऊण विरहिते देसे।
अच्छंतऽववातेणं, अववादववाततो चेव ॥४०५३॥

वीएसु पंडगाइविराहिते देसे गिहिवंति सामि अणुण्णवेउं अच्छंतऽववाएण उभा ठिया। अववादे पुण अण्णो अववाओ अववायाववादो भन्नति, तेण अववादाववादेण णिसीदंतीत्यर्थः ॥४०५३॥

जे भिक्खू गिहितेइच्छं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

इमो सुत्तफासो –

जे भिक्खू तेगिच्छं, कुज्जा गिहि अहव अण्णतित्थीणं।
सुहुमतिगिच्छा मासो, सेसतिगिच्छाए लहु आणा ॥४०५४॥

तिगिच्छा णाम रोगप्रतिकारः, वमन-विरेचन-अभ्यंगपानादिभिः तं जो गिहीण अथवा – अण्णतित्थियाणं करेति तस्स सुहुमतिगिच्छाए मासलहुं, बायराए चउलहुं, आणादिया य दोसा। सुहुमतिगिच्छा णाम णाहं वेज्जो अट्ठापदं देति।

अहवा – भणाति मम एरिसो रोगो अमुगेण पण्णत्तो ॥४०५४॥

बादरतिगिच्छा चतुप्पया –

विरए य अविरए वा, विरताविरते य तिविहतेगिच्छं।
जं जं ज्रुंजति जोग्गं, तट्ठाणपसंधणं कुणती ॥४०५५॥

पासत्थादिया विरया, अविरओ सड्ढो, मिच्छादिट्ठी वा अविरतो, गहीयाणुव्वतो विरताविरतो, तिविहतिगिच्छा अट्ठापदं देंति, अप्पणो वा किरितं कहेंति, चतुप्पादं वा तेगिच्छं करेइ। गिलाणो आणिज्जंतो णिज्जंतो जं विराधेति तण्णिप्फण्णं पावति। किरियाकरणकाले वा जं कंदमूला दिवहेति, पच्छाभोयणकरणे वा।

अहवा – स रोगविमुक्को किसिकरणादि कज्जं जं जोगं करेति स तेण तिगिच्छिणा तम्मि जोगट्ठाणे संधितो भवति।

अहवा – स रोगी जं जोगकरी पुव्वं आसी से रोगकाले अव्वावारो तम्मि अच्छति रोगविमुक्को पुण तट्ठाणसंधणं करेति, व्याघ्रायस्पिंडवत्, सामर्थ्याद् बहुसत्वोपरोधी भवति, इत्यतो चिकित्सा न करणीया ॥४०५५॥

बितियपदे करेज्जा वा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलन्ने।
अद्धाणरोहए वा, जयणाए कप्पती कातुं ॥४०५६॥

गच्छे असिवादिकारणसमुप्पन्नपओयणा जयणाए करिता सुद्धा ॥४०५६॥

इमा जयणा –

पासत्थमादियाणं, पुव्वं देसे ततो अविरते य।
सुहुमाति विज्जमंते, पुरिसित्थि अचित्तसच्चित्ते ॥४०५७॥

जाहे पणगपरिहाणीए चउलहुं पत्तो ताहे पासत्थेसु पुव्वं विज्जमंते सुहुमाए करेति, पच्छा अचित्तदव्वेहिं, पच्छा सचित्तेहि, तं पि पुव्वं पुरिसेसु, पच्छा इत्थियासु, तओ णपुंसेसु। "देस" त्ति पच्छा देसविरतेसु एवं चेव, ततो अविरते, अप्पबहुचिताए वा अत्थो उवउज्ज वत्तव्वो ॥४०५७॥

जे भिक्खू पुरकम्मकडेण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विएण वा भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

इमो सुत्तत्थो –

हत्थेण व मत्तेण व, पुरकम्मकएण गेण्हती जो उ।
आहारउवधिमादी, सो पावति आणमादीणि ॥४०५८॥

पुरस्तात् कर्म पुरेकर्म, पुरे कम्मकएणं हत्थेण मत्तेण य चउभंगो।

हस्तेन मात्रकेण। हस्तेन, न मात्रकेण।

न हस्तेन, मात्रकेण। न हस्तेन, न मात्रकेण।

पढमभंगे दो चतुलहुया बितियततिएसु एक्केक्के चतुलहुं; चरिमो सुद्धो। उदउल्ले तिसु वि भंगेसु मासलहुया, ससणिद्धेसु तिसु भंगेसु पंचरातिंदिया ॥४०५८॥

इमो सुत्तफासो –

पुरकम्मम्मि य पुच्छा, किं कस्सारोवणा य परिहरणा ।
एएसि चउण्हं पी, पत्तेयपरूवणं वोच्छं ॥४०५६॥

किमिति परिप्रश्ने । किं पुरेकम्मं ? कस्स वा भवति ? का वा पुरेकम्मे आरोवणा ? कहं वा पुरेकम्मं परिहरिज्जति ? ॥४०५६॥

चोदकाह –

जति जं पुरतो कीरति, एवं उत्थाण-गमणमादीणि ।
होति पुरेकम्मं ते, एमेव य पुव्वकम्मे वि ॥४०६०॥

साधुस्स भिक्खत्थिणो घरंगणमागतस्स जति जं पुरतो कीरति तं पुरेकम्मं । एवं दातारस्स जाओ उट्ठाण-गमण-कंडणादियाओ किरियाओ सव्वाओ पुरेकम्मं पावति । अह पुव्वं कम्मं एवं समासो कज्जति, इहाप्येवमित्यर्थः ॥४०६०॥

किं चान्यत् ? चोदक एवाह –

एवं फासुमफासुं, ण जुज्जते ण वि य कायसोही ते ।
हंदि हु बहूणि पुरतो, कीरंति कताणि पुव्वं च ॥४०६१॥

दुधा वि पच्चक्खपरोक्खसमासकरणे एसणमणेसणीयं ण णज्जति, कर्मण अनेकार्थसंभवात्, अणज्जमाणे य सोही ण भवति । हंदीत्येवं, हु गुर्वामंत्रणे, एवं हे गुरू । बहुणि पुरतो कीरंति बहूणि य पुव्वं दायगेण कयाणि सव्वाणि तेदाणि पुरेकम्मं पावंति ॥४०६१॥

आचार्याह –

कामं खलु पुरसद्दो, पच्चक्खपरक्खतो भवे दुविहो ।
तह वि य ण पुरेकम्मं, पुरकम्मं चोयग ! इमं तु ॥४०६२॥

चोदक ! अभिप्रेतार्थानुमते कामशब्दः, पादपूरणे खलु एवशब्दे वा । पच्चक्खपरोक्खकया दायगेण गमणादिया पुरेकम्मं ण भवति ॥४०६२॥

इमं भवति –

हत्थं वा मत्तं वा, पुव्वं सीओदएण जो धोवे ।
समणट्ठयाए दाता, तं पुरकम्मं वियाणाहि ॥४०६३॥

सीतोदगं सचित्तं, तेण जो दायगो हत्थमत्ते धोवति समणट्ठा एयं पुरेकम्मं ॥४०६३॥ "किं" ति गयं ।

इयाणि "[1]कस्स" त्ति दारं –

कस्स ति पुरेकम्मं, जतिणो तं पुण पहू सयं कुज्जा ।
अहवा पहुसंदिट्ठो, सो पुण सुहि पेस बंधू वा ॥४०६४॥

---

१ गा० ४०५६ ।

कस्स ति पुरेकम्मं ? पुच्छा, उत्तरं तप्परिहारिणो साधोरित्यर्थः । तं पुरेकम्मं पभू वा पभुसंदिट्ठो वा करेज्ज । गिहसामी पभू तस्संदिट्ठो तिविहो – सुही मित्तो, पेस्सो दासमादी, बंधु माया-भगिणिमातिश्रो । कहं पुरेकम्मस्स संभवो ? भन्नति – संखडीए पंतिपरिवेसणे णिउत्तो कोइ हत्थं मत्तं वा धुविउं देज्जा, अन्नत्थ व असुइहत्थो धुविउं देज्जा ॥४०६४॥

अहवा –

अच्चुसिण चिक्कणे वा, करे धुविउं पुणो पुणो देति ।
आयमिऊण य पुव्वं, देज्ज जतीणं पढमताते ॥४०६५॥

परिवेसंतस्स जति अच्चुसिणो कूरो चिक्कणो हत्थे लग्गति त्ति ताहे अन्नो पासट्ठितो कुंडगादिसु पाणियं धरेति, तत्थ से दाया पुणो पुणो हत्थे उदउल्लेतुं दलयति । अधवा – यदि उवउल्लेतुं पढमं साधूणं दलयति तो पुरेकम्मं भवति ॥४०६५॥

भद्दबाहुकया गाहा ।

अट्ठविधभंगेसु विसुद्धभंगग्गहणं इमं –

दमए पमाणपुरिसे, जाए पंतीए ताए मोत्तूणं ।
सो पुरिसो तं वऽण्णं, तं दव्वं अण्ण-अण्णं वा ॥४०६६॥

"दमए" त्ति कम्मकरग्गहणं । "पमाणपुरिसो" त्ति देयदव्व-सामिग्गहणं । दाता दमगो सामी वा सो जाए पंतीए णिउत्तो तं पंतिं मोत्तुं जदि तो पुरेकम्मकतेण हत्थेण तं वा दव्वं अन्नं वा दव्वं दलयति । जति परिणयहत्थो य तो कप्पति बियचउत्थभंगेसु त्ति । अह अन्नो पुरिसो तं वा दव्वं अन्नं वा दव्वं दलाति, कप्पति अन्यपंक्तीत्यनुवर्तते षष्ठाष्टमभंगग्रहणं । वा विकल्पः षष्ठाष्टममध्यगतश्च सप्तमभंगो कल्पत एव ॥४०६६॥

प्रथम-तृतीय-पंचमभंगेषु अभंगे वा भद्रबाहुकृतगाथया ग्रहणं निर्दिश्यते –

दाऊण अण्णदव्वं, कोई देज्जा पुणो वि तं चेव ।
अत्तट्ठिय-संकामित, गहणं गीयत्थसंविग्गे ॥४०६७॥

अणेसणाकयं दव्वं मोत्तूण दव्वस्स अण्णं दाउं तं चेव अणेसणाकतं दव्वं पुणो देज्जा, एवं छिन्नवावारे कप्पति ।

अधवा – त अणेसणाकतं दाता सयं अहिट्ठेइ । अहवा – तं अणेसणाकयं दाता अन्नस्स देज्जा, सो जति देज्जा एवं संकमियं कप्पति । तं अणेसणाकतं दव्वं एतेण विकप्पेण गीयत्थस्स कप्पति, णो अगीयत्थस्स । जम्हा तं गीयत्थे गिण्हंतो वि संविग्गो भवति ॥४०६७॥

एसेवऽत्थो सिद्धसेणखमासमणेण फुडतरो भन्नति –

सो तं ताए अण्णाए, वितिए उ अण्णती य दो वऽण्णे ।
एमेव य अण्णेण वि, भंगा खलु होंति चत्तारि ॥४०६८॥

सो पुरिसो तं दव्वं ताए पंतीए पढमो भंगो । अन्नपंतीए त्ति बितिओ भंगो । एवं अट्ठभंगी कायव्वा ॥४०६८॥

इमो गहणविकप्पो –

कप्पति समेसु तह सत्तमम्मि ततियम्मि छिन्नवावारे ।
अत्तट्ठियम्मि दोसु, सव्यत्थ य भएसु करमत्ते ॥४०६६॥

करमत्तेसु भयणा, जति ससणिद्धादी ण भवति ततः ग्रहणं ॥४०६६॥

"[1]गीतत्यसंविग्गो" त्ति अस्य व्याख्या –

गीयत्थग्गहणेणं, अत्तट्ठितमादि गिण्हती गीयो ।
संविग्गग्गहणेणं, तं गिण्हंतो वि संविग्गो ॥४०७०॥

अत्तट्ठियं आगमप्रमाणतो गेण्हति, ण तस्स विप्परिणामो भवति – संविग्ग एवेत्यर्थः ॥४०७०॥

इमेण पुण विकप्पेण पुरतो वि कयं तं पुरेकम्मं ण भवति –

पुरतो वि हु जं धोयं, अत्तट्ठाए ण तं पुरेकम्मं ।
तं पुण उल्लं ससिणिद्धगं च सुक्खे तहिं गहणं ॥४०७१॥

अप्पणट्ठा जदि हत्थे पक्खालेति तो उदउल्लं वा ससणिद्धं वा भवति, तत्थ परिणते अणत्तट्ठिए वि गहणं भवति ॥४०७१॥

पुरेकम्मउदउल्लेसु इमो विसेसो –

तुल्ले वि समारंभे, गहणं सुक्खेक्क एक्कपडिसेहो ।
अन्नत्थ वूढ ताविय, अत्तट्ठे होति खिप्पं पि ॥४०७२॥

आउक्कायसमारंभे तुल्ले सिणोदउल्ले सुक्के अणत्तट्ठिए वि गहणं, पुरेकम्मे पुण सुक्के वि नो गहणं चिरेण वि । इमेणं पुण विहाणेणं खिप्पं पि गहणं, तक्कादिछूढे तावगे अगणितावित्ते वा अत्तट्ठिए वा ग्रहणमित्यर्थः ॥४०७२॥ "कस्स" त्ति दारं गयं ।

"इयाणिं" "[2]आरोवण" त्ति दारं –

चाउम्मासुक्कोसे, मासियमज्झे य पंच य जहण्णे ।
पुरकम्मे उदउल्ले, ससिणिद्धारोवणा भणिया ॥४०७३॥

उदगसमारंभे पुरेकम्म उक्कोसं । उदउल्लं मज्झिमं । ससणिद्धं जहन्नं । एतेसु जमसो आरोवणा चउलहुं मासलहुं पणगं च ॥४०७३॥ "आरोवण" त्ति गतं ।

इयाणि "[3]परिहरण" त्ति –

परिहरणा वि य दुविहा, अविधि-विधीते य होइ णायव्वा ।
पढमिल्लुगस्स सव्वं, विनियस्स य तम्मि गच्छम्मि ॥४०७४॥

---

१ गा० ४०६३ । २ गा० ४०५६ । ३ गा० ४०५६ ।

ततियस्स जावजीवं, चउत्थस्स य तं ण कप्पती दव्वं ।
तद्दिवस एगगहणे, नियट्टगहणे य सत्तमए ॥४०७५॥

पढमगाधाए पुव्वद्धं कंठं । सेसे दिवड्डगाधाए सत्त चोदगा आयरियदेसगा ।

तेसिं इमं वक्खाणं –

पढमो जावज्जीवं, सव्वेसिं संजयाण सव्वाइं ।
दव्वाणि णिवारेती, बितिओ पुण तम्मि गच्छम्मि ॥४०७६॥

पढमचोदगाह –

जत्थ घरे कम्मं कतं तत्थ जाव सो पुरेकम्मकारी जस्स य तं कयं पुरे कम्मं ते जावज्जीवं ति ताव सगच्छपरगच्छयाणं सव्वसाधूणं सव्वदव्वा ण कप्पंति घेत्तुं ।

बितियचोदगो पढमं भणति – जं परगच्छयाणं णिवारेसि तं अजुत्तं, सगच्छयाणं चेव सव्वेसिं तत्थ घरे सव्वदव्वा जावज्जीवं ण कप्पंति ॥४०७६॥

ततिओ जावज्जीवं, तस्सेवेगस्स सव्वदव्वाइं ।
वारेइ चउत्थो पुण, तस्सेवेगस्स तं दव्वं ॥४०७७॥

तृतीयचोदको बितियं भणाति – जं सगच्छे सव्वेसिं निवारेसि तं अजुत्तं, जस्स पुरेकम्मं कतं तस्स वेगस्स जावज्जीवं सव्वदव्वा न कप्पंति ।

चउत्थचोदगो तइयचोदगं भणति – जं तत्थ सव्वदव्वे वारेसि तं अजुत्तं, तं चेवेगदव्वं तस्सेवेगस्स जावज्जीवं मा कप्पतु ॥४०७७॥

सव्वाणि पंचमो तद्दिणं तु तस्सेव छट्ठो तं दव्वं ।
सत्तमतो णियत्तंतो, तं गेण्हइ परिणतकरम्मि ॥४०७८॥

पंचमो चउत्थं भणाति –

तस्सेवेगस्स जावज्जीवं दव्वणिवारणमजुत्तं, तस्सेवेगदिणं तस्सेवेगस्स तत्थ घरे सव्वदव्वा मा घेप्पंतु ।

छट्ठचोदगो पंचमं भणाति –

तस्स दिणमजुत्तं सव्वदव्वणिवारणं, तमेवेगं दव्वं तस्स तद्दिणं तत्थ घरे मा कप्पतु ।

सत्तम चोदगाह –

सर्वमिदमयुक्तं । जदा हत्थे परिणओ आउक्काओ तदा सणियट्टंतो तत्थ घरे सो चेव साधू सव्वदव्वे गेण्हउ, ण दोसो ॥४०७८॥

आचार्य आह –

एगस्स पुरेकम्मं, पत्तं सव्वे वि तत्थ वारेंति ।
दव्वस्स य दुल्लभता, परिचत्तो गिलाणओ तेहिं ॥४०७९॥

जेसिं एसुवदेसो, आयरिया तेहि तू परिच्चत्ता ।
खमगा पाहुणगा तू, सुव्वत्तमयाणगा ते उ ॥४०८०॥

एगस्स साधुस्स कते पुरेकम्मे जे सव्वसाधूणं तम्मि गिहे सव्वदव्वे णिवारेंति तेहिं गिलाण-आयरिय-खमगा पाहुणगा बाला वुड्ढा य परिच्चत्ता, चतुगुरुं च से पच्छित्तं ।

कम्हा ? जम्हा तम्मि कुले गिलाणादिपायोग्गं लब्भति, नान्यत्र ।

किं च अन्यप्ररूपणा चैषा –

चोदगाह – "कहं वा सव्वेहिं णायं जहा एत्थ पुरेकम्मं कतं ?"

आचार्याह –

अद्धाणणिग्गयादी, उब्भामग खमग अक्खरे रिक्खा ।
मग्गण कहण परंपर, सुव्वत्तमयाणगा ते वि ॥४०८१॥

उब्भामगऽणुब्भागम, सगच्छपरगच्छजाणणट्ठाए ।
अच्छति तहियं खमतो, तस्सऽसती स एव संघाडो ॥४०८२॥

जे अद्धाणणिग्गया उब्भामगा य अप्फचिया भिक्खं अडंति । सगच्छपरगच्छयाण य कहणट्ठा खमगो तत्थ णिसन्नो अच्छति "एत्थ पुरेकम्मं कतं" ति । खमगासति पारणगदिणे वा जस्स पुरेकम्मं कतं स एव साधुसंघाडो एगो वा तत्थ अच्छति ॥४०८२॥

जदि एगस्स उ दोसा, अक्खर ण तु ताणि सव्वतो रिक्खा ।
जति फुसण संकदोसा, हिंडंता चेव साहेंति ॥४०८३॥

जदि एगस्स अच्छओ इत्थियमादिया दोसा भवंति तो कुड्डादिसु [1]अक्खराणि लिहंति "एत्थ पुरेकम्मं कतं" ति । अह अक्खराणि सव्वे ण याणंति तो साधुजणसमयकया "रिक्ख" त्ति रेहा कज्जति । अह अन्नो वि रिक्खं करेति तो फुसणासंकभंगदोसा बहवे होज्ज, तो जस्स पुरेकम्मं कतं सो संघाडगो हिंडंतो चेव अन्नस्स साधूणं कधेति – "एत्थ घरे पुरेकम्मं" । ते वि अन्नेसिं । एवं परंपरेणं सव्व साधूणं कहिंति ।

आचार्य आह – "[2]सुव्वत्तमजाणगा जेसिं एसा परिहरणविधी" ॥४०८३॥

एसा अविही भणिता, सत्तविहा खलु इमा विही होति ।
तत्थादी चरिमदुगे, अत्तट्ठियमादि गीतस्स ॥४०८४॥

एस सत्तविधा अविधिपरिहरणा भणिया । सत्तविधा चेव इमा विधिपरिहरणा उप्फोसणादि-विरहिया ॥४०८४॥

एतेसि अट्ठण्ह पयाणं आइल्लेसु दोसु, चरिमेसु य दोसु, एतेसु चउसु पदट्ठिएसु गहणं जइ सव्वे गीयत्था भवंति ।

---

१ गा० ४०८१ । १ गा० ४०८१ ।

एगस्स[1] वितिय[2]ग्गहणे, पसज्जणा[3] तत्थ होति कप्पट्ठी ।
वारण[4] ललितासणिओ, गंतूण[5] य कम्म[6] हत्थ[7] उप्फोसे[8] ॥४०८५॥

एगेण समारद्धे, अन्नो पुण जो तहिं सयं देइ ।
जति होंति अगीता तो, परिहरियव्वं पयत्तेणं ॥४०८६॥

भिक्खट्ठा साहुस्स 'घरंगणे ठियस्स' दातारेण आउक्कायसमारंभो कओ, साहुणा पडिसिद्धो । तत्थ अण्णो जइ सयं चेव दाउं अब्भुज्जओ अन्नभणिओ वा तत्थ जइ सव्वे साहवो गीयत्था तो गिण्हंति, अगीतेसु मीसेसु य परिहरंति ॥४०८६॥

अस्यैवार्थस्य व्याख्या –

समणेहि य अभणंतो, गिहिभणितो अप्पणो व छंदेणं ।
मोत्तुमजाणगमीसे, गिण्हंती जाणगा साहू ॥४०८७॥ कंठा

"[1]वितियग्गहणे" त्ति अस्य व्याख्या –

पढमदातारेण जा पुरेकम्मकतेण हत्थेण भिक्खा गहिया तं जदा अन्नो वितिओ देइ सा किं गेज्झा अगेज्झा ? तत्थ अगीताभिप्पाओ भण्णति –

अम्हट्ठसमारद्धे, तद्दन्नण्णेण किह णु णिद्दोसं ।
सविसण्णाहरणेणं, मुज्झति एवं अजाणंतो ॥४०८८॥

एत्थ अगीतो मुज्झति इमेण दिट्ठंतेण – "वइरिणो अट्ठाय विसेण संजुत्तं भत्तं कयं एगेण, अन्नो जदि तं देइ तो किं ण मरंति ?. एवं अम्हट्ठा जेण उदगसमारंभो कतो तेण जा गहिया भिक्खा तं जदि अन्नो देइ किं दोसो न भवइ ? भवत्येव" । तम्हा अगीतेसु मीसेसु वा परिहरियव्वं ॥४०८८॥

गीतेसु इमो विधी –

एगेण समारद्धे, अण्णो पुण जो तहिं सयं देति ।
जति जाणगा उ साहू, परिभुत्तं जे सुहं होति ॥४०८९॥

गीता गिण्हंति परिभुंजंति य ॥४०८९॥

अधवा –

गीयत्थेसु वि भयणा, अन्नो अन्नं व तेण मत्तेणं ।
विप्परिणतम्मि कप्पति, ससणिद्धदउल्लपडिसिद्धा ॥४०९०॥

अण्णो पुरिसो अण्णं दव्वं तेण उदउल्लेण मत्तेण जदा देति तदा ण कप्पति, आउक्काए परिणते अत्तट्ठिए कप्पति । ससणिद्धावत्थं उदउल्लावत्थं च पडिसिद्धं – न कल्पतीत्यर्थः ॥४०९०॥

अह वितिएण वि पुरेकम्मं कयं, सो वि साधुणा पडिसिद्धो, ततिओ अण्णभणितो सयं वा जदि देति तत्थ वि गहणं पूर्ववत् ।

---

१ गा० ४०८५ ।

"[1]पसज्जणा तत्थ होति कप्पट्ठी" अस्य व्याख्या –

अह ततिओ वि पुरेकम्मं करेज्ज, तत्थ गीएण वि ण घेत्तव्वं, जम्हा एत्थ पसज्जणादोसो दीसति। को पसज्जणा दोसो ? भण्णति – "तरुणकप्पट्ठीओ कंदप्पा साधुं चेलवंतीओ पुरेकम्मं करेज्ज"।

अस्यैवार्थस्य व्याख्या –

तरुणीओ पिंडियाओ, कंदप्पा जति करे पुरेकम्मं।
पढमबितियाण मोत्तुं, आवज्जति चउलहू सेसे ॥४०९१॥

पढमबितिएसु पुरेकम्मे कते जदि अन्नो भणति – "पडिच्छाहि अहं ते दलयामि" तेसु उदिक्खति। ततीयादिसु जदि उदिक्खति तो चउलहुं ॥४०९१॥

"[2]वारण ललियासणओ" त्ति अस्य व्याख्या –

पुरेकम्मम्मि कयम्मी, जति भणति मा तुमं इमा देऊ।
संकापदं च होज्जा, ललियासणिओ व सुव्वत्तं ॥४०९२॥

पुरेकम्मे कते साधू भणति – "मा तुमं देहि, इमा देउ।" ताहे सा चिंतेति – "अहं विरूवा वुड्ढा वा, ण वा से रुच्चामि, इमा तरुणीं सुरूवा रुच्चति वा, से एवं संका भवेज्जा – अह किं मण्णे एस एतीए सह घडिओ हवेज्ज ?

अहवा भणेज्ज – तुमं फुडं ललियासणिओ इव जहाभिलसियं परिवेसियं इच्छसि ॥४०९२॥

"[3]गंतूण" य त्ति अस्य व्याख्या –

गंतूण पडिनियत्ते, सो वा अण्णो व से तहिं देति।
अण्णस्स वि दिज्जिहिती, परिहरियव्वं पयत्तेणं ॥४०९३॥

पुरेकम्मे कते दायगेण भिक्खा णीणिता, साधुणा पडिसिद्धा, गतो साधू।

भिक्खाहत्थगतो दायगो चिंतेइ – जदा एस साहू घरपंतीओ इमाओ पडिनियत्तो एहिति तदा से दाहामि तं भिक्खं। सो दाता अन्नो वा देति। ण कप्पति। अह तं णीणितं भिक्खं अन्नस्स साधुस्स चणेति ? तस्स वि ण कप्पं ॥४०९३॥

अण्णस्स व दाहामो, अण्णस्स वि संजयस्स ण वि कप्पे।
अत्तट्ठियचरगादीण वा वि दाहंति तो कप्पे ॥४०९४॥

पुव्वद्धं कंठं। अह अप्पणो अत्तट्ठेति चरगादीणं वा संकप्पेति जदि य परिणतो आउक्काओ तो घेप्पति ॥४०९४॥

"[4]अण्णस्स व दाहामो" त्ति अस्य व्याख्या –

पुरेकम्मम्मि कयम्मी, पडिसिद्धा जति भणेज्ज अण्णस्स।
दाहंति पडिनियत्ते, तस्स व अण्णस्स व ण कप्पं ॥४०९५॥ कंठा

---

१ गा० ४०८५। २ गा० ४०८५। ३ गा० ४०८५। ४ गा० ४०९४।

भिक्खचरस्सऽन्नस्स वि, पुव्वं दाऊण जइ दए तस्स ।
सो दाता तं वेलं, परिहरियव्वो पयत्तेणं ।।४०६६।। कंठा

साधुअट्ठा पुरेकम्मे कते पुव्वं भिक्खायरस्स भिक्खं दाउं पच्छा अच्छिन्नवावारो "तस्स" त्ति साधुस्स देज्जा, सो दाता तं वेलं अच्छिन्नवावारो परिहरियव्वो, ण पकप्पति ।।४०६६।।

इयाणिं "[1]कम्मे" त्ति दारं –

पुरेकम्मम्मि कयम्मी, जइ गेण्हति जइ य तस्स तं होइ ।
एवं खु कम्मबंधो, चिट्ठति लोए व बंभवहो ।।४०६७।।

चोदग आह – पुरेकम्मकडदोसो जदि दायगस्स ण भवति, साधुस्स गिण्हतो भवति, तो जदा साधू ण गेण्हति, तदा पुरेकम्मकतकम्मबंधो दायगगाहगेसु अणवट्ठितो वेगलो चेट्ठति ।

एत्थ लोइय-उदाहरणं –

इंदेण उडंकरिसिपत्ती रूववती दिट्ठा । तीए समं अधिगमं गतो । सो तओ णिग्गच्छंतो उडंकेण दिट्ठो । रुट्ठेण रिसिणा तस्स सावो दिन्नो, जम्हा ते अगमणिज्जा रिसिपत्ती अभिगया तम्हा एवं ते बंभवज्झा भवतु । तस्स बंभवज्झा उवट्ठिया, सो तस्स भीतो – कुरुखेत्तं पविट्ठो । सा बंभवज्झा कुरुखेत्तस्स पासओ भमति, सो वि तओ तब्भया ण णीति । इंदेण विणा सुण्णं इंदट्ठाणं । ततो सव्वे देवा इंदं मग्गमाणा जाणिऊण कुरुखेत्ते उवट्ठिता भणंति – एहि गच्छ देवालयं ।

सो भणाति – इओ णिग्गच्छंतस्स मे बंभवज्झा लग्गति । ताहे सा देवेहिं बंभवज्झा चतुधा विभत्ता, इक्को विभागो इत्थीणं ऋतुकाले ठिओ, बितिओ उदगे काइयं णिसिरंतस्स, ततिओ बंभणस्स सुरापाणे, चउत्थो गुरुपत्तीए अभिगमे । सा बंभवज्झा एतेसु ठिया । इंदो वि देवलोगं गओ । एवं कर्मबन्धः ब्रह्महत्यावत् वेगलः ।।४०६७।।

आचार्याह –

दव्वेण य भावेण य, चउक्कभयणा भवे पुरेकम्मे ।
सागारियभावपरिणति, ततितो भावे य कम्मे य ।।४०६८।।

दव्वतो पुरेकम्मं, ण भावतो । ण दव्वओ पुरेकम्मं, भावओ पुरेकम्मं ।

भावतो वि दव्वतो वि पुरेकम्मं । ण दव्वतो ण भावतो पुरेकम्मं ।

इयाणिं – भंगभावणाकते पुरेकम्मे "सागारियं" त्ति सुइकाण अट्ठाए ण पडिसिद्धं, गहितं, विगिंचीहामो त्ति दव्वओ पढमभंगो । भिक्खमवतरंतो चिंतेति पुरेकम्मं पि घेच्छं, ण य लद्धं, भावपरिणयस्स बितिओ भंगो । भावपरिणएण पुरेकम्मं लद्धं ततिओ । उभयधा वि सुद्धो चउत्थो पुरेकम्मं पडुच्च ।।४०६८।।

सुण्णो चउत्थभंगो, मज्झिल्ला दोण्णि तू पडिक्कुट्ठा ।
संपत्तीइ वि असती, गहणपरिणए पुरेकम्मं ।।४०६९।।

मज्झिम दो भंगा पडिसिद्धा अविसुद्धभावत्वात् । पढमो सुद्धसरिसो प्रयोजनापेक्षत्वात् विशुद्धभावत्वाच्च ।

---

१ गा० ४०८५ ।

दव्वतो संपत्ते वि पुरेकम्मे भावपुरेकम्मस्स असती असंप्राप्तिः – प्रथमभंगेत्यर्थः ।

भावतो गहणपरिणते दव्वतो असंपत्ते वि भावतो पुरेकम्मं भवति – द्वितीयभंगेत्यर्थः ।

अहवा – सव्वं पच्छद्धं वितियभंगदरिसणत्थं भणियं ॥४०९९॥

चोदग आह –

संपत्तीइ वि असती, कम्मं संपत्तिओ वि य अकम्मं ।
एवं खु पुरेकम्मं, ठवणामेत्तं तु चोदेति ॥४१००॥

"पुरेकम्मे असंपत्ते वि पुरेकम्मं भवति वितियभंगे, पुरेकम्मे संपत्ते वि पुरेकम्मे पुरेकम्मदोसो ण भवति पढमभंगे, जतो एवं ततो मे चित्तस्स पतिट्ठियं पुरेकम्मं ठवणमेत्तमेव णिप्पयोयणं पच्चविज्जति" ॥४१००॥

आचार्य आह – हे चोदग ! जो तुमे वंभवज्झादिट्ठंतो दिन्नो कम्मबंधं पडुच्च ममं पि सो चेव दिट्ठंतो इमो –

इंदेण वंभवज्झा, कया उ भीओ उ तीए नासंतो ।
सो कुरुखेत्तपविट्ठो, सा वि बहिं पडिच्छए तं तु ॥४१०१॥ कंठा
णिग्गत पुणरवि गेण्हति, कुरुखेत्तं एव संजमो अम्हं ।
जाहे ततो तु नीते, घेप्पति ता कम्मबंधेणं ॥४१०२॥

जदा कुरुखेत्ताओ णिग्गच्छइ इंदो तदा पुणो वि वंभवज्झा [1]गेण्हति । आयरिओ दिट्ठंतमुवसंहारं करेति – कुरुखेत्तसरिसो अम्हं संजमो, वंभवज्झसरिसो कम्मबंधो, जाहे संजमातो भावो णिग्गच्छति ताहे कम्मबंधेणं वज्झति, अणिग्गतो न वज्झति ॥४१०२॥

किं चान्यत् –

जे जे दोसायतणा, ते सुत्ते जिणवरेहि पडिकुट्ठा ।
ते खलु अणायरंतो, सुद्धो इतरो उ भइयव्वो ॥४१०३॥

"इयरो" त्ति समायरंतो, सो भयणिज्जो – वज्झती ण वा । का भयणा ? कारणा जयणाए अकप्पियं सेवंतो सुद्धो, इहरह त्ति णिक्कारणे कारणे य अजयणाए दप्पतो पमादेण य सेवतो ण सुज्झति ॥४१०३॥

इयाणिं पुरेकम्मादिअणेसणवज्जणगुणो विधी य संदिसिज्जति –

समणुण्णा परिसंकी, अवि य पसंगं गिहीण वारेंता ।
गिण्हंति असढभावा, सुविसुद्धं एरिसं समणा ॥४१०४॥

"समणुण्ण" त्ति अणुमती । तं च परिसंकति – "मा अणुमती भविस्सइ" त्ति, अओ वज्जेइ पुरेकम्मं । जति य पुरेकम्मकतेण हत्थेण भिक्खं गिण्हति तो गिहीसु पसंगो कतो भवति, अग्गहणे पुण पसंगो वारितो भवति – पुणो वि गिही ण करोतीत्यर्थः । एवं सव्वं अणेसणं वज्जेत्ता असढभावा साधू विसुद्धं गेण्हंति भत्तादि ॥४१०४॥

---

१ भवति इत्यपि पाठः ।

इदाणिं "[1]हत्थे" त्ति अस्य व्याख्या –

किं उवघातो हत्थे, मत्ते दव्वे उदाहु उदगम्मि ।
तिन्नि वि ठाणा सुद्धा, उदगम्मि अणेसणा भणिया ॥४१०५॥

चोदगो पुच्छति –

पुरेकम्मकते हत्थादिचउण्हं कम्मि उवघाओ दिट्ठो ?

आयरिओ भणति – हत्थमत्तदव्वा एते तिन्नि वि ठाणा सुद्धा, उदगे अणेसणा ठिता ॥४१०५॥

॥४१०५॥

अत्राचार्य उपपत्तिमाह –

जम्हा तु हत्थमत्तेहि कप्पती तेहि चेव तं दव्वं ।
अत्तट्ठिय परिभुत्तं, परिणते तम्हा दगमणेसिं ॥४१०६॥

जम्हा परिणते दगे तेहिं चेव हत्थमत्तेहिं तं चेव दव्वं अत्तट्ठियं परिभुत्तं सेसं वा कप्पइ तम्हा दगे अणेसणा ठिया। विधिपरिहरणा असणादिसु सत्तविधा भणिया ॥४१०६॥

इदाणिं "[2]फोसण" त्ति दारं एवं वत्थे पसंगेणाभिहितं –

किं उवघातो धोए, रत्ते चोक्खे सुइम्मि वि कयम्मि ।
अत्तट्ठिय-संकामिय, गहणं गीयत्थसंविग्गे ॥४१०७॥

साधूणं दाहामि त्ति मलिणं धोवति, विधिं अजाणंतो धातुमादिसु रत्तं काउं दलाति, रयगसज्जियं णिप्पंककयं च चोक्खं, असुतिमुवलित्तं धोतं सुतं ति एयावत्थं कयं णातुं साधुणा पडिसिद्धं, अप्पणा अत्तट्ठियं अन्नस्स दिन्नं, संकामियं कप्पणिज्जं भवति ॥४१०७॥

"[3]गीयत्थसंविग्गस्स" व्याख्या –

गीयत्थग्गहणेणं, अत्तट्ठियमाति गिण्हंती गीओ ।
संविग्गग्गहणेणं, तं गेण्हंतो वि संविग्गो ॥४१०८॥ पूर्ववत्

एमेव य परिभुत्ते, नवे य तंतुग्गते अधोतम्मि ।
उप्फोसिऊण देंते, अत्तट्ठिगसेविते गहणं ॥४१०९॥

गिहिणा अंगं परिमलियं परिभुत्तं, तंतुम्य उद्गतमात्रं, एते विं जया उप्फोसितुं ददाति तदा अकप्पं। अत्तट्ठियं दायगेण अप्पणा वा परिभुत्तं तदा कप्पं ॥४१०९॥

उग्गममादिसु दोसेसु, [4]सेसेसारोवणं विणा ।
गमो एसेव विण्णेयो, सोही णवरि अण्णहा ॥४११०॥

सेसेसु उग्गमदोसेसु य एसणदोसेसु विसोधिकोडिसमुत्थेसु एसेव विधी, णवरि पच्छित्तं भवति। अविसोधिकोडीए पुण अत्तट्ठियं पि ण कप्पति ॥४११०॥

---

१ गा० ४०८५ । २ गा० ४०८५ । ३ गा० ४१०७ । ४ सेसेसु + आरोवणं इति छेदः ।

इयाणिं पुरेकम्मस्स अववादो –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलन्ने ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए कप्पती कातुं ॥४१११॥

असिवादिसु अफव्वंता गिण्हंति, जयणाए पणगपरिहाणीए ॥४१११॥

जे भिक्खू गिहत्थाण वा अण्णतित्थियाण वा सीओदगपरिभोगेण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विएण वा भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

इमो सुत्तत्थो –

गिहिअण्णतित्थियाण व, सुतिमादी आहितं तु मत्तेणं ।
जे भिक्खू असणादी, पडिच्छते आणमादीणि ॥४११२॥

गिहत्था सोत्तियबंभणादी, अण्णतित्थिया परिव्वायगादी, उदगपरिभोगी मत्तओ सुई, अहवा कोई सुइवादी तेण दलेज्जा, सो य सीओदगपरिभोगी मत्तओ उल्लंककादी, तेण गेण्हंतस्स आणादिया दोसा चउलहुं च से पच्छित्तं ॥४११२॥

इमे सीतोदगपरिभोइणो मत्ता –

दगवारवद्धणिया, उल्लंकायमणिअल्ललाऊ य ।
कट्ठमयवारचड्डग, मत्ता सीतोयपरिभोगी ॥४११३॥

मत्तो दगवारगो गडुअओ आयमणी लोट्टिया कट्ठमओ, उल्लंकओ कट्ठमओ, वारओ चड्डुगं कव्वगं तं पि कट्ठमयं ॥४११३॥

एतेसु गेण्हंतस्स इमे दोसा –

नियमा पच्छाकम्मं, धोतो वि पुणो दगस्स सो सत्थं ।
तं पि य सत्थं अण्णोदगस्स संसज्जते नियमा ॥४११४॥

भिक्खप्पयाणोवलित्तं पच्छा धुवंतस्स पच्छाकम्मं । स मत्तगो असणादिलित्तो धोवितो वि उदगस्स सत्थं भवति । तं पि उदगं अन्नोदगस्स सत्थं भवति, तमुदगमंथीभूतं संसज्जते य ॥४११४॥

सीओदगभोईणं, पडिसिद्धं मा हु पच्छकम्मं ति ।
किह होति पच्छकम्मं, किहव ण होति त्ति नं सुणसु ॥४११५॥

जेण मत्तएण सच्चित्तोदगं परिभुज्जति तेण भिक्खग्गहणं पडिसिद्धं ।

सीसो पुच्छति –

"कहं पच्छाकम्मं भवति न भवति वा ?

आचार्य आह – सुणसु –

संसट्ठमसंसट्ठे, सावसेसे य निरवसेसे य ।
हत्थे मत्ते दव्वे, सुद्धमसुद्धे तिगट्ठाणा ॥४११६॥

संसट्ठे हत्थे, संसट्ठे मत्ते, सावसेसे दव्वे एएसु तिसु पदेसु अट्ठ भंगा कायव्वा । विसमा सुद्धा समा असुद्धा ॥४११६॥

भंगेसु इमा गहणविधी –

पढमे भंगे गहणं, सेसेसु वि जत्थ सावसेसं तु ।
अण्णेसु तु अग्गहणं, अलेवसुक्खेसु वा गहणं ॥४११७॥

"अन्नेसु" त्ति – समेसु भंगेसु । जदि देयं दव्वं सुक्खं अलेवकडं, सुक्खं मंडगकुम्मासादी, तो गिज्झं, पच्छाकम्मस्स अभावात् ॥४११७॥

वितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥४११८॥

पूर्ववत् अनुसरणीया ॥४११८॥

[1]जे भिक्खू वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्पलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१६॥

वप्पाई ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाइ ताणी, अभिधारेंतस्स आणादी ॥४११९॥

वप्पो केदारो, परिहा खातिया, णगरादिसु पागारो, रन्नोदुवारादिसु तोरणा, णगरदुवारादिसु अग्गला, तस्सेव पासगो रहसंठितो पासातो, पव्वयसंठितं उवरुवरिभूमियाहिं वट्टमाणं कूडागारं, कूडेवागारं कूडागारं पर्वते कुट्टितमित्यर्थः । णूम गिहं भूमिघरं, रुक्खो च्चिय गिहागारो रुक्खगिहं, रुक्खे वा घरं कडं, पर्वतः प्रसिद्धः, मंडवो वियडः, थूमः प्रसिद्धः, पडिमा गिहं चेतियं, लोहारकुट्टी आवेसणं, लोगसमवायठाणं आयतणं, देवकुलं पसिद्धं, सदस्यः स्थानं सभा, गिम्हादिसु उदगप्पदाणठाणं पवा, जत्थ भंडं अच्छति तं पणियगिहं, जत्थ विक्काइ सा साला ।

अहवा – सकुड्डं गिहं, अकुड्डा साला, एवं जाणसालाओ वि, जाणा सिविगादि जत्थ णिक्खित्ता, गुहा प्रसिद्धा, एवं दब्भो पव्वगो विदब्भसःरिच्छो, इंगाला जत्थ डज्झंति, कट्ठा जत्थ फट्टंति, घडिज्जंति वा, सवसयणं सुसाणं, गिरिगुहा कंदरं, असिवसमणट्ठाणं संति, सेलो पव्वतो, गोसादि ठाणं उवट्ठाणं,

1 — चूर्ण्यवलोकनेन प्रतिभाति यत् चूर्णिकारसमक्षोऽन्यदेव सूत्रमासीत् ।

भवणागारं वणरायमंडियं भवणं, तं चेव वणविवज्जियं गिहं, चक्खुरिन्द्रियप्रीत्यर्थं दर्शनप्रतिज्ञया गच्छंति, तत्थ गच्छंतस्स संजमविराधणा, दिट्ठे य रागदोसादयो ।

इमे दोसा –

कम्मपसत्थपसत्थे, रागं दोसं च कारए कुज्जा ।
सुकयं सुअज्जियं ति य, सुट्ठु वि विणिओइयं दव्वं ॥४१२०॥

कारगो सिप्पी । तेणं सुप्पसत्थे कते रागं करेति, अप्पसत्थे दोसं ।

अहवा भणति – देवकुलाति सुकयं एत्थ अणुमती ।

अहवा जेण कारवितं तं भणाति – सुट्ठु अज्जियं तेण दव्वं, सुट्ठाणे वा णिउत्तं, एवं अणुमती मिच्छत्तुववूहा ॥४१२०॥

वक्केहि य सत्थेहि य, परलोयगता वि ते सुणज्जंति ।
निउणाऽनिउणा य कयी, कम्माण व कारका सिप्पी ॥४१२१॥

णिउणाऽणिउणत्तं कवीण वक्केहिं णज्जति, सिप्पियाणं कम्मेहिं णज्जति ॥४१२१॥

विणट्ठवत्थुं दट्ठुं भणति –

दुस्सिक्खियस्स कम्मं, धणियं अपरिक्खिओ य सो आसी ।
जेण सुहा वि णिउत्तं, सुवीयमिव ऊसरे मोल्लं ॥४१२२॥

कारावगो वा धम्माधम्मे सिप्पिसुए वा अपरिक्खगो आसि । कहं सो अपरिक्खगो आसि ? पच्छद्धं भणाति ॥४१२२॥

अंतरा गयस्स वा इमे दोसा –

दुविहा तिविहा य तसा, भीता वाड सरणाणि कंखेज्जा ।
णोल्लेज्ज तगं चऽण्णं, अंतराए य जं चऽण्णं ॥४१२३॥

दुविधा – जलचरा थलचरा य । तिविहा – जलथलखहचारिणो य, ते भीता, "वाड" ति-सद्दयं देजा, जलयरस्स जलं सरणं, बिलं डोंगरं वा थलचरस्स, खहचरस्स आगासं, कंखेज्जा अभिलाषगरणं वा गच्छतेत्यर्थः । तं वा साधुं मन्नं वा णोल्लेज्ज । तेसिं वा चरंताणं अंतराइयं करेति । "जं चऽण्णं" ति-ते णस्संता जं काहिंति ॥४१२३॥

इयाणि अववादः –

वितियपदमणप्पज्झे, अहिधारे अकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥४१२४॥ कंठा

"कज्जेसु बहुप्पगारेसु" अस्य व्याख्या –

तत्थ गतो होज्ज पहू, ण विणा तेण वि य सिज्झते कज्जं ।
संभमपडिणीयभए, ओसण्णाइण्णगेलण्णे ॥४१२५॥

पभू रायादि, कुल-गण-संघकज्जं अग्गिमादिसंभमे पडिणीयभया वा गच्छति। ओसन्नं ति साधूणं तत्थ गमणं अविरुद्धं। आइण्णं ति साधवो तत्थेव आवासेंति। गिलाणस्स वा पत्थभोयणादिणिमित्तं गच्छति ॥४१२५॥

तत्थिमा जयणा –

तेसुं दिट्ठिमबंधंतो, गयं वा पडिसाहरे।
परस्साणुवरोहेणं, देहंतो दो वि वज्जए ॥४१२६॥

पधाणप्पधाणेसु दिट्ठिं ण बंधति, सहसा वा गयदिट्ठिं पडिसाहरति, रायादि अणुयत्तिओ जोएंतो दो वि रागदोसे वज्जेइ ॥४१२६॥

जे भिक्खू कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा पव्वयविदुग्गाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

कच्छादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४१२७॥

चक्खुदंसणपडियाए गच्छंतो चउलहुं। इक्खुमादि कच्छा, गहणाणि काननानि, (दवियं वीयं,) णूमं भिन्नं, वणाणि उज्जाणाणि वा, एगजातीयअणेगजाईयरुक्खाउलं गहणं वणविदुग्गं, एगो पव्वतो, बहूएहिं पव्वतेहिं पव्वयविदुग्गं। [1]कूवो अगडो, तडाग-दह-णदी पसिद्धा, समवृत्ता वापी, चाउरस्सा पुक्खरणी, एताओ चेव दीहियाओ, दीहिया सारणी वावि पुक्खरणीओ वा मंडलिसंठियाओ, अन्नोन्नकवाडसंजुत्ताओ गुंजालिया भन्नंति।

अन्ने भणंति – णिक्का अणेगभेदगता गुंजालिया। सरपंती वा एगं महाप्रमाणं सरं, ताणि चेव बहूणि पंतीठियाणि पत्तेयवाहुजुत्ताणि सरपंती, ताणि चेव बहूणि अन्नोन्नकवाडसंजुत्ताणि सरसरपंती। तेसु गच्छंतस्स ते चेव दोसा, तं चेव य होति बितियपदं ॥४१२७॥

जे भिक्खू गामाणि वा नगराणि वा खेडाणि वा कव्वडाणि वा मडंबाणि वा दोणमुहाणि वा पट्टणाणि वा आगाराणि वा संबाहाणि वा सन्निवेसाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

गामादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४१२८॥

गच्छंतस्स दप्पओ चउलहुं। करादियाण गम्मो गामो, ण, करा जत्थ तं णगरं, खेडं णाम धूलीपागारपरिक्खित्तं, कुणगरो कव्वडं, जोयणब्भंतरे जस्स गामादी णत्थि तं मडंबं, सुवण्णादि आगारो, पट्टणं दुविहं – जलपट्टणं थलपट्टणं च, जलेण जस्स भंडमागच्छति तं जलपट्टणं इतरं थलपट्टणं, दोण्णि मुहा जस्स तं दोण्णिमुहं जलेण वि थलेण वि भंडमागच्छति, आसमं णाम तावसमादीणं, सत्थवासणत्थाणं सण्णिवेसं, गामो

१ इतोऽग्रेतना चूर्णिः प्रस्तुतसूत्रसम्बद्धा नास्तीति विचारणीयम्।

वा पिंडितो सन्निविट्ठो, जत्तागतो लोगो सन्निविट्ठो सण्णिवेसं भण्णति, अण्णत्थ किसिं करेत्ता अन्नत्थ वोढुं वसंति तं संबाहं भण्णति । घोसं गोउलं. वणियवग्गो जत्थ वसति तं णेगमं अंसिया गामतितिदभागादी. भंडगा घणा जत्थ भिज्जंति तं पुडाभेयणं, जत्थ राया वसति सा रायहाणि ॥४१२८॥

जे भिक्खू गाम-महाणि वा णगर-महाणि वा खेड महाणि वा कव्वड महाणि वा
मडंब-महाणि वा दोणमुह-महाणि वा पट्टण-महाणि वा
आगार-महाणि वा संवाह-महाणि वा सन्निवेस-महाणि वा
चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

गाममहादी ठाणा, जत्तियमेत्ताउ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसू, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१२९॥

गामे महो गाममहो – यात्रा इत्यर्थः ॥४१२९॥

जे भिक्खू गाम-वहाणि वा णगर-वहाणि वा खेड-वहाणि वा कव्वड-वहाणि वा
मडंब-वहाणि वा दोणमुह-वहाणि वा पट्टण-वहाणि वा
आगर-वहाणि वा संवाह-वहाणि वा सन्निवेस-वहाणि वा
चक्खुदंसण-पडियाए अभिसंधारेइ
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

गामवहादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसू, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१३०॥

ग्रामस्स वधो ग्रामवधो – ग्रामघातेत्यर्थः ॥४१३०॥

जे भिक्खू गाम-पधाणि वा नगर-पधाणि वा खेड-पधाणि वा कव्वड-पधाणि वा
मडंब-पधाणि वा दोणमुह-पधाणि वा पट्टण-पधाणि वा आगर-पधाणि वा
संवाह-पधाणि वा सन्निवेस-पधाणि वा चक्खुदंसणपडियाए
अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

गामपहादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्तं ।
चक्खुपडियाए तेसू, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१३१॥

गामस्स पहो ग्राममार्गेत्यर्थः ॥४१३१॥

जे भिक्खू आस-करणाणि वा हत्थि-करणाणि वा उट्ट-करणाणि वा
गोण-करणाणि वा महिस-करणाणि वा सूयर-करणाणि वा

चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

आसकरणादि ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४१३२॥

आससिक्खावणं आसकरणं एवं सेसाणिवि ॥

जे भिक्खू आस-जुद्धाणि वा हत्थि-जुद्धाणि वा उट्ट-जुद्धाणि वा
गोण-जुद्धाणि वा महिस-जुद्धाणि वा सूयर-जुद्धाणि वा चक्खुदंसणपडियाए
अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

हयजुद्धादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४१३३॥

हयो अश्वः तेषां परस्परतो युद्धं, एवमन्येषामपि । गजादयः प्रसिद्धा । शरीरेण विमध्यमः करटः, रक्तपादः चटकः, शिखिधूम्रवर्णः लावकः, अहिगादी पसिद्धा, अट्ठियपच्चनियादिकारणेहिं जुद्धं । सव्वसंधि-विक्खोहणं णिजुद्धं । पुव्वं जुद्धेण जुज्झिउं पच्छा संधीओ विक्खोभिज्जंति जत्थ तं जुद्धं णिजुद्धं ॥४१३३॥

जे भिक्खू उज्जूहिय-ठाणाणि वा हयजूहिय-ठाणाणि वा गयजूहिय-ठाणाणि वा
चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

णिज्जूहितादि ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४१३४॥

गावीओ उज्जूहिताओ अडविहुत्तीओ उज्जुहिज्जंति ।

अहवा – गोसंखडी उज्जूहिगा भन्नति, गावीणं णिव्वेढगा परिमाणादि णिज्जूहिगा, वधुवरपरि-आणं ति मिहुज्जूहिया, वम्मियगुडिएहिं हतेहिं वलदरिसणा हयाणीयं, गयेहिं वलदरिसणा गयाणीयं, रहेहिं वलदरिसणा रहाणीयं, पाइक्कबलदरिसणा पाइक्काणीयं, चउसमवायो य अणियदरिसणं । चोरादि वा वज्झं णीणिज्जमाणं पेहाए ॥४१३४॥

जे भिक्खू [1]आघाय-ठाणाणि वा अक्खाइय-ठाणाणि वा माणुम्माणिय-ठाणाणि वा
महया हय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पाइयट्ठाणाणि वा
चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

आघातादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४१३५॥

---

१ पं० जिनविजयसंपादितमूलपुस्तके 'आघायठाणाणि वा' स्थाने 'अभिसेयठाणाणि' इति पाठः ।

अक्खाणगादि आघादियं, एगस्स वलमाणं अन्नेण अणुमीयत इति माणुम्माणियं जहा धन्ने कंवलसंवला ।अथवा – माणपोताओ माणुम्माणियं । विज्जादिएहिं रुक्खादी णमिज्जंतीति णेम्मं । अथवा – णम्मं णट्टं सिक्खाविज्जंतस्स अंगाणि णमिज्जंति । गहियं कव्वा । अथवा – वत्थपुप्फचम्मादिया भज्जं रुक्खादिभंगो दव्वविभागो वा । कलहो वातिगो जहा सिववीणं रायादीणं वुग्गहो । पासा आदी जूया, सभादिसु अणेगविहा जणवाया ॥४१३५॥

जे भिक्खू कट्ठ-कम्माणि वा चित्त-कम्माणि वा लेव-कम्माणि वा पोत्थ-कम्माणि वा दंत-कम्माणि वा मणि-कम्माणि वा सेल-कम्माणि वा गंठिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघातिमाणि वा पत्तच्छेज्जाणि वा वाहीणि वा वेहिमाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

कट्ठकम्मादि ठाणा, जतियमेत्ताउ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१३६॥

कट्ठकम्मं कोट्टिमादि, पुस्तकेषु च वस्त्रेषु वा पोत्थं, चित्तलेपा प्रसिद्धा, पूयादिया पुप्फमालादिपु गंठिमं जहा आणंदपुरे, पुप्फपूरगादिवेढिमं प्रतिमा, पूरिमं स च [1]कक्षुकादिमुकुटसंत्रविसु वा संवाडिमं महदाख्यानकं वा महताहतं ।

अहवा – महता शब्देन वादित्रमाहतं वाइता तंती, अन्यद्वा किंचित्, हत्थतलाणं तालो कडंबादि, वादित्रसमुदयो त्रुटिः, जस्स मुतिगस्स घणसद्दसारिच्छो सद्दो सो घणमुइंगो पटुणा सद्देण वाइतो सव्वं एवेन्द्रियार्थः चक्षुः ॥४१३६॥

[2]जे भिक्खू डिंवाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगामाणि वा कलहाणि वा वोलाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

[3]जे भिक्खू इत्थीणि वा" इत्यादि –

इत्थीमादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१३७॥

आसयंते सत्थावत्थाणि अच्छंति ।

अहवा – अश्नंति भुंजंतीत्यर्थः । चोदमाणा गेंदुगादिसु रमंते मज्जपानअंदोलगादिसु ललंते जलमध्ये

---

१ कंचुकादिसु कट्टसंविसु वा, इत्यपि पाठः । २ नास्त्यस्य सूत्रस्य भाष्ये चूर्णौ च किंचिदपि विवरणम् ।
३ सम्प्रति समुपलब्धसूत्रपुस्तकादर्शेषु नेदं सूत्रं, किन्तु अष्टाविंशतितमसूत्रान्तर्गतमाभाति । चूर्ण्यभिप्रायेण अष्टाविंशतितमं सूत्रमेवं विभज्यते –
जे भिक्खू इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा (जाव) सातिज्जति ।

क्रीडा, नष्टमृतादिषु कंदणा, मोहनोब्भवकारिकाक्रिया मोहणा मेहुणासेवणंता, सेसपदा [1]गंथपसिद्धा ॥४१३७॥

समवायादिठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसु, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१३८॥

[2]जे भिक्खू विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा मोहंताणि वा विउलं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परिभायंताणि वा परिभुंजंताणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

विरूवरूवादि ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसू, दोसा ते तं च वितियपदं ॥४१३९॥

अणेगरूवा विरूवरूवा, महंता महा महामहा, जत्थ महे बहु रयो जहा भंसुरुलाए ।

अहवा – जत्थ महे बहू बहुरया मिलंति जहा सरक्खा सो बहुरयो भण्णति । तालायरबहुला बहुणडा [3]गलागलपुत्तपुञ्जे वेगडंभगा य बहुसढा अव्वत्तभासिणो बहुगा जत्थ महे मिलंति सो बहुमिलक्खू महो, ते य मिलक्खू दब्भमीलादि ॥४१३८॥

जे भिक्खू इहलोइएसु वा रूवेसु, परलोइएसु वा रूवेसु
दिट्ठेसु वा रूवेसु, अदिट्ठेसु वा रूवेसु
सुएसु वा रूवेसु, असुएसु वा रूवेसु
विन्नाएसु वा रूवेसु, अविन्नाएसु वा रूवेसु
सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ
सज्जंतं रज्जंतं गिज्झंतं अज्झोववज्जंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२९॥

इहलोगादी ठाणा, जत्तियमेत्ता य आहियासुत्ते ।
चक्खुपडियाए तेसू, ते दोसा तं च वितियपदं ॥४१४०॥

इहलोइया मणुस्सा, परलोइया हयगयादि, पुव्वं पच्चक्खं दिट्ठा । अदिट्ठा देवादी । मणुण्णा जे इट्ठा । अमणुण्णा जे अणिट्ठा । सज्जणादी पदा एगट्ठिया ।

अहवा – आसेवणभावे सज्जणता, मणसा पीतिगमणं रज्जणता, सदोसुवलद्धे वि अविरमो गेधी, अगम्मगमणासेवणे वि अज्जुववातो ॥४१३६॥

---

१ एषा भाष्यगाथा श्री विजयप्रेमसूरिभिः स्वसम्पादित टाइप अंकितप्रतौ नाहृता । गाथा संसूचितं सूत्रमपि, साम्प्रतसमुपलब्धसूत्रप्रस्तकादशेषु नोपलभ्यते । २ चूर्णि दृष्ट्या सूत्रमिदं, जे भिक्खू विरूवरूवाणि वा इत्यादिरूपं प्रतीयते । ३ गलागत्तपुजावक डिंभगा, इत्यपि पाठः ।

जे भिक्खू पढमाए पोरिसीए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेइ, उवाइणावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

पुव्वाए भत्तपाणं, घेत्तूणं जे उवादिणे चरिमं ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४१४१॥

दिवसस्स पढमपोरिसीए भत्तपाणं घेत्तुं चरिमं ति चउत्थपोरिसी तं जो संपावेति तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा । आहच्च कदाचित् कालप्पमाणं अभिहितं जं तस्स अतिक्कमणं तं उवातिणावितं भन्नति । सिया अवधारणे, भुंजंतस्स वि चतुलहुं, जिणकप्पियस्स अतिक्कमणे भुंजणे य चउगुरुं, चिट्ठतु ताव चउत्थ-पोरिसी, पढमातो बीया चरिमा, बितियाओ ततिया चरिमा, ततियाओ चउत्थी चरिमा ॥४१४१॥

एवं पुव्वा वि भाणियव्वा, जतो भन्नति –

बितियातो पढम पुव्वा, उवादिणे चउगुरुं च आणादी ।
दोसा संचय संसत्त दीहसाणे य गोणे य ॥४१४२॥

बितियपोरिसिं पडुच्च पढमा पुव्वा भन्नति ततियं पडुच्च बितिया पुव्वा, चउत्थस्स ततिया पुव्वा । एवं जत्थ गहणं तत्थेव भुंजियव्वं, जो अतिक्कामेति तस्स चउगुरुं चउलहुं आणादिया य दोसा ।

इमे य संचयाइया ॥४१४२॥

[1]अगणि गिलाणुच्चारे, अब्भुट्ठाणे पाणे पाहुणे निरोहे य ।
सज्झायविणयकाइय, पयलंतपलोट्टणे पाणा ॥४१४३॥

"[2]संचयसंसत्तस्स" व्याख्या –

णिस्संचया उ समणा, संचयी गिही तु होंति धारेंता ।
संसत्तअणुवभोगा, दुक्खं च विगिंचितुं होति ॥४१४४॥

गृहीत्वा धरणप्रसंगे संचयस्तत्र गृहीवद् भवति, चिरं च अच्छंतं संसज्जति, संसत्तं च दुक्खं विगिंचिज्जति, परिठावेंतस्स य विराधणादिणिप्फण्णं, भारवि (द्दि) यावडो दीहसाणेहिं डसिज्जति, गोणेण वा आहम्मति, एत्थ आयविराहणाणिप्फण्णं चउगुरुं । अह तब्भया णिक्खिवति तो चउलहुं । परितावणादी जाव चरिमं णेयव्वं । आउलभावे भाणभेदं करेज्ज । तप्पडिबंधे अगणिणा वा डज्झति उवकरणं वा, जं च उवधिणा विणा पावति । गिलाणवेयावच्चं कातुं ण तरति, उव्वत्तणादीयं अकीरंते य परितावणादियं । अह णिक्खिवंति तो णिक्खवणदोसा । उच्चारपासवणमत्तगं कहं परिट्ठवेत्तु धरेतु वा, गुरु पाहुणगस्स वा अब्भुट्ठाणं ण करेति । अह करेति तो वियावडो भाणभेदं करेज्ज, भरियभायणधरणे गातणिरोधो असमाधी सज्झायं ण पट्ठवेति, आयरियादीण विणयं ण करेति, काइयणिरोधो, अह गहितेण वोसिरति तो उड्डाहो, उंघंतस्स वा पलोटेज्ज, तत्थ पाणविराहणा हवेज्ज ॥४१४४॥

१ नेयं चूर्णौ गाथा । २ गा० ४१४२ ।

एमेव सेसएसु वि, एगतरविराहणा उभयतो वा ।
असमाहि विणयहाणी, तप्पच्चयणिज्जराए य ॥४१४५॥

"[1]दीहसाणादीएसु दारेसु जहा संचयसंसत्ता तहा सपायच्छित्ता भणियव्वा । साधुस्स भायणस्स वा उभयतो वा ।

अहवा – "एगतरस्स" त्ति आयसंजमउभयविराधणा वा भारक्कमणे असमाधी गुरुमादीण य विणयहाणिं करेज्ज, अकरेंतो स णिज्जरालाभं ण लभेज्ज ॥४१४५॥

पच्छित्तपरूवणया, [2]एतेसिं ठवेंतए य जे दोसा ।
गहियकरणे य दोसा, दोसा य परिट्ठवेंतस्स ॥४१४६॥

सव्वेसु संचयादीसु दारेसु पच्छित्तपरूवणा कायव्वा । ठवेंतस्स ठवणा दोसा । गहितेणं किच्चाइं करेंतस्स भायणभेदादि दोसा । पयलंतपरिट्ठवेंतस्स अंतरादिया दोसा ॥४१४६॥

अतो जम्हा धरिते एत्तिया दोसा –

तम्हा उ जहिं गहियं, तहि भुंजणे वज्जिया भवे दोसा ।
एवं सोहि ण विज्जति, गहणे वि य पावते वितियं ॥४१४७॥

जहिं चेव पोरिसीए गहियं तहिं चेव भोत्तव्वं ।

एवं भणिते चोदगाह – "तुज्झं सोधी णत्थि, जतो गहणे चेव वितिया पोरिसी पावइ" ॥४१४७॥

एवं नोदगे भणिते गुरू भणति –

एवं ता जिणकप्पे, गच्छम्मि चउत्थियाए जे दोसा ।
इतरासु किं न होंति, दव्वे सेसम्मि जयणाए ॥४१४८॥

एयं जिणकप्पियाणं भणियं, गच्छवासीण पढमाए गहियं यदि चरिमं संपावति तो संचयादीया सव्वे दोसा संभवंति ।

पुणो चोदगो भणति – "वितियततियासु धरिज्जंते असणादी दव्वे तच्चेव संसत्तादी दोसा किं ण भवंति" ?

आयरिओ भणति – दव्वे जिमियसेसम्मि उद्धरिए अणुद्धरिए वा कारणे धरिज्जंते जयणाए धरिज्जति, जयणाए धरेंतस्स जदि दोसा भवंति तहावि सुज्झति, आगमप्रामाण्यात् ॥४१४८॥

अतिरित्तग्गहणं इमं कारणे –

पडिलेहणा बहुविहा, पढमाए कता विणासिमविणासी ।
तत्थ विणासिं भुंजेऽजिण्णपरिण्णे य इतरं पि ॥४१४९॥

अभिगमसड्ढेण दाणसड्ढेण वा अन्नतरे पगते बहुणा बहुविधेण भक्खभोज्जेण पडिलाभणा कया पढमाए पोरिसीए, तं च दव्वं दुविधं – विणासि खीरादियं, अविणासि [3]ओदणं, णेहखज्जगादी य । णमोक्कार-

---

[1] गा० ४१४२ । [2] तेसु ठवेंतस्स ठवणि जे दोसा इत्यपिपाठः । [3] उसिणोदगं ।

पो रेसित्ता विणासि दव्वं सव्वं भुंजति । सेससाधूणं जति अजिन्नं परिण्णि वा अभत्तट्ठी वा अधवा - तीए विगतीए पच्चक्खाणं कयं तो इयरं पि अविणासि दव्वं सव्वं भुंजति ॥४१४९॥

अस्यैवार्थस्य व्याख्या -

जति पोरिसिइत्ता तं, गमेंति तो सेसगाण ण विसज्जे ।
अगमित्ताऽजिण्णे वा, धरेंति तं मत्तगादीसुं ॥४१५०॥

सेसा पुरिमड्ढिया, तं तेसिं ण दिज्जति, जदि णमोक्कारइत्ता सव्वं ण गमेति, सव्वेसिं अजिन्ने वा ताहे तं मत्तगादिसु छोढुं धरेंति ण दोसो ॥४१४९॥

अहवा इमेण कारणेणं धरिज्जेज्ज -

तं काउं कोति ण तरति, गिलाणमादीण घेत्तु पुव्वण्हे ।
नाउं व बहुं वितरति, जहा समाहि चरिमवज्जं ॥४१५१॥

तं असणादियं पेसलं परिभुत्तं गिलाणवेयावच्चं उव्वत्तणादि काउं ण तरति, बहुं परिट्ठावणियं लद्धं, सवेलं च भोत्तुकामा ताहे चरिमं पोरिसिं वज्जेत्ता वितियततियाए य गुरू "वितरंति" धरणमनुजानंतीत्यर्थः ॥४१५१॥

तम्मि धरिज्जंते संसज्जणभया इमा विही -

संसज्जिमेसु छुब्भति, गुलादि लेवाड इतर लोणादी ।
जं च गमिस्संति पुणो, एमेव य भुत्तसेसे वि ॥४१५२॥

लेवाडे गुलो छुब्भति, अलेवाडे लोणं, "जं च गमिस्संति पुणो" वितियततियवाराए भुंजंता णिट्ठवेहिंति तम्मि एसा विही, विइयतइयवारासु भुत्तसेसुद्धरिए संसज्जणभया एसेव लोणगुलादिया विधी ॥४१५२॥

एवमुक्ते पुनरप्याह चोदकः -

चोदेति धरिज्जंते, जे दोसा गिण्हमाणे किं न सिया ।
उस्सग्गवीसमंते, उब्भामादी उदिक्खंते ॥४१५३॥

जहा धरणे दोसा तहा गेण्हणे वि साणगोणमादीया अणेगविधा दोसा, काउस्सग्गकरणकाले वि दोसा, वीसमंतस्स वि ते चेव दोसा, उब्भामगो भिक्खायरियगतो उदिक्खिवंतस्स ते चेव दोसा ॥४१५३॥

एवं अवायदंसी, थूले वि कहं ण पासह अवाए ।
हंदि हु णिरंतरो यं, भरितो लोगो अवायाणं ॥४१५४॥

स एव चोदगो भणति - धरिज्जंतेसु तुब्भे एवं अवाए पेक्खह, भिक्खादि-अडणे गोणादिए थूले अवाए कहं ण पेक्खह? हंदीत्यामंत्रणे प्रत्यक्षभावदर्शने वा, अणेगावातभरियं लोयं पश्य इत्यर्थः ॥४१५४॥

कहं ? उच्यते -

भिक्खातिवियारगते, दोसा पडिणीयसाणमादीया ।
उप्पज्जंते जम्हा, न हु लब्भा फंदिउं एवं ॥४१५५॥ कंठा

चोदक एवाह –

अहवा आहारादी, न चेव सययं हवंति वेत्तव्वा ।
नेवाहारेयव्वं, तो दोसा वज्जिता होंति ॥४१५६॥

सततं णाहारेयव्वं, चउत्थछट्ठादि काउं सव्वहा असत्तो आहारेज्ज ।

अहवा – सव्वहा अणाहारेंतेण अवाया वज्जिया भवंति ॥४१५६॥

आयरिओ भणति –

भणाति सज्झमसज्झं, कज्जं सज्झं तु साहए मइमं ।
अविसज्झं साहेंतो, किलिस्सति न तं च साहेइ ॥४१५७॥

कज्जं दुविहं – साध्यमसाध्यं च । सज्झं पयोगसा सावेंतो ण किलिस्सति साहेति य कज्जं । असज्झं सावेंतो किलिस्सति, ण य तं च कज्जं साधेति, मृत्पिण्डपटादि साधनवत् ॥४१५७॥

जदि एतविप्पहूणा, तवनियमगुणा भवे निरवसेसा ।
आहारमादियाणं, को नाम परिग्गहं कुज्जा ॥४१५८॥ कंठा

मोक्खपसाहणहेउं, णाणादी तप्पसाहणे देहो ।
देहट्ठा आहारो, तेण तु कालो अणुण्णातो ॥४१५९॥

मोक्खहेउं णाणदंसणचरणा, तेसिं णाणादियाण पसाहणे देहो इच्छिज्जइ । देहधारणट्ठा आहारो इच्छिज्जति । तस्स य आहारस्स गहणे धारणे य कालो अणुण्णातो ॥४१५९॥

काले उ अणुण्णाते, जइ वि हु लग्गेज्ज तेहि दोसेहिं ।
सुद्धो उवातिणिंतो, लग्गति उ विवज्जए परेणं ॥४१६०॥

कालो अणुण्णाओ, आदिल्ला तिन्नि पहरा बीयाइं वा तिन्नि पहरा । तम्मि अणुन्नाए काले जति वि दोसेहिं फुसिज्जइ तहावि अपच्छित्ती । अणुण्णातकालातो परेण अतिक्कामेंतो असंतेहिं वि दोसेहिं सपच्छित्ती भवति ॥४१६०॥

पढमाए गिण्हिऊणं, पच्छिमपोरिसि उवातिणे जो उ ।
ते चेव तत्थ दोसा, बितियाए जे भणितपुव्विं ॥४१६१॥

पढमपोरिसिगहियं बितियं पोरिसिं उवाइणावेंतस्स जे पुव्वं दोसा भणिया ते चेव दोसा पढमगहियं चउत्थपोरिसिं उवाइणावेंतस्स । तं उवाइणावियं परिट्ठवित्ता असंथरंतो अन्नं घेत्तुं भुंजति काले पहुप्पंते । अध कालो ण पहुप्पति, तो तं चेव जयणाए भुंजेति । जयणा पणगपरिहाणीए । अन्नं अलब्भंते पहुप्पंते वि काले तस्सेव परिभोगः ॥४१६१॥

इमे अतिक्कमेकारणा –

[1]आहच्चुवातिणावित बितिगिंचणपरिन्नऽसंथरंतम्मि ।
अण्णस्स गेण्हणं भुंजणं च जतणाए तस्सेव ॥४१६२॥

---

१. चूर्णावियं गाथा नाङ्गीकृता ।

सज्झा-लेवण-सिव्वण,-झायण-परिक्कम्मसङ्करातीहिं ।
सहस अणाभोगेणं, उवातितं भोज्ज जा चरिमं ॥४१६३॥

सज्झाए अतिउवयोगा विस्सरियं, एवं लेवपरिकम्मणं करेंतस्स, उवधिसिव्वणं, आलजालं अण्णे गविहाइं सदेसकहं तेसिं दूरं, एतेण्चेव व्यग्रस्य सहसात्कारो अत्यंतविस्मृतिरनाभोगो । वितियपदे इमेहिं कारणेहिं उवातिणाविज्जउ, उवातिणावितं वा भुंजेज्ज ॥४१६३॥

भयगेलण्णद्धाणे, दुब्भिक्खतवस्सिकारणज्जाए ।
कप्पति अतिक्कामेउं, कालमणुण्णात आहारो ॥४१६४॥

बोहिगादिभएण णस्संतो लुक्को वा णिब्भयं जाव भवति ताव धरेति, गिलाणवेयावच्चं करेंतो, अद्धाणे वा सत्थवसगो, दुब्भिक्खे वा बहु अडंतो ॥४१६४॥

"[1]तवस्से" त्ति अस्य व्याख्या –

संखुण्णतो तवस्सी, एगट्ठाणम्मि न तरती भोत्तुं ।
तं च पढमाए लब्भति, सेसासु य दुल्लभं होति ॥४१६५॥

विकिट्ठे तवे कते तवस्सिणा संखुत्ता अंतो पढमपोरिसिगहियं सव्वं ण तरति भोत्तुं, असमाही वा भवति, उस्सूरे य अन्नं ण लब्भेति, ताहे तं चेव धरेइ जाव चरिमं, भुंजति य ।

"[2]कारण जाते" त्ति अस्य व्याख्या – कुलादिकज्जेहिं वावडो धरेति भुंजति वा ॥४१६५॥

आहारो व दवं वा, पढमागहितं तु सेसिगा दुलहं ।
अतरंततवस्सीणं, बालादीणं च पाओग्गं ॥४१६६॥

अतरंतादियाण अट्ठा धरेति जाव चरिमा । एवमादिएहिं कारणेहिं कप्पति अतिक्कमेउं कालं अणुण्णातातो परेणं आहारेतुं च कप्पतीत्यर्थः ॥४१६६॥

जे भिक्खू परं अद्धजोयणमेराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवातिणावेइ, उवातिणावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

परमद्धजोयणातो, असणादी जे उवातिणे भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४१६७॥

दुगाउयं अद्धजोयणं, जो तओ खेत्तप्पमाणाओ परेण असणाइ संकामेइ तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ॥४१६७॥

आचार्यः – निश्चयोत्सर्गमाह –

परमद्धजोयणातो, उज्जाणपरेण चउगुरू होंति ।
आणादिणो य दोसा, विराधणा संजमाताए ॥४१६८॥

---

१ गा० ४१६४ । २ गा० ४१६४ ।

अच्छतु ता परमद्धजोयणं, अणुण्णाणा परेणं जो उवाइणावेति तस्स चउगुरुगा आणादिया य दोसा, आयसंजमविराधणा य दुविधा भवति ॥४१६८॥

सा इमा –

भारेण वेयणाए, न पेहए खाणुमाइ अहिघातो ।
इरिया-पगलिय-तेणग-भायणभेदेण छक्काया ॥४१६९॥

भारक्कंतो वेयणाभिभूतो खाणुमादी ण पेच्छति, अस्सादीहि वा अभिहम्मइ ।

अथवा – भारक्कंतो अणुवउत्तो वडसालादिणा सिरंसि घट्टिज्जइ, इरियं वा ण विसोधेति, दूरवहणेण पगलितं पुढवादि विराधणा, तेणेहि वा पुट्ठेगो हरिज्जति, खुहापिवासत्तस्स भायणंपि भिज्जेज्ज, तत्थ छक्कायविराधणासंभवो, भायणभेदे अप्पणो परस्स य हाणी, जे य दोसा तमावज्जति सव्वं ॥४१६९॥

चोदगाह –

उज्जाणा आरेणं, तहियं किं ते ण जायते दोसा ।
परिहरिता ते दोसा, जति वि तहिं सुत्तमावज्जे ॥४१७०॥

पुव्वद्धं कंठं । आचार्याह – पच्छद्धं – अणुभाए, जति वि दोसे आवज्जति तहावि णिद्दोसो ॥४१७०॥

चोदकाह –

एवं सुत्तं अफलं, सुत्तणिवातो इमो उ जिणकप्पे ।
गच्छम्मि अद्धजोयण, केसिं ची कारणे तं तु ॥४१७१॥

उज्जाणातिक्कमे जदि भारादिए दोसे भणह, तो "परमद्धजोयणातो" त्ति जं सुत्तं एयं णिरत्थयं कहं (न) भवतु ?

आयरिओ भणति – "जं अणुण्णाणं णातिक्कमति" इमो सुत्तत्थो जिणकप्पे । "जो पुण अद्धजोयणमेर" त्ति सुत्तत्थो एयं गच्छवासियाणं ।

केइ पुण आयरिया भणंति – जहा गच्छवासीणं वि उस्सग्गेणमणुण्णाणं णातिक्कमति कारणे अद्धजोयणं । एयं अववादियं सुत्तं । अववादेण अववादाववादेण वा अंतपल्लियातो वा परतो वा दूरतो वि आणेति ॥४१७१॥

जतो भण्णति –

सक्खेत्ते जइ ण लब्भति, तत्तो दूरं वि कारणे जततो ।
गिहिणो वि चिंतणमणा, गतम्मि गच्छे किमंग पुण ॥४१७२॥

अह अंतपल्लियाओ जता अंतं ण लब्भति तदा कारणे दूरातो वि आणेति, इमेण गच्छवासी अद्धजोयणातो आणेति । उस्सग्गं ण हिंडंति ।

किं कारणं ?

भवति – जइ ताव गिहिणो कयविक्कयसंपउत्ता अगाणयस्थं चितेउं घत-गुल-कट्ठ-मंड-लवण-

तंदुलादी ठवेंति अब्भरहियपाहुणगाऽऽगमणट्ठा । गच्छे किमंग पुण जेसिं कयविक्कयो संचयो य णत्थि तेहिं सखेत्तं रक्खियव्वं ।।४१७२।।

इमो विधी –

संघाडेगो ठवणा, कुलेसु सेसेसु बालवुड्ढादी ।
तरुणा बाहिरगामे, पुच्छा नातं अगारीए ।।४१७३।।

सग्गामे जे सड्ढादी ठवणकुला तेसु गुरुसंघाडो एक्को हिंडति, जाणि सग्गामे सेसाणि कुलाणि तेसु बालवुड्ढसेहअसहुमादी हिंडंति । पुच्छति–"किं आयरेण खेत्तं पडिलेहितुं रक्खह, बाहिरगामे हिंडह ?"४१७३।।

एत्थ आयरिया अगारिदिट्ठंतं करेंति –

परिमितभत्तगदाणे, णेहादवहरति थोवथोवं तु ।
पाहुणवियालआगम, विसण्णआसासणं दाणं ।।४१७४।।

एगो किवणवणिओ अगारीए अविस्संतो तंदुल-वय-गुल-लवण-कडु-भंडादियं दिवसपरिव्वय-परिमितं देति, आवणातो घरे ण किंचि तंदुलादि धरेति । अगारीए चिंता,– "जदि एयस्स अब्भरहिओ मित्तो अन्नो वा पदोसादीअवेलाए आगमिस्सति तो किं दाहं ?" ततो सा अप्पणो बुद्धिपुव्वगेण वणियस्स अजाणतो णेहतंदुलादियाण थोवं थोवं फेडेति, कालेण बहु सुसंपण्णं । अण्णया तस्स मित्तो पदोसकाले आगतो । आवणं आरक्खियभया गंतुं ण सक्केति । वणियस्स चिंता जाया, विसण्णो – कहमेतस्स भत्तं दाहामि त्ति ।

अगारी वणियस्स मणोगतं भावं जाणित्ता भणति – मा विसादं करेहि, सव्वं से करेमि । तीए अब्भंगादिणा ण्हावेउं विसिट्ठमाहारेण भुंजाविओ, तुट्ठो मित्तो, पभाए पुणो जेमेउं गतो ।

वणिओ वि तुट्ठो, भारियं भणति – अहं ते परिमियं देमि, कतो एतं ति ? तीए सव्वं कहियं । तुट्ठेण वणिएण "एसा घरचिंतिय" त्ति सव्वो घरसारो समप्पिओ ।।४१७४।।

एवं पीतिविवड्ढी, विवरीतं णेग होइ दिट्ठंतो ।
लोउत्तरे विसेसो, असंचया जेण समणा उ ।।४१७५।।

एवं कीरंते मित्ताण परोप्परं पीतिवुड्ढी भवति । वितियदिट्ठंतो एयस्सेव विवरीतो कायव्वो, तत्थ णेहच्छेदो भवति । इहं पि लोगुत्तरे जेण असंचया समणा तेण विसेसेण खेत्तं वड्ढावेयव्वं ।।४१७५।।

खेत्ते य वड्ढाविते य इमो गुणो –

जणलावो परग्गामे, हिंडंताणं तु वसहि इह गामे ।
देज्जह बालादीणं, कारणजाते य सुलभं तु ।।४१७६।।

जणो अप्पणो अप्पणो घरेसु गाममज्झे वा मिलिय आलावं करेति – इमे तवस्सिणो अन्नगामे भिक्खं हिंडितुं इह भुंजंति वसंति वा परगिहेसु ।

इत्थियाओ भणंति – इह गामे जे बालादी हिंडंति तेसिं आदरेण अविसेसं देज्जह, पाहुणगादि-कारणजाते जति देसकाले अदेसकाले वा हिंडंति तो सुलभं भवइ ।।४१७६।।

पाहुणविसेसदाणे, णिज्जरकित्ती य इहर विवरीयं ।
पुव्विं चमढण सिग्गा, ण देंति संतं पि कज्जेसु ॥४१७७॥

पाहुणगस्स य विसेसआयरेण भत्तपाणे दिज्जमाणे परलोए णिज्जरा, इहलोए कित्ती, पीतिवड्ढी, परोपकारिया य कता भवति । इहरह ति – पाहुणगस्स अकीरंते एयं चेव विवरीयं भवइ । ठवणकुला य पुव्वं अट्ठाविया, सग्गामे वा दिणे दिणे हिंडतेहिं चमढिया दाणं देंता संता "सिग्गा" श्रान्ता संतं पि दव्वं परेसु उप्पन्ने पाहुणगादिकज्जे ण देंति, तम्हा गुण दोसदरिसणातो सखेत्तं ठवणकुला वा ठावेयव्वा ॥४१७७॥

इमो य गुणो –

बोरीए दिट्ठंतं, गच्छे वायामिहं च पइरिक्कं ।
केइ पुण तत्थ भुंजण, [1]आणग्गहे जे भणियदोसा ॥४१७८॥

"[2]बोरीदिट्ठंतस्स" इमं वक्खाणं –

गामब्भासे बदरी, निस्संद कडुफला य खुज्जा य ।
पक्कामालसडिंभा, खायंतियरे गता दूरं ॥४१७६॥

गामब्भासे बदरी । सा गामणीसंदपाणिएणं संवड्ढियकडुगफला । अन्नं च खुज्जत्तणओ सुहारोहा । तत्थ फला, केइ पक्का केइ आमा । अहवा – "पक्कामंति" मंदपक्का । तत्थ जे आलसिया चेडया ते अपज्जत्तिए खायंति, इयरे पुण जे आलसिया ण भवंति ते दूरं गंतुं महाबदरीवणेसु परिपागपक्के पज्जत्तिए खायंति ॥४१७६॥

किं च –

सिग्घयरं आगमणं, तेसिऽण्णेसिं च देंति सयमेव ।
खाइंति [3]एवमिहयं, आयपर-[4]सुहावहा तरुणो ॥४१८०॥

जाव ते आलसिया ताव कडुगफलाए बदरीए किलिस्समाणा अच्छंति ताव ते दूरगामी सयं पज्जत्तीए खाइत्ता भरियभाराए आगंतुं तेसिं आलसियाणं अण्णेसिं च घरे ठियाणं पज्जत्तीए देंति, पुणो य अप्पणा खायंति । एवं इहं पि गच्छवासे तरुणभिक्खू वीरियसंपन्ना उच्छाहमंता बाहिरगामे हिंडंता आयपरसुहावहा भवंति ॥४१८०॥

कहं उच्यते –

खीरदहीमादीण य लाभो सिग्घतरपढमपतिरिक्के ।
उग्गमदोसा वि जढा, भवंति अणुकंपिता वितरे ॥४१८१॥

दिट्ठंताणुरूवो गाहत्थो उवसंघारेयव्वो, सिग्घतरं आगमणं, "पढम" त्ति पढमालियं करेंति, पढमतरं वा आगच्छंति, अन्नसाधुविरहियं पइरिक्कं, बहू साधुप्रभावो, उग्गमदोसा जढा, "इतरे' त्ति – बालवुड्ढादि अच्छंता ॥४१८१॥

---

१ गा० ४१६१ । २ गा० ४१७८ । ३ एवमेवतु इत्यपि पाठः । ४ हियावहा इत्यपि पाठः ।

चोदगाह –

उज्जाणातो परेणं, उवातिणं तम्मि पुव्व जे भणिया ।
भारादिया दोसा, ते चेव इहं तु सविसेसा ॥४१८२॥

चोदको भणति – उज्जाणातिक्कमे भारादिया दोसा भणिया, ते चेव अद्धजोयणमेरातिक्कमे गेंतबहुतरगओ सविसेसतरा दोसा भवंति, तम्हा दोसदरिसणातो आहारणिमित्तं मा चेव अडंतु ॥४१८२॥

आचार्याह –

तम्हा उ ण गंतव्वं, न हि भोत्तव्वं ण वा वि भोत्तव्वं ।
इहरा भेदे दोसा, इति उदिते चोदगं भणति ॥४१८३॥
[1]जति एयविप्पहूणा, तवनियमगुणा भवे निरवसेसा ।
आहारमादियाणं, को नाम परिग्गहं कुज्जा ॥४१८४॥

जति विणा आहारेण तवादि गुणा णिरवसेसा हवेज्ज, तो आहारादिय ण धम्मोवग्गहकरणदव्वाण को गहणं कुज्जा ? ॥४१८४॥

"[2]गच्छे वायामिहं च पइरिक्कं" ति अस्य व्याख्या –

एवं उग्गमदोसा, वि जढा पइरिक्कता अणोमाणं ।
मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो ॥४१८५॥

पुव्वद्धं कंठं । गच्छे एसा चेव समाचारी गणधरभणिता । तरुणभिक्खूहिं य मोहतिगिच्छणिमित्तं वायामो कतो भवति । तस्स अडंतस्स य पइरिक्कं चसद्दाओ इहं पि पइरिक्कं, वीरियं च ण गूहियं भवति तम्हा गंतव्वं ॥४१८५॥

चोदकाह – "गच्छतु, तत्थेव समुद्दिसंतु, जे आणयणे दोसा भारवेदणातिया ते परिहरित्ता भवंति, तम्हा तहिं चेव भुंजंते ।

आयरिओ आह –

जति ताव लोतियगुरुस्स लहुओ सागारिए पुढविमादी ।
आणयणे परिहरिता, पढमा आपुच्छ जयणाए ॥४१८६॥

जदि ताव लोइयादि, जो कुडुंबं धरेति गुरू, तम्मि अभुत्ते ण भुंजंति, किमंग पुण लोगुत्तरे जस्स पभावेण संसारो णित्थरिज्जति, तम्हा तत्थ ण भोत्तव्वं । अह भुंजति तो मासलहुं, वसधिअभावे तत्थ भुंजंताणं सागारियं, अथंडिल्ले य पुढवादिविराधणा । भत्तं आणयंतेहिं एते सव्वे दोसा परिहरिया भवंति । बितियपदेण पढमालियं करेंता गुरु आपुच्छित्ता संदिसावित्ता गच्छंति जयणाए करेंति जहा संसट्ठं ण भवति ॥४१८६॥

चोदगवयणं अप्पाणुकंपितो ते य मे परिच्चत्ता ।
आयरिए अणुकंपा, परलोए इह पसंसणता ॥४१८७॥

---

१ गा० ४१५८ । २ गा० ४१७८ ।

चोदगो भणति – जाव सो ततो एहिति ताव तण्हाछुवाकिलंतो अतीव परिताविज्जति, एवं ते पट्ठवेंतेहिं परिचत्ता, अप्पा अणुकंपिओ भवति ।"

आयरिओ भणइ – ते चेव अणुकंपिया जतो वेयावच्चणिउत्ता, एमा पारलोइया अणुकंपा । इहलोगे वि ते अणुकंपिया, जतो बहूहिं साधुसाधुणीहिं पसंसिज्जंति ॥४१८७॥

एवं पि परिच्चत्ता, काले खमए य असहुपुरिसे य ।
कालो गिम्हो तु भवे, खमत्तो वा पढमबितिएहिं ॥४१८८॥

जओ ते तिसियभुक्खिया भारक्कंता वा तत्र अभिहया पंथं वाहेंति, तुम्भे पुण छायासु अच्छह, एवं ते परिचत्ता ।

आयरियाह – तेसिं कालं पडुच्च, खमगं पडुच्च, असहुपुरिसं पडुच्च, पढमालियाकरणं अणुण्णायं । गिम्हो तिसाकालो तत्थ पढमालियं कातुं पाणियं पियंति । खमगो वा पढमबितियपरिसहेहिं बाधितो तत्थेव कायसाहरट्ठा पढमालियं करेति । एवं असहुपुरिसो वि उ भुक्खालू ॥४१८८॥

जति एवं संसट्ठं, अप्पत्ते दोसिणादिणं गहणं ।
लंबणभिक्खा दुविहा, जहण्णउक्कोसतिगपणए ॥४१८९॥

जदि कालखमगपुरिसे पडुच्च पढमालिया अणुण्णाता एवं संसट्ठं भवति, संसट्ठे गुरुमादियाण दिज्जंते अभत्तिरागो ।

आचार्याह – अप्पत्ते देसकाले दोसीणं घेप्पति, जेसु वा पदेसेसु वेला तेसु घेत्तुं करेंति । कप्पं च भायणस्स करेंति । पढमालियापमाणं दुविधं – लंबणेहिं भिक्खाहिं वा । तत्थ जहण्णेण तिण्णि लंबणा, तिन्नि भिक्खाओ । उक्कोसणं पंच लंबणा, पंच वा भिक्खा । सेसो मज्झिमं ॥४१८९॥

इमो संसट्ठ परिहाणप्पयोगो –

एगत्थ होति भत्तं, बितियम्मि पडिग्गहे दवं होति ।
गुरुमादी पायोग्गं, मत्तए बितिए य संसत्तं ॥४१९०॥

एगम्मि पडिग्गहे भत्तं बितियसाधुपडिग्गहे पाणगं । एगम्मि मत्तए गुरुमादियाण पायोग्गं घिप्पति । बितियसाधुमत्तए संसत्तं घेप्पति । दवं वा पडिलेहिज्जति, जदि सुद्धं तो पडिग्गहे परिखिप्पति ॥४१९०॥

जति रिक्को तो दवमत्तगम्मि पढमालियाए [1]गहणं तु ।
संसत्तग्गहण दवदुल्लभे य तत्थेव जं अंतं ॥४१९१॥

जदि रिक्को सो दवमत्तगो, तो तत्थ अंतपंतं पढमालिया णिमित्तं घेप्पति, तत्थेव पढमालियं करेति । एवं संसट्ठं ण भवति । अह तम्मि मत्तगे संसत्तगं गहियं दुल्लभदवे वा खेत्ते दवं गहियं तो तत्थेव भत्तपरिग्गहे जं अंतपंतं भत्तं तं जहा असंसट्ठं भवति तहा करेंति, दवमत्तगे वा उकड्ढिअं करेति ॥४१९१॥

बितियपदं तत्थेव य, सेसं अहवा वि होज्ज सव्वं पि ।
तम्हा आणंतव्वं, आणणं च पुट्ठो जति विसुद्धो ॥४१९२॥

अववातो भिक्खायरियगता तत्थेव भुंजंति अप्पणो संविभागं, सेसं सव्वं आणेति ।

---

१ करणं तु इत्यपि

अथवा – तत्थेव सव्वं अप्पसागारिभागं भुंजंति। जम्हा एस एवं विधी तम्हा विधिणा गंतव्वं, विहिणा पविसियव्वं, विहिणा तत्थेव भोत्तव्वं। सव्वत्थ एवं विधिं करेंतो जदि वि दोसेहिं पुट्ठो तहा वि सुद्धो ॥४१९२॥

भिक्खायरियगया सव्वमसव्वं वा भोत्तव्वं इमेण विहिणा –

अंतरपल्लीगहितं, पढमागहितं च सव्व भुंजेज्जा।
धुवलंभो संखडी य व, जं गहितं दोसिणं वा वि ॥४१९३॥

जं अंतरपल्लियाए गहियं पढमपोरिसिगहियं वा सव्वं भुंजति। जत्थ वा जाणंति संखडीए धुवो लंभो भविस्सति त्ति तत्थ जं गहितं तं सव्वं भुंजति, दोसीणं वा जं गहियं तं सव्वं भुंजति ॥४१९३॥

दरहिंडिते व भाणं, भरितं भोत्तुं पुणो वि हिंडेज्जा।
कालो वातिक्कमती, भुंजेज्जा अंतरा सव्वं ॥४१९४॥

अथवा – अद्धहिंडिए भरिया भायणा, ताहे अप्पसागारिए पज्जत्तियं भोत्तुं पुणो वि हिंडेज्जा। अथवा – जाव एत्ति ताव कालातिक्कंतं भवति अत्थमेति वा, ताहे तत्थेव अंतरा सव्वं भुंजति ॥४१९४॥

परमद्धजोयणातो, उज्जाणपरेण जे भणितदोसा।
आहच्चुवातिणाविय, तं चेवुस्सग्ग अववाते ॥४१९५॥

उज्जाणपरेण उवातिणावेंतस्स जे दोसा भणिया, जो य अववादो अद्धजोयणातो परेण जो आधच्च उवातिणावेति तस्स ते चेव दोसा, तं चेव इहावि अववादपदं वत्तव्वं ॥४१९५॥

जे भिक्खू दिया गोमयं पडिग्गाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू दिया गोमयं पडिग्गाहेत्ता रत्तिं कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू रत्तिं गोमयं पडिग्गाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू रत्तिं गोमयं पडिग्गाहेत्ता रत्तिं कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

चउक्कभंगसुत्तं उच्चारेयव्वं। कायः शरीरं, व्रणो क्षतं। तं तेण गोमयेण आलिंपइ सकृत्, विलिंपइ अनेकशो। अपरिवासिते मासलहुं, परिवासिते चउभंगे चउलहुं तवकालविसिट्ठा, आणादिया य दोसा।

दियराओ गोमतेणं, चउक्कभयणा तु जा वणे वुत्ता।
एत्तो एगतरेणं, मक्खेंताणादिणो दोसा ॥४१९६॥

चउक्कभयणा चउभंगो ततिओद्देसए जा व्रणे वुत्ता, इहं पि सच्चेव ॥४१९६॥

णच्चुप्पतितं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए।
अद्दीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽहियासते सम्मं ॥४१९७॥ पूर्ववत्

अव्वोच्छित्तिणिमित्तं, जीयट्ठीए समाहिहेउं वा ।
एएहिं कारणेहिं, जयणा आलिपणं कुज्जा ॥४१९८॥ पूर्ववत्

गोमयगहणे इमा विधी –

अभिणववोसिट्ठासति, इतरे उवओग काउ गहणं तु ।
माहिस असती गव्वं, अणातवत्थं च विसघाती ॥४१९९॥

वोसिरियमेत्तं घेत्तव्वं, तं बहुगुणं । तस्सासति इयरं चिरकाल वोसिरियं, तं पि उवओगं करेत्तुं गहणं । जदि ण संसत्तं तं पि माहिसं घेत्तव्वं । माहिसासति गव्वं । तं पि अणायवे ठियं, छायायामित्यर्थः, तं असुसितं विसघाति भवति, आयवत्थं पुण सुसियरसं ण गुणकारी ॥४१९९॥

जे भिक्खू दिया आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू दिया आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता रत्तिं कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू रत्तिं आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू रत्तिं आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता रत्तिं कायंसि वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

आलेवणजातं आलेवणप्पगारा ।

दियरातो लेवणं, चउक्कभयणा तु जा वणे वुत्ता ।
एत्तो एगतरेणं, मक्खंताणादिणो दोसा ॥४२००॥ सर्वं पूर्ववत्

सो पुण लेवो चउहा, समणो पायी विरेग संरोही ।
वडछल्लितुवरमादी, अणाहारेण इह पगतं ॥४२०१॥

वेदणं जो उवसमेति, १ । पाति मार्गं करेति, २ । विरेयणो पुव्वं रुधिरं दोसे वा णिव्वाएति, ३ । संरोही रोहवेति, ४ । जावइया वडछल्लिमादी तुवरा वेयणोवसमकारगा । इह अणाहारिमं परिसावेंतस्स चउलहुं ॥४२०१॥

णच्चुप्पतितं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए ।
अदीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽहियासए सम्मं ॥४२०२॥ पूर्ववत्

अव्वोच्छित्तिणिमित्तं, जीयट्ठीए समाहिहेतुं वा ।
एएहि कारणेहिं, जयणा आलिंपणं कुज्जा ॥४२०२॥ पूर्ववत्

---

१ कप्पति जयणाए मक्खेतुं, इत्यपि पाठः ।

जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उवहिं वहावेइ,
वहावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

जे भिक्खू तन्नीसाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४१।।

जे भिक्खू उवगरणं, वहावे गिहि अहव अण्णतित्थेहिं ।
आहारं वा देज्जा, पडुच्च तं आणमादीणि ।।४२०४।।

"ममेस उवकरणं वहइ" त्ति पडुच्च आहारं देज्जा तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ।

इमे य दोसा –

पाडेज्ज व भिंदेज्ज व, मलगंधावण्ण छप्पतियनासो ।
अत्थंडिले ठवेज्जा, हरेज्ज वा सो व अण्णो वा ।।४२०५।।

स गिहत्थो अण्णतित्थिओ वा उवकरणं पाडेज्ज, भायणं वा भिंदेज्ज, मलिणे दुग्गंधे वा उवकरणे अवण्णं वदेज्ज, छप्पतियाओ वा छड्डेज्ज वा मारेज्ज वा ।

अहवा – सो भयगोलो अथंडिले पुढविहरियादिसु ठवेज्ज ।

अहवा – तस्स भारेण आयविराहणा हवेज्ज । तत्थ परितावणादी जं च पच्छा ओसहभेसज्जाणि वा करेंतो विराधेति तण्णिप्फण्णं च से पच्छित्तं । तं उवकरणं सो वा हरेज्ज, अणुवउत्तस्स वा अन्नो हरेज्ज ।

दुव्वलियत्तं साहू, वालाणं तस्स भोयणं मूलं ।
दगघातो अपि पियणे, दुगुंछ वमणे कयुड्डाहो ।।४२०६।।

[1]भगवता गोयमेण महावीरवद्धमाणसामी पुच्छितो – "एतेसिं णं भंते! वालाणं किं वलियत्तं सेयं? दुव्वलियत्तं सेयं"? भगवया वागरियं – "दुव्वलियत्तं सेयं, वलियत्तं असेयं" । तस्स य वलियत्तणस्स मूलं आहारो । सो य साहुसमीवे आहारं आहारेत्ता बहूणि अधिकरणाणि करेज्ज, उदगं वा पिएज्ज, आयमेज्ज वा, भुत्तो वा दुगुंछाए वमेज्ज, रगुप्पातो वा से हवेज्ज । संजएहिं एरिसं किंपि मे दिन्नं जेण रोगो जाओ एवं उड्डाहो करेज्ज वा । सव्वत्थ पच्छाकम्मे फासुएण देसे मासलहुं, अफासुएण देसे सव्वे वा चतुलहुं, तम्हा गिहत्थो अन्नउत्थिओ वा ण वाहेयव्वो, ण वा असणादी दायव्वं, ।।४२०६।।

भवे कारणं जेण वहावेज्ज वा असणादि वा देज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
देसुट्ठाणे अपरक्कमे य वाहेज्ज देज्जा वा ।।४२०७।।

असिवकारणे ओमे वा रायदुट्ठे वा वोहिगादिभए वा वच्चंतो अप्पणा असमत्थो वहावेज्ज वा, तन्निमित्तं वा असणादि देज्ज । गिलाणो वहावेज्ज वा, गिलाणट्ठा वा गम्मते । देसुट्ठाणे वा अपरक्कमो गिहिणा वहावेज्ज देज्ज वा आहारं ।।४२०७।।

---

१ पं० बेचरदासम्पादितभगवतीसूत्रे (शत० १२ उद्दे० २) प्रश्नोऽयं जयन्ती श्राविकयापृष्ट, नतु गौतमस्वामिना ।

तत्रपाठस्त्वयं – वलियत्तं भंते ! साहू, दुव्वलियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं वलियत्तं साहू,
अत्थेगइयाणं जीवाणं दुव्वलियत्तं साहू.....

जे भिक्खू इमाओ पंच महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ
वंजियाओ अंतोमासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा
उत्तरइ वा संतरइ वा, उत्तरंतं वा संतरंतं वा सातिज्जति ।
तं जहा-गंगा जउणा सरऊ एरावई मही ॥सू०॥४२॥

तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।

जे इत्यविशिष्टो निर्देशः, भिक्षोः । इमा इति वक्ष्यमाणा प्रत्यक्षीभावे गणितास्रो पंच महण्णवाओ इति बहूदकाः बहूर्णवत्वादेव महानद्यः ।

अहवा – महत् शब्दः प्राधान्यविस्तीर्णत्वे इत्यर्थः ।

उद्दिट्ठाओ नईओ, गणिया पंच इति वंजिया णामे ।
बहुसलिला व महण्णव, महाणईओ य पाधण्णे ॥४२०८॥

पुव्वद्धं कंठं । पश्चार्धं गतार्थम् । अंतो अब्भंतरे कालमासस्य मासकल्पविहारेण सकृत् कल्पत एव उत्तरितुं । तस्मिन्नेव मासे द्वि-तृतीयवारा प्रतिषेधः ॥४२०८॥

बाहाहि व पाएहि व, उत्तरणं संतरं तु संतरणं ।
तं पुण कुंभे दइए, नावा उडुपाइएहिं वा ॥४२०९॥

णिरंतरं उत्तरणं, कुंभदतियादिएहिं संतरं संतरणं । कुंभो एगो चउणावा वा, दतिओ वातपूरिओ, णावा पसिद्धा, उडुवो कोटिंवो, आदिसद्दाओ लाउयणीहिं । सादिज्जणा अणुमोयणा वाक्योपन्यासे, तं जहा गंगाद्याः प्रसिद्धाः, चउलहुं पावति ॥४२०९॥ एस सुत्तत्थो ।

अधुना निर्युक्तिविस्तरः –

पंच परूवेऊणं, नावासंतारिमं तु जं जत्थ ।
संतरणम्मि वि लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥४२१०॥

"जं जत्थ" त्ति जदि उत्तरणं संतरणं वा जत्थ त्ति णदीए एएसिं पंचण्हं णदीणं कम्हि वि उत्तरणं कम्हिइ संतरणं । अथवा – एक्काए चेव अप्पोदगत्थामे उत्तरणं बहूदगथामे संतरणं । संतरणे चउलहुं, अवि सद्दाओ उत्तरणे वि चउलहुं, दोसु वि आणादिया दोसा सवित्थरा भाणियव्वा ॥४२१०॥

पंचण्हं गहणेणं, सेसातो सूयिया महासलिला ।
तत्थ पुरा विहरिंसु, ण य ताओ कयाइ सुक्खंति ॥४२११॥

पंचण्हग्गहणातो अन्ना वि जाओ बहूदगाओ, अविच्छेयवाहिणीओ ताओ वि गहिताओ। स्याद् बुद्धिः किमर्थं गंगादीनां ग्रहणं ? अत्रोच्यते – पच्छद्धं कंठं ॥४२११॥

तत्थ संतरणे ताव दोसा भणामि –

अणुकंपा[१] पडिणीया[२], व होज्ज बहवे य पच्चवाया[३] तु ।
एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥४२१२॥

तत्थ अणुकंपाए ताव भन्नति –

> छुभणं जले थलातो, अण्णे वोत्तारिता छुभहि साहू ।
> ठवणं च पट्टि (त्थि) ताते, दट्ठुं नावं च आणेति ॥४२१३॥

णागुं संतरणट्टुं जाणित्ता थलाओ नावं जले छुभेज्जा । एत्थ जहासंभवतो आउक्कायविराधणाए सट्ठाणपच्छित्तं । पुव्वारूढे वा उत्तारेत्ता उदए वा छुहित्ता साधुणा विलग्गावेज्जा । साधुणो वा दट्ठुं संपट्ठियं णावं धरेज्ज, साधुणो वा दट्ठुं परकूलातो णावं आणेज्ज, एत्थ वि जहासंभवतो कायणिप्फण्णं ॥४२१३॥

एत्थ जे अवतारिता उदगे वा छूढा साधुणिमित्तं इमं कुज्जा –

> नाविय-साहुपदोसे, णियट्टणऽच्छंतका य हरितादी ।
> जं तेण-सावतेहि व, पवाहणऽण्णाए किणणं वा ॥४२१४॥

णावियस्स साधुस्स वा पदोसं गच्छेज्जा, जं वा ते पावेज्ज तण्णिप्फण्णं, जं वा ते नियट्टंता तडे वा अच्छंता हरियादिकायविराधणं करेज्ज, जं च ते सावएहिं पाविहिति, जं च अण्णं णावं कीतादी काउं पवाहेज्ज, एत्थ तण्णिप्फण्णं सव्वं साधुणो पावेंति ॥४२१४॥

परकूलातो णावाणयणे इमो दिट्ठंतो –

> मज्जणगतो मुरुंडो, णावं साहूण अप्पणाऽऽणेति ।
> कहिया जति अक्खेवा, तति लहुगा मग्गणा पच्छा ॥४२१५॥

ण्हायंतो मुरुंडराया साधुणो संतरितुकामा दट्ठूणं सयमेव णाविए आणेत्ता साधुणो विलग्गावेत्ता भणति – कहेह किं चि ताव जाव णं उत्तरेमो । अक्खेवणादिकहालद्धिजुत्तो साधू कहेतुमारद्धो। तेण कहंतेण अक्खित्तो णावियं "सन्ने" ति सणियं कड्ढह, जेण एस साधू चिरं कहेति । साधुकारणा सणियं गच्छंताणं जत्तिया आवल्लखेवा तत्तिया चउलहुगा ।

उत्तिण्णेण रन्ना अंतेपुरे अक्खायं – अतिसुन्दरकधगा साधुणो ।

अंतेपुरे कोउहल्लूस्सुगं रायाणं विन्नवेति – जइ ते साधुणो इहं आणिज्जेज्ज तो अम्हे वि सुणेज्जामो धम्मकधं । रन्ना गवेसित्ता, आणिया, एवमादी दोसा ।

जइ अंतेपुरे आयपरसमुत्था दोसा ॥४२१५॥

किं च –

> सुत्त-ऽत्थे पलिमंथो, णेगा दोसा य णिवघरपवेसे ।
> सतिकरण कोउएण व, भुत्ता-ऽभुत्ताण गमणादी ॥४२१६॥

कंठा । एते अणुकंपदोसा गता ।

इमे "[1]पडिणीय" दोसा –

> छुब्भण[1] सिंचण[2] बोलण[3], कंबल-सबला य घाडियाणिमित्तं ।
> अणुसट्ठा कालगता, नागकुमारेसु उववण्णा ॥४२१७॥

---

१ गा० ४२१२ ।

तत्थ छुब्भणादिसु णावाए सामण्णेण दिट्ठंतो कज्जति। जहा मधुराए भंडीरजत्ताए [1]घाडिएण श्रणापुच्छाए वइल्ला णीता। तण्णिमित्तं वेरग्गिया सावगेण श्रणुसट्ठा भत्तं पच्चक्खायं। कालगया णागकुमारेसु उववन्ना ॥४२१७॥

तेहिं –

वीरवरस्स भगवतो, नावारूढस्स कासि उवसग्गं।
मिच्छादिट्ठि परद्धो, कंबल-सबलेहिं तित्थं च ॥४२१८॥

भगवं णावारूढो, णागकुमारेण सुदाढेण उवसग्गितो, कंबलसबलेहिं मोइश्रो, महिमा य कया, तम्मि य पदेसे तित्थं पव्वत्तं ॥४२१८॥

"[2]छुब्भण" त्ति पडिणीश्रो णावाए श्रारुभंते साधुणो भणति –

सीसगता वि ण दुक्खं, करेह मज्झं ति एवमवि वोत्तुं।
[3]जा छुब्भंतु समुद्दे, मुंचति नावं विलग्गेसु ॥४२१९॥

सिद्धत्थग-समिपत्तपुप्फाणि वा सिरट्ठियाणि जहा पीडं ण करेंति एवं मम तुब्भे पीडं ण करेह, श्रणुग्गहो य, एवं वोत्तुं पि जाहे णावं श्रारूढा साधवो ताहे मुंचति णावं णदिमुहेसु "जो" तु समुद्दे पडतु त्ति, तत्थ किलस्संतु, मरंतु वा ॥४२१९॥ "छुब्भण" त्ति गयं।

"[4]सिंचण-वोलण" दो वि दारे जुगवं वक्खाणेति –

सिंचति ते उवहिं वा, ते चेव जले छुभेज्ज उवहिं वा।
मरणोवहिणिप्फण्णं, श्रणेसिय तणादि तरपण्णं ॥४२२०॥

णाविगो श्रण्णो वा पडिणीश्रो साधुं सिंचति, उवहिं वा। "[5]वोलण त्ति – ते चेव साधू जले छुहेज्जा उवहिं वा। श्रायविराहणाए परिताव मरण-णिप्फण्णं, जं च उवधिणासे श्रणेसणिज्जं गेण्हिहिति, जं च झुसिराझुसिरे तणे सेवेहिति, सव्वं तण्णिप्फण्णं पावति। तरपण्णे च मग्गेज्जा, श्रदिज्जमाणे वा रुंभेज्जा, दिज्जमाणे श्रधिकरणं ॥४२१९॥ "सिंचण-वोलण" त्ति दो दारा गता।

इयाणिं "[6]बहवो य पच्चवाया उ" त्ति श्रस्य व्याख्या –

संघट्टणा य [7]घट्टण, उवगरणपलोट्टसिंचणे दोसा।
सावयतेणे तिण्हेगतरा, विराहणा संजमाऽऽयाए ॥४२२१॥

पुव्वद्धस्स इमं वक्खाणं –

तस-उदग-वणे घट्टण, सिंचण लोगो य नाविसिंचणया।
लोट्टण उवही उभए, वुड्डण एमेव श्रत्थाहे ॥४२२२॥

जलसंभवा तसा, दगं, सेवालादि वणकायो-एते संघट्टण-परितावण-उद्दवणादि। साधुं उवगरणं वा लोगो णाविगा वा सिंचेज्ज वा, पादेहिं वा मलेज्जा, साधुं उवकरणं वा वणावातो लोट्टेज्ज। श्रतिसंबाधे वा सयं लोट्टेज्ज। एवं वाहे श्रत्थाहे वा उवहि श्राता तदुभयं वा वुड्डेज्ज ॥४२२२॥

---

१ मिश्र। २ गा० ४२१७। ३ जो इत्यपि पाठः। ४ गा० ४२१७। ५ गा० ४२१७।
६ गा० ४२१२। ७ सिंचण इति पाठान्तरम्।

"[1]सावयतेणे" त्ति अस्य व्याख्या –

[2]ओहारमगरादीया, घोरा तत्थ उ सावया ।
सरीरोवहिमादीया, नावातेणा य कत्थइ ॥४२२३॥

ओहारो मच्छो । सेसं कंठं । सरीरतेणा उवकरणतेणा उभयतेणा वा कत्थइ समुद्दमज्झे णावाहिं भमंति ॥४२२३॥

"[3]तिण्हेगतर" त्ति अस्य व्याख्या –

सावयतेणे उभयं, अणुकंपादी विराहणा तिण्णि ।
संजम आउभयं वा, उत्तर-णावुत्तरंते य ॥४२२४॥

सावया, तेणा, सावया वि तेणा वि ।

अहवा – अणुकंपाए पडिणीयट्ठयाए अणुकंपपडिणीयट्ठयाए वा ।

अहवा – संजमविराहणा आयविराहणा उभयविराहणा ।

अहवा – नावं आरुभते, णावा आरूढे, णावातो उत्तरंते य एवं बहवो पच्चवाया भवंति ॥४२२४॥ संतरणं गतं ।

इयाणि "[4]उत्तरणं तत्थ –

उत्तरणम्मि परूविते, उत्तरमाणस्स चउलहू होंति ।
आणाइणो य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥४२२५॥ कंठा

तस्सिमे पगारा –

जंघद्धा संघट्टो, संघट्टुवरिं तु लेव जा णाभी ।
तेण परं लेवुवरिं, तुंबादी णाववज्जेसु ॥४२२६॥

जत्थ तले पादतलातो आरुभेऊणं जाव मुक्कजंघाए अद्धं बुड्डति एस संघट्टो भन्नति । मुक्कजंघद्धाओ आरुभेऊण उवरिं जाव णाभी बुड्डति एस लेवो भन्नति । णाभीतो आरभेऊण उवरिं सव्वं लेवोवरिं भन्नति । तं दुविहं – थाहं अथाहं च । जत्थ णासियं ण बुड्डति तं थाहं । जत्थ पुण णासिया बुड्डति तं अत्थाहं । तुंबादिएसु वा णावावज्जेसु जत्थ तरंतो जलं संघट्टेति तं सव्वं उत्तरणं भन्नति ॥४२२६॥

तत्थ उत्तरणे इमे दोसा –

संघट्टणा य सिंचण, उवकरणे पडण संजमे दोसा ।
चिक्खल्ल खाणु कंटग, सावय-भय-वुज्झणे आता ॥४२२७॥

लोगेण साधुस्स संघट्टणा, साधू वा जलं संघट्टेति ।

अथवा – संभवतो कायसंघट्टणे पच्छित्तं वत्तव्वं । संघट्टणगहणाओ परितावणोद्दवणे विगहिते, तण्णिप्फण्णं च । पडिणीओ साधुं उवकरणं च वा से सिंचति, अणुकंपाए वा साधुं सिंचति, साधू वा अप्पणा-अप्पाणं सिंचेज्जा, पडणं वा साधुस्स उवकरणस्स वा उदए । एते संजमदोसा । इमे पच्छद्धगहिता आयविराहणा

---

१ गा० ४२२१ । २ उवहा इत्यपि पाठः । ३ गा० ४२२१ । ४ सूत्र ४२ ।

दोसा – सचिक्खले जले खुप्पति, जलमज्झे अचक्खुविमए खाणुकंटएण वा विज्झेज्ज, मगरादी सावयभयं भवति, णदीवाहेण वा वुज्झइ ॥४२२६॥

[1]इमं च कप्पस्स चउत्थुद्देसगाभिहितसुत्तस्स खंडं भन्नति, एरवति कोणालासु जत्थ चक्किया इत्यादि ।

इमो सुत्तत्थो –

एरवति जम्मि चक्किय, जलथलकरणे इमं तु णाणत्तं ।
एगो जलम्मि एगो, थलम्मि इहइं थलाऽऽगासं॥४२२८॥

एरवती नदी कुणाला जणवते, कुणालाए णगरीए समीवे अद्धजोयणं वहति । सा य उव्वेधेणं अद्धजंघप्पमाणं, अन्नाए य जम्मि अद्धं जंघप्पमाणं "चक्कियं" ति सक्किज्जति उत्तरिउं तत्थ जलथलकरणें उत्तरियव्वं, जलथलाण णाणत्तं पच्छद्धगहितं, ण वि रोलेंतेग गंतव्वमित्यर्थः ॥४२२८॥

एरवतिकुणालाए, वित्थिण्णा अद्धजोयणं वहती ।
कप्पति तत्थ अपुण्णे, गंतुं जा वेरिसी अण्णा ॥४२२९॥

पुव्वद्धं गतार्थं । उडुबद्धकाले अपुन्ने मासकप्पे जाव तिन्निवारा भिक्खलेवादिकज्जेसु जयणाए कप्पति । अन्ना वि जा णदी एरिसी ताते वि कप्पति गंतुं । उत्तरणसंतरणानि स्वविधानेन पूर्ववत् । अघवा – दगसंघट्टे सकृद् उत्तरणं, द्वितृतीयवारा संतरणं ॥४२२ ॥ भणिओ सुत्तत्थो ।

इयाणिं णिज्जुत्ती । उत्तरणे पंथप्पगारा भण्णंति –

संकम[1] थले[2] य णोथले[3], पासाणजले य वालुगजले य ।
सुद्धुदग-पंकमीसे, परित्तऽणंते तसा चेव ॥४२३०॥

तिविहो पंथो संकमेण थलेणं णोथलेणं । जं तं णोथलेणं तं चउव्विहं – पासाणजलं, वालुयाजलं सचित्तपुढवीए सुद्धुदगं, पंकमीसं जलं, तम्मि खुप्पतेहिं गम्मति । एक्केक्के परित्तणंतकायाण तसाण य विराहणा संघट्टणादिया संजमविराधणा भवति ॥४२३०॥

जलेण गम्ममाणे विकल्पप्रदर्शनार्थमाह –

उदए चिक्खल्लपरित्तऽणंतकातिग तसे य मीसे य ।
अक्कंतमणक्कंते, संजोगा हुंति अप्पबहुं ॥४२३१॥

---

[1]अह पुण एवं जाणेज्जा –

एरवइ कुणालाए जत्थ चक्किया एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा, एवं से कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरिए वा संतरिए वा । जत्थ नो एवं चक्किया, एवं से नो कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरिए वा संतरिए वा (वृ० क० उ० ४, सू० २७)

उदगग्गहणे उदए तेऊवाऊविहूणा एग-दु-तियादी चिक्खल्लादिपुढवीसु वणस्सतीसु य परित्तऽणंतेसु तसेसु य बेइंदियासु, एएसु पुव्वं मीसेसु, पच्छा सचित्तेसु, थिरअथिरेसु, अक्कंतमणक्कंतेसु, संजोगा भाणियव्वा। अप्पाबहुअं" ति एएसु संजोगेसु जेसु अप्पतरा संजमविराहणा दोसा तेसु गंतव्वं ॥४२३१॥

"[1]संकम" त्ति जत्थ संकमो तत्थिमे संकमभंगविगप्पा –

एगंगिय चल थिर पाडिसाडि णिरालंब एगतो सभए।
पडिपक्खेसु य गमणं, तज्जातियरे च संडे वा ॥४२३२॥

संघातिमासंघातिमो एगंगिओ भवति, तेण गंतव्वं, ण चलेण। पारिसाडिणा ण गंतव्वं। अपारिसाडिणा गंतव्वं। ण णिरालंबेण एगतो वा सालंबेण गंतव्वं। दुहओ (वा) सालंबेण गंतव्वं। सभए ण गंतव्वं, पडिपक्खे णिब्भएण गंतव्वं। अणेगंगिय-चल-परिसाडि-णिरालंब-सभए एतेसिं पंचण्हं पदाणं पडिपक्खेसु गमणं। एत्थ बत्तीसभंगा कायव्वा। एगो पढमभंगो सुद्धो। सेसा असुद्धा। तेसु वि बहुगुणतरेसु गमणजयणा कायव्वा। "संडे" वा संकमविकप्पो त्ति, अण्णो भणति – ते दुविहा – तज्जाया अतज्जाया वा, तत्थेव जाया सिलादी तज्जाया, अण्णओ दारगादी आणेत्ता ठविया अतज्जाया। तेसु वि चलाचल-अक्कंताऽणक्कंत-सभय-णिब्भयादी भेदा कायव्वा ॥४२३२॥ "संकमे" त्ति गतं।

इदाणिं "[2]थले" त्ति –

णदिकोप्पर चरणं वा, थलमुदयं नोथलं तु तं चउहा।
उवलजल वालुगजल, सुद्धमही पंकमुदयं च ॥४२३३॥

णदीए आउंटिय कोप्परागारं चलणं तेण गम्मति, जलोवरिकवाडाणि मोत्तुं पालिबंधो कज्जति तेण चरणेणं गम्मइ, एत्थ वि अक्कंत-अणक्कंत-सभय-णिब्भयादी भेदा वत्तव्वा। "उदगं" ति थलेण उदयस्स परिहारो। थलं ति गतं।

इयाणिं "[3]णोथलं" ति तं चउव्विहं पच्छद्धं।
अहो पासाणा उवरिं जलं, अहो वालुगा उवरि जलं,
अहो सुद्धमही उवरि जलं, अहो पंको उवरिं जलं ॥४२३३॥

पंकुदगे इमे विधाणा –

लत्तगपहे य खलुते, तहऽद्धजंघे य जाणु उवरिं च।
लेवे य लेवउवरिं, अक्कंतादी य संजोगा ॥४२३४॥

जम्मेत्तं अलत्तगेण पादो रज्जति तम्मेतो कद्दमो जम्मि पधे सो लत्तगपहो, खलुगमेत्तो कद्दमो-अद्धजंघमेत्तो जाणुमितो, "जाणुवरि लेवे" त्ति णाभिमेत्तो लेवो, लेवोवरिं च कद्दमो। एते सव्वे कद्दमप्पगारा चउव्विहे णोथले कद्दमे य सभेया अक्कंताणक्कंत-सभय-णिब्भयादी सव्वे जहासंभवं संजोगा कायव्वा ॥४२३४॥

इमेण जुत्तो पंथो परिहरियव्वो –

जो वि य होतऽक्कंतो, हरियादितसेहि चेव परिहीणो।
तेण वि उ ण गंतव्वं, जत्थ अवाता इमे होंति ॥४२३५॥ कंठा।

---

१ गा० ४२३०। २ गा० ४२३०। ३ गा० ४२३०।

इमेहिं सावातो पथो भवति –

गिरिणदि पुण्णा वालादिकंटगा दूरपारमावत्ता ।
चिक्खल्ल कल्लुगाणि य, गारा सेवाल उवले य ॥४२३६॥

जत्थ पहे गिरिणदी पूरपुण्णा तिव्ववेगा मगरादि वाला अंतो जले जत्थ पासाण-कंटका वणप्फति कंटका वा पुराणीश्रा, दूरपारं वा जलं, आवत्तबहुलं वा जलं, चलणिचिक्खल्लो वा जत्थ, कोंकणविसए णदीसु अंतो जलस्स कल्लुगा पासाणा भवति ते पादं अचेयणं करेंति छिंदंति "गारा" गारिसरिसाणि गिण्णाणि, लोकप्रसिद्धाओ थद्दगा, सेवालो प्रसिद्धो, उवला छिन्नपासाणा ।।४२३६॥

चउव्विहे णोथले पुव्वं इमेण गंतव्वं –

उवलजलेण तु पुव्वं, अक्कंत णिरच्चएण गंतव्वं ।
तस्सऽसति अणक्कंते, णिरच्चएणं तु गंतव्वं ॥४२३७॥

उवलजले कद्दमाभावे स्थिरसंघननाच्च अतः पूर्वं तेन गम्यते । सेसं कंठं । तस्स अभावे सिगत-जलसुद्धपुढवीए य कमेणं ॥४२३७॥

अतो भन्नति –

एमेव सेसएहि वि, सिगतजलादीहि होंति संजोगा ।
पंक मधुसित्थ लत्तग, खलुऽद्धजंघा य जंघा य ॥४२३८॥

उवलातो वालुया अप्पसंघयणतरा तेण वालुयाजलेण पच्छा गम्मति, वालुगातो सुद्धपुढवी अप्पसंघ-यणतरा तेण वालुयाजलातो पच्छा तीए गम्मति, तेसु अक्कंतादि संजोगा पूर्ववत् । पंकजलं बहुअवायं, अन्नपहाभावे तेण पच्छा गम्मति । सो य पंको जो महुसित्थागिती लत्तगमेत्तो तेण पहेण गम्मति, पच्छा खलुगमेत्तेण, पच्छा अद्धजंघप्पमाणेण, तओ पच्छा जंघप्पमाणेण – जानुमात्रेणेत्यर्थः ॥४२३८॥

जो पुण जाणुप्पमाणातो परेण पंको तेण ण गंतव्वं –

जओ भन्नति –

अद्धोरुगमेत्तातो, जो खलु उवरिं तु कद्दमो होति ।
कंटादि जढो वि हु सो, अत्थाहजलं व सावातो ॥४२३९॥

जाणुप्पमाणातो उवरि कद्दमो जो सो कंटादि अवायवज्जितो वि गतिअभावातो सावातो चेव भवति, अत्थाहजलवत् ॥४२३९॥ एसो विधी सव्वो उवलादिसचित्तपुढवीए भणिओ ।

अह अचित्तादीपुढवी तो इमा विधी –

जत्थ अचित्ता पुढवी, तहियं आउ-तरुजीवसंजोगा ।
जोणिपरित्त-थिरेहिं, अक्कंत-णिरच्चएहिं च ॥४२४०॥

पुढवी सव्वत्थ अचित्ता, किं आउक्काएण गच्छउ, किं वणस्सतिणा गच्छतु ? आउक्काए णियमा वणस्सती अत्थि तम्हा तेण मा गच्छतु, वणस्सतिणा गच्छतु । तत्थ वि परित्तजोणिएण थिरसंघयणेण,

तत्थ वि अणक्कंतेण. तत्थ वि णिप्पच्चवातेण, सपच्चवातेण वितिओ। अणक्कंते वि एते चेव दो विकप्पा। एवं थिरे वि चउरो विकप्पा। अथिरे व चउरो। एवं परित्ते अट्ठ विकप्पा। एवं अणंते वि अट्ठ। एवं परित्ते अट्ठ विकप्पा। एवं अणंते वि अट्ठ। एवं सव्वग्गेण वणस्सतिकाए सोलस विकप्पा ॥४२४०॥

इदाणि आउस्स तसाण य संयोगो भन्नति –

एमेव तु संजोगा, उदगस्स चतुव्विहेहि तु तसेहिं।
अक्कंत-थिरसरीरे, णिरच्चएहिं तु गंतव्वं ॥४२४१॥

चउव्विहा तसा–बेंदिया तेइंदिया चतुपंचिंदिया। एत्थ पुव्वं बेंदिएसु थिरेसु अक्कंतेसु णिपच्चवाएण एस पढमभंगो, सपच्चवातेण वितिओ। अणक्कंते वि एते चेव दो विकप्पा। एवं अथिरेसु चउरो विगप्पा। एवं तेइंदिय-चउरिंदिय पंचिंदिएसु वि अट्ठऽट्ठ विगप्पा। एवं तसेसु वि सव्वग्गेणं बत्तीसं विगप्पा। अह संतर-णिरंतरविगप्पो कज्जति तो तसेसु सव्वग्गेणं चउसट्ठि विगप्पा भवंति ॥४२४१॥

तेउ-वाउसु गमणस्सासंभवो त्ति अओ भन्नति –

तेऊ-वाउविहूणा, एवं सेसा वि सव्वसंजोगा।
उदगस्स तु कायव्वा, जेणऽहिकारो इहं उदए ॥४२४२॥

वणस्सतितसेसु वि दुगसंजोगो भाणियव्वो। पुव्वं तसेसु थेरादिसु गंतव्वं, जतो वणे वि णियमा तसा अत्थि त्ति।

पुढवी-आउ-वणस्सति तिगसंजोगो, तिसु वि संभवे कयमेण गच्छउ? पुव्वं पुढविणा, ततो वणस्सतिणा तओ आउणा।

पुढवि-आउ-वणस्सति-तसेसु त्ति एस चउक्कसंजोगो। चउक्कसंभवे कतरेण गंतव्वं? पुव्वं अच्चित्त-पुढवीए, तओ विरलतसेसु, तओ सच्चित्तपुढवीए, तओ वणस्सतिणा, तओ आउणा, एते सेससंजोगा भणिया। इह बहुभंगवित्थरे बीयमेत्तमभिहितं।

एत्थं पुण भंगवित्थरे जे उदगं अमुंचंतेण भंगा भवंति ते कायव्वा, जेण इह उदगाधिगारो। सेसभंगा पुण इह विकोवणट्ठा भणिया ॥४२४२॥

"अंतो मासस्स दुक्खुत्तो तिक्खुत्तो उत्तर" त्ति अस्य सूत्रपदस्यार्थः –

एरवति जत्थ चक्किय, तारिसए ण उवहम्मती खेत्तं।
पडिसिद्धं उत्तरणं, पुण्णे असति खेत्तऽणुण्णातं ॥४२४३॥

एरवती णदी कुणाला जणपदे, सा अद्धजोयणवित्थिण्णा अद्धजंघऽत्थाहं उदगं वहति। तीए केइ पदेसा सुक्खा णत्थि। उदगं तं जो उत्तरित्ता भिक्खायरियं करेति तत्थ उडुबद्धे जत्थ तिण्णि दगसंघट्टा ते गतागतेणं छ, वासासु सत्त ते गयागएणं चोद्दस। एत्तो एक्केण वि अहिएहिं उवहम्मति खेत्तं। अन्नत्थ वि जत्थ एत्तिया दगसंघट्टा तत्थ वि एवं चेव

"पडिसिद्धं उत्तरणं" पच्छद्धं, अस्य व्याख्या – पुन्ने मासकप्पे वासावासे वा जति अणुत्तिण्णाणं अत्थि अण्णं खेत्तं मासकप्पपायोग्गं तो ण उत्तरियव्वं, जाणि अणुतिण्णाणि खेत्ताणि तेसु विहरियव्वं, अह अणुत्तिण्णाणं अन्नं नत्थि खेत्तं तो उत्तरियव्वं ॥४२४३॥

सत्त तु वासासु भवे, दगघट्टा तिन्नि होंति उडुबद्धे।
जे उ ण हणंति खेत्तं, भिक्खायरियं च ण हरंति ॥४२४४॥ गतार्था

जह कारणम्मि पुण्णे, अंतो तह कारणम्मि असिवादी ।
उवहिस्स गहण लिंपण, णावोदगं तं पि जयणाए ॥४२४५॥

जहा कारणे पुण्णे मासकप्पे वासावासे वा अन्नखेत्तासती य दिट्ठं उत्तरणं तहा अंतो वि मासस्स असिवादीहिं कारणेहिं उवही वा अन्नतो दुल्लभा लेवस्स वा अट्ठाए उत्तरेज्जा । "णावोदगं तं पि जयणाए" त्ति असिवादिएहिं चेव कारणेहिं जं उदगं णावाए उत्तरित्ता उज्जाणं गम्मति ॥४२४५॥

जत्थ गंतव्वं तत्थिमा विधी –

णाव-थल-लेवहेट्ठा, लेवे वा उवरिए व लेवस्स ।
दोण्णी दिवड्ढमेक्कं, अद्धं नावाए परिहाति ॥४२४६॥

णावुत्तरणथामातो जइ दो जोयणाणि पज्जोहारेण वक्कथलेण गम्मति तेण गंतव्वं, मा य णावाए ।

दो जोयणाइ गंतुं, जहियं गम्मति थलेण तेणेव ।
मा य दुरूहे णावं, तत्थावाया बहू वुत्ता ॥४२४७॥ गतार्था

एवं णावा उत्तरणथामाओ 'लेवेहेट्ठ' त्ति दगसंघट्टणेण दिवड्ढजोयणेण गच्छउ मा य णावाए । एवं णावुत्तरणथामातो जोयणपज्जोहारेण लेवेण गच्छउ मा य णावाए । एवं णावुत्तरणथामातो अद्धजोयणपज्जोहारेणं लेवुवरिए गच्छतु मा य नावाए । एस नावुत्तरणथामाओ परिहाणी वुत्ता ।

एवं चेव लेवोवरि उत्तरणथामाओ दिवड्ढजोयणपज्जोहारेण थलेण गंतव्वं मा य लेवोवरिणा ।

लेवुत्तरणथामाओ एगजोयणपज्जोहारेण संघट्टेण गच्छउ मा य लेवोवरिणा ।

लेवुत्तरणथामाओ अद्धजोयणपरिहारेण अद्धजोयणेण संघट्टेण गच्छतु मा य लेवेण गच्छउ, मा य लेवोवरिणा । एसा लेवुवरियामातो परिहाणी ।

लेवुत्तरणथामातो एगजोयणपज्जोहारेण थलेण गच्छउ मा य लेवेण । लेवुत्तरणथामातो अद्धजोयणेण संघट्टेण गच्छतु मा य लेवेण, एस लेवातो परिहाणी । संघट्टुत्तरणथामातो अद्धजोयणपज्जोहारेण थलेण गच्छतु मा य संघट्टेण, एतेसिं परिहासणं असतीए णावालेवोवरि लेवसंघट्टेहिं वि गंतव्वं जयणाए ॥४२४७॥

तत्थऽद्धजंघाए वि इमा जयणा –

थलसंकमणे जयणा, पलोयणा पुच्छिऊण उत्तरणं ।
परिपुच्छिऊण गमणं, जति पंथो तेण जयणाए ॥४२४८॥

"थलसंकमणे" त्ति एगं पादं थले विभासा, पलोयणा णाम लोयं उत्तरंतं पलोएति, जेणं जेणं अद्धजंघामेत्तं उदगं तेणं तेणं गच्छति । अह उत्तरंते ण पासेज्जा तो पाडिपहियमण्णं वा पुच्छति, "जतो णीयतरागं उदगं ति तं चिधेहिति" त्ति वुत्तं भवति । परिपुच्छिऊणं ति जदि तस्स उदगस्स परिहारपंथो अत्थि तं पुच्छिऊण तेण जयणाए गंतव्वं ॥४२४८॥

अह तेण थलपहेण इमे दोसा हवेज्ज –

समुदाणं पंथो वा, वसही वा थलपहेण जति णत्थि ।
सावयतेणभयं वा, संघट्टेणं ततो गच्छे ॥४२४९॥

समुदाणं भिक्खा णत्थि, अथवा थलपहो चेव णत्थि, वसधी वा णत्थि, सिंहादिसावतभयं वा, सरीरोवहितेणभयं वा, तो थलपहं मोत्तुं उदगसंघट्टेणं गंतव्वं ॥४२४६॥

तदभावे लेवेण वा तत्थिमा उत्तरणजयणा–

एते चेव य दोसा, जति संघट्टेण गच्छमाणस्स ।
तो लेवेणं गच्छे, णिरवाएणं तिमा जयणा ॥४२५०॥

णिब्भए गारत्थीणं, तु मग्गतो चोलपट्टमुस्सारे ।
सभए अत्थग्घे वा, ओइण्णेसुं घणं पट्टं ॥४२५१॥

जइ गिहित्थसहायो ताहे उदगसमीवं गंतुं, उड्ढगकायं मुहणंतगेण पमज्जित्ता, अहोकायं रयहरणेणं उवकरणं पडिलेहित्ता, एगओ य तं उवकरणं करेत्ता, जदि चोरभयं णत्थि तो गिहत्थाण सव्वपच्छओ उदगमवतरति । जह जह ओगाढतरं जलमोगाहइ तह तह पच्छओ ठितो उवरुवरिं चोलपट्टमुस्सारेइ जहा ण भिज्जइ ।

अह सत्यपच्छओ भयं अथाहं वा जलं तो जाहे अग्गतो गिहत्था केत्तिया वि उत्तिण्णा ताहे साहू मज्झे अवतरति, चोलपट्टं च घणं करोए – दढं बंधतीत्यर्थः ॥४२५१॥

एतेण विहाणेण उत्तरंतस्स जइ चोलपट्टो भिन्नो, अन्नं वा किं चि उवकरणजायं, तो इमो विही –

दगतीरे ता चिट्ठे, णिप्पगलो जाव चोलपट्टो उ ।
सभए पलंबमाणं, गच्छति काएण अफुसंतो ॥४२५२॥

पगलमाणं दगसंरक्खणट्ठा दगे दगसमीवे वा निद्धपुढवीते ताव चिट्ठति जाव चोलपट्टो अन्नं वा उवकरणं णिप्पगलं । अह तत्थ अच्छंतस्स भयं तो पगलमाणमेव सरीरे अफुसंतो गच्छति, बाहाए पलंबमाणं णेइ ॥४२५२॥

जत्थ सत्थविरहिओ एगागी दगमुत्तरइ तत्थिमो विही –

असति गिहि णालियाए, आणक्खेत्तुं पुणो वि पडियरणं ।
एगाभोगं च करे, उवकरणं लेव उवरिं च ॥४२५३॥

गिहिसहायासइ सव्वोवकरणं ओयरणतीरे मोत्तुं, नालिगा आयप्पमाणातो चउरंगुलाइरित्ता, तं घेत्तुं जलमोयरित्ता, तीए आणवखेउं–उवग्घइत्ता इत्यर्थः, परतीराओ पुणो वि जलपडियरणं करेति–प्रत्यागच्छतीत्यर्थः । आगंतूणं तं सुक्कोवकरणं एगाभोगं करेति, तं घेत्तुं तेण आणक्खितजलपहेण उत्तरति । एस लेवे लेवुवरिते वा विही भणितो ॥४२५३॥

थलसंघट्टलेवलेवोवरिपहेसु विज्जमाणेसु वि अववादेण णावं दुरुहेज्जा ।

इमेहिं कारणेहिं –

बितियपय तेण सावय, दुब्भिक्खे कारणे व आगाढे ।
कज्जुवहि मगर वुज्झण, नावोदग तं पि जयणाए ॥४२५४॥

तेसु थलाइपहेसु सरीरोवहितेणा दुविहा होज्ज, सीहादिसावयभयं वा होज्ज, भिक्खा वा न लब्भइ, आगाढं वा अहिडक्कविसविसूइयादि गिलाणकज्जं वा होज्ज, एवमादिकारणेहिं खिप्पं ओसहेहिं कज्जं

हवेज्ज, अतितुरियं वा कुलाइकज्जं हवेज्ज, उवकरणुप्पादणार्थं वा गच्छे, लेवलेवोवरिएहिं वा मगरभयं, अहवा लेवलेवोवरिएहिं बुज्झणभयं, एवमादिएहिं कारणेहिं णावातारिमं उदगं गच्छेज्जा, तं पि जयणाए गच्छइ ।

अहवा – "कज्जुवहि" त्ति एगाभोगो उवही करेज्जा । किं कारणं ? कयाइ पडिणीएहिं उदगे छुब्भेज्ज, तत्थ मगरभया एगाभोगकएसु पादेसु आरुभइ, एगाभोगकएसु वा बुज्झइ – तरतीत्यर्थः । णावाए वा विणट्ठाए एगाभोगकए दगं तरंतीत्यर्थः ।

अधवा – णावोदगं "तं पि जयणाए" त्ति जइ बलाभियोगेणं णावाइउदगं उस्सिंचावेज्जेज्जा, तं जयणाए उस्सिंचियव्वं ॥४२५४॥

तं पुण एगाभोगं उवकरणं कहं करेंति ? अत उच्यते –

पुरतो दुरूहणमेगंते, पडिलेहा पुव्व पच्छ समगं वा ।
सीसे मग्गतो मज्झे, बितियं उवकरण जयणाए ॥४२५५॥

ण गिहत्थाणं पुरतो उवकरणं पडिलेहेति, एगाभियोगं वा करेति, दुरूहणित्ता णावं दुरुहित्तुकामो एगंतमुवक्कमित्ता उवकरणं पडिलेहेति, अहोकायं रयहरणेण, उवरिकायं मुहणंतगेण, भायणे य एगाभोगे बंधित्ता तेसिं उवरिं उवहिं सुनियमितं करेइ, भायणमुवहिं च एगट्ठा करोतीत्यर्थः ।

अन्ने भणंति – सव्वोवही (एगट्ठा कज्जति भायणं उमत्थिए) एगट्ठाणे पुढो कज्जति ।

'पुव्वपच्छसमगं व" त्ति गिहत्थाणं किं पुव्वं दुरुहियव्वं अह पच्छा अध समगं ?

एत्थ भण्णति – जदि य थिरा णावा ण डोलायति तो पुव्वं दुरुहियव्वं, समगं वा, ण पच्छा ।

अध पंता तो ण पुव्वं, मा अमंगलमिति काउं रूसेज्ज । तेसिं पंताण भावं णातुं समगं पच्छा वा आरुभेज्ज । "सीसे" त्ति णावाए सीसे ण दुरूहियव्वं, तं देवताणं ठाणं । "मग्गतो" त्ति पच्छतो वि ण दुरुहियव्वं, तं णिज्जामगट्ठाणं । मज्झे विं ण दुरुहियव्वं तं कूवगट्ठाणं, तत्थ वा चरंता भायणादि विराहेज्ज । सेसमज्झे दुरूहियव्वं । जदि मज्झे ठातो णत्थि तो सेसंते निराबाहे ठाति, जत्थ वा ते ठवेंति तत्थ ठायंति । सागारं भत्तं पच्चक्खाति त्ति, णमोक्कारपरो ठायति । उत्तरंतो ण पुव्वमुत्तरति, मज्झे उत्तरति, ण पच्छा । सारुवहिं पुव्वमेव अप्पसागारिया कज्जति । उस्सग्गेण तरपन्नं ण दायव्वं । अह तरपन्नं नाविओ मग्गेज्ज, ताहे अणुसट्ठिधम्मकहादीहिं मेल्लाविज्जति । अमुंचंते बितियपदेण दायव्वं, तत्थ वि आत्मोपकरणं जं तं पंतं दिज्जति, जदि तं णेच्छति रुंभति वा तत्थ अणुकंपाए जदि अन्नो देज्ज सो न वारेयव्वो, अप्पणा वा अण्णतो मग्गित्ता दायव्वं ॥४२५५॥

॥ इति विसेस-निसीहचुण्णीए बारसमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥

त्रयोदश उद्देशकः

उक्तो द्वादशमोद्देशः । इदानीं त्रयोदशमः ।

तत्थ संबंधगाहा इमा –

णावाए उत्तिण्णो, इरियापहिताए कुणति उस्सग्गं ।
तमणंतरादि पुढविसु, णिवारणट्ठेस संबंधो ॥४२५६॥

संघट्टादि जाव णावाए उत्तिण्णो उदगं 'इरियावहियं पडिक्कमइ' तं उस्सग्गं अण्णं वा चेट्ठा उस्सग्गं कत्थ करेति त्ति कत्थ वा न करेइ त्ति एस संबंधो ॥४२५६॥

संबंधाणंतरं इमं सुत्तं –

जे भिक्खू अनंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू मट्टियाकडाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू चित्तमंताए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू चित्तमंताए लेलूए ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टियमक्कडासंताणगंसि ठाणं वा सेज्जं वा णिसेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति॥सू०॥८॥

ससणिद्ध ससरक्ख सिला लेलू कोलावास सअंडे सपाणे सबीए सहरिए उत्तिंग-पणग-सउस्सदग-मट्टिय-मक्कडग-संकमणं। एते सुत्तपदा।

इमं वक्खाणं –

पुढवीमादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
तेसुट्ठाणादीणी, चेएंताणादिणो दोसा ॥४२५७॥

ठाणं काउस्सग्गं, आदिसद्दातो णिसीयण-तुयट्टणा चेयणकरण, [1]अणंतरहिया णाम सचित्ता, तम्मि सट्ठाणे पच्छित्तं चउलहुं ॥४२५७॥

अहवा –

अंतररहिताणंतर, ईसिं उल्ला उ होति ससणिद्धा।
रन्नरएण विभिन्ना, फासुगपुढवी तु ससरक्खा ॥४२५८॥

अन्तरणं ववधाणं, तेण रहिता निरंतरमित्यर्थः।

अधवा – पुढवी अणंतभावेण रहिता असंखा य जीविका पज्जत्तं संखेया वि।

अथवा – जीए पुढवीए अंता जीएहिं रहिया सा पुढवी अंतरहिया ण अंतरहिता सर्वा सचेतना न मिश्रा इत्यर्थः। ईसिं उल्ला ससणिद्धा, सेयं पुढवी अचित्ता सचित्तेण आरण्णरएण विलिभिन्ना ससरक्खा ॥४२५८॥

चित्तं जीवो भणितो, तेण सह गया तु होति सचित्ता।
पासाणसिला रुंदा, लेलू पुण मट्टिया लेट्टू ॥४२५९॥

सचेयणा रुंदा महासिला, सचित्तो वा लेल्लू लेट्ठुओ ॥४२५९॥

कोला उ घुणा तेसिं, आवासो तप्पतिट्ठियं दारुं।
अंडा तु मुदिंगादी, पाणग्गहणे तसा चउरो ॥४२६०॥
बीयं तु अप्परूढं, तदेव रूढं तु होति हरितादी।
कीडगनगरुत्तिंगो, सअंकुरनिरंकुरो पणओ ॥४२६१॥

कोला घुणा, तेसिं आवासो दारुए वा, "जीवपतिट्ठिए" "सपाणे" वा दारुए पुढवीए वा, एवं "सबीए" दारुए पुढवीए वा अणंकुरियं, तं चेव अंकुरमिण्णं हरितं, कीडयणगरगो उत्तिंगो, फडगद्दभो वा, पणगो पंचवण्णो संकुरो अणंकुरो वा, उसो नेहो, अंडगा मुइंगादिगा, दगमट्टिया चिक्खल्लो सचित्तो मीसो वा ॥४२६१॥

---

[1] गा० ४२५५।

मक्कडसंताणा पुण, लूता फुडतो य अफुडितो जाव ।
संकमणं तस्सेव उ, पिवीलिगादीणि अण्णेसिं ॥४२६२॥

मक्कोडियफुडगं अफुडियसंताणगं, तस्सेव फुडियस्स गमणकाले संकमणं भण्णति ।

अहवा – संताणगसंकमगं पिपीलिकमक्कोडगादीणं भण्णति । ठाणं उद्धट्ठाणं, सेज्जा सयणिज्जं, णिसेज्जा आसणं, णिसीहिका सज्झायकरणं । एएसिं चेयणकरणं आवण्णे सट्ठाणपच्छित्तं, आणादिया य दोसा, आयसंजमे य दोसा जहासंभवं भाणियव्वा ॥४२६२॥

पुढवादिएगिंदियाण संघट्टणादिकरणे वेयणोवमा इमा –

थेरुवमा अक्कंते, मत्ते सुत्ते व जारिसं दुक्खं ।
एमेव य अव्वत्ता, वियणा एगिंदियाणं तु ॥४२६३॥

जहा थेरस्स जराए जिण्णस्स वरिससतायुस्स तरुणेण वलवता जमलपाणिणा सव्वत्थामेण अक्कंतस्स जारिसा वेयणा तारिसा पुढविकाइयाण अधिकतरा ठाणादिठियक्कंतेहिं वेयणा भवति, ण य अव्वत्तणओ लक्खिज्जति । वेयणा य जीवस्स भवति, णाजीवस्स । ते य जीवलिंगा एगिंदिएसु अव्वत्ता । जहा मत्ते सुत्ते वा अव्वत्तं सुहदुक्खलिंगं, एवं एगिंदिएसु वि अव्वत्ता चेयणा दट्ठव्वा लिंगं च ॥४२६३॥

किं च एगिंदियाण उवयोगपसाहगा इमे दिट्ठंता –

भोयणे वा रुक्खेते वा, जहा णेहो तणुत्थितो ।
पावल्लं नेहकज्जेसु, कारेतुं जे अपच्चलो ॥४२६४॥

जहा रुक्खे ति भोयणे सुहुमो णेहगुणो अत्थि, जतो तेण आहारिएण सरीरोवचयो भवति ण य अव्वत्ततणओ लक्खिज्जति, तहा वा पुढवीए अत्थि नेहो सुहुमो, सो वि सुहुमत्तणेणं ण दिस्सति, जओ पुढवीए तणुट्ठितो अल्पः ततो तेण प्रावल्ये नेहकज्जे हत्थादि सरीरमक्खणं कर्तुमशक्यं ॥४२६४॥

अस्स दिट्ठंतस्स उवसंघारो –

कोहाई परिणामा, तहा एगिंदियाण जंतूणं ।
पावल्लं तेसु कज्जेसु, कारेउं जे अपच्चला ॥४२६५॥

एगिंदियाण कोहादिया परिणामा, सागारिया य उवयोगा, तहा सातादिया तु वेयणातो, एते सव्वे भावा सुहुमत्तणओ अणतिसयस्स अणुवलक्खा । जहा सण्णी पज्जत्ता कोहुदया उ अक्कोसंति तिवलिं भिगुडिं वा करेंति तेनु ते अप्पीतिकज्जेसु तहा प्राबल्येन एगिंदिया अप्पच्चला असमर्था इत्यर्थः । जम्हा पुढवीकाया एवंविधवेदणमणुभवंति तम्हा तेसु ठाणादियं ण कायव्वं ॥४२६५॥

अववादतो वा करेज्ज –

वोसट्ठकायअसिवे, गेलण्णऽद्धाण संभमेगतरे ।
वसहीवाघाएण य, असती जयणा उ जा जत्थ ॥४२६६॥

वोसट्ठकायो पाओवगतो सो परप्पओगा अणुकंपणेण पडिणीयत्तणेण वा अणंतरहियाठाणेसु ठविज्जेज्जा, असिवगहिया वसहिमलभंता रुक्खादिहेट्ठेसु ठायंति, वेजट्ठा ओसहट्ठा वा गिलाणो जया णिज्जति तदा वसधि-अभावे अथंडिले ठाएज्ज, अद्धाणपडिवण्णा वा ठायंति, अगणिमादिसंभमे वा वसहिणिग्गया उप्पहे ठायंति, वसहिवाघाए वा ठायंति, सव्वहा वा वसहिअभावे ठायंति, तेहिं अणंतरहितादिअथंडिलाण जा जत्थ जयणा संतरणमाइया संभवति पडिलेहण-पमज्जणादिया वा सा सव्वा वि कायव्वा ॥४२६६॥

जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुकालंसि वा कामजलंसि वा
दुव्वद्धे दुण्णिखित्ते अनिकंपे चलाचले
ठाणं वा सेज्जं वा (णिसेज्जं वा) निसीहियं वा चेएइ,
चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

थूणादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू ठाणादीणिं, चेतेंताणादिणो दोसा ॥४२६७॥

थूणा वेली, गिहेलुको उंबरो, उसुकालं उक्खलं, कामजलं ण्हाणपीढं ॥४२६७॥

थूणाओ होति वियली, गिहेलुओ उंबरो उ णायव्वो ।
[1]उदुखलं उसुकालं, सिणाणपीढं तु कामजलं ॥४२६८॥

गतार्था । णवरं – सिणाण मज्जणा दो वि एगट्ठा ॥४२६८॥ "[2]दुब्बद्धे" त्ति बंधो दुविधो – रज्जुबंधो कट्ठादिसु वेहबंधो वा, तं ण सुबद्धं दुबद्धं । "दुण्णिक्खित्तं" ति णिहितं स्थापितमित्यर्थः, तं ण सुणिक्खित्तं दुण्णिक्खित्तं । केसिं चि दुणिरिक्खियं ति आलावगो । तं अपडिलेहियं दुप्पडिलेहियं वा । न निः प्रकंपं अनिः प्रकंपं, अनिःप्रकम्पित्वादेव चलाचलं चलाचलनस्वभावं । तादृशे स्थानादि न कर्तव्यम् ।

रज्जू वेहो बंधो, णिहयाणिहतं तु होति णिक्खमणं ।
अनिरिक्ख अपडिलेहा, चलाचलमणिप्पकंपं तु ॥४२६९॥

गतार्था । णिहताणिहय त्ति णिक्खयमणिक्खयं वा ॥४२६९॥

तारिसे सदोसे ठाणाइं करेंतस्स इमे दोसा –

पवडंते कायवहो, आउवघातो य भाणभेदादी ।
तस्सेव पुणक्करणे, अहिगरणं अण्णकरणं वा ॥४२७०॥

ततो पडंतो छण्हं कायाणं विराहणं करेज्ज । अप्पणो वा से हत्थपादादीविराहणा हवेज्ज । भाणादी वा उवकरणजातं विराधेज्ज । तस्स थूणादियस्स पाडियस्स रज्जूबद्धस्स वा ओढितस्स वेहबद्धस्स वा विसंघातियस्स पुणो करणे, अण्णस्स वा अहिणवस्स करणे अधिकरणं भवति । पडिसिद्धकरणे आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं ॥४२७०॥

वितियपदं –

वोसट्ठकायअसिवे, गेलण्णद्धाण संभमेगतरे ।
वसहीवाघातेण य, असती जयणा य जा जत्थ ॥४२७१॥ पूर्ववत्

१ उसुयाल सुक्कलं वा, इत्यपि पाठः । २ सूत्र ९ ।

जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अंतरिक्खजायंसि वा
दुब्बद्धे दुण्णिखित्ते अनिकंपे चलाचले
ठाणं वा सेज्जं वा (णिसेज्जंवा) णिसीहियं वा चेएइ,
चेएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०।।

कुलियं कुडं तं जतो णिच्चमवतरति, इयरा सहकरभएण भित्ती, नईणं वा तडी भित्ती, सिला-लेट्ठू पुव्वुत्ता। पढमसुत्ते णियमा सचित्ता, इह भयणिज्जा । सेपं पूर्ववत् ।

कुलियादि ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसु ठाणादीणी, चेतेंते आणमादीणि ।।४२७२।।

कुलियं तु होइ कुडं, भित्ती तस्सेव गिरिनदीणं तु ।
सिल-लेलू पुव्वुत्ता, तत्थ सचित्ता इहं भयिता ।।४२७३।।

वोसट्ठकायअसिवे, गेलण्णऽद्धाण संभमेगतरे ।
वसहीवाघातेण य, असती जयणा य जा जत्थ ।।४२७४।। पूर्ववत्

जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा
पासायंसि वा हम्मतलंसि वा दुब्बद्धे दुण्णिखित्ते अनिकंपे चलाचले
ठाणं वा सेज्जं वा (णिसेज्जं वा) निसीहियं वा चेएइ,
चेएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।११।।

खंधं पागारो पेढं वा, फलिहो अग्गला, अकुड्डो-मंचो, सो य मंडवो, गिहोवरि मालो दुभूमिगादी, णिज्जूहगवक्खोवसोभितो पासादो, सव्वोवरि तलं हम्मतलं भूमितलं तरं वा हम्मतलं । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती –

खंधादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसु ठाणादीणिं, चेतेंते आणमादीणि ।।४२७५।।

खंधो खलु पायारो, पेढं वा फलिहो तु अग्गला होइ ।
अहवा खंधो उ घरो, मंचो अकुड्डो गिहे मालो ।।४२७६।।

अहवा – खंधो घरो मृदिष्टकदारुसंघातो स्कन्ध इत्यर्थ –

वोसट्ठकायअसिवे, गेलण्णद्धाणसंभमेगतरे ।
वसहीवाघातेण य, असती जयणा य जा जत्थ ।।४२७७।। पूर्ववत्

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा सिप्पं वा सिलोगं वा अट्ठावयं वा
कक्कडगं वा वुग्गहंसि वा सलाहत्थयंसि वा सिक्खावेइ,
सिक्खावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१२।।

सिप्पं तुण्णगादि, सिलोगो वण्णणा, अट्ठावदं जूतं, कक्कडगं हेऊ, वुग्गहो कलहो, सलाहा कव्वकरणप्पओगो । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती –

सिप्पसिलोगादीहिं, सेसकलाओ वि सूइया होंति ।
गिहि अण्णतित्थियं वा, सिक्खावेंते तमाणादी ॥४२७८॥

सेसा उ गणियलक्खणसउणरुयादि सूचिता, ण गिही अण्णतित्थी वा सिक्खावेयव्वो, जो सिक्खावेति तस्स आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं ॥४२७८॥

सिप्पसिलोगे अट्ठावए य कक्कडग-वुग्गह-सलागा ।
तुण्णागे वण्णजुते, हेतू कलहुत्तरा कव्वे ॥४२७९॥

पुव्वद्धेण सुत्तपदसंगहो । पच्छद्धेण जहासंखं तत्थ उदाहरणं सिप्पं, जं आयरियउवदेसेण सिक्खिज्जति, जहा तुण्णागतूणादि, सिलोगो गुणवयणेहिं वण्णणा, अट्ठापदं चउरंगेहिं जूतं ।

अहवा – इमं अट्ठापदं –

अम्मे ण वि जाणामो, पुट्ठो अट्ठापयं इमं बेंति ।
सुणगा वि सालिकूरं, णेच्छंति परं पभातम्मि ॥४२८०॥

पुच्छितो अपुच्छितो वा भणाति – अम्हे णिमित्तं ण सुट्ठु जाणामो । एत्तियं पुण जाणामो परं पभायकाले दधिकूरं सुणगा वि खातिउं णेच्छिहिंति । अर्थपदेन ज्ञायते सुभिक्खं । [1]कक्कडग हेऊ जत्थ भणिते उभयहा पि दोसो भवति – जहा जीवस्स णिच्चत्तपरिग्गहे णारगादिभावो ण भवति, अणिच्चे वा भणिते विणासी घटवत् कृतविप्रणाशादयश्च दोषा भवंति ।

अहवा – कर्कटहेतुसर्वभावैक्यप्रतिपत्तिः, अत्रोभयथा दोषो, मूर्तिमदमूर्तसुखदुःखभेदतो ज्ञानकालभेदाच्च कारकभूतविशेषाच्च विरुद्धं सर्वभावैक्यं, अथ नैवं ततः प्रतिज्ञाहानिः । "[2]वुग्गहो" – रायादीणं अमुककाले कलहो भविस्सति, रण्णो वा जुद्धं सगडमादेसेण कलहे जयमादिसति, दोण्हं वा कलहंताणं एक्कस्स उत्तरं कहेति । "[3]सलाह" त्ति कव्वसद्भावं कहेति, कव्वेहिं वा विकोवितो कव्वं करेति । सलाहकहत्थेणं ति सव्वकलातो सूतितातो भवंति । ताणि अण्णतित्थिगादीणि सिक्खावेंति चउलहुं, आणादी संजमे य दोसा, अधिकरणं, उम्मग्गोवदेसो य ॥४२८०॥

इमं बितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, सिक्खावणया उ जयणाए ॥४२८१॥

रायादिमण्णं वा ईसरं सिक्खावेंतो असिवगहितो तप्पभावाओ ठाणगादि लभति, ओमे वा फव्वति, सोच्चा रायदुट्ठे ताणं करेति, बोहिगादिभये ताणं करेति, गिलाणस्स वा ओसहातिएहिं उवग्गहं करिस्सति, अद्धाणरोहगेसु वा उवग्गहकारी भविस्सति, एवमादिकारणे अविसिक्खऊण इमाए जयणाए सिक्खावेति ॥४२८१॥

---

१ गा० ४२७९ । २ गा० ४२७९ । ३ गा० ४२७९ ।

संविग्गमसंविग्गो,-धाविय तु गाहेज्ज पढमता गीयं ।
विवरीयमगीए पुण, साहिग्गहमाइ तेण परं ॥४२८२॥

पणगपरिहाणीए जाहे चउलहुं पत्तो तेसु जतिउं तेसु वि असंथरंतो ताहे संविग्गोधावितं गीयत्थं सिक्खवेति, पच्छा असंविग्गोधावितं गीयत्थं अगीएसु विवरीयं कज्जति, ततो असंविग्गोधावितं अगीतं, ततो संविग्गअगीयं । अत्र विपरीतकरणे हेतुर्मा तदभावनां करिष्यति । सविग्न अगीतार्थ पच्छा गहियाणुव्वयं, ततो पच्छा दंसणसावगं, ततो पच्छा अहाभद्दयं, ततो मिच्छं अणभिग्गहाभिग्गहियं ॥४२८२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा आगाढं वयइ,
वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा फरुसं वयइ,
वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा आगाढं फरुसं वयइ,
वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा अण्णयरीए अच्चासायणाए
अच्चासाएइ, अच्चासाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

आगाढ फरुस मीसग, दसमुद्देसम्मि वण्णितं पुव्वं ।
गिहिअण्णतित्थिएहि व, तं चेव य होति तेरसमे ॥४२८३॥

जहा दसमुद्देसे – भदंतं प्रति आगाढ-फरुस-मीसगसुत्ता भणिता तहा इहं गिहत्थअण्णउत्थियं प्रति वक्तव्या: ॥४२८३॥

इमेहिं जातिमादिएहिं गिहत्थं अण्णतित्थियं वा ऊणतरं परिभवंतो आगाढं फरुसं वा भणति ।

जाति कुल रूव भासा, धण बल पाहण्ण दाण परिभोगे ।
सत्त वय बुद्धि नागर, तक्कर भयके य कम्मकरे ॥४२८४॥

जाति कुल रूव भासा – धणेण, बलेण, पाहण्णत्तणेण य । एतेहिं दाणं प्रति अदाता सति वि धणे । किमण्णत्तणेण ? अपरिभोगी, हीनसत्वः, वयसा अपडुप्पन्नो मंदबुद्धिः, स्वतः नागरो तं ग्राम्यं परिभवति, तथा गिहत्थं अण्णतित्थियं वा तक्कर-भृतक-कर्मकरभावेहिं ठियं परिभवति ॥४२८४॥

जति ताव मम्मपरिघट्टियस्स मुणिणो वि जायते मंतुं मण्णुं ।
किं पुण गिहीण मंतुं (मण्णुं), ण भविस्सति मम्मविद्धाणं ॥४२८५॥

जति ताव कोहणिग्गहपरा वि जतिणा जातिमादिमम्मेण घट्टिया कुप्पंति किं पुण गिहिणो ? सुतरां कोपं करिष्यन्तीत्यर्थः ॥४२८५॥

सो य उप्पण्णमंतू इमं कुज्जा –

सिण्णं मरेज्ज मारेज्ज, वा वि कुज्जा व गेण्हणादीणि ।
देसच्चागं व करे, संतासंतेण पडिभिण्णो ॥४२८६॥

अप्पणा वा सण्णुप्पण्णो मरेज्ज, कुविनो वा साहुं मारेज्ज, रुट्ठो वा साहुं रायकुलादिणा गेण्हावेज्जा, साहुणा वा सेहियो देसच्चागं करेज्ज, संतेण असंतेण वा प्रत्याभिण्णो एवं कुर्यात् ॥४२८६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्मं करेति,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा भूइकम्मं करेति,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा पसिणं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा पसिणापसिणं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा तीयं निमित्तं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा लक्खणं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा वंजणं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा सुमिणं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा विज्जं पउंजइ,
पउंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा मंतं पउंजइ,
पउंजंतं वा साइज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा जोगं पउंजइ,
पउंजंतं वा साइज्जति ॥सू०॥२७॥

इमा सुत्तपदसंगहणी –

कोउग-भूतीकम्मं, पसिणापसिणं निमित्ततीतं वा ।
लक्खण वंजण सुमिणं, विज्जा मंतं च जोगं च ॥४२८७॥

गिहिअण्णतित्थियाण व, जे कुज्जा वागरेज्ज वा भिक्खू ।
विज्जाइं च पउंजे, सो पावति आणमादीणि ॥४२८८॥

कोउअभूतीण करणं, पसिणस्स पसिणापसिणस्स निमित्तस्स लक्खणवंजणसुविणाण य वागरणं, सेसाणं विज्जादियाण पउंजणता ॥४२८८॥

कोउआदियाण इमं विसेसरूवं –

ण्हाणादिकोउकम्मं, भूतीकम्मं सविज्जगा भूती ।
विज्जारहिते लहुगो, चउवीसा तिण्णि पसिणसया ॥४२८९॥

णिंदुमादियाण मसाणचच्चरादिसु ण्हवणं कज्जति, रक्खाणिमित्तं भूती, विज्जाभिमंतीए भूतीए चउलहुं । इयराए मासलहुं । पसिणा एते पण्हवाकरणेसु पुव्वं आसी ॥४२८९॥

पसिणापसिणं सुविणे, विज्जासिद्धं तु साहति परस्स ।
अहवा आइंखिणिया, घंटियसिट्ठं परिकहेति ॥४२९०॥

सुविणयविज्जाकहियं कधितस्स पसिणापसिणं भवति ।

अहवा – विज्जाभिमंतिया घंटिया कण्णमूले चालिज्जति, तत्थ देवता कधिति, कहेंतस्स पसिणापसिणं भवति, स एव इंखिणी भण्णति ॥४२९०॥

लाभालाभसुहदुहं, अणुभूय इमं तुमे सुहिहिं वा ।
जीवित्ता एवइयं, कालं सुहिणो मया तुज्झं ॥४२९१॥

पुच्छगं भणति – अतीतकाले वट्टमाणे वा इमो ते लाभो लद्धो, अणागते वा इमं भविस्सति । एव अलाभं पि निद्दिस्सति, एवं सुहदुक्खे वि संवादेति ।

अहवा भणति – सुहीहिं ते इमं लद्धमणुभूतं वा ।

अहवा भणाति – मातापितादिते सुहिणो एवतियं कालं जीविया, अमुगे काले एव मता ॥४२९०॥

दुविहा य लक्खणा खलु, अब्भिंतरबाहिरा उ देहीणं ।
बहिया सर-वण्णाई, अंतो सब्भावसत्ताई ॥४२९२॥

बत्तीसा अट्ठसयं, अट्ठसहस्सं च बहुतराइं च ।
देहेसु देहीण लक्खणाणि सुहकम्मजणियाणि ॥४२९३॥

पागयमणुयाणं बत्तीसं, अट्ठसयं बलदेववासुदेवाणं, अट्ठसहस्सं चक्कवट्टितित्थकराणं । जे पुट्ठा हत्थपादादिसु लक्खिज्जंति तेसिं पमाणं भणियं, जे पुण अंतो स्वभावसत्तादी तेहिं सह बहुतरा भवंति, ते य अण्णजम्मकयसुभणामसरीरअंगोवंगकम्मोदयाओ भवंति ॥४२९३॥

लक्खणवंजणाण इमो विसेसो –

माणुम्माणपमाणादिलक्खणं वंजणं तु मसगादी ।
सहजं च लक्खणं, वंजणं तु पच्छा समुप्पण्णं ॥४२९४॥

माणादियं लक्खणं, मसादिकं वंजणं । अहवा – जं सरीरेण सह उप्पण्णं तं लक्खणं, पच्छा समुप्पण्णं वंजणं ॥४२९४॥

माणुम्माणपमाणस्स य इमं वक्खाणं –

जलदोणमद्धभारं, समुहाइं समुस्सितो व जा णव तु ।
माणुम्माणपमाणं, तिविहं खलु लक्खणं एयं ॥४२९५॥

जलभरियाए दोणीए जलस्स दोणं छड्डेंतो माणजुत्तो पुरिसो, तुलारोवितो अद्धभारं तुलेमाणो उम्माणजुत्तो पुरिसो भवति, बारसंगुलपमाणाइं समुहाइं णव समुस्सितो पमाणवं पुरिसो, एवमादि तिविधलक्खणेण आदिस्सति – तुमं रायादि भविस्ससि ॥४२९५॥

इदाणिं देवाणं भण्णति –

भवपच्चइया लीणा, तु लक्खणा होंति देवदेहेसु ।
भवधारिणिएसु भवे, विउव्वितेसुं तु ते वत्ता ॥४२९६॥

देवाणं भवधारिणिज्जसरीरेसु लक्खणा लीणा अनुपलक्ष्या उत्तरवैक्रियसरीरे व्यक्ता लक्षणा ॥४२९६॥

इदाणिं णारक-तिरियाणं भन्नति –

ओसण्णमलक्खणसंजुयाओ बोंदीओ होंति निरएसु ।
नामोदयपच्चइया, तिरिएसु य होंति तिविहा उ ॥४२९७॥

ओसण्णमेकांतेनैव नेरइयाणं अलक्षणयुक्ता बोंदि सरीरमित्यर्थः । तिरिएसु लक्खण-अलक्खण-मिस्सा य तिविहा सरीरा भवंति, लक्खणमलक्खणं वा सव्वं णामकम्मुदयाओ ॥४२९७॥

इदाणिं सुविणं भणाति –

नोइंदियस्स विसओ, सुमिणं जं सुत्तजागरो पासे ।
सुहदुक्खपुव्वरूवं, अरिट्ठमिव सो णरगणाणं ॥४२९८॥

णोइंदियओ मणो । तव्विसतो सुविणो नोइंद्रियविषयमित्यर्थः, मतिज्ञानविषयश्च । तं च सुविणं पायो सुत्तजागरावत्थाए पेक्खति, आगमिस्स सुहदुक्खस्स सो णिमित्तं भवति । जहा मणुयाणं मरणकाले पुव्वामेव अरिट्ठगमुप्पज्जति तं च सुहदुक्खणिमित्तं तिविधं भवति । कातियं वातियं माणसियं भवति ॥४२९८॥

जतो भण्णति –

अक्खी बाहू फुरणादि काइओ वाइओ तु सहसुत्तं ।
अह सुमिणदंसणं पुण, माणसिओ होइ दुप्पाओ ॥४२९९॥

कातितो बाहुफुरणादि अणेगविहो, वातितो वि सहसा भणितादि अणेगविधो माणसिओ वि (सुमिण दंसणादि अणेगविधो) ।।४२९९।।

सुविणुप्पातो इमो पंचविहो –

[1] आहातच्च-[2]पदाणे, [3]चिंता [4]विवरीय तह य [5]अव्वत्तो ।
पंचविहो खलु सुमिणो, परूवणा तस्सिमा होइ ।।४३००।।

अहातच्चं इमे पस्संति, इमं च से सरूवं –

पाएण [1]अहातच्चं, सुमिणं पासंति संवुडा समणा ।
इयरे गिही त भतिता, जं दिट्ठं तं तहा तच्चं ।।४३०१।।

सव्वपावविरता संवुडा । इतरे पासत्था गिहत्था य अहातच्चं प्रति भयणिज्जा । जहेव दिट्ठो तहेव जो भवति सो अहातच्चो भवति ।।४३०१।।

पदाणादियाण तिण्हं इमं सरूवं –

पयतो पुण संकलिता, चिंता तण्हाइ तस्स दगपाणं ।
मेज्झस्स दंसणं खलु, अमेज्झमेज्झं च विवरीतं ।।४३०२।।

[2]प्रततः स्वप्नसंतानः शृंखलावत् । जागरतेण जं चितियं तं सुविणे पासति, एस [3]"चिंता" सुविणो । सुइ सुगंधे मेज्झं, इतरं अमेज्झं । मेज्झे दिट्ठे सुविणे फलं अमेज्झं भवति । अमेज्झे दिट्ठे फलं से मेज्झं भवति । एस [4]विवरीतो सुमिणो ।।४३०२।।

इमो "[5]अव्वत्तो" –

जं ण सरति पडिबुद्धो, जं ण वि भावेति पस्समाणो वि ।
एसो खलु अव्वत्तो, पंचसु विसएसु णायव्वो ।।४३०३।।

विवुद्धो वि जं फुडं ण संभरति, संभरंतो वा जस्सत्थं ण वि बुज्झति सो अव्वत्तो । सो य पंचेंदियविसए संभवति । सव्वे वा सुविणे पायो इंदियविसए भवंति ।।४३०३।।

इदाणिं विज्जा मंता –

विज्जा मंत परूवण, जोगो पुण होति पायलेवादी ।
सो उ सविज्ज अविज्जो, सविज्ज संजोयपच्छित्तं ।।४३०४।।

इत्थिअभिहाणा विज्जा, पुरिसाभिहाणो मंतो । अहवा – सोवचारसाधणा विज्जा, पढियसिद्धो मंतो । वसीकरणविद्देसणुच्छादणापादलेवंतद्धाणादिया जोगा बहुविधीता, ते पुण सव्वे वि सविज्जा अविज्जा वा । सविज्जेसुं चउलहुं, इयरेसु मासलहुं, मीसेसु संजोगपच्छित्तं । गिहीणं अण्णतित्थियाण वा एतेसु कोउगादिएसु जोगपज्जवसाणेसु कहिज्जमाणेसु अधिकरणं, जं वा ते कहेंति उच्छादणादि तण्णिप्फण्णं पावति ।।४३०४।।

---

[1] से ५ तक गा० ४३०० ।

वितियपदे कोउगादि करेज्ज कहेज्ज वा मंतादी –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोहकज्जेऽट्ठजाय वादी पभावणता ॥४३०५॥

असिवादिसु जं जत्थ संभवति तं तत्थ कायव्वं, कुलादिकज्जेसु वा अट्ठजायणनिमित्तं वा वादी वा करेज्ज, पवयणपभावणट्ठा वा करेज्ज ॥४३०५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा नट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गं वा पवेएइ, संधिं वा पवेएइ, मग्गाओ (मग्गेण) वा संधिं पवेएइ, संधीओ वा मग्गं पवेएइ, पवेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

इमो सुत्तत्थो –

णट्ठा पंथफिडिता, मूढा उ दिसाविभागमसुणंता ।
तं चिय दिसं पहं वा, वच्चेंति विवज्जियावण्णा ॥४३०६॥

पंथप्रणष्टानां पंथं कथयति, अडवीए वा मूढाणं दिसीभागममुणंताणं दिसिविभागेण पहं कहेति, जतो चेव आगता तं चेव दिसं गच्छंताणं विवज्जतावण्णाणं सब्भावं कहेति ॥४३०६॥

मग्गो खलु सगडपहो, पंथो व तव्विवज्जिता संधी ।
सो खलु दिसाविभागो, पवेयणा तस्स कहणा उ ॥४३०७॥

संधी खेडगो, जतो गमिस्सति सो दिसाभागो, तं तेसिं मूढाणं पवेदेति कथयतीत्यर्थः । सगडमग्गाओ उज्जुसंधिसंखेडयं पवेदेति, उज्जुसंधिसंखेडयाओ वा सगडमग्गं पवेदेति, कहयति त्ति वुत्तं भवति ।

अहवा – सव्वो चेव पहो मग्गो भण्णति, संधी पंथवोधेयं ।

अहवा – पंथुग्गमो चेव संधी, पंथस्स वा संधी अंतरे कहेति, संधीओ वा जो वामदक्खिणो पहो तं कहेति ॥४३०७॥

गिहि-अण्णतित्थियाण व, मग्गं संधिं व जो पवेदेति ।
मग्गातो वा संधिं, संधीतो वा पुणो मग्गं ॥४३०८॥ गतार्था

तेसिं गिहिअण्णतित्थियाणं मग्गादि कहेंतो इमं पावति –

सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं तहा दुविहं ।
पावंति जम्हा तेणं, एते उ पए विवज्जेज्जा ॥४३०९॥

दुविहा आयसंजमविराहणा –

तेसिं साधुचिधितेण पहेण गच्छंताणं इमे अण्णे दोसा –

छक्कायाण विराहण, सावय-तेणेहि वा वि दुविहेहिं ।
जं पावंति जतो वा, पदोस तेसिं तहऽन्नेसिं ॥४३१०॥

जं ते गच्छंता छक्काए विराहेंति, स चिंधंतो तण्णिप्फण्णं पावति। तेण वा पहेण गच्छंता ते सावतोवद्दवं सरीरोवहितेणोवद्दवं पावेंति त्ति, जं वा ते गच्छंता अण्णेसिं उवद्दवं करेंति, जतो वा ते णिद्दिट्ठा तो स्वयं पावंति, ततो तस्स पंथचिधगस्स साधुस्स अन्नस्स वा साधुस्स पदोसमावज्जेंति अम्हे पडिणीयत्तणेण एरिसपंथे छूढा, इमेण पंतावणादी करेज्ज ॥४३१०॥

अववादातो चिंधिज्ज –

चिइयपयमणप्पज्झे, पवेदे अविकोविते व अप्पज्झे।
अद्धाण असिव अभिओग आतुरादीसु जाणमवि ॥४३११॥

खित्तादिगो अणप्पज्झो सेहो वा अविकोवितो चिंधेज्ज. अप्पज्झो वि अद्धाणे वा सत्थस्स पहं अजाणंतस्स चिंधेज्ज, असिवे गिलाणकज्जे वा वेज्जस्स कप्पायरियस्स वा आणिज्जंतस्स पंथमुवदिसति, "अभिओगो" त्ति वला रातिणा देसितो गहितो, एवमादिकारणेहिं जाणंतो वि कहितो सुद्धो ॥४३११॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा धाउं पवेएइ,
पवेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा निहिं पवेएइ,
पवेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

यस्मिन् धम्यमाने सुवर्णादि पतते स धातुः।

अण्णतरागं धातुं, निहिं व आइक्खते तु जे भिक्खू।
गिहिअण्णतित्थियाण व, सो पावति आणमादीणि ॥४३१२॥

अण्णयरगहणातो बहुभेदा धातू। णिधाणं णिधी, णिहितं स्थापितं द्रविणजातमित्यर्थः। तं जो महाकालमतादिणा णाउं अक्खाति तस्स आणादिया दोसा ॥४३१२॥

इमे धातुभेदा –

तिविहो य होइ धातू, पासाणरसे य मट्टिया चेव।
सो पुण सुवण्ण-तउ-तंब-रयत-कालायसादीणं ॥४३१३॥

जत्थ पासाणे जुत्तिणा जुत्ते वा धम्ममाते सुवण्णादी पडति सो पासाणधातू, जेण धातुपाणिएण तंबगादि आसित्तं सुवण्णादि भवति सो रसो भण्णति, जा मट्टिया जोगजुत्ता अजुत्ता वा धम्ममाणा सुवण्णादि भवति सा धातुमट्टिया, कालायसं लोहं, आदिग्गहणाओ मणि-रयण-मोत्तिय-पवालागरादि ॥४३१३॥

णिहाणे इमो विगप्पो –

सपरिग्गहेतरो वि य, होइ तिहा जलगओ थलगओ वा।
निहितेतरो थलगतो, कयाकतो होति सव्वो वि ॥४३१४॥

सो णिही मणुयदेवतेहिं परिग्गहितो वा होज्ज अपरिग्गहितो वा। सो जले वा होज्ज थले वा। जा सो थले सो दुविहो – णिक्खतो वा अणिक्खओ वा। सव्वो चेव णिही सरूवेण दुविधो – कयरूवो अकयरूवो

वा। रूवगाऽऽभरणादि कयरूवो, चक्कलपिंडट्टितो अकयरूवो। सपरिग्गहे अधिकतरा दोसा कहं तस्स णिहाणग-सामिसमीवातो ॥४३१४॥

धातुणिहिदंसणे इमे दोसा –

> अधिकरणं कायवहो, धातुम्मि मयूरअंकदिट्ठंतो।
> अहिगरणं जा करणं, निहिम्मि मक्कोड गहणादी ॥४३१५॥

कायवधमंतरे वि असंजयपरिभोगे अधिकरणं भवति, धम्ममाणे पुढवातिकायविराधणा।

अहवा – तं चेव साधुं धातुवायं कारवेंति। एसो धातुदंसणे दोसो ॥४३१५॥

इमो णिहाणे मयूरंकदिट्ठंतो –

> मोर णिवं कियदीणार पिहियणिहिजाणएण ते कहिया।
> दिट्ठा ववहरमाणा, कओ एए परंपरा गहणं ॥४३१६॥

मयूरंको णाम राया। तेण मयूरंकेण अंकिता दीणारा आहणाविया। तेहिं दीणारेहिं णिहाणं ठवियं। तम्मि ठविते बहू कालो गतो।

तं केणइ णेमित्तिणा णिहिलक्खणेण णायं, तं तेहिं उक्खयं, ते दीणारा ववहरंता राय-पुरिसेहिं दिट्ठा।

सो वणितो तेहिं रायपुरिसेहिं रायसमीवं णीतो।

रण्णा पुच्छियं – कतो एते तुज्झ दीणारा ?

तेण कहियं – अमुगसमीवातो। एवं परंपरेण ताव णीयं जाव जेहिं उक्खत्तं, ते गहिता दंडिया य। असंजयणिग्गहणे अधिकरणं। णिहिलक्खणेण य निसि जागरणं कायव्वं।

अहवा – णिहिदंसणे अधिकरणं जागरणं णाम यजनकरणं, उवलेवनधूवपुप्फबलिमादि-करणे अधिकरणमित्यर्थः। णिहिक्खणणे य विभीसिगा मक्कोडगादी विसतुंडा भवंति, तत्थ आय-विराहणादी, रायपुरिसेहिं य गहणं, तत्थ गेण्हणकड्ढणादिया दोसा ॥४३१६॥

तत्थ इमं बितियपदं –

> असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
> अद्धाणरोहकज्जऽट्ठजातवादी पभावणादीसु ॥४३१७॥

असिवे वेज्जो आगतो तस्स दंसिज्जति धातू णिहाणं वा, ओमे असंयरंता गिहिअण्णतित्थिए सहाए केतुं धातुं करेंति, णिहिं वा गेण्हंति, रायदुट्ठे रण्णो उवसमणट्ठा सयमेव जो वा तं उवसमेति तस्स धातुं णिहाणं वा दंसेंति, बोधिगादिभयातो जो तारेति तस्स दंसेंति। गिलाणकज्जे सयं गिण्हंति, विज्जस्स वा दंसेंति, अद्धाणे जो णित्थारेति, रोहे असंयरंता सहायसहिता गेण्हंति।

अहवा – जो रोहे आधारभूतो तस्स दंसेति। कुलाइकज्जे वा, संजतिमादिणिमित्तं वा अट्ठजाते, वादी वा, दव्वोपग्गहणट्ठा पभावणट्ठा पूयादिकारणणिमित्तं सहायसहितो गिहिअण्णतित्थिएहिं धातुं णिहाणं वा गेण्हेज्ज ॥४३१७॥

जे भिक्खू मत्तए अत्ताणं [1]देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू अद्दाए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू असीए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू मणिए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू [2]कुड्डापाणे अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू तेल्ले अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू महुए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू सप्पिए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू फाणिए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू मज्जए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू वसाए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

मत्तगो पाणगस्स भरितो, तत्थ अप्पणो मुहं पलोएति । जोएंतस्स आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं । एवं पडिग्गहादिसु वि ।

सेसपदाणं इमा संगहणी –

दप्पण मणि आभरणे, सत्थ दए भायणऽन्नतरए य ।
तेल्ल-महु-सप्पि-फाणित, मज्ज-वसा-सुत्तमादीसु ॥४३१८॥

दर्पणः आदर्शः, स्फटिकादि मणिः, स्थासकादि आभरणं, खड्गादि शस्त्रं, दगं पानीयं, तच्च अण्णतरे कुंडादिभाजने स्थितं, तिलादिगं तैलं, मधु प्रसिद्धं, सप्पि घृतं, फाणितं गुडो, छिड्डुगुरु मज्जं, मच्छादीवसासुत्तं मज्जे कज्जति, इक्खुरसे वा गंडियासुत्तं । सव्वेसु तेसु जहासंभवं अप्पणो अचक्खुविसयत्था णयणादिया देहावयवा पलोएइ, तत्थ स्वं रूपं पश्यति ।

चोदक आह – "किं तत् पश्यति ?"

आचार्याह – आत्मच्छायां पश्यति ।

पुनरप्याह चोदकः–"कथं आदित्यभास्वरद्रव्यजनितच्छायादिग्भागं मुक्त्वा अन्यतोऽपि दृश्यते ?" ।

आचार्याह – अत्रोच्यते, यथा पद्मरागेन्द्रनीलप्रदीपशिखादीनां आत्मस्वरूपानुरूपप्रभाछाया स्वत एव सर्वतो भवति, तथा सर्वपुद्गलद्रव्याणां आत्मप्रभानुरूपा छाया सर्वतो भवत्यनुपलक्षा वा इत्यतोऽन्यतोऽपि दृश्यते ।

पुनरपि चोदकाह – "जदि अप्पणो छायं देहति तो कहं अप्पणो सरीरसरिसं वण्णरूपं न पेच्छति ?"

---

१ पलोएइ पलोयंतं वा इत्यपि पाठः 'अत्ताणं' स्थाने अप्पाणमित्यपि पाठः । २ कुंडपाणिए ।

अत्रोच्यते –

सामा तु दिवा छाया, अभासुरगता णिसिं तु कालाभा ।
सच्चेव भासुरगता, सदेहवण्णा मुणेयव्वा ॥४३१९॥

आदित्येनावभासिते दिवा अभास्वरे अदीप्तिमति भूम्यादिके द्रव्ये वृक्षादीनां निपतिता छाया छायैव दृश्यते अनिर्व्यंजितावयवा वर्णतः श्यामाभा, तस्मिन्नेव अभास्वरे द्रव्ये भूम्यादिके रात्रौ निपतिता छाया वर्णतः कृष्णाभा भवति । जया पुण सच्चेव छाया दित्तिमति दर्पणादिके द्रव्ये निपतिता दिवा रात्रौ वा तदा वर्णतः (शरीरवर्णतः) शरीरवर्णव्यंजितावयवा च दृश्यते, सा च छाया सदृशा न भवति ॥४३१९॥

चोदक आह – यदि छाया सदृशा न भवति, सा कथं न भवति ? किं वा तत्र पश्यंति ?

अत्रोच्यते –

उज्जोयफुडम्मि तु दप्पणम्मि संजुज्जते जया देहो ।
होति तया पडिबिंबं, छाया व पभाससंजोगा ॥४३२०॥

उज्जोयफुडो दप्पणो, निर्मल श्यामादिविरहितः, तम्मि यदा सरीरं अण्णं वा किं चि घडादि संजुज्जते तदा स्पष्टं प्रतिबिंबं प्रतिनिभं भवति घटादीनां । जदा पुण स दप्पणो सामाए आवरितो गगणं वा अब्भगादीहिं आवरितं, तदा तम्मि चेव आयरिसे पगासद्विते देहादिसंजुतं छायामात्रं दिस्सति ॥४३२०॥

इदाणिं सीसो पुच्छति – "तं पडिबिंबं छायं वा को पासति ?

तत्थ भणति – ससमय-परसमयवत्तव्वयाए –

आदरिसपडिहता उवलंभति रस्सी सरूवमणोरिसं ।
तं तु ण जुज्जइ जम्हा, पस्सति आया ण रस्सीओ ॥४३२१॥

आत्मनः शरीरस्य या रश्मयः पहुश्शं विनिर्गताः, तासां या आदर्शे अधःकृताः प्रतिहता रश्मयः, ता रश्मयो बिंबादिस्वरूपं उपलभंति । एषोऽभिप्राय अन्येषां परतंत्राणां ।

जैनतंत्रव्यवस्थिता आहुः – न युज्जते एतत् । यस्मात् सर्वप्रमाणानि आत्माधीनानि, तस्मादात्मा पश्यति न रश्मयः ॥४३२१॥

इदानीं पराभिप्राये तिरस्कृते स्वपक्षः स्थाप्यते "उज्जोयफुडम्मि तु" गाहा (४३२०) एषोऽर्थस्तस्यार्थस्य स्थिरीकरणार्थं पुनरप्याह –

जुज्जति हु पगासफुडे, पडिबिंबं दप्पणम्मि पस्संतो ।
तस्सेव जयावरणं, सा छाया होति बिंबं वा ॥४३२२॥

जुज्जते घटते फुडप्पगासे दप्पणे अप्पाणं पलोएंतो पडिबिंबं प्रतिरूपं णिव्वंजितावयवं पस्सति, तं च पस्संतस्स जता अब्भादीहिं अप्पगासीभूतं भवति तदा तमेव बिंबं छाया दीसति, "बिंब" त्ति छायं वा पेक्खंतस्स अब्भादी आवरणावगमे तमेव छायं बिंबं पस्सति, णिव्वंजितावयवं – प्रतिरूपमित्यर्थः ॥४३२२॥

सीसो पुच्छति – 'कम्हा सव्वे देहावयवा आदरिसे ण पेच्छति ?"

अतो भण्णति –

जे आदरिसंतत्तो, देहावयवा हवंति णयणादी ।
तेसिं तत्थुवलद्धी, पगासजोगा ण इतरेसिं ॥४३२३॥

छद्दिसि सरीरतेयरस्सिसु पधावितासु जं दिसि आदरिसो ठितो तत्तो ये णयणहत्थादी सरीरावयवा जे आदरिसे णिवडिया तेसिं तम्मि आदरिसे उवलद्धी भवति । जति य आदरिसो अब्भावगो सप्पगासेण संजुत्तो न, अंधकारव्यवस्थित इत्यर्थः । "इतरे" त्ति जे आदरिसेण सह न संजुत्ता, ते न तत्रोपलभ्यन्ते ॥४३२३॥

एमेव य पडिबिंबं, जं आदरिसेण होइ संजुत्तं ।
तत्थ वि हो उवलद्धी, पगासजोगा अदिट्ठे वि ॥४३२४॥

एवमित्यवधारणे । किं अवधारयितव्यं ? यदेतदुपलब्धिकारणमुक्तं । अनेनोपलब्धिकारणेण यदप्यन्यत् घटादिस्वरूपप्रतिबिंबं आदर्शे संयुज्यते तत्राप्युपलब्धिर्भवत्यात्मना अपश्यतोऽपि घटादिकं । एवं मणिमादीसु वि भावेयव्वं, णवरं – तेल्लजलादिसु जारिसं बिंबं आगासमंतरे त्ति तारिसमेव दीसते ॥४३२४॥

एएसामण्णतरे, अप्पाणं जे उ देहते भिक्खू ।
सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४३२५॥

दप्पणमणिमादियाण अण्णयरे जो अप्पाणं जोएति तस्स आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं आयसंजमविराहणा य भवति ॥४३२५॥

इमे य अण्णे दोसा –

गमणादी रूवमरूववं तु कुज्जा निदाणमादीणि ।
वातुस-गारवकरणं, खित्तादि णिरत्थगुड्डाहो ॥४३२६॥

आदरिसादीसु अप्पाणं रूववंतं दट्ठुं विसए भुंजामि त्ति पडिगमणं करेति, अण्णतित्थिएसु वा पविसति, सिद्धपुत्तो वा भवति, सिद्धपुत्तिं वा सेवति, सलिंगेण वा संजतिं पडिसेवति, विरूवं वा अप्पाणं दट्ठुं णियाणं करेज्जा, आदिसद्दातो देवताराहणादी वसीकरणजोगादी वा अधिज्जेज्ज, सरीरवाउसत्तं वा करेज्ज, आदरिसे वा अप्पणो रूवं दट्ठुं सोभामि त्ति गारवं करेज्ज, रूवेण हरिसिओ विरूवो वा विसादेण खित्तादिचित्तो भवेज्ज । तं कम्मखवणवज्जियं निरत्थकं. सागारिय दिट्ठे उड्डाहो । "ण एस तवस्सी, कामी, एस अजिइंदिओ" त्ति उड्डाहं करेज्ज ॥४३२६॥

वितियपदमणप्पज्झे, सेहे अविकोविते व अप्पज्झे ।
विसआतंको मज्जण, मोहतिगिच्छाए जाणमवि ॥४३२७॥

अणप्पज्झो पराधीणत्तणतो सेहो, अविकोवितो अजाणत्तणतो, जो पुण अप्पज्झो जाणगो सो इमेहिं कारणेहिं अप्पाणं आदरिसे देहति – सप्पादिविसेण अभिभूते जालागद्दभलूतातंके वा उवट्ठिते आदरिसविज्जाए मज्जियव्वं, तत्थ आदरिसे अप्पणो पडिबिंबं गिलाणस्स वा उमज्जति, ततो पण्णप्पति, मोहतिगिच्छाए वा देहति ॥४३२७॥

अहवा इमे कारणा –

पुप्फग गलगंडं वा, मंडल दंतस्स जीह ओट्ठे य।
चक्खुस्स अविसए वुड्ढिहाणि जाणट्ठता पेहे ॥४३२८॥

अच्छिम्मि फुल्लगं, गले वा गंडं, पसु त्ति मंडलं वा, दंते वा कोति घुणदंतगादिरोगो। अहवा – जिब्भाए ओट्ठे वा किं चि वुड्ढियं पिलगादि। एवमादि अचक्खुविसयट्ठियं अपेक्खंतो तिगिच्छणणिमित्तं, रोगाइ-वुड्ढिहाणिजाणणणिमित्तं वा अद्दाए देक्खति अप्पसागारिए, ण दोसो ॥४३२८॥

जे भिक्खू वमणं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥
जे भिक्खू विरेयणं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥
जे भिक्खू वमण-विरेयणं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

उड्ढविरेओ वमणं, अहो सावणं विरेओ।

वमणं विरेयणं वा, जे भिक्खू आहए अणट्ठाए।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४३२९॥

णिप्पयोयणं अणट्ठा। चउलहुं च पच्छित्तं पावति।

स अतिरित्तत्थपदगहणं इमाए गाहाए –

वमणं विरेयणं वा, अब्भंगोच्छोलणं सिणाणं वा।
नेहादितप्पण रसायणं च नत्थिं च वत्थिं वा ॥४३३०॥

गात्तब्भंगो तेल्लादिणा, फासुगअफासुगेण देसे उच्छोलणं, सव्वगात्तस्स सिणाणं, वण्णबलादिणिमित्तं घयादिणेहपाणं तप्पणं, आदिग्गहणातो अब्भंगो तप्पणं च, वयत्थंभणं एगमणेगदव्वेहिं रसायणं, णासारसादि-रोगणासणत्थं णत्थकम्मं णत्थं, कडियायअरिसविणासणत्थं च अपाणद्दारेण वत्थिणा तेल्लादिपदाणं वत्थिकम्मं। किं चान्यत् – विविधाणं दव्वाणं एगाणेगसंजुत्ताणं ओसिएयविवागफलं णेगविहं जाणेऊण दव्वाणं अब्भवहारं करेति ॥४३३०॥

जतो भण्णति –

वण्ण-सर-रूव-मेहा, वंगवलीपलित-णासणट्ठा वा।
दीहाउ तट्ठता वा, थूल-किसट्ठा व तं कुज्जा ॥४३३१॥

सरीरं सुवण्णया भवति, मधुरस्सरो पडिपुण्णेंदियो रूवं मेहावारणाजुत्तो भवति, वंगा णट्ठ भवंति, संकुचियगात्तवलीपलियामयणासणट्ठा उवउज्जंति दव्वे। अहवा – दीहाउ भवामि त्ति तदट्ठा वायुज्जति। थूलो वा किसो वा भवामि, किसो वा थूलो वा भवामि, एतदट्ठा नत्थियवत्थिप्पयोगं करेति। एवमादि करेंतस्स आणादिया दोसा ॥४३३१॥

इमे य दोसा –

उभयधरणम्मि दोसा, अहकरणकाया य जं च उड्ढाहो।
पच्छण्णसगाणं पि य, अगिलाणगिलाणकरणं वा ॥४३३२॥

"उभए" त्ति – वमणं विरेयणं। अतीव वमणे मरेज्ज, अतिविरेयणे वा मरेज्ज। अह उभयं धरेति तो उड्डनिरोहे कोढो, वच्चनिरोहे मरणं। अथ अतिवेगेण अथंडिलादिसु छड्डणणिसिरणं वा, एत्थ छक्काय-विराहणा। जं च अप्पाणं अगिलाणं गिलाणं करेति तण्णिप्फण्णं, "चत्तसरीरा वि सरीरकम्मं करेंति" त्ति उड्डाहो, तम्मि कते पत्थं अण्णं मग्गियव्वं, पत्थभोजनमित्यर्थः। अहवा – पच्छण्णं तं करेंतेहिं अप्पसागारितो पडिस्सतो मग्गियव्वो ॥४३३२॥

इमं वितियपदं –

णच्चुप्पतियं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए।
अद्दीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽहियासए सम्मं ॥४३३३॥
अव्वोच्छित्तिणिमित्तं, जीवट्ठाए समाहिहेउं वा।
वमणविरेयणमादी, जयणाए आदिते भिक्खू ॥४३३४॥

दो वि गाहातो ततियउद्देसकगमेण पूर्ववत् ॥४३३४॥

जे भिक्खू अरोगियपडिकम्मं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

अरोगो णिरुवहयसरीरो। मा मे रोगो भविस्सति त्ति अणागयं चेव रोगपरिकम्मं करेति तस्स चउलहुं, आणादिया य दोसा।

जे भिक्खू अरोगत्ते, कुज्जा हि अणागयं तु तेगिच्छं।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥४३३५॥ गतार्था

इमेहिं कारणेहिं अववादेण कुज्जा –

विहरण वायण आवासगाण मा मे व ताण वा पीला।
होज्जा हि अकीरंते, कप्पति हु अणागयं काउं ॥४३३६॥

विहरणं जाव मासकप्पो ण पूरति ताव करेमि, मा मासकप्पे पुण्णे विहरणस्स वाघातो भविस्सति। रोगे वा उप्पण्णे मा वायणाए वाघाओ भविस्सइ। विविधाण वा आवासगजोगाणं रोगमुप्पण्णे कमं असहमाणेहिं हरितादिच्छेदणं अण्णं वा किंचि गिलाणट्ठा वताइयारं करेज्ज, अणागयं पुण कीरमाणे कम्मे फासुएण कीरमाणे व्रतभंगो ण भवति, तम्हा अणागयं कप्पति काउं। एमादिकारणे अवेक्खिऊण अणागयं रोगपरिकम्मं कज्जति ॥४३३५॥

जतो भण्णति –

अमुगो अमुगं कालं, कप्पति वाही ममं ति तं णातुं।
तप्पसमणी उ किरिया, कप्पति इहरा बहू हाणी ॥४३३७॥

ममं जप्पसरीरस्स अमुगो वाही अमुगे काले अवस्समुप्पज्जति तस्स रोगस्स अणागयं चेव किरिया कज्जति। "इहर" त्ति उप्पण्णे रोगे किरियाए कज्जमाणीए बहू दोसा, दोसबहुत्ताओ य संजमहाणी भवति ॥४३३७॥

अणागयं कज्जमाणे इमे गुणा –

अप्पपरअणायासो, न य कायवहो न या वि परिहाणी ।
ण य चड्डणा गिहीणं, णहछेज्जरिणेहि दिट्ठंतो ॥४३३८॥

अणागतं रोगपरिकम्मे कज्जमाणे अप्पणो परस्स य अणायासो भवति, कमेण फासुएण कज्जमाणे कायवधो ण भवति, ण य सुत्तत्थे आवस्सगा परिहाणी भवति, अणागतं जहालाभेण सणियं कज्जमाणे गिहीणं चमढणा ण भवति । किं च उवेक्खितो वाही दुच्छेज्जो भवति, जहा रुक्खो अंकुरावत्थाए णहच्छेज्जो भवति, विवड्डितो पुण जायमूलो महाखंधो कुहाडेण वि दुच्छेज्जो, रिणं पि अवड्डिअं अप्पत्तणओ सुच्छेज्जं, विवड्डियं दुगुणचउगुणं दुच्छेज्जं, एवं वाही वि अणागतं सुच्छेज्जो, पच्छा दुच्छेज्जो ।

जो सुत्तत्थेसु गहियत्थो गहणसमत्थो य जो य गच्छोवग्गहकारी कुलगणसंघकज्जेसु य पमाणं तस्स एसा विधी ॥४३३८॥

जो पुण ण इमेरिसो तस्स इमा विधी –

जो पुण अपुव्वगहणे, उवग्गहे वा अपच्चलो परेसिं ।
असहू उत्तरकरणे, तस्स जहिच्छा ण उ णिओगो ॥४३३९॥

अभिणवाणं सुत्तत्थाणं गहणे असमत्थो, साधुवग्गस्स व वत्थपायभत्तपाणओसढभेसज्जादी एतेहिं उवग्गहं काउं असमत्थो, उत्तरकरणं तवोपायच्छित्तं वा तत्थ वि असहू, एरिसस्स पुरिसस्स इच्छा ण णियोगो "अवस्समणागयं कायव्वं" ति ॥४३३९॥

जे भिक्खू पासत्थं वंदइ, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू पासत्थं पसंसइ, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

सुलद्धं ते माणुस्सं जम्मं जं साहूणं वट्टसि – एवमादिपसंसा, विधीए वंदणं उच्छोभणं वंदणं वा । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती –

दुविधो खलु पासत्थो, देसे सव्वे य होइ नायव्वो ।
सव्वे तिण्णि विगप्पा, देसे सेज्जातरकुलादी ॥४३४०॥

दुविधो पासत्थो – देसे सव्वे य । सव्वहा जो पासत्थो सो तिविधो । देसेण जो पासत्थो सो सेज्जातरपिंडभोतिमादी अणेगविधो ॥४३३९॥

पासत्थनिरुत्तं इमं सव्वदेसअभेदेण भण्णति –

दंसणणाणचरित्ते, तवे य अत्ताहितो पवयणे य ।
तेसिं पासविहारी, पासत्थं तं वियाणाहि ॥४३४१॥

दंसणादिया पसिद्धा । पवयणं चाउवण्णो समणसंघो । अत्ता आत्मा संधिपयोगेण आभिओगेण आहितो आरोपितः स्थापितः जेहिं साधूहिं – ते उज्जुत्तविहारिण इत्यर्थः । तेसिं साधूणं पासविहारी जो सो एवंविधो

पासत्थो । पवयणं पडुच्च जम्हा साहु-साहुणि-सावग-साविगासु एगपक्खे वि ण णिवडति, तम्हा पवयणं पइ तेसिं पासविहारी ।

अधवा – दंसणादिसु अत्ता अहिओ जस्स सो अत्ताहितो । एत्थ अकारो संधीए अत्थवसा हुस्सो दट्ठव्वो, दर्शनादीनां विराधकमित्यर्थः । जम्हा सो विराधको तम्हा तेसिं दंसणादीणं पासविहारी ॥४३४१॥

इयाणिं सव्वपासत्थो तिविधभेदो भण्णति –

दंसणणाणचरित्ते, सत्थो अच्छति तहिं ण उज्जमति ।
एतेण उ पासत्थो, एसो अण्णो वि पज्जाओ ॥४३४२॥

सत्थो अच्छइ ति । सुत्तपोरिसिं वा अत्थपोरिसिं वा ण करेइ नोद्यमते, दंसणाइयारेसु वट्टति, चारित्ते ण वट्टति, अतिचारे वा ण वज्जेति, एवं सत्थो अच्छति, तेण पासत्थो । अन्यः पर्यायः अन्यो व्याख्या-प्रकारः ॥४३४२॥

अववा –

पासो त्ति बंधणं ति य, एगट्ठं बंधहेतवो पासा ।
पासत्थियपासत्था, एसो अण्णो वि पज्जातो ॥४३४३॥

पासोत्ति वा बंधणो त्ति वा एगट्ठं, एते पदा दो वि एगट्ठा । बंधस्स हेऊ "अविरयमादी" ते पासा भण्णति, तेसु पासेसु ठितो पासत्थो ॥४३४३॥ सव्वपासत्थो गतो ।

इमो देसपासत्थो –

सेज्जायरकुलनिस्सित, ठवणकुलपलोयणा अभिहडे य ।
पुव्विं पच्छा संथुत, णितियग्गपिंडभोति पासत्थो ॥४३४४॥

सेज्जातरपिंडं भुंजति, सड्ढाईकुलनिस्साए विहरति, ठवणाकुलाणि वा णिक्कारणे पविसति, संखडिं पलोएति, आदंसादिसु वा देहं पलोएति, अभिहडं गेण्हति भुंजति य, सयणं पडुच्च माता-पितादियं पुव्वसंथवं करेति, पच्छासंथवं वा सासुससुरादियं । दाणं वा पडुच्च अदिण्णे पुव्वसंथवो, दिण्णे पच्छासंथवो, णितियं णिच्चणिमंतणे णिकाएति, जति दिणे दिणे दाहिसि अग्गपिंडो अग्गकूरो तं गेण्हति भुंजइ य, एवमा-दिएसुं अववादपदेसु वट्टंतो देसपासत्थो भवति ॥४३४४॥

जे भिक्खू कुसीलं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥
जे भिक्खू कुसीलं पसंसइ, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

कुत्सितः शीलः, कुत्सितेषु शीलं करोतीत्यतः कुसील ।

इमा णिज्जुत्ति –

कोउयभूतीकम्मे, पसिणापसिणं णिमित्तमाजीवी ।
कक्क-कुरुय-सुमिण-लक्खण-मूल-मंत-विज्जोवजीवी कुसिलो उ ॥४३४५॥

णिदुमादियाणं तिगचच्चरादिसु ण्हवणं करेति त्ति कोतुअं, रक्खणिमित्तं अभिमंतियं भूतिं देति,

अंगुट्ठबाहूपसिणादी करेति, सुविणए विज्जाए अक्खियं अक्खमाणस्स पसिणापसिणं, तीतपडुप्पण्णमणागय-णिमित्तोवजीवी । अथवा – आजीवी जाति-कुल-गण-कम्म-सिप्पे पंचविधं करेति । लोद्वादिकेण कक्केण जंघाइ घसति, सरीरे सुस्सूसाकरणं कुक्कुया, बकुसभावं करेति त्ति वुत्तं भवति, सुभासुभसुविणफलं अक्खति, इत्थिपुरिसाण मसतिलगादिलक्खणे सुभासुभे कहेति, विविधरोगपसमणे कंदमूले कहेति । अहवा – गब्भादाणपडिसाडणे मूलकम्मं मंतविज्जाहिं वा जीवाणं करेंतो कुसीलो भवति ॥४३४५॥

जे भिक्खू ओसण्णं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू ओसण्णं पसंसति, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

दो सूत्रे । ओसण्णदोसो । ओसण्णो बहुतरगुणावराही इत्यर्थः ।

आवासग[1] सज्झाए[2], पडिलेह[3] ज्झाण[4] भिक्ख[5] भत्तट्ठे[6] ।
काउस्सग[7] पडिक्कमणे[8], कितिकम्मं[9] णेव पडिलेहा[10] ॥४३४६॥

"[1]आवासग" त्ति अस्य व्याख्या –

आवासगं अणियतं करेति हीणातिरित्तविवरीयं ।
गुरुवयणणियोग[2]वलायमाणे इणमो उ ओसण्णो ॥४३४७॥

अणिययं—कदाति करेइ, कयाइ ण करेति, अधिकं वा करेति, दोसेहिं वा सह करेइ, चक्कवाल-सामायारीए सीदमाणो आवस्सगे आलोयणवेलाए "णिओइउ" त्ति चोदितो सम्मं अपडिवज्जंतो तहा वा अकरेंतो वलायमाणो गुरुवयणो भवति, अन्नत्थ वा चोदितो गुरुवयणाओ वलायति ।

"[2]सज्झाय" त्ति सज्झायं हीणं करेति, अतिरित्तं वा करेति ।

अहवा – ण करेति । विवरीयं वा कालियं उक्काले करेति, उक्कालियं वा कालवेलाए करेति, असज्झाए वा करेति ।

[3]पडिलेहणाए वि एवं चेव दट्ठव्वं ।

पुव्वावरत्तकाले [4]ज्झाणं णो झायति । असुभं झायति ।

आलसितो "[5]भिक्खं ण हिंडति, अणुवउत्तो वा भिक्खाविसोहिं ण करेति, असुद्धं वा गेण्हति । "[6]भत्तट्ठ" त्ति-मंडलीए कदाति भुंजइ, कदाइ न भुंजति, मंडलिसामायारिं वा ण करेति, दोसेहिं वा भुंजति, पविसंतो णिसीहिं ण करेति, णितो आवस्सियं ण करेति, णिताणितो ण पमज्जति वा ।

गदिसंतरणादिसु अण्णत्थं वा गमणागमणे [7]काउस्सग्गं ण करेति । दोसेहिं वा करेति ।

"[8]पडिक्कमणं" ति मिच्छादुक्कडं, तं पमायखलियादिसु ण करेति ।

संथरणादिसु कितिकम्मठाणेसु "[9]कितिकम्मं" वंदणं ण करेति । गुरुमादीण वा विस्सामणादि कितिकम्मं ण करेति ।

णिसीअणतुयट्टणादिट्ठाणं ण [10]पडिलेहे, संडासयं वा णिसीयंतो आदाणणिक्खेवणेसु वा ण पडिलेहेति ण पमज्जति ॥४३४७॥ एस देसोसण्णो गतो ।

---

१ से १० तक गा० ४३४५ । २ पलायमाणे इत्यपि पाठः ।

इमो सव्वोसण्णो –

उउवद्धपीढफलगं, ओसण्णं संजयं वियाणाहि ।
ठवियग रइयग भोती एमेता पडिवत्तीओ ॥४३४८॥

जो य पक्खस्स पिट्ठफलगादियाण वंधे मोत्तुं पडिलेहणं ण करेति सो संजओ उउबद्धपीढफलगो ।

अधवा – णिच्चत्थविय संथारगो, णिच्चुत्थरियसंथारगो य उउबद्धपीढफलगो भण्णति । ठविय-पाहुडियं भुंजति, णिक्खित्तभोती वा, ठवियभोती । घंटी करगपटलगादिसु जो अवट्ठियं आणेउं भुंजति सो रतियभोती ॥४३४७॥

अहवा – इमो संखेवओ ओसण्णो भण्णति –

सामायारिं वितहं, ओसण्णो जं च पावती तत्थ । पूर्वार्धः

सव्वं सामायारिवितहं करेंतो ओसण्णो, जं वा मूलुत्तरगुणातियारं जत्थ किरियाविसेसे पयट्टो पावति तं अणिदंतो अणालोयंतो पच्छित्तं अकरेंतो ओसण्णो भवति ॥४३४८॥ पूर्वार्धः ।

जे भिक्खू संसत्तं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू संसत्तं पसंसति, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

दोसेहिं जुत्तो संसत्तो आकिन्नदोसो वा संसत्तो ।

संसत्तो व अलंदो, नडरूवी एलतो चेव ॥४३४९॥ उत्तरार्धः

इमा पच्छद्धातो णिज्जुत्ती –

संसत्तो कहं ? अलंदमिव । जहा गोभत्तक-लंदयं अणेगदव्वणियरं किमिमादीहिं वा संसत्तं तहा सो वि ।

अहवा – संसत्तो अणेगरूवी नटवत् एलकवत्, जहा णडो णट्टवसा अणेगाणि रूवाणि करेति, ऊरणगो वा जहा हलिद्दरागेण रत्तो धोविउं पुणो गुलिगगेरुगादिरागेण रज्जते, एवं पुणो वि धोविउं अण्णोण्णेण रज्जति, एवं एलगादिबहुरूवी॥४३४९॥

एवं संसत्तो इमेण विहिणा बहुरूवी –

पासत्थ अहाछंदे, कुसील ओसण्णमेव संसत्ते ।
पियधम्मो पियधम्मेसु चेव इणमो तु संसत्तो ॥४३५०॥

पासत्थाणं मज्झे ठितो पासत्थो, अहच्छंदेसु अहाछंदो, ओसण्णेसु ओसण्णाणुवत्तिओ ओसण्णो, संसत्ताण मज्झे संसत्ताणुचरितो, पियधम्मेसु मिलितो अप्पाणं पियधम्मं दंसेति, णिद्धम्मेसु णिद्धम्मो भवति । "इणमो" त्ति वक्खमाणसरूवो संसत्तो ॥४३५०॥

पंचासवप्पवत्तो, जो खलु तिहि गारवेहि पडिबद्धो ।
इत्थिगिहिसंकिलिट्ठो, संसत्तो सो य णायव्वो ॥४३५१॥

पंच आसवदारा – पाणवह-मुसावाय-अदत्त-मेहुणं-परिग्गह, एतेसु प्रवृत्तः । खलु अवधारणार्थो । तिण्णि गारवा – इड्ढि-रस-सायं वा, एतेसु भावतो पडिबद्धो ।

इत्थीसु मोहमोहितो संकिलिट्ठो तप्पडिसेवी ।

गिहीसु वि समक्खपरोक्खेसु सुत्थदुत्थेसु दुपदचउप्पदेसु वा वावारवहणपडिबद्धो संकिलिट्ठो ।

संखेवो इमो – जो जारिसेसु मिलति सो तारिसो चेव भवति, एरिसो संसत्तो णायव्वो ॥४३५१॥

जे भिक्खू णितियं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू णितियं पसंसति, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

णिच्चमवत्थाणातो णितितो ।

जं पुव्वं णितियं खलु, चउव्विहं वण्णियं तु वितियम्मि ।
तं आलंबणरहितो, सेवंतो होति णितिओ उ ॥४३५२॥

दव्व-खेत्त-काल-भावा एतं चउव्विहं, इहेव अज्झयणे वितियुद्देसे वण्णियं, तं णिक्कारणे सेवंतो णितितो भवति ॥४३५१॥

जे भिक्खू काहियं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ।सू०॥५६॥

जे भिक्खू काहियं पसंसति, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

दो सूत्रे । सज्झायादिकरणिज्जे जोगे मोत्तुं जो देसकहादिकहातो कधेति सो काहितो ।

इमा णिज्जुत्ती –

आहारादीणऽट्ठा, जसहेउं अहव पूयणनिमित्तं ।
तक्कम्मो जो धम्मं, कहेति सो काहिओ होति ॥४३५३॥

धम्मकहं पि जो करेति आहारादिणिमित्तं, वत्थपातादिणिमित्तं, जसत्थी वा, वंदणादिपूयाणिमित्तं वा, सुत्तत्थपोरिसिमुक्कवावारो अहो य रातो य धम्मकहादिपढणकहणवज्झो, तदेवास्य केवलं कर्म तक्कम्म एवंविधो काहितो भवति ।।४३५३।।

चोदग आह – "णणु सज्झाओ पंचविधो वायणादिगो । तस्स पंचमो भेदो धम्मकहा । तेण [1]भव्वसत्ता पडिवुज्झंति, तित्थे य अव्वोच्छित्ती पभावणा य भवति, अतो ताओ णिज्जरा चेव भवति, कहं काहियत्तं पडिसिज्झति ?" ।

आचार्याह –

कामं खलु धम्मकहा, सज्झायस्सेव पंचमं अंगं ।
अव्वोच्छित्तीइ ततो, तित्थस्स पभावणा चेव ॥४३५४॥

पूर्वाभिहिते नोदकार्थानुमते कामशब्दः । खलुशब्दो अवधारणेऽर्थे । किमवधारयति ? इमं – "सज्झायस्स पंचम एवांगं धम्मकहा" । जइ य एवं –

तह वि य ण सव्वकालं, धम्मकहा जीइ सव्वपरिहाणी ।
नाउं व खेत्तकालं, पुरिसं च पवेदते धम्मं ॥४३५५॥

---

1 भद्दसत्ता इत्यपि पाठः ।

सव्वकालं धम्मो ण कहेयव्वो, जतो पडिलेहणादि संजमजोगाण सुत्तत्थपोरिसीण य आयरिय-गिलाणमादीकिच्चाण य परिहाणी भवति, अतो न काहियत्तं कायव्वं। जदा पुण धम्मं कहेति तदा णाउं साधुसाधुणीय य बहुगच्छुवग्गहं। "खेत्तं" ति ओमकाले बहूणं साधुसाधुणीणं उवग्गहकरा इमे दाणसड्ढादि भविस्संति (त्ति) धम्मं कहए। रायादिपुरिसं वा णाउं कहेज्जा, महाकुले वा इमेण एक्केण उवसंतेणं पुरिसेणं बहू उवसमंतीति कहेज्जा ॥४३५५॥

जे भिक्खू पासणियं वंदइ, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू पासणियं पसंसइ, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जणवयववहारेसु णडणट्टादिसु वा जो पेक्खणं करेति सो पासणिओ।

लोइयववहारेसू, लोए सत्थादिएसु कज्जेसु।
पासणियत्तं कुणती, पासणिओ सो य णायव्वो ॥४३५६॥

"लोइयववहारेसु" त्ति अस्य व्याख्या –

साधारणे विरेगं, साहति पुत्त[1]पडए[2] य आहरणं।
दोण्ह य एगो पुत्तो, दोण्णि महिलाओ एगस्स ॥४३५७॥

दोण्हं सामण्णं साधारणं, तस्स विरेगं विभयणं, तत्थण्णे पासणिया च्छेतुमसमत्था, सो भावत्थं णाउं छिंदति। कहं?

एत्थ उदाहरणं भण्णति –

एगस्स वणियस्स दो महिला, तत्थेगीए पुत्तो। एयं उदाहरणं जहा णमोक्कारणिज्जुत्तीए। पडगआहरणं पि जहा तत्थेव। एवं – अण्णेसु वि बहूसु लोगववहारेसु पासणियत्तं करेइ छिंदति वा ॥४३५७॥

"[1]लोए सत्थादिएसु" त्ति अस्य व्याख्या –

छंदणिरुत्तं सद्दं, अत्थं वा लोइयाण सत्थाणं।
भावत्थए य साहति, छलियादी उत्तरे सउणे ॥४३५८॥

छंदादियाणं लोगसत्थाणं सुत्तं कहेति अत्थं वा, अहवा "अत्थं व" त्ति अत्थसत्थं, सेतुमादियाण वा बहूण कव्वाणं, कोहल्लयाण य, वेसियमादियाण य भावत्थं पसाहति। छलिय सिंगारकहा त्थीवण्णगादी। "उत्तरे" त्ति – छंदुत्तरादी।

अहवा – ववहारे उत्तरं सिक्खावेइ।

अहवा – 'उत्तरे" त्ति लोउत्तरे वि सउण[2]रुयादीणि कहयति ॥४३५८॥

जे भिक्खू मामगं वंदइ, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू मामगं पसंसइ, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

---

१ गा० ४३५६। २ भयादीणि इत्यपि पाठः।

ममीकारं करेंते मामाओ –

आहार उवहि देहे, वीयार विहार वसहि कुल गामे ।
पडिसेहं च ममत्तं, जो कुणति मामतो सो उ ॥४३५६॥

उवकरणादिसु जहासंभवं पडिसेहं करेंति, मा मम उवकरणं कोइ गेण्हउ । एवं अण्णेसु वि वियारभूमिमादिएसु पडिसेहं सगच्छपरगच्छयाणं वा करेति । आहारादिएसु चेव सव्वेसु ममत्तं करेति । भावपडिबंधं एवं करेंतो मामओ भवति ॥४३५६॥

विविधदेसगुणेहिं पडिबद्धो मामओ इमो –

अह जारिसओ देसो, जे य गुणा एत्थ सस्सगोणादी ।
सुंदरअभिजातजणो, ममाइ निक्कारणोवयति ॥४३६०॥

"अह" त्ति अयं जारिसो देसो रुक्ख-वावि-सर-तडागोवसोभितो एरिसो अण्णो णत्थि । सुहविहारो । सुलभवसहिभत्तोवकरणादिया य बहू गुणा । सालिक्खुमादिया य बहू सस्सा णिप्फज्जंति य । गो-महिस-पउरत्ततो य पउरगोरसं । सरीरेण वत्थादिएहिं सुंदरो जणो, अभिजायत्तणतो य कुलीणो, ण साहुसुवद्दवकारी, एवमादिएहिं गुणेहिं भावपडिबद्धो णिक्कारणिओ वा वयति – प्रशंसतीत्यर्थः ॥४३६०॥

जे भिक्खू संपसारियं वंदति, वंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू संपसारियं पसंसति, पसंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

गिहीणं कज्जाणं गुरुलाघवेणं संपसारेंतो संपसारिओ ।

अस्संजयाण भिक्खू, कज्जे अस्संजमप्पवत्तेसु ।
जो देती सामत्थं, संपसारओ सो य णायव्वो ॥४३६१॥

जे भिक्खू असंजयाणं असंजमकज्जपवत्ताणं पुच्छंताणं अपुच्छंताण वा सामत्थयं देति–"मा एवं इमं वा करेहि, एत्थ बहू दोसा, जहा हं भणामि तहा करेहि" त्ति, एवं करेंतो संपसारितो भवति ॥४३६१॥

ते य इमे असंजयकज्जा

गिहिणिक्खमणपवेसे, आवाह विवाह विक्कय कए वा ।
गुरुलाघवं कहेंते, गिहिणो खलु संपसारीओ ॥४३६२॥

गिहीणं असंजयाणं गिहाओ दिसि जत्तए वा णिग्गमयं देति । गिहि(स्स)जत्ताओ वा आगयस्स पावेसं देति । आवाहो विड्ढियालंभणयं सुहं दिवसं कहेति, मा वा एयस्स देहि, इमस्स वा देहि । विवाहपडलादिएहिं जोतिसगंथेहिं विवाहवेलं देति । अग्घकडमादिएहिं गंथेहिं इमं दव्वं विक्किणाहि, इमं वा किणाहि । एवमादिएसु कज्जेसु गिहीणं गुरुलाघवं कहेंतो संपसारत्तणं पावति ॥४३६२॥

पासत्थादियाण सव्वेसिं इमं सामण्णं –

एएसामण्णतरं, जे भिक्खू पसंसए अहव वंदे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराहणं पावे ॥४३६३॥

मिच्छत्तं जणेति, संजमविराहणं च पावति ॥४३६३॥

इमाणि पसंसणकारणाणि भवंति –

मेहावि णीयवत्ती, दाणरुई चेइयाण अतिभत्तो ।
लोगपगतो सुवक्को, पियवाई पुव्वभासी य ॥४३६४॥

अणुज्जमंतस्स एते सव्वे अगुणा दट्ठव्वा, तम्हा मेहाविमादिएहिं पसंसवयणेहिं ण पसंसियव्वा॥४३६४॥

अण्णेसु वि सुत्तेसु पासत्थादियाण वंदणं पडिसिद्धं ।

जतो भण्णति –

ठियकप्पे पडिसेहो, सुहसीलऽज्जाण चेव कितिकम्मं ।
णवगस्स या पसंसा, पडिसिद्धपकप्पमज्झयणे ॥४३६५॥

इमो ठियकप्पो – "आचेलकुद्देसिय-सेज्जातर-रायपिंड-कितिकम्मे ।
वयजेट्ठ-पडिक्कमणे मासं पज्जोसवणकप्पे ।"

एत्थ पडिसिद्धं वंदणयं पसंसा य सुहसीलाणं । पासत्थादी अज्जाण य कितिकम्मं पडिसिद्धं । कितिकम्मं वंदणयं । "णवगस्स" त्ति पासत्थादी पंच काहिकादी चउरो, एते सव्वे णव । पगप्पो इमं चेव णिसीहज्झयणं । एत्थ णवगस्स पसंसा पडिसिद्धा ॥४३६५॥

इदाणिं सामण्णेण सीयंतेसु वंदणपडिसेहो कज्जति –

मूलगुण-उत्तरगुणे, संथरमाणा वि जे पमाएंति ।
ते होतऽवंदणिज्जा, तट्ठाणारोवणा चउरो ॥४३६६॥

जो संथरंतो मूलुत्तरगुणेसु सीदति सो अवंदणिज्जो । जं च पासत्थादि ठाणं सेवति तेहिं वा सह संसग्गिं करेति, अतो तट्ठाणासेवणेण आरोवणा, से चउलहुं अहाछंदवज्जेसु, अहाछंदे पुण चउगुरु ॥४३६६॥

वितियपदं –

वितियपदमणप्पज्झे, पसंसते अविकोविए व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादि गच्छट्ठा ॥४३६७॥

अणवज्झो खित्तादिचित्तो पराधीणत्तणतो पसंसे, अविकोवितो सेहो सो वा दोसं अजाणंतो पसंसे सत्थचित्तो वि ।

अथवा – जाणंतो वि दोसे भया पसंसे रायासियं । "तव्वादि" त्ति कोइ परवादी इमेरिसं पक्खं करेज्ज – पासत्थादयो ण पसंसिज्जा इति प्रतिज्ञा, अस्य प्रतिघातत्थं पसंसियव्वं ण दोसो, गच्छस्स वा उग्गहकारी सो पासत्थादी पुरिसो अतो गच्छट्ठा पसंसेति ॥४३६७॥

इमो वंदणस्स अववातो –

वितियपदमणप्पज्झे, वंदे अविकोविए व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादि गच्छट्ठा ॥४३६८॥

पूर्ववत् । अववाए उस्सग्गो भण्णति – अववादेण जदा पासत्थादियाण सरीरणिरावाहत्तगवेसणं करेति तया वंदणविरहियं करेति ॥४३६८॥

जतो भण्णति –

गच्छपरिरक्खणट्ठा, अणागयं आउवातकुसलेणं ।
एवं गणाधिपतिणो, सुहसीलगवेसणं कुज्जा ॥४३६९॥

ओमरायदुट्ठादिसु गच्छस्स वा उवग्गहं करेस्सति, तिगिच्छा वा "अणागयं" ति, तम्मि ओमादिगे कारणे अणुप्पण्णे वि "आउ" त्ति अस्स पासत्थादिपुरिसस्स पासातो असणवत्थादी संजमवड्ढी वा, गच्छणिरावाहया वा आयो । उवायकुसलत्तं पुण गणाधिपतिणो तहा सुहसीलाणं गवेसणं करेति जहा ण वंदति, ते गवेसति य ण य तेसिं अप्पत्तियं भवति ॥४३६९॥

सा य तेसिं गवेसणा इमेहिं ठाणेहिं कायव्वा –

बाहिं आगमणपहे, उज्जाणे देउले समोसरणे ।
रच्छउवस्सगबहिया, अंतो जयणा इमा होति ॥४३७०॥

जत्थ ते गामणगरादिसु अच्छंति तेसिं बाहिं ठितो जता ते पस्सति सेज्जातरादि वा तदा णिरावाहादि गवेसति । जया वा ते आगच्छंति भिक्खायरियादि तम्मि वा पहे दिट्ठाणं गवेसणं करेति । एवं उज्जाणादिट्ठाणं चेतियं वंदणनिमित्तमागतो वा देवउले गवेसति, समोसरणे वा दिट्ठा, रच्छाए वा भिक्खादि अडंता अभिमुहा संमुहो संभिट्टा गवेसति । कदाचि ते पासत्थादयो बाहिं दिट्ठा भणेज्ज – अम्ह पडिस्सयं ण कदाइ एह, ताहे तदाणुवत्तीए तेसिं उवस्सय पि गम्मति । तत्थ उवस्सयस्स बहिया ठितो सव्वं णिरावाहादि गवेसति । अतिणिब्बंधे वा तेसिं अंतो उवस्सयस्स पविसित्ता गवेसति । इमा जयणा गवेसियव्वे भवति ।

अहवा जयणा इमा होति पुरिसविसेसवंदणं ।

सो य पुरिसविसेसो इमो –

मुक्कधुरा संपागडकिच्चे चरणकरणपरिहीणे ।
लिंगावसेसमेत्ते, जं कीरति तारिसं वोच्छं ॥४३७१॥

संजमधुरा मुक्का जेण सो मुक्कधुरो, समत्थजणस्स पागडाणि अकिच्चाणि करेति जो सो संपागडकिच्चो ।

अहवा – असंजमकिच्चाणि संपागडादि करेति जो सो संपागडकिच्चो, संपागडसेवी वा मूलगुणे उत्तरगुणे सेवतीत्यर्थः । सो अकिच्चपडिसेवणातो चेव करणपरिब्भट्ठो, चरणकरणपरिहीणत्तणओ चेव दव्वलिंगावसेसो, दव्वलिंगं से ण परिचत्तं (लिंगं) सेसं सव्वं परिचत्तं । मात्रशब्दः लक्षणवाची । प्रव्रज्यालक्षणं द्रव्यलिंगमात्रमित्यर्थः ॥४३७०॥

तारिसे दव्वलिंगमेत्ते जारिसं वंदणं कीरति तारिसं सुणसु –

वायाए णमोक्कारो, हत्थुस्सेहो य सीसनमणं च ।
संपुच्छणऽच्छणं छोभवंदणं वंदणं वा वि ॥४३७२॥

बाहिं आगमणपहादिएसु ठाणेसु दिट्ठस्स पासत्थादियस्स वायाए वंदणं कायव्वं – "वंदामो" त्ति भणाति । विसिट्ठतरे उभयभावे वा वायाए हत्थुस्सेहं च अंजलिं करेति। अतो वि विसिट्ठतरउभयतरसभावस्स वा दो वि एते करेति, ततियं च सिरप्पणामं करेति । ततो विसिट्ठतरे तिण्णि काउं पुच्छितो भंते पि व दरिसंतो सरीरे वट्टमाणि पुच्छति । ततो विसिट्ठतरस्स पुच्छित्ता खणमेत्तं पज्जुवासंतो अच्छति ।

अधवा – पुरिसविसेसं जाणिऊण उच्छोभवंदणं देति – "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए णिसीहियाए तिविहेणं" एयं उच्छोभवंदणयं ।

अहवा – पुरिसविसेसं णाउं संपुण्णं बारसावत्तं वंदणं देति ।।४३७२।।

ते य वंदणविसेसकारणा इमे –

परियाय परिस पुरिसं, खेत्तं कालं च आगमं णाउं ।
कारणजाते जाते, जहारिहं जस्स जं जोग्गं ।।४३७३।।

बंभचेरमभग्गं विसेसितो दीहपरियातो सेसुत्तरगुणेहिं सीदेति । सयं सीयति, "परिस" परिवारो से संजमविणीतो मूलुत्तरगुणेसु उज्जुत्तो । "पुरिसो" रायादिदिक्खितो बहुसंमतो वा पवयणुब्भावगो । "खेत्तं" पासत्थादीभावियं तदणुगएहिं तत्थ वसियव्वं । ओमकाले जो पासत्थो सगच्छवड्ढावणं करेति तस्स जहारितो सक्कारो कायव्वो । "आगमे" से सुत्तं अत्थि, अत्थं वा से पण्णवेति – चारित्रगुणान् प्रज्ञापयतीत्यर्थः । कारणा कुलादिगा । जातशब्दो प्रकारवाची । बितिओ जातसद्दो उप्पण्णवाची । जस्स पुरिसस्स जं वंदणं अरिहं तं कायव्वं ।

चोदगाह – जोगग्गहणं णिरत्थयं पुणरुत्तं वा ।

आचार्य आह – णो णिरत्थयं ।

कहं ?

भण्णति – अण्णं पि जं करणिज्जं अभुट्ठाणासण-विस्सामण-भत्तवत्थादिपदाणं तं पि सव्वं कायव्वं, एयं जोगग्गहणा गहितं ।।४३७३।।

एयाइ अकुव्वंतो, जहारिहं अरिहदेसिए मग्गे ।
न भवइ पवयणभत्ती, अभत्तिमंतादिया दोसा ।।४३७४।।

एयाइं ति वायाए णमोक्कारमातियाइं ति परियागमादियाणं पुरिसाणं अरिहंतदेसिए मग्गे ठियाणं जहारिहं वंदणादि उवयारं अकरेंताणं णो पवयणे भत्ती कया भवति । वंदणादि उवयारं अकरेंतस्स अभत्ती भवति । आइसद्दातो निज्जर-सुगइलाभस्स वा अणाभागी भवति ।।४३७४।।

जे भिक्खू धाईपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।

बालस्स धाइत्तणं करेंतस्स आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं ।।४३७४।।

जे भिक्खू धातिपिंडं, गिण्हेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ।।४३७५।।

सातिज्जणा अण्णं करेंतं अणुमोदति । सेसं कंठं ।।४३७५।।

धाइणिरुत्तं इमं –

धारयति धीयते वा, धयंति वा तमिति तेण धातीतो ।
जहविभवा आसि तया, खीराई पंचधातीओ ।।४३७६।।

तं बालं धारयतीति धाती । तेण बालेण धीयते पीयत इत्यर्थः । सो वा बालो तं धावतीति धाती, तं पिबतीत्यर्थः ।

णिज्जुत्तिकार आह – जता भगवता तित्थं पणीतं तदा विभवाणुरूवा पंचधातीतो आसी। तं जहा – खीरधाती मज्जण-मंडण-कीलावण अंकधाती य ।।४३७६।। एया सव्वाओ वि समासेण दुविधा–सयंकरणे कारावणे य।

अहवा – धातिं धाइत्तणे ठवेति।

कहं पुण धाइत्तणं करेति ?

भणइ – एगस्स साधुस्स एगा परिचियसड्ढी। सो साधू तत्थ भिक्खाए गतो। तस्स संतियं दारगं रुदंतं दट्ठुं साहू इमं भणाति –

खीराहारो रोवति, मज्झ कितासादि देहिणं पज्जे।
पच्छा व मज्झ दाहिसि, अलं व भुज्जो व एहामि ।।४३७७।।

साहू भणति – एस दारगो खीराहारो छुहत्तो रोवति, ता तुमं अण्णं वावारं मोत्तुं इमं ताव दारगं थणतो खीरं पज्जेहि। एवं कते मज्झं आसापूरणं कयं होति, मज्झ वि भिक्खं पच्छा दाहिसि एयंमि [1]तित्ते।

अहवा भणति – भिक्खाए वि मे अलं, परं एयं पज्जेहि।

अहवा भणाति – पुणो भिक्खाणिमित्तं एहामि, इदाणिं एयं पाएहि ।।४३७७।।

इमं च अण्णं भणाति –

मतिमं अरोगि दीहाउओ य होति अविमाणितो वालो।
दुल्लभयं खु सुतमहं, पज्जेहि अहं व से देमि ।।४३७८।।

वालो वालभावे वि अविमाणितो मतिमं भवति, अरोगो भवति, दीहाउगो य भवति। विमाणितो पुण मंदवुद्धी सरोगो अप्पाउतो। तं मा विमाणेहि, अण्णं च दुल्लभो पुत्तजम्मो, तं एयं पज्जेहि थणं।

अहवा – गवादिखीरं करोडगे छोढुं देहि, अहमेतं पज्जामि ।।४३७८।।

साधुस्स धाइत्तणं करेंतस्स इमे दोसा –

अहिकरण भद्दपंता, कम्मुदय गिलाणए य उड्डाहो।
चडुगारी य अवन्नो, नीया अण्णो व णं संके ।।४३७९।।

असंजतो पासितो अधिकरणं कम्मवंधपरूवणा य कुलमड्डियादिण भद्दपंतदोसा य।

भद्ददोसा – एस तवस्सी अप्पणो गिहं चइत्ता अम्होवरि णेहं करेति विसेसेण, से भत्तपाणादी देज्जह। अगारी वा संवंधं गच्छति।

पंतदोसा – अप्पणो असुभकम्मोदएण गिलाणो जातो सो वालो, ताहे भणति – किं पि एरिसं समणेण दिण्णं जेण गिलाणो जातो, एवं जणवाए उड्डाहो – "एते कम्मणकारगा।"

अहवा भणेज्जा – एते अदिण्णदाणा भिक्खाणिमित्तं चाडुं करेंति, एवमादि लोए अवण्णं वदेज्ज।

अहवा – तस्स अगारीए सयणा अण्णो वा सयणो संकेज्जा–णूणं एस संजतो एतीए अगारीए सह अणायारं सेवति जेण से पुत्तभंडादि भुंजावे ति ।।४३७९।।

१ तृप्ते इत्यपि पाठ.।

अहवा – इमो धातिकराण विगप्पो –

अयमपरो उ विगप्पो, भिक्खायरि सड्ढि अद्धिती पुच्छा ।
दुक्खसहायविभासा, हितं मे धातित्तणं अज्जो ॥४३८०॥

धातिकरणे पुव्विल्लविकप्पातो इमो अवरो अण्णो विगप्पो भण्णति – एगस्स साधुस्स एगा अगारी उवसमति, अण्णया सो तीए घरं भिक्खाए गतो, दिट्ठा य तेण साधुणा सा सड्ढी विमणी उस्सुयमणी अद्धितिमंती ।

ताहे सो साहू पुच्छति – किं णिमित्तं विमणा ?

सा भणति – किं तुज्झ मम संतियेण दुक्खेण । भणियं च –

जो य ण दुक्खं पत्तो, जो य न दुक्खस्स निग्गहसमत्थो ।
जो य ण दुहिए दुहिओ, न हु तस्स कहिज्जउ दुक्खं ॥१॥

साहू भणइ –

अहयं दुक्खं पत्तो, अहयं दुक्खस्स निग्गहसमत्थो ।
अहयं दुहिए दुहिओ, ता मज्झ कहिज्जउ दुक्खं ॥२॥

सा "दुक्खसहायविभास" त्ति । ताहे सा सड्ढी भणइ – जति तुमं दुक्खणिग्गहसमत्थो तो कहेमि, अमुगघरे मे धातित्तणं आसी, तत्थ तेण धाइत्तणेण सुहं जीवंती आसी, अज्ज मे तं फेडियं, अण्णा तत्थ ठविया, तेणऽम्हि अज्ज संचिता ॥४३८०॥

ताहे साधू तं पुच्छति इमेहिं तं –

वय-गंड-थुल्ल-तणुय-त्तणेहि तं पुच्छियं अयाणंतो ।
तत्थ गतो तस्समक्खं, भणाति तं पासिउं बालं ॥४३८१॥

जा सा ठविता तस्स केरिसो वयो – तरुणी मज्झा वुड्ढा ? गंडथणी उण्णयथणी महत्थणी अप्पथणी कोप्परथणी पतितथणी ? सरीरेण थूला तणुयी वा ? तं ठवियधातिं अयाणंतो एमाइएहिं पुच्छिउं तम्मि घरगतो तीए । ठवियधातीए समक्खं गिहपतिसमक्खं च तं बालं पासिउं इमं भणइ ॥४३८१॥

अहुणुट्ठियं च अणवेक्खितं च इमगं कुलं तु मन्नामि ।
पुण्णेहि जहिच्छाए, चलति बालेण सूएमो ॥४३८२॥

अहो ! इमं कुलं णणु पितिपरंपरागयसिरियं अहुणुट्ठियसिरियं एयं ।

अधवा – अणवेक्खियं ति, ण एयं घरचिंतगा वुड्ढा पडिजग्गंति, णत्थि वा एत्थ घरचिंतगा वुड्ढा, अप्पणो जहिच्छाए पुण्णेहिं चलति ।

गिहसामी य भण्णति – अज्जो कहं जाणसि ?

साधू भणइ – इमेण बालेण जाणामि ॥४३८२॥

जारिसी सा ठवियधाती तारिसीए दोसे उब्भासिउकामो भणति –

थेरी दुब्बलखीरा, चिमिढो पेल्लियमुहो अतिथणीए ।
तणुई मंदक्खीरा, कोप्परथणियं ति सूइमुहो ॥४३८३॥

इमो वालो लक्खणजुत्तो। एयाणि से लक्खणाणि अम्मघातीए उवहम्मंति, जतो एयस्स धाती थेरी, थेरी दुब्बलखीरा भवति, एस वट्टंतो रुक्खगत्तो भविस्सति। अह महल्लथणी तो थणेहिं पेल्लिया णासिका चिमिटा भविस्सति, मुहं च से पेल्लियं गल्लरं भविस्सति, कृशा मंदखीरा भवति, अप्पाहारत्तणओ वट्टंतो किसो चेव भविस्सति। कोप्परथणीए कोप्परागारे थणे सूसंतो उद्दंतुरो सूइमुहो य भविस्सति ॥४३८३॥

बहुवित्थारदूसणे इमं सावण्णं भवति –

जा जेण होति वण्णेण उक्कडा गरहते स तेणेव ।
गरहति समणा तिव्वं, पसत्थभेदं च दुव्वण्णं ॥४३८४॥

जा सा ठवियधाती सा जेण वण्णेण जुत्ता पसत्थेण वा अपसत्थेण वा उक्कडेण वा जहण्णेण वा स साधू तेणेव वण्णेणं तं गरहति। अध जा य ठविया जा य फेडिया ततो दो वि समवण्णा तो समवायातो वा तत्थ वि तं ठवियं तिव्वतरेण वा दुवण्णयरेण वा वण्णभेदेण जुत्तं तेणेव गरहति। जा पुण सा ठवेयव्वा तं दुव्वण्णेण वि जुत्तं पसंसति किमुत पसत्थेण ॥४३८४॥

एवं करेंतस्स इमे दोसा –

ओवट्टिया पदोसं, छोभग उब्भामगो य से जं तु ।
होज्जा मज्ज वि विग्घो, विसाति इयरी वि एमेव ॥४३८५॥

जा सा धातिठाणातो साधुवयणेण उवट्टिता पदोसमावण्णा छोभगं [1]छुभेज्ज। छोभगो अब्भक्खाणं। एस [ते] तीए सह अणायारं सेवति, तस्स वा उब्भामगो त्ति, संघाडगो अण्णो वा मेहुणसंसट्ठो पदुट्ठो जं पंतावणादि काहिति तण्णिप्फण्णं च। इयरी वि जा संजएण पसंसिता धातित्तणे ठविता, सा वि चिंतेज्ज–एस राजत्तो पुणो तीए उलग्गिओ मज्झ दोसे काउं तीए गुणे वण्णेउं मम विग्घं धातित्तणे करेज्ज, तं जाव ण करेति ताव विसं गरं वा देमि, एवं सा वि करेज्ज ॥४३८५॥ गता खीरधाती।

इयाणि मज्जणादियाओ –

एमेव सेसियासु वि, सुयमादिसु करणकारणे सगिहे ।
इड्डीसु य धाईसु य, तहेव उव्वट्टियाण गमो ॥४३८६॥

सेसियाओ मज्जण-मंडण-कीलावण-अंकधातीओ य। "सुत" त्ति पुत्तो। तस्स मज्जणादिकं मातरि वा कारवेति, "करणं" ति अप्पणा वा सगिहं चेव करेति, जहा इड्ढिघरेसु खीरधाती ठविज्जइ तहा इड्ढिघरेसु चेव मज्जणादिधातीतो ठविज्जंति। मज्जणादिधातीण वि उव्वट्टिताणं जो गमो खीरधातीए सो चेव गमो असेसो दट्ठव्वो ॥४३८६॥

इमं मज्जणधातित्तं –

लोलति मही य धूली, य गुंडितो ण्हाण अहंव णं मज्झे ।
जलभीरु अबलणयणो, अतिउप्पिलणेण रत्तच्छो ॥४३८७॥

वालं धूलीए धवलियंगं दट्ठुं, महीए वा लोलंतं दट्ठुं, साधू तं पुत्तमायं भणाति – एयं वालं ण्हवेहि। उदगं वा कुडगादिसु छोढुं देहि, ताहे अहं ण्हावेमि। ण्हाणधातीए इमं पच्छद्धं दूसणं – अइ(स)ज्झल्लमलण्हाणेण

[1] देज्ज इत्यपि पाठः।

उवसंतो ण्हविज्जंतो जलभीरू भवति, णयणा य अतिजलभरणेण दुब्बला हवंति, अण्णं च जलेणं उप्पिलाविया णयणा जमदूअसण्णिभा रत्ता भवंति ॥४३८७॥

अब्भंगिय संवाहिय, उव्वट्टिय मज्जियं च तं बालं ।
उवणेइ ण्हाणधाती, मंडणधातीए सुइदेहं ॥४३८८॥

सा ण्हाणधाती तं बालं अब्भंगादिएहिं चोक्खदेहं करेत्ता मंडणधातीए समप्पेति ॥४३८८॥ गता मज्जणधाती ।

इमा मंडणधाती –

उसुकादिएहि मंडेहि ताव णं अहव णं विभूसेमि ।
हत्थेव्वगा व पादे, कयमेलेच्चा व से पादे ॥४३८९॥

उसू तिलगा । तेहिं तिलगकडगादिएहिं इमं विभूसियं ससिरियं करेहि ।

अहवा – विभूसणे आणेहि, जेणाहं विभूमेमि । इमो मंडणधातीए दोसो – हत्थेव्वगा आभरणगा कडगादी पादे करेति, गल्लिवगा व से णक्खत्तमालादी पाए कया, एवं सा अलक्खणं मंडेति त्ति । गता मंडणधाती ॥४३८९॥

इमा कीलावणधाती –

ढड्ढसर पुण्णमुहो, मउ गिराए य मम्मणुल्लावो ।
उल्लावणकादीहि य, करेंति कारेति वा किड्डं ॥४३९०॥

कीलावणधातीए दोसं ताव भणाति – जया ढड्ढरसरा कीलावणधाती भवति तो तस्स सरेण पुण्णमुहो भवति । अह मउयगिरा तो मम्मणपलावो भवति, मउलपलावो वा भवति, मूअं वा भवति । एयं रुदंतं बालं मधुरमधुरेहिं कीलावणवयणेहिं साधू कीलावणं करेति । मातरं वा भणाति – एयं रुदंतं बालं कीलावेहि ॥४३९०॥

इमा अंकधाती –

थुल्लाए विगडपादो, भग्गकडी सुक्कडी य दुक्खं वा ।
नीमंसकक्खडकरेहि भीरुतो होइ घेप्पंते ॥४३९१॥

थूलाए अंकधातीए कडिमारोवियस्स जेण विसाला उरू भवंति तेण वियडपादो भवति, सुक्खकडीए अहो उरुविलंबियत्तणओ भग्गकडिसमाणो भवति, णिम्मंसकडीए अट्ठीसु दुक्खविज्जति, किं च णिम्मंसलेहिं करेहिं कक्खडफासेहिं णिच्चं घेप्पंते भीरू भवति । तं बालं साहू अंकेण धरेति, मायरं वा से भणाति – "धरेहि त्ति बालं" ॥४३९१॥

धातीपिंडे इमं उदाहरणं –

कोल्लतिरे वत्थव्वो, दत्तो आहिंडितो भवे सीसो ।
उवहरति धातिपिंडं, अंगुलिजलणे य सादिव्वं ॥४३९२॥

एसा भद्दबाहुकया णिज्जुत्तिगाहा ।

इमं से वक्खाणं –

ओमे संगमथेरा, गच्छ विसज्जंति जंघवलहीणा ।
नवभागखेत्तवसही, दत्तस्स य आगमो ताहे ॥४३६३॥

अत्थि संगमथेरा णामायरिया, ते विहरंता कोल्लइरं णगरं गता, तत्थ दुभिक्खं, सो य आयरिओ जंघावलपरिक्खीणो, अप्पणो सीसस्स सीहणामस्स गणं समप्पेति, विसज्जेति य गच्छं, सुभिक्खे विहरह, गता ते, सो वि आयरिओ कोल्लइरे ठितो वत्थव्वो, जातो – खेत्तणितितो त्ति ।

तत्थ सो आयरिओ तं कोल्लइरं णवभागे काउं तत्थेव मासकप्पेण विहरति । एवं विहरंतस्स वारसमो वरिसो । ततो सीहेण सेज्झंतितो दत्तो णाम आयरियाणं सीसो गवेसगो पेसितो, सो आगतो । आयरिओ णितितो त्ति काउ परिहवेणं उवस्सयस्स वाहिं ठितो, गुरूहिं सद्धिं गोयरं पविट्ठो, अण्णाउंछेणं अलभंतो संकिलिस्सति, ठवणाकुलेण दाएइ त्ति ।

तं गुरू जाणिऊण एगम्मि सिट्ठिकुले पूयणागहियं चेडं दट्ठुं भणति – मा रुय चेट्ट त्ति ।

सा पूयणा अट्टट्टहासं गुरुप्पभावेण णट्ठा, सेट्ठिणी तुट्ठा, तीए लड्डुगादी णीणियं पज्जत्तियं ।

गुरुणा भणिओ – "गेण्हसु" त्ति । दत्तेण गहियं, सण्णियट्टो य, चिंतितं – "एयस्स एयाणि-णिस्साकुलादीणि ।" आयरिओ वि अण्णाउंछं हिंडिउं आगतो ।

वियाले आवस्सगकरणे गुरुणा भणियं – "सम्मं आलोएहि ति ।"
उवउत्तो – "ण संभरामि" त्ति ।

गुरुणा भणिओ – "धातिपिंडो तुमे भुत्तो" त्ति ण सम्मं पडिवण्णो ।

भणियं च – "अतिसुहुमाणि पिक्खसि गुरुणो सुचरियतवजोगजुत्तस्स" ।
खेत्तदेवया उवसंता, सा तस्स रुट्ठा, महद्दुद्दिणं विउव्वति ।

सो वाहिं ससीकरेण वाउणा अभिभूओ गुरुणा भणितो – "अतीहि" त्ति ।

सो भणाति – "दुवारं न पेक्खामि" त्ति । गुरुणा खेलेण अंगुली संसट्ठा कया, उड्ढागारा पदीवमिव जलिउमाढत्ता, एहि य इतो त्ति वुत्तं, सो तं "सादेव्वं" अतिसयं दट्ठुं तुट्ठो, आउट्टो "मिच्छामि" त्ति भासति ॥४३६३॥

उवसग्गवहिट्ठाणं, अण्णाउंछेण संकिलेसो य ।
पूयण चेडे मा रुद, पडिलाभण विगडणा सम्मं ॥४३६४॥ गतार्था

एवमादि धातिपिंडो ण कप्पए घेत्तुं ॥४३६४॥

अववादे कारणतो गेण्हंतो अदोसो –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥४३६५॥

असिवादिकारणेहिं गीयत्थो पणगपरिहाणीजयणाए गेण्हंतो सुद्धो ॥४३६५॥

जे भिक्खू दूतिपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

गिहिसंदेसगं णेति आणेति वा जं तण्णिमित्तं पिंडं लभति सो दूतिपिंडो ।

जे भिक्खू दूतिपिंडं, गेण्हेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४३९६॥

अप्पणा गेण्हति, अण्णं वा गेण्हंतं अणुजाणति, तस्स आणादिया दोसा, चउलहुं च पच्छित्तं ॥४३९६॥

सग्गाम परग्गामे, दुविहा दूती उ होइ णायव्वा ।
सा वा सो वा भणती, भणती तं छन्नवयणेणं ॥४३९७॥

तं दूइत्तणं दुविहं – सग्गामे वा करेइ परग्गामे वा । जा सा सग्गामे पागडत्था अपागडत्था वा । परगामे वि एसा चेव दुविधा । पुणो एक्केक्का दुविधा – इत्थी वा संदिसति, पुरिसो वा ॥४३९७॥

दुविहा य होइ दूती, पागड छण्णा य छण्ण दुविहा य ।
लोउत्तरे तत्थेगा, बितिया पुण उभयपक्खे वि ॥४३९८॥

पुव्वद्धं गतार्थम् । जा सा छण्णा सा दुविधा – एगा लोउत्तरे, बितिया लोगे य ॥४३९८॥

लोगुत्तरे य इमा पागडत्था –

भिक्खादी वच्चंते, अप्पाह निणेति खंतिगादीहिं ।
सा ते अमुगं माता, सो च पिया पागडं कहति ॥४३९९॥

सग्गामे अण्णपाडयं भिक्खाए वच्चंतं साहुं सड्ढी सेज्जातरी वा धूयाए अप्पाहेति – "पागडं इमं भणेज्जाह" । साधू वि असंकितं चेव पडिवज्जति – "आमं कहिस्सं" ति, तत्थ गओ तं सेज्जायरिधूयं भणाति – "सा तुज्झ माता पिता वा ते इमं भणति" । सपक्खपरपक्खाणं असंकंतो कहेति त्ति ॥४३९९॥

इमा लोउत्तरछण्णा –

दूतित्तं खु गरहितं, अप्पाहितो बितियपच्चयं भणति ।
अविकोविता सुता ते, जा आह ममं भणति खंती ॥४४००॥

सगामे चेव साहुं भिक्खट्ठा अण्णपाडयं गच्छंतं सेज्जा[त]री मातूं संदिसति – "मम माउ इमं इमं ति कहेज्जासि" । सो तं सव्वं संदेसगं सोउं बितियसाधुपच्चयट्ठा तं सेज्जातरिं भणाति – "अम्हं दूइत्तं गरहियं ।" तमेवं पडिहणित्ता सो अप्पाहियसाधू तं मातिघरं गतो ।

बितियसाधुपच्चया गरिहणगववदेसप्पदाणेण सदिट्ठं कहेइ, "सुणेहि सड्ढी ! सा तुज्झं धूया साधुधम्मे अकोविता ।"

सा भणति 'किं ते कतं ताए ?"

साधू भणति – जा आह" त्ति । भणति – "अमुगं इमं इमं ति मम मातुं कहेज्जह ।"

सा वि तं सोउं भणाति – "वारिज्जिहि त्ति, ण पुणो एवं काहिति ।"

जा [1]उभयपक्खे वि छण्णा सा बिइतीए चेव गाहाए दट्ठव्वा । तत्थ विसेसो – जस्स संदिसति जो य संघाडइल्लो अण्णो वा कोइ पासट्ठितो तं ण जाणाति ।

---

[1] गा० ४३९८ ।

कहं ?

भणति – जंघापरिजियसड्ढीजामाऊ तित्थजत्तं गतो। तम्मि गते ताहिं माताधुताहिं श्रोवातियं – "जति सो क्खेमसिवेण एहिति तो वोक्कडेण वलिं कोट्टज्जाए दाहामो"। सो य श्रागतो श्रप्पणो घरं। तश्रो ताए धूताए तम्मि गामे मातिघरं। तं गामं साहू भिक्खायरियं जंता दिट्ठा, भणिया य "मं मातूते कहिज्जासि तं तहत्ति।" तेहिं कहयंतीए परियच्छियं – "श्रागश्रो जामाउ" त्ति, दिण्णं उवातियं। एमादिया दोसा ॥४४००॥

इमे य श्रण्णगामे दूइत्तणे दोसा –

गामाण दोण्ह वेरं, सेज्जायरिधूय तत्थ खंतस्स।
वहपरिणत्त खंतब्भत्थणं च णाते कए जुद्धं ॥४४०१॥

दोण्ह गामाणं श्रासण्णट्ठियाणं परोप्परं वइरसंबंधो। तत्थेगगामे साधू ठिता। तत्थ साधूण जा सेज्जातरीए धूया तम्मि पडिवेरगामे वसति। तत्थ एगो खंतो दिणे दिणे भिक्खायरियं गच्छति। जत्थ ठिता ते साधू तेण गामेण संपसारिउं सण्णहिउं पडिवेरगामे पडामो। तं णाउं ताए सेज्जातरीए सो भिक्खायरियं गच्छंतो श्रब्भत्थिश्रो मम धूयाए कहेज्जाहि – एस गामो तुम्होवरि पडिउकामो, भत्तुणो सुत्तं करेज्जासि। ततो खंतेण तीसे कहियं, ताए वि भत्तुणो कहियं। गामो एवं णाउं सण्णधिउं एगपासट्ठितो, इतरेसु श्रागतेसु जुद्धं कतं ॥४४०१॥

जामातिपुत्तपतिमारणं तु केण कहितं ति जणवातो।
जामातिपुत्तपतिमारएण खंतेण मे सिट्ठं ॥४४०२॥

तत्थ जुद्धे सेज्जातरीए जामाउश्रो पुत्तो पती य मारिता। तत्थ लोगजत्तागतो जणो भासति – "केण श्रणागतं कहियं, जेण सण्णद्धेहिं महंतं जुद्धं कतं, जामातिपुत्तपतिमारणं च मे वत्तं ?" ताहे सेज्जातरी रुयंती जणस्स कहेति – "एयं जामातिपुत्तपतिमारणं वत्तं, एयं च खंतेण कतं, जतो तेण सिट्ठं।" जम्हा एवमातिदोसा भवंति तम्हा दूतित्तणं ण कायव्वं ॥४४०२॥

वितियपदे इमेहिं कारणेहिं करेज्ज –

असिवे श्रोमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
श्रद्धाणरोहए वा, जयणा कहणं तु गीयत्थे ॥४४०३॥ पुर्ववत्

जे भिक्खू णिमित्तपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

तीतमणागतवट्टमाणत्थाणोपलद्धिकारणं णिमित्तं भण्णति, जो तं पयुंजिता श्रसणादिमुप्पादेति सो णिमित्तपिंडो भण्णति। श्राणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं।

जे भिक्खू णिमित्तपिंडं, कहेज्ज स तं तु श्रहव सातिज्जे।
सो श्राणा श्रणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४०४॥

कंठा। तिविधो कालो – तीतो वट्टमाणो श्रागमिस्सो, एक्केक्कं छव्विहं णिमित्तं पयुंजति। तत्थ

इमे छब्भेदा – लाभं अलाभं सुहं दुक्खं जीवियं मरणं। एयम्मि पत्ते उज्जंते णियमा संजमायपरोभया दोसा भवंति। एत्थ तीतं अप्पदोसतरं, ततो आगमिस्सं बहुदोसतरं, ततो पडुप्पण्णं बहुदोसतरं ॥४४०४॥

तत्थ पडुप्पण्णे इमं उदाहरणं –

नियमा तिकालविसए, नेमित्ते छव्विहे भवे दोसा।
सज्जं तु वट्टमाणे, आउभए तत्थिमं नायं ॥४४०५॥

इमा भद्दबाहुकया गाहा। एतीए इमा दो वक्खाणगाहातो –

आकंपिया णिमित्तेण भोइणी भोइए चिरगयम्मि।
पुव्वभणितं कहेंते, आगतो रुट्ठो य वलवाए ॥४४०६॥

दाराभोयण एगागि आगमो परियणस्स पच्चोणी।
पुच्छा य खमणकहणं, साइयंकारे सुविणादि ॥४४०७॥

एगम्मि गामे ओसण्णो णेमित्ती अच्छति। तत्थ जो गामभोतितो सो पवसितो। तस्स य जा भोइणी सा तं णेमित्तियं णिमित्तं पुच्छति। ताहे तेण सा अवितहणिमित्तेण आकंपिया। अण्णदा सा तं पुच्छति—कया भोइओ एति?

तेण कहियं – कल्लं अमुगवेलाए एति। सो वि भोइओ सव्वं तंत्रं छड्डेउं एगागी जामि "दाराभोयण" त्ति-गवेसामि किं वभिचारं वभिचरति ण वा। तस्सागमणवेलाए सव्वो परियणो पच्चोवणीए णिग्गतो [1]अमोग्गतिया एंति। सो य दिट्ठो।

सागते कए, पुच्छइ – कहं भे णातं?

तेण भणियं – खमणो णेमित्ती, तेण कहियं। आगतो घरं। किलिसितो मणसा एस "वभिचारि" त्ति। भुत्तुत्तरे णेमित्ती सद्दावितो, कहेति णिमित्तं। तेण जं किं चि पुव्वभणियं भुत्तं वा अणुभूतं वा सुविणादिगतं सव्वं सत्यङ्कारेहिं कहितं, एवं कहंते वि कोवं ण मुंचति ॥४४०७॥

कोहा वलवागब्भं, च पुच्छितो [2]पंचपुंडगा संतु।
फाडणा दिट्ठे जति णेव तो तुहं अवितहं कति वा ॥४४०८॥

ततो रुट्ठो (दुट्ठो) पुच्छति – एतीए वलवाए किं गब्भे त्ति?

णेमित्तिणा उवउत्तेण होइऊण भणियं–किसोरो पंचपुंडो। ततो रुट्ठो कालं ण पडिक्खति त्ति, फाडेह उदरं, से फाडियं, दिट्ठो जहादिट्ठो।

ततो भणाति – जति एयं णिमित्तं एवं ण भवंतं तो तुज्झं पोट्टं फाडियं होंतं।

तं एरिसा अवितहणेमित्ती केत्तिया भविस्संति, जतो वभिचरंति णिमित्ता; छाउमत्थुवओवगा य वितहा भवंति। अधिकरणादयो य दोसा आयपरोभयसमुत्था, संकादिया य इत्थीसु दोसा। अतो ण णिमित्तं वागरेयव्वं ॥४४०८॥

---

१ अम्मणुग्गतिया, इत्यपि पाठः। २ पंचपुंडमाहंसु इत्यपि पाठः।

अववादेण वागरेयव्वं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोहए वा, जयणाए वागरे भिक्खू ॥४४०९॥

असिवादिकारणेहिं सुट्ठुअउत्तो तीताइणिमित्तं वागरेति, जाहे पणगपरिहाणीए चउलहुं पत्तो ।

जे भिक्खू आजीवियपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जातिमातिभावं उवजीवति त्ति आजीवणपिंडो ।

जे भिक्खाऽऽजीवपिंडं, गिण्हेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४१०॥

स्वयं गेण्हति, अण्णं वा गेण्हावति, अणुजाणति वा तस्स आणादिया य दोसा, चउलहुं च पच्छित्तं ॥४४१०॥

तम्मिमं च आजीवणं –

जाती-कुल-गण-कम्मे, सिप्पे आजीवणा उ पंचविहा ।
सूयाए असूयाए य, अप्पाण कहेज्ज (ति) एक्केक्को ॥४४११॥

एयस्स इमं वक्खाणं –

जाती कुले विभासा, गणो उ मल्लादि कम्म किसिमादी ।
तुण्णाति सिप्पणा वज्जगं च कम्मेतरा वज्जे ॥४४१२॥

मातीसमुत्था जाती, पितिपक्खो कुलं । विभासति वक्खाणं कायव्वं ।

अहवा – कम्मसिप्पाणं इमो विसेसो – विणा आयरिओवदेसेण जं कज्जति तणहारगादि तं कम्मं, इतरं पुण जं आयरिओवदेसेण कज्जति तं सिप्पं । एतेसि चेव इमं वक्खाणं ॥४४१२॥

दोण्ह वि [1]जातीकुलाणं इमं –

होमातिवितहकरणे, णज्जति जह सोत्तियस्स पुत्तो त्ति ।
ओसिओ वेस गुरुकुले, आयरियगुणे व सूएति ॥४४१३॥

जातिकुलविसुद्धो वि होमे वितहकरणे नज्जति – "एस सोत्तियपुत्तो – श्रुतिस्मृतिक्रियावर्जितो श्रोत्रिकः" । अवितहं पुण किरियं करेंतो णज्जति जहा – "विसिट्ठे गुरुकुले वसिओ सिक्खिओ वा ।" वितहकरणेण आयरितो वा वि से णज्जति अप्पहाण पहाणोत्ति । "सूतेति"-आत्मनो क्रियाचरितेन गुरोः क्रियाचरितं ज्ञापयतीत्यर्थः । अहवा – "सूय" त्ति – अप्पाणं सूयाए जाणावेति ॥४४१३॥

जतो भण्णति –

सम्ममसम्मा किरिया, अणेण ऊणाहिया व विवरीया ।
समिधा मंताहुति ट्ठाण जाव काले य घोसादी ॥४४१४॥

---

1 गा० ४४१२ ।

समिहातिका किरिया अणेण सम्मं पयुत्ता । कहं जाणसि सम्मं पउत्ता असम्मं वा ?

साधू भणति – "अणेगहा मे एस किरिया अणुभूतपुव्वा ।"

ताहे भणति – "किं तुमं बंभणो ?" "आमं" ति भणति । ताहे गृहे संदिसति – "इमस्साऽऽगतस्स अवस्सं भिक्खं देज्जह ।"

जा असमा किरिया सा तिविधा – हीणा अहिता विवरीता । तं च असम्मकरणं समिहं पक्खिवंतो करेति, अण्णं वा मंतं उच्चारति, घृतादि वा आहुतिं करेति, उक्कुडुगादिठाणं वा मंतुच्चारणं जाव उदात्तादी घोसो । एते समिहादओ अप्पणो ठाणेसु कज्जंता कालजुत्ता भवंति, अण्णहा अजुत्ता । अहवा – संज्झातिगो कालो, तम्मि हीणाधियविवरीतता जोएयव्वा, जहा बंभणजातिकुलेसु अप्पाणं जाणावेति ॥४४१४॥

उग्गातिकुलेसु वि एमेव गणे मंडलप्पवेसादी ।
देउलदरिसणभासा, उवणयणे दंडमादी वा (या) ॥४४१५॥

खत्तिएसु उग्गकुला, आदिसद्दातो वइस-सुद्देसु वि । कुल त्ति गतं ।

मंडलमालिहियं दट्ठुं मल्लादिगणेसु हिणाहियं विवरीयं वा तत्थ वि अप्पाणं जाणावेति । गण त्ति गयं ।

[1]सिप्पे अहिणवघडणं चिक्खयं वा सिप्पियं दट्ठुं भणाति – "अहो ! देवकुलस्स उवणतो उवसंघारो पहाणो अहवा अप्पहाणो" त्ति । अहो आयामवित्थारे दट्ठुं भणति – "एवतिए दंडे एयस्स उ" त्ति । इह दंडो हस्तः । आदिशब्दग्रहणाद्धन्वादि ॥४४१५॥

किं चान्यत् –

कत्तरि पयोयणावेक्ख, वत्थु बहुवित्थरेसु एमेव ।
कम्मेसु य सिप्पेसु य, सम्ममसम्मेसु सूइतरा ॥४४१६॥

कर्तरीत्येप कर्तारः, स च शिल्पी कारापको वा, पओयणं कारणं, तं च दविणं, अवेक्खाऽपेक्ष्य दृष्ट्वा इत्यर्थः । वत्थु [वखा] उस्सियादि, बहुवित्थरं अणेगभेदं । एस अवयवत्थो ।

इमो उवसंघारत्थो-जो कत्ता सिप्पी सो जति पभू तं दविणजातं लभति तो वत्थू सुकयं बहुवित्थरं करेति । कारावगो वि जति अत्थि पभू तं दविणजायं तो वत्थू सुकतं बहुवित्थरं कारावेति, ताणि वत्थूणि बहुवित्थराणि "सम्मं" कयाणि दट्ठुं भणाति – 'सुसिप्पिणा कतं, कारावगो वा विसेसण्णू पहाणो आसि, सुविढत्तं च दविणजातं ।"

अह "असम्मं" वत्थुं कयं दट्ठुं भणाति – "दुस्सिक्खियस्स कम्मं कारावगो वा अविसेसण्णू जेण दव्वं मुहा णिजुत्तं, सुबीयमिव ऊसरे ।" एवं अप्पाणं कम्मेसु वा सिप्पेसु वा जाणावेति, सुआवेत्ति अप्पाणं कम्मेसु वा, अकहंतो जाणावेइ, असूयाए पुण फुडमेव अप्पाणं कहेइ – "अहं पि सिप्पी पुव्वासमेण आसी" ॥४४१६॥

इमं वितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोहए वा, जयणाए वागरे भिक्खू ॥४४१७॥ पूर्ववत्

---

1 गा० ४४१२ ।

जे भिक्खू वणीमगपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे भिक्खू वणियपिंडं, भुंजे अहवा वि जो उ सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४१८॥

कंठा । समणादिया साणपज्जवसाणा जे तेसु भत्ता तेसु दातारेसु अप्पाणं वणेति ।

कहं ? भण्णति –

मयमातिवच्छगं पि व, वणेति आहारमातिलोभेणं ।
समणेसु[1] माहणेसु[2] य, किविणा[3]ऽतिहि[4]साण[5]भत्तेसु ॥४४१६॥

जहा मयमातिवच्छो अण्णाए गावीए वणेज्जति, गावी वा तम्मि वण्णिज्जति, सो य आहारादिसु लुद्धो अप्पाणं वणेति, लुद्धत्तमेव दोष इत्यर्थः ।

[1]समणसद्दो इमेसु ठितो –

णिग्गंथ सक्क तावस, गेरुय आजीव पंचहा समणा ।
तेसिं परिवेसणाए, लोभेण वणेज्ज को अप्पं ॥४४२०॥

णिग्गंथा साधू समणा वा, सक्का रत्तपडा, तावसा वणवासिणो, गेरुआ परिवायया, आजीवगा गोसालसिस्सा पंडरभिक्खुआ वि भण्णंति । एते परिवेसज्जमाणे दट्ठुं भत्तलोभेण ते थुणंतो दातारं च पसंसंतो अप्पाणं तत्थ वणेति ॥४४२०॥

समणेसु इमेण विहिणा –

भुंजंति चित्तकम्मट्ठिता व कारुणियदाणरुइणो वा ।
अवि कामगद्दभेसु वि, ण णासए किं पुण जतीसु ॥४४२१॥

जहा चित्तकर्म णिव्विकारं एवं ठिता भुंजंति अण्णं च सत्तेसु कारुणिया दयं कुव्वंति । अप्पणा दाणं देंति, अण्णो वि से दाणं देंतो रुच्चति । अवि पदत्थसंभावणाए । इमं संभावेति – जे वि ताव कामपव्वत्ता तेसु वि दाणं दिण्णं ण विणस्सति – फलं ददातीत्यर्थः । किमंग पुण जे इमे जइणो शीलमंता वतधारिणो य । अहो ! तेसु विढत्तं सुदिण्णं च तेण दाणं बीयमिव सुखेत्ते महफलं ते भविस्सति ॥४४२१॥

एवं भणंतस्स इमे दोसा –

मिच्छत्तथिरीकरणं, उग्गमदोसा य तेसु वा गच्छे ।
चडुगारदिण्णदाणा, पच्चत्थिय मा पुणो एंतु ॥४४२२॥

कुसासणत्थे पसंसंतो दातारस्स मिच्छत्तं थिरीकतं, दातारो वा तस्स तुट्ठो उग्गमदोसण्णतरं काउं भत्तादि देज्ज । अहवा – ते पसंसंतो भोयणादिलुद्धो वा तेसु चेव पविसति ।

पंतो वा भणाति – इमेहिं परभवे ण दिण्णं दाणं, तेण सुणगा इव चाडुं करेंता भत्तादि लभंति ।

---

[1] गा० ४४१६ ।

अहवा – इमे पच्चत्थिया प्रत्यनीका वुद्धकंटका मा पुणो एज्जंति, कडुगफरुसवयणेहिं णिब्भच्छिंति, दाणं च ण देंति।

अहवा – इमे पच्चत्थिया "मा पुणो एंतु" त्ति विसादि देज्ज ॥४४२२॥ समणे त्ति गतं।

"[1]माहणि" त्ति अस्य व्याख्या –

लोकाणुग्गहकारीसु भूमिदेवेसु वहुफलं दाणं।
अवि णाम वंभवंधुसु, किं पुण छक्कम्मणिरएसु ॥४४२३॥

प्रायश्चित्तदान-सूतकविशुद्धि-हस्तग्रहणकरणं, तथान्येषु वहुषु समुत्पद्यमानेषु लोकानुग्रहकारिणं, किं च एते दिवि देवा आसी, प्रजापतिना भूमौ सृष्टा देवा, एतेषु जातिमात्रसंपन्नब्रह्मवंधुष्वपि दत्तं महत् फलं। किमित्यतिशयार्थे। अतिशयेन फलं भवति षट्कर्मनिरतेषु। तानि च यजनं याजनं अध्ययनं अध्यापनं दानं प्रतिग्रहं चेति ॥४४२३॥ "माहणे" त्ति गतं।

इदाणिं [2]किवणे –

किवणेसु दुव्वलेसु य, अवंधवायंकजुंगियत्तेसु।
पूया हेज्जे लोए, दाणपडागं हरति देंतो ॥४४२४॥

अपरित्यागशीलः कृपणः, अहवा – दारिद्दोवहतो जायगो कृपणः, स्वभावतो रोगाद्वा दुर्वलः, अवंधुः सर्वस्वजनवर्जितः, ज्वराद्यातंकेनातंकितः, जुंगितः हस्तपादादिवर्जितः, शिरोऽक्षिदंतादिवेदनार्तः, पूजया लोको ह्रियते, जो एते किवणादि पूएति सो दाणपडागं हरति – सर्वोत्तरं दानं ददातीत्यर्थः ॥४४२४॥ "किवण" त्ति गतं।

इदाणिं "[3]अतिहि" त्ति –

पाएण देति लोगो, उवयारी परिजितेसु वुसिते वा।
जो पुण अद्धाखिण्णं, अतिहिं पूएति तं दाणं ॥४४२५॥

पातोग्गहं जतो वाहुल्ये उवकारकारी, परिचितो मित्तादी वुसितो समोसिओ एगगामनिवासी वा। पायसो एरिसेसु दाणं लोगो देति, तं च दाणं ण भवति। जो त्ति दाता, पुण त्ति विसेसणे। किं विसेसेति? "अद्धाणं", तम्मि अद्धाणे जो खिन्नः श्रान्त इत्यर्थः सो अतिही भवति, नान्यः, तं जो पूएति सो दाता, तंच दाणं जं तारिसस्स अतिहिस्स दिज्जति। अतिथावुपस्थितः अतिथी ॥४४२५॥ अतिहि त्ति गतं।

इदाणिं "[4]साणे" त्ति –

अवि णाम होति सुलभो, गोणादीणं तणादि आहारो।
छिक्किक्कारहयाणं, ण य सुलभो होति सुणगाणं ॥४४२६॥

अवि सं ावणे। किं संभावेति? गोणादीणं साणस्स य आहारदुल्लभत्तं। णाम इति पादपूरणे। अहवा – णाम इत्युपसर्गः, अयं चार्थविशेषे, किं विसेसयति? इमं गोणातीणं दुर्लभोऽप्याहारः तृणादिकं सुलभ एव मन्तव्यः, अटव्यां स्वयं भूतः प्रकीर्णत्वात्, न च श्वानादीनां। कुतः? पराधीनत्वात् जुगुप्सितत्वाच्च, छिक्किकारकरणा दंडादिभिश्च हन्यमानानां न सुलभं इत्यर्थः ॥४४२६॥

[1] गा० ४४१९। [2] गा० ४४१९। [3] गा० ४४१९। [4] गा० ४४१९।

किं च –

केलासभवणे एते, आगया गुज्झगा महिं ।
चरंति जक्खरूवेणं, पूयापूयहिताहिता ॥४४२७॥

कैलासपर्वतो मेरुः, तत्थ जाणि देवभवणाणि तण्णिवासिणो जे देवा एते इमं मच्चलोगं आगच्छंति, जक्खरूवेण श्वानरूपेणेत्यर्थः ।

अह बुद्धी – किमत्थं आगच्छंति ?

भण्णति – पूयापूयहियाहिया । जो पूएति तस्स एते हितं ति हितं करेंति, जो पुण अपूयगो तस्स एते अहियं करेंति ।

अहवा – पूयापूयहितागता । पूय त्ति पूयणिज्जा, एतेसिं एत्थ पूयं हितं । लोगो करेति त्ति, तदत्थं एते आगता ॥४४२७॥ साणित्ति गतं ।

एवमादिपसंसाए अप्पाणं वण्णेति इमे दोसा –

एतेण मज्झ भावो, विद्धो लोगे यणातहज्जम्मि ।
एक्केक्के पुव्वुत्ता, भद्दग-पंताइणो दोसा ॥४४२८॥

"यणातहज्जंमि" त्ति – इम्मम्मि लोगे जो मणोगतं भावं जाणाति तस्स लोगो आउट्टति त्ति वुत्तं भवति, सो य दाता चिंतेति – एतेण मज्झ मणोगतो भावो विद्धो त्ति णातो, ताहे सो दाता तस्स आउट्टो भद्दो सो उग्गमादि करेज्ज, पंतो वा अदिण्णदाणादिपदोसे करेज्ज । एते य एत्थेव पुव्वुत्ता ॥४४२८॥

इमं अत्थसेसं भण्णति –

एमेव कागमादिसु, साणग्गहणेण सूइया होंति ।
जो वा जम्मि पसत्तो, वण्णेति तहिं पुट्ठऽपुट्ठो उ ॥४४२९॥

साणगहणेण कागादिभत्ता वि गहिता । जो वा जम्मि अणिद्दिट्ठे पूयाभिरतो तं तहा पसंसंतो अप्पाणं वण्णेति – पुच्छितो वा अपुच्छिओ वा दाणफलं तस्स अणुकूलं कहयतीत्यर्थः ॥४४२९॥

इमे अपत्ते अणुमतिदोसा –

दाणं ण होति अफलं, पत्तमपत्तेसु सन्निजुज्जंतं ।
ईय वि भणिते दोसो, पसंसतो किं पुण अपत्तं ॥४४३०॥

सामण्णे वि पसंसिते दोसो, किं पुण जो विसेसियं अपत्तं पसंसंति ॥४४३०॥

अपवाद: –

असिवे आमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोहए वा, जयणाए पसंसते भिक्खू ॥४४३१॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू तिगिच्छापिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

रोगावणयणं तिगिच्छा, तं जो करेति गिहस्स तस्स आणादिणो दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं ।

जे भिक्खु तिगिच्छपिंडं, भुंजेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४३२ गतार्था

भणइ य णाहं वेज्जो, अहवा वि कहेति अप्पणो किरियं ।
अहवा वि वेज्जियाए, तिविह तिगिच्छा मुणेयव्वा ॥४४३३॥

"[1]भणति य णाहं वेज्जो" अस्य व्याख्या –

भिक्खातिगतो रोगी, किं वेज्जो हं ति पुच्छितो भणति ।
अत्थावत्तीए कया, अबुहाणं बोहणा एवं ॥४४३४॥

भिक्खातिगतं साधुं रोगी पुच्छति — इमो रोगो इमं च से समुत्थाणं, कहेहि मे जेण पण्णप्पामि ।

साधू भणति – किमहं वेज्जो, जेण पुच्छसि ? एरिसवयणेण तेसिं अबुहाणं बोहणं कतं अत्थावत्तीए, तो वेज्जं पुच्छामो त्ति ॥४४३४॥

"[2]अहवा अप्पणो किरियं कहेति" त्ति अस्य व्याख्या –

एरिसयं वा दुक्खं, भेसज्जेण अमुएण पउणं मे ।
सहसुप्पतियं च सयं, वारेमो अट्ठमादीहिं ॥४४३५॥

साधू रोगिणा पुच्छितो भणाति – एरिसो रोगो अमुगेण मे दव्वेण पण्णत्तो, अमुगेण वा वेज्जेण पण्णवितो ।

अहवा – साधू भणाति – एरिसं रोगमुप्पण्णं जरादिगं सहसा चउत्थच्छट्ठट्ठमादीहिं फेडेमो ॥४४३५॥

"[3]अहवा वि" पच्छद्धस्स इमं वक्खाणं –

संसोहण संसमणं, निदाण परिवज्जणं च जं जत्थ ।
आगंतु धातुखोभे, व आमए कुणति किरियं तु ॥४४३६॥

"[4]वेज्जिया" वेज्जसत्थं, "तिविधं" त्ति वातितो रोगो, पित्तिओ व, सिंभिओ वा । एतेसु रोगेसु संसोहणं वमणं विरेयणं च । "संसमणं" – जेण दोसा समिज्जंति तं च परिपायणादिकं, जं च जत्थ रोगे "णियाणं" ति जेण रोगो संभूतो जेण वा वड्ढति तस्स वज्जणं कारवेति । रोगो पुण दुविधो – आगंतुगो धाउखोभेण य । धाउखोभो तिविहो । आगंतुगो दुट्ठकंटगादिगो । एत्थ दुविधे वि किरियं करेइ ॥४४३६॥

तिगिच्छकरणे इमे दोसा –

अस्संजमजोगाणं, पसंधणं कायघात अयगोले ।
दुब्बलवग्घाहरणं, अच्चुदए गेण्हणुड्डाहो ॥४४३७॥

रोगादभिभूतो आपुच्छमाणो पण्णवंतेण असंजमजोगसु कसिमादिएसु संधितो भवति, कारापितेत्यर्थः । कंदमूलादियाण य घातो कतो भवति । अस्संजतो य वट्टंतो अयगोलसमाणो कातोवघाते वि पयट्टितो भवति ।

---

१ गा० ४४३३ । २ गा० ४४३३ । ३ गा० ४४३३ । ४ गा० ४४३३ ।

एत्थ उदाहरणं – तिगिच्छिणा दुब्बलवग्घो पण्णवियो अणुकंपाए । पच्छा सो वग्घो अरोगसरीरो बहुसत्ते हंतुं पवत्तो । एवं गिहत्थो वि ।

अथ रोगकिरियाए कज्जमाणीए वि अति उदितो जातो, तत्थ गेण्हणादिया दोसा, किं पि संजएण दिण्णं ति जेण रोगवुड्ढी जाता मतो वा । संजएण मारितो त्ति उड्डाहो ॥४४३७॥

इमं बितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए कारए भिक्खू ॥४४३८॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू कोवपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

कोहप्रसादात्पिंडं लभते स कोपपिंडः, चउलहुं ।

जे भिक्खु कोवपिंडं, भुंजेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४३९॥ पूर्ववत्

विज्जा-तवप्पभावं, रायकुले वा वि वल्लहत्तं से ।
णाउं ओरस्स बलं, जं लब्भति कोवपिंडो सो ॥४४४०॥

विज्जासिद्धो विज्जापभावेण सावाणुग्गहसमत्थो भवति, तवप्पभावेण वा तेयलद्धिमादिसंपण्णो, रण्णो वा एस वल्लभो, अच्चंकारिओ उवघात करेस्सति, सहस्सजोही वा एस ओरसबलजुत्तो, एते कुद्धा अवकारकारिणो त्ति, दाता भया देति, गेण्हंतो वि ममेस कोवभया देति, जमेवं लब्भति तं गेण्हंतस्स कोघपिंडो भवति ॥४४४०॥

अहवा –

अण्णेसि दिज्जमाणे, जायंतो वा अलद्धिओ कुज्जे ।
कोवफलम्मि वि दिट्ठे, जं लब्भति कोहपिंडो उ ॥४४४१॥

पगते अण्णेसिं धिज्जादियमादियाणं दट्ठुं अलभंतो कुज्झति, विणा वि पगएण वत्थमसणादियं जातं तो वा अलद्धे कुज्झति, तमणुण्णवेत्ता जं संजयस्स दिज्जति सो कोघपिंडो ।

अहवा – कुद्धेण सावे दिण्णे सावफले दिट्ठे जं लब्भति, सो कोवपिंडो ॥४४४१॥

एत्थ उदाहरणं इमं –

करडुयभत्तमलद्धं, अण्णहि दाहित्थ भणति वच्चंतो ।
थेराभोगण ततिए, आइक्खण खामणा दाणं ॥४४४२॥

हत्थकप्पे धम्मरुई मासखमगो मासपारणे वणियकुले मयकिच्चं करेडुयभत्तं, तत्थ भिक्खं पविट्ठो । धिज्जातियपरिवेसणाए वग्गचित्तेहिं सो ण सण्णातो । आसाए चिरं कालं ठितो । वच्चंतो भणाति – "अण्णेहिं दाहिह" । तं च थेरेण सुयं ।

सो वि अण्णत्तो पज्जत्तियं घेत्तुं पारेत्ता पुणो मासोववासं करेत्ता पारणट्ठा पविट्ठो तम्मि

य वणियकुले । तद्दिणं चेव अण्णं मतं । पुणो तस्स मासपूरणे तत्थ पविट्ठो, तहेव अलद्धे भणाति, तं पि थेरेण सुअं । एवं तिण्णि वारा ।

तइयवाराए थेरेण कहियं – एयं रिसिं उवसमेह, मा सव्वे विणस्सिहिह । सो उवसामितो पज्जत्तियं घयपुण्णादि दिण्णं । एस कोधपिंडो ॥४४४२॥

इमं वितियपदं –

अंसिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए एसए भिक्खू ॥४४४३॥

जे भिक्खू माणपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

अभिमाणतो पिंडग्गहणं करेति त्ति माणपिंडो, आणादिया य, पच्छित्तं च चउलहुं ।

जे भिक्खू माणपिंडं, भुंजेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥४४४४॥ कंठा

इमं माणपिंडे लक्खणं –

उच्छाहितो परेण व, लद्धिपसंसाहि वा समुत्तुइओ ।
अवमाणिओ परेण व, जो एसति माणपिंडो सो ॥४४४५॥

तव्वतिरित्तो परो । तेण महाकुलपसूतातिएहिं वयणेहिं उच्छाहितो, ततो माणट्ठितो जं एसति सो माणपिंडो । तहा परेण चेव तुमं लद्धीए अण्णसरिसा एवं पसंसितो समुत्तुइओ त्ति माणाभिभूतो ।

अहवा – विविधपायं पक्कं दट्ठुं भणाति – देहि मे इतो भत्तं । भत्तसामिणा वुत्तं – "ण देमि" त्ति । पडिभणति साहू – अवस्सं दायव्वं ति । अतिमाणतो तल्लंभे उज्जमं करेंतस्स माणपिंडो भवति ॥४४४५॥

एत्थ इमं उदाहरणं –

[1]इट्टगछणम्मि परिपिंडताण उल्लावो को णु हु पएति ।
आणेज्ज इट्टगाओ, खुड्डो पच्चाह इं आणे ॥४४४६॥

अत्थि गिरफुल्लिगा णगरी, तत्थ य आयरिया बहुसिस्सपरिवारा परिवसंति । अण्णदा तत्थ "इट्टगच्छणे" त्ति, इट्टगा सत्तागला (सुत्तअला) छणो ऊसवो । तम्मि वट्टंते साहू परोपरि पिंडिता उल्लावं करेंति –

को अम्हं अज्ज इट्टगाच्छणे वट्टमाणे इट्टगाओ पज्जत्तियाओ आणेज्जति ?

खुड्डगो भणति – अहं आणामि त्ति ॥४४४६॥

साधू भणंति –

जइ वि य ता पज्जत्ता, अगुलघताहिं ण ताहि णे कज्जं ।
जारिसयातो इच्छह, तां आणेमि त्ति णिक्खंतो ॥४४४७॥

---

१ 'सेवइयाऊसवो' (पिंडवि शुद्धि) ।

जइ वि तुमं ता पज्जत्ताओ आणेहिसि तहावि अम्हं ता हि गुलघयवज्जियाहिं ण कज्जं। एवं णिकाईए खुड्डो भणाति – जारिसाओ तुब्भे भणह तारिसाओ आणेमि त्ति वोत्तुं भायणे घेत्तुं उवओगं काउं णिग्गतो ॥४४४७॥

परियडंतेण दिट्ठा एगम्मि घरे पभूता उवसाहिया। तत्थ अगारी –

ओभासिय पडिसिद्धो, भणति अगारि अवस्सिमा मज्झं।

जति लभसि ता तो मे णासाए कुणसु मोयं तु ॥४४४८॥

तीए पडिसिद्धो। ताहे खुड्डो भणति – इमा इट्टगातो अवस्सं मज्झं भविस्संति आहत्तिय, अगारी पडिभणाति – जति एया लभसि, तो तुमे मज्झ णासाए मोयं कतं – मूत्रितमित्यर्थः। ततो सो खुड्डो ततो घराओ णिग्गतो ॥४४४८॥

सो आह –

कस्स घरं पुच्छिऊणं, परिसाए कतरो अमुगो पुच्छंतो।

किं तेण अम्ह जायसु, सो किविणो ण दाहिती तुज्झं ॥४४४९॥

इमं कस्स घरं?

पुच्छिए कहियं – इंददत्तस्स। कत्थ सो? इमो? परिसाए अच्छति। ताहे परिसं गंतुं पुच्छति – "कयरो तुब्भं इंददत्तो?" त्ति।

तत्थऽण्णे भणंति – "किं तेण? सो किवणो इत्थिवसो य ण तुज्झ दाहिति जातितो। अम्हे जायसु दाहामो जहिच्छियं ॥४४४९॥

ताहे इंददत्तेण –

दाहं ति तेण भणितं, जति ण भवति छण्हमेसि पुरिसाणं।

अण्णतरो तो ते हं, परिसामज्झम्मि जायामि ॥४४५०॥

ताहे खुड्डो भणइ – "जइ इमेसिं छण्हं पुरिसाणं अण्णतरो ण भवसि, तो ते हं इमाए परिसाए मज्झे किंचि पणएमि" ॥४४५०॥

ततो तेणं अण्णेहिं य भणियं – के एते छ पुरिसा? इमे सुणसु।

सेडंगुलि[1] वग्गुडावे[2] किंकर[3] तित्थण्हायए[4] चेव।

गद्धावरंखि[5] हद्द-ण्णाए[6] य पुरिसाऽधमा छा तु ॥४४५१॥

जदा इत्थी भणिता रंधेहि, तदा भणति – अहं उट्ठेमि, ताव तुमं अधिकरणीतो छारं अवणेहि त्ति। तस्स छारे अवणीते सेडंगुलीतो भणति।

इत्थिवयणातो दगमाणेति, सो य लोगसंकितो अप्पभाए चेव सुहसुत्ते पगे रोडेंतो आणेति त्ति वग्गुडावो।

किंकरो उट्ठितो इत्थिं भणाति – किं करेमि त्ति? जं भणामि तं करेसि त्ति।

तित्थण्हायतो – जया सिणाणं मग्गति, तदा इत्थी भणाति – गच्छ तडागं, तत्थ ण्हातो कलसं भरेतुमागच्छाहि त्ति।

गद्धावरंखी — भोयणकाले परिवेसणाए "इतो बाहि" त्ति भणितो, ताहे गद्धो इव रिंखंतो भायणं उड्डेति ।

इत्थीभणितो – "कम्मं करेहि" त्ति । ताहे पडिभणति — "हूंद अण्णयं हूंद" त्ति । "गेण्ह अन्नयं पुत्तभंडं", एयं गेण्ह, जा कम्मं करेमीत्यर्थः ।

एते छ पुरिसा अधमा । एतेसिं हत्थातो न गेण्हामि । ताहे जणेण कलकलो कतो – एस छहिं वि गुणेहिं जुत्तो त्ति ॥४४५१॥

इंददत्तो भणति –

जायसु ण एरिसो हं, इट्टगा देहि पुव्वमतिगंतुं ।
माला उत्तारे गुलं भोएमो दिए तइ दुरूढा ॥४४५२॥

ताहे खुड्डगेण भणियं — इट्टगा देहि । तेण अब्भुवगयं देमि । जाहे घरसमीवं गतो, ताहे खुड्डगं घरासण्णे अप्पसागारियं ठवेउं, अप्पणो पुव्वं घरं पविट्ठो ।

अगारिं भणति – मालाओ गुलं उत्तारेहि त्ति, जेण बंभणे भुंजावेमो ।

ताहे सा अगारी मालं आरूढा, तीए गुलो समप्पितो, भणिया – "उवरि गुलभायणं संजीहराहि" त्ति, सा गुलभायणं संजीहरी गता ॥४४५२॥

इयरेणावि –

सितिअवणण पडिलाभण दिस्सितरी बोल अंगुली नासं ।
दोण्हेक्कतरपदोसे, आतविवत्ती य उभए य ॥४४५३॥

णिसेणी फेडिता. खुड्डो हक्कारितो, पडिलाभिउं पयत्तो । बहुपडिलाभिए अगारिए दिट्ठं, रोलं करेति – "मा देहि" त्ति भणाति । ताहे खुड्डो अप्पणो सागारियं सण्णेउं अंगुलिं णासियाए पक्खिवति, "णासिगाए ते मोयं कयं" ति । पडिलाभितो गतो खुड्डो । एस माणपिंडो ।

इमे दोसा – सा अगारी दोण्हं एगतरस्स पदोसं गच्छति – साहुस्स भत्तुणो वा । अगारी अभिमाणतो अप्पाणं विहाडेज्ज ।

अहवा – रुट्ठा साहुस्स भत्तुणो वा उभयस्स वा विसं गरं वा दाउं विहाडेज्जा ॥४४५३॥

इमं बितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणाए एसए भिक्खू ॥४४५४॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू मायापिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे भिक्खू लोभपिंडं भुंजति भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू विज्जापिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे भिक्खू मंतपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

विज्जामंतेहिं पिंडं जो उप्पाएति तस्स आणादिया दोसा चउलहुं च ।

विज्जाए मंतेण व, जो उप्पाइऊण गिण्हए भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४५५॥ कंठा

विज्जामंतपरूवण, विज्जाए भि (च्छु) क्खुवासिओ होइ ।
मंतम्मि सीसवेयण, तत्थ मुरुंडेण दिट्ठंतो ॥४४५६॥

इत्थिअभिधाणा ससाधणा वा विज्जा, पुरिसाभिहाणो पढियसिद्धो य मंतो ।

विज्जाए भिक्खू उवासगो उदाहरणं। इमं –

परिपिंडितमुल्लावो, अतिपंतो भिक्खुवासतो दाणे ।
जति इच्छह जाण अहं, वत्थादीणं दवावेमि ॥४४५७॥

वहू साधू इतरकहाए अच्छंता पिंडिता उल्लावं करेंति –"एस भिक्खुउवासगो अतिपंतो, अभिग्गहियमिच्छद्दिट्ठी, साहुवग्गस्स दाणं ण देति।" एवं साहू उल्लावेंति। एगेण साहुणा भणितं– जइ विज्जापिंडं इच्छह तो अहं वत्थगुलघयादीणि दवावेमि । साहूहिं अब्भुवगतं । सो साहू भिक्खू-उवासगघरंगतो ॥४४५७॥

गंतुं विज्जामंतण, किं देमी घयगुले य वत्थादी ।
दिण्णे पडिसाहरणं, केण हितं केण मुट्ठो मि ॥४४५८॥

विज्जा आमंतेउं उवासगो वसीकतो भणति – अज्जो किं देमि ते ?

साहू – "घयगुलवत्थे विविधे य खज्जगे।" ताहे तेण भिक्खुउवासगेण हट्ठतुट्ठेण साहू पडिलाहिता गता ।

तेण साहुणा दिण्णे विज्जाए उवसंघारो कतो ।

उवासगो चेतणलद्धो सत्थीभूतो भणाति – "केण मे हडं, केण वा मुट्ठो" त्ति ।

ताहे तस्स परिजणो आतिक्खति – "तुमे सहत्थेण सेयभिक्खूणं दिण्णं ति ॥४४५८॥

ताहे सो –

पडिविज्जथंभणादी, सो वा अण्णो व से करेज्जा हि ।
पावाजीवी मादी, कम्मणकारी भवे वितिए ॥४४५९॥

जस्स सा पयुत्ता विज्जा सो वा अन्नो वा कोति रत्तपडादी साधू वा थंभेज्जा, पडिविज्जाए वच्छाइ वा थभेज्जा ज़हा णोवभुंजेज्जा ।

अहवा – यस्य प्रयुक्ता विद्या सो अवसीकतो चेव पडिविज्जाए साहुं विज्जं वा थंभेज्ज, अण्णो वा कोइ से उवकारकारी पडिविज्जातो विज्जं साघुं वा थंभेज्ज, एवं उड्डाहो ।

अण्णं च सो वा अण्णो वा लोगो भणेज्जा – "एते पावजीविणो मायाविणो कम्मणाणि य करेंति, ण साहुवित्तिणो एते।" भवे वितियपदेण विज्जापयोगा, असिवादिकारणेहिं ण दोसो॥४४५९॥

[1]"मंतम्मि सीस" पच्छद्धं, अस्य व्याख्या –

जह जह पएसिणिं जाणुयम्मि पालित्ततो भमाडेति ।
तह तह सीसे वियण, पणासति मुरुंडरायस्स ॥४४६०॥

मुरुंडो राया, सीसवेयणत्तो जया वेज्जेहिं ण सक्किओ पण्णवेउ ताहे पालित्तायरियं हक्कारेति, सो आगतो, आसणत्थो मुरुंडेण भणिओ – वेदणं मे अवणेहि, ताहे अप्पसागारियं अप्पणो जाणुंसि मंतं झायंतो पदेसिणिं अंगुलिं भमाडेति जहा जहा तहा तहा मुरुंडरायस्स सीसे वेयणा पणस्सति, अवगयवेयणो दिट्ठसंपच्चयो गुरुस्स पाएसु पडितो ॥४४६०॥

एवमादी मंतपओगे इमे दोसा –

पडिमंतथंभणादी, सो वा अण्णो व से करेज्जाहि ।
पावाजीवी मायी, कम्मणकारी भवे बीतिए ॥४४६१॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू चुण्णयपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

वसीकरणाइया चुण्णा, तेहिं जो पिंडं उप्पादेति तस्स आणादिया, चउलहुं च से पच्छित्तं ।

जे भिक्खू चुण्णपिंडं, भुंजेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४६२॥

कंठा । विज्जामतेहिं जे दोसा ते चेव वसीकरणमादिएहिं चुण्णेहिं दोसा, एगाणेगपदोसपत्थारदोसा य । असिवादिकारणेहिं वा वसीकरणमादिचुण्णेहिं पिंडं उप्पादेज्जा ॥४४६२॥

जे भिक्खू अंतद्धाणपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

अप्पाणं अंतरहितं करेंतो जो पिंडं गेण्हति सो अंतद्धाणपिंडो भण्णति ।

तत्थ उदाहरणं – पाडलिपुत्ते णगरे चंदगुत्तो राया, चाणक्को मंती, सुट्ठिया आयरिया । ते य –

जंघाहीणे ओमे, कुसुमपुरे सिस्स जोगरहकरणं ।
खुड्डदुगंऽजणसुणणं, गमणं देसंत ओसरणं ॥४४६३॥

अप्पणा गंतुं असमत्था ओमकाले सीसस्स साहुगणं दाउ तं सुभिक्खं पट्ठवेंति । तस्स य सीसस्स अंतद्धाणजोगं रहे एकांते कहेति । सो य अंजणजोगो दोहिं खुड्डगेहिं सुतो । ततो सो गच्छो पयट्टो जतो सुभिक्खं । ततो खुड्डगा दो वि आयरियणेहेण पडिबद्धा देसंताओ गच्छस्स ओसरित्ता आयरियसमीवमागया ॥४४६३॥

तत्थ य –

भिक्खे परिहायंते, थेराणं ओमे तेसि देंताणं ।
सहभोज्ज चंदगुत्ते, ओमोयरियाए दोब्बल्लं ॥४४६४॥

---

[1] गा० ४४५६ ।

ततो ते थेरा जं लभंति तं तेसिं खुड्डगाणं समतिरेगं देंति, अप्पणा ओमं करेंति । ततो तेहिं दोहिं वि खुड्डगेहिं सो अंतद्धाणजोगो मेलिओ, एगेणं अक्खी अंजिता वितितो ण पस्सति । एवं लद्धपच्चया भोयणकाले सह रण्णा चंदगुत्तेण भुंजंति, जं रण्णो सारीरयं भत्तं तं ते अंतद्धिया भुंजंति, ततो रण्णो ओमोयरियाए दोव्वलं जायं ॥४४६४॥

ततो चाणक्केण –

चाणक्कपुच्छ इट्टालचुण्ण दारं पिहेउ धूमो य ।

दिस्सा कुच्छ पसंसा, थेरसमीवे उवालंभो ॥४४६५॥

पुच्छित्तो कीस परिहाणी ? भणाति – "मज्झ भत्तं को ति अतद्धितो पक्खिवति त्ति, ण जाणामि" ।

ततो चाणक्केण समंता कुड्डे दाउं एगदुवारा भुंजणभूमी कता । दारमूले य सुहुमो इट्टालचुण्णो विक्खित्तो । राया अंतो एगागी णिविट्ठो । ताहे खुड्डगा आगता, पविट्ठा अंतो । दिट्ठा पयपद्धती चुण्णे ।

चाणक्केण णायं–पादचारिणो एते, अंजणसिद्धा ।"

ताहे दारं ठवेउं धूमो कतो, अंसुणा गलंतेण गलितं अंजणं, दिट्ठं खुड्डगदुगं । चंदगुत्तो पिच्छति – "अहमेतेहिं विट्टालितो ।"

ततो चाणक्केण भणियं–"एते रिसओ कुसारसमणा, पवित्तं ते एतेहिं सह भोयणं, तुमे सव्वसो अपवित्तेण एते विट्टालिता ।"

ततो अप्पसागारियं चाणक्केण णीणिता । थेराण समीवं चाणक्को गतो – "कीस खुड्डे ण सारवेह ।"

ततो थेरेहिं चाणक्को उवालद्धो – "तुमं परमो सावगो, एरिसे ओमकाले साधूवावारं ण वहसि" त्ति ।

तेण भणियं – "संता पडिचोदणा, मिच्छा मे दुक्कडं" ति । गतो, खुड्डाण य वावारंतो पवूढो ॥४४६५॥

जे विज्जमंतदोसा, ते च्चिय वसिकरणमाइचुण्णेहिं ।

एगमणेगपदोसे, कुज्जा पत्थारतो वा वि ॥४४६६॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्धाणरोहए वा, जयणाए भुंजई भिक्खू ॥४४६७॥ कंठा

जे भिक्खू जोगपिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

पादलेवादिजोगेहिं आउट्टेउं जो पिंडं उप्पादेति तस्स आणादी ङ्क ।

जे भिक्खू जोगपिंडं, भुंजेज्ज सयं तु अहव सातिज्जे ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४६८॥

ते य जोगा इमेरिसा –

सुभगदूभग्गकरा, जे जोगाऽऽहारिमे य इतरे य ।
आघंस वास धूवा, पादपलेवाइणो इतरे ॥४४६९॥

दूभगो सुभगो कज्जति, सुभगो वा दुब्भगो कज्जति जोगेणं । ते य जोगा आहारिमा होज्जा, इतरे अणाहारिमा वा । अणाहारिमा इमे – सरीरं आघस्संति जहा चंदणेणं, वत्थं वासवासियं दिज्जति, अगरुमादिणा वा जहा धूविज्जति, पादतलं वा लेविज्जति तेण दूरं जलोवरिं वा गम्मति ॥४४६९॥

तत्थिमं उदाहरणं –

णदिकण्हवेण्णदीवे, पंचसया तावसाण णिवसंति ।
पव्वदिवसेसु कुलवती, पादलेवुत्तारसक्कारो ॥४४७०॥

आभीरविसए कण्हवेण्णा णाम नदी । तस्स कूले वंभद्दीवो । तत्थ पंचसता तावसाण परिवसंति । तेसिं जो कुलवती सो पादलेव जोगं जाणति । ते अट्ठमिचउद्दसादिसु पव्वदिवसेसु पादलेवजोगप्पभावेण वेण्णणदीपरकूलतो जलमुवरिएण पादपयारेण जह भूमीए तहा वेण्णातडणगरं एंति । ततो तेसिं सव्वजणो आउट्टो, भत्तादिणा सक्कारं करेति । जे या वि अणभिगता सड्ढा ते वि तेसिं आउट्टा, अहो ! पच्चक्खो तवप्पभावो त्ति ॥४४७०॥

जण सावगाण खिंसण, समियक्खण मातिठाण लेवेणं ।
सावगपयत्तकरणं, अविणयलोए चलणधोए ॥४४७१॥

जणेण सावगा खिंसिज्जंति – "तुज्झं पवयणे एरिसो अतिसओ णत्थि, एते पच्चक्खदेवता, पणमह एतेसिं ।" अण्णदा वइरसामीमाउलो समियायरिओ विहरंतो तत्थागतो, तस्स कहियं, ते तुण्हिक्का ठिता ।

सड्ढे हि दो तिण्णि वारा भणिता – ओहामिज्जति पवयणं, करेह पसायं ।

तेण भणितं – "एते मातिट्ठाणिणो पादलेवेण उत्तरंति, तुब्भे णिमंतित्ता सव्वे गिहे णेउं उसिणोदएण पादे पक्खालेह ।" ताहे सावगा उवट्ठिता पादसोएण, ते णेच्छंति । "लोगो ण याणति तुज्झं विणयं काउं, अम्हे विणयं करेमो, विणएण य वहुफलं दाणं भवति" – ततो सावगेहिं पयत्तेणं चलणधोवणं कतं ॥४४७१॥

पडिलाभित वच्चंता, णिवुड्ड णदिकूल मिलण समिताए ।
विम्हय पंचसया तावसाण पव्वज्ज साहा य ॥४४७२॥

सावगेहिं भत्तादिहिं पडिलाहित्ता वहुजणपरिवारिता गया वेण्णं णतिं । तत्थ जो जहा उइण्णो सो तहा णिव्वुडो ।

सावगेहिं जणस्स अक्खित्तं – "एते मातिट्ठाणं करेंति, ण एतेसिं अतिसओ को वि ।"

तम्मि जणसमूहे आगता णदीए तीरे ठिता भणंति आयरिया – वेण्णे ! कमं देहि त्ति । ताहे दो वि तडीओ आसण्णं ठिताओ कममेत्तवाहिणी जाता । आयरिया एगक्कमेण परतीरं गता, पिट्ठओ णदी महंती जाता, पुणो तहेव पच्चागता ।

ताहे जणो तावसा य सव्वे परं विम्हयं गता। वहू जणो आउट्टो। ते य पंचतावससया समियायरियस्स समीवे पव्वतिता। ततो य वंभद्दीवा साहा संवुत्ता। असिवादिकारणेसु वा जोगपिंडं उप्पादेज्जा, ण दोसो इति ॥४४७२॥

संकरजडमउडविभूसणस्स तण्णामसरिसणामस्स।
तस्स सुतेणेस कता, विसेसचुण्णी णिसीहस्स॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए तेरसमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥

चतुर्दश उद्देशकः

उक्तस्त्रयोदशमः । इदानीं चतुर्दशमः, तस्स इमो संबंधो –

धातादिपिंड-अविसुद्धवज्जणे पिंडो पातमवि होति ।
अहवण सोही पगता, स च्चिय पादे वि विन्नेया ॥४४७३॥

धादि आदि जाव जोगपिंडो एते सव्वे अविसुद्ध त्ति काउं पडिसिद्धा । पादं पि पिंडो चेव, तं पि अविसुद्धं वज्जेयव्वं ।

अहवा – चउलहु पच्छित्तं अधिकयं. इमं पि तं चेव ।

अहवा – पिंडे सुद्धी, पादे वि सा चेव सुद्धी कायव्वा ।

अहवा – धातादिपिंडो विसुद्धो, कत्थ घेत्तव्वो ? पादे तस्स मग्गणा ।

अतो भण्णति –

जे भिक्खू पडिग्गहं किणति, किणावेति, कीयमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

क्रयेण कडं कत्तिगेण वा कडं कीयगडं, तं तिविहेण वि करणेण करेंतस्स चउलहुं ।

कीय किणाविय अणुमोदितं च पातं जमाहितं सुत्ते ।
एक्केक्कं तं दुविहं, दव्वे भावे य णायव्वं ॥४४७४॥

अप्पणा वि जं किणाति तं दव्वे भावे य, किणाविते वि एते चेव दो भेदा, जं पि अणुमोदितं तंपि एतेहिं चेव कीयं ॥४४७४॥

कीयकडं पि य दुविहं, दव्वे भावे य दुविहमेक्केक्कं ।
आयकियं च परकियं, परदव्वं तिविह चित्तादी ॥४४७५॥

जं परदव्वकीयं तं पि तिविधं – सचित्तेण वा अचित्तेण वा मीसेण वा । दुपदादिणा सचित्तेण पादं किणति, अचित्तेण हिरण्णेण, सभंडमत्तोवकरणमीसेण किणति । इमं पि परदव्वकीते चउलहुं ॥४४७५॥

इमं अप्पणा दव्वकीतं –

निम्मल्लगंधगुलिया, वण्णगपोत्तादिया य कतदव्वे ।
गेलण्णे उड्डाहो, पउणे चडुगार अहिगरणं ॥४४७६॥

णिम्मला फुल्ला, सुगंधगंधे अक्खिभरणगुलिया पंचवण्णिया धोतिता पोत्ता, एते भिक्खणिमित्तं देति। तहा तिविधे गिलाणोसढे, अगिलाणे गिलाणभूते गिलाणे वा। अगिलाणीभूते उड्डाहो भवति। अह पठणो तो भणति – भिक्खिणिमित्तं चाडुं करेति। असंजयस्स दिण्णे पणगत्ते वा अधिकरणं, एत्थ आयदव्वकए चउलहुं ॥४४७६॥

इमं परभावकीयं –

> वतियादि मंखमादी, परभावकतो तु संजयट्ठाए ।
> उप्पायणा णिमंतण, कीयकडे अभिहडे ठविते ॥४४७७॥

वतिया गोउलं। मंखो सेज्जातरो। सो संजयट्ठा भावकीयं भावेण उप्पादणा।
णिमंतितो भणाति – तुब्भं चिय पासे अच्छउ ताव।
एत्थ तिण्णि दोसा – कीयकडं अभिहडं ठवियं च ॥४४७७॥

एतीए गाहाए इमं वक्खाणं –

> सागारियमंखछंदण, पडिसेहो पुच्छ बहुगए वरिसे ।
> कयरिं दिसिं गमिस्सह, अमुइं तह संथवं कुणति ॥४४७८॥

एगत्थ गामे साहू वासं ठिता। तत्थ य मंखो सेज्जातरो। सो भिक्खं गिण्हह त्ति णिमंतेति। सेज्जातरपिंडो पडिसिद्धो।

ताहे सो मंखो बहुवोलीणे वासे आयरियं पुच्छति। ताहे आयरिएहिं कहियं—
अम्हे पभायदिवसे अमुगं दिसिं विहरिस्सामो।

ताहे सो मंखो तं दिसिं गंतुं वइयाए मंखत्तणेण मंखफलकहत्थो गम्रो। सुहं दुक्खं धम्मं कहेंतो संथवं करेति। ताहे जे जणा तुट्ठा घय-णवणीय-दहि-खीरादि देंति ॥४४७८॥

ताहे सो –

> दिज्जंते पडिसेहो, कज्जे घेच्छं णिमंतण जईणं ।
> पुव्वगओ आगएसुं, संछुभइ एगगेहम्मि ॥४४७९॥

पडिसेधेति, भणति य उप्पण्णे कज्जे घेच्छामि त्ति। तस्सेवं साधू उदक्खंतस्स आगया।

ताहे ते साधू गामवाहिं भणाति—इमा वइया सगोरसा वेलं करेहि त्ति णिमंतेति। साहूहिं अच्छियं। सो पुव्वगतो वइयाए आगतेसु साधूसु खीर-दहिमादियं पुव्वुप्पादियं एगम्मि घरे संछुभति। सव्वे ते य भणिया – देज्जह साधूणं।

साधू य भणाति—अमुगं गिहं सगोरसं तत्थ वच्चह। गतो साधू। जं मंखेण उप्पातियं तं दिण्णं। एयं परभावकीयं। इत्थ मासलहुं ॥४४७९॥

साधुभावकीयं इमं –

> धम्मकहि[1] वादि[2] खमए[3], एत्तो आतावए सुए ठाणे ।
> जाती कुलगणकम्मे, सिप्पम्मि व भावकीयं तु ॥४४८०॥

"[1]धम्मकहि" त्ति अस्य व्याख्या –

धम्मकहातोऽहिज्जति, धम्मकहाऽऽउट्टियाण वा गिण्हे ।
कहयंति साहवो च्चिय, तुमं व कहि अच्छते तुसिणी ॥४४८१॥

लाभत्थी धम्मकहा [2]अहिज्जति, तत्थ अलद्धे वि भावकतो भवति। धम्मेण वा कहितेण आउट्टा दिंति ते सहत्था तो गेण्हति ।

अहवा – पुच्छितो "तुमं सो धम्मकही ?"

ताहे भणति – "साहवो च्चिय कहयंति ।"

अहवा – भणाति "आमं ।"

अहवा – तुसिणीतो अच्छति ॥४४८१॥

अहवा – भणेज्जा –

किं वा कहेज्ज छारा, दगसोयरिया व किं व गारत्था ।
किं छगलयगलवलया, मुंडकुडुंबीय किं कहिते ॥४४८२॥

किमिति क्षेपे । छारत्ति भोया, परिव्वायगा दगसोयरी, गारत्था गिहवासवादिनः, जंणे च्छगलाणं गलं वलेंति धिज्जातिया । मुंडा कुडुंववासे ण वासंति रत्तपडा एते धम्मं सयं ण याणंति, कहमन्नस्स कहिस्संति ॥४४८२॥

एमेव होति नियमा, खमए आतावतम्मि य विभासा ।
सुतठाणं गणिमादी, अहवा ठाणायरियमादी ॥४४८३॥ कंठा

[3]वादिमादिएहिं भावेहिं पगासिएहिं लभिस्सामि त्ति भावकतो भवति । एत्थ वि आय-भावकीते चउलहुं ।

एएसामण्णतरं, कीयं तू जे गिण्हती भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४४८४॥ कंठा

वितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्त सावत, भए य जयणाए कप्पती गहणं ॥४४८५॥ कंठा

जे भिक्खू पडिग्गहं पामिच्चेति, पामिच्चावेति पामेज्जमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

उच्छिण्णं गेण्हति, गेण्हावेति, अणुमोदेति तस्स चउलहुं ।

---

१ गा० ८ । २ गा० ८ । ३ कहिज्जति इत्यपि पाठः ।

पामिच्चित पामिच्चावितं च अणुगीछ्यं च जं पातं ।
एक्केक्कं तं दुविहं, लोइय-लोउत्तरं चेव ॥४४८६॥

लोइयपामिच्चं गिही गिहत्था पामिच्चेंति ।

एत्थ इमं उदाहरणं –

सुयअभिगम णायविही, बहि पुच्छा एगजीवति ससा ते ।
पविसण पाणणिवारण, उच्छिंदण तेल्ल जतिदाणं ॥४४८७॥

एगो कोसलगो दिक्खितो, तेण गुरुकुलवासट्ठितेण सुयं अधीतं । गीयत्थो जातो ।

ताहे गुरुं आपुच्छति – सण्णायगावलोयणेण गच्छामि त्ति । णायविहिं गतो, तं गामं जत्थ सेसजणा ।

गामबाहिरतो पुच्छति – अमुगस्स को जीवइ त्ति । जो पुच्छिओ तेण पच्चभिण्णातो, भणति य एगा ते ससा जीवति – बहिणि त्ति वुत्तं भवति ।

ताहे पविट्ठो बहिणिगिहं, तेण वारिया अम्हट्ठाए पागो ण कायव्वो । तीए फासुगं ति उच्छिण्णं तेल्लमाणियं । साधू पडिगतो ॥४४८७॥

तीए वि तं तेल्लं अदलंतीए –

अपरिमितणेहवुड्ढी, दासत्तं सो य आगतो पुच्छा ।
दंसणकहण मा रुय अचिरा मोएमि अप्पाहे ॥४४८८॥

अपरिमियवड्ढीए बहुं तं बहु जायं । असत्ता दाउं तत्थ घरे दासत्तेण पविट्ठा । गीयसंसार-कते काले साहू आगओ, पुच्छिया, अण्णेण से कहियं – तेल्लसंबंधेण दासत्तं पत्ता ।

रुयंती पुच्छति । साहुणा संदिट्ठं – अचिरा मोएमि, मा रोवसु ॥४४८८॥

तं च दिट्ठं भणाति इमं –

भिक्खु दगसमारंभ, पुच्छाउट्टो कहिं मे वसधि त्ति ।
सम्मत्ता आहरणं, विसज्ज कहणा य कति वा तु ॥४४८९॥

जयाहं भिक्खट्ठा एमि तदा तुमं गिहपतिसमक्खं उदगसमारंभं करेज्जासि । अण्णदा तीए कतो । तेण कहियं – मा मे भिक्खं करेहि त्ति ।

गिहसामिणा पुच्छितो किं ति ? साधुणा भिक्खविसोहिपसंगेण जतिधम्मो कहितो ।

आउट्टो सो गिहसामी पुच्छति – कहिं भे वसहि ? त्ति । कहिया वसही । तत्थ गतो । पुणो वि से धम्मो कहितो । सम्मत्तं पडिवण्णो । अणुव्वता गहिता । चारुदत्तमादिय आवकरुणाहरणं कहियं । तेण वि अभिग्गहो गहिओ, "पुत्तादि सयणो वि पव्वयंतो ण वारेयव्वो" त्ति ।

सा साहुबहिणी उवट्ठिता "पव्वयामि" त्ति विसज्जिता । केत्तिया साधू एरिसा भविस्संति जे एमादिदोसेहिं विमोएहिंति अतो तेल्लपामिच्चे दोसो भणितो ॥४४८९॥

एमेव तिविहपातं, पामिच्चं जो उ गेण्ह आणादी ।
ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति वितियपदं ॥४४६०॥

लाउय-दारुय-मट्टियामयं तिविधं पादं । जे तेल्लादिपिंडदोसा जं च तत्थ बितियपदं, तं चेव पादे वि सव्वं दट्ठव्वं ॥४४६०॥

लोइए लोउत्तरे वा वत्थे पामिच्चे इमे दोसा –

मतिलितफालितऽफोसित, हितणट्ठे वा वि अण्णमग्गंते ।
अवि सुंदरे वि दिण्णे, दुक्कररोयी कलहमादी ॥४४६१॥

मइलादिदोसेहिं तं पामिच्चियं ण गेण्हति, अण्णं मग्गति, अण्णम्मि य सुंदरे वि दिण्णे दुक्कररोइत्तणे ण रोएति, तत्थ "गेण्ह" ण गेण्हामि त्ति कलहमादिया दोसा भवंति । पादे वि भिण्णे लेओ वा विणासिउ त्ति ण गेण्हेज्जा । गयं लोउत्तरं पामिच्चं ॥४४६१॥

जम्हा पामिच्चे एते दोसा तम्हा ण घेत्तव्वं ।

इमं कायव्वं –

उच्चत्ताए दाणं, दुल्लभखग्गूडअलस पामिच्चं ।
तं पि य गुरुस्स पासे, ठवेंति सो देति मा कलहो ॥४४६२॥

वत्थपादादिएसुं पहुप्पंतेसु साहुणा साहुस्स उच्चत्ताए णिद्देज्जं दायव्वं ।

अहवा – इमं वितियपदं – दुल्लभयाए देसे पामिच्चं पि कज्जति सगच्छे परगच्छे वा, तहा खग्गूड अलसाणं पामिच्चं दिज्जति, तं पि गुरूणं समीवे आणेउं ठविज्जति, ताहे सो चेव गुरू देति, मा लंभकाले देंतो ऊणं देज्ज, गेण्हंते वा "ऊणं देज्जासि" त्ति कलहं करेज्जा, तम्हा गुरू तत्थ पमाणं ॥४४६२॥

जे भिक्खू पडिग्गहं परियट्टेइ, परियट्टावेइ, परियट्टियमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

अप्पणिज्जं देति परसंतियं गेण्हति त्ति परियट्टियं, एत्थ चउलहुं ।

परियट्टियं पि दुविहं, लोइय-लोउत्तरं समासेणं ।
एक्केक्कं पि य दुविहं, तद्दव्वे अण्णदव्वे य ॥४४६३॥

तद्दव्वे पत्तं पत्तेण, अण्णदव्वे पत्तं वत्थेण दंडगादिणा वा, संजयस्स गिही जं दाउकामो तं अण्णेण गिहिणा सह परियट्टेउं देति त्ति । एयं लोइयं परियट्टियं ॥४४६३॥

एत्थ इमं उदाहरणं –

अवरोप्परसज्झिलियासंजुत्ता दो वि एक्कमेक्केणं ।
पोग्गलियसंजयट्ठा, परियट्टण संखडे बोही ॥४४६४॥

एसा भद्दबाहुकया गाहा ।

इमं से वक्खाणं –

अणुकंप भगिणिगेहे, दरिद्द परियट्टणा य कूरस्स ।
पुच्छा कोद्दवकूरे, मच्छर णाइक्ख पंतावे ॥४४९५॥

इतरोवि य पंतावे, णिसि उसवेताण तेसि दिक्खा य ।
तम्हा णो घेत्तव्वं, केइय वा जे ओसमेहिंति ॥४४९६॥

एकः अपरः, अन्यः परः, ताभ्यां भगिन्यो, अपरस्य भगिनी परेण संजुत्ता – परिणीतेत्यर्थः। परस्य भगिणी अपरेण संयुक्ता। अन्यो अपरस्य भ्राता प्रव्रजितः, सो सुत्तं अहिज्जित्ता णायविधी आगतो। सो – "भगिणी मण्णु करेस्सति" त्ति अणुकंपाए भगिणिगेहे आवासितो। सा य दरिद्दा कोद्दवकूरो रज्जइ। सो य कोद्दवकूरो भाउघरि णीतो, भाउघराओ सालिकूरो आणितो। एवं संजयट्ठा कूरो परियट्टितो, तस्स भाउणो भोयणकाले सो कोद्दवकूरो दिण्णो।

तेण सा आगारी पुच्छिता – किमेयं? कीस ते कोद्दवकूरो दिण्णो? सा अगारी ओणयण-वयगा तप्पत्तिया मच्छरेण णाइक्खति त्ति – अणक्खती तेण पंताविया।

इयरो वि चिंतेइ – मज्ज भगिणी पंतावित त्ति अहं पि से भगिणि पंतावेमि त्ति। सव्वमधिकरणसंबंधं। सो साहू जाणिऊण राओ बाहिरित्ता सम्मं धम्मोवदेसेण कोवफलदंसणं कहेंतेण उवसामिता, सव्वे य दिक्खिता। जम्हा एते दोसा तम्हा परियट्टणं ण कायव्वं। केतिया वा एरिसा साधू धम्मकहालद्धिया भविस्संति जे उवसामिस्संति। लोइयं परियट्टणं गतं ॥४४९६॥

इमं लोउत्तरं –

ऊणहियदुब्बलं वा, खरगुरुछिण्णमइलं असीतसहं ।
दुव्वण्णं वा णाउं, विप्परिणमे अण्णभणितो वा ॥४४९७॥

एते ऊणाहियादि दोसा वत्थे सगं णाउं, अण्णेण वा विप्परिणामितो विप्परिणमति वत्थे ताहे परियट्टेति। जहा वत्थे तहा पादे वि हुंडादिया दोसा दट्ठव्वा ॥४४९७॥ लोउत्तरं परियट्टणं गतं।

इमं बितियपदं –

एगस्स माणजुत्तं, ण तु बितिए एवमादिकज्जेसु ।
गुरुपामूले ठवणं, सो देई इयरहा कलहो ॥४४९८॥

साहुसंघाडएण हिंडतेण वत्थं पादं वा सामण्णं लद्धं। एगस्स साहुस्स माणजुत्तं भवति ण तु बितियस्स। ताहे जस्स तं पमाणजुत्तं सो गिण्हति, सो य इयरस्स तद्दव्व मण्णदव्व वा किं चि देति। सेसं कंठं ॥४४९८॥

एतेसामण्णतरं, पातं परियट्टियं तु जो गिण्हे ।
ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति बितियपदं ॥४४९९॥

दप्पेण जो परियट्टियं गेण्हति तस्स पुव्वुत्ता दोसा पच्छित्तं च, बितियपदं दुल्लभादिकं ॥४४९९॥

जे भिक्खू पडिग्गहं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडमाहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

अण्णस्स संतयं साहुअट्ठाए बला अच्छिंदिउं देज्जा, जं णिद्देज्जं दिण्णं तं णिसट्ठं, पडिपक्खे अणिसट्ठं, तं जो साधूण पादं देव तस्स आणादिया चउलहुं पच्छित्तं ।

इमा णिज्जुत्ती –

अच्छिज्जं पि य तिविहं, पभू य सामी य तेणए चेव ।
अच्छेज्जं पडिकुट्ठं, साधूण ण कप्पए घेत्तुं ॥४५००॥ कंठा

[1]पभूअच्छेज्जं इमं –

गोवालए य भतए, खरपुत्ते धूय सुण्ह विहवा य ।
अचियत्त संखडादी, केइ पदोसं जधा गोवे ॥४५०१॥

गोवालो गोर्क्षीरादिभागेण गावो रक्खति । तस्स संतियं विभागं पभू अच्छिंदिउं साधूण देज्जा तं ण कप्पति त्ति । दिवसादिभयगस्स वि जस्स भती खीरादियं दिज्जति तं अच्छिंदिउं देज्ज, एवं खरगपुत्तधूयसुण्हाए य विहवाए संतियं विभागं अच्छिंदिउं देंतस्स अचियत्तदोसा भवंति, असंखडिअं च उप्पज्जति, पओसं वा को ति गच्छेज्ज । एत्थ दिट्ठंतो गोवो ॥४५०१॥

गोवय उच्छेत्तु भति, दिवसे दिण्णो य साधुणो पभुणा ।
पयभाणूणं दट्ठुं, खिंसति गोई रुवे चेडा ॥४५०२॥

एगो गोवो पयोविभागेण गावो रक्खति । सो य खीरियाणं गावीणं चउत्थं खीरस्स गेण्हति । चउत्थदिणे वा सव्वदोहं गेण्हति । अण्णदा गोवस्स पयोगहणदिणवारे साधू आगतो । तेण पभुणा गोवपयं घेत्तुं साहुस्स दिण्णं । गोवस्स अचियत्तं तहावि तुण्हिक्को ठितो । तं खीरभायणे ऊणं घेत्तुं गोवो गिहं गतो । गोवीए पयभायणा ऊणा दिट्ठा ।

पुच्छितो – "अज्जं किं एते ऊणा ?" तेण कहियं – "साहुस्स दिण्णं ।"

ताहे सा तं गोवं खिंसति – निंदतीत्यर्थः । चेडरूवाणि य खीरं मग्गंति, सा य रुट्ठा थोवं खीरं ति ण देति, चेडरूवाणं ते अदिज्जमाणे रुयंति ।

ताहे सो गोवो तारिसं गडवेलंबं घरे दट्ठुं साहुस्स रुट्ठो चिंतेति – "मारेमि तं समणगं" ति । पहरणं घेत्तुं निग्गतो ॥४५०२॥

पडिचरणपदोसेणं, भावं णाउं जतिस्स आलावो ।
तण्णिब्बंधा गहितं, हंदसु मुक्कोसि मा बितियं ॥४५०३॥

जतो हुत्तो साहू गतो ततो पडिचरति । साधू वि तं पयं घेत्तुं इतो ततो अप्पसारियं थंडिल्लं गवेसंतो दिट्ठो गोवेण ।

साहुणा वि गोवो दिट्ठो, णातो जहा अतीवपदुट्ठो चित्तेण । तं भावं णाउं साधुणा पुव्वमेव आलत्तो ।

---

१ गा० ४५०० ।

भणति य साधू – मए तस्स गोसामियस्स णिव्वंधातो गहियं, तमहं पयं इदाणिं तुज्झ घरं पयट्टो, तुमं च दिट्ठो, तं हंद इमं गेण्हसु त्ति।

ताहे गोवो उवसंतचित्तो अप्पणो भावं कहयति तं – "गच्छ, इदाणिं मुक्कोसि, मा पुणो एवं वितियं वारं करेज्जसि" ॥४५०३॥

भणति य –

नाणिव्विट्ठं लभति, दासी वि ण भुज्जए ऽरई भत्ता ।
दोण्णेगतरपदोसे, जं काहिति अंतरागं वा ॥४५०४॥

गोवो साहुं उवालंभो भणति – ण अणिव्विट्ठं अणिव्वत्तियं अणुप्पात्तं अणिज्जंतं लब्भति। जा वि दासी मोल्लकीता सा वि रतिविणा भत्ता दिणा ण परिभुज्जति कम्मं ण कारविज्जति त्ति वुत्तं भवति, तं किमेस गोसामी अणिविट्ठं देति? जया गोरक्खादिकं मे ण णिज्जितं भवति तदा खीराती देइ। तं एस अम्ह संतियं कीस तुम्ह देति? कीस वा तुम्हे गेण्हइ? एवं देंतस्स गेण्हंतस्स वा पदोसं गच्छेज्ज, पदुट्ठो वा जं पंतावणादि करेज्ज, अंतरायं कम्मं बज्झति। पभुअच्छेज्जं गतं॥४५०४॥

इयाणिं [1]सामि अच्छेज्जं –

सामी चार भडा वा, संजते दट्ठूण तेसिं अट्ठाए ।
कलुणाणं अच्छेज्जं, साधूण ण कप्पती घेत्तुं ॥४५०५॥

जं जस्स राइणा अणुण्णायं गामो णगरं कुलं वा स तस्स सामी भवति, सो अप्पणा सामी तस्स वा संतिया चारपुरिसा भद्दत्तणेण संजते अणाकालादिसु दट्ठुं खुहत्ते तेसिं जतीणं अणुकंपट्ठाए अच्छिज्जमाणे कलुणं रुदियक्कंतियादि करिंति। जे ते कलुणा तेसिं साधुअट्ठाए अच्छेज्ज काउं जइ साहुणो देज्ज तो ण कप्पति घेत्तुं॥४५०५॥

तं च इमं अच्छेज्जं करेज्ज –

आहारोवहिमादी, जतिअट्ठाए उ को ति अच्छिंदे ।
संखडिअसंखडीए, व तहिं गेण्हंते इमे दोसा ॥४५०६॥

संखडीए असंखडीए वा असणादियं आहारं वत्थादियं वा उवधिं साहुअट्ठाए वा कोति अच्छिंदेज्ज-अच्छिंदित्ता देज्ज, तम्मि घेप्पमाणे इमे बहू दोसा॥४५०६॥

अचियत्तमंतरायं, तेणाहडएकणेकवोच्छेदं ।
णिच्छुभणादी दोसा, वियालऽलंभे य जं पावे ॥४५०७॥

तं साधू दिज्जमाणं दट्ठुं अचियत्तभावं करेज्ज, अंतरायदोसेण वा साधू लिप्पेज्ज, अच्छिज्जे अदिण्णं त्ति काउं तेणाहडदोसा वि संभवंति, जेसिं तं अच्छिण्णं ते तं साधूणं दिज्जमाणं दट्ठुं पदुट्ठा एगस्स वा साधुस्स अणेगाण वा साधूण आहारोवधिवसहिमादियाण वोच्छेदं करेज्ज, वसहीओ वा णिच्छुभेज्ज, जदि

[1] गा० ४५००।

दिवसतो तो ङ्क। अहूरात्रो फ। वेयाले य णिच्छूढा जति अण्णं वसंधि ण लभंति तो बाहिं वसंता ज साव-ताहिमुवद्दवं सरीरोवधितेणोवद्दवं वा पावेज्ज तं णिप्फण्णं सव्वं पावेंति ॥४५०७॥

[1]तेणगच्छेज्जं चिट्ठउ ताव, अणिसट्ठं सामिअच्छेज्जे अणुपडति त्ति अतो अणिसट्ठं भण्णति –

अणिसट्ठं पडिकुट्ठं, तं पि य तिविहं तु होइ नायव्वं ।
चोल्लगजड्डऽणिसट्ठं, साहारणमेव बोधव्वं ॥४५०८॥

अणिसट्ठं पि सदोसं ति काउं पडिसिद्धं, ण घेत्तव्वं। तं तिविधं इमं – चोल्लगो, जड्डो हत्थी, तस्स वा जे भणियाए गोट्ठिसाधारणं वा रद्धं ॥४५०८॥

चोल्लगस्स इमा विही –

छिण्णमछिण्णे दुविहे, होइ अछिण्णे णिसट्ठमणिसट्ठे ।
छिण्णम्मि चोल्लगम्मी, कप्पति घेत्तुं निसट्ठे य ॥४५०९॥

तंदुल-घयादी जत्थ परिमाणपरिच्छिण्णा दिज्जंति सो छिण्णो भण्णति। तप्पडिपक्खे अछिण्णो। छिण्णो णियमा णिसट्ठो, णिसट्ठो णाम णिद्धारिउं दिण्णो। जो पुण अच्छिण्णो सो णिसट्ठो भवइ अणिसट्ठो वा। एत्थ गहणविही इमो – जो वा छिण्णो जो य अछिण्णो निसिट्ठो, एए दो वि जस्स नीया सो वि जति देति तो कप्पति। पुव्वसामिणा दिट्ठा अदिट्ठा वा – अणुन्नाओ अणणुन्नाओ इत्यर्थः ॥४५०९॥

पुनरप्याह –

[2]छिण्णो दिट्ठमदिट्ठो, जो य णिसट्ठो पि होइ अच्छिण्णो ।
सो कप्पति इतरो पुण, अदिट्ठदिट्ठो वऽणुण्णातो ॥४५१०॥ गतार्था

"इतरो" त्ति अछिण्णो अणिसट्ठो जेहिं आणिओ तेसिं अदिक्खंताणं जस्स आणिओ सो जइ देइ तो कप्पइ।

अधवा – जेहिं आणितो तेहिं जइ अणुण्णायं तो तेहिं दिट्ठो वि कप्पति घेत्तुं ॥४५१०॥

अणिसट्ठं पुण कप्पति, अदिट्ठं जेहि तं तु आणीतं ।
दिट्ठं पि पहू कप्पति, जति अणुजाणंति ताइं तु ॥४५११॥

चोल्लगेत्ति गयं। अविसेसेण गतार्था।

"छिण्णो य" त्ति – जो य छिण्णो अणिसट्ठकप्पणाकप्पितो जति वि दिट्ठो अदिट्ठो वा कप्पति, एत्थ अणिसिट्ठकप्पणामित्तं, परमत्थतो य च्छिण्णत्तणतो चेव सो णिसिट्ठो शेषं गतार्थम्। चोल्लगे त्ति गतं।

---

१ गा० ४५०० । २ पाठांतरं –

छिण्णो दिट्ठमदिट्ठो, जो य णिसट्ठो अछिण्णछिण्णो य ।
सो कप्पति इयरो पुण, अदिट्ठदिट्ठे वऽणुण्णाते ॥१॥

इदाणिं [1]जड्डऽणिसिट्ठं –

णिवपिंडो गयभत्तं, गहणादी अंतराइयमदिण्णं ।
डोंबस्स संतिए वि तु, अभिक्ख वसहीए फेडणया ॥४५१२॥
पभु त्ति गयं ।

जति मेंठो भद्दगो हत्थिजेमणिगातो उच्छिंदिउं देति, रायपिंडदोसा, वा रावगेण दिट्ठे गेण्हणकड्ढणादी दोसा, जड्डस्स अंतरातियं, अदिण्णादाणदोसा य । अह मेंठभागं रावगो देज्ज, डोंबो त्ति मेंठो, सो रुट्ठो, अभिक्खणं पुणो पुणो, वसहीए फेडणं भंगं करेति, साधू वा पेल्लावेति ॥४५१२॥ जड्डे त्ति गतं । एत्थ य सामि त्ति गतं ।

इदाणिं [2]तेणगच्छेज्जा –

तेणा व संजयट्ठा, कलुणाणं अप्पणो व अट्ठाए ।
वोच्छेयं च पदोसं, ण कप्पति कप्पणुन्नातुं ॥४५१३॥

तेणा संजयाणं दाहामो त्ति कलुणाण अच्छिंदंति, अप्पणो वा अट्ठाए तेणा हडेत्ता संजयाणं देज्जा । जेसिं तेणाहडितं ते तं दट्ठुं भत्तोवकरणवसहिमादियाण वोच्छेदं करेज्ज, पदोसातो पदुट्ठा वा धम्मं परिच्चएज्ज । अतो तेणाहडं ण कप्पए घेत्तुं, तेहिं वा अणुन्नाए कप्पति घेत्तुं ॥४५१३॥

संजयभद्दा तेणा, अचियत्ती वा असंथरे जतीणं ।
जति देति न घेत्तव्वं, णिच्छुभवोच्छेद मा होज्ज ॥४५१४॥

सत्थे मुसिज्जंते संजयभद्दा तेणा संजयट्ठयाए संजयकप्पणिज्जं मुसित्ता अनियत्ती वा अहभद्दा संजयाण असंथरताणं सत्थाओ अच्छिदिउं देज्ज, तं सव्वं न कप्पते घेत्तुं । सत्थेल्ला य पदोसं गच्छेज्ज, पदुट्ठा सत्थाओ णिच्छुभेज्ज, भत्तादिवोच्छेदं वा करेज्ज ॥४५१४॥

अह ते सत्थेल्ला –

घतसत्तूदिट्ठंतो, समणुण्णाता व घेत्तुणं पच्छा ।
तं सत्थिगाण देंती, समणुण्णाता व भुंजंति ॥४५१५॥

जति सत्थेल्लगा भणंति – "सत्तुगेसु घतं दायव्वमेव, जति अहावत्तीए घयभायणं सत्तुगेसु पलोट्टंतो एवं अम्हेहिं तुम्हं दायव्वमेव । जइ एते तेणगा अम्ह समीवातो घेत्तुं तुम्ह देंति तो किं ण गेण्हह अज्जो ! एवं हितं चेव अम्हं तुम्हं पि ताव होउ ।" एवं पि घेत्तुं सत्थिल्लगाण चेव दायव्वं । अह ते सत्थिल्लगा दिज्जमाणं पि ण गेण्हेज्ज, भणेज्ज "तुम्हं चेव एयं ।" एवं अणुण्णाता परिभुंजंति, ण दोसो ॥४५१५॥ तेणगच्छेज्जं गतं ।

इदाणिं "[3]साधारणं" –

अणिसट्ठं पडिकुट्ठं, अणुण्णातं कप्पती सुविहियाणं ।
लड्डुग जंते संखडि खीरे वा आवणादीसुं ॥४५१६॥

---

१ गा० ४५०८ । २ गा० ४५०० । ३ गा० ४५०८ ।

अणिसट्ठं ण कप्पति घेत्तुं, अणुण्णायं पुण कप्पति । साहारणसंभवो इमो — गोट्ठगेहिं लड्डुगा सामण्णा कता, जंते वा रसो गुलो वा, ओहारगसंखडीए वा भत्तं, गोकुले वा खीरं, आवणे वा सामण्णं घयादिगं ॥४५१६॥

बत्तीसा सामन्ने, ते वि य ण्हातुं गय त्ति इति वुत्तो ।
परसंतिएण पुण्णं, ण तरसि कातुं ति पच्चाह ॥४५१७॥

बत्तीसं गोट्ठिगा, तेहिं लड्डुगभत्तं कयं । तत्थेगं ठविउं सेसा ण्हाइउं गता । तत्थ य एगो साहू भिक्खाए आगओ । तेण सो रक्खपालो मग्गितो ।

सो भणाति — "णाहं जाणामि, बहुसामण्णं एयं" ।

ते कहिं गया ?

तेण कहियं — "ण्हाइउं गता" ।

एवं वुत्तो साधू पडिभणइ — "परसंतिएण दव्वेण पुण्णं ण तरसि काउं" ति ।

पुनरप्याह — "पच्चाह" ॥४५१७॥

अवि य हु बत्तीसाए, दिण्णाए ताव मोयगो न भवे ।
अप्प वय बहु आयं, जति जाणसि देहि तो मज्झं ॥४५१८॥

तं रक्खपालं साधू भणति — "जइ तुमं मम बत्तीसमोदगे दाहिसि तो तुज्झ विभागे एगो मोदगो न भविस्सति, तं जइ एयं अत्थं जाणसि अप्पो ते वयो बहुओ ते आय त्ति ता मज्झ देहि त्ति, मा मुज्झाहि ।" तेण रक्खपालेण साधू पूजितो ॥४५१८॥

लाभित निंतो पुट्ठो, किं लद्धं नत्थि भाणे पेच्छामो ।
इतरो वि आह णाहं, देमि त्ति सहोढ चोरत्तं ॥४५१९॥

साधू पडिलाभितो निप्फिडंतो गोट्ठिगेहिं आगच्छमाणेहिं दिट्ठो, पुट्ठो य — "किं लद्धं" ? साधू भणइ — "ण मे लद्धं" ति ।

गोट्ठिया भणंति — "अप्पणो पेच्छामो भायणं" ति । साधू — ण दाए त्ति । बलामोडीए दिट्ठं, मोदगाणं भरियं भायणं । "केण ते दिण्णं ?" ति ।

साधू भणति — "रक्खपालेण मे दिण्णं" । गोट्ठी साधुं घेत्तुं तत्थ गता ।

रक्खपालो भीतो भणति — "णाहं देमि" त्ति । एवं साहुस्स सहोढं चोरत्तं भवति ॥४५१९॥

सहोढचोरत्ते य —

गेण्हण कड्ढणववहारो पच्छकडुड्डाह तह य णिव्विसए ।
अपभुम्मि भवे दोसा, पहुम्मि दिण्णे ततो गहणं ॥४५२०॥

अप्पभुदिण्णे एते कड्ढणादिया दोसा भवंति । पभुदिण्ण गेण्हतो दोसा ण भवंति ॥४५२०॥

एमेव य जंतम्मि वि, संखडिखीरे य आवणादीसु ।
सामण्णं पडिकुट्ठं, कप्पति घेत्तुं अणुण्णातं ॥४५२१॥

एवं जंतादिएसु एते चेव दोसा भवंति, तम्हा सामण्णं सामातिएहिं अणणुण्णायं न घेत्तव्वं। सामाइयं चेव अणुण्णायं कप्पति घेत्तुं ॥४५२१॥

चोदगाह – "पादाधिकारे पत्थुए कीयगडादिभत्तादिएहिं किं भणिएहिं ? पादं चेव वत्तव्वं"।

आचार्याह –

कामं पातधिकारो, कीयाहडमग्गणा तह वि एत्थं।
पातम्मि वि एस गमो, जो य विसेसो स विण्णेओ ॥४५२२॥

सच्चं पादधिकारो पत्थुओ तहावि पिंडो भण्णति पुव्वपसिद्धीओ।

अहवा – जो चेव भत्ते कीयगडादिसु गमो सो चेव पादे वि गमो णायव्वो, जो पुण विसेसो सो णायव्वो सबुद्धीए भाणियव्वो य ॥४५२२॥

अच्छेज्जऽणिसट्ठाणं, गहणमणुण्णाए होति णायव्वं।
एगतरं गेण्हंते, दोसा ते तं च बितियपदं ॥४५२३॥

अच्छिज्जं अणिसट्ठं च पुव्वसामिणा अणुण्णातं घेत्तव्वं, ण दोसा। अह एगतरं पि अणुण्णातं गेण्हति तो दोसा पुव्वुत्ता। बितियपदे अणणुण्णाता वि गेण्हेज्ज असिवादिएसु कज्जेसु, ण दोसा ॥४५२३॥

जे भिक्खू अतिरेगपडिग्गहं गणिं उद्दिसिय गणिं समुद्दिसिय तं गणिं अणापुच्छिय अणामंतिय अण्णमण्णस्स वियरइ, वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

अतिरेगज्ञापनार्थमिदमुच्यते –

दो पायाऽणुण्णाता, अतिरेगं तइयगं च माणातो।
छिण्णेसु व परिभणिता, सयं च गेण्हंति जं जोग्गं ॥४५२४॥

दो पादाणि तित्थकरेहिं अणुण्णाताणि—पडिग्गहो मत्तगो य। जति ततियं पादं गेण्हति तो अतिरेयं भवति।

अहवा – जं पमाणप्पमाणं भणियं ततो जति वड्डुतरं गेण्हति, एवं अतिरेगं भवति।

अहवा – इमेण प्रकारेण अतिरेगं हवेज्ज – ते साधू पादाति मग्गामो त्ति संपट्ठिता।

आयरिएण भणिता – छिण्णाणि संदिट्ठाणि, जहा वीसं आणेज्जह। ते वच्चंता अंतरा संभोइय-साधुणो पासंति।

तेहिं संपुच्छिता – "कत्तो संपट्ठित्ता ?"

तेहिं कहियं – आयरिएण पयट्टियामो "वीसं पादे आणे" त्ति।

ताहे ते भणंति – "जावतिया तुब्भे संदिट्ठा तावतिएहिं गहिएहिं जति अण्णाणि लभेज्जह तो गेण्हेज्जह, अम्हं दिज्जह, अम्ह आयरियं अणुण्णवेस्सामो।" एवं होउ त्ति, ते गया, लद्धा य, अतिरगविलद्धा गहिया य। एवं अतिरेगपरिग्गहो हुज्जा।

अहवा – "छिण्णेसु चेव "पाउग्गाणि लब्भंति" त्ति काउं बहूणि गहियाणि अप्पच्छंदेणं अणिद्दिट्ठे वि अतिरेगपडिग्गहो होज्जा ॥४५२४॥

"[1]उद्दिसियं समुद्दिसिय" त्ति अस्य व्याख्या –

साहम्मि य उद्देसो, समुद्देसो होति इत्थिपुरिसाणं ।
गणिवातगउद्देसो, अमुगगणी वाइए इतरो ॥४५२५॥

अविसेसिओ उद्देसो जहा साहम्मियाण दाहामि । विसेसिओ समुद्देसो जहा सति साहम्मियत्ते इत्थि-साहम्मिणीणं दाहामि, साहम्मियपुरिसाण वा दाहामि ।

अहवा – उद्देसो गणिस्स दाहामि वायगस्स वा । इयरो णाम समुद्देसो जहा अमुगगणिस्स दाहामो वायगस्स वा ॥४५२५॥

इदाणिं "णिमंतणा आपुच्छणा" य वक्खाणेति –

दिट्ठे णिमंतणा खलु, अदिट्ठे पुच्छा कहिं णु खलु सो त्ति ।
अविसेसमणिद्दिट्ठे, देति सयं वा वि सातिज्जे ॥४५२६॥

जं उद्दिसिय गहियं तं दट्ठुं णिमंतेति, इमं तं पादं इच्छाकारेण गेण्हह ।

अह तं ण पासति जं समुद्दिसिय आणियं ताहे पुच्छति – "कहिं सो अमुगो साहू गणी वायगो वा ?" जइ पुण जं समुद्दिसिय आणियं तं अणामंतिय [2]अणापुच्छिय अण्णस्स देंति तो चउलहुं ।

अह ताण समुद्दिसित्ता किं चि अतिरेगं गहियं तो तं जस्स इच्छति तस्स देंतो सुद्धो, सयं वा सादिज्जति — परिभुंजतीत्यर्थः ॥४५२६॥ एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्तिवित्थरो –

पामाणातिरेगधरणे, चउरो मासा हवंति उग्घाया ।
आणादीणं घट्टण, परिकम्मण पेहपलिमंथो ॥४५२७॥

गणणपमाणातिरित्तं पमाणप्पमाणातिरित्तं वा धरेंतस्स चउलहुं आणादिया य दोसा, तज्जायम-तज्जाया वा पाणा संघट्टिज्जंति, अतिरेगं परिकम्मणे पडिलेहणे य सुत्तत्थपलिमंथो भवति ॥४५२७॥

चोदको पुच्छति –

तो कइ घित्तव्वा उ, भण्णइ अ पडिग्गहो अ मत्तो अ ।
जं तइअं अइरेगं, तमोहे जे भणियदोसा य ॥४५२८॥

आयरिओ भणति – पडिग्गहो मत्तगो य, दोण्हं परेगं जं घेप्पति तं अतिरित्तं, तम्मि अइरित्ते घेप्पंति जे दोसा संजमविराहणादी ते आवज्जति ॥४५२८॥

चोदगाह –

अतिरेगदिट्ठदोसा, ओम धरेंते भणंति णं केयी ।
एगं बहूण कप्पति, हिंडंतु य चक्कवालेणं ॥४५२९॥

---

१ सूत्रपदानि । २ सूत्रपदानि ।

चोदगो भणति – "अइरेगं गेण्हंतस्स दिट्ठा दोसा, तम्हा ओमं धरेयव्वं।" तत्थ सच्छंदपक्खासिता केति ओमं भणति – "एगं पादं बहूण साधूण कप्पतु, भिक्खं च चक्कवालेण हिंडंतु ॥४५२६॥

कहं ? भण्णति –

छण्हं एक्कं पातं, वारसमेणेक्कमेक्क पारेति ।
संघट्टणादि एवं, ण होति दुविहं च सिं ओमे ॥४५३०॥

छण्हं साधूणं एक्कं पादं भवति। एक्केक्को साधू वारसं काउं छट्ठे दिणे पारेति। एवं करेंतेहिं संघट्टणपलिमंथादिया दोसा जढा भवंति। दुविधा ओमोयरिया – दव्वोमोयरिया भावोमोयरिया य एवं तेसिं भवंति।

अहवा – आहारोमं उवकरणोमं च, वत्तीसलंवणाणं ऊणगो होइ आहारोमं, उवकरणे एगवत्थ-एगपादधारित्तं च। [1]सुत्ते य भणियं – "एगं पादं धारेज्जा णो वितियं" ति। एयं च कतं भवति।

इमं च –

वेहारुगाण भण्णे, जह से जल्लेण मतिलितं अंगं ।
मलिता य चोल्लपट्टा, एगं पातं च सव्वेसिं ॥४५३१॥

वेहारु अलक्खणं भवति। वेहारु आगाढा। वेहारुए जणो भणति। कथं ? यथास्य जल्लेण मइलियं अंगं दीसइ चोलपट्टो य तहा सव्वेसिं एगं पादं दिस्सइ, तेण कारणेणं ते धुवं वेहारुआ इत्यर्थः ॥४५३१॥

एवं चोदगेण भणिते आचार्याह –

जेसिं एसुवदेसो, तित्थकराणं तु कोविता आणा ।
णेगा य होंति दोसा, चउरो मासा अणुग्घाया ॥४५३२॥

"छण्हं एगं पादं" ति जेसिं एस उवदेसो तेहिं तित्थकराण आणा कोविता खोडिया, चउगुरुअं च से पच्छित्तं ॥४५३२॥

इमे य अण्णे बहू दोसा –

अद्धाणे गेलण्णे, अप्प-पर-वता य भिण्णमायरिए ।
आएस वाल-वुड्ढा, सेहा खमगा परिच्चता ॥४५३३॥

अद्धाणादिया जे पुरिसा गाहाए गहिता तेसिं जइ एगेण पादेण भत्तं देति तो अप्पा परिचत्तो, अह ण देति तेसिं तो परो परिचत्तो, संसत्तग्गहणवता परिच्चत्ता, एगपादभंगे वा पच्छा किं करेतु ? ॥४५३३॥

दिंतेण तेसिं अप्पा, जढो तु अद्धाणे जे जढा जं वा ।
कुज्जा कुलालगहणं, वता जढा पाणगहणं च ॥४५३४॥

अह अद्धाणपडिवण्णताण तं एगं पादं देति तो अप्पा जढो भवति।

अह ण देति तेसिं भायणं तो ते परिच्चत्ता।

---

[1] आचा० श्रुत० २ अध्य० ६ सू० १५२।

अह ते अद्धाणपडिवण्णगा भायणाभावे कुलालं गेण्हेज्जा, तो अदेंतस्स चउलहुं । तेसिं वा पादं दाउं अप्पणा कुलालग्गहणे चउलहुं । पाणगातिसंसत्तग्गहणे वयभंगो ॥४५३४॥

चोदगाह –

जति एते एव दोसा पत्तेयं ते धरेंतु एक्केक्कं ।
सुत्ताभिहितं च कतं, मत्तगउवदेसणा वेण्हि ॥४५३५॥

चोदगो भणति – जइ एते एत्तिया दोसा बहूणं पादग्गहणे तो पत्तेयं पत्तेयं साधू एक्केक्कं पादं गेण्हतु मा मत्तगं गेण्हंतु, एवं कते सुत्ताभिहितं कयं ।

जतो सुत्ते भणियं – "[1]जे णिग्गंथे तरुणे बलवं से एगं पायं धरेज्जा णो बितियं ।" अण्णं च मत्तगोवदेसो एण्हि पवत्तो – अर्वाक्कालिक इत्यर्थः ॥४४३५॥

दूरे चिक्खिल्लो वुट्ठिकाए सज्झायज्झाणं वाघातो ।
तो अज्जरक्खिएहिं, दिण्णो किर मत्तओ मिच्छा ॥४५३६॥

चोदगो भणति – "दसपुरे णगरे वासासु अज्जरक्खितो उच्छुघरे ठितो । ततो गिलाणपाणगादिकज्जेसु पुणो पुणो दूरं पट्टणं गच्छंताण चिक्खिल्ला, वुट्ठिकाए य आउक्कायविराहणा, सज्झायादिवाघातो य, पुणो पुणो दूरं गच्छंताण । एते कारणे णाऊण अज्जरक्खिएण मत्तगो साहूण दिण्णो, परेण ण मत्तगो आसि ।

आयरिओ भणति – एयं मिच्छापरूवणं करेसि ॥४५३६॥

जतो भण्णति –

पाणदयखमणकरणे, संघाडऽसती वि कप्पपरिहारी ।
खमणासहु एगागी, गेण्हंति तु मत्तए भत्तं ॥४५३७॥

"पाणदय" त्ति बहूणं हिंडंताणं मा आउक्कायादिपाणविराहणा भविस्सति ताहे मत्तगे वि भत्तं गेण्हसि अण्णसाहुअट्ठाए ।

अहवा – एगेण संघाडगसाहुणा खमणं कतं, बितिओ खमणस्स असहू, संघाडासतीते पडिग्गहे भत्तं मत्तगेण वा पाणगं गेण्हति, अण्णेण य संघाडगेण सह णो हिंडति, तिण्हं वि कप्पो भवति त्ति खमगो पारणदिणे संघाडासतीते पढमालियं आणंतो पडिग्गहे पाणगं मत्तए भत्तं गेण्हति । एवं असहुपुरिसो वि, एगागी वा । "कारणे एवं चेव" एवमादि ॥४५३७॥

गुणनिप्फत्ती बहुगी य, दगमासे होहिति त्ति वियरंति ।
लोभे पसज्जमाणे, वारेंति ततो पुणो मत्तं ॥४५३८॥

एवं बहू संजमादिगुणणिप्फत्ती, "दगमासे" त्ति वासासु होहिति त्ति तेन अज्जरक्खियसामी वितरति भोगं मत्तगस्स आत्मार्थे । वरिसाकालस्स परतो उडुबद्धे अतिलोभपसंगतो चेव अज्जरक्खियसामिणो पुणो मत्तगपरिभोगं आत्मार्थे वारेंति, तम्हा अज्जरक्खिएहिं मत्तगपरिभोगो अणुण्णातो ॥४५३८॥

मत्तगो पुण –

थेराणेस वि दिन्नो, ओहोवहि मत्तओ जिणवरेहिं ।
आयरियादीणट्ठा, तस्सुवभोगो ण इहरा तु ॥४५३९॥

---

[1] आचा० श्रुत० अध्य० ६ सू० १५२ ।

थेरकप्पियाण जिणवरेहिं चेव एस मत्तश्रो श्रोहोवहिस्स चोद्दसविहस्स मज्झे भणितो, अस्स य परिभोगो अणुण्णातो आयरियादीणऽट्ठाए, "न इहरा तु" णो अप्पणो अट्ठाए त्ति वुत्तं भवति ॥४५३९॥

एवं सिद्धं गहणं, आयरियादीण कारणे भोगो।
पाणिदयट्ठवभोगो, बितिओ पुण रक्खितऽज्जकतो ॥४५४०॥

मत्तगस्स सिद्धं गहणं थेरकप्पियाणं, तस्स परिभोगो आयरियादिकारणेहिं जिणेहिं चेव अणुण्णातो, बितियपरिभोगो पाणदयादिकारणेहिं आत्मार्थं रक्खियऽज्जेहिं कतो। सो वि इदाणिं अविरुद्धो चेव ॥४५४०॥

उडुबद्धे णिक्कारणा –

जत्तियमेत्ता वारा, दिणेण आणेति तत्तिया लहुगा।
अट्ठहि दिणेहि सपदं, उडुवद्धे मत्तपरिभोगो ॥४५४१॥

मत्तगेण जत्तिए वारे उडुबद्धे पुण आणेति भत्तपाणं तत्तिए वारे मासलहू भवति, अभिक्खसेवाए पुण अट्ठमे दिणे सपदं पारंचियं भवति ॥४५४१॥

जेसिं एसुवदेसो, तित्थगराणं तु कोविता आणा।
चउरो य अणुग्घाया, अह धरणे जे वण्णिया पुव्वं ॥४५४२॥

"तित्थगरेहिं मत्तगो णाणुण्णातो" त्ति जेसिं एरिसो उवएसो ते तित्थगराणं आणाकोवं करेंति, आणा-कोवे य चउगुरुं पच्छित्तं। जे य भणंति – "रक्खियऽज्जेहिं दिण्णो" तेसिं पि चउगुरुं। जे य ण धरेंति मत्तगं तेसिं पि चउगुरुं। अधरेंताण य जे दोसा अद्धाणगिलाणादिया भणिया ते य आवज्जंति ॥४५४२॥

इमे य अण्णे य दोसा –

लोए हवइ दुगुंछा, वीयारे परिग्गहेण उड्डाहो।
आयरियादी चत्ता, वारत्तथली य दिट्ठंतो ॥४५४३॥

मत्तग अधरणे पडिग्गहेण भिक्खं हिंडंति, पडिग्गहं चेव घेत्तुं वीयारभूमिं गच्छंति, तत्थ तं पडिग्गहं उभयपरिभोगं दट्ठुं लोगो दुगुंछं करेति, वोट्टिओ लोगो एतेहिं ति। एत्थ दिट्ठंतो "वारत्तथलीए" त्ति पूर्ववत्। मत्तग अग्गहणे आयरियादी चत्ता भवंति ॥४५४ ॥

जतो मत्तग अग्गहणे एत्तिया दोसा –

तम्हा पमाणधरणे, परिहरिया पुव्ववण्णिया दोसा।
एवं तु सुत्तमफलं, सुत्तणिवाओ उ कारणिओ ॥४५४४॥

गणणापमाणपडिपुण्णो पडिग्गहो मत्तगो य दो गादा धरेयव्वा एवं धरेंतेण पुव्ववण्णिता आयरिय-चयणमादी दोसा वज्जिता भवंति।

नोदगो भणति – "एवं सुत्तं अफलं, अतिरेगअभावाओ।"
आयरिओ भणति – सुत्तणिवातो कारणातिरेगगहिते ॥४५४४॥

"[1]सुत्तं अफलं" ति अस्य व्याख्या –

जति दोण्ह चेव गहणं, अतिरेग परिग्गहो ण जुत्तेवं।
अह देंति तत्थ एगं, हाणी उड्डाहमादीया ॥४५४५॥

चोदको भणति – जति दोण्ह चेव पायाणं गहणं तो अतिरेगपडिग्गहो न संभवति।

अहवा – दोण्ह पायाणं एगं श्रद्धाणपडिवण्णगाण देति तो गिलाणाइयाण अप्पणो वा हाणी, पडिग्गहेण वा वियारादिसु उड्डाहो भवति ॥४५४५॥

एयं चोदगेण भणितो आयरिश्रो भणति सुणेहि अतिरेगसंभवं –

अतिरेग दुविह कारण, अभिनवगहणे पुराणगहणे य।
अभिनवगहणे दुविहे, वावारते अप्पछंदे य ॥४५४६॥

अतिरेगपायसंभवो दुहा भवति – अहिणवपायग्गहणेण वा पुराणपायग्गहणेण वा।

तत्थ जं अहिणवपायग्गहणं तं दुविहं – "वावारिय" त्ति उवकरणुप्पादेण लद्धिजुत्ता आयरिएण णिउत्ता, अप्पच्छंदा गहियसुत्तत्था उच्छहत्ता अभिग्गहं गेण्हंति – "अम्हेहिं अमुगमुवकरणं उप्पाएव्वं" त्ति ॥४५४६॥

अभिणवपायग्गहणे इमे कारणा –

भिण्णे व झामिते वा, पडिणीए तेण-साणमादिहिते।
सेहोवसंपयासु य, अभिणवगहणं तु पायस्स ॥४५४७॥

पुव्वगहिता पाया भिण्णा। 'झामिय" त्ति दड्ढा वा। पडिणीएण वा हिता। तेण साणेण वा हिता। एग-दुग-तिगादि सेहा वा उवट्ठिता, तेसिं पाया णत्थि। सुत्तत्थादीणि वा पडिच्छगा उवसंपण्णा, तेसिं च पाया दायव्वा। एवमादिकारणेहिं अहिणवपायस्स गहणं पायभूमीए गंतुं कायव्वं ॥४५४७॥

तं पायग्गहणं इमे करेंति –

देसे सव्वुवहिम्मि य, अभिगहिता तत्थ होंति सच्छंदा।
तेसऽसति नितोएज्जा, जे जोग्गा दुविधउवहिस्स ॥४५४८॥

"सच्छंद" त्ति अभिग्गही अभिग्गहं उवकरणस्स देसे वा गेण्हंति सव्वे वा, देसे वत्थं वा पायं वा दंडगादि वा, सव्वे सव्वं उवकरणं जं गच्छे उवउज्जति जं वा जो साधू मग्गति तं सव्वं अम्हेहिं उप्पाएयव्वं। तेसिं अभिग्गहीण असति आयरिश्रो णिश्रोएति जे लद्धिसंपण्णा दुविहस्स – ओहिय उवग्गहियस्स ॥४५४८॥

दुविधा छिण्णमच्छिण्णा, लहुओ पडिस्सुणंते य।
गुरुवयणदूरे तत्थ उ, गहिते गहणे य जं भणियं ॥४५४९॥

अभिग्गही वावारिया वा भणिया – गच्छह परिमाणपरिच्छिण्णाणि वीसं पाताणि आणेह, अच्छिण्णाणि वा संदिट्ठा 'जत्तिए लभह त्ति तत्तिए आणेह" त्ति।

---

१ गा० ४५४४।

एवं गच्छंतं कोति भणेज्ज – "ममं पि पादं आणेह" त्ति । एवं भणंतस्स मासलहुं । आणेहामि त्ति जो पडिसुणेति तस्स वि मासलहुं ।

एत्थ इमा विही – जस्स पादेण कज्जं सो गुरुं विण्णवेति, जो य भणति तेण वि गुरू पुच्छियव्वो । अह दूरं गताणं को वि भणेज्ज – मे पातं आणेह तत्थ उ सामाचारी ।

गुरुवयणं ठवेंति – "गिण्हिस्सामो अम्हे पायं तस्स उ गुरू जाणगा भविस्संतीत्यर्थः ।" गतेसु मायणभूमिं गहिएसु मायणेसु गहणकाले वा मायणाणं जं विधाणं भणियं पडिलेहणादिकं तं सव्वं कायव्वं ॥४५४९॥

एतीए चेव गाहाए इमं वक्खाणं, "छिण्णं" ति अस्य व्याख्या –

गेण्हइ वीसं पाते, तिण्णि पगारा य तत्थ अतिरेगे ।
तत्थेव भणति एक्को, बितिओ पंथम्मि दट्ठूणं ॥४५५०॥

वीसाए अतिरित्तस्स इमे तिण्णि पगारा -- जे ते मायणाणं गंतुकामा ते तत्थेव वसहीते ठिता अणिग्गए ।

एगो भणति – "ममं पि पायं आणेह" ।

बितिओ वसहीए णिग्गए पंथट्ठितं आसण्णे दूरे वा भणाति – "ममं पि पादं आणेह" त्ति ॥४५५०॥

ततिओ लक्खणजुत्तं, अहियं वीसाए तं सयं गेण्हे ।
एए तिण्णि विगप्पा, हवंति अतिरेगपातस्स ॥४५५१॥

वीसाए गहिए सुलक्खणं पादं लद्धं, तं सयमेव गेण्हति ततिओ, तिण्णि पगारा अतिरेगपादस्स ॥४५५१॥

"[1]तत्थेव भणति एक्को" त्ति अस्य व्याख्या –

आयरिए भणाहि तुमं, लज्जालुस्स व भणंति आयरिए ।
णाऊण व सब्भावं, णेच्छंति धरा भवे लहुगो ॥४५५२॥

ते पायपट्ठिते एगो साधू भणति – "मम वि पायं आणेह", सो वत्तव्वो आयरिए तुमं भणाहि । जति सो लज्जाए गुरुं ण सक्केइ भणिउं, ताहे ते पायपट्ठिता गुरुं विण्णवेंति – एस साधू भणति – "ममं पि पायं आणेह" त्ति, किं करेमो त्ति । जं गुरू भणति तं करेंति ।

अह सो पायट्ठी सब्भावो त्ति गुरुं ण विण्णवेति ताहे ते पादपट्ठिता तदट्ठाए गुरुं णो विण्णवेंति । "इहर" त्ति – जइ असब्भावस्स गुरुं ण विण्णवेंति तो मासलहुं ॥४५५२॥

जइ पुण आयरिएहिं, सयमेव पडिस्सुयं हवति तस्स ।
लक्खणमलक्खणजुत्तं, अतिरेगं जं तु तं तस्स ॥४५५३॥

"मम वि पादं आणेह" त्ति एवं भणमाणं आयरिएण सयमेव सोउं भणितो – "अज्जो ! आणेज्जह से पातं" । ताहे जं वीसाए उवरिं लब्मति तं लक्खणजुत्तं वा अलक्खणजुत्तं वा तं तस्स आमवति, णो तं पायं अण्णेण पादेण विप्परावत्तेयव्वं ॥४५५३॥

---

1 गा० ४५५० ।

"[1]वितिओ पंथम्मि दट्ठूण" ति अस्य व्याख्या –

आसण्णे परभणितो, तदट्ठ आगंतु विण्णवेंति गुरुं ।
तं चेव पेसवेंति व, दूरगताणं इमा मेरा ।।४५५४।।

अह वसहीतो णिग्गता तो आसण्णे ठिता परेण भणिता – "ममं पि पातं आणेह" त्ति । ताहे तदट्ठा णियत्तिउं गुरुं विण्णवेंति ।

अहवा – "अमंगलं" ति काउं णो णियट्टंति ताहे तं चेव पेसवेति – "गच्छ, गुरू पुच्छाहि" त्ति । तत्थ जं गुरू भणंति तं पमाणं ।

अह दूरं गता पडिपंथिएण य साधुणा दिट्ठा भणिया – "कतो गच्छह" ?

तेहिं भणियं – भायणाणं ति । ताहे गुरू अप्पप्पो ठितो त्ति इमं भण्णति ।।४५५४।।

गिण्हामो अतिरेगं, तत्थ पुणो जाणगा गुरू अम्हं ।
देहंति तगं चण्णं, साहारणमेव ठावेंति ।।४५५५।। कंठा

सच्छंद परिण्णत्ता, गहिते गहणे य जारिसं भणितं ।
अल-थिर-धुवधारणियं, सो वा अण्णो व तं धरते ।।४५५६।।

सच्छंदा अभिग्गहिया परिण्णत्ता गुरूहि जे भणिया "भायणे आणेह" त्ति । एते दो वि जहा भणिया तहा गिण्हति । गहिए पडिलेहणादि तं विधिं करेंति गहणकाले य जारिसं भणितं । करादिसु पप्फोडणादिकं तं सव्वं करेंति । एते चेव सच्छंदपरिण्णत्ता सलक्खणं इमेरिसं अलं थिरं धुवं धारणियं तं अतिरित्तं पि गेण्हंति । तं च आयरियसमीवं णीयं, जेण तं गहियं सो वा धरइ, अण्णो वा तं धारयंति – जस्स आचार्यो ददातीत्यर्थः । अलं पज्जत्तं थिरं दढं धुवं अप्पाडिहारियं धारणिज्जं सलक्खणं ।।४५५६।।

"[2]गहिए" त्ति अस्य व्याख्या –

गहिते उ पगासमुहे, करेंति पडिलेहणा उ दो काले ।
ओमंथ पाणमादी, गहणे य विहिं पउंजंति ।।४५५७।।

जहा उवकरणं दोसु संभाकालेसु पडिलेहिज्जति तहा ते वि गहिते पाए हत्थमेत्तडंडगस्स अंते चीरं बंधिऊण तेण ते पडिलेहंति ।

"[3]गहणे य जारिसं भणिय" त्ति अस्य व्याख्या – "ओमंथ" पच्छद्धं । जं पगासमुहं तं चक्खुणा पडिलेहियं सुद्धं, ततो घेप्पति । जं पुण सणालं संकुडमुहं वा तं दाहिणकरेण घेत्तुं ओमंथिउं काउं वामकरमणिबंधे तिण्णि वारा अक्खोडेंति, अण्णे तिण्णि करतले, अण्णे तिण्णि वारा भूमीए, एवं णवहिं पप्फोडणाहिं जति सुद्धं तो घेप्पति ।।४५५७।। एसा गहण विधी ।

इदाणिं साधूणं गहणविधी भण्णति –

गहितेहिं दोहि गुरुणा, गेण्हंति गयग्गहि जधा वुड्ढं ।
ओमाति काउ मत्ते, सेसा दुविहा कमेणेवं ।।४५५८।।

---

१ गा० ४५५० । २ गा० ४५५६ । ३ गा० ४५५६ ।

पुव्वं गुरू पडिग्गहं मत्तगं पच्छा च दो पादे गेण्हति । पच्छा जे गया पायाणं ते अहारातिणियाए पडिग्गहे गेण्हंति । ते चेव "ओमादी" पच्छाणुपुव्वीए मत्तगे गेण्हंति । पच्छा जे सेसगा साहू ते वि एवं चेव पुव्वाणुक्कमेण य पच्छाणुक्कमेण य पडिग्गहमत्तगे गेण्हति, ॥४५५८॥ एसा छिण्णेसु विधी ।

इमा [1]अछिण्णेसु –

एमेव अछिण्णेसु वि, गहिते गहणे य मोत्तु अइरेगं ।
एत्तो पुराणगहणं, वोच्छामि इमेहि उ पदेहिं ॥४५५९॥

एवं अच्छिण्णेसु वि गहिएसु, गहणकाले य एसेव अविसिट्ठो विधी, णवरि अच्छिण्णेसु अतिरित्तं णत्थि ॥४५५९॥ अहिणवगहणं भणियं ।

[2]इदाणिं पुराणगहणं भणति –

आगम[1] गम[2] कालगते[3], दुल्लहे[4] तिहि कारणेहि एतेहिं ।
दुविहा एगमणेगा, अणेगणिद्दिट्ठऽणिद्दिट्ठा ॥४५६०॥

एतीए गाहाए इमा विभासा, "[3]आगम-गमे" त्ति अस्य व्याख्या –

भायणदेसा एंतो, पादे घेत्तूण एति दाहंति ।
दाऊणऽवरो गच्छति, भायणदेसं तहिं घेत्तुं ॥४५६१॥

जत्थ देसे पभूता भायणा अत्थि ताओ देसाओ आगच्छंतो पुव्वं परिकम्मितरंगिते भायणे घेत्तुं आगच्छंति, जत्थ दुल्लभा पाता तत्थ साधूणं दाहंति । अवरो अप्पणिज्जे भायणे साधूणं दाउं गच्छति, जत्थ सुलभा पादा तत्थ अप्पणो अण्णे पादे घेच्छामि त्ति ॥४५६१॥

अहवा – इमो अइरेगविधी –

[4]कालगतम्मि सहाये, भग्गे वऽण्णस्स होति अतिरेगं ।
एत्तोलंवतिरेगो, दुल्लभपादे वि एमेव ॥४५६२॥

संघाडगसहाए कालगते, "भग्गे व" त्ति उण्णिक्खंते, जे तस्स संतिया पाया मत्तगो पडिग्गहो वा ते इयरस्स संघाडइल्लगस्स अतिरेगा भवंति, ओलंवगं पातं वा लक्खणजुत्तं दुल्लभपाते देसे अतिरित्तं धरेज्ज ॥४५६२॥

अहवा – दुल्लभपाए देसे इमे वा पंच उवग्गहिते धरेज्ज –

नंदिपडिग्गह विपडिग्गहे य तह कमढग विमत्तो य ।
पासवणमत्तगो वि य, तक्कज्जपरूवणा चेवं ॥४५६३॥

तक्कज्जपरूवणा इमा—नंदिपडिग्गहो रोधगट्ठाणगादिसु उवउज्जति, विपडिग्गहो पडिग्गहप्पमाणा हीणतरो सो वि असिवादिकारणे एगाणियस्स उवउज्जति, कमढकं उड्डाहपच्छायणं भोयणकाले वि मत्तगो मत्तगपमाणाओ हीणो सो वि एगाणियस्स उवउज्जति उवग्गहितो, सागारिगे संसत्तकातियभूमादिसु वा पासवणमत्तगेण जयंति, एतेहिं कारणेहि एतेसिं गहणं ॥४५६३॥

[1] गा० ४५४६ । [2] गा० ४५४६ । [3] गा० ४५६० । [4] गा० ४५६० ।

"[1]दुविधा एगमणेग" त्ति पच्छद्धस्स इमा व्याख्या –

एगो णिद्दिसतेगं, एगो णेगा अणेग एगं च ।
णेगाणेगे ते पुण, गणिवसभे भिक्खु थेरादी ॥४५६४॥

भायणदेसा एंतो भायणे इमेण चउभंगेण णिद्दिसिउं आणेति त्ति – एगो एगं, एगो अणेगे । अणेगे एगं, अणेगे अणेगा – णिद्दिसंति ।

जं णिद्दिसंति सो इमेसिं एगतरो – गणि, वसभो, भिक्खू, थेरो, खुड्डगो वा ॥४५६४॥

एमेव इत्थिवग्गे, पंचगमो अहव णिद्दिसहिं मीसे ।
एमेव य एंता वी, समाण असमाण णिद्देसा ॥४५६५॥

इत्थिवग्गे वि गणिणिमादिया एते चेव पंच भेदा णिद्दिसंतस्स ।

अहवा – पुरिसे इत्थिय मीसे णिद्दिसति, जो पुण भायणभूमिं गच्छति सो य सयमेव दाउं गच्छति ।

अहवा – पेसवेति इमं भायणं अमुगस्स साधुस्स पावेज्जह । एस णिंतस्स विसेसो भवति ॥४५६५॥

सच्छंदमणिद्दिट्ठे, पावण णिद्दिट्ठ अंतरा देंति ।
चउलहुगाऽदाणम्मि, ते चेव इमेसि अद्दाणे ॥४५६६॥

जं पुण भायणं अणिद्दिसिउं आणिउं तत्थ "सच्छंदो" त्ति यस्य रोचते तस्य ददाति, जं पुण जस्स णिद्दिसिउं आणियं तं पायं तस्स अवस्सं पावेयव्वं ।

अह तं अण्णस्स देति अंतराले तो चउलहुं, सुत्तादेसतो वा अणवट्ठो, जइ पुण इमेसिं अंतराले मग्गंताण ण देज्जा तो ते च्चेव चउलहुआ ॥४५६६॥

अद्धाण[1]-बाल[2]-वुड्ढे[3], गेलण्णे[4] जुंगिते[5] सरीराणं ।
पाय[6]-ऽच्छि[7]-णास[8]-कर[9]-कण्ण[10] संजतीणं पि एमेव ॥४५६७॥

"अद्धाण-बाल-वुड्ढे" तिण्णि वि जुगवं वक्खाणेति –

अद्धाणे ओमऽसिवे, उद्दाण व ण देंति जं पावे ।
बालस्सऽज्झोववातो, थेरस्सऽसतीव जं कुज्जा ॥४५६८॥

जं एते अद्धाणादिया भायणेण विणा परितावणादिविराहणं पावंति, कुलादि गहणं वा करेंति, तं सव्वं अदेंतो पावति चउलहुं च से पच्छित्तं । बालस्स वा अतीव अज्झोववातो, जदि ण देति ड्क । थेरो वा जं भायणअसती वा पावति करेति वा तं अदेंतो पावति ड्क ॥४५६८॥

अतरंतस्स अदेंते, तप्पडियरगस्स वा वि जा हाणी ।
जुंगित पुव्व णिसिज्जा, जाति विदेसेतरो पच्छा ॥४५६९॥

---

१ गा० ४५६० ।

अतरंतस्स वा जदि ण देति, अतरंतपडिचरगाण वा जदि ण देति, जा य तेसिं भायणेण विणा हाणी । गिलाणस्स अदाणे चउगुरुं ।

चोदगो भणति – णणु जुंगितो अणलगुत्ते पुव्वं चेव य णिसिद्धो ण पव्वावेयव्वो ।

आयरिओ भणति – जातिजुंगिओ जत्थ ण णज्जति तत्थ विदेसे पव्वाविज्जति । "इतरो" त्ति सरीरजुंगितो सो सामण्णे चि ठितो पच्छा भवति ण दोसो । जुंगियस्स जइ ण देति तो च्छु ॥४५६६॥

जाती य जुंगितो पुण, जत्थ ण णज्जति तहिं तु सो अच्छे ।

असुगणिमित्तं विगलो, इतरो जहि णज्जति तहिं तु ॥४५७०॥

इयरो त्ति सरीरजुंगितो जत्थ णज्जति जहा एयस्स हत्थो पादो वा जालगद्दहमादिणा सडितो तत्थेव अच्छति, ण अण्णतो विहरति ॥४५७०॥

ते जातिजुंगिता सरीरजुंगिता वा –

जं हिंडंता काए, वहेंति जं पि य करेंति उड्डाहं ।

किं णु हु गिहिसामण्णे, वियंगिता लोगसंका तु ॥४५७१॥

भायणणिमित्तं जं हिंडंता काये वहेंति, जं वा उड्डाहं करेंति, लोगस्स य संकं जणयंति – 'किं पव्वतिया वि चोरियादिअालणायं करेंति जेण वियंगिता एते ॥४५७१॥

पाय-ऽच्छि-णास-कर-कण्णजुंगिते जाइजुंगिते चेव ।

वोच्चत्थे चउलहुगा, सरिसे पुव्वं तु समणीणं ॥४५७२॥

जति अत्थि पादा तो पाद-अच्छि-णासा-कर-कण्ण-जातिजुंगिताण य सव्वेसिं दायव्वा ।

अह णत्थि एत्तिया तो जातिजुंगिते वज्जेउं सेसाणं पंचण्हं दायव्वं ।

अह एत्तिया वि णत्थि कण्ण-जातिजुंगिते वज्जेउं सेसगाण चउण्हं दायव्वं । एवं एक्केक्कपरिहाणीए जाव पादजुंगियस्स दायव्वं ।

अध ममत्ताइभावेण पादानिकमं मोत्तुं वोच्चत्थं देति तो चउलहुगा । थीसु वि एसेव कमो ।

अह पुरिसवग्गे इत्थीवग्गे य दोसु वि पादादिजुंगिता अत्थि तो सति पादादिसंभवे सव्वेसिं दायव्वं । अह ण संभवं तो पुव्वं समणीणं दायव्वं ॥४५७२॥

जइ अंतराले ण किं चि कारणं जायं तो अतिरेगपडिग्गहे घेत्तुं पत्तो जं थाणं पावियव्वं –

पत्तम्मि सो व अन्नो, सयं व घेत्तूण इच्छकारेण ।

निद्धाणसमोसरणे, णिद्दिट्ठो इच्छा विवेगो वा ॥४५७३॥

पत्ते णिद्दिट्ठमूलं । ताहे जेण आणियं सो वा सयं घेत्तूण अण्णो वा घेत्तूण णिद्दिट्ठपासे ठवेउण – "इच्छाकारं करेह गेण्हह भंत इमं" ति ।

अह ण दिट्ठो जो णिद्दिट्ठो जत्थ मुच्चति तत्थ णेति पेसवेति वा अप्पाहेति वा ।

अह तस्स सुती वि ण सुव्वति तो तिसु समोसरणेसु गवेसति उग्घोसावेइ वा । महंते पुण एक्कंसि चेव उग्घोसेति, जत्थ सुणेति तत्थ णेति पेसति वा अप्पाहेति वा ।

अह समोसरणे वि ण कतोइ पव्वत्ती सुता दिट्ठो वा ताहे इच्छा – जस्स रुच्चेइ तस्स देति परिट्ठवेति वा ।।४५७३।।

णिद्दिट्ठस्स समीवं, गंतुं काऊण इच्छकारं से ।
तं देंति अदिट्ठे पुण, तहियं पेसेंति वप्पाहे ।।४५७४।। गतार्था

खुड्डागसमोसरणेसु तीसु पुच्छित्तु सो तहिं नेति ।
घोसावेति महंते, ओसरणे तत्थ अमुगो त्ति ।।४५७५।। गतार्था ।

अणेगा भणिता जेहिं अतिरेगपडिग्गहो आणितो कप्पति ।
इदाणिं – एगाणितो कारण-णिक्कारणे भण्णति ।
तेसिं केहिं आणितो कप्पति केहिं वा न कप्पति ?

एगे तु पुव्वभणिते, कारणणिक्कारणे दुविहभेदो ।
आहिंडगओधाणे, दुविहा लिंगे विहारे य ।।४५७६।।

एगाणितो दुविहो – कारणे णिक्कारणे वा । सो दुविधो वि पुव्वं भणितो ओहणिज्जुत्तीए ।
आहिंडगो दुविहो – उवदेसे वा अणुवदेसे वा ।
ओहाणे वि दुविधो – लिंगाओ वा धावति, विहरंतो वा ओहावेति ।।४५७६।।

असिवादीकारणितो, णिक्कारणितो व चक्कथुब्भाती ।
उवदेस अणुवदेसे, दुविहा आहिंडगा होंति ।।४५७७।। कंठा

ओहावंता दुविहा, लिंगविहारे य होंति नायव्वा ।
छप्पेते एगागी, विहरे तहि दोसु समणुण्णा ।।४५७८।। कंठा ।

दोसु समणुण्ण त्ति असिवादिकारणिया उवदेसाहिंडगा य एतेहिं दोहिं आणिया घेप्पंति – अनुज्ञा इत्यर्थः । ण सेसेसु चउसु अणुण्णत्ति ।।४५७८।।

णिक्कारणिए अणुवएसिए य आपुच्छिऊण वच्चंतो ।
अणुसट्ठि अठायंतेऽसंभोगायारभंडं वा ।।४५७९।।

णिक्कारणिया जे अणुवदेसाहिंडगा एते दो वि जता आयरियं आपुच्छिऊण वच्चंति तदा एतेसिं अणसट्ठी दिज्जति । अणुसट्ठीए दिण्णाए वि जया ण ठायंति तया जं आयारभंडं विसुद्धोवही तं से घेप्पति, जं गच्छे अविसुद्धं उवकरणं तं से दिज्जति ।।४५७९।।

अणुसट्ठि त्ति इमा –

एमेव चेइयाणं, भत्तिगतो जो तवम्मि उज्जमति ।
इति णिंते अणुसट्ठी, देंति उ वसभा अणुवदेसे ।।४५८०।।

णिक्कारणिगस्स एगाणिगो अणुवदेसाहिंडगस्स एगागिणो एयं अणुसट्ठिं देति ॥४५८०॥

गच्छे कहं उवहतोवहिणो संभवो ? अतो भण्णति –

खग्गूडेण उवहते, अमणुण्णेणागयस्स वा जं तु ।
असंभोइयउवगरणं, इहरा गच्छे तगं णत्थि ॥४५८१॥

खग्गूडो पुव्वभणितो ओहणिज्जुत्तीए तेण जो उवही उवहतो, जो वा अमणुण्णे त्ति अमणुण्णा पासत्थादी तेसिं मज्झातो जो आगतो विहाराभिमुहो तस्स जो पुव्वोवहि सो अविसुद्धो । एवं गच्छे अणायारभंडगसंभवो, इयरहा गच्छे अणायारभंडगं णत्थि, जेण गच्छे दिया वा रातो वा विहीए असुण्णं वसहिं करेति ॥४५८१॥

गच्छतो णिग्गयस्स तद्दिणमण्णदिणे वा अंतरे अण्णेहिं अणुसिट्ठस्स अणणुसिट्ठस्स वा –

तिट्ठाणे संवेगो, सावेक्खो णियट्टो य तद्दिवससुद्धो ।
मासो वुत्थ विगिंचण, तं चेवऽणुसट्ठिमादीणि ॥४५८२॥

तिट्ठाणं णाणदंसणचरित्तं, एतेहिं ठाणेहिं संवेगो जातो, जति संजमसावेक्खचित्तो तद्दिवसं चेव णियत्तो तो सुद्धो, ण से उवही उवहओ, ण वा से किं चि पच्छित्तं ।

अह असंविग्गाणं मज्झे वुत्थो तो मासलहुं पच्छित्तं, उवकरणं च से जइ सुद्धं आसि तो उवहतं विगिंचियव्वं, गच्छे य पडियागयस्स तं चेव सुद्धं उवकरणं पच्चप्पिणिज्जति, अणुसट्ठी कज्जति – "साधु कतं ते जं आगतो सि" ॥४५८२॥

णाणे दंसणेसु इमेरिसो संवेगो –

अज्जेव पाडिपुच्छं, को दाहिति संकियस्स वा उभयं ।
दंसणे उववूहो, कं थिरिकारे कस्स वच्छल्लं ॥४५८३॥

पुव्वद्धं णाणे, पच्छद्धं दंसणे ॥४५८३॥

इमो चरित्तं पडुच्च संवेगो –

सारेहिति सीयंतं, चरणे सोहिं च काहिती को मे ।
एवणियत्तऽणुलोमं, नाउं उवहिं व तं देति ॥४५८४॥

अणुलोमेहिं वयणेहिं उववूहंति, सेसं कंठं ॥४५८४॥

इदाणिं ओहाणुप्पेही भण्णति –

दुविहोहाविं वसभा, सारेंति गयाणि वा से साहिंति ।
अट्ठारस ठाणाइं, हयरस्सिगयंकुसणिभाइं ॥४५८५॥

दुविधो – लिंगतो विहारतो वा ओहावति । विहारओ ओहावंतस्स जाइं रइवक्काए अट्ठारस ठाणाइं हयरस्सिगतंकुसपोतपडागारभूताणि भणिताणि ताणि जइ तस्स गयाणि तो से वसभा सारेंति-संभरे तेसिं अच्छंति, अह ण ताणि गयाणि तस्स तो सुत्तत्थाणि से कहिंति ॥४५८५॥

एवं ताव विहारे, लिंगोहावी वि होइ एमेव ।
सो पुण संकमसंकी, संकिविहारे य एगगमो ।।४५८६।।

लिंगोधावी एवं चेव अणुभासिज्जति। सो पुण लिंगातो ओहावेंतो दुविधो भवति – ससंको णिस्संको वा । एतेसिं पुण जो विहारातो ओहावति, जो य लिंगाओ ससंको ओहावति । एते दो वि चारित्तं पडुच्च उवकरणोवघायं पडुच्च एगगमा – समा इत्यर्थः ।।४५८६।।

दुविहो वि ओहावी इमेहिं अणुसिट्ठो –

संविग्गमसंविग्गे, सारूवि य सिद्धपुत्तमणुसट्ठे ।
आगमणं आणयणं, ते वा घेत्तुं ण इच्छंति ।।४५८७।।

संविग्गा उज्जमंता, असंविग्गा पासत्थादि मुंडसिरा, [दोसु किल] वत्थ-दंडधारी कच्छं णो बंधति, भारिया से णत्थि, भिक्खं हिंडइ वा ण वा एरिसो सारूवी । सिद्धपुत्तो वी एरिसो चेव । णवरं – सिरं मुंडं सिहं च धरेति, भारिया से भवति वा ण वा । एतेहिं अणुसिट्ठस्स पडिआगमणं, एते वा संविग्गादिणो तं आणयंति । जत्थ पासत्थादिएहिं आणितो तत्थ जे अगीयत्था ते चिंतेंति – एस पासत्थादिएहिं सह वसितो आगतो य, एयस्स उवही उवहतो – तं घेत्तुं अगीता ण इच्छंतीत्यर्थः ।।४५८७।।

"[1]संविग्गमसंविग्ग" त्ति अस्य व्याख्या –

संविग्गाण सगासे, वुत्थो तेहिमणुसासिय णियत्तो ।
लहुगो णो उवहम्मइ, इयरे लहुगा उवहओ य ।।४५८८।।

अण्णसंभोतिएहिं सह वसितस्स मासलहुं, ण य से तत्थोवही हम्मति । इतरेसु त्ति पासत्थादिएसु वसंतस्स चउलहुं, अहाच्छंदेसु चउगुरुं, पासत्थादिएसु वसंतस्स उवधी य उवहम्मति ।।४५८८।। "संविग्गमसंविग्गे" त्ति गतं ।

इदाणिं "[2]आगमणे" त्ति दारं –

संविग्गादणुसट्ठो, तद्दिवसणियत्तो जइ वि ण मिलेज्जा ।
ण य सज्जइ वइगाइसु सुचिरेणऽवि तो न उवहम्मे ।।४५८९।।

संविग्गादिएहिं अणुसट्ठो णियत्तो जइ तद्दिवसं चेव गच्छे मिलितो तो सुद्धो चेव । अह तद्दिवसं ण मिलेज्जा, ण य वतियसंखडिमादिसु पडिबज्झति, तो चिरेण वि मिलियस्स उवधी णो उवहम्मति ।।४५८९।।

एगाणियस्स सुवणे, मासो उवहम्मए य से उवही ।
तेण परं चउलहुगा, आवज्जइ जं च तं सव्वं ।।४५९०।।

अह पासत्थादी परिहरंतो वि एगाणिओ रातो णिसट्ठं सुवति तो से मासलहुं उवही य उवहम्मति । "तेण परं" ति – वितियदिवसादिसु एगाणियस्स वसंतस्स चउलहुं । जं च सुत्तत्थपोरिसिं अकरेंतस्स जं च सुत्तत्थे णासेति, जं च दंसणचरणविराहणं पावति, जं च पासत्थादिसु वसति – एतेसु तण्णिप्फण्णं सव्वं पावति ।।४५९०।। "आगमणि" त्ति गतं ।

---

१ गा० ४५८७ । २ गा० ४५८७ ।

"[1]आणयण" त्ति अस्य व्याख्या –

संविग्गेहऽणुसट्ठो, भणेज्ज जइ हं इहं तु अच्छामि ।
भणइ ते आपुच्छसु, अणिच्छि तेसिं निवेदेति ॥४५६१॥

संविग्गेहि अणुसट्ठो पडिणियत्तभावो भणेज्ज संविग्गे – "अहं तुज्झं चेव मज्झे अच्छामि" । एवं भणंतो सो भण्णति – "गच्छ ते अप्पणो आयरिए आपुच्छित्ता एहि" ।

अह सो मंदक्खेणं तत्थ गंतुं ण इच्छति ताहे साधुसंघाडगो पयट्टिज्जति, तेसिं णिवेदिते जं ते भणंति तं कज्जति ॥४५६१॥

सो पुण पडिच्छगो वा, सीसो वा तस्स निग्गतो जत्तो ।
सीसं समणुण्णायं, गेण्हति इतरम्मि भयणा उ ॥४५६२॥

कंठा । णवरं – "इतरो" पडिच्छगो ।

तस्स भयणा इमा –

उद्दिट्ठमणुद्दिट्ठे, उद्दिट्ठसमाणियम्मि पेसंति ।
वाएंति वऽणुण्णाता, कडे पडिच्छंति उ पडिच्छं ॥४५६३॥

जस्स आयरियस्स सगासातो पडिच्छगो णिग्गतो, ततो उद्दिट्ठे वा सुत्ते अणुद्दिट्ठे वा सुत्ते णिग्गतो । जति उद्दिट्ठे सुत्ते असमत्ते य णिग्गतो जहिं य अणुसट्ठो तत्थेव जति परिणतो अच्छामि त्ति तो तेहिं ण धरेयव्वो पेसवेयव्वो ।

अह णेच्छति गंतुं ताहे संघाडगेण पडिपुच्छं कायव्वं, जति ते उद्देसायरिया अणुजाणंति ताहे वायंति ण दोसो ।

अह अणुद्दिट्ठे सुत्ते णिग्गतो उद्दिट्ठे वा कडे पि ण ठितो सो जेहिं अणुसिट्ठो तत्थेव अच्छामि त्ति परिणतो तं पाडिच्छगं पडिच्छंति ण दोसो ॥४५६३॥ "विहारोधावी" गतो ।

इदाणिं "[2]लिंगोधावी" सो वि एवं चेव ।

इमो विसेसो –

संविग्गमसंविग्गे, संकमसंकाए परिणय विवेगो ।
पडिलेहण निक्खिवणं, अप्पणो अट्ठाए अन्नेसिं ॥४५६४॥

संकिओ उण्णिक्खमिस्सं ण वा, असंकाए त्ति अवस्सं उण्णिक्खिस्सामि त्ति । एवं ओहावंतो संविग्गेहिं वा असंविग्गेहिं वा अणुसट्ठो । जति संविग्गेसु चेव परिणतो वुत्थो वा तो अण्णसंभोतिएसु मासलहुं ।

अह पडिनियत्तो असंविग्गेसु परिणतो वुत्थो वा तो उवकरणं उवहतं विवेगो कायव्वो ।

अह उण्णिक्खंतो आयारभंडगं पक्खे पक्खे पडिलेहेति वेहासे य णिक्खिवति त्ति ठवेति एवं करेंतस्स णो उवहम्मति । तं पुण एवं करेति – "पुणो मे णिक्खमंतस्स होहि त्ति अण्णस्स वा साधुस्स दाहामि" त्ति ॥४५६४॥

---

१ गा० ४५८८ । २ गा० ४५८७ ।

घेत्तूणऽगारलिंगं, वती व अवती व जो तु ओधावी ।
तस्स कडिपट्टदाणं वत्थं वाऽऽसज्ज जं जोग्गं ॥४५९५॥

जो लिंगोधावी आयरियसमीवातो चेव अगारलिंगं घेत्तुं गच्छति, "वइ" त्ति अणुव्वयाणि घेत्तुं गच्छति, "अवइ" त्ति दंसणसावतो वा होउं, तस्स आयरिया कडिपट्टगं सगलसाडगं देंति । "वत्थं वाऽऽसज्ज" त्ति पवयणुब्भावगो रायादि दिक्खितो वा जं जोग्गं ति जुवलं दो तिण्णि वा जाव हिरण्णगादी वि दिज्जति ॥४५९५॥ आगारलिंगोहावी गतो ।

इमो संकिज्जइ –

जति जीविहिंति जति वा, वि तं धणं धरति जति व वोच्छंति ।
लिंगं मोच्छिहिति संका, पविट्ठवुत्थे व उवहम्मे ॥४५९६॥

लिंगोहावी गहियलिंगो इमं चिंतेति – "जइ मे सयणा भारिया वा जीवति, जति वा धणं दाइया-दीहिं अविलुत्तं धरेति, जति वा मातापिताद्या सयणा भणीहिंति – जहा "उण्णिक्खमाहि", तो रयोहरणादियं दव्वलिंगं मुंचीहामि । एवं ससंको गच्छंतो, जति पासत्थादिएसु पविसति वसति वा तो उवकरणं तं उवहम्मति ॥४५९६॥ "ससंकलिंगोधावी" गतो ।

इदाणिं "[1]णिस्संकलिंगोधावी" अवस्सलिंगं मुंचीहामि त्ति ।

तहावि गहियलिंगो गच्छति इमेहिं कारणेहिं –

समुदाणं पारियाण व, भीतो गिहिपंततक्कराणं वा ।
णेत्तुवधिं सो तेणो, पविट्ठा वुत्थे वि हु ण हम्मे ॥४५९७॥

समुदाणं ति भिक्खा, "अंतरे हिंडिहामि" त्ति, णगरदुवारे वा गिहत्थस्स पवेसो ण लब्भति, थाण-इल्ला वा मा कयत्थेहिंति, गिहत्थपंता वा जे तक्करा तेसिं वा भीतो लिंगं ण मुंचति, सो भावतो असंजतो उवकरणतेणो सो दट्ठव्वो । एवं णिस्संको गच्छंतो जइ पासत्थादिएसु पविसति वसति वा तहावि उवकरणं ण उवहम्मति, चरणाभावतो ॥४५९७॥ णिस्संकोधावी गतो ।

इदाणिं [2]"परिणय" विवेगो" त्ति अस्य व्याख्या –

णीसंको वऽणुसट्ठो, भणेज्ज तेहुवहिमहं तु ओहामि ।
संविग्गणितगहणं, इतरेहि वि जाणगा गेण्हे ॥४५९८॥

णिस्संको ओहावंतो संविग्गादीहिं अणुसट्ठो जइ ण ट्ठितो भणितो य – "उवकरणं पि ता मुंच" । अप्पणो वा भणेज्ज – "अहं अवस्सं ओहावीहामि, इमं पादादिगं उवगरणं आयरियाणं पावेज्जह", तं जति संविग्गेहिं आणियं तो घेप्पति ।

जइ पुण "इयरेहिं" ति-पासत्थादिएहिं आणियं तो जति सव्वे गीयत्था अगीयत्थेहिं वा परिणाम-गेहिं मिस्सा तो घेप्पति अन्नहा नो घेप्पति ॥४५९८॥

---

१ गा० ४५९४ । २ गा० ४५९४ ।

कि चान्यत् –

नीसंकिओ वि गंतूण दोहि वग्गेहि चोदितो एति ।
तक्खण णितं ण हम्मे, तहि परिणत तुत्थ उवहम्मे ॥४५६६॥

णिस्संकलिगोधावी, संविग्गेहि य असंविग्गेहि वा चोदितो संतो पुणरावत्तिभावमागतो जति पासत्यादियाण मज्झाओ तक्खणमेव णिग्गच्छति तो उवही णोवहम्मति । अह पासत्यादिसु चेव भावो परिणमति – "एतेसि मज्झे अच्छामि" त्ति अपरिणमतो वि खणमेत्तं अच्छंतस्स एगरायं वा वसंतस्स उवही उवहम्मति ॥४५६६॥ "परिणय विवेगो" त्ति गतं ।

"[1]पडिलेहण णिक्खिवणं" ति पच्छद्धवक्खाणं –

अत्तट्ठाए परस्स व, पडिलेहति रक्खिओ वि हु ण हम्मे ।
पव्वंतस्स तु णवरिं, पवेसवइगादि सा भयणा ॥४६००॥

णिस्संको उवकरणं घेत्तुं गतो, गिहत्थो जातो, जं उवकरणं आणियं तं अप्पणो अट्ठा "पुणो मे णिक्खमंतस्स भविस्सति" त्ति संरक्खति, "अण्णस्स वा साधुस्स दाहामि" त्ति पडिलेहणं करेंतो, अविसद्दातो जइ वि ण पडिलेहेति तहावि णोवहम्मति, हुसद्दो अवधारणार्थे, पुणो कालंतरेण साधुलिंगं घेत्तुं आगच्छंतस्स तं वा पुव्वोवकरणं अण्णं वा सुद्धमुवकरणं जति पासत्थादिसु पविसति वसति वा वइयादिसु वा पडिवज्झति तो उवहम्मति उवही, इहरा णो, एस भयणा ॥४६००॥

कि चान्यत् –

घेत्तूण य आगमणं, पच्छाकड सिद्धपुत्त सारूवी ।
संजमखेत्ते दिट्ठी, य परिजिते वेंटलहते य ॥४६०१॥

"[2]घेत्तूण आगमणं" ति अस्य व्याख्या –

सारूवि सिद्धपुत्तेण वा वि उवजीविओ व तं उवही ।
केचि भणंतुवहम्मति, चरणाभावा तु तं ण भवे ॥४६०२॥

जो सो पुव्वुवधी तं घेत्तूण आगच्छति, सो य उवधी तेण सारूवियवेसट्ठितेण सिद्धपुत्तवेसट्ठितेण वा उवजीवितो आसी, सो किं उवहतो अणुवहतो त्ति ?

तत्थ केति आयरिया भणंति, जहा – "अविधिपरिभोगेण उवहतो," तं च केसि मतं अजहत्थं ।

कहं ?

भण्णति – जतो तस्स चरणाभावो । जत्थ चरणं णत्थि तत्थ उवकरणोवघातो ण चितिज्जति, गृहितुल्यत्वात् ॥४६०२॥

---

१ गा० ४६०१ । २ गा० ४६०१ ।

"[1]पच्छाकड-सिद्धपुत्त-सारूवि" त्ति अस्य व्याख्या –

होऊण सन्नि सिद्धो, सारूवी वा वि वेंटलाजीवी ।
संजयखेत्तं जहियं, संजयत्तणे विहरितो पुव्विं ॥४६०३॥

सो उण्णिक्खंतो गिहियाणुव्वओ सण्णी आसीं दंसणसावगो वा सिद्धपुत्त सारूवी वेंटलाजीवी होऊण जेसु खेत्तेसु ठितो आसी तेसु चेव खेत्तेसु जे अण्णे सण्णिमादिया पुव्वपरिजिया वा तेसु जति से पुव्वोवही उवहतो णत्थि वा तो वि सुद्धोवहिं उप्पाएंतो आगच्छति जति य गीतो ।

"[2]संजयखेत्ते" त्ति अस्य व्याख्या – "संजयखेत्तं ।" जत्थ खेत्ते पुव्वं उज्जयविहारेण विहरितो आसि तत्थ वा उवहिं उप्पाएंतो त्ति ।

अहवा – "पुव्वं" ति – एत्थ पुव्वं उवही उप्पाएयव्वो पच्छा सण्णियादिएसु त्ति ॥४६०३॥

"[3]दिट्ठी य परिजिते" त्ति अस्य व्याख्या –

जाणंति एसणं वा, सावग दिट्ठी उ पुव्वझुसिओ वा ।
[4]वेंटलभावे णेण्हिं, किं धम्मो ण होति गिण्हेज्जा ॥४६०४॥

जो एसणाविधि जाणति सो दिट्ठिपरिचितो भण्णति ।

अहवा – सावगो गहियाणुव्वओ अवती वा सम्मद्दिट्ठी दिट्ठिपरिचितो भणति ।

अहवा – 'परिचितो" त्ति दिट्ठाभट्ठो, पुव्वज्झुसितो पुव्वएगगामणिवासी आसी, एतेसु वा उवकरण उप्पाएंतो आगच्छति ।

"[5]वेंटलहए य त्ति" अस्य व्याख्या – पच्छद्धं । वेंटलभाविता – वेंटलपयोगेण परिजिता इत्यर्थः, तेसिं वेंटलं पुच्छंताणं भाणियव्वं – "अम्हे इदाणिं वेंटलं ण जोएमो ।"

अहवा – ते वेंटलभाविता जया अजातिता चेव वत्थादिदाणं देज्ज तदा साधूहिं वत्तव्वं – "इदाणिं णो वेंटलं जोएमो ।"

ताहे ते भणेज्ज – "किं इयरहा दिज्जमाणे धम्मो न भवति ?" एवं भणंताण गेण्हेज्जा, एवं वेंटल-भाविएसु विसुद्धो उवकरणं उप्पाएंतो आगच्छति ॥४६०४॥

को उवधिं उप्पाएंतो आगच्छति त्ति भण्णति –

उवहयमणुवहते वा, पुव्वुवही तत्थ मग्गणा इणमो ।
गीयत्थमगीयत्थे, गीए गहणेतरे तिण्णि ॥४६०५॥

पुव्वुवही जइ अणुवहतो संपुण्णपडोयारो य अत्थि तो णो उप्पायंतो आगच्छति ।

अह पुव्वुवही उवहतो असंपुण्णपडोयारो वा तो उप्पाएंतो आगच्छति, सो पुण गीयत्थो होज्ज अगीतो वा । जति गीयत्थो तो उवकरणगहणं करेंतो आगच्छति, जेण सो सव्वं विहिं जाणति ।

इयरोत्ति – अगीयत्थो सो ण उवकरणं उप्पाएंतो आगच्छति, जेणं तिण्णि उग्गमुप्पादणएसणदोसे ण याणति, अजाणंतेण य उवधी उप्पाएंतो वि अविसुद्धो चेव ॥४६०५॥

---

१ गा० ४६०१ । २ गा० ४६०१ । ३ गा० ४६०१ परिचिते(चू०) । ४ वशीकरणमित्यर्थः ५ गा० ४६०१

अविसुद्धोवहिविगिंचणविधी इमो –

असती विगिंचमाणो, जहलाभं घेत्तु आगतो सुद्धो ।
चोदगवयणं संफासणादि जेसिं ण सिं सोहिं ॥४६०६॥

असति पुव्वोवकरणस्स विसुद्धस्स आगच्छमाणो जं अण्णं विसुद्धं पडिग्गहादिकं लभति तं पुव्वोवकरणातो अविसुद्धं पडिग्गहादिकं विगिंचति, एवं जहालाभं सुद्धं गेण्हंतो अविसुद्धं परिच्चयंतो सव्वोवकरणं विसुद्धं घेत्तुं आगओ ।

एत्थ चोदकाह – णणु सुद्धोवकरणस्स असुद्धोवकरणसंफरिसेण असुद्धो भवति, आदिसद्दाओ अविसुद्धभत्तादिपक्खेवेण वा ।

आयरिओ भणति – जेसिं एस उवदेसो, पण्णवेति वा जे एवं, ण तेसिं सोही भवति ॥४६०६॥

"[1]असति विगिंचमाणो" त्ति अस्य व्याख्या –

उवहयउग्गहलंभे, उग्गहण विगिंच मत्तए भत्तं ।
अपजत्ते तत्थ दवं, उग्गहभत्तं गिहि दवेणं ॥४६०७॥

दो वि पादा जत्थ अविसुद्धा तत्थ "उवहतउग्गहलंभे," उवहतो त्ति अविसुद्धो, उग्गहो त्ति पडिग्गहो, लंभे त्ति विसुद्धपडिग्गहो लद्धो, ताहे अविसुद्धं पुव्वोवग्गहं विगिंचति, तम्मि-विगिंचिते पडिग्गहो विसुद्धो, मत्तगो अविसुद्धो एरिसं जायं ।

एरिसे इमो परिभोगविही – मत्तए भत्तं गेण्हति विसुद्धपडिग्गहे दवं गेण्हति, तेण पडिग्गहदवेण मत्तगं कप्पेति।

अह मत्तगे गहितेण भत्तेण अप्पज्जत्तियं भवति ताहे तत्थ अविसुद्धे मत्ते दवं गेण्हंति, उग्गहे भत्तं गेण्हति। तस्स उग्गहस्स तेण अविसुद्धमत्तगगहितेण दवेण कप्पं ण देति, मा पडिग्गहस्स उवघातो भविस्सति, ताहे गिहिभायणेण दवं आणेउं तेण पडिग्गहस्स कप्पं करेति । अविसुद्धमत्तगगहियदवेणं पुण लेवाडगसण्णाभूमीकज्जाति करेति ॥४६०७॥

अपहुच्चंते काले, दुल्लभदव्वऽभाविते व खेत्तम्मि ।
मत्तगदवेण धोवति, मत्तगलंभे वि एमेव ॥४६०८॥

अह जाव गिहिभायणे दवं आणेति ताव कालो ण पहुच्चति, आदिच्चो अत्थमगं गच्छति दवं वा दुल्लभं अभाविअं वा तं खेत्तं साधूहिं, अभावियत्तणेण य णो अप्पणो भायणे दवं देंति, एवमादिकारणेहिं अववादतो अविसुद्धमत्तगगहितेण दवेण विसुद्धपडिग्गहस्स कप्पं करेंति, ण दोसो । विसुद्धमत्तगस्स वि लंभे अविसुद्धमत्तगं विगिंचंति, परिभोगे वि एवं चेव पुव्वविधी दट्ठव्वो ॥४६०८॥

"[2]चोदगवयणं" ति पच्छद्धस्स इमं वक्खाणं –

लेवाडहत्थछिक्केण सहसा अणाभोगतो व पक्खित्ते ।
अविसुद्धग्गहणम्मि य, असोहि सुज्झेज्ज वा इतरं ॥४६०९॥

---

१ गा० ४६०६ । २ गा० ४६०६ ।

जेसिं संफासेणं अविसोधी भवति तेसिं इमो दोसो – उग्गमादिअविसुद्धेण भत्तादिणा लेवाडहत्थेण विसुद्धो पडिग्गहो छिक्को, सहसा वा अविसुद्धं भत्तं विसुद्धपडिग्गहे पक्खित्तं, अविसुद्धं वा भत्तं गहियं, जति एवं अविसुद्धसंफासातो विसुद्धस्स वि अविसोधी भवति तो इतरं असुद्धं तं पि विसुद्धेण संवद्धं विसुज्झउ ? अह तं ण विसुज्झति, तो ते [1]इच्छामात्रं भवति ।।४६०९।।

जे भिक्खू अइरेगं पडिग्गहं खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्थच्छिण्णस्स अपायच्छिण्णस्स अनासाच्छिण्णस्स अकण्णच्छिण्णस्स अणोट्ठच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ, देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६।।

हत्था अच्छिण्णा जेसिं ते अहत्थछिण्णा भाणियव्वा । एवं सव्वे पदा । सत्तो समर्थः । एतेसिं देंतस्स चउलहुं ।

अव्वालवुड्ढदाणे, इत्थीपुरिसाण जुंगिताणं च ।
सुत्तत्थवीरिएण व, पज्जत्त सकोतिताणं च ।।४६१०।।

अवाला वालभावं अतिक्कंता, अवुड्ढा वुड्ढभावं अप्राप्ता, सरीरेण जातीए वा अजुंगिता, सुत्तं च धीयं जेहिं, अत्थो वि सुतो–गीतार्था इत्यर्थः, वीर्यं वा उप्पादणशक्तिः, गीयत्थत्तणातो चेव "पज्जत्तो" पादकप्पितो त्ति वुत्तं भवति, "सकोतिगा" गमणागमणसचेट्ठा, ते य सवीरियत्तणातो चेव सकोतिगा, एतेसिं जो इत्थीण वा पुरिसाण वा अतिरेगपडिग्गहं ।।४६१०।।

अभिणवपुराणगहितं, पातमच्छिण्णं तहेव छिण्णं च ।
निद्दिट्ठमनिद्दिट्ठं, पातं देंताण आणादी ।।४६११।।

अभिणवं पुराणं वा, जं तं अभिणवच्छिण्णं अच्छिण्णं वा, गणिमादियाण णिद्दिट्ठं अणिदिट्ठं वा, जो देइ तस्स आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं जो सुत्तपडिसिद्धाणं देति ।।४६११।।

इमाण य अदेंतस्स दोसा –

अद्धाणणिग्गयादीणऽदेंते दोसा तु वन्निया पुव्विं ।
रोगवओ भेसज्जं, णिरुअस्स किमोसहेहिं तु ।।४६१२।।

दिट्ठंतउवसंघारो – जो हत्थपादादिविगलो तस्स जुत्तं दाणं, समत्थस्स किं दिज्जति ? गंतुं सयमेव आणेउ त्ति । सेसं कंठं ।।४६१२।।

इमेहिं पुण कारणेहिं समत्थस्स दिज्जति –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्तसावय, भए व अद्धाण जयणाए ।।४६१३।।

अद्धाणादीसु जयणाए –

एते असिवादिकारणा भायणभूमीए होज्ज अंतरदेसे वा । अद्धाणवालवुड्ढादियाणं दाणं प्रति जयणा

---

१ – ४६०६ – गाथाया श्चूर्णौ स्पष्टीकरणमवलोकनीयम् ।

कायव्वा । जस्स बहुतरा णिज्जरा जत्थ वा अवहुतरा हाणी दीसइ पुव्वं तस्स दायव्वं । जो वा [1]पादच्छिण्णादिओ कमो भणितो तेण दायव्वं ॥४६१३॥

एएहिं कारणेहिं, सक्काण वि देज्जऽसंसती जेसिं ।
होज्ज व ण होज्ज इतरे, तेसिं पुण सज्ज परिहाणिं ॥४६१४॥

अच्छिण्णहत्था वयोसक्का तेसिं देज्ज, जेण तेसिं असंतती । असंतती णाम भायणवोच्छेदो अभाव इत्यर्थः । इतरे हत्थपादछिण्णादिया तेसिं परिहाणी होज्ज वा ण वा, तेसिं पुण सक्काणं भायणाभावे सज्जं ति वट्टते चेव परिहाणी, तम्हा तेसिं दायव्वं ॥४६१४॥

जे चेव सक्कदाणे, असक्कअसतीए दोसे पावंति ।
असतीए सक्काण वि, ते चेव अदेंति पावेंति ॥४६१५॥

सक्कस्स देंते जे दोसा भणिता, असक्कस्स य अदेंते जे दोसा भणिया, ते चेव दोसा सक्काण वि असंततीए अदेंतो पावति, तम्हा असिवादिकारणे अवेक्खिउं सक्कस्स वि दायव्वं ॥४३१५॥

अह ण देति तो इमे दोसा –

जं ते असंथरंता, अणेसणं जं च भाणभूमीए ।
पावंति सेह-सावय-तेणातिविराहणं जं च ॥४६१६॥

ते अच्छिण्णहत्थादिया असंथरंता जं अणेसणं पेल्लिस्संति, जं च भायणभूमीए अंतरा वा असिवादि-दोसे वा पाविस्संति, भायणभूमिगयाण वा सयणेहिं सेहो उण्णिक्खमाविज्जति, भायणाण वा गच्छंता सावतेण खज्जंति, तेणेहि वा उद्दुज्जंति, जं चऽण्णं किं चि सरीरसंजमविराहणं पावेंति, तं सव्वं पायच्छित्तं अदेंते पावति ॥४६१६॥

अहवा – इमाए जयणाए भायणा दायव्वा –

पुव्वं तु असंभोगी, दुगतिगबद्धं तहेव हुंडादी ।
तो पच्छा इतराणि वि, तेसिं देंतो भवे सुद्धो ॥४६१७॥

तेसिं सक्काणं असिवादिकारणेहिं दिज्जंते – पुव्वं जं असंभोइयं पादं तं दिज्जति, दोसु वा तिसु वा ठाणेसु जं बद्धं तं दिज्जति, हुंड वाताइद्धाणि वा अलक्खणजुत्ताणि दिज्जंति । जति ते णत्थि, तो पच्छा इयराणि वि संभोइयाणि अभिण्णाणि समचउरंसाणि लक्खणजुत्ताणि य देंतो सुद्धो भवति ॥४६१७॥

जे भिक्खू अइरेगं पडिग्गहं, खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा हत्थच्छिण्णस्स पायच्छिण्णस्स नासच्छिण्णस्स कण्णच्छिण्णस्स ओट्ठच्छिण्णस्स असक्कस्स न देइ, न देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

पुव्विल्लसुत्तातो इमं सुत्तं पडिपक्खभूतं । किं च पूर्वं एते अद्धाणादिया अत्थतो भणिता । इह पुण सुत्ततो चेव भणंति ।

अद्धाणबालवुड्ढाऽऽतुराण दुविहाण जुंगिताणं च ।
सुत्तत्थवीरिएणं, अपज्जत्तअकोविताणं च ॥४६१८॥

दुविधा जुंगिता – जातीए सरीरेण वा, सेसं पूर्ववत् ॥४६१८॥

अभिणवपुराणगहितं, पायमछिण्णं तहेव छिण्णं च ।
णिद्दिट्ठमणिद्दिट्ठं, तेसि अदेंताण आणादी ॥४६१६॥ पूर्ववत्

अद्धाण ओम असिवे, उद्दूढासति अदेंते जं पावे ।
बालस्सज्झोवाते, थेरस्सऽसतीए जं कुज्जा ॥४६२०॥ पूर्ववत्

दुविहरुयआतुराणं, तप्पडिचरगाण वा वि जा हाणी ।
जुंगितो पुव्वनिसिद्धो, जाति विदेसेतरो पच्छा ॥४६२१॥

आसुकारी दीहरोगेण वा, अहवा – आगुंतुय-तदुत्थेण वा भायणाणि विणा जा परिहाणी तं अदेंतो पावति ।

णणु दुविहो वि जुंगितो अणलसुत्ते पुव्वं णिसिद्धो ण पव्वाविज्जति ? भण्णति – जातिजुंगितो विदेसे पव्वाविज्जति । "इतरो" त्ति सरीरजुंगितो पव्वज्जाए ठितो पच्छा जातो ॥४६२१॥

तेसिं इमा विधी अच्छियव्वे –

जाती य जुंगितो खलु, जत्थ ण णज्जति तहिं तु सो अत्थि ।
असुगणिमित्तं विगलो, इतरो जहि णज्जति तहिं तु ॥४६२२॥ पूर्ववत्

जं वच्चंता काए, वहेंति जं पि य करेंति उड्डाहं ।
किं णु गिहिसामण्णे, वियंगिता लोगसंका तु ॥४६२३॥ पूर्ववत्

सरीरविकले दाण पडुच्च इमो कमो –

पाद-ऽच्छि-नास-कर-कन्नजुंगिते जातिजुंगिते चेव ।
वोच्चत्थे चउलहुगा, सरिसे पुव्वं तु समणीणं ॥४६२४॥

पादादिविकलभणियकमातो जो वोच्चत्थं देति तस्स चउलहुं । साधुसाधुणीणं सरिसविकलभावे दोण्ह वि दायव्वं, असति दोण्ह वि समणीसु पुव्वं दायव्वं ॥४६२४॥

अदाणे इमो अववातो –

वितियपदमणप्पज्झे, ण देज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते असती वा, मंदधम्मेसु व ण देज्जा ॥४६२५॥

अणप्पज्झो खित्तचित्तादिगो ण देज्ज, सेहो वा अकोवितो गुणदोसेसु वा ण देज्ज, अप्पज्झो वा जाणंतो वि असतीते भायणस्स ण देज्ज विज्जमाणं पि, पासत्थादिसु वा मंदधम्मेसु ण देज्जा, एवमादिकारणेसु अदेंतो वि सुद्धो ॥४६२५॥

जे भिक्खू पडिग्गहं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू पडिग्गहं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ,
न धरेंतं वा सातिज्जति । सू०॥६॥

इमो सुत्तत्थो –

अणलमपज्जत्तं खलु, अथिरं अदढं तु होति णायव्वं ।
अधुवं च पाडिहारिय, अलक्खणमधारणिज्जं तु ॥४६२६॥ कंठा

अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं –

एतेसिं तु पदाणं, भयणा पण्णरसिया तु कायव्वा ।
एत्तो एगतरेणं, गेण्हंताणादिणो दोसा ॥४६२७॥

एतेसिं चउण्ह पदाणं भंगा सोलस कायव्वा । अंतिमो सुद्धो । सेसा पण्णरस, तेसिं पण्णरसण्हं अण्णतरेण वि गेण्हंतस्स आणादिया दोसा ॥४६२७॥

तेसु पण्णरससु असुद्धे सु इमं पच्छित्तं –

पढमे भंगे चउरो, लहुगा सेसेसु होति भयणा तु ।
जा पण्णरसो भंगो, तेसु तु सुत्तंऽतिमो सुद्धो ॥४६२८॥

पढमे भंगे चत्तारि चउलहुगा, जेण चत्तारि वि पदा असुद्धा । सेसपदेसु भयण त्ति जत्थ भंगपदे जत्तिया पदा असुद्धा तत्थ तत्तिया चउलहू दायव्वा । पढमभंगातो आरब्भ जाव पण्णरसमो भंगो, एतेसु सुत्तणिवातो । अंतिमो पुण सुद्धत्तणतो अपच्छित्ती ॥४६२८॥

अणलादियाणं इमे दोसा –

अद्धाणादी अणले, अदेंत-देंतस्स उभयओ हाणी ।
अथिरधुवे मग्गंते, हाणेसण बंधणे चरणं ॥४६२९॥

अद्धाणपडिवण्णादियाण अणलपादे अपज्जत्तियं भत्तमिति काउं ण देज्ज, अह देति तो अप्पणो हाणी, एवं अणले उभयथा वि दोसा । अथिरं अदढं, तम्मि भग्गे अण्णं मग्गंतस्स सुत्तत्थाणं हाणी । अलभंते वा एसणाघातं करेज्ज । अधुवं पाडिहारियं, तम्मि गहिते अण्णं मग्गंतस्स सुत्तत्थहाणी । अलभंतो वा एसणाघातं करेज्ज । अह भग्गं बंधति, एग-दुग-तिगबंधणे चरणभेदो भवति ॥४६२९॥

पुणरवि अधुवे दोसो भण्णति –

अधुवम्मि भिक्खकाले, गहितागहितम्मि मग्गणे जं तु ।
दुविहा विराहणा पुण, अधारणिज्जम्मि पुव्वुत्ता ॥४६३०॥

अधुवं पाडिहारियं, तं घेत्तुं भिक्खाकाले भिक्खंत्तो तत्थ भिक्खाए गहियाए अगहिताए वा पुव्वसामिणा मग्गितं, जति तस्स तं देति तो अप्पणो परिहाणी ।

अह ण देति तो सो पुव्वसामी रूसति, रुट्ठो य जं तु काहिति वसहीतो दिवा रातो वा आसियावेज्जा, तस्स वा दव्वस्स अण्णस्स वोच्छेदं करेज्ज, असब्भवयणेहिं वा आउसेज्ज ।

अधारणिज्जं – अलक्खणजुत्तं, तम्मि धरिज्जंते दुविधा विराहणा भवति – आयसंजमेसु, सा य पुव्वुत्ता ओहणिज्जुत्तीए। हुंडे चरित्तभेदो त्ति – "दुप्पत्ते खीलसंठाणे, नत्थि ठाणं ति णिद्दिसे।" जम्हा एवमादिदोसा तम्हा अलं थिरं धुवं धारणिज्जं धारेयव्वं ॥४६३०॥

अववादतो अणलादिया वि धारेयव्वा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
सेहे चरित्तसावय, भए य जयणाए गेण्हेज्जा ॥४६३१॥

एते असिवादी भायणभूमीए होज्ज अंतरा वा जयणाए गेण्हिज्जंति।

का जयणा ?

इमा – चत्तारि मासे अहाकडं गवेसेज्जा, दोमासे अप्पपरिकम्मं, बहुपरिकम्मं दिवड्ढं ति।

जे भिक्खू वण्णमंतं पडिग्गहं विवण्णं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू विवण्णं पडिग्गहं वण्णमंतं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

इमो सुत्तत्थो –

पंचण्हं वण्णाणं, अण्णयरजुतं तु पादुद्दुव्वण्णं।
दुव्वण्णं च सुवण्णं, जो कुज्जा आणमादीणि ॥४६३२॥

सुभवण्णं च दुवण्णं करेति ङ्क। दुवण्णं पातं सुवण्णं करेति ङ्क। जो एवं करेति तस्स आणादिया दोसा भवंति।

वण्णविवच्चासं पुण, णो णवपादे पधोवणादीणि।
दुग्गंधं च सुगंधं, जो कुज्जा आणमादीणि ॥४६३३॥

पढमपादेण [1]वण्णविवच्चाससुत्तं गहियं। वितियपादेण [2]णो णवं पादं लद्धमिति धोवणादी करेज्ज, एयं सुत्तं गहियं। ततियपाएण [3]णो सुब्भिगंधं पायं लद्धमिति सीतोदगादीहिं धोवति, एयं सुत्तं गहियं। एस भद्दबाहुसामिकया गाहा। एतीए तिण्णि वि सुत्ता फरिसिया।

कहं पुण वण्णविवच्चासो ? भण्णइ –

उण्होद-छगण-मट्टिय,-छारादीएहिं होइ उ विवण्णं।
मक्खणकक्कादीहि उ, धूमेण य जायते वण्णो ॥४६३४॥

उण्होदगेण पुणो पुणो धोव्वमाणं छगणादीहिं य आलिप्पमाणं विवण्णं भवति। तेल्लादिणा मक्खिज्जंतं खदिरबीयकक्कादीहिं य पुणो पुणो धोव्वमाणं मक्खेऊण य धूमट्ठाणे कज्जति, एवमादिएहिं विवण्णस्स वण्णो भवति ॥४६३४॥

कीस पुण वण्णड्ढं विवण्णं करेति ? भण्णइ –

मा णं परो हरिस्सति, तेनाहडगं ति सामि मा जाणे।
वण्णं कुणति विवण्णं, विवण्णे हरणं नवरि णत्थि ॥४६३५॥

---

१ सू० १०-११। २ सू० १२-१३-१४। ३ सू० १८-१९-२०।

वण्णुज्जलं मा मे परो हरिहि त्ति तेण विवण्णं करेति। अहवा – तं पातं तेणाहडं मा मे एयं पुव्वसामी जाणिस्सति तेण वा विवण्णं करेति, अहवा – तं पायं विवण्णं पि तेणाहडं ति काउं मा पुव्वसामी जाणिस्सइ तेण वण्णड्ढं करेति, रागेण चतुगुरुं, विवण्णकरणे हरणसंभवो णत्थि ॥४६३५॥

णिरत्थे परिकम्मणे इमे दोसा –

घंसणे हत्थुवघातो, तदुब्भवागंतु संजमे पाणा ।
धुवणे संपातिवहो, उप्पिलणं चेव भूमिगते ॥४६३६॥

धोवणे कक्कादिणा य आघंसणे आतोवघातो, हत्थे कंडगं भवति, परिस्समो वा । किं च तदुब्भवा वा पाणा आगंतुगा वा पाणा विराहिज्जंति । संपातिमा य विवज्जंति । अति उच्छोलणधोवणेण जे भूमिगता पाणा ते उप्पीलाविज्जंति। एस संजमविराहणा ॥४६३६॥

जम्हा एवमादिया दोसा –

तम्हा उ अपरिकम्मं, पातमहालद्ध परिहरे भिक्खू ।
परिभोगमपाओग्गं, सप्परिकम्मे य बितियपदं ॥४६३७॥

उस्सग्गेण अपरिकम्मं पायं घेत्तव्वं, जहा लद्धस्स य पादस्स परिहारो त्ति परिभोगो भिक्खुणा कायव्वो । इमं बितियपदं – "परिभोगमपायोग्गं" ति विसेण वा गरेण वा मज्जेण भावियं तस्स धोवणादी करेज्ज, छगणमट्टियादीहिं वा णिक्खारेज्ज । अहवा – अप्पबहुपरिकम्मं लद्धं, तस्स णियमा धोवण-घंसणादी कायव्वं ॥४६३७॥

वण्णमविवण्णकरणे, विवण्णमंतस्स वण्णकरणे य ।
जे तुस्सग्गे दोसा, कारणे ते चेव जयणाए ॥४६३८॥

वण्णविवच्चासकरणे जे उस्सग्गे दोसा भणिता, [कारणे ते चेव] कारणगहियं वण्णड्ढं मा हरिहिति त्ति विवण्णं करेंतो जयणाए सुद्धो ॥४६३८॥

अधवा -

कारणे हिंसित मा सिंगणा तु मुच्छा व उज्जले जत्थ ।
तत्थ विवज्जयकरणं, अज्झोवाए य बालस्स ॥४६३९॥

तं वण्णड्ढं पायं सलक्खणं णाणगच्छवड्ढिणिमित्तं हिंसितं ति – हडमित्यर्थ. । मा तस्स पुव्वसामी सिंगणं करिस्सति त्ति अतो तस्स वण्णविवज्जियं करेति । अहवा – तं वण्णड्ढं दट्ठु पुणो पुणो मुच्छा उप्पज्जति जत्थपादे तत्थ वा विवण्णं कज्जति । अणवज्झो सेहो वा अजाणंतो करेज्जा । बालस्स वा अधिकं अज्झोववातो वण्णड्ढं कीरति त्ति एवं वा कीरेज्ज ॥४६३९॥

जे भिक्खू "नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

पुव्वसा।
अ
तस्स वा दव्व

जे भिक्खू "नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा [1]उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा [2]उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू "नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोल्लेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू "नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू "नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू "नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

---

१ पधोवेज्ज इत्यपि पाठः । २ पधोवेज्जंतं इत्यपि पाठः ।

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदग-वियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

इमो सुत्तत्थो –

एमेव य अणवे वी, वियडे बहुदेसि कक्कबहुदेसी ।
सुत्ता चउरो एए, एमेव य चतुरो दुग्गंधे ॥४६४०॥

[1]जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ।

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु सीओदगवियडेणवा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ।

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।

१ इमानि षट् सूत्राणि लिखितप्रतौ अधिकानि, इति टाइपअंकितप्रतौ सूचितम् श्रीविजयप्रेमसूरिभिः ।

णो णवं अणवं जुण्णं, सीयमुदगं सीतोदगं अतावियं, वियडं ति व्यपगतजीवं उसिणं ति तावितं, तं चेव ववगयजीवं, एक्कसि धोवणं उच्छोलणं, पुणो पुणो धोवणं पधोवणं। वितियसुत्ते एसेवऽत्थो। णवरं – बहुदेवसितेहिं सीओदउसिणोदेहिं वत्तव्वं।

ततियसुत्ते कक्को, सो दव्वसंजोगेण वा असंजोगेण वा भवति। लोद्दो रुक्खो, तस्स छल्ली लोद्दं भण्णति। वण्णो पुण्णहिंगुलादि। तेल्लमोइतो चुण्णो पुणगंमुण्णिगादिफला चुण्णीकता, एतेहिं एक्कसि आघंसणं, पुणो पुणो पघंसणं।

चउत्थसुत्ते कक्कादिएहिं चेव बहुदेवसिएहिं, सेसं तं चेव। एयस्स पुण अणवस्स पादस्स एतो धवणादिया पगारा करेति, वरं मे णवागारं भविस्सति त्ति। जहा अणवपादे चउरो सुत्ता भणिता तहा दुग्गंधे वि चउरो सुत्ता भाणियव्वा, णवरं – तत्थ दुग्गंधे मे पातं सुगंधं भविस्सति त्ति, धोवणादिपयारे करेति त्ति ॥४६४०॥

उच्छोल दोसु आघंस दोसु आणादि होंति दोसा तु।
किं पुण बहुदेसीयं, भण्णति इणमो णिसामेहि ॥४६४१॥

अणवपाए जे चउरो सुत्ता तेसु जे आदिल्ला दो सुत्ता तेसु उच्छोलणपधोवणा भण्णति, पच्छिमा पुण जे दो सुत्ता तेसु आघसण-पघंसणादि भण्णति। सेसं कंठं ॥४६४१॥

दगकक्कादीह नवे, तेहिं बहुदेसितेहि जे पादं।
एमेव य दुग्गंधं, धुवणुव्वट्टंत आणादी ॥४६४२॥

देसो नामं पसती, [2]तिप्पतिपरेण वा वि बहुदेसो।
कक्कादि अणाहारेण वा वि बहुदिवसवुत्थेणं ॥४६४३॥

सुत्ते बहुदेसेण वा पादो बहुदेवसितेण वा। एक्का पसती दो वा तिण्णि वा पसतीतो देसो भण्णति, तिण्हं परेण बहुदेसो भण्णति। अणाहारादिकक्केण वा संवासितेण, एत्थ एगरातिसंवासितं तं पि बहुदेवसियं भवति, अणाहारिमग्गहणं अणाहारिमे चउलहुं आहारिमे पुण चउगुरु भणंति ॥४६४३॥

इमे दोसा –

घंसणे हत्थुवघातो, तदुब्भवागंतु संजमे पाणा।
धुवणे संपातिवहो, उप्पिलणे चेव भूमिगते ॥४६४४॥ पूर्ववत्

जम्हा एते दोसा –

तम्हा उ अपरिकम्मं, पादमहालद्ध धारए भिक्खू।
परिभोगमपाओग्गे, सपरिकम्मे य वितियपदं ॥४६४५॥ [1]पूर्ववत्

इमो बहुदेवसियस्स अववातो –

अभिओग्गविसकए वा, बहुरयमज्जातिदुब्भिगंधे वा।
कक्कादीहि दवेण व, कुज्जा बहुदेसिएणं पि ॥४६४६॥

---

१ गा० ४६३७। २ तिप्पभिति० इत्यपि पाठः।

"अभियोगे" त्ति पादं वसीकरणजोगेण भावितं, विसेण वा भावितं, बहुरएण वा घट्टं-अकत्थमलिन-मित्यर्थः। मज्जादुगंधदव्वेण वा भावितं दुगंधं, तं एवमादिएहिं कारणेहिं बहुदेवसिएण दधेण वा कक्केण वा धोवेति वा आघंसिज्जति वा – मा मज्जादिगंधेण उड्डाहो भविस्सतीत्यर्थः ॥४६४६॥

जे भिक्खू अणंतरहियाए पुढवीए दुब्बद्धं दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू मट्टियाकडाए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू चित्तमंताए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू चित्तमंताए लेलूए दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले
पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि दुब्बंधे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा झामवलंसि वा दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले पडिग्गहं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अंतलिक्खजायंसि वा दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

एते सुत्तपदा जहा तेरसमे उद्देसगे तहा वक्खाणेयव्वा, णवरं – तत्थ ठाणादी भणिया इहं पुण पादस्स आतावणादी वत्तव्वा ।

इमा सुत्तफासिता –

पुढवीमादी थूणादिएसु कुलियादिखंधमादीसु ।
जो पातं आतावे, सो पावति आणमादीणि ॥४६४७॥ कंठा

पुढवीमादीएसु, विराहणा णवरि संजमे होति ।
संजम-आतविराहण, पादम्मि य सेसगपदेसुं ॥४६४८॥

[1]अणंतरहियादिएसु जाव संताणए त्ति एतेसु पातं आतावेंतस्स पाओ संजमविराहणा भवति । सेसा जे [2]थूणादिया पदा तेसु पाया आयावेंतस्स आयविराहणा संजमविराहणा पायविराहणा य भवति । संजमविराहणाए पुढवादिसु कायणिप्फण्णं, जत्थ आयविराहणा तत्थ चउगुरुं, पातविराहणाए चउलहुं ॥४६४८॥

थूणादिएसु इमे दोसा –

विलियंति आरुभंते, दुब्बद्धचलेसु भेदुवहडं वा ।
ते तु ण भवंति दोसा, भूमीए कुडमुहादीसुं ॥४६४९॥

थूणादिसु दुट्ठिएसु रज्जुवेहमादिसु वा दुब्बद्धेसु वा चलट्ठितेसु आरोहंतस्स उत्तारेंतस्स य भेदो पायस्स भवति । "उवहडं" ति-आरुहणोत्तरणे जे मालोहडे दोसा भणिता ते इह पयावणे भवंति, भूमीए कुड-मुहादिसु वा ठविज्जंते ते दोसा ण भवंतीत्यर्थः ॥४६४९॥

सव्वेसु सुत्तपदेसु इमं वितियपदं –

वितियपदमणप्पज्झे, आतावऽविकोविते व अप्पज्झे ।
पच्चावाते ओवास उ, असति आगाढे जाणमवि ॥४६५०॥

पुव्वद्धं कंठं । भूमीए जइ ठविज्जति तो गोणसा(णा)दिएहिंतो पच्चावातो भवति, समभूमीए वा अवगासो णत्थि, आगाढे वा रायदुट्ठादिगो अपागडो अच्छंतो जाणंतो वि थूणादिसु विलएज्जा ॥४६५०॥

१ सू० २४-३१ । २ सू० ३२-३३-३४ ।

गोणे व साणमादी, कप्पट्ठगहरण खेलणट्ठाए ।
ससणिद्ध-हरित-पाणादिएसु पालंब जयणाए ॥४६५१॥

समभूमीए ठवितं गोणेणं भज्जति, साणो वा हरति, कप्पट्ठगा वा हरिज्जेज्जा, सा वा समभूमी कप्पट्ठगाणं खेलणट्ठाणं, सा वा समभूमी आउक्कायससणिद्धा, हरिया वा, उट्ठिता कुंथुमादिएहिं वा पाणेहिं संसत्ता, एमादिएहिं कारणेहिं जहा आयसंजमपादविराहणा ण भवति तहा जयणाए ओगाहियदोरेण विहाले लंबेति ॥४६५१॥

[1]जे भिक्खू पडिग्गहातो तसपाणजाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

अहिणवपादग्गहणे तसपाणजाइं जो णीहरित्ता गेण्हइ तस्स चउलहुं । तसपाणा बेंदियादिणो चउव्विधा भवंति ।

अहवा – तसा दुभेदा –

आगंतुग-तज्जाता, दुविहा पाणा हवंति पादम्मि ।
आगंतुगप्पवेसो, परप्पओगा सयं वा पि ॥४६५२॥

आगंतुगा पिपीलिगादी । तत्थेव जाता तज्जाया, ते य पुण घुणकुंथुगादी । आगंतुगाणं पवेसो सयं वा भवति, परेण वा पवेसिता ॥४६५२॥

एएसामण्णतरं तसपाणं तिविहजोगकरणेणं ।
जे भिक्खू णीहट्टु, पडिच्छए आणमादीणि ॥४६५३॥

---

१ समुपलब्धलिखितप्रतिषु तु सूत्राणामयं क्रमः –

जे भिक्खू पडिग्गहातो पुढविकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू पडिग्गहाओ आउक्कायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू पडिग्गहातो तेउकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू पडिग्गहातो कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू पडिग्गहातो ओसहि-बीयाणि नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू पडिग्गहातो तसपाणजाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

तिविधजोगकरणं । जोगो तिविधो – मणमादि । सयं करणादि करणं, तं पि तिविधं । एत्थ चारण-विधीए णवभेदा । तेसु णीहरिज्जमाणेसु संघट्टणादिए आवण्णे सट्ठाणपच्छित्तं, विच्छुगादिणा वा आयविराहणा, परेण वा णीहट्टु दिज्जमाणं जो पडिच्छति तस्स आणादी दोसा ।।४६५३।।

इमं बितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्त सावय पुव्वग्गहिये य जयणाए ।।४६५४।।

एते असिवादिया भायणदेसे वा अंतरे वा, तत्थ आगच्छंतो इहेव जाणि य तसपाणजाई णीहट्टु लब्भंति, ताणि गिण्हंतो सुद्धो, गिहितो वा पच्छा दिट्ठो तं नीहरंतो सुद्धो ।।४६५४।।

जे भिक्खू पडिग्गहातो ओसहि-बीयाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३६।।

आगंतुग-तज्जाया, दुविहा बीया उ होंति पायम्मि ।
आगंतुगा उ दुविहा, सुहुमा थूला य नायव्वा ।।४६५५।।

आगंतुगा सरिसवादी, तदुत्था कुणगा तस्सेव लग्गा । पुणो आगंतुगा दुविधा – सण्हा थूला य, सण्हा सरिसवा-राई-जीरिमादी, थूला बदर-णिप्फावादी ।।४६५५।।

सीसो पुच्छति – काओ ओसहीओ ? को वा बीओ ? त्ति ।

अतो भण्णति –

सणसत्तरसा धण्णा, ओसहिगणेण होंति गहिता उ ।
बीयग्गहणम्मि कते, ते चेव वि रोधणसमत्था ।।४६५६।।

जव गोधूम-सालि-विहि-कोद्दव-रालग-तिल-मुग्ग-मास-अयसि-चणग-णिप्फाव-मसूर-चवलग-तुवरि-कुलत्थ-सणो सतरसमो । सेसं कंठं ।।४६५६।।

एएसामण्णतरं, जो बीयं तिविहजोगकरणेणं ।
णीहरिऊण पडिच्छति, सो पावति आणमादीणि ।।४६५७।। पूर्ववत्

इमं त्रितियपदं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलन्ने ।
सेहे चरित्त सावय, पुव्वग्गहिए य जयणाए ।।४६५८।।

कण्ठ्या ।।४६५८।। णवरं– "पुव्वगहिए" त्ति गहणकाले सुद्धो ।
जइ पच्छा परिकम्मणकाले वितिया दीसंति तो इमा जयणा –

जति पुण पुव्वं सुद्धं, कारिज्जंतम्मि वितिय-ततिए वा ।
तिप्पंचसत्तबीया, दीसंति तहावि तं सुद्धं ।।४६५९।।

बितियं अप्पपरिकम्मं, ततियं बहुपरिकम्मं, तेसु जति वि परिकम्मकाले तिण्णि वा बीया पंच वा सत्त वा बीयकणा दीसंति तहावि तं सुद्धं चेव विहिगहणातो ॥४६५९॥

चोदगाह – "गहणकालातो पच्छा बीएसु दिट्ठेसु कहं सुद्धं भवति" ?

आचार्याह –

जह चेव य आहच्चा, पाणादिजुतम्मि भायणे गहिते ।
आलोग भोयण विगिंचणं च तह चेव पादे वि ॥४६६०॥

जहा भत्तं पाणं वा सुयविधितविहाणेण उवउत्तेण गहियं – "आहच्च" त्ति सहसा तुरियगहणं एवं पाणादिजुत्ते गहिए भत्तपाणे "आलोग" त्ति भायणे पडियमेत्ते चेव आलोगितो निरीक्षित इत्यर्थः। तत्थ गहणकालातो पच्छा तसबीया दिट्ठा ते य जइ विसोहेउं सक्केंति तो विसोहित्ता तं भत्तपाणं भुंजति ण दोसो, अह ते पाणिणो विसोधेउं ण सक्केंति, ताहे तं भत्तपाणं विगिंचंति । जहा भत्ते तहा पाते वि दट्ठव, ण दोष इत्यर्थः। ।४६६०॥ एस तदुत्थेसु विधी भणितो ।

इमो आगंतुगेसु –

जत्थ पुण अहाकडए, पुव्वं छूढाइ होंति बीयाइं ।
सुद्धं व अप्पकम्मं, तहियं पुण मग्गणा इणमो ॥४६६१॥

जं अहाकडं पायं, तत्थ जइ गिहीहिं आगंतुगा बीया अहाभावेण छूढा होज्ज, तं तारिसं बीयसहियं लब्भति, अण्णं च अप्पपरिकम्मं सव्वदोसविरहियं सुद्धं लब्भति ।

कतमं गेण्हतु ? उस्सग्गओ सुद्धं अप्पपरिकम्मं गेण्हति ।

अह णिक्कारणे आगंतुगबीयसहितं गेण्हति तत्थ पच्छित्तमग्गणाकमो इमो ॥४६६१॥

छब्भागकरं काउं, सुहुमेसु तु पढमपव्व पंचदिणा ।
दस बितिए रातिदिणा, अंगुलिमूले तु पण्णरसा ॥४६६२॥

अंगुलीणं अग्गपव्वा पढमो भागो, बितिओ मज्झपोरे भागो, ततितो अंगुलिमूले भागो, आउरेहाए चउत्थो भागो । अंगुट्ठगस्स अब्भंतरकोडीए पंचमो भागो, सेसो छट्ठो भागो ।

एवं छब्भागेसु कप्पितेसु जति णिक्कारणे पढमपोरपमाणमेत्तेसु बीएसु पादे दीसमाणेसु गेण्हति तो पंचराइंदियाणि पच्छित्तं ।

बितियपव्वमेत्तेसु दस राइंदिया ।

ततियपव्वमेत्तेसु पण्णरस राइंदिया ॥४६६२॥

वीसं तु आउलेहा, अंगुट्ठंतो होंति पणुवीसा ।
पसतम्मि होति मासो, चाउम्मासो भवे चउसु ॥४६६३ ।

चउत्थे आउलेहप्पमाणमेत्तेसु वीसं राइंदिया ।

पंचमे अंगुट्ठमूलप्पमाणमेत्तेसु भिण्णमासो ।

छट्ठेणं भंगेणं – पसती चेव पूरति पसतिमेत्ते मासलहुं ।

बितियपसतीए बितिओ मासो, ततियपसतीए ततिओ मासो, चउत्थपसतीए चउत्थो-मासो। एवं चउलहुगं जातं। अतो परं दुगुणा दुगुणेण पारचियं पावेयव्वं ॥४६६३॥ सुहुमेसु पच्छित्तं भणिय।

इदाणिं थूलादिसु –

एसेव गमो णियमा, थूलेसु वि बितियपव्वमारद्धो।
अंजलिचउक्कलहुगा, ते च्चिय गुरुगा अणंतेसु ॥४६६४॥

थूलाणं बीयाणं बितियपव्वमेत्तेसु पणगं, अंगुलिमूले दस, आउरेहाए पण्णरस, अंगुट्ठंतो वीसं, पसतीए भिण्णमासो, बीतियपसतीते मासो – अंजली इत्यर्थः, बितियंजलीए बितिओ मासो, ततियाए ततितो, चउत्थंजलीए चउत्थो मासो। एवं चउलहुं जातं। अतो परं दुगुणवड्ढीए पारंचितं पावेयव्वं।

अण्णे भण्णंति – दो दो छब्भाए वि वड्ढंति, बारससु मासलहुं कायव्वं, स एवांजलिरविरुद्ध इत्यर्थः। चउसु अंजली चउलहुं, एवं परित्तेसु पच्छित्तं। अणंतेसु वि एएण चेव करछब्भागक्कमेण एते चेव पणगादिया पच्छित्ता। णवरं – गुरुगा कायव्वा ॥४६६४॥

णिक्कारणम्मि एए, पच्छित्ता वण्णिया तु बीएसु।
नायव्व आणुपुव्वी, एसेव तु कारणे जयणा ॥४६६५॥

पुव्वद्धं कंठं। कारणे पुण पत्ते जया आगंतुगबीयसहितं गेण्हति तदा एतेण चेव पणगादिपच्छित्ताणुलोमेण गेण्हंतो सुद्धो, जयणा एसेव पणगादिगा इत्यर्थः।

अह कारणे वि पणगादिभेदातो वोच्चत्थं गेण्हति तो चउलहुं भवति ॥४६६५॥

जहा कारणे करछब्भागादिएसु बीएसु दिट्ठेसु वि कप्पति तहा इमं –

वोसट्ठं पि हु कप्पति, बीयादीणं अहाकडं पायं।
ण अप्पसपरिकम्मा, तहेव अप्पं सपरिकम्मा ॥४६६६॥

वोसट्ठं – भरितं। जति अहाकडं पादं भरियं बीयाणं वोसट्ठं लब्भति तहावि तं चेव अहाकडं घेतव्वं, ण य सुद्धं अप्पपरिकम्मं सपरिकम्मं वा। अप्पपरिकम्मं ति अहाकडस्स असति तहेव अप्पपरिकम्मा। जइ अप्पपरिकम्मं बीयाण वोसट्ठं लब्भति तहा वि तं चेव कप्पति, ण य बहुपरिकम्मं सुद्धं अप्पपरिकम्मस्स असतीते बहुपरिकम्ममेव वोसट्ठं पि बीए अवणेत्ता गेण्हतीत्यर्थः।

चोदगो भणति – "पुव्वं सोही सविकप्पं भणिऊण इदाणिं भणह वोसट्ठं पि कप्पइ त्ति पुव्वावरविरुद्धं"।

आचार्याह – इमे कारणे अवलंवंतो ण दोसो, झामिएसु संतासंतऽसतीते वा बालवुड्ढेसु सीदतेसु जाव ते अप्पबहुपरिकम्मा परिकम्मिहिज्जंति ताव बहू परिहाणी, अहाकडं पुण तक्खणादेव परिभुज्जति। अवि य बीएसु संघट्टणं चेव केवलं, दोसो वि जो य बहुगुणो स घित्तव्वो, गुणो वि जो बहुदोसो स परित्याज्य इत्यर्थः ॥४६६६॥

जे भिक्खू पडिग्गहाओ कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जं भूमीए अवगाढं तस्स जाव मूलं फुट्टति ताव कंदो भण्णति, भूमीए उवरि जाव डाली ण फुट्टति ताव खंधो भण्णति, भूमीए उवरि जा साला सा डाली भण्णति, डालातो जं फुट्टति तं पवालं भण्णति । सेसा पदा कंठा ।

जे भिक्खू पडिग्गहातो पुढविकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू पडिग्गहातो आउक्कायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू पडिग्गातो तेउक्कायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

एतेसि सुत्ताणं इमो अत्थो –

वीएसु जो उ गमो, णियमा कंदादिएसु सो चेव ।
पुढवीमादीएसू, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥४६६७॥

णवरं – अणंतेसु कंदादिएसु गुरुगं पच्छित्तं भाणियव्वं । सेसं सव्वं उस्सग्गऽववातेणं जहा वीएसु तहा भाणियव्वं ॥४६६७॥

जे भिक्खू पडिग्गहगं कोरेइ, कोरावेइ, कोरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

मुहस्स अवणयणं णिक्कोरणं, तं झुसिरं ति काउणं चउलहुं ।

कयमुह अकयमुहे वा, दुविहा णिक्कोरणा तु पायम्मि ।
मुहकोरणे णिक्कोरणे य, चउरो भंगा मुणेयव्वा ॥४६६८॥

पुव्वद्धं कंठं । भायणस्स मुहकोरणे णिक्कोरणे चउभंगो कायव्वो ।

मुहकोरण समणट्ठा, बितिए मुहं ततिए कोरणं समणे ।
दो गुरु ततिए सुत्तं, दोहि गुरु तवेण कालेणं ॥४६६९॥

पढमे भंगे – भायणस्स मुहं समणट्ठा कयं, समणट्ठाए णिक्कोरियं । वितियभंगे-समणट्ठाए मुहं कयं, आयट्ठाए णिक्कोरितं । ततियभंगे – आयट्ठाए मुहं कयं समणट्ठाए णिक्कोरितं । चरिमे-उभयं, तं पि आयट्ठाए । एत्थ आदिमेसु दोसु भंगेसु चउगुरुगा, ततियभंगे सुत्तणिवातो चउलहुमित्यर्थः । पढमभंगे दोहिं वि तवकालेहिं विसिट्ठो । वितियभंगे तवगुरू । ततियभंगे कालगुरू । चउत्थभंगे बीयरहिए वि झुसिरं ति काउणं चउलहुं भवति ॥४६६९॥

एतेसामण्णतरं, पायं जो तिविहजोगकरणेणं ।
णिक्कोरेती भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥४६७०

आणादी दोसा, कुंथुमादिविराहणे संजमविराहणा, सत्थमादिणा लंछिते आयविराहणा। तत्थ परितावणादिणिप्फण्णं। जम्हा एवमाई दोसा तम्हा जहाकडं मग्गियव्वं, तस्स असति अप्पपरिकम्मं, पच्छा सपरिकम्मं ॥४६७०॥

एत्थ इमो अववातो –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
सेहे चरित्त सावय, भए य जयणाए णिक्कोरे ॥४६७१॥

जत्थ अहाकडं लब्भति तत्थ असिवादिकारणेहिं अगच्छंतो तत्थेव अच्छंतो अप्पपरिकम्मं जयणाए णिक्कोरेइ।

जति णाम पुव्वसुद्धे, कोरिज्जंतम्मि बितिय-ततिए वा।
तिप्पंचसत्तबीया, होज्जा सुद्धं तहा बितियं ॥४६७२॥

पुव्वं गहणकाले सुद्धं पच्छा कोरिज्जंते बितिए त्ति अप्पपरिकम्मे। ततिए त्ति बहुपरिकम्मे जति तिण्णि पंच वा सत्त वा बितिया होज्ज तहावि सुद्धं ॥४६७२॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामंतरंसि वा गामपहंतरंसि वा पडिग्गहं ओभासिय ओभासिय जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

इमो सुत्तत्थो –

जे भिक्खु णायगाइं, पडिगामे अंतरा पडिपहे वा।
ओभासेज्जा पायं, सो पावति आणमादीणि ॥४६७३॥

नायगो पुरसंथुतो पच्छासंथुतो वा। पुव्वसंथुतो मातपियादिगो, पच्छासंथुतो सासुससुरादिगो। असंथुओ इयवइरित्तो सण्णायगो अणायगो वा ॥४६७३॥

एसो [1]उवासगो अणुवासगो त्ति अस्य व्याख्या –

साहुं उवासमाणो, उवासओ सो वती य अवती वा।
सो सण्णातग इतरो, एवऽणुवासे वि दो भंगा ॥४६७४॥

साधू चेइए वा पोसहं उवासेंतो उवासगो भवइ। सो उवासगो पुणो दुविहो – वती वा अवती वा। अणुव्वया जेण गहिया सो वती, जो दंसणसावगो सो अव्वती। सो सण्णायग इयर त्ति गतार्थं। जो वि अणुवासगो सो वि सण्णायगो असण्णायगो वा। एते दो भंगा ॥४६७४॥

"पडिगामअंतरपडिवसहस्स य" इमं वक्खाणं –

पडिगामो पडिवसभो, गामंतर दोण्ह मज्झ खेत्तादी।
गामपहो पुण मग्गो, जत्थ व अण्णत्थ गिहवज्जं ॥४६७५॥

---

१ सूत्र ४२।

पडिवसभस्स गामो अंतरपल्लिगा वा अण्णो वा पडिगामो भण्णति। दोण्हं गामाणं अंतरे मज्झे खेत्ते खलए वा पहं पडिपन्नो भण्णति। उब्भामातिगस्स अभिमुहो पहे मिलिज्जा एस पडिपहो। वा सद्दातो गिहं वज्जेत्ता अण्णत्थ वा जत्थ एरिसा रच्छादिसु मग्गइ। एवमादिएसु ठाणेसु जति तं सण्णायगादिपायं ओभासेज्जा तो आणादिया दोसा चउलहुं च पच्छित्तं ॥४६७५॥

इमे य भद्द-पंतदोसा भवंति –

असती य भद्दओ पुण, उग्गमदोसे करेज्ज सव्वे वि ।

पंतो पेलवगहणं, अद्धाणोभासितो कुज्जा ॥४६७६॥

भद्दो चिंतेति – एयस्स साधुस्स अतीव आदरो दीसति जेण मं अद्धाणगतं ओभासति, भारियं से किं चि कज्जं। सो भद्दगो अप्पणो असति पादस्स सोलसण्हं उग्गमदोसाणं अण्णयरेणं दोसेण करेत्ता देज्ज। सव्वेहिं वा उग्गमदोसेहिं बहुपादे करेत्ता देज्ज। एगपादे पुण सव्वुग्गमदोसा ण संभवंतीत्यर्थः। पंतो पुण अद्धाणे ओभट्ठो कतो मम एत्थ पायं ति पेलवग्गहणं करेज्ज, "अणालोइयपुव्वावरकारिणो पेल्लवा एए" त्ति ण देज्ज, अहवा – अद्धाणे भद्दो रुट्ठो संतं पि ण देज्ज ॥४६७६॥

अतिआतरो से दीसति, अद्धाणगयं पि जेण मग्गंति ।

भद्दगदोसा एए, इतरो संतम्मि उ ण देज्जा ॥४६७७॥

"इयरो" त्ति पंतो, सेसं गतार्थम् ॥४६७७॥

जम्हा एवमादिदोसा भवंति –

तम्हा सट्ठाणगयं, नाऊणं पुच्छिऊण ओभासे ।

बितियपदे असिवादी, पडिवहमादीसु जयणाए ॥४६७८॥

सट्ठाणं घरे ठितं, नातूणं ति अत्थि एयस्स पातं, दिट्ठं वा पातं, पुच्छित्तं कस्सेयं ति, ? अण्णेण कहियं – अमुगस्स। ताहे ओभासियव्वं। अण्णाए अपुच्छिए वा पुव्वुत्ता दोसा भवंति। बितियपदेणं अद्धाणगयं पि ओभासेज्ज। जत्थ जइ जहुत्तेण विहिणा पाया लब्भंति तत्थ जति असिवादिकारणा ताहे तत्थेव पडिवसभातिसु अद्धाणगयं पि जयणाए ओभासेज्ज ॥४६७८॥

का जयणा ? इमा –

[1]तिप्पमितिघरा दिट्ठे, गाढं वा विक्खणं णहिं दट्ठुं ।

बेंति घरे ण दिट्ठो सि, किं कारण ताहिं दीवेंति ॥४६७९॥

जाहे णायं णिस्संकियं एयस्स अत्थि पायं दिट्ठं वा ताहे अविरतिगा ओभासेज्जा। जति ताहे दिण्णं तो लट्ठं।

अह सा भणेज्ज – "घरवती जाणति.।" ताहे सो घरट्ठितो ओभासिज्जति।

अह ण दिट्ठो ताहे घरे भणति – "अक्खेज्जह तस्स, जहा तुज्झ समीवं पव्वइता आगय" त्ति। पुणो बितियदिणे। एवं ततिए वि। एवं ततो वारा घरे अदिट्ठे। अहवा – घरे दिट्ठो तस्स पुण गाढो "विक्खणो" त्ति – किं च घरकत्तव्वताए अक्खणितो णिग्गतो ण मग्गितो त्ति।

---

१ तिप्पभिति, इत्यपि पाठः।

अहवा – गाढं "विक्खणं" ति साहुस्स संवज्झति । गाढं अतीव विक्खणं विस्तरणं, जाहे अतीव साहू विस्तरंतीत्यर्थः, ताहे अण्णत्थ वि अद्धाणठितं दट्ठुं भणंति – अम्हे तुज्झ सगासं आगता घरे य तयो वारा, गविट्ठो आसि ।"

ताहे सो भणेज्ज – किं कज्जं ?

ताहे साहुणो तस्स कारणं दीवेंति – "तुज्झ पायं अत्थि, तं देह" त्ति ।।४६७९।।

ताहे च्चिय जति गंतुं, ददाति दिट्ठे व भणति एज्जाह ।
तो कप्पती चिरेण वि, अदिट्ठे कुज्जुग्गमेकतरं ।।४६८०।।

जति तेहिं साहूहिं तं पादं ण दिट्ठं आसि तो जति सो दाता तेहिं साहूहिं सह घरं गंतुं देति तो कप्पति ।

अह भणति – पुणो एज्जह, तो उग्गमदोसकरणासंकाए ण कप्पति पच्छा । अह तं साहूहिं दिट्ठं पादं आसि जति भणेज्ज – पुणो एज्जह, तो तं चेव पादं सुचिरेण वि देंतस्स कप्पति, अण्णं ण कप्पति ।।४६८०।।

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा परिसामज्झाओ उट्ठवेत्ता पडिग्गहं ओभासिय ओभासिय जायइ जायंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४३।।

जे भिक्खु णातगाई, परिसामज्झाओ उट्ठवेंताणं ।
ओभासेज्जा पादं, सो पावति आणमादीणि ।।४६८१।। कंठा

चउलहू पच्छित्तं, आणादिया य दोसा ।

इमे अण्णे य दोसा –

दुपदचउप्पदणासे, हरणोद्दवणे य डहण खुण्णे य ।
तस्स अरी मित्ताण व, संकेगतरे उभयतो वा ।।४६८२।।

जो सो परिसामज्झातो उट्ठितो तस्स जे अरी अरीण वा जे मित्ता तेसिं तद्दिवसं चेव अहासमावत्तीए दुपदं दासो दासी वा चउपदं अस्सादि णट्ठं हरियं वा अडाडा, एतेसिं वा कोति सयणो उद्दवितो, घरं खलं थाणं वा दड्ढं, खेत्तं वा खयं, (तो) संकेज्ज – "कल्लं पव्वइएणं अमुगो परिसामज्झातो ओसारिओ" त्ति । तेसिं एगतरं संकेज्ज – साहुं अववा तं ओसारितं । अहवा – उभयं पि संकेज्ज, तत्थ संकाए चउगुरुं, णिस्संकिए मूलं, जं वा ते रुट्ठा डहण-हरणपंतावणादि करेज्ज तण्णिप्फण्णं पावेज्ज, जम्हा एवमादी दोसा तम्हा परिसामज्झाओ णायगादी णो कप्पति उस्सारेउं ।।४६८२।।

कारणे पुण कप्पति, तं च इमं कारणं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्त सावय, भए य जयणाए ओभासे ।।४६८३।। कंठा

णवरं – "जयणाए ओभास" त्ति अस्य व्याख्या –

परिसाए मज्झम्मि पि, अद्धाणोभासणे दुविह दोसा ।
तिप्पमितिगिहादिट्ठे, दीवण ता उच्चसद्देणं ॥४६८४॥

जे अद्धाणोभासणे दुविहा भद्दपंतदोसा भणिता, ते चेव परिसामज्झातो वि उट्ठविज्जंते दोसा भवंति ।

अह आगाढं विक्खणं ताहे भण्णति – तिप्पमितिगिहादिट्ठे इदाणिं तुज्झ सगासे आगता ।

किं कज्जं ? ताहे साधू भणंति – इहेव भणामो, किं ता एगंते भणेमो ? तेण अब्भणुण्णातो तत्थेव भणंति ।

अहवा भणेज्ज – एगंते गच्छिमो, ताहे एगंते ऊसारिज्जति । तत्थ वि उच्चेण सद्देण जहा अण्णो वि सुणेति तहा जायंतीत्यर्थः ।

अथवा इमो विधी –

जत्थ उ ण होज्ज संका, संकेज्ज जणाउले व पणयंतो ।
सो पडिचरतुट्ठेतं, अण्णेण व उट्ठवावेइ ॥४६८५॥

जत्थ साधुणा ओसारिज्जमाणे जणस्स संका ण भवति तत्थ वा ओसारिज्जति । जत्थ साधू बहुजणमज्झे मग्गंतो संकति तत्थ सो साधू तं पडिग्गहसामिं सयमेव उट्ठितं पडियरइ त्ति पडिक्खति त्ति वुत्तं भवति । अध तुरं ति तो अण्णेण परिसामज्झातो उट्ठवावेति । एस जयणा ॥४६८५॥

जे भिक्खू पडिग्गहनीसाए उडुबद्धं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू पडिग्गहनीसाए वासावासं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति
तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं॥सू०॥४५॥

अण्णे मासकप्पवासाजोग्गा वा खेत्ता मोत्तुं एत्थ पादे लभिस्सामो त्ति जे वसंति, एत्थ पादे णिस्सा भवति । एयाए पादणिस्साए ।

उडुबद्धे मासं वा, वासावासे तहेव चउमासं ।
पादासाए भिक्खू, जं वसति आणमाईणि ॥४६८६॥

जइ वि उडुबद्धे मासं वसइ, वरिसाकाले य चउमासं, तहा वि पादासाए कालातिक्कमं अकरेंतस्स वि आणादिया दोसा, चउलहुं च से पच्छित्तं ॥४६८६॥

अथवा – तं उडुबद्धं वासावासं वा पादणिस्साए वसंतो गिहीणं पुरतो इमं भणाति –

पातणिमित्तं वसिमो, इहं च सो आगता तदट्ठाए ।
इति कहयंते सुत्तं, अध तीते तो णितियदोसे ॥४६८७॥

जाणह हे सावय ! अम्हे पादणिमित्तं वसामो, इहं वा आगता वरं पादे लभिस्सामो ।

एवं कहेंतस्स चउलहू सुत्तणिवातो त्ति । अथ मासकप्पातीतं वसति, वासातीतं वा वसति, तो मासलहु चउलहू य, जे हेट्ठा णीयदोसा वण्णिता, ते सव्वे आवज्जति । तम्हा ण वसेज्जा ॥४६८७॥

भवे कारणं जेण पादणिस्साए वि वसेज्जा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्त सावय भए व जयणाए संवसते ॥४६८८॥ कंठा

णवरं – वसियव्वे इमा जयणा –

गेलण्णसुत्तजोए, इति लक्खेहिं गिही परिचिणंति ।
जा उज्झिणा पादा, ण य तं पडिबंधमक्खेंति ॥४६८९॥

उडुबद्धवासाकालं वा अतिरित्तं वसंता गिलाणलक्खेण वसंति, सुत्तग्गाहीण वा इह सुत्तपाढो सरति, गाढाणागाढजोगीण वा इह जोगो सुज्झति । "इति" उवदंसणे एवमादीहिं "लक्खेहिं" ति – प्रशस्तभावमाया-करणमित्यर्थः ।

गिही परिचिणंति – जेसिं पाता अत्थि गिहीणं तेसिं समाणं परिचयं करेंति जाव ते पादा उज्झिज्जंति – णिप्पण्णाणं अप्पणो वि य णिमित्तं उब्भेदं कुर्वतीत्यर्थः । ण य तेसिं गिहत्थाणं कहिंति । जहा इह अम्हे पादणिमित्तं ठिता, न तत्प्रतिबंधं कथयंति ॥४६८९॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए चोद्दसमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥

पंचदश उद्देशकः

उक्तश्चतुर्दशमः । इदानिं पंचदशमः । तस्सिमो संबंधो –

ण णिरत्थयमोवसिया, रूढा वल्लीफला उ संवद्धा
इति हरिसगमण चोदण, आगाढं चोदितो भणति ॥४६६०॥

कारणे वासावासे भायणाणं कतेणं वसित्ता पासति तुंबी य जायपुत्तभंडाओ ताहे सो हरिसितो भणति – "ण णिरत्थयमोवसिता ।" मंडवादिसु अतीव वल्लीओ पसरिता, ण केवलं पसरितातो पभूता फला वि संवद्धा, न केवलं संवद्धा प्रायसो निप्पन्ना, अपि अभिलस्सामो पादे, तं एवं भणंतं को ति साधू पडिचोएज्जा – "मा अज्जो एवं भणाहि, ण वट्टति", तातो सो पडिचोदणाए रुट्ठो फरुसं वदेज, तत्प्रतिषेधार्थमिदं सूत्रमारभ्यते –

जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं वयइ, वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खू भिक्खूणं फरुसं वयइ, वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं फरुसं वयइ, वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू भिक्खूणं अण्णयरीए अच्चासायणाए अच्चासएइ,
अच्चासएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

आगाढफरुसमीसग, दसमुद्देसम्मि वण्णियं पुव्वं ।
तं चेव य पण्णरसे, भिक्खुस्सा होति भिक्खुम्मि ॥४६६१॥ कंठा

जे भिक्खू सचित्तं अंबं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सचित्तं अंबं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंबं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंबं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

एते चउरो सुत्ता । एतेसिं इमो अत्थो – सच्चित्तं णाम सजीवं । चतुर्थरसास्वादं गुणणिप्फण्णं णाम अंबं । "भुज" पालनाभ्यवहारयोः, इह भोयणे दट्ठव्वो । आणादी चउलहुं च पच्छित्तं, एवं वितियसुत्तं पि ।

णवरं—विडसगं भि (भ) क्खणं विविहेहिं पगारेहिं डसति विडसइ। एवं पइट्ठिए वि।

णवरं – चउभंगो – सचित्तं सचित्ते, सचित्तं अचित्ते, अचित्तं सचित्ते, अचित्तं अचित्ते। आदिल्लेसु दोसु भंगेसु चउलहुं, चरिमेसु दोसु मासलहुं।

इमो सुत्तफासो –

सच्चित्तं वा अंबं, सच्चित्तपतिट्ठियं च दुविहं तु।
जो भुंजे विडसेज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥४६६२॥

सचित्तं सचित्ते पइट्ठियं वा, एयं चेव दुविह। सेसं कंठं।

अमिला अभिणवछिण्णं, अप्पक्क सचित्त होतऽछिण्णं वा।
तं चिय सयं मिलातं, रुक्खगय सचेदणपतिट्ठं ॥४६६३॥

जं अभिणवच्छिण्णं अमिलाणं तं सचित्तं भवति, जं च रुक्खे चेवऽवट्ठितं अच्छिण्णं वद्धट्ठियं अवद्धट्ठियं वा अपक्कं च तं पि सचित्तं। "तं चिय" – तदेव अंबादियं पलंबं रुक्खे चेव ठियं दुव्वायमादिणा अप्पणा वा अप्पज्जत्ति भावं मिलाणं तं सचेयणपत्तिट्ठियं भण्णति ॥४६६३॥

अहवा जं वद्धट्ठिं, वहिपक्कं तं सचेयणपतिट्ठं।
विविहदसणा विदसणा, जं वा अक्खुंदति णहाती ॥४६६४॥

जं वा पलंबं वाहिरकडाहपक्कं अंतो सचेयणं वीयं तं वा सचित्तपतिट्ठियं भण्णति। अपनीतत्वचं गुडेन वा सह कर्पूरेण वा सह तथाऽन्येन वा लवणचातुर्जातकवासनादिना सह एसा विविहदसणा। "अक्खुंदइ" त्ति चक्खिउं मुंचति, अन्योऽन्य-णहेहिं वा अक्खुंदति, नखपदानि ददातीत्यर्थः, एसा वा विडसणा भण्णति। एवं परित्ते भणियं। अणंते वि एवं चेव। णवरं चउगुरुं पच्छित्तं ॥४६६४॥

सचित्ते सचित्तपतिट्ठिए य दोसु वि सुत्तेसु इमो अववातो –

वितियपदमणप्पज्झे, भुंजे अविकोविए व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, गिलाण अद्धाण ओमे वा ॥४६६५॥

खित्तादिगो अणप्पज्झो वा भुंजति, सेहो अविकोवियत्तणओ अजाणंतो, रोगोवसमणिमित्तं वेज्जुवदेसितो गिलाणो वा भुंजे, अद्धाणोमेसु वा असंथरंता भुंजंता विसुद्धा ॥४६६५॥

इमो दोसु विडसणसुत्तेसु अववातो –

वितियपदमणप्पज्झे, विडसे अविकोविते व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, गिलाण अद्धाण ओमे वा ॥४६६६॥ कंठा

णवरं चोदगाह – विडसणा लीला, तं अववाते मा करेउ।

आचार्याह – जरठ्ठवाहिरकडाहं तं अवणेउ खायंतस्स अववादे ण दोसा, जइ वा पलंबस्स जं उवकारकारी लवणादिकं तेण सह तं भुंजंतस्स ण दोसो, कोमलं जरठं वा इमं ति परिण्णाहेतु णहमादीहिं अखुंदेज्ज ॥४६६६॥

जे भिक्खू सचित्तं अंबं वा अंबपेसिं वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंबचोयगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू सचित्तं अंबं वा अंबपेसिं वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंबचोयगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंबं वा अंबपेसिं वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंबचोयगं वा भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंबं वा अंबपेसिं वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंबचोयगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

एते छ सुत्तपदा, विडसणाए वि छ च्चेव । एतेसिं इमो अत्थो । अंबं सकलं ण केणइ ऊणं ।

चोदगाह – आदिल्लेसु चउसु सुत्तेसु णणु सकलं चेव भणियं ।

आचार्याह – सच्चं, किंतु तं पलंबत्तणेण पज्जत्तं वद्धट्ठियं गहियं, इमं तु पलंबत्तणेण अपज्जत्तं अबद्धट्ठियं अविपक्वरसत्वादसकलमेवेत्यर्थः । पेसी दीहागारा, अद्धं भित्तं, वाहिरा छल्ली सालं भण्णइ, अदीहं विसमं चक्कलियागारेणं जं खंडं तं डगलं भण्णति, ण्हारुणिभागा जे केसरा तं चोयं भण्णति ।

इमो सुत्तफासो –

एसेव गमो णियमा, डगले साले य भित्तए चोए ।
चउसु वि सुत्तेसु भवे, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥४६६७॥

अंबगपेसिवज्जा चउसु सुत्तेसु त्ति । सेसं कंठं ।

अहवा – आदिल्लेसु चउसु सुत्तेसु जो गमो भणितो सो चेव गमो अंबगादिएसु छसु पदेसु सविडसणेसु भाणियव्वो ॥४६६७॥

चोदगाह – णणु पढमसुत्तेसु भणितो चेव अत्थो किं पुणो अंबगादियाणं गहणं ?

आचार्याह –

एवं ताव अभिण्णे, अण्णे पुणो इमा भेदा ।
डगलं तु होइ खंडं, सालं पुण बाहिरा छल्ली ॥४६६८॥

एवं ताव आदिल्लेसु चउसु सुत्तेसु अभिण्णाणं अंबाणं गहणं, इह भिण्णाणं गहणं । अहवा – आदिसुत्तेसु अविसिट्ठं गहणं, इह विसिट्ठं गहणं कयं ।

अहवा – मा कोइ चिंतिहिति–"अभिण्णं अभक्खणिज्जं, भिण्णं पुण भक्खं",तेण अंबगं पेसिमादिगा य णिसिज्झंति । डगलं तु पच्छद्धं कंठं ॥४६६८॥

भित्तं तु होइ अद्धं, चोयं जे जस्स केसरा होंति ।
मुहपण्हकरं हारिं, तेण तु अंबे कयं सुत्तं ॥४६६६॥

पुव्वद्धं कंठ ।

चोदगाह – किं अण्णे माउलिंगादिया फला भक्खा, जेण अंबं चेव णिसिज्झति ?

आचार्याह – एगग्गहणा गहणं तज्जातियाणं ति सव्वे संगहिया । अंबं पुण मुहपण्हं – पच्छद्धं । अंबेण मुहं पल्हाति – प्रस्यंदतीत्यर्थः । किं च "हारितं" – जिव्हेन्द्रियप्रीतिकारकमित्यर्थः । अनेन कारणेन अंबे सूत्रप्रतिबंधः कृतः ॥४६६६॥

अन्याचार्याभिप्रायेण कृता गाथा –

"अंबं केण ति (थेवेण) ऊणं डगलद्धं भित्तगं चतुब्भागो ।
चोयं तयाओ भणिता, सालं पुण अक्खुयं जाण ॥४७००॥

थोवेण ऊणं अंबं भण्णति, डगलं अद्धं भण्णति, भित्तं चउभागादी, तया चोयं भण्णति, नखादिभिः अक्खुण्णं सालं भण्णति, अक्खुं – अंबसालमित्यर्थः । पेसी पूर्ववत् ॥४७००॥

सच्चित्तं व फलेहिं, अग्गपलंबा तु सूतिता सव्वे ।
अग्गपलंबेहिं पुणो, मूलपलंबे कया सूया ॥४७०१॥ कंठा

तत्थ इमे अग्गपलंबा –

तल णालिएरि लउए, कविट्ठ अंबाड अंबए चेव ।
एयं अग्गपलंबं, णेयव्वं आणुपुव्वीए ॥४७०२॥

जणपसिद्धा एते । "आणुपुव्वि" त्ति एसेव तलादिगा ॥४७०२॥

तत्थ मूलपलंबं इमं –

झिज्झिरि सुरहिपलंबे, तालपलंबे य सल्लपल्लंबे ।
एयं मूलपलंबं, नेयव्वं आणुपुव्वीए ॥४७०३॥

झिज्झरी वल्ली, पलासगो सुरभी [1]सिग्गुंगो सेसा जणपसिद्धा । एत्थ वि आणुपुव्वी – झिज्झिरिमादी ॥४७०३॥

चोदगाह –

जति मूलग्गपलंबा, पडिसिद्धा णणु इदाणि कंदादी ।
कप्पंति न वा जीवा, को व विसेसो तदग्गहणे ॥४७०४॥

यदीत्यभ्युपगमे । मूलपलंबा अग्गपलंबा य पडिसिद्धा, ण पुण कंद-मूल-खंध-तया-साल-पवाल-पत्त-पुप्फं च पडिसिद्धा । जम्हा एतेसिं पडिसेहं करेह तेण मे मती – अवस्सं एते कप्पंति पडिग्गाहित्तए, जीवा वि होंतया ।

---

१ शतद्रुवृक्षः ।

अहवा – ण वि एते जीवा, जेण एतेसिं पडिसेहो ण कतो । अध जीवा, ण य कप्पंति, तेण सुत्तं दुबद्धं । अध मतं ते – "जीवा, ण कप्पंति, सुत्तं च सुवद्धं" तो विसेस हेऊ वत्तव्वो ॥४७०४॥

आयरिओ आह –

चोदग कण्णसुहेसू, सद्देसु अमुच्छमाणो सह फासे ।
मज्झम्मि अट्ठ विसया गहिता एव वऽट्ठ कंदाती ॥४७०५॥

हे चोदग ! जहा दसवेयालिते आयारपणिहीए भणियं –

कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं, पेम्मं णाभिणिवेसते ।
दारुणं कक्कसं फासं, काएणं अधियासते ॥

एत्थ सिलोगे आदिमंतग्गहणं कयं, इहरहा उ एवं वत्तव्वं

कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं, पेम्मं णाभिणिवेसए ।
दारुणं कक्कसं सद्दं, सोएणं अहियासए ॥१॥

चक्खुकंतेहि रूवेहिं, पेम्मं णाभिणिवेसए ।
दारुणं कक्कसं रूवं, चक्खुणा अहियासए ॥२॥

घाणकंतेहिं गंधेहिं, पेम्मं णाभिणिवेसते ।
दारुणं कक्कसं गंधं, घाणेणं अहियासए ॥३॥

जीहकंतेहिं रसेहिं, पेम्मं णाभिणिवेसते ।
दारुणं कक्कसं रसं, जीहाए अहियासए ॥४॥

सुहफासेहि कंतेहिं, पेम्मं णाभिणिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं, काएणं अहियासए ॥५॥

एवं रागदोसा, पंचहिं इंदियविसएहिं गहिता । आदिअंतग्गहणेणं मज्झिल्ला अट्ठ विसया गहिता भवंति । एवं इह वि महंतं सुत्तं मा भवउ त्ति आदिअंतग्गहिता, तेहिं गहिएहिं मज्झिल्ला वि अट्ठकंदादिणो गहिया चेव भवंति ॥४७०५॥

अहवा एगग्गहणे, गहणं तज्जाइयाण सव्वेसिं ।
तेणग्गपलंबेणं, तु सूतिता सेसगपलंवा ॥४७०६॥

उच्चारियसिद्धा, तस्स पलंवस्सिमे भेदा –

सव्वं पि य तं दुविहं, आमं पक्कं च होति नायव्वं ।
आमं भिण्णाभिण्णं, एमेव य होति पक्कं पि ॥४७०७॥

दो भेदा – आमं पक्कं च, जं तं आमं तं भिण्णं अभिण्णं वा, पक्कं पि एवं भिण्णाभिण्णभेदेण भाणियव्वं ॥४७०७॥

तत्थ आमस्स इमो निक्खेवो –

नामं ठवणा आमं, दव्वामं चेव होति भावामं ।
उस्सेतिम संसेतिम, उवक्खडं चेव पलियामं ॥४७०८॥

णामठवणाओ गयाओ, दव्वामं चउव्विहं, तं जहा – उस्सेतिमामं संसेतिमामं उवक्खडामं पलियामं चेति ॥४७०८॥

एतेसि चउण्ह वि इमा विभासा –

उस्सेतिम पिट्ठादी, तिलाति संसेतिमं ति नायव्वं ।
कंकडुगादि उवक्खड, अविपक्करसं तु पलियामं ॥४७०९॥

उस्सेतिमं णाम जहा – "पिट्ठं" – पुढविकायभायणं, आउक्कायस्स भरेत्ता [1]मीराए अद्दहिज्जति, मुहं से वत्थेण ओहाडिज्जति, ताहे पिट्ठपयणयं रोट्टस्स भरेत्ता [ताहे] तीसे थालीए जलभरियाए अहोछिद्देण तं पि ओसिज्जति, हेट्ठाहुत्तं वा ठविज्जति, तत्थ जं आमं तं उस्सेतिमामं भण्णति । आदिग्गहणेणं उवरिं ठविज्जति, ताहे [2]डंडेरगादी ।

संसेतिमं णाम पिट्ठरे पाणियं तावेत्ता पिंडियट्ठिया तिला तेण ओलहिज्जंति, तत्थ जे आमा तिला ते संसेतिमामं भण्णति । आदिग्गहणेणं जं पि अण्णं किं चि एतेणं कमेणं संसिज्झति तं पि संसेतिमामं भण्णति ।

उवक्खडामं णाम जहा चणयादीण उवक्खडियाण जे ण सिज्झंति ते कंकडुया, तं उवक्खडियामं भण्णति ।

पलिआमं जं परियाए कतं परिणायं वा पत्तं तहावि आमं तं परिआमं, तं च अविपक्करसं ॥४७०९॥

इमं चउव्विधं –

इंधण धूमे गंधे, वच्छप्पलियामए य आमविही ।
एसो खलु आमविही, नेयव्वो आणुपुव्वीए ॥४७१०॥

इंधणपलिआमं धूमपलियामं गंधपलियामं वच्छपलियामं, चउव्विहा पलियामविधी । "आणुपुव्वि" त्ति एसा चेव इंधणादिया । अथवा – इंधणादिकरणादिया वा आणुपुव्वी ॥४७१०॥

तत्थ इंधणाम-धूमामस्स य इमं वक्खाणं –

कोद्दवपलालमादी, इंधणेण पलंबमाइ पच्चंति ।
मज्झख(ऽग) डाऽगणि पेरंत तेंदुगा छिद्दधूमेणं ॥४७११॥

जहा कोद्दवपलालेण अंबगादिफलाणि वेढेत्ता पाविज्जंति, आदिग्गहणं सालिपलालेण वि, तत्थ जे ण पक्का फला ते इंधणपलियामं भण्णति ।

धूमपलियामं णाम जहा खड्डं खणित्ता तत्थ करीसो छुब्भति, तीसे खड्डाए परिपेरंतेहिं अण्णाओ खड्डाओ खणित्ता तासु तेंदुआदीणि फलाणि छुभित्ता जा सा करीसगखड्डगा तत्थ अग्गी छुब्भति, तासि च तेंदुगखड्डाणं सोआ तं करीसखड्डं मिलिया, ताहे धूमो तेहिं सोतेहिं पविसित्ता ताणि फलाणि पावेति, तेणं ते पच्चंति, तत्थ जे अपक्का ते धूमामं भण्णति ॥४७११॥

इदाणि गंधाम-वच्छामाणं इमं वक्खाणं –

अंबगमादी पक्कं, छूढं आमेसु जं ण पावयती ।
तं गंधामं वच्छे, कालप्पत्तं न जं पच्चे ॥४७१२॥

---

१ दीर्घचुल्यां । २ भरोलगादि (बृ०) ।

गंधामं अंबयं आदिसद्दातो मातुलिंगं वा पक्कं अण्णेसिं आमयाण मज्झे छुब्भति, तस्स गंधेण तेण अण्णे आमया पच्चंति, जं तत्थ ण पच्चति तं गंधामं भण्णति।

वच्छपलियामं णाम वच्छा रुक्खो भणइ, तम्मि रुक्खे जं फलं पत्ते वि काले अण्णेसु वि पक्केसु ण पच्चति आमं सरडीभूतं तं वच्छपलियामं भण्णति ॥४७१२॥

सव्वदव्वामोवसहारिणी इमा गाहा –

उस्सेतिममादीणं, सव्वेसिं तेसि जं तु मज्झगतं।
पच्चंतं पि ण पच्चति, तं होति दव्वआमं तु ॥४७१३॥

सव्वेसिं उस्सेतिमादीणं मज्झे जं "पच्चंतं पि" तिप्पाविज्जमाणं पि वुत्तं भवति, ण पच्चति तं दव्वामं भण्णति ॥४७१३॥

इदाणिं "[1]भावामं" –

भावामं पि य दुविहं, वयणामं चेव णो य वयणामं।
वयणाममणुमतत्थे, आमं ति य जो वदे वक्कं ॥४७१४॥

पुव्वद्धं कंठं। वयणामं अणुमयत्थे। जहा कोइ साधू गुरुपेसणेण गच्छंतो अण्णेण पुच्छितो – किं भो! गुरुपेसणेण गम्मति?" सो पडिभणइ – "आमं" ति, शब्दमात्रोच्चारण करेति ॥४७१४॥

"[2]णो वयणामं" इमं –

णोवयणामं दुविहं, आगमतो चेव णो य आगमतो।
आगमओ उवउत्तो, नो आगमतो इमं होइ ॥४७१५॥

पुव्वद्धं कंठं। आगमतो जो "आमवयणं" तस्सत्थं जाणति, तम्मि उवउत्तस्स य स आमभावोवयोगो भावामं भण्णति ॥४७१५॥

जं णो आगमतो भावामं तं इमं –

उग्गमदोसादीया, भावतो अस्संजमो य आमविही।
अन्नो वि य आएसो, जो वाससतं न पूरेति ॥४७१६॥

आहाकम्मादि उग्गमदोसा, आदिसद्दाओ एसणदोसा, उप्पायणा य दोसा, भणियं च "[3]सव्वामगंधं परिण्णाय णिरामगंधो परिव्वए। जओ तेहि उग्गमादिदोसेहिं घेप्पमाणेहि चारित्तं अविपक्कं अपज्जत्तं आमं भण्णंति। असंजमो वि आमविधीए चेव भवति, जतो चरणस्सोवघायकारी। किं च – जो वरिससतायुपुरिसो वरससतं अतरेत्ता अंतरे मरंतो आमो भण्णति ॥४७१६॥

एसो उ आमविही, एत्थऽहिकारो उ दव्वआमेणं।
तत्थ वि पलियामेणं, तत्थ वि य वच्छपलियामे ॥४७१७॥

भणितो आमविही। एत्थ दव्वामेण अधिकारो, तत्थ वि पलियामेण, तत्थ वि वच्छपलियामेणेत्यर्थः, सेसा उच्चारियसिद्धा ॥४७१७॥

---

१ गा० ४७०८। २ गा० ४७१४। ३ आचा० प्रथ० श्रुत० अध्य० २ उद्दे० ५।

इदाणिं भंगविकल्पनार्थं सूत्रविभागः क्रियते – "सच्चित्तं अंबं भुंजति । सच्चित्तं विडसति"। "पतिट्ठिए" वि दो सुत्ता, एते चउरो दव्वओ सगलसुत्ता । भित्तं सालं डगलं चोयं एते चउरो सह विडसणाए दव्वतो भिण्णा । जं पुण "अंबं वा" सुत्त एतदसगलत्वात् पूर्वसूत्रेषु प्रविष्टं, जं पुण अंबपेसिं वा सुत्तं एयं पेसिभेदित्वात् भित्ते प्रविष्टं । एवं अष्टसूत्राणि भवंति ।

अतो पठ्यते –

दव्वतो चउरो सुत्ता, अभिण्ण चउरो य पच्छिमा भिण्णा ।
भावेणं पुण भइया, अट्ठ वि भेया इमे चउहा ॥४७१८॥

पढमा चउरो सुत्ता दव्वतो अभिण्णा, पच्छिमा चउरो सुत्ता दव्वतो भिण्णा । एते अट्ठ वि सुत्ता भावतो भिण्णा वा अभिण्णा वा ॥४७१८॥

एत्थ भिण्णे इमो चउव्विहो णिक्खेवो –

णामं ठवणा भिण्णं, दव्वे भावे य होइ णायव्वं ।
दव्वम्मि घडपडादी, जीवजढं भावतो भिण्णं ॥४७१९॥

णाम ठवणाओ गताओ । दव्वभिण्णे घडो पडो वा, भावभिण्णं पुण जीवविप्पजढं जं सरीरयं, इह तु पलंबं भाणियव्वं ॥४७१९॥

एतेसु चेव दव्वभावभिण्णाभिण्णेसु चउभंगो कायव्वो –

भावेण य दव्वेण य, भिण्णाभिण्णे चउक्कभयणा उ ।
पढमं दोहि अभिण्णं, बितियं पुण दव्वतो भिन्नं ॥४७२०॥

भावतो अभिण्णं दव्वतो अभिण्णं । एस पढमो ।

भावतो अभिण्णं दव्वतो भिण्णं । एस बीतो ॥४७२०॥

ततियं भावतो भिण्णं, दोहि वि भिण्णं चउत्थगं होति ।
एतेसिं पच्छित्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥४७२१॥

भावतो भिण्णं दव्वतो अभिण्णं । ततितो भंगो ।

भावतो भिन्नं दव्वतो भिन्नं । एस चउत्थो ।

एतेसु इमं पच्छित्तं –

लहुगा य दोसु दोसु य, लहुओ पढमम्मि दोहि वी गुरुगा ।
तवगुरुग कालगुरुगा, चउत्थए दोहि वी लहुओ ॥४७२२॥

पढम बितिएसु दोसु वि भंगेसु चउलहुगा सचेतनत्वात् ।

ततियचउत्थेसु वि भंगेसु मासलहुं अचेतनत्वात् ।

पढमभंगे चउलहुं तं दोहिं वि तवकालेहिं गुरुगं कायव्वं ।

बितियभंगे जं चउलहुं तं तवेण गुरुगं कालतो लहुगं कायव्वं ।

ततियभंगे जं मासलहुं तं तवलहुं कालगुरुं कायव्वं ।

चउत्थभंगे जं मासलहुं तं दोहिं वि तवकालेहिं लहुगं कायव्वं ।।४७२२।।

उग्घातिया परित्ते, होंति अणुग्घातिता अणंतम्मि ।
आणऽणवत्था मिच्छा, विराहणा कस्सऽगीयत्थे ।।४७२३।।

एतेहिं पच्छित्ता "उग्घातिय" त्ति – लहुगा भणिता । अणंते पुण ते एते चेव पच्छित्ता "अणुग्घाइय" त्ति – गुरुगा इत्यर्थः । आणा अणवत्था मिच्छा विराहणा य । "कस्स" ? अगीयत्थे। एयं उवरिं-सवित्थरं भण्णिहित्ति । तहावि असुण्णत्थं अक्खरत्थो भण्णति – पलंबं गेण्हंतेण तित्थकराणं आणाभंगो कतो, अणवत्था कता, मिच्छत्तं जणेति, आयसंजमविराहणा य भवति ।

सीसो पुच्छति – "कस्सेयं – पच्छित्तं ?"
आयरियो भणति – अगीयत्थस्स भवति ।
सीसो पुच्छति – "एयं पच्छित्तं किं गहिए पलंबे भवति अगहिए" ?
आयरिओ भणति – गहिते, णो अगहिते ।
किं कारणं ?
जति अगहिते, णो गहिते, तो ण कोति वि अपायच्छित्ती ।।४७२३।।

एतेण अवसरेण इमा –

अण्णत्थ तत्थ गहणे, पडिए अच्चित्तमेव सच्चित्ते ।
छुभणाऽऽरुहणा पडणा, उवही तत्तो य उड्डाहो ।।४७२४।।

तं गहणं दुविधं – अण्णत्थगहणं, तत्थ गहणं च ।

जं तं "[1]अण्णत्थ गहणं" तं इमं –

अण्णग्गहणं तु दुविहं, वसमाणऽडवि वसंते अंतो बहिं ।
अंताऽऽवण तव्वज्जं, रच्छा गिहे अंतो पासे वा ।।४७२५।।

जं तं "अण्णत्थ गहणं" तं दुविधं – वसमाणे य, अडवीए य ।
तत्थ जं तं वसंते – तं पुणो दुविधं – गामस्स अंतो, बाहिं वा ।
जं तं अंते – तं पुणो दुविधं – आवणे वा तव्वज्जे वा । तव्वज्जं आवणवज्जं ।

तं तव्वज्जं इमेसु ठाणेसु होज्जा – रत्थाए वा होज्जा, गिहे वा होज्जा, गिहस्स वा अंतो अलिंदगासु, गिहस्स वा पासे अंगण-पुरोहडादिसु ।।४७२५।।

एयं सव्वं पि अपरिग्गहं होज्ज, सपरिग्गहं वा । एत्थ आवणे वा तव्वज्जं वा अपरिग्गहं गेण्हमाणस्स इमं पच्छित्तं ।

दव्वतो ताव भण्णति –

कप्पट्ठ दिट्ठ लहुओ, अट्ठुप्पत्ती य लहुग ते चेव ।
परिवड्ढमाण दोसे, दिट्ठादी अण्णगहणम्मि ।।४७२६।।

---

१ गा० ४७२४ ।

पलंबं गेण्हंतो कप्पट्ठगेण दिट्ठो, एत्थ से मासलहुं । "अट्ठुप्पत्ती य लहुग" त्ति – अह तस्स संजयस्स गहिए पलंबे अट्ठोप्पज्जति – भक्षयामीति एत्थ से चउलहुं ।

अथवा – "अट्ठुप्पत्ती" – संजएण पलंबं गेण्हंतेण कप्पट्ठगस्स पलंबे अट्ठो उप्पादितो – "अहमवि गेण्हामी" त्यर्थः । एत्थ वि चउलहुं ते चेव त्ति ।

अह ण कप्पट्ठगेण महल्लपुरिसेण दिट्ठो गेण्हंतो, एत्थ से चउलहुं पच्छित्तं ।

अध महल्लस्स अट्ठो उप्पज्जति – "अहमवि गेण्हामि" त्ति, एत्थ वि चउलहुं चेव । महल्लेण य दिट्ठे इमे अधिकतरा दिट्ठादी परिवड्ढमाणा दोसा बहू – [1]उवरि गाहा ।।४७२६।।

एवं अण्णत्थगहणे भण्णमाणा सुणह –

दिट्ठे संका भोतिय, घाडिय [2]णातीणं गामबहिता वा ।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ।।४७२७।।

महल्लेण गेण्हंतो दिट्ठो ङ्क । अह संका किं सुवण्णादि गहियं अध पलंबं, एत्थ संकाए ङ्क । णिस्संकिते सुवण्णं ति ङ्क ।

"भोइय" त्ति भज्जा, तीए कहियं – "मए संजतो दिट्ठो फलाणि गेण्हंतो" । जति तीए पडिहओ – "मा एवं भणाहि, एयं संजए न संभवइ", तो चउगुरुए चेव ठितं ।

अह तीए न पडिहतं तो ꣸ ꣸ ꣸ ।

किंकारणं ?

भोइयाए पढमं कहेति ? आसण्णतरो सो संजतो त्ति ।

ततो "घाडियस्स" कहेति, तेण पडिहते छल्लहुं चेव, ꣸ ꣸ ꣸ । अपडिहते ꣸ ꣸ ꣸ ।

ततो "णातीणं" कहेति, तेहिं पडिहते छग्गुरुं चेव, अपडिहते छेदो ।

ततो आरक्खिपुरिसेहिं तस्स वा समीवाओ सुओ अन्नओ वा सुते तेहिं पडिहए छेदो चेव, अपडिहते मूलं ।

इब्भसेट्ठीसु सुते पडिहते मूलं चेव, अपडिहते अणवट्ठो ।

अमच्चराइणेहिं सुते पडिहते अणवट्ठं चेव अपडिहए पारंचियं । पच्छद्धं गतार्थं ।

णवरं – "दुगं" – अणवट्ठ पारंचियं ।

अहवा – संका भोतियमातापित्रौ पितृयकमहत्तरौ आरक्खिया सिट्ठि सत्थवाहा अमच्चरायाणो एतेसु सत्तसु पदेसु अट्ठोक्कंतीए पूर्ववत् ।

"गामबहियाइ" त्ति – सांन्यासिकं [3]वक्ष्यमाणं ।।४७२७।।

एवं तावऽदुगुंछे, दुगुंछिते लसुणमाति ते चेव ।
णवरं पुण चउलहुगा, परिग्गहे गेण्हणादीया ।।४७२८।।

---

१ न भाष्ये । २ घाडि-निआऽऽरक्खि-सेट्ठि-राईणं, इति बृहत्कल्पे गा० ८६६ । ३ गा० ४७२९ ।

एतं सव्वं अदुगुंछिते अंबादिके पलंबे भणितं। दुगुंछिते इमं णाणत्तं—दुविधं दुगुंछितं—जाति-दुगुंछितं ठाणदुगुंछितं च।

जातिदुगुंछितं जहा लसुणमादी, आदिग्गहणेणं पलंडुण्हेसुरंडगफलं तालफलं च।

ठाणदुगुंछितं असुइठाणे पडियं। दुविहं दुगुंछियं कप्पट्ठादि दिट्ठं गेण्हंतस्स चेव चउलहुं, सेसं सव्वं एयं चेव दट्ठव्वं। एयं अपरिग्गहं गतं।

"परिग्गहे गेण्हणादीय" त्ति – सपरिग्गहे वि अंतो अदुगुंछिते दुगुंछिते वा कप्पट्ठदिट्ठादिगा सव्वा एसेव विधी आरोवणा य।

णवरं – सपरिग्गहे गेण्हणकड्ढणववहारादिया दोसा भवंतीत्यर्थः ॥४७२८॥ एवं दव्वतो पच्छित्तं गतं।

इदाणिं खेत्ततो – एत्थ जं "[1]गामबहिया" य त्ति संणासिगं पदं ठवितं।

एतेण खित्तपायच्छित्तं सूइयं –

खेत्ततो णिवेसणादी, जा सीमा लहुगमाति जा चरिमं।
केसिंची विवरीयं, काले दिण अट्ठमे सपदं ॥४७२९॥

खेत्तओ पायच्छित्तं भण्णइ – तत्थ इमे अट्ठ पदा, णिवेसण वाडग साहि गाममज्झे गामद्दारे गामबहिया उज्जाणे सीमाए। एतेसु ठाणेसु गेण्हंतस्स जहासंखं चउलहुगादि पारंचियावसाणा पच्छित्ता।

अहवा – निवेसण वाडग साही गाममज्झे दारे उज्जाणे सीमाए अण्णगामे एतेसु इमं जहासंखं ङ्क, ङ्का, र्फ़ु, र्फ़ू, छे०, मूलं, अ०, पा०।

"केसिंचि – विवरीयं" ति अण्णगामे ङ्का। सीमाए गेण्हइ ङ्का। उज्जाणे र्फ़ु। गाममज्झे छे०। साहीए मू०। वाडए अ०। णिवेसणे पारंची। खेत्तओ गतं।

इदाणिं कालतो – "काले दिण अट्ठमे सपयं" ति पढमदिवसे गेण्हति ङ्क। वितीए ङ्का। ततिए र्फ़ु। चतुर्थे र्फ़ु। पंचमे छे०। छट्ठे मूलं। सत्तमे अणवट्ठो। अट्ठमे सपदं ति पारंचियं ॥४७२९॥ गतं कालतो।

इदाणिं भावतो –

भावऽट्ठवार सपदं, मासादी मीस दसहि सपदं तु।
एमेव य बहिता वी, सत्थ जत्तादिठाणेसु ॥४७३०॥

भावतो एक्कवारं गेण्हति ङ्क। वियवारं ङ्का। ततियं र्फ़ु। चतुर्थे र्फा। पंचमे छे०। छट्ठे मूलं। सत्तमे अणवट्ठो। अट्ठमवारं गेण्हंतस्स पारंचियं। भावपारंचियं सचित्तविपयं गतं।

इदाणिं मीसे भण्णइ—"मासादी मीस दसहि सपदं तु"। कप्पट्ठे दिट्ठे लहुगो, अट्ठुप्पत्तीए मीसे लहुगो चेव।

महल्लेण दिट्ठे—संकाए मासलहुं, णिस्संके मासगुरुं। भोतियाए चउलहुं, घाडिए ङ्का, णादिसु र्फ़ु। आरक्खिए र्फा। सत्थवाहे छेदो। सिट्ठिम्मि मूलं। अमच्चेण अणवट्ठो। रायाणो पारंचियं।

[1] गा० ४७२७।

खेत्तओ इमं – णिवेसण वाडग साही गाममज्झे गामद्दारे गामवहिं उज्जाणे उज्जाणसीमंतरे सीमाए सीममतिक्कंते, एतेसु जहासंखं मासलहुगादि पारंचियावसाणं देयं।

कालओ मासलहुगादि दसहिं दिणेहिं पारंचियं।

भावतो दसमवारं गेण्हंतस्स मासलहुगादि पारंचियं भवति। गामस्संतो गयं।

एमेव य गामवहिया वि पायच्छित्तं भाणियव्वं। दिट्ठे संकादियं सव्वं। तं पुण सत्थाण वासट्ठाणे वा जं वा ठाणं लोगो जत्ताए गच्छति ॥४७३०॥

वहिया गेण्हणे पच्छित्तस्स अतिद्देसं करेति –

अंतो आवणमादी, गहणे जा वणिया सवित्थारा।
वहिया उ अण्णगहणे, पडितम्मी होंति सच्चेव ॥४७३१॥

अंतो णगरादीणं आवणा वा आवणवज्जे वा अदुगुंछियं दुगुंछियं वा अपरिग्गहियं परिग्गहपडितं गेण्हमाणस्स जं पच्छित्तं भणियं, वहिया वि गामादीणं अण्णग्गहणे पडियं गेण्हंतस्स सोवी, सच्चेव अपरिसेसा दट्ठव्वा ॥४७३१॥ वसमाणे गतं।

इदाणि अण्णग्गहणं "[1]अडवीए" जं तं भण्णति –

कोट्टगमादिसु रन्ने, एमेव जणो उ जत्थ पुंजेति।
तहियं पुण वच्चंते, चतुपदभयणा तु छद्दिसगा ॥४७३२॥

कोट्टगं णाम जहा पुलिंदकोट्टं चोरपल्लिकोट्टं वा। इह पुण अहिगारो जत्थ लोगो अडवीए पउरफलाए गंतुं फलाइं सोसेति तं कोट्टगं भण्णति, पच्छा भंडीए वहिलएहि य आणेंति, आदिसद्दातो पुलिंद-कोट्टादिसु जत्थ जणो पुंजेति। एतेसु वि गहणपच्छित्तं एमेव दट्ठव्वं जहा वसमाणे, णवरं इमो विससो – तत्थ गच्छंतस्स चउहिं पदेहिं छद्दिसिया छसय छद्दिसिया भंगे रयणा कायव्वा ॥४७३२॥

वच्चंतस्स य [2]भेदा, दिया य राओ य पंथ उप्पंथे।
उवउत्त अणुवउत्ते, सालंब तहा णिरालंबे ॥४७३३॥

वच्चंतस्स भंगरयणभेदा इमे – दिया गच्छति पंथेण उवउत्तो सालंवो।

एतेहिं चउहिं पदेहिं अट्ठ भंगा भवंति।

दिया पंथेण उवउत्तो णिरालंवो १।

दिया पंथेण उवउत्तो सालंवो २।

दिया पंथेण अणुवउत्तो सालंवो ३।

दिया पंथेण अणुवउत्तो णिरालंवो ४।

एवं उप्पहेण वि चउरो। एवं दिवसतो अट्ठ भंगा। एवं चेव रातीए वि अट्ठ भंगा। एवं सपडिपक्खवयणेसु सोलस भंगा ॥४७३३॥

---

१ गा० ४७२५। २ दोसा इति वृहत्कल्पे गा० ८७३।

अहवा – इमा भंगरयणविही –

अट्ठग चउक्क दुग, एक्कगं च लहुगा य होंति गुरुगा य ।
सुद्धा एगंतरिता, पढमरहियसेसगा तिण्णि ॥४७३४॥

अट्ठवारा दिवसं गहणं करेंतेण अहो लहुग-अक्खणिक्खेवं कारेंतेहिं लता ठावेयव्वा ।

तस्स अहो अण्णे अट्ठ रातीग्गहणं करेंतेहिं गुरुग-अक्खणिक्खेवा कायव्वा । एते सोलस वितियपंतीए ।

कहं ? भन्नइ –

चउरो चउरो लहुगुरुगा अक्खणिक्खेवा कायव्वा जाव सोलस ।

ततियपंतीए दो दो लहुगुरु अक्खणिक्खेवा कायव्वा जाव सोलस ।

चउत्थपंतीए एक्केक्कं लहु गुरुं अक्खणिक्खेवं करेज्जा जाव सोलस ।

अस्यैव प्रदर्शनार्थं "सुद्धा एगंतरिता" पच्छद्धं ।

पढमाए पंतीए सोलसोवरि सुद्धरहियत्तणतो एगतरं ण लब्भति । "सेसग" त्ति वितिय-ततिय-चउत्था पंती, एयाओ तिण्णि, एतासु सुद्धा एगंतरिया लब्भंति ।

कहं ? भण्णति –

वितियपंतीए एक्केण चउक्केण अंतरिता पुणो सुद्धा चत्तारि लब्भंति ।

एवं ततियपंतीए एक्केक्केण असुद्धदुगेण अंतरिता सुद्धा लब्भंति ।

चउत्थपंतीए एगेण चेव सुद्धेण अंतरिता सुद्धा लब्भंति ।

अहवा – "सुद्धा एगंतरिता" एयं पच्छद्धं सुद्धभंगप्पदरिसणत्थं भण्णति ।

पढमभंगरहिया जेण सो सव्वहा सुद्धो लब्भति ।

सेसा जे तिण्णि एगंतरसुद्धा ततिय-पंचम-सत्तमा ते अण्णपदेसु केसु वि असुद्धा । गाढकार्यावलंबनत्वात् । एवं वितियट्ठगे वि एगंतरा सुद्धा, सेसा असुद्धा । आलंबनाभावात् ।

विय-तिय-पंचम-णवमे य एक्कं सट्ठाणं पच्छित्तं भवति । सेसेसु एक्कारससु भंगेसु संजोग पच्छित्तं ॥४७३४॥

तं च इमं पच्छित्तं –

लहुगा य णिरालंबे, दिवसतो रत्तिं हवंति चतुगुरुगा ।
लहुगो य उप्पहेणं, रीयादी चेवऽणुवउत्तो ॥४७३५॥

दिवसतो जत्थ जत्थ णिरालंबो तत्थ तत्थ ड्ड ।

रातो जत्थ जत्थ णिरालंबो तत्थ तत्थ ड्डा ।

दिवसतो जत्थ जत्थ उप्पहेणं तत्थ तत्थ मासलहुं ।

दिवसतो चेव अणुवउत्तो जत्थ जत्थ तत्थ वि मासलहुं ।

अणुवउत्तो य इरियासमितीए जं आवज्जति तं च पावति । अणुवउत्तस्स उप्पहेसु रातो मासगुरुं ।

अहवा—

दिय-रातो लहु-गुरुगा, आणा चउ गुरुग लहुग लहुगा य ।
संजम-आयविराहण, संजमे आरोवणा इणमो ॥४७३६॥

असुद्धेसु भंगेसु दिवसतो ड्ढा । रातो ड्ढा । तित्थकराणं आणाभंगे ड्ढ । अणवत्थाए चउलहुं । मिच्छत्तं जणितस्स ड्ढ ।

विराहणा दुविधा—संयमविराहणा आयविराहणा च । तत्थ संजमविराहणे आरोवणपच्छित्तं ॥४७३६॥

तं च इमं—

छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुगा साहारे ।
संघट्टण परितावण, लहु गुरुगऽतिवायणे मूलं ॥४७३७॥ पूर्ववत्

एवं चेव कायपच्छित्तं दिवस-राईहिं विसेसिज्जति—

जहिं लहुगा तहिं गुरुगा, जहिं गुरुगा कालओ तहिं गुरुगा ।
छेदो य लहुग गुरुगो, काएसाऽऽरोवणा रत्तिं ॥४७३८॥

जत्थ दिवसतो कायपच्छित्तं मासलहुं चउलहुं छल्लहुं च, राओ ते चेव गुरुगा दायव्वा ।

जत्थ पुण एते मासादिगा गुरुगा तत्थ ते चेव मासगुरुगादिगा कालगुरू दायव्वा, छेदो जत्थ लहुगो तत्थ सो च्चेव गुरुगो कीरति, एवं राओ कायपच्छित्तं भणियं ॥४७३८॥

आयविराहणा इमा—

कंट-ऽट्ठि खाणु विज्जल, विसम दरी निण्ण मुच्छ-सूल-विसे ।
वाल-ऽच्छभल्ल-कोले, सिह-वग्घ-वराह-मेच्छित्थी ॥४७३९॥

तेणे देव-मणुस्से, पडिणीए एवमादि आताए ।
मास चउ छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥४७४०॥

कंटगेण विज्झति, अट्ठी हड्डं तेण दुक्खविज्जति, खाणु त्ति खाणुगेण दुक्खविज्जति, विज्जलं उदगचिक्खिल्लय तत्थ पडेज्जा, विसमं णिण्णमुण्णतं तत्थ वि पडिज्जा, दरी-कुसाराती तत्थ पादो विमोडिज्जति, णिण्णं-खड्डा तत्थ पडति, मुच्छा वा भवति, सूलं वा अणुधावति, विसेण वा सप्पादिणा वा वालेण वा खज्जति, रिच्छो अच्छभल्लो तेण वा विरंगिज्जति, कोलसुणगेण वा खज्जति, सीहेण वा, "वग्घो" त्ति विरुग्वो, "वराहो" सूकरो, मेच्छपुरिसो वा आहणेज्जति, इत्थी वा उवसग्गेज्जा ।

अहवा—मेच्छा इत्थी उवसग्गेज्जा, तण्णिमित्तं मेच्छपुरिसो पंतावेज्ज, तेणेहिं वा बंधणादि पावेज्ज, देवता वा छलेज्ज, अण्णो वा कोइ पडिणीयादी पंतावेज्ज । एतेहिं ठाणेहिं आयविराहणा होज्ज ।

एतेसु सव्वेसु परितावणादिकेसु इमं पच्छित्तं—"मासचउ" गाहद्धं । "लहु" गुरु त्ति—चत्तारि मासा लहुगा गुरुगा, छच्च मासा लहुगा गुरुगा ।

इमं अणागाढादिसु पच्छित्तं ।

जति अणागाढं परिताविज्जति तो ङ्क । अहागाढं तो ङ्का । अह दुक्खादुक्खं भवति फ़ु । अह मुच्छा भवति फ़ा । किच्छपाणे छे० । किच्छुस्सासे मू० । समुग्घाते अणवट्ठो । अह कालगते पारंचियं ॥४७४०॥

इमं आयविराहणाए दिवसरातिणिप्फण्णं—

कंट-ऽट्ठिमातिएहिं, दिवसतो सव्वत्थ चउगुरू होंति ।
रत्तिं पुण कालगुरू, जत्थ य अण्णत्थ आतवधो ॥४७४१॥

उच्चारितसिद्धा ॥४७४१॥

पोरिसिणासण परिताव ठावण तेणे य देह उवहिगतं ।
पंतादेवतछलणे, मणुस्सपडिणीयवहणं वा ॥४७४२॥

तण्णिमित्तं सुत्तपोरिसिं ण करेति मासलहुं, अह अत्थ पोरिसिं ण करेति तो मासगुरुं, सुत्तं णासेति ङ्क । अत्थं णासेइ ङ्का । परितावण त्ति गतार्थं ।

"ठवण" त्ति—अणाहारं ठवेति ङ्क, आहारं ठवेति ङ्का, परित्तं ठवेति ङ्क, अणंते ङ्का, अस्नेहं च ठवेति ङ्क, सस्नेहं ङ्का । जइ मिच्छो मारेति तो पारंचियं । अह एक्को ओहावति मूलं, दोसु अवट्ठं, तिसु पारंचियं । "तेण" त्ति—उवहीतेणा सरीरतेणा वा, उवहीए उवहिणिप्फण्णं भाणियव्वं, सरीरतेणएहिं जति एक्को साधू हीरति तो मूलं, दोहिं अणवट्ठो, तिहिं पारंचितो । पंता देवता छलेति चउगुरुं । पडिणीतो इत्थि पुरिसो णपुंसगो वा हणति ङ्का । एसा आयविराधणा ॥४७४२॥

एवं ता असहाए, सहायगमणे इमे भवे दोसा ।

पुव्वद्धं कंठं । ते इमे सहाया—

जय अजय इत्थि पंडो, असंजती संजतीहिं च ॥४७४३॥

तत्थ जे ते "[1]जया" ते इमे—

संविग्गमसंविग्गा, गीता ते चेव होंति उ अगीता ।
लहुगा दोहिं विसिट्ठा, तेहि समं रत्ति गुरुगा उ ॥४७४४॥

संविग्गा गीयत्था, असंविग्गा गीयत्था ।

संविग्गा अगीयत्था, असंविग्गा अगीयत्था ।

एतेसिं पच्छित्तं पच्छद्धेण—

संविग्गेहिं गीयत्थेहिं जति जाति दिवसतो तो चउलहु, उभयलहुं ।

असंविग्गेहिं गीयत्थेहिं समं जति जाति तो चउलहुं तवलहुं कालगुरुं ।

एवं संविग्गेहिं अगीयत्थेहिं चउलहुं काललहुं तवगुरुं ।

असंविग्गेहिं अगीयत्थेहिं चउलहुगं उभयगुरुगं । एवं दिवसतो भणितं ।

रत्ति तेहिं चेव समं गच्छंतस्स चउगुरुगा, एवं चेव तवकालेहिं विसेसियव्वा ॥४७४४॥

---

१ गा० ४७४१ । २ गा० ४७४३ ।

"अजय" त्ति, ते इमे –

अस्संजय-लिंगीहिं तु, पुरुसागिइ पंडएहिं य दिवा उ ।

अस्सोय सोय छल्लहु, ते चेव य रत्ति गुरुगा तु ॥४७४५॥

असंजता गिहिलिंगी, वा लिंगमेषां विद्यत इति लिंगिनः—अन्यपाषंडिन इत्यर्थः । ते गिहत्था सोयवादी असोयवादी, लिंगिणो वि असोयवादी सोयवादी ।

जइ गिहीहिं असोयवादीहिं समं वच्चति फ़ु उभयलहुं, तेहिं चेव सोयवादीहिं समं वच्चति फ़ु कालगुरुं तवलहुं ।

अण्णलिंगीएहिं असोयवादीहिं समं वच्चति छल्लहुआ तवगुरुगा काललहुआ, तेहिं चेव सोयवादीहिं छल्लहु दोहिं वि गुरुगं ।

इदाणिं णपुंसगा ते दुविधा – पुरिसणेवत्थिया य इत्थिणेवत्थिया य ।

जे ते पुरिसणेवत्थिया ते गिहत्था लिंगी वा, पुणो असोयसोयभेदेणं भिंदियव्वा, एतेहिं सह दिवसतो गच्छतस्स पच्छित्तं जहा असंजयलिंगपुरिसाणं भणियं तहा भाणियव्वं । एवं दिवसतो भणियं ।

रत्ति छग्गुरुआ तवकालविसेसिया, एवं चेव भाणियव्वा ॥४७४५॥

इदाणिं "[1]इत्थीसु" भण्णइ –

पासंडिणित्थि पंडे, इत्थीवेसेसु दिवसतो छेदो ।

तेहिं चिय णिसि मूलं, दिय-रत्तिं दुगं तु समणीहिं ॥४७४६॥

परिव्वाइयादिसु पासंडिणित्थीसु गिहत्थीसु य पंडे य इत्थिवेसधारगे एतेहिं दिवसतो गच्छंतस्स छेदो भवति, एतेहिं चेव सह गच्छंतो णिसि मूलं भवति । समणीहिं समं जति दिवसतो जाति तो अणवट्ठो, अह रातो समणीहिं समं गच्छति तो पारंचितो ॥४७४६॥

अहवा –

अहवा समणा-ऽसंजय,-अस्संजति-संजतीहि दियरातो ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥४७४७॥

अवरकल्पः – समणेहिं सद्धिं दिवा वच्चति ङ्क । रातो ङ्का । सामण्णेण अस्संजएण सह दिवसतो गच्छति फ़ु । रातो फ़ा । सामण्णेण असंजतीहिं सह दिवसतो गच्छति छेओ । रत्ति मूलं । संजतीहिं समं दिवसतो गच्छति अणवट्ठो । रत्ति पारंचितो ॥४७४७॥ अडवीए त्ति गतं । अण्णगहणं गतं ।

इदाणिं "[2]तत्थ गहणं" ति दारं । तत्थ गहणं णाम जे ते रुक्खा जेसु तं पलंबं उप्पज्जति तत्थेव तं पडियं गेण्हति ।

तस्सिमो अतिदेसो—

जह चेव अण्णगहणेऽरन्ने गमणादि वण्णियं एयं ।

तत्थ गहणे वि एवं, पडियं जं होति अच्चित्ते ॥४७४८॥

अण्णगहणे कोट्टादिसु भंगविगप्पेण जा सोधी दोसा य जे वण्णिया, तत्थ गहणे वि हेट्ठा पडितं अचित्तं आदि काउं सच्चेव सोधी दोसा य अपरिसेसा वण्णेयव्वा जाव समणीहिं सह गमणं ति ॥४७४८॥

---

१ गा० ४७४३ । २ गा० ४७२४ ।

एवमंतिदेसं काउं ति अपरितुष्टः आचार्यः विशेषज्ञापनार्थं वा इदमाह—

तत्थ गहणं पि दुविहं, परिग्गहमपरिग्गहं दुविधभेयं ।
दिट्ठादपरिग्गहिते, परिग्गहिते अणुग्गहं कोति ॥४७४९॥

तत्थ गहणं दुविधं—सपरिग्गह अपरिग्गहं । "दुविधभेद" ति – पुणो एक्केक्को भेदो सचित्ता-चित्तभेदेण भिंदियव्वो । "दिट्ठादिअपरिग्गहिए" त्ति – जं तं अपरिग्गहियं तं अचित्तं तं गेण्हतस्स जा हेट्ठा पारोवणा भणिता "[1]दिट्ठे संकाभोतिगादि" सा सव्वा भाणियव्वा । जं पि अ।रिग्गहं सचित्तं तत्थ वि "दिट्ठे" संकाभोतिगादि तं चेव ।

णवरं – कायपच्छित्तं परित्ते लहुगा, अणंते गुरुगा । एतेसु चेव सपरिग्गहेसु "कोति" त्ति-भद्दो अणुग्गहं करेज्ज – अणुग्गहं मन्यत इत्यर्थः, पंतो पुणो पंतावणादि करेज्ज ॥४७४९॥

सपरिग्गहो इमेसिं –

तिविह परिग्गह दिव्वे, चउलहु चउगुरुग छल्लहुक्कोसा ।
अहवा छल्लहुग च्चिय, अंतगुरू तिविहदव्वम्मि ॥४७५०॥

जं तं सपरिग्गहं तं तिहिं परिग्गहियं होज्जा – देवेहिं माणुसेहिं तिरिएहिं ।

जं तं देवेहिं तं तिविहं होज्जा – जहण्णं मज्झिमं उक्कोसं ।

जहण्णं वाणमंतरेहिं, मज्झिमं भवणवासिजोतिएहिं, उक्कोसं वेमाणिएहिं ।

दिव्वं जहण्णं वाणमंतरपरिग्गहियं गेण्हति ङ्क । मज्झिमं परिग्गहं (हियं) गेण्हति ङ्का । उक्कोसं परिग्गहियं गेण्हति छल्लहुअं ।

अधवा – तिसु छल्लहुअं तवकालविसेसियं, उक्कोसएहिं दोहिं वि गुरुअं कायव्वं ॥४७५०॥ दिव्वं गतं ।

इदाणिं माणुस्सं –

सम्मेयर सम्म दुहा, सम्मे लिंगि लहुगुरुगो गिहिएसु ।
मिच्छा लिंगि गिही वा, पागय-लिंगीसु चउ लहुगा ॥४७५१॥

जं तं माणुस्सं परिग्गहियं तं दुविहं – सम्मद्दिट्ठिपरिग्गहियं, "इयरे" त्ति मिच्छद्दिट्ठिपरिग्गहियं वा । "सम्म दुह" त्ति जं तं सम्मद्दिट्ठिपरिग्गहियं तं दुविधं – "सम्मत्तिंगि" त्ति, सावएहिं लिंगत्थएहिं य । लिंगत्थपरिग्गहिए मासलहु, सावगपरिग्गहिए मासगुरु । जं तं मिच्छादिट्ठिपरिग्गहियं तं चउव्विहं, तं जहा – अण्णपासंडिपरिग्गहियं, गिहत्थेहि य पायावच्चपरिग्गहियं, कोडुंबियपरिग्गहं, डंडियपरिग्गहं । एत्थ गिहीहिं पागतेहिं अण्णपासंडियलिंगीहिं य चउलहुया पच्छित्तं ॥४७५१॥

गुरुगा पुण कोडुंबे, छल्लहुगा होंति डंडिगारामे ।
तिरिया उ दुट्ठ-ऽदुट्ठा, दुट्ठे गुरुगेतरे लहुगा ॥४७५२॥

कोडुंबियपरिग्गहे ङ्का । डंडियपरिग्गहे फ्रुं । माणुसपरिग्गहं गतं ।

---

[1] गा० ४७२७ ।

इदाणिं तिरियपरिग्गहं दुविहं – दुट्ठेहिं य अदुट्ठेहिं य । अहिमुणया अणिहुयहत्थिमःदि दुट्ठेसु गुरुगा, इयर त्ति अदुट्ठा, तेसु लहुगा ।।४७५२।। तिरियपरिग्गहियं गतं ।

"[1]परिग्गहेणुग्गहं कोइ" त्ति अस्य व्याख्या –

भद्देतरसुर-मणुया, भद्दो घिप्पंति दट्ठुणं भणति ।
अण्णे वि साहु गेण्हसु, पंतो छण्हेगतर कुज्जा ।।४७५३।।

जेसिं सो परिग्गहो ते भद्दता वा होज्ज, इयरा वा पंता वा ।

जत्थ जे सुरा वा मणुया वा जेहिं तं परिग्गहियं भद्दगेहिं ते तं घेप्पंतं दट्ठुं भणेज्ज – "लट्ठं कयं जं ते पलंबगा गहिया, अम्हे मो तारिता, भो हे साहू ! अण्णे वि पज्जत्तिए गेण्हेसु, पुणो वा गेण्हेज्जह" ।

जो पुण पंतो सो इमेसिं छण्हं भेदाणं एगतरं कुज्जा ।।४७५३।।

[1]पडिसेहणा [2]खरंटण, [3]उवालंभो [4]पंतावणा [5]य उवहिम्मि ।
[6]गेण्हण-कड्ढण-ववहार-पच्छकड्ढाह निव्विसए ।।४७५४।।

पुव्वद्धेण पंचपदा गहिता । गेण्हणादी सव्वं पच्छद्धं छट्ठो भेदो ।।४७५४।।

तत्थ "[2]पडिसेहो" इमो –

जं गहितं तं गहितं, वितियं मा गेण्ह हरति वा गहितं ।
जायसु व ममं कज्जे, मा गेण्ह सयं तु पडिसेहो ।।४७५५।।

उच्चारियसिद्धा ।।४७५५।।

"[3]खरंटणा" इमा –

धी मुंडिओ दुरप्पा, धिरत्थु ते एरिसस्स धम्मस्स ।
अण्णस्स वा वि लब्भसि, मुक्को सि खरंटणा एसा ।।४७५६।।

मए मुक्को, अण्णो ते कोइ सिक्खवणं काहिति, एवमादिणिप्पिवासा खरंटणा ।।४७५६।।

इमो सप्पिवासो "[4]उवालंभो" –

आमफलाइ न कप्पंति, तुज्झ मा सेसए वि दूसेहिं ।
मा य सकज्जे मुज्झसु, एमादी हो उवालंभो ।।४७५७।।

पंतावणा [5]उवधिहरणं च पसिद्धा, पच्छित्तेण या सह भणिहिति ।

एतेसु पंचसु वि पदेसु पच्छित्तं भणाति –

लहुगा अणुग्गहम्मी, अप्पत्तिय गुरुग तीसु ठाणेसु ।
पंतावण चउगुरुगा, अप्पवहुम्मी हिते मूलं ।।४७५८।।

---

१ गा० ४७४९ । २ गा० ४७५४ । ३ गा० ४७५४ । ४ गा० ४७५४ । ५ गा० ४७५४ ।

जस्स सो आरामो पडिग्गहे सो जति चिंतेति-अणुग्गहो जं मे साधवो पलंबे गेण्हंति। एत्थ अणुग्गहे चउलहुगा। अह अप्पत्तियं करेति तुण्हिक्को य अच्छति ताव चउगुरुं।

अप्पत्तिएण वा तयो पगारा करेज्ज – पडिसेह, खरंटा, उवालंभे। एतेसु तिसु ठाणेसु पत्तेयं चउगुरुगा। सामण्णेणं पंतावणे चउगुरुगा, अप्पे वा बहुम्मि वा उवहिम्मि हरिते मूलं भवति। अहवा – उवहि-णिप्फण्णं ॥४७५८॥

परितावणा य पोरिसि, ठवणा [1]महत मुच्छ किच्छ कालगते।
मास चउ छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥४७५९॥

पंतावियस्स अणागाढपरितावणा गाढपरितावणा।

अहवा – पंतावितो परितावणाभिभूओ सुत्तपोरिसिं ण करेति मासलहुं। अत्थपोरिसिं न करेति मासगुरु। सुत्तपोरिसिं अकरेमाणा सुत्तं णासिति ङ्क। अत्थं णासिति ङ्का। अणाहारं ठवेति ङ्क। आहारिमे ङ्क। परित्ते ङ्क। अणंते ङ्का। फासुए ङ्क। अफासुए ङ्का। असिणेहे ङ्क। सिणिहे ङ्का। महादुक्खे र्फु। मुच्छाए र्फा। किच्छपाणे छेदो। किच्छुस्सासे मूलं। संमोहते अणवट्ठप्पो। कालगए पारंचियं ॥४७५९॥

सा परितावणा इमेहिं तालियस्स भवति –

[2]कर पाद डंडमादिहिं, पंतावणे गाढमादि जा चरिमं।
अप्पो उ अहाजातो, सव्वो दुविहो वि जं च विणा ॥४७६०॥

हत्थेण वा पादेण वा दंडेण आदिग्गहणेण लतादिसु पंतावेज्जा। पंतावियस्स अणागाढादिविकप्पा भवति। तेसु य चउलहुगादि जाव चरिमं पच्छित्तं भवति। तं च अणंतरमेव भणियं।

"[3]अप्पबहुम्मि हिते" त्ति अस्य व्याख्या – अप्पो उ पच्छद्धं।

अप्पोवधी को? एसा – पुच्छा। उत्तरं – अहाजातो।

कतिरूवो?

अत्रोच्यते – रयहरणं, दो णिसिज्जाओ, मुहपोत्तिया, चोलपट्टो य।

बहु केरिसो? सव्वो त्ति चोद्दसविहो।

अहवा दुविधो वि – ओहितो उवग्गहितो य।

चोदगाह – "कहं उवधिणिप्फण्णं, कहं वा मूलं"?

अत्रोच्यते – पमादतो उवधिणिप्फण्णं, अह दप्पतो पलंबे गेण्हंतस्स सव्वोपकरणावहारो तो मूलं भवति।

अहवा – सव्वोवकरणे हिते णियमा परलिंगं भवति, तेण मूलं भवतीत्यर्थः। जं च एतेण उवधिणा विणा काहिति पाविहिंति वा ॥४७६०॥

किं च तं? उच्यते –

तणगहणे झुसिरेतर, अग्गी सट्ठाण अभिणवे जं च।
एसणपेल्लण [2]गमणे, काए सुय मरण तोहाणे ॥४७६१॥

---

१ ठवणाशब्दस्याग्रे 'फासुगसिणेह' इत्यधिकं दृश्यते केषुचिद् भाष्यपुस्तकेषु। २ कर-पाद-दंड मादिसु, इति बृहत्कल्पे गा० ९०० । ३ गहणे इति बृहत्कल्पे गा० ९०३ ।

सीताभिभूता तणं सेवंति झुसिरे ङ्क। इतरे त्ति – अज्झुसिरे सेवंते मासलहुं। अग्गी सेवंति तीए सट्ठाण चउलहुं। अह अहिणवं अग्गिं जणेंति तो मूलं। जं च अग्गिसमारंभे अणेगेसि जीवाणं विराहणं करेंति तण्णिप्फण्णं च। "एसणं पेल्लइ" त्ति उवकरणाभावे उग्गमुप्पायणादोसेण जेण दुट्ठं गेण्हति तण्णिप्फण्णं च। "गमणे" त्ति उवहिणा विणा जति सीतादीहिं परितावित्रज्जमाणा अण्णतित्थिएसु एक्के मूलं, दोहिं अणवट्ठो, तिहिं चरिमं। "काए" त्ति अग्गिसेवणा जं पुढवादिकाए विराहेंति तण्णिप्फण्णं।

अहवा – "काए" त्ति अणेसणादिसु जं काए व हंति तण्णिप्फण्णं। "सुत्ते" त्ति सुत्तं ण करेति, अत्थं ण करेति, सुत्तं णासेति, अत्थं णासेति पच्छित्तं पूर्ववत्। उवहिणा विणा जति एक्को मरति तहावि चरिमं। उवकरणाभावे जति एक्को ओहावति मूलं, दोहिं अणवट्ठो, तिहिं पारंचिओ ॥४७६२॥ उवहि त्ति गतं।

इदाणिं "[1]गेण्हण कड्ढण" पच्छद्धस्स इमा विभासा –

गेण्हणे गुरुगा छम्मास कड्ढणे छेदो होति ववहारे।
पच्छाकडम्मि मूलं, उड्डहण विरुंगणे णवमं ॥४७६२॥

पलंबे गेण्हंतो गहितो तस्स चउगुरुगा, उवकरणं हत्थे वा घेत्तुं कड्ढितो ताहे छग्गुरुं, करणे आरोविते ववहारे य पयट्टे छेदो। "पच्छाकडो" त्ति जितो तम्मि मूलं, तिग-चउक्क-चच्चरेसु "एस-पलंबहारि" त्ति उड्डाहो, हत्थे वा पादे वा विरुंगिते, एतेसु उड्डाहण-विरुंगितेसु दोसु वि अणवट्ठो ॥४७६२॥

उद्दावण-णिव्विसए, एगमणेगे पदोस पारंची।
अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारंचितो होति ॥४७६३॥

जति उद्दविओ णिव्विसओ वा आणत्तो एतेसु दोसु वि पारंचियं। "अणवट्ठप्पो" त्ति पच्छद्धं गतार्थं। अधवा – एगस्स अणेगाण वा जति पदोसं जाति तो पारंचितो ॥४७६३॥

इमं परिग्गहविसेसेण पच्छित्तविसेसं दरिसेति –

आराम मोल्लकीते, परउत्थिय भोइएण गामेण।
वणि-घड-कुडुंब-रन्ना, परिग्गहे चेव भद्दितरा ॥४७६४॥

आरामो मोल्लेण कीओ, सो पुण केणं कीतो होज्जा ?

इमेहिं – कुडुंबिणा परउत्थिएण वा भोइएण वा गामेण वा वणिएण वा 'घड' त्ति गोट्ठीए आरक्खिएण वा रण्णा वा ॥४७६४॥

एतेसु उ गेण्हंते, पच्छित्त इमं तु होति णायव्वं।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥४७६५॥

इत्थ जति गिण्हति तो इमं पच्छित्तं – जहासंखं – [2] ° °, ° ° । ८ ° ° ° । ° ° ८ । मूलं अणवट्ठो पारंचितो त्ति। एत्थ वि ते चेव भद्देतरदोसा पडिसेहणादिया य ॥४७६५॥ रुक्खाहो जं पडितं सचित्तं च तं भणियं।

---

१ गा० ४७५४। २–४ ल० ४ गु० ६ ल० ६ गु०।

इदाणिं भूमिट्ठिओ जं हत्थेण पावति तं गेण्हंतस्स भण्णति –

सजियपतिट्ठिए लहुओ, सजिए लहुगा य जत्तिया गासा ।
गुरुगा होंति अणंते, हत्थप्पत्तं तु गेण्हंते ॥४७६६॥

सचित्तपइट्ठितं अचित्तं फलं जइ गेण्हति तो मासलहुं, अचित्ते जत्तिया "गासा" करेति तत्तिया चेव मासलहु ।

जति पुण सचित्ते अचित्ते वा पतिट्ठितं सचित्तं गेण्हति तो चउलहुगा, तत्थ वि जत्तिया गासा करेति तत्तिया चउलहू । एवं परित्ते । अणंते एते चेव गुरुगा पच्छित्ता । भूमिट्ठितो रुक्खट्ठियं गेण्हंतो एवं भणितो, एत्थ वि दिट्ठे संकाभोतिगादी सव्वे दोसा । तिविहपरिग्गहे दोसा य वच्चंतस्स य जे दोसा जाव आराममोल्लकीए त्ति सव्वं भाणियव्वं ॥४७६६॥

एमेव य [1]सच्चित्ते, छुभणा आरुभणा य पडणा य ।
जं एत्थं णाणत्तं, तमहं वोच्छं समासेणं ॥४७६७॥

प्रथमपातो गतार्थः । छुभणा, आरुभणा, पडणा य तिण्णि वि मूलदारा उवण्णत्था । पच्छद्धं कंठं ।

तं सच्चित्तं दुविहं, पडियापडियं पुणो परित्तितरं ।
पडियासति यऽपावेंते, छुब्भति कट्ठातिए उवरिं ॥४७६८॥

पुव्वद्धं गतार्थं । एत्थ "[2]सचित्त" मिति मूलदारं गतं । इदाणिं "[3]छुभण" त्ति – "पडियासति" पच्छद्धं । भूमिपडिया पलंबस्स असति भूमिट्ठितो रुक्खट्ठितं पलंबादि जाहे ण पावति ताहे पलंबपाडणट्ठा कट्ठादी उवरिं छुब्भति । तं कट्ठमादी ठावेंतस्स ⁝ ⁝ । छुभमाणस्स वि ङ्क ॥४७६८॥

छुहमाणे पंचकिरिया, पुढवीमादी तसेसु तिसु चरिमं ।
तं काय परिच्चयती, आवडणे अप्पगं चेव ॥४७६९॥

तं कट्ठमादिखिवमाणो पंचकिरियाहिं पुट्ठो, तं जहा – कातियाए अधिकरणियाए पादोसियाए परितावणियाए पाणातिवातकिरियाए य । संपत्तीओ वा मा वा होउ तहावि पंचकिरिओ । पुढविकायादिसु तसावसाणेसु य जीवेसु संघट्टाए परितावणाए उद्दवणाए । एतेसु तिसु ठाणेसु मासादी आढत्तं मूलं पावति, तिसु पंचिदिएसु चरिमं भवति, कट्ठादि खिवंतो तं वणस्सतिकायं परिच्चयति, सो य लगुडादी "आवडणे" त्ति – पच्चुप्फिडियणियत्तो अप्पणो चेव आपडति, एत्थ आयविराहणा ॥४७६९॥

कहं पुण तत्थ छक्कायविराहणा ? उच्यते –

पावंते पत्तम्मि य, पुणो पडंते य भूमिपत्ते य ।
रय-वास-विज्जुमादी, वात-फले मच्छिगादि तसे ॥४७७०॥

पावंति त्ति-हत्थमुत्तं जाव रुक्खं ण पावति एत्थं अंतरा तं पावंतं – गच्छंतमित्यर्थः । छण्हं कायाणं विराहकं । "पत्तम्मि" य रुक्खं जता पत्तं एत्थ वि छक्काया, पुणो पडंतं छक्काए विराधेति, भूमिपडिए वि छक्काया ।

---

१ गा० ४७२४ । २ गा० ४७२४ । ३ गा० ४७२४ ।

कहं ? उच्यते – एतेसु चउसु वि ठाणेसु इमे छक्काया संभवंति, "रम्रो" त्ति – पुढवि, वासे पडंते उदगं, विज्जुम्मि अगणिकाए विराहेति, वाउकायं विराहेति, रुक्खे "पलंबा" आहणंतस्स वणस्सती, तसा मच्छिगादिगा संभवंति ॥४७७०॥

एयं चेव पुणो फुडतरं दरिसिज्जति –

[1]रय-खोल्लमादिसु मही, वासोसा उदग अग्गि दवदड्ढे ।
तत्थेवऽणिल वणस्सति, तसा उ किमि-कीड-सउणादी ॥४७७१॥

खोल्लं कोत्थरं, तत्थ पुढविसंभवो, पण्णे तयाए वा वासं पडति, ओसे वा महियाए वा पडंतीए उदगविराहणा, विज्जूए वणदवादिणा वा दरदड्ढे अगणी, तत्थेवाणिलो त्ति वातं विराहेज्जा, सो चेव वणस्सती पत्तपुप्फफलादि वा, तसा मच्छिया किमिया वा कीडा वा सउणादि वा, एवं ताव अप्राप्ते कट्ठे विराहणा छण्हं कायाणं भणिता । पत्ते वि एवं चेव, पुणो पडंते एवं चेव, भूमिपत्ते वि एवं चेव ॥४७७१॥

जम्रो भण्णति –

अप्पत्ते जो उ गमो, सो चेव गमो पुणो पडंतम्मि ।
सो चेव य पडितम्मि वि, निक्कंपे चेव भूमीए ॥४७७२॥

उच्चरियसिद्धा । "णिक्कंपे चेव भूमीए" त्ति – जहिं ठितो ठाणे कट्ठं खिवंतो थामं बंधति, तत्थ वि पाताणं णिप्पगंपत्ते य पुढवादीणं छण्हं कायाणं विराहणा भवति, अधवा – तं कट्ठं पडितं णिप्पगंपाए भूमीए पुढवादीयाणं छण्हं कायाणं गाढतरं विराहणं करेति ॥४७७२॥

एवं दव्वतो छण्हं, विराहतो भावतो उ इहरा वि ।
चिज्जति हु घणं कम्मं, किरियागहणं भयणिमित्तं ॥४७७३॥

एतेण जहासंभवप्पगारेणं दव्वतो छण्हं पि कायाणं विराहगो भवति । भावओ पुण "इहर" त्ति – जति वि ण विराहेति तहावि छण्हं कायाणं विराहतो चेव भवति ।

कहं ? भावपाणातिवाततो निरपेक्षत्वात् । भावपाणातिवाएण य जहा घणं कम्मं चिज्जति ण तहा दव्वपाणातिवाएण, जम्रो "उच्चालयम्मि पादे" ॥४७७३॥

चोदगाह – "जं भणियं पंचहिं किरियाहिं पुट्ठो" त्ति । तं कहं ?
जति ण विराहेति तो परितावणिया पाणातिवायकिरिया य कुतो संभवंति ?
अह विराधेति तो एयाओ होज्जा, पादोसिया कहं होज्जा ?
आचार्य आह – किरियागहणं भयजणणत्थं कीरति ।

अहवा – जत्थ एगा किरिया तत्थ दिट्ठिवायनयसुहुमत्तणओ पंचकिरियाओ भवंति, अतो पंच किरियग्गहणे ण दोसा । एवं ताव संजमविराहणा भणिता ।

आयविराहणा कहं भवति ? उच्यते –

कुवणय पत्थर लेट्ठू, पुव्वुच्छूढे फले य पवडंते ।
पच्चुप्फिडणे आता, अचायामे य हत्थादी ॥४७७४॥

---

१ "खोल्लतयादिसु रम्रो, महिवासोस्साइ अग्गिदरदड्ढे" इति बृहत्कल्पे गा० ९१२ ।

अण्णेण केण ति पुव्वं पलंबत्थिणा "कुवण" त्ति लउडगो, सो खित्तो विलग्गो अच्छमाणो वाउपओगेण साधुणा वा जं खित्तं तेण संचालितो पडंतो साधुं विराहेज्जा, एवं पत्थरो लेठ्ठू फलं वा पडंतो।

अहवा – जं साधुणा घत्तियं तं खोडादिसु पच्चुप्फिडियं आहणेज्जा, बाहू वा अच्चायामेण दुक्खेज्जा। एवं आयविराहणा भवति ॥४७७४॥ "छुभणे" त्ति दारं गतं।

इयाणिं आरुभणत्ति दारं –

खिवणे वि अपावंतो, दूहति तहि कंट-विच्छु-अहिमाती।
पक्खि-तरच्छादि वहो, देवतखित्तादिकरणं च ॥४७७५॥

खित्ते वि कट्ठादिगे जहा पलंबा ण पडंति अपावेंतो अहे ठितो अलभंतो ताहे पलंबट्ठा तं रुक्खं [1]दुरुहति, तत्थ दुरुहंती जत्तियाते बाहुक्खेवेहिं चडति तत्तिया ०० । अणंते ते चेव चउगुरुगा। एवमादि कायविराहणा।

इमा आयविराहणा – तेहिं चडंतो कंटगेहिं विज्झति, विंछिएणं सप्पेण वा खज्जति, सेणमादि पक्खीण वा आहम्मति, तरच्छभादिणा वा खज्जति, देवता वा जस्स परिग्गहे सो रुक्खो सा रुट्ठा खित्त-चित्तादिकं करेज्जा ॥४७७५॥

अहवा –

तत्थेव य णिट्ठवणं, अंगेहि समोहतेहि छक्काता।
आरोवण सव्वे वा, गिल णपरितावणादीया ॥४७७६॥

सा देवता रुट्ठा तत्थ "णिट्ठवेति" त्ति मारेज्जा, अहवा सा देवता रुट्ठा पाडेज्जा, तत्थ से अणंतरं अंगं सव्वाणि वा समोहणंति – भज्जंतीत्यर्थः। जत्थ य पडति तत्थ छण्हं जीवणिकायाणं विराहणं करेज्जा, एत्थ कायारोवणा पूर्ववत्। परितावणादी य गिलाणारोवणा पूर्ववत् ॥४७७६॥ ओरोहणं त्ति दारं गतं।

इदाणिं "[2]पडण" त्ति दारं –

गेलण्णमरणमाती, जे दोसा होंति दुरुहमाणस्स।
ते चेव य सारुवणा, सविसेसा होंति पवडंते ॥४७७७॥

कताति सो तत्थ चडंतो पडेज्जा सयमेव, एत्थ य दोसा भाणियव्वा जे आरुहंतस्स पडणमादी भणिता। जा य आयसंजमविराधणा, जं च पच्छित्तं, तं सव्वं पडंते भाणियव्वं सविसेसं। सविसेसग्गहणं आरुभंतस्स दोसाणं संभवो भणितो, पडंते पुण णियमा गिलाणगा समुग्घायादिया दोसा ॥४७७७॥ पडण त्ति दारं गतं।

इदाणिं "[3]उवहि" त्ति दारं –

तंमूलमुवहिगहणं, पंतो साधूण चेव सव्वेसिं।
[4]तणगहण अग्गिपडिसेवणा य गेलण्णपडिगमणं ॥४७७८॥

जस्स सो परिग्गहे सो भणति – कीस मे अणापुच्छाए गेण्हति, तण्णिमित्तं जो पंतो सो तस्स वा साधुस्स अण्णस्स वा साधुस्स सव्वेसिं वा साधूण वा उवधिं गेण्हति, एत्थ से मूलं पच्छित्तं उवधिनिप्फण्णं वा।

---

१ गा० ४७२४ चू। २ गा० ४७२४। ३ गा० ४७२४। ४ तण अग्गि गहण परितावणा इति बृहत्कल्पे गा० ९१९।

अहवा – अहाजाते मूलं, सेसेसु उक्कोसए (आयं बिलं) ङ्क, मज्झिमए मासलहू, जहण्णे पणगं। एवं उवहिणा हडेणं तणाणि झुसिराणि य अज्झुसिराणि वा गेण्हेज्जा, सीतेण वा अभिभूतो अग्गिं सेवेज्जा, सीतेण वा अणागाढा वि परिताविज्जेज्ज, सीतेण वा अजीरंते गेलण्णं वा हवेज्ज, सीताभिभूता वा साधू पासत्थेसु अण्णतित्थिएसु वा गिहत्थेसु वा गमणं करेज्ज ॥४७७८॥

एतेसु इमं पच्छित्तं

तणगहण अग्गिसेवण, लहुगा गेलण्णे होंति ते चेव।
मूलं अणवट्ठप्पो, दुग-तिग-पारंचियं ठाणं ॥४७७९॥

अज्झुसिरतणेसु ः ः। ज्झुसिरे ः ः। परकडं अग्गिं सेवति ः ः। अधिणवं जणेति मूलं, अतितावेण वा तप्पंतो ण तप्पामि व त्ति काउं जत्तिए वारे हत्थं पादं वा संचालेति तत्तिया ः ः। कोई पुण धम्मसद्धाए अग्गिं ण सेवति त्ति परिताविज्जति, गिलाणो वा भवति तत्थ तं चेव पुव्वभणितं भाणियव्वं, सीतेण वा परिताविज्जंतो पासत्थादिसु जति जाति ङ्क, अहाछंदेसु ङ्क, जति ओहावति एक्को मूलं, दोहिं अणवट्ठो, तिसु पारंचित्तं। अण्णतित्थिएसु एवं चेव ॥४७७९॥ उवहित्ति गतं।

इदाणिं "[1]उड्डाहे" त्ति दारं – जे पडणादिया दारा पडिलोमेणं एते अपरिग्गहे सपरिग्गहे वा भवंति। जे पुण उवहिउड्डाहदारा एते दो वि णियमा सपरिग्गहे भवंति।

अस्यार्थस्य ज्ञापनार्थमिदमाह –

अपरिग्गहित पलंबे, अलभंतो समणजोगमुक्कधुरो।
रसगेही पडिबद्धो, इतरे गिण्हंतो उ गहितो ॥४७८०॥

"इयर" त्ति सपरिग्गहे पलंबे गेण्हंतो पलंबसामिणा गहिओ ॥४७८०॥

महजणजाणणता पुण, सिंघाडग-तिग-चउक्क-गामेसु।
उड्डहिऊण विसज्जिते, महजणणाते ततो मूलं ॥४७८१॥

गहितो समणो, महाजणस्स जाणाविओ। कहं ? उच्यते सिंघाडगठाणं णीतो, तिगं णीतो, चउक्कं वा, आरामाओ वा गामं णीतो, एतेसु महाजणट्ठाणेसु णीतो महाजणेण णातो, जेण गहितो तेण महाजणपुरतो उड्डाहिऊण विसज्जितो त्ति मुक्को, एत्थ से मूलं भवति ॥४७८१॥

इमो य दोसो –

एस तु पलंबहारी, सहोढ गहितो पलंबठाणेसु।
सेसाण वि [2]वाघातो, सविहोढ विलंबिओ एवं ॥४७८२॥

जेण सो पलंबे गेण्हंतो गहितो सो तं सिंघाडगादिठाणेसु णेउं भणति – "एस मए आरामे त्ति चोरो गहिओ पलंबे हरंतो, सहोढ त्ति सरिच्छो, एवं सो "सविहोढ" त्ति – लज्जावणिज्जं वेलंबिय इव विलवितो।

अहवा – त्रिकादिपु इतश्चेतश्च नीयमानो महाजनेन दृश्यमानः "किमिदं किमिदं ?" इति पृच्छकजनस्याख्यायमानो स लज्जमानमधोदृष्टिविवर्णविपण्णमुखो दृश्यमानो धिग् जनेनोच्यमानो स्वकृतेन

१ गा० ४७२४। २ छाघातो, इति पूनासत्कमूलभाष्यप्रतौ बृहत्कल्पे च गा० ९२३।

कर्मणा विलंवितो इव विलंवि, एवं विलंविते सेसाण वि साधूण जहुत्तकिरियट्ठियाणं सव्वे एते अकिरियट्टिया इति वाघातो भवति ॥४७८२॥ उड्डाहे त्ति दारं गतं ।

इदाणिं जं तं हेट्ठा भणियं – "[1]आणाणवत्थमिच्छत्तविराहणा कस्सऽगीयत्थे" त्ति, "[2]एयं उवरि भणिहिति" त्ति तं इदाणिं पत्तं । तत्थ पढमं "आणे" त्ति दारं – भगवता पडिसिद्धं "ण कप्पति" त्ति, पलंवं गेण्हंतेण आणाभंगो कतो । तम्मि य आणाभंगे चउगुरु पच्छित्तं ।

चोदगाह –

अवराहे लहुगतरो, आणाभंगम्मि गुरुतरो किह णु ।
आणाए च्चिय चरणं, तब्भंगे किं ण भग्गं तु ॥४७८३॥

"अवराहो" त्ति चरित्ताइयारो । तत्थ पच्छित्तं दंडो लहुतरो स्यात् ।

कहं ? उच्यते – [3]भावदव्वपलंबे मासलहुं, भावतो अभिण्णे परित्ते चउलहुं । इह य आणाभंगे चउगुरुं तो कहं णु एयं एवं भवति – "अवराहे लहुयतरो सति जीवोवघाए वि, आणाए पुण णत्थि जीवोवघातो" त्ति ।

आचार्याह – आणाए च्चिय चरणं ठियं, अतो तब्भंगे किं ण भग्गं ? किमिति परिप्रश्ने ।

आचार्यः शिष्यं पृच्छति – किं तत् वस्तु अस्ति यद् आज्ञाभंगे न भज्यते ? नास्त्येवेत्यर्थः । अत आज्ञायां गुरुतरो दंडो युक्तः, अवराधे लहुतरो इति ॥४७८३॥

इमस्स चेव अत्थस्स साहणट्ठा इमो दिट्ठंतो –

सोऊण य घोसणयं, अपरिहरंता विणास जह पत्ता ।
एवं अपरिहरंता, हितसव्वस्सा तु संसारे ॥४७८४॥

रण्णा घोसावियं सोतूण तं अपरिहरंता जहा धणविणासं सरीरविणासं च पत्ता, तहा तित्थकरणिसिद्धं अपरिहरंतो हियसंजमधणसव्वसारो संसारे दुक्खं पावेंति ॥४७८४॥

एस भद्दबाहुकया गाहा एतीए चेव भासकारो वक्खाणं करेति –

छप्पुरिसा मज्झ पुरे, जो आसादेज्ज ते अयाणंतो ।
तं डंडेमि अकंडे, सुणंतु पउरा ! जणवया ! य ॥४७८५॥

जहा कोति णरवती, सो छहिं पुरिसेहिं अण्णतरे कज्जे तोसितो इमेणऽत्थेण घोसणं करेति – मज्झं छ मणुसा सविसयपुरे अप्पणो इच्छाए विहरमाणा अणुवलद्धत्ता वि जो ते छिंदति वा पीडेति वा मारेति वा तस्स उग्गं डंडं करेमि, सुणंतु एयं पुण जणवया ॥४७८५॥

आगमिय परिहरंता, णिद्दोसा सेसगा अणिद्दोसा ।
जिणआणागमचारी, अदोस इतरे भवे दंडो ॥४७८६॥

ततो ते जणवया डंडभीता ते पुरिसे पयत्तेण आगमियपीडापरिहारकयबुद्धी जे तेसिं पीडं परिहरंति ते णिद्दोसा, जे पुण अणायारमंता ण परिहरंति ते रण्णा डंडिया ।

---

[1] गा० ४७२३ । [2] गा० ४७२३ चू० । [3] भावभिन्ने उभयभिन्ने च पलंबे इत्यपि पाठः ।

एवं रायाणो इव तित्थकरा, पुरमिव लोगो, पुरिसा इव छक्काया, घोसणा य छक्कायवज्जणं, पीडा इव संघट्टणादी, एवं जहुत्तं छक्कायवज्जणं जिणाणागमचारी कम्मवधणदंडदोसेण अदंडा, इतरे भवे पुणो पुणो सारीरमाणसदुक्खदंडेण डंडिता ॥४७८६॥ [1]आणे त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "अणवत्थ" त्ति दारं –

एगेण कयमकज्जं, करेति तप्पच्चया पुणो अण्णो ।
सायाबहुल परंपर, वोच्छेदो संजम-तवाणं ॥४७८७॥

एगेण कतो, "तप्पच्चय" त्ति एस आयरिओ सुअधरो वा एवं करेति णूणं णत्थेत्थ दोसा, अहं पि तप्पच्चयातो करेमि त्ति, ततो वि अण्णो करेति, एवं सोक्खपडिबद्धाणं जं संजमतवपदं पुव्वायरिएण वज्जितं तं पच्छिमेहिं अदिट्ठंति काउं वोच्छिण्णं चेव ॥४७८७॥

इदाणिं '[2]मिच्छ' त्ति दारं–

मिच्छत्ते संकादी, जहेव मोसं तहेव सेसं पि ।
मिच्छत्तथिरीकरणं, अब्भुवगम वारणमसारं ॥४७८८॥

अणभिग्गहियसम्ममिच्छाणं मिच्छत्तं जणेति, जहा एयं मोसं तहा सेसं पि सव्वं, एतेसिं मोसं संकं वा जणेति, आदिसद्दातो कंखादी भेदा दट्ठव्वा, मिच्छत्तवलियभावस्स सम्मत्ताभिमुहस्स पलंबगहणदरिसणातो मिच्छत्ते थिरं भावं जणेइ, "अब्भुवगमो" त्ति पव्वतिउकामस्स वा अणुव्वयाणि वा घेत्तुकामस्स सम्मद्दंसणं वा पडिवज्जितुकामस्स भावपरावत्तणं करेति, पवयणे सिढिलभावं जणेति, तं दट्ठुं सेहादि वा पडिगमणादि करेज्ज ।

अहवा – अब्भुवगमं संजमे करेंतस्स संजमासंजमे वा सम्मद्दंसणे वा वारणं करेज्ज – "मा एयं-पडिवज्जह, "असारं" ति – एयं पवयणं णिस्सारं, मए एत्थ इमं च इमं दिट्ठं" ति ॥४७८८॥ मिच्छत्ते त्ति गतं ।

इदाणिं "[3]विराहणे" त्ति दारं – सा दुविधा आयाए संजमे य । दो वि पुव्वभणिता, तहावि । इमो विसेसो भण्णति –

रसगेही पडिबद्धे, जिब्भादंडा अतिप्पमाणाणि ।
भोत्तूणऽजीरमाणे, विराहणा होति आताए ॥४७८९॥

पलंबरसगिद्धो "जिब्भादंडि" त्ति अतीवगिद्धे अतिप्पमाणे बहू भुत्ते य अजीरमाणा सज्जविसूतितादी करेज्ज, एवमादी आयविराहणा गता ॥४७८९॥

इदाणिं संजमविराहणा –

तं काय[1] परिच्चयती, णाणं[2] तह दंसणं[3] चरित्तं[4] च ।
बीयादी[5] पडिसेवग[6], लोगो जह तेहि सो पुट्ठो ॥४७९०॥

१ गा० ४७२३ द्वा० २ । २ गा० ४७२३ द्वा० । ३

"तं कायं परिच्चय" इति पुव्वद्धस्स इमा दो वि भासगाहाओ –

कायं परिच्चयंतो, सेसे काए वए य सो चयति ।
णाणी णाणुवदेसे, अवट्टमाणो उ अन्नाणी ॥४७६१॥

दंसणचरणा मूढस्स णत्थि समता वा णत्थि सम्मं तु ।
विरतीलक्खणचरणं, तदभावे णत्थि वा तं तु ॥४७६२॥

पलंबे गेण्हंतेण वणस्सतिकाओ परिच्चत्तो, वणस्सतिकायपरिच्चागेण सेसा वि काया परिच्चत्ता, एवं छक्कायपरिच्चागे पढमवयं परिच्चत्तं, तस्स य परिच्चागे सेसवया वि परिच्चत्ता । एवं अव्वती भवति । दारं ।

जहा अण्णाणी णाणाभावतो णाणुवदेसे ण वट्टति एवं णाणी वि णाणुवदेसे अवट्टंतो णिच्छयतो णाणफलाभावाओ अण्णाणी चेव । दारं ।

णाणाभावे मूढो भवति, मूढस्स य दंसणचरणा ण भवंति ।

अधवा – जेण जीवेसु समता णत्थि पलंबगहणातो तेण सम्मत्तं णत्थि । दारं ।

विरतिलक्खणं चारित्तं भणियं, तं च पलंबे गेण्हंतस्स लक्खणं ण भवति, "तदभावे" त्ति लक्खणाभावे चारित्तं णत्थि, वा ग्रहणात् अपवादे गृण्हतोऽपि चारित्रं भवत्येव । दारं ।

"[1]वीयाइ" त्ति फला बीजं भवंतीति कृत्वा बीजग्रहणं, आदिसद्दातो फलं पत्तं प्रवालं शाखा तया खंधं कंदो मूलमिति ॥४७६२॥

चोदगाह – "कीस वीयाती कता ? कीस मूलादी न कता ? सव्वो वणस्सति मूलादी भवति त्ति ।

आचार्याह –

पाएण बीयभोई, चोदगपुच्छाऽणुपुव्वि वा एसा ।
जोणीघाते वहता, तदादि वा होंति वणकाओ ॥४७६३॥

पाएण जणवयो वीयभोती, तेण कारणेणं वीयाई कतं । अधवा – समए तिविहा आणुपुव्वी – पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी । तिविधा वि अत्थतो परूविज्जति, ण दोसो । एस पच्छाणुपुव्वी गहिता ।

अधवा – बीयं जोणी, तम्मि घातिए सव्वे चेव मूलादी घातिता होंति ।

अहवा – सव्वेसिं वणस्सतिकातियाणं "तदादि" त्ति बीयं आदि ।

कहं ? जेण ततो पसूती, तेण कारणेण आदीए पडिसेहियाए सव्वं पडिसेहियं भवति त्ति काउं वीयादिगहणं कतं ॥४७६३॥

"[2]पडिसेवगलोगो जह तेहिं सो पुट्ठो" अस्य व्याख्या –

विरतिसहावं चरणं, बीयासेवी हु सेसघाती वि ।
असंजमेण लोगो, पुट्ठो जह सो वि हु तहेव ॥४७६४॥

---

१ गा० ४७६० । २ गा० ४७६० ।

जतो य एवं ततो जो बीए पडिसेवति सो नियमा मूलादि सेसघाई भवति, जो य ते घाएति तस्स विरतिसभावं चरणं तं ण भवति, जो य बीए पडिसेवति सो जहा लोगो असंजतो असंजतत्तणतो य अस्संजमेण पुट्ठो एवं सो वि तेहिं पलबेहिं आसेवितेहिं अस्संजमेण पुट्ठो, अतो पलंबपडिसेवगत्तणस्स पडिसेहो कज्जति ॥४७६४॥ विराहणे त्ति मूलदारं गतं ।

इदाणिं "[1]कस्सऽगीयत्थे" त्ति दारं, एयस्स विभासा –

कस्सेयं पच्छित्तं, गणिणो गच्छं असारवेंतस्स ।
अहवा वि अगीयत्थस्स भिक्खुणो विसयलोलस्स ॥४७६५॥

सीसो पुच्छति – एस जो पच्छित्तगणो भणितो, एस कस्स भवति ?

आयरिओ आह– "गणिणो गच्छं असारवेंतस्स, असारवणा णाम अगवेसणा – "को तत्थ गतो, को वा पुच्छिउं गतो, अणापुच्छा वा, पलंबगहणा आलोइए वा सोहिं ण देति, ण कारवेति वा, ण वा चोदेति वा" । एवं असारवेंतस्स गुरुणो सव्वं पच्छित्तं भवति ।

अहवा – अगीयत्थो अण्णं च विसयलोलो होउं पलंबे गेण्हति तस्स भिक्खुणो पच्छित्तं भवति ।

अधवा – अगीयत्थस्स गीयत्थस्स वि विसयलोलस्स एयं पच्छित्तं भवति ।

पुणो चोदगाह – किं कारणं आयरियस्स अविराहेंतस्स जीवकाए पच्छित्तं भवति ?

आचार्याह – जेण सो गच्छविराहणाए वट्टति ।

कहं ?

जेण गच्छं ण सारवेति ।

तत्थ य इमे आयरियभंगा – अगीयत्थो आयरिओ, गच्छं ण सारवेति, विसयलोलो य, एतेसु तिसु पदेसु सपडिपक्खेसु अट्ठ भंगा कायव्वा । एत्थ अंतिमो सुद्धो । आदिमा सत्त वज्जणिज्जा ॥४७६५॥

कहं ?

देसो[1] व सोवसग्गो, वसणी[2] व जहा अजाणग[3]नरिंदो ।
रज्जं विलुत्तसारं, जह तह गच्छो वि निस्सारो ॥४७६६॥

"देसो व सोवसग्गो" त्ति अस्य व्याख्या –

ओमोयरिया य जहिं, असिवं च ण तत्थ होइ गंतव्वं ।
उप्पण्णे ण वसितव्वं, एमेव गणी असारणितो ॥४७६७॥

जहा देसो असिवा उवद्दवजुत्तो वज्जणिज्जो तहा गणी असारणिओ विसयलोलो वज्जणिज्जो ॥४७६७॥

"[2]वसणी व जहा" अस्य व्याख्या –

सत्तण्हं वसणाणं, अण्णतरजुओ ण [3]रक्खती रज्जं ।
अंतेपुरे व अच्छति, कज्जाणि सयं न सीलेति ॥४७६८॥

जहा राया रज्जणीति जाणगो अजाणगो वा वसणाभिभूयत्तणओ रज्जमणुपालेउं ण याणति ।

---

१ गा० ३४ । २ गा० ४७६६ । ३ जाणई, इति बृहत्कल्पे गा० ९३९ ।

अधवा – सेसवसणेहिं अवट्टंतो वि विसयलोलत्तणतो णिच्चमंतेउरे अच्छति तस्स वि रज्जं विणस्सति, एवं गणियस्स असारणियस्स सारणियस्स वा विसयलोलस्स गच्छो विणस्सति।

"[1]अजाणगणरिंदो" त्ति अस्य व्याख्या –

रज्जणीतिअजाणत्तणतो ववहारादि कज्जाणि अप्पणा "ण सीलेति" ण पेक्खति त्ति वुत्तं भवति, अपेक्खंतस्स य रज्जं विणस्सति, अण्णो वा राया ठविज्जति, एवं गणिस्स वि अगीयस्स गियत्थस्स वा असारणियस्स गच्छो विणस्सइ, तेण तेसु ण वसियव्वं ॥४७९८॥

"[2]सत्तण्हं वसणादीणं" ति अस्य व्याख्या –

इत्थी जूयं मज्जं, मिगव्व वयणे तहा फरुसता य।
डंडफरुसत्तमत्थस्स दूसणं सत्त वसणाणि ॥४७९९॥

इत्थीसु णिच्चं आसत्तो अच्छति, तहा जूते मज्जे य निच्चमासत्तो अच्छति, "मिगव्वं" ति आहेडगो, एतेसु णिच्चासत्तणतो रज्जं ण सीलेति। "वयणफरुसो" एत्थ वयणदोसेण रज्जं विणस्सति। अतिउग्गदंडो "दंडफरुसो", एत्थ जणो भया णस्सति। अत्थुप्पत्तिहेतवो जे ते दूसेंतस्स अत्थुप्पत्ती ण भवति, अत्थाभावे कोसविहूणो राया विणस्सति ॥४७९९॥

अहवा – अन्यः विकल्पः –

अहवा वि अगीयत्थो, गच्छं न सारेति एत्थ चउभंगो।
बीए अगीयदोसो, ततिओ ण सारेतरो सुद्धो ॥४८००॥

अगीयत्थो गच्छं ण सारवेति १। अगीयत्थो गच्छं सारवेति २।

गीयत्थो गच्छं न सारवेति ३। गीयत्थो गच्छं सारवेति (शुद्ध) ४।

एत्थ पढमस्स दो दोसा, अगीयदोसो असारणदोसो य। बितियस्स एक्को अगीयत्थ दोसो। ततियस्स एक्को असारणदोसो। इतरो चउत्थो सुद्धो ॥४८००॥

एतेसिं भंगाण इमो उवसंघारो –

देसो व सोवसग्गो, [3]पढमो बीओ व होइ वसणी वा।
ततिओ अजाणतुल्लो, सारो दुविहो दुहेक्केक्को ॥४८०१॥

पढमभंगिल्लो सोवसग्गो देसो इव परिच्चयणिज्जो। बितियभंगिल्लो तस्स चोदणा वसणमिव दट्ठव्वं, तेण वसणिणरिंदतुल्लो इव सो परिच्चयणिज्जो। ततियभंगिल्लो असारणियत्तणओ अजाणगतुल्ल एव।

अहवा चउभंगो – अगीयत्थो गच्छं ण सारवेति। अगीयत्थो गच्छं सारवेति।

गीयत्थो गच्छं ण सारवेति। गीयत्थो गच्छं सारवेति। चउत्थो सुद्धो।

सेसेसु भंगेसु देसोवसग्गो पढमसमो स्फुटतरं गाथा अवतरति।

"[4]रज्जं विलुत्तसारं" एयस्स पच्छद्धस्स वक्खाणं कज्जति –

---

१ गा० ४७९६। २ गा० ४७९८। ३ बृहत्कल्पे तु अस्या गाथायाः द्वितीयतृतीयपादयोरेवंविधः पाठः – "...पढमो तइओ तु होइ, वसणी वा, बिइओ अजाणतुल्लो..." गा० ९४२। ४ गा० ४७९६।

"[1]णिस्सारो" त्ति अस्य व्याख्या – "सारो दुविधो दुहेक्किक्को", णिग्गतो सारो णिस्सारो। को पुण सो सारो? भण्णति – सो सारो दुविधो – लोइम्रो लोउत्तरिम्रो य। पुणो एक्केक्को दुविधो – बाहिरो अब्भिंतरो य ॥४८०१॥

तत्थ जो लोइम्रो दुविधो सो इमो –

गोमंडलधन्नादी, वज्झो कणगादि अंतो लोगम्मि।
लोउत्तरितो सारो, अंतो बहि णाणवत्थादी ॥४८०२॥

"गो" त्ति गावीओ, मंडलमिति विसयखंडं, [2]वलद्दय खलमंडलं [3]कोहयमंडलं छन्नउइं सुरट्ठा।

अहवा – मंडलमिति गोवग्गो एवं महिष्यादी। सालिमादीए धण्णा, आदिसद्दातो णाणाविहो कुवियमुवक्खरो। एवमादि लोइओ बाहिरो सारो। अब्भिंतरो सुवण्णं रूपं रयणाणि य, एवमादिअब्भिंतरो लोइओ। जो पुण लोउत्तरो सारो सो दुविधो – अंतो बाहिरो य। तत्थ अंतो णाणं दंसणं चारित्तं च। बाहिरो – आहारो उवधी सेज्जा य। अगीयत्थस्स अगीयत्तणओ गीयस्स य असारणियत्तणओ गणो दुविहेणावि सारेण णिस्सारो भवतीत्यर्थः ॥४८०२॥

तम्हा गणिणो गच्छं असारवेंतस्स एवं सव्वं पच्छित्तं भवति।

अववा – वि अगीयत्थभिक्खुणो विसयलोलस्स। जो अगीयत्थो भिक्खू आयरियाणं अणुवदेसेण जिब्भिंदियविसयलोलताए पलंबे गेण्हति, तस्स एयं सव्वं पच्छित्तं भवति।

चोदगाह – "णायं अत्थावत्तीतो जो अगीतो आयरिओवदेसेण गेण्हति तस्स णत्थि पच्छित्तं"। गीयत्थुवदेसमंतरेण य अगीयत्थस्स सओ कज्जेसु पवत्तमाणस्स इमो दोसो –

सुहसाहगं पि कज्जं, करणविहूणमणुवायसंजुत्तं।
अण्णातदेसकाले, विवत्तिमुवयादि सेहस्स ॥४८०३॥

जं पि य सुहसाहगं कज्जं "करणविहूणं" ति अणारंभो, घडस्स वा जहा चक्कादीकरणं तेहिं वा विणा अणुवाओ, जहा मिउप्पिडातो पडमुप्पाएउमिच्छति। अण्णायं णाम जहा अचित्तकरो चित्तं काउं ण याणति अज्ञत्वात् अल्पविज्ञानत्वादित्यर्थः। अदेसकालो जहा अभ्रावकाशे वृष्टौ निपतमानायां घटं कर्तुं न शक्यते। विवत्ति असिद्धी कज्जविणासो वा विवत्ति। सेहो त्ति अजाणगो।

उक्तं च –

सम्प्राप्तिश्च विपत्तिश्च, कार्याणां द्विविधा स्मृता।
सम्प्राप्तिः सिद्धिरर्थेषु, विपत्तिश्च विपर्यये ॥

एत्थ "अणारंभे अणुवाए" य इमं णिदरिसणं –

णक्खेणावि हु छिज्जति, पासादे अभिणवो तु आसत्थो।
अच्छेज्जो वड्ढंतो, सो वि य वत्थुस्स भेओ य ॥४८०४॥

वडपिप्पलादी पासादुट्ठितो अच्छिण्णो अप्रयत्नछिन्नो य वत्थुभेदं करेति, अदेसकाले पुण छिज्जमाणे महंतो किलेसो भवति, वत्थुभेदं वा करेज्ज। एस अजाणगस्स विधी। जो पुण जाणगो सो देसकाले णहेण

[1] गा० ४७९६। [2] वलवद्दयकुलमंडलं, इत्यपि पाठः। [3] कोउयमडलं, इत्यपि पाठः।

चेव छिंदति, छिंदियव्वे य आरंभं करेति, प्रयत्नछिन्नं च करेति, मूले वि से उद्धरति, उद्धरिता य गोकरिसग्गिणा डहति । एस जाणगस्स विधी ॥४८०४॥

जो वि य ऽणुवायछिण्णो, तस्स वि मूलाणि वत्थुभेया य ।
अभिनव उवायछिन्नो, वत्थुस्स न होइ भेदो य ॥४८०५॥

पुव्वद्धेण अणुवाओ, पच्छद्धेण अहिणवे उवायछेदो । एस दिट्ठंतो ॥४८०५॥

इमो से उवणतो –

पडिसिद्धं तेगिच्छं, जो उ ण कारेति अभिणवे रोगे ।
किरियं सो हु ण मुचति, पच्छा जत्तेण वि करेंतो ॥४८०६॥

जस्स रोगो उप्पण्णो साहुस्स सो जइ इमं सुत्तं अणुसरित्ता "[1]तेगिच्छं णाभिणंदेज्ज" ति "पडिसिद्धं" ति काउं ण कारवेति किरियं, सो तम्मि वाहिम्मि वढ्ढिते समाणे जत्तेण वि किरियं करेंतो ण सक्केति [2]तिगिच्छिउं । जति पुण अहुणुट्ठिते चेव रोगे कारवेंतो किरियं तो तिगिच्छितो होंतो ॥४८०६॥

जो वा अणुवाएणं करेति जहा –

सहसुप्पइयम्मि जरे, अट्ठमभत्तेण जो वि पारेति ।
सीयलअंबदवाणि व, ण हु पउणति सो वि अणुवाया ॥४८०७॥

सहसा जरे जाते अण्णम्मि वा आमसमुत्थे रोगे अट्ठमं करेत्ता सीयलकूरं सीयलदव्वं वा पारेति, "मा पेज्जा कायव्वा भविस्सति" त्ति काउं, ततो तस्स तेण सीयलकूरादिणा सो रोगो पुणो पकुप्पति । जति पुण तेण पेज्जादिणा उवाएणं पारियं होंतं तो पउणंतो जं च तं अपत्थं भोयणावराहकतं पावं तं पि पच्छा सत्थो समाणो आढत्ते देसकाले तंपि उवाएण पयत्तेण य पायच्छित्तेणं विसोहेंतो । एवं उवायतो पउणति, अणुवायओ णो पउणति ॥४८०७॥

संपत्ती व विवत्ती, व होज्ज कज्जेसु कारगं पप्पे ।
अणुपायओ विवत्ती, संपत्ती कालुवाएहिं ॥४८०८॥

कारगो कत्ता । जति सो अजाणगो ततो तेण अदेसकाले अणुवाएण आढत्तं कज्जं विवत्ति विणासं गच्छत्ति, अह सो जाणगो ततो तेण आढत्ते देसकाले तं उवाएण पयत्तेण य तस्स कज्जं सिज्झति ॥४८०८॥

इति दोसा उ अगीते, गीयम्मि य कालहीणकारिम्मि ।
गीयत्थस्स गुणा पुण, होंति इमे कालकारिस्स ॥४८०९॥

इतिसद्दो एवार्थे । एवं अगीते दोसा । जो गीतो देसकाले करेति, हीणे वा काले करेति, अतिरित्ते वा काले करेति, तस्स वि एते चेव दोसा भवंति । जो पुण गीयत्थो अहीणमतिरित्तकाले करेति, उवाएण वा प्रयत्नेन च तस्स इमे गुणा भवंति ॥४८०९॥

आयं[1] कारण[2]मागाढं[3], वत्थु[4] जुत्तं[5] ससत्ति[6] जयणं[7] च ।
सव्वं च सपडिवक्खं, फलं च विधिहं वियाणाति ॥४८१०॥

---

१ उत्त० अध्य० २ गा० ३३ । २ तिगिच्छिउं इत्यपि पाठः ।

"सव्वं च सपडिपक्खं" ति – आयस्स अणातो, कारणस्स अवकारणं, गाढस्स अणागाढं, वत्थुस्स अवत्थुं, जुत्तस्स अजुत्तं, ससत्तस्स असत्ती, जयणाए अजयणाए य। एवं सव्वं गीयत्थो जाणति, विविधं च णिज्जरा फलं च जाणित्ता समायरति ॥४८१०॥

इदाणिं एतेसिं आयादियाण इमं वक्खाणं –

सुंकातीपरिसुद्धे, सति लाभे कुणति वाणितो चेट्ठं।
एमेव य गीयत्थो, आयं दट्ठुं समायरति ॥४८११

जहा वणितो देसंतरं भंडं णेउकामो जइ सुंकसुद्धो आदिसद्दातो भांडगकम्मकरवित्तीए परिसुद्धाए जति लाभस्स सती भवति, तो वणितो वाणेज्ज चेट्ठं आरभति। अहलाभो न भवति, तो ण आरभति। ततो एवं गीयत्थो णाणादिआयं दट्ठुं पलंबादिअकप्पपडिसेवणं समायरति ॥४८११॥

"आय" त्ति दारस्स व्याख्या –

असिवादी सुंकत्थाणिएसु किं चि खलियस्स तो पच्छा।
वायणवेयावच्चे, लाभो तवसंजमज्झयणे ॥४८१२॥

असिवोमोदरियदुब्भिक्खादिएसु सुंकत्थाणिएसु केसु वि संजमठाणेसु अकप्पपडिसेवणाए खलियस्स पच्छा तेसु असिवादिसु फिट्टेसु तं अतियारं पच्छित्तेसु विसोहिस्सामि।

वायणं देंतस्स, आयरियादीणं वेयावच्चं करेंतस्स, तवसंजमज्झयणेसु य उज्जमं करेंतस्स अण्णो अब्भहितो लाभो भविस्सइ, वयो अप्पतरो, तो गीयो समायरति। अगीतो पुण एयं आयव्वतं ण याणति ॥४८१२॥ आय त्ति दारं गतं।

इदाणिं "[1]कारणमागाढे" दो वि दारे एगगाहाए वक्खाणेति –

णाणादितिगस्सऽट्ठा, कारणणिक्कारणं तु तव्वज्जं।
अहिडक्क-विस-विसूइय, सज्झक्खय-सूलमागाढं ॥४८१३॥

जो गीयत्थो सो कारणे पडिसेवति, णिक्कारणे ण पडिसेवति।

आह – केरिसस्स कारणस्स अट्ठाए पडिसेवति ? केरिसं वा णिक्कारणं ?

उच्यते – "णाणादि" पुव्वद्धं कंठं। इदाणिं "आगाढे" त्ति आगाढे खिप्पं पडिसेवति, अणागाढे तिपरिरएण पणगादिपरिहाणीए। जारिसं वा आगाढे पडिसेवियव्वं तं आगाढे चेव पडिसेवति, जारिसं अणागाढे पडिसेवियव्वं तारिसं अणागाढे पडिसेवति।

आह – केरिसं आगाढं ? केरिसं वा अणागाढं ?

उच्यते – अहिडक्क पच्छद्धं, उच्चारियसिद्धं ॥४८१३॥

इदाणिं "[3]वत्थुजुत्तं" च दो वि दारे वक्खाणेति –

आयरियादी वत्थुं, तेसिं चिय जुत्त होति जं जोग्गं।
गीयपरिणामगा वा, वत्थुं इयरे पुण अवत्थुं ॥४८१४॥

---

१ गा० ४८१०। २ ० ४८१०। ३ गा० ४८१०।

पहाणपुरिसो आयरियादी वत्थं, परिणामगा वा, "पयारिहं वत्थुमिति" अह जाणित्ता पडिसेवति पडिसेवाविज्जति वा, "अहमेतस्स पडिसेवियव्वस्स णिक्कयं करिस्सामी" ति । "इयरे" पडिपक्खभूता अवत्थुं । एतेसिं चेव आयरियाणं जं जोग्गं तं "[1]जुत्तं"— भण्णति ।।४८४१।।

इदाणिं "[2]समत्थ त्ति जयणं च" दो वि दारे एक्कगाहाए वक्खाणेति –

धिति सारीरा सत्ती, आयपरगया य तं ण होवेंति ।
जयणा खलु तिपरिरता, अलंभे पच्छा पणगहाणी ।।४८१५।।

धितिवलं अप्पणो जाणित्ता सारीरं च संघयणवलं जाणित्ता परस्स य, एते जाणित्ता आयरिओ अण्णो वा जो अप्पणा समत्थो परो वि समत्थो दो वि ण होवेंति । अह अप्पणा समत्थो परो असमत्थो एत्थ परस्स वितरति । ततियभंगे अप्पणा पडिसेवति णो परस्स वितरति । चउत्थे दो वि पडिसेवंति । [3]जयणा तिण्णि वारा सुद्धस्स पडियरति, जति तीहिं वारेहिं सुद्धं ण लभति तो चउत्थवारादिसु पणगपरिहाणीए असुद्धं गेण्हति । सव्वं आयादियं सपडिपक्खं जाणित्ता गीतो आयरति वा ण वा । अगीतो पुण एयं एवं ण याणति, तेण अगीयस्स पच्छित्तं ।।४८१५।।

इदाणिं "[4]फलं" ति दारं—

इह परलोए य फलं, इह आहारादि एक्कमेक्कस्सा ।
सिद्धी सग्ग सुकुलता, फलं तु परलोइयं वहुहा ।।४८१६।।

एवं मम चेट्ठंतस्स फलं भविस्सति अण्णस्स वा, तं च फलं — दुविधं—इहलोइयं आहार-वत्थ-पत्तादी, "एक्कमेक्कस्स" त्ति एक्कमेक्कस्स फलं भवति । अहवा – अप्पणो परस्स वा । अहवा — परोप्परोवकारेण फलं भवति । परलोइयं फलं सिद्धिगमणं सग्गगमणं वा सुकुले वा उप्पत्ती ।

गीयस्स उस्सग्गे उस्सग्गं, अववाए अववादं करेंतस्स एयं विविधं फलं भवति ।

किं चान्यत् — जं गीयत्थो अरत्तो अदुट्ठो य पडिसेवति तत्थ अपायच्छित्ती भवति ।।४८१६।।

आह — केण कारणेण अपायच्छित्ती भवति ? उच्यते —

खेत्तोऽयं कालोऽयं, करणमिणं साहओ उवाओऽयं ।
कत्त त्ति य जोग त्ति य, इति कडजोगिं वियाणाहि ।।४८१७।।

"खेत्तो यं कालो यं" अस्य व्याख्या –

ओयब्भूतो खेत्ते, काले भावे य जं समायरति ।
कत्ताओ सो अकप्पो, जोगीव जहा महावेज्जो ।।४८१८।।

रागदोसविरहितो दोण्ह वि मज्झे वट्टमाणो तुलासमो ओयो भण्णति, तेण रागदोसविरहियत्तणेण भूतो ओयभूतो, सो य ओयो अद्धाणादीखेत्तपडिसेवणं पडुच्च दुब्भिक्खादिकालपडिसेवणं वा पडुच्च गिलाणादि भावपडिसेवणं वा पडुच्च जं समायरइ त्ति पडिसेवति रागद्दोसविरहितो सो अदोसो ।

कहं ? जेण सम्मं "[5]करणमिणं" ति भवेणग्गति, करणं किरिया, इह एवं गज्झमाणं निज्जरालाभं

---

१ गा० ४८१० । २ गा० ४८१० । ३ गा० ४८१० । ४ गा० ४८१० । ५ गा० ४८१७ ।

करेति, "[1]साहग्रो उवाउ" त्ति णाणचरणाणि साहणिज्जाणि, तेसिं साहणे इमो उवाग्रो — "जयणाए अकप्पपडिसेवण" त्ति ।

अहवा – इह एरिसे खेत्ते काले वा अकप्पपडिसेवणमंतरेण णत्थि सरीरस्स धारणं, तदधीणाणि य णाणदंसणचरणाणि त्ति पडिसेवति । एस चेव उवाग्रो दोण्ह वि गाहाए पच्छद्धा जुगवं वक्खाणिज्जंति "[2]कत्त त्ति य कत्ताग्रो" त्ति ।

जो एवं ग्रालोइयपुव्वावरो कत्ता सो "अकप्पो" भवति । अकोपणिज्जो अकप्पो अदूसणिज्जो त्ति वुत्तं भवति ।

कहं ? उच्यते — "[3]जोग" त्ति अस्य व्याख्या – "जोगीव जहा महावेज्जो" । जोगी घण्णंतरी, तेण विभंगणाणेण दट्ठुं रोगसंभवं वेज्जसत्थयं कयं, तं अधीयं जेण जहुत्तं सो महावेज्जो, सो आगमाणुसारेण जहुत्तं किरियं करेंतो जोगीव भवति — अदोसो, जहुत्तकिरियकारिस्स य कम्मं सिज्झति ।

एवं इहं पि जोगिणो इव तित्थगरा, तदुवएसेण य उस्सग्गेणऽववादेण वा करेंतो "[4]कडजोगि" त्ति — गीयत्थो अदोसवं वियाणाहि । इतिसद्दो दिट्ठंतुवणयावधारणे दट्ठव्वो ॥४८१८॥

अधवा "कत्त" त्ति य "जोगि" त्ति य एतेसिं इमं वक्खाणं –

अहव ण कत्ता सत्था, ण तेण कोविज्जति कयं किंचि ।
कत्ता इव सो कत्ता, एवं जोगी वि नायव्वो ॥४८१६॥

को कत्ता ? "सत्था" तित्थकरो । तेण तित्थकरेण कयं "ण कोविज्जइ" ण खोभिज्जइ त्ति वुत्तं भवति । एवं सो गीयत्थो कत्ता विधीए करेंतो अकप्पो भवति । कत्ता इव तीर्थंकर इवेत्यर्थः । एवं जोगी वि णायव्वो । "जोगी" विभंगणाणी घण्णंतरी, जहा तेण कयं अकोप्पं भवति एवं गीतेण वि कतं अकोप्पं । एवं गीतो जोगीवत् जम्हा तम्हा गीतो जोगीविव णायव्वो । जतो य एवं ततो गीतो अदोसवं भवति ॥४८१६॥ एवमुवदिट्ठे सूरिणा ।

आह चोदग –

किं गीयत्थो केवलि, चउव्विहे [1]जाणणे य [2]गहणे य ।
[3]तुल्ले [4]रागद्दोसे, अणंतकायस्स वज्जणता ॥४८२०॥

सीसो पुच्छति – "किं गीयत्था केवली, जेण तस्स वयणं करणं च अकोप्पं भवति" ? ओमित्युच्यते, अकेवली वि केवलीव भवति ।

अहवा केवली तिविधो – सुयकेवली अवधिकेवली केवलिकेवली ।

एत्थ सुयकेवलिपण्णवणं पडुच्च केवलिवद् भवति । कथमुच्यते – "चउव्विहे जाणणे य गहणे य तुल्ले रागदोसे अणंतकायस्स वज्जणया," एयाणि द्वाराणि, अण्णे य पयत्थे जहा केवली पण्णवेइ तहा सुग्रधरो वि ॥४८२०॥

---

१ गा० ४८१७ । २ गा० ४८१७ । ३ गा० ४८१७ । ४ गा० ४८१७ ।

"चउव्विहजाणणे" त्ति अस्य व्याख्या -

सव्वं नेयं चउहा, तं वेइ त्ति जहा जिणो तहा गीओ।
चित्तमचित्तं मिस्सं, परित्त-ऽणंतं च लक्खणओ ॥४८२१॥

सव्वमिति अपरिसेसं चउव्विधं—दव्वतो खेत्ततो कालओ भावओ य। तं पण्णवणं पडुच्च जहा केवली ब्रुवते तहा गीयत्थो वि। अहवा—तं वेत्ति, जहा जिणो जाणइ तहा गीयत्थो वि जाणइ इमेण सचित्तादिलक्खणभेदेण। इहं पुण पलंबाधिकारातो जहा केवली सचित्तं जाणति, अचित्तं मीसं वा परित्तणंतं वा सचित्तादिलक्खणाणि वा परूवेति, तहा सुअधरो वि सुताणुसारेणं सचित्तलक्खणेण सचित्तं जाणति पण्णवेइ य, एवं अचित्तमीसपरित्ताणंता वि लक्खणतो जाणति परूवेति य ॥४८२१॥

चोदगाह – "णणु केवली भिण्णतमो सव्वण्णू सुअकेवली, छउमत्थो असवण्णू। जो य असव्वण्णू स कहं केवलीतुल्लो भण्णति" ?

आचार्य आह –

कामं खलु सव्वण्णू, णाणेणऽहिगो दुवालसंगीतो।
पण्णत्तीए तुल्लो, केवलनाणं जतो मूअं ॥४८२२॥

चतुर्दशपूर्वधारिज्ञानात् केवलज्ञानिन अधिकतरज्ञानसंभवाच्चोदकाभिप्रायसमर्थनाभिप्रायेण, कामशब्दप्रयोगः।

अहवा – आचार्येण चोदकाभिप्रायोऽवधृत इत्यतो "काम" शब्दप्रयोगः। खलु पूरणे [1]तुल्यत्वे वा, अन्यूनत्वविशेषप्रदर्शने। "पण्णत्तीए तुल्ल" त्ति केवली सुअकेवली य पण्णवणं पडुच्च तुल्ला, जेण केवली वि सुयणाणेण पण्णवेति, केवलनाणं जतो मूअं ति ॥४८२२॥

"केवली दुवालसंगीतो केत्तिएण अधिगो, कहं वा पण्णवणाए तुल्लो" त्ति।

अतो भण्णति –

पण्णवणिज्जा भावा, अणंतभागे उ अणभिलप्पाणं।
पण्णवणिज्जाणं पुण, अणंतभागो सुयनिबद्धो ॥४८२३॥

भावा दुविधा—पण्णवणिज्जा अपण्णवणिज्जा। पण्णवणिज्जा अभिलप्पा, इतरे अणभिलप्पा। दो वि रासी अणंता, तहावि विसेसो अत्थि—अणभिलप्पाणं भावाणं अणंतभागे पण्णवणिज्जा भावा। पण्णवणिज्जा णाम जे पण्णवेउं सक्कंति, छउमत्थो वा बुद्धीए घेत्तुं सक्केति, एयव्विवरीया अपण्णवणिज्जा। तेसि पि पण्णवणिज्जाणं जो अणंतइमो भागो सो दुवालसंगसुतणिबंधेण णिबद्धो ॥४८२३॥

चोदगाह—"कहं एयं जाणियव्वं जहा पण्णवणिज्जाणं अणंतभागो सुयणिबंधो" ?

उच्यते—

जं चोद्दसपुव्वधरा, छट्ठाणगता परोप्परं होंति।
तेण उ अणंतभागो, पण्णवणिज्जाण जं सुत्तं ॥४८२४॥

जमिति जम्हा चोद्दसपुव्वी छट्ठाणपडिया लब्भति।

---

१ तुल्यत्वात् न्यूनत्व इत्यपि पाठः।

कहं ? उच्यते – चोद्दसपुव्वी चोद्दसपुव्विस्स किं तुल्ले, किं हीणे, किं अब्भहिते ? जइ तुल्ले तो तुल्लत्तणओ णत्थि विसेसो ।

अध हीणो तो जस्स हीणो तस्स तं नाणं ततो अणंत-भागहीणे वा असंखेज्ज-भागहीणे वा संखेज्ज-भागहीणे वा संखेज्ज-गुणहीणे वा असंखेज्ज-गुणहीणे वा अणंत-गुणहीणे वा ।

अह अब्भहितो अणंत-भागब्भहिए वा असंखेज्ज-भागब्भहिए वा संखेज्ज-भागब्भहिए वा संखिज्ज-गुणब्भहिए वा असंखेज्ज-गुणब्भहिए वा अणंत-गुणब्भहिए वा, तेण कारणेण णज्जते । तुसद्दो कारणावधारणे । पण्णवणिज्जाण भावाणं अणंत-भागो जं सुत्तं वट्टति त्ति जं वुत्तं तं चोद्दसपुव्वीण छट्ठाणपडियत्तणतो फुडं जातं ॥४८२४॥

चोदगाह – "णणु चोद्दसपुव्वीणं अभिण्णचोद्दसपुव्वित्तणत्तो छट्ठाणं विरुज्झति" ?

आचार्याह –

अक्खरलंभेण समा, ऊणऽहिया होंति मतिविसेसेहिं ।
ते वि य मतीविसेसा, सुतणाणऽब्भंतरे जाण ॥४८२५॥

सुयनाणावरणिज्जस्स देसघातीफड्डगाणं खतोवसमेण अक्खरलंभो भवति, ते च अभिण्णचोद्दसपुव्वीण अक्खरलाभफड्डा य प्रायो समा खओवसमं गता तेण ते अभिण्णचोद्दसपुव्वी अक्खरलाभेण समा भवंति ।

सव्वक्खरसुयलंभे वि उवरि सुयनाणसंभवतो उवरुवरिं देसघातिफड्डगा अ सुयनाणावरणिज्जस्स खयोवसमं गच्छंति, ते य सुत्तनिबद्धपयत्थेसु जस्स थोवतरा खयोवसमं गता सो सव्वक्खरलंभोवरि सुयालं-भणमतिविसेसेण ऊणतरो भवति, वहुतरा पुण जस्स खओवसमं गता सो मतिविसेसेण अधियतरो भवति, ते य मतिविसेसा सुअणाणअब्भंतरे भवंति ।

कथं ? उच्यते – जतो सुयनाणाधारसमुट्ठिया ते, भणियं च – "[1]ण मती सुयं तप्पुव्वियं" ति, तेण ते मतिनाणं ताव ण भवंति, ओहि-मणपज्जव-केवलभेदा वि ण भवंति, परोक्खणाणत्तणओ, जम्हा ते सुयनाण-समुट्ठिया सुयनाणत्तणओ य तम्हा सुयनाणब्भंतरा ते ।

एवं जे अपण्णवणिज्जाणं अणंतगुणा ते य सुयकेवलिस्स अविसयत्था, केवलिस्स विसयत्था । अतो भण्णति – केवली सुयकेवलिहितो अणंतगुणं जाणति ॥४८२५॥

जं वुत्तं "[2]पण्णवणाए तुल्ला" तं कहं ? उच्यते –

केवलविण्णे अत्थे, [3]वतिजोगेणं जिणो पगासेति ।
सुयनाणकेवली वि हु, तेणेवऽत्थे पगासेति ॥४८२६॥

जिणो केवली, सो केवलणाणेण विण्णति, विण्णाए अत्थे सुयणाणाभिलावेण वा जोगप्पयुत्तेण अधवा–दव्वसुतेण अत्थे पगासेति । चोद्दसपुव्वी सुयनाणकेवली, हुशब्दो यस्मादर्थे, तेणेव सुयनाणेण वा जोगपयुत्तेण अत्थे पगासेति । एवं पण्णवणाए तुल्ला । एतेण कारणेणं जहा केवली दव्वादिजुत्तं परित्ताणंतं जाणति तहा गीयो वि जाणति ॥४८२६॥

---

१ न मई सुयपुव्विया, इति नंदीसुते सू० २४ । २ गा० ४८२२ । ३ सुयनाणेणं जिणो पगासेइ, इति बृहत्कल्पे गा० ९६६ ।

तत्थ [1]दव्वतो ताव लक्खणेणं कहं जाणति अणंतं परित्तं वा ? अतो भणति –

गूढसिरागं पत्तं, सच्छीरं जं च होइ णिच्छीरं ।
जं पि य पणट्ठसंधिं, अणंतजीवं वियाणाहि ॥४८२७॥

गूढा गुप्ता अणुवलक्खा, छिरा णाम ण्हारुणिता पण्णस्स तं सच्छीरं भवति जहा थूभगस्स, अच्छीरं वा भवति जहा पण्णस्स, जति य तं पण्णं पणट्ठसंधि, संधि णाम जो पण्णस्स मज्झे पासलतो पुट्ठीवंसो त्ति वुत्तं भवति। एवमादिलक्खणेहिं जुत्तं पण्णं अणंतजीवं णायव्वं । इमं मूलखंधपण्णादियाण सव्वेसिं अणंतलक्खणं॥४८२७॥

चक्कागं भज्जमाणस्स, गंठी चुण्णघणो भवे ।
पुढविसरिसभेदेण, अणंतजीवं वियाणाहि ॥४८२८॥

जस्स चक्कागारो भंगो "समो" त्ति वुत्तं भवति, भज्जमाणं वा सद्दं करेति, "चक्कि" त्ति – जस्स य अल्लगादिगंठीए भेयो चुण्णघणसमाणो भवति, चुण्णो णाम तंदुलादिचुण्णो, घणीकृतो – लोलीकृत इत्यर्थः । सो भिज्जमाणो सतधा भिज्जति ण य तस्स हीरो भवति, किं च – जस्स य पुढविसरिसभेदो। एवमादिलक्खणेहिं अणंतजीवो वणस्सती णायव्वो, सेसो परित्तो णायव्वो ॥४८२८॥

इमं मूलस्स परित्ताणंतलक्खणं –

जस्स मूलस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसती ।
अणंतजीवे हु से मूले, जे याऽवऽण्णे तहाविहे ॥४८२९॥

समो भगो – हीरविरहित इत्यर्थः, जो वि अण्णो कंदखंधादिओ तुल्ललक्खणो सो वि अणंतजीवो णायव्वो ॥४८२९॥

जस्स मूलस्स भग्गस्स, हीरो मज्झे पदिस्सती ।
परित्तजीवे हु से मूले, जे यावण्णे तहाविहे ॥४८३०॥

हीरो णाम अंसी, जहा वंसस्स दीसति ॥४८३०॥

इमं छल्लीए अणंतलक्खणं –

जस्स मूलस्स [2]सारातो, छल्ली बहलतरी भवे ।
अणंतजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥४८३१॥

सारो कट्ठं, तस्स समीवातो छल्ली बहुलतरित्ति जड्डतरी जहा सतावरीए सा अणंतजीवा छल्ली । कट्ठं परित्तजीवं ॥४८३१॥

जस्स मूलस्स सारातो, छल्ली तणुतरी भवे ।
परित्तजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥४८३२॥

कंठा । एवं दव्वतो सुतधरो केवली य दो वि पण्णवेंति ॥४८३२॥

---

१ गा० ४८२१ । २ कट्ठातो, इति बृहत्कल्पे गा० ९७१ ।

इमं [1]खेत्ततो –

जोयणसयं तु गंता, ऽणाहारेणं तु भंडसंकंती ।
वाता-ऽगणि-धूमेहिं, विद्धत्थं होति लोणादी ॥४८३३॥

केयी पढंति – 'गाउयसय" गाहा, जाव जोयणसयं गच्छति ताव प्रतिदिनं विध्वंसमाणं सव्वहा विद्धंसति, जोयणसतातो परेण अचित्तं सव्वहा भवति ।

चोदगाह – "इंधणाभावे कहं अचित्तं भवति" ?

आचार्याह – "अणाहारे" ति, जस्स जं आधारणं तं ततो वोच्छिण्णं, आहारविच्छेदा विद्धंसमागच्छति, जहा पुढवीओ वोच्छिण्णं लोणादी, तं च लोणादी जोयणसयमगयं पि सट्ठाणे अंतरे वा विद्धंसति, भंडसंकंतीए पुव्वभायणातो अण्णम्मि भायणे संकामिज्जति, भंडसालातो वा अण्णभंडसालं संकामिज्जति, वातेण आतवेण वा भत्तघरे वा अगणिणिरोहेण वा धूमेण ॥४८३३॥

आदिसद्दातो इमो –

हरियाल मणोसिलं, पिप्पली य खज्जूरमुद्दिया अभया ।
आइण्णमणाइण्णा, ते वि हु एमेव णायव्वा ॥४८३४॥

हरितालमणोसिला जहा लोणं । "अभय" त्ति हरीतकी । एते पिप्पलिमादिणो जोयणसतातो आगया वि जे हरीतकिमादिणो आतिण्णा ते घेप्पंति, खज्जूरादओ अणाइण्ण त्ति न घेप्पंति ॥४८३४॥

इमं सव्वेसिं सामण्णं परिणामकारणं –

आरुहणे ओरुहणे, णिसियणगोणादिणं च गातुम्हा ।
भुम्माहारच्छेदो, उवक्कमेणेव परिणामो ॥४८३५॥

सगडे गोणगादिपट्ठीसु य आरुभेज्जमाणा उरुभिज्जमाणा य, तहा भरगादिसु मणुया णिसीयंति तेसिं गातुम्हाए, तहा गोणादियाण गातुम्हाए, जो जस्स आहारो भोमादितो तेण य वोच्छिण्णेणं । "उवक्कमो" णाम-किं चि सकायसत्थं किं चि परकायसत्थं, तदुभयं किं चि, जहा लवणोदगं मधुरोदगस्स सकायसत्थं, परकायो अग्गी, उदगस्स उभयं, मट्टितोदगं सुद्धोदगस्स, एवमादिसचित्ताण परिणामकारणाणि ॥४८३५॥

चोदेती वणकाए, पगते लोणाइयाण किं गहणं ।
आहारे अहिगारो, तदुवकारी अओ गहणं ॥४८३६॥

चोदगो भणति – "पलंबादिवणस्सतीए पत्थुए लोणादिपुढविकायस्स किं गहणं कज्जति" ?

आयरिओ भणति – मए आहारत्थं पलंबादी पगता, तस्स य आहारस्स लोणं उवकारि भवति, तेणं तग्गहणं कज्जति ॥४८३६॥

पुणो चोदगाह–

छहि णिप्पज्जति सो उ, तम्हा खलु आणुपुव्वि किं ण कता ।
पाहण्णं बहुयत्तं, णिप्फज्जति सुहं च तो ण कमो ॥४८३७॥

---

1 गा० ४८१७ ।

सो आहारो छहिं वि काएहिं णिप्फज्जति त्ति तम्हा छण्ह वि पुढविकायादियाण आणुपुव्वीए गहणं किं ण कयं ? ।

आयरिओ भणति—तम्मि आहारे वणस्सतीए पाधण्णं, आहारे वणस्सती बहुतरो गच्छति, वणस्सतिकाएण य सुहं आहारो णिप्फज्जति, अण्णेहिं काएहिं तहा ण सक्कति, एतेण कारणेण कमो ण कतो ॥४८३७॥ खेत्ततो गतं ।

इदाणिं [1]कालतो—

> उप्पल-पउमाइं पुण, उण्हे छूढाणि जाम ण धरेंति ।
> मोग्गरग-जूधिता उ, उण्हे छूढा चिरं होंति ॥४८३८॥

छूढ त्ति उण्हे ठिया, जामो त्ति पहरमेत्तं कालं, "ण धरेंति" न जीवतीत्यर्थः । "मोग्गर" त्ति—मगदंतिपुप्फा जूहिगपुप्फा य उण्हजोणिगत्तणओ उण्हे ठिया वि चिरं जाव धरेंति ।

अथवा—"मोग्गर" त्ति पुप्फा जूहिगा एते ण य त्ति वुत्तं भवति ॥४८३८॥

> मगदंतियपुप्फाइं, उदए छूढाणि जाम ण धरेंति ।
> उप्पल-पउमाइं पुण, उदए छूढा चिरं होंति ॥४८३९॥ कंठ्या

कालतो गतं ।

इदाणिं [2]भावतो—

> पत्ताणं पुप्फाणं, सरदुफलाणं तहेव हरिताणं ।
> वेंटम्मि मिलातम्मी, णायव्वं [3]जीवविप्पजढं ॥४८४०॥

पत्तस्स पुप्फस्स सरदुफलस्स य वेंटे मिलाणे जीवविप्पजढं ति णायव्वं । जं तरुणं अबद्धट्ठियं बद्धट्ठियं वा जाव कोमलं ताव सरदुप्फलं भण्णति, वत्थुलादि हरियं भण्णति ।

अहवा – सव्वो चेव वणस्सती कोमलो हरितावत्थो भण्णति । सो वि मूलणाले मिलाणे णायव्वो, "जीवविप्पजढो" त्ति – भावमिण्णमित्यर्थः ॥४८४०॥ भावतो गतं । चउव्विहे जाणणेत्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[4]गहण" त्ति दारं—

> चउभंगो गहण पक्खेवए य एगम्मि मासियं लहुगं ।
> गहणे पक्खेवम्मि य, होंति अणेगा अणेगेसु ॥४८४१॥

एक्को गहो एक्को पक्खेवो १ । एक्को गहो अणेगे पक्खेवा २ ।
अणेगे गहा एक्को पक्खेवो ३ । अणेगे गहा अणेगे पक्खेवा ४ (एत्थ) ।
लंबणेण ॥ गाहा ॥ वयणे पक्खेवो भवति ।
अचित्तवणस्सतिकाए पढमभंगे गहणपक्खेवेसु पत्तेयं मासियं भवति ।
बितियभंगे एगगहणे मासियं, पक्खेवट्ठाणे जत्तिया पक्खेवा तत्तिया मासा ।
ततियभंगे जत्तिया गहणा तत्तिया मासिया, पक्खेवे एक्को मासो ।

---

१ गा० ४८१७ । २ गा० ४८१७ । ३ भावभिन्नं तु इति पूनासत्कसूत्र भाष्यप्रतौ । ४ गा० ४८२० ।

चउत्थभंगे अणेगगहण-अणेगपक्खेवेसु पत्तेयं अणेगा मासिया भवंति ।

एयं पि जहा केवली गहण-पक्खेव-णिप्फण्णं पच्छित्तं जाणति दोसे य तहा गीओ वि जाणति ।

॥४८४१॥ "गहणे" त्ति दारं गतं,

इदाणिं "[1]तुल्ले त्ति दारं –

पडिसिद्धा खलु लीला, बितिए ततिए य तुल्लदव्वेसु ।
णिद्दयता वि हु एवं, बहुधाए एगपच्छित्तं ॥४८४२॥

चोदगो भणति – "बितिअभंगे एगफलस्स गहियस्स बहूण वा जुगवं गहियाण बहुवारा पक्खित्तं उं बहूणि मासियाणि देह, जं च ततियभंगे बहूणि [2]वणप्फलादीणि घेत्तुं छेतुं वा अणेगगहणे अणेगमासियाण णं तं सुंदरं, जं एत्थ चेव एक्को पक्खेवो त्ति काउं एगं मासियं देह एयं मे अणिट्ठं भवति, तुल्लदव्वेसु समा सोधी । अण्णं च मे इमं पडिभाति तुब्भे लीला – "पडिसेहणिमित्तं पच्छित्तं देह, ण उ जीवघाउ त्ति उं । अण्णं च एवं तुज्झं णिद्दयया भवति, जं बहूणि छित्तुं तेसिं एगपक्खेवे एगं मासियं देह ॥४८४२॥

आयरिओ भणति –

चोयग ! णिद्दयतं चिय, णेच्छंता विडसणं पि णेच्छामो ।
निव छगल मेच्छ सुरकुड मताऽमताऽऽलिप भक्खणया ॥४८४३॥

हे चोयग ! "णिद्दययं चेव णेच्छंता" विविधं डसणा विडसणा तं णेच्छामो ।

कहं ? भणति – एत्थ दोहिं मिच्छेहिं दिट्ठंतं करेंति आयरिया –

एगस्स रण्णो दो मेच्छा ओलग्गा, तेण रण्णा मिच्छाणं तेसिं तुट्ठाणं दो सुराकुडा दो य गला दिण्णा, ते तेहिं गहिया । तत्थ एगेणं छगलो एगप्पहारेणं मारेतूणं खइओ, दोहिं तीहिं ा दिणेहिं । बितिओ एक्केक्कं अंगं छेत्तुं खायति, तं पि से छेदंगथामं लोणेणं आसुरादीहि वा गणेण वा लिपइ मुत्तेण वा, एसो तं मंसं खायति, सुरं च पिवंतो, एवं तस्स छगलस्स जीवंतस्सेव ायाणि छेत्तुं छेत्तुं खइयाणि, मतो य । पढमस्स एगप्पहारेण एक्को वधो, बितियस्स जत्तिएहिं छेदेहिं मरति तत्तिया वधा । लोगे य पावो गणिज्जति, णिद्दयया वि तस्स चेव ।

एवं जेण पलंबादिगे एक्केक्को पक्खेवो कओ तस्स एक्कं मासियं, जो विडसतो खायति तस्स तत्तिया पच्छित्ता, वणचिक्कणाए य पारितावणियाए किरियाए वट्टति । विडसणा णाम आसादेंतो थोवं थोवं खायति ॥४८४३॥

किंच –

अच्चित्ते वि विडसणा, पडिसिद्धा किं मु सच्चेतणे दव्वे ।
कारणपक्खेवम्मि य, पढमो ततिओ य जयणाए ॥४८४४॥

जं पि अचितदव्वं तत्थ वि विडसणा पडिसिद्धा रागो त्ति काउं, किमंग पुण सचित्तदव्वे ? जत्थ पुण कारणसचित्तं भक्खेंति तत्थ पढमभंगेण ततियभंगेण एगो पक्खेवो कायव्वो त्ति, तिपरिरया जयणा ॥४८४४॥ तुल्ले त्ति गयं ।

---

१ गा० ४८२० । २ तण, इत्यपि पाठः ।

"[1]रागद्दोसे अणंतकायस्स वज्जण" त्ति दारं –

पायच्छित्ते पुच्छा, [2]करण महिड्ढि [3]दारुभरथली य दिट्ठंतो ।
चउत्थपयं च विकडुभं, पलिमंथो चेव णाइण्णं ॥४८४५॥

"[4]पायच्छित्ते पुच्छा" अस्य व्याख्या –

चोदेति अजीवत्ते, तुल्ले कीस गुरुगो अणंतम्मि ।
कीस य अचेयणम्मि य, पच्छित्तं दिज्जती दव्वे ॥४८४६॥

"पुच्छ" त्ति वा "चोदण" त्ति वा एगट्ठं ।

चोदगो वदेति – ततियचउत्थेसु भंगेसु परित्ते य अणंते य तुल्ले अजीवत्ते, किं कारणं परित्ते मासलहुं अणंते मासगुरुं ? किं वा परित्ते अणंते वा अचेयणे दव्वे पच्छित्तं दिज्जति ?

अण्णं च रागदोसी भवंतो । जं अचेयणे परित्ते मासलहुं देह, एत्थ भे रागो । जं च अचेयणे अणंते मासगुरुं देह, एत्थ भे दोसो ॥४८४६॥

जं चोदियं "कीस" परित्ते लहुगो अणंते गुरुगो, "जं च रागदोसी" एत्थ उत्तरं इमं –

सादू जिणपडिकुट्ठो, अणंतजीवाण गायणिप्फण्णो ।
गेही पसंगदोसा, अणंतकाए अओ गुरुगो ॥४८४७॥

अणंतवणस्सति-जीवाणं जं गायं तं अणंतजीवेहिं णिप्फण्णं, तं च परित्तवणस्सतिसमीवातो "सादु" ति सुस्वादतरं, तह्मा जिणेहिं पडिसिद्धं । कहं ? उच्यते – जेण कारणे विसुद्धं परित्तं घेत्तव्वं । किं च अणंतवणस्सतीसु सुस्वादुतर इति अधिगरागे घी भवति, गेहिपसंगे य अधिकतरा रागदोसा भवंति । इत्यतो अणंते अधिकतरं पच्छित्तं । दव्वाणुरूवओ य देंतस्स रागद्दोसा वि ण भवंति ॥४८४७॥ "पुच्छ" त्ति दारं गतं ।

जं च चोदितं "कीस अचित्ते पच्छित्तं देह", एत्थ उत्तरं–अणवत्थपसंगवारणाणिमित्तं सजीवपरिरक्खणाणिमित्तं च ।

आयरिया उच्छुकरणेणं महिड्ढिएणं दारुभर थलिए य दिट्ठंतं करेंति ।

एत्थ पढमं "[5]उच्छुकरणदिट्ठंतो –

ण वि खातियं ण वि वयी, ण गोण-पहियातिए णिवारेंति ।
इति करणभईछिन्ने, विवरीय पसत्थुवणतो तु ॥४८४८॥

एगेण कुडुं विणा उच्छुकरणं रोवितं, तस्स परं तेण ण वि खातिया खता, णा वि वतीए पलियं, णावि गोणादी वारेति, णावि पहिया खायंते वारेति, ताहे अवारिज्जमाणेहिं गोणादीहिं तं सव्वं उच्छादियं, इतिसद्दो एवऽत्थे, एवं करेंतो उच्छुकरणंभतीते छिण्णो । "भती" णाम भयगाणं कम्मकराणं ति वुत्तं भवति । जं च परायय छेत्तं वारेंतेण वुत्तं एत्तियं ते दाहंति तं पि दायव्वं, एवं सो उच्छुकरणे विणट्ठे मूले छिण्णे जं जस्स देयं तं अदेंतो बद्धो विणट्ठो य ।

---

१ गा० १३१ । २ उच्छुकरण, इति बृहत्कल्पे गा० ९८५ । ३ दारुथली, इति बृहत्कल्पे गा० ९८५ ।
४ गा० ४८४५ । ५ गा० ४८४५ ।

अण्णेण वि उच्छुकरणं कयं, सो विवरीतो भणियव्वो। खादियादि सव्वं कतं। जे य गोणादी पडंति ते तहा उत्रासेति जहा अण्णे वि ण ढुक्कंति। एस पसत्थो ॥४८४८॥

एयदिट्ठंतस्स इमो उवणयो –

को दोसो दोहिं भिण्णे, पसंगदोसेण अणरुई भत्ते।
भिण्णाभिण्णग्गहणे, ण तरति सजिए वि परिहरितुं ॥४८४९॥

जो गिद्धम्मयाए तित्थकरवयणं अकरेंतो पलंबे घेत्तुकामो भणेत्ता "को दोसो" त्ति दोहिं दव्वभाव-भिण्णग्गहणं करेति, पुणो पुणो तेण पलंबभोगरसपसंगेण पच्छा तेहिं अलब्भमाणेहिं भत्ते अणरुती ताहे "भिण्णाभिण्णे" त्ति जे भावतो भिण्णा दव्वतो अभिण्णा ते गेण्हति, जाहे तं पि ण लब्भति ताहे पलंबरसगेहि गिद्धो ण तरति सजीए वि परिहारिउं, विणस्सति य संजमजीवियाओ, जहा सो उच्छुकरणकासगो। सो य कासगो एगभवियं मरणं पत्तो एवं इमो वि अणेगाइं जातियव्वमरियव्वाइं पावति। एस अप्पसत्थो उवणओ ॥४८४९॥

इमो पसत्थो उवणओ – जहा तेणं कासगेणं ते गोणादी त्रासिता रक्खितो य छेत्तो इहलोइयाणं कामभोगाणं आभागी जाओ। एवं केणइ सिस्सेणं दोहि वि भिण्णं पलंबं आणितं आयरियाणं च आलोइयं ति, तेहिं आयरिएहिं णिसट्ठं चमढित्ता –

छड्डावित-कतदंडे, ण क्कमति मती पुणो वि तं घेत्तुं।
ण य वट्टति गेही से, एमेव अणंतकाए वि ॥४८५०॥

छड्डावितो ते पलंबे, पच्छित्तदंडो य से दिण्णो, ताहे तस्स छड्डावियकयदंडस्स मती ण कमति पुणो वि तं घेत्तुं, ण वि से गेवी वट्टति पलंबेसु, जातितव्वमरियव्वाणि य ण पावति। एयं परित्ते भणियं। "एमेव अणंतकाए वि" त्ति एतेण चेव कारणेणं अणंते गुरुगं पच्छित्तं दिज्जति ॥४८५०॥ "उच्छुकरणे" गतं।

इदाणि "[1]महिड्ढियदिट्ठंतो" –

कण्णंतेपुरमोलोअणेण अणिवारितं जह विणट्ठं।
दारुभरो य विलुत्तो, णगरद्दारं अवारेंतो ॥४८५१॥

महिड्ढितो णाम राया। तस्स कण्णंतेपुरं। तं वायायणेहिं ओलोएंतं ण को वि वारेति। ताहे तेणं पसंगेणं णिग्गंतुमाढत्ताओ, तह वि ण को ति वारेति। पच्छा विडपुरिसेहिं समं आलावं काउमाढत्ताओ, एवं अवारिज्जंतीओ विणट्ठाओ।

"[2]दारुभरदिट्ठंतो" एगस्स सेट्ठिस्स दारुभरिया भंडी पविसंती, णगरदारे एगं दारुअं "सयं पडियं" ति तं चेडरूवेण भंडीओ चेव गहियं, तं अवारिज्जमाणं पासित्ता सव्वो दारुभरो विलुत्तो लोगेणं ॥४८५१॥ एते अपसत्था।

इमे पसत्था –

वितिएणोलोएंती, सव्वा पिंडेतु तालिता पुरतो।
भयजणणं सेसाण वि, एमेव दारुहारी वि ॥४८५२॥

---

१ गा० ४८४५। २ गा० ४८४५।

वितिएणं अंतपुरपालगेण एगा उलोयंती दिट्ठा, ताहे तेण सव्वातो पिंडित्ता तासिं पुरतो सा तालिता, ताहे सेसियाओ वि भीयाओ ण पलोएंति। एवं अंतेपुरं रक्खियं। एवं पढमदारुहारी वि पिट्टिओ, एवं दारुभरो वि रक्खितो ॥४८५२॥

इदाणिं "[1]थलि दिट्ठंतो" –

थलि गोणि सयं मतभक्खणेण लद्धप्पसरो पुणो वि थलिं।
घाएत्तु वितिए पुण कोट्टगवंदिग्गह णियत्ती ॥४८५३॥

थली णाम देवद्रोणी, ततो गावीणं गोजूइं गताणं एका जरगवी मता, सा पुलिंदेहिं "सयं मय" त्ति खइया, कहियं गोवालएहिं डंगराणं। "डंगरा" पादमूलिया। ते भणंति–"जइ खतिया खतिया णाम"। ते पसंगेणं अवारिज्जंता अप्पणा चेव मारिता। पच्छा तेहिं लद्धवसरेहिं थली चेव घातिता। एस अपसत्थो।

इमो पसत्थो–"वितिओ पुण कोट्टगवंदिग्गह नियत्ति" त्ति तहेव गोजूतिं गयाणं गावीणं एक्का मया, सा पुलिंदेहिं खतिता, गोवालेहिं सिट्ठं डंगराणं, ते डंगरा घातीसु वितियदिवसे कोट्टगं चेव, कोट्टं णाम पुलिंदपल्ली, "मा पसंगं काहिंति" त्ति काउं तत्थ वंदिग्गहो कओ। एवं पुलिंदाणं णियत्ती कया तेहिं डंगरेहिं। उवणओ सो चेव जो उच्छुकरणदिट्ठंते ॥४८५३॥

इदाणिं "चउत्थपदं विकड्डुभं" अस्य व्याख्या –

विकड्डुभमग्गणे दीहं, च गोयरं एसणं व पेल्लेज्जा।
णिप्पिस्सऽसोंडणायं, मुग्गछिवाडी य पलिमंथो ॥४८५४॥

जं भावतो वि भिण्णं दव्वतो वि भिण्णं एयं चउत्थपदं भण्णति। एत्थ तिण्णि दारा विकड्डुभं पलिमंथो अणाइण्णं चेव। "विकड्डुभं" णाम वीडको सालणं वा। अण्णे भणंति – उवातियं।

अण्णम्मि भत्तपाणे लद्धे वि तं विकड्डुभं मग्गमाणो दीहं गोयरं करेति, एसणं वा पेल्लेज्जा, फासुएसणिज्जं अलभमाणे "[2]अफासुयएसणिज्जं" ति गेण्हेज्जा।

कहं? भण्णइ – एत्थ "निप्पिस्सऽसोंडणातं"। णायं णाम आहरणं। जहा एगो "निप्पिस्सो" त्ति–अमंसभक्खी भण्णति, असोंडो अमज्जपाणो भण्णति। तस्स य मज्जपाएहिं सह संसग्गी। अण्णया तेहिं भणितो–मज्जे णिज्जीवे को दोसो? तेहिं य सो भणंतेहिं [3]करणिं गाहितो लज्जमाणो एगंते परेण आणियं पियति। पच्छा लद्धरसो वहुजणमज्झे वीहीए वि चत्तलज्जो पाउमाढत्तो। पुणो तेहिं भणियं – "केरिसं मज्जपाणं विणा विलंकेण, परमारिए य मंसे को दोसो? खायसु इमं"। तत्थ वि सो करणिं गाहितो "परमारिए णत्थि दोस" त्ति खायति। पच्छा लद्धरसो कढिणचित्तीभूतो अप्पणो वि मारेउं खायति। जहा सो सोंडओ विडंकेण विणा ण सक्केइ अच्छेउं, एवं तस्स वि पलंबे खायंतस्स पच्छा गिद्धस्स पलंबेण विणा कूरो ण पडिभाति। तस्स एरिसी गेही तेसु जायति जेण तेहिं विणा एक्कदिणं पि ण सक्केति अच्छिउं। विकड्डुभे त्ति गतं।

इदाणिं "[4]पलिमंथे" त्ति दारं–"मुग्गछिवाडी पलिमंथो" त्ति पलंबे खायंतस्स आयविराहणा।

---

१ गा० ४८४५। २ अफासुयाणेसणिज्जंति इत्यपि पाठः। ३ शपथ। ४ गा० ४८४५।

कहं ? उच्यते – जहा एक्का अविरइया मुग्गछेत्ते कल्लेदाणि उलुण्हिया खायंती अच्छति जाव पहरो गओ । तं च एक्को राया पासति । तस्स कोउअं जायं – केत्तियं खत्तियं होज्जति, पोट्टं फालियं, दिट्ठो अप्पो फेणरसो । एवं विराहणा होज्जा, पलिमंथो वि भवति, जाव सो ताणि खायति ताव सुत्तत्थेसु हाणी भवति ॥४८५४॥ पलिमंथे त्ति दारं ।

इदाणिं "[1]अणाइण्णं" ति दारं –

अवि य हु सव्वपलंबा, जिणगणहरमाइएहिऽणाइण्णा ।
लोउत्तरिया धम्मा, अणुगुरुणो तेण तव्वज्जा ॥४८५५॥

"अणाइण्णा" णाम – अणासेवितं त्ति वुत्तं भवति । ते य सव्वेहिं तित्थकरेहिं गोयमादिहिं य गणधरेहिं आदिसद्दातो जंबूणाममादिएहिं आयरिएहिं जाव संपदमवि अणाइण्णा, तेणं कारणेणं ते वज्जणिज्जा । आह "तो किं जं जिणेहिं अणाइण्णा तो एयाए चेव आणाए वज्जणिज्जा ?" ओमित्युच्यते, लोउत्तरे जे धम्मा ते अणुधम्मा ।

किमुक्तं भवति ? जं तेहिं गुरूहिं चिण्णं चरियं आचेट्ठियं तं पच्छिमेहिं वि अणुचरियव्वं, जम्हा य एवं तम्हा तेहिं पलंबा ण सेविया, पच्छिमेहिं वि ण सेवियव्वा । अतो ते वज्जणिज्जा । वं अणुधम्मया भवति ॥४८५५॥

चोदगाह – "जइ जं जं गुरूहिं चिण्णं तं तं पच्छिमेहिं अणुचरियव्वं तो तित्थकरेहिं पाहुडिया सातिज्जिता पागारततियं देवच्छंदगो पेढं च अतिसया य एहिं तेहिं उवजीविउं, अम्हे वि एयं किं ण उवजीवामो ?"

आचार्याह –

कामं खलु अणुगुरुणो, धम्मा तह वि उ ण सव्वसाधम्मं ।
गुरुणो जं तु अतिसए, पाहुडियाती समुपजीवे ॥४८५६॥

सिस्साभिप्पायअणुमयत्थे "कामं" सव्वं पाहुडियादि समुवजीवति त्ति वुत्तं भवति । खलुसद्दो विसेसणे । किं विसेसति ? ण सव्वहा अणुधम्मो ।

कहं ? उच्यते – गुरु तीर्थकरः । अतिशयास्तस्यैव भवंति नान्यस्य । अत्रानुधर्मता न चिन्त्यते । पाहुडियादि उवजीवति सो "तित्थकरजीयकप्पे" त्ति काउं अत्राप्यनुधर्मता न चिन्त्यते, तीर्थकरकल्पत्वादेव, जत्थ तित्थकरेतराणं सामण्णधम्मता तत्थ अणुधम्मो चिंतिज्जति ॥४८५६॥

तं च अणाइण्णे दंसिज्जति इमं –

सकड[1] दह[2] समभोम्मे[3], अवि य विसेसेण विरहिततरागं ।
तह वि खलु अणाइण्णं, एसऽणुधम्मा पवयणम्मि ॥४८५७॥

"सगड-दह-समभूमे" त्ति तिण्णि दारा, अवसेसा तिण्णि पदा, तिहिं वि दिट्ठंतेहिं उवसंघारेयव्वा । ॥४८५७॥

---

१ गा० ४८४५ ।

तत्थ पढम "सगडं" ति दारं – जया समणे भगवं महावीरे मगधविसयाओ वीतिभयं णगरं पत्थितो उद्दायणस्स पव्वावगो तइया अंतरा साहुणो भुक्खत्ता। जत्थ भगवं आवासियल्लओ तत्थ तिलभरियसगडसत्थो आवासितो।

वक्कंतजोणि थंडिल, अतसा दिण्णा ठिती अवि छुहाए।

तह वि ण गेण्हंसु जिणो, मा हु पसंगो असत्थहते ॥४८५८॥

ते तिला वक्कंतजोणिया, थंडिले य ठिएल्लया। अवि य ते तिला [1]विसेसेण विरहिततरा तसेहिं, विसेसग्गहणं तदुत्था आगंतुगा वा तसा णत्थि, गिहत्थेहिं य दिण्णा – "भगवं! जति कप्पंति तो घेप्पंतु इमे तिला", तह वि ण गेण्हंसु जिणो "असत्थोवहय" त्ति काउं, मा पसंगं करेस्संति "तित्थकरेणं गहिय" त्ति इमं आलंबणं काउं। एयं अणाइण्णं। एस पवयणे अणुधम्मो ॥४८५८॥

इदाणिं [2]दह त्ति दारं –

एमेव य णिज्जीवे, दहम्मि तसवज्जिते दए दिन्ने।

समभोमे अवि ठिती, जिमितासन्ना ण वाऽणुण्णा ॥४८५९॥

तदा तत्थेव दहो णिज्जीवो आउक्काओ, अवि य विसेसेण विरहिततरागो (तसेहिं), थंडिल्लं च तं सव्वं, सा सव्वा पुढवी वुक्कंतजोणिग त्ति वुत्तं भवति, दहसामिणा य दिण्णं तं दगं, अवि तत्थ केइ साधू तिसाभिभूता ठितिखयं करेज्जा, ण य सामी "असत्थोवहयं" त्ति काउं अणुजाणेज्जा। "तित्थगरेण गहियं" ति मा पसंगो भविस्सति। एयं अणाइण्णं। एस अणुधम्मो पवयणे।

इदाणिं [3]"भोमे" त्ति दारं – "समभोमे" त्ति पच्छद्धं। समभोम्मरुक्खविरहियउद(व)गओदेहि-कागोप्पददालिझुसिरविरहियं पुढवी वक्कंतजोणी, अवि य विसेसेण विरहियतरागं तसेहिं, अणावातमसंलोयं च साधू य जिमियमेत्ता, अण्णं च सत्थहतं थंडिलं णत्थि, ण पावंति वा, "आसण्णे" त्ति भावसण्णाट्टा (सणागा)।

अधवा – तं चेव असत्थहयं थंडिलं आसण्णं अवि साधू जिवितक्खयं करेज्ज, ण य सामी अणु-जाणेज्जा, मा "इमं तित्थकरेहिं अणुण्णायं" ति असत्थहते पसंगं करेज्जा। एवं अणाइण्णं, एस अणुधम्मो पवयणे ॥४८५९॥ एस सव्वो विधी साधूण भणितो।

णिग्गंथीण वि एस चेव विधी। जतो भणति –

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ णायव्वो।

सविसेसतरा दोसा, तासिं पुण गेण्हमाणीणं ॥४८६०॥ कंठा

णवरिं – तासिं सविसेसा पलंबेण हत्थकम्मादिणो दोसा, इमं कप्पसुत्ताभिप्पायतो भणनि। तं च इमं कप्पस्स वितियसुत्तं –

कप्पति णिग्गंथाण वा निग्गंथीण वा आमे तालपलंबे भिण्णे पडिग्गाहित्तए।

---

१ गा० ४८५७। २ गा० ४८५७। ३ गा० ४८५७।

एयस्स सो चेव पुव्वभणितो सुत्तत्थो। सुत्तेणं अणुण्णायं जहा कप्पति आमं, "भिण्णं" ति-[1]ततिय-चउत्थेहिं भंगेहिं जं भावभिण्णं। एयं सुत्तेणं अणुण्णातं, अत्थतो पडिसेहति "ण कप्पति त्ति।"

आह चोदकः – "तो किं सुत्ते णिबद्धं जहा कप्पति त्ति भिण्णं ? उच्यते –

जति वि णिबंधो सुत्ते, तह वि जतीणं ण कप्पति आमं।
जति गेण्हति लग्गति सो, पुरिमपदणिवारिते दोसे ॥४८६१॥

के पुरिमपदणिवारिता दोसा ? जे पढमसुत्ते दोसा भणिता, तेसु लग्गति।

सुत्तं तु कारणियं, गेलन्न-ऽद्धाण ओमम्माईसु।
जह णाम चउत्थपदे, इयरे गहणं कहं होज्जा ॥४८६२॥

गेलण्णद्धाणोमोदरिए वा कारणियं निरत्थयं होइ सुत्तं।

इति दप्पतो अणाइण्णं, गेलण्णऽद्धाण ओम आइण्णं।
तत्थ वि य चउत्थपदे, इतरे गहणं कहं होज्जा ॥४८६३॥

इति एयं दप्पतो गेण्हंतस्स पलंबं अणाइण्णं। अहवा – "भिण्णं कप्पइ" त्ति एयं पि अत्थे णिसिद्धं दव्वतो चेव, जं पुण अणुण्णायं सुत्तेणं एयं कारणतो। ते य कारणे इमे – गेलण्णकारणं एवं अद्धाणोमे य। एतेसु कारणेसु आइण्णं। तत्थ चउत्थभंगो, ततो तत्तियभंगो। "इतर" त्ति पढमबितियभंगा भावतो अभिण्णा, तेसु गहणं कहं होज्जा ? तेसु वि कारणा गहणं होज्ज ति ॥४८६३॥

एवं भणिए चोदगाह –

पुव्वमभिण्णा भिण्णा, य वारिता कहमियाणि कप्पंति।
सुण आहरणं चोदग ! ण कमती सव्वत्थ दिट्ठंतो ॥४८६४॥

चोदगो भणति – "पुव्वसुत्ते तुब्भेहिं भणियं भिण्णा अभिण्णा य चउसु वि भंगेसु ण कप्पंति। इदाणिं भणह – भावभिण्णा कप्पंति कारणतो वा चउसु वि भंगेसु कप्पति त्ति, ण जुत्तं भणह"।

आयरिओ भणति – जहा कप्पंति तहा सुणसु आहरणं चोदग !।

गुरुवयणं असुणेत्ता दप्पं असहमाणो चोदगो भणति– "ण कमति सव्वत्थ दिट्ठंतो" ॥४८६४॥

णोदग एवाह –

जति दिट्ठंता सिद्धी, एवमसिद्धी उ आणगेज्झाणं।
अह ते तेसि पसायण, किं णु हु दिट्ठंततो सिद्धी ॥४८६५॥

चोदगो आयरियं उवालभति – जति अत्थाणं दिट्ठंतेणं सिद्धी कज्जति तो आणागेज्झाणं अत्थाणं असिद्धी, अह तेसि आणाओ चेव पसिद्धी किणु हु दिट्ठंततो सिद्धी। "किण्णु" ति किमिति, हु एवार्थे, किमित्येवं दृष्टान्तेन अर्थसिद्धिः क्रियते। किं चान्यत्, दिट्ठंतेण जं जं अप्पणो इट्ठं तं तं सव्वं पसाहिज्जति॥४८६५॥

कहं ? उच्यते –

कप्पम्मि अकप्पम्मि अ, दिट्ठंता जेण होंति अविरुद्धा।
तम्हा ण तेसि सिद्धी, विहि-अविहि-विसोवभोग इव ॥४८६६॥

---

१ गा० ४७८१।

जहा "कप्पति हिंसा काउं विधीए" त्ति पइण्णा।

के हेऊ ? णिरपायत्तणतो। जम्मि कज्जमाणे इह परलोगे वा श्रावातो ण भवति तं कप्पति।

को दिट्ठंतो ? विधि-श्रविधि-विसोपभोग इव। जहा विसं विधीए मंतपरिग्गहितं खज्जमाणं श्रदोसाय भवति, श्रविधीए पुण खज्जमाणं मारगं भवति, तहा हिंसा विधीए मंतेहिं जणण-जयमादीहि कज्जमाणा ण दुग्गतिगमणाय भवति, तम्हा णिरवायत्ता पस्सामो, हिंसा विधीए कप्पति काउं।

एवं दिट्ठंतेण कप्पमकप्पं कज्जति, श्रकप्पं कप्पं कज्जति।

तम्हा दिट्ठंतेणं जा सिद्धी सा श्रसिद्धिरेव ॥४८६६॥

श्रात्माभिप्राये चोदकेनोक्ते श्राचार्याह –

श्रसिद्धी जति णाएणं, णायं किमिह उच्यते।
श्रह ते णायतो सिद्धी, णायं किं पडिसिज्झइ ॥४८६७॥

यदि दृष्टान्तेन श्रर्थानामसिद्धिस्ततस्त्वया इह विपदृष्टान्तः किमुच्यते ? श्रह विधि-श्रविधिदृष्टान्तेन हिंसार्थः त्वया साध्यते – मयोच्यमानो दृष्टान्तः किं प्रतिषिद्धचते ? ॥४८६७॥

किं च –

श्रंधकारो पदीवेण, वज्जए ण तु श्रन्नहा।
तहा दिट्ठंतिश्रो श्रत्थो, तेणेव उ विसुज्झति ॥४८६८॥

श्राणागेज्झे श्रत्थे दिट्ठंतो ण कमति, ण वा श्रत्थि दिट्ठंतो तेण ते श्राणा गेज्झा, जो पुण दिट्ठंतितो श्रत्थो स तेण परिस्फुटो विसुज्झति त्ति श्रतो दिट्ठंतेण पसाहिज्जति त्ति ण दोसो ॥४८६८॥

किं च सुप्रीता वयं – भवता स्ववाक्येनैव दृष्टान्तेनार्थप्रसाधनमभ्युपगतमिति।

किं च –

एसेव य दिट्ठंतो, विहि-श्रविहीए जहा विसमदोसं।
होइ सदोसं च तहा, कज्जितर जता-ऽजत फलादी ॥४८६९॥

जो एस भवता दिट्ठंतो कतो ममं पि एसेव दिट्ठंतो श्रभिप्पेयसुतत्थं साधयिस्सति।

कहं ? उच्यते – जहा विसं विधीए भुज्जमाणं श्रदोसकारयं भवति, श्रविधीए दोसकारयं भवति, "तह" त्ति एवं कज्जे जयणाए पलंबा सेविज्जमाणा हियाय भवंति, "इतरे" त्ति श्रकज्जे जयणाए श्रजयणाए वा सेव्वमाणा श्रहियाय भवंति ॥४८६९॥

श्रण्णं च ते श्रणालोइऊण विसदिट्ठंतो कयो –

श्रायुहे दुण्णिसट्ठम्मि, परेण वलसाहितो।
वेताल इव दुज्जुत्तो, होहि पच्चंगिराकरो ॥४८७०॥

जहा केणति सारीरवलदप्पुद्धतेण श्रायुधं गहियं, परवधाए णिसट्ठं। तं च दुणिसट्ठं कयं जेण परो ण साधितो। तं चेव परेण गहियं, तेणेव श्रायुधेण सो वहितो।

श्रहवा – श्रणिसट्ठं चेव परेणं "वलसाहितं" वलाकारेणं ति वुत्तं भवति।

अधवा – मंत्रतादिना होमजावादीहि वेतालं साहयिस्सामि त्ति आहूतो आगतो, किं चि दुप्पउत्तं दट्ठूणं स वेयालो तस्स साहगस्स इट्ठमत्थं ण साधेति, प्रत्युत अपकाराय भवति।

एवं हे चोदग ? तुमे विधिअविधिविसदिट्ठंतो ममाभिप्पेतमत्थस्स घाताय पयुत्तो ममं पि एतेणेव इट्ठमत्थे सिद्धी जाता, सवयणं च ते घातियं "ण कमति सव्वत्थ दिट्ठंत" इति ॥४८७०॥

अधवा –

णिरुअस्स गदपओगो, णिरत्थओ कारणे य अविहीए ।

इय दप्पेण फलादी, अहिता कज्जे य अविहीए ॥४८७१॥

जहा णिरुयस्स ओसहपाणं णिरत्थयं, रोगकारणे समुप्पण्णे पुण ओसहपाणं कज्जमाणं अविधीए सरीरपीडाकरं विणासकरणं वा भवति, "इय" त्ति एवं दप्पेण पलवा अहिया संसार-वद्धणा भवंति। ओमादिकज्जे य "अविधीए" त्ति अजयणाए गहिया इह परत्थ य अहिया भवंति ॥४८७१॥

किं च दिट्ठंतसाहणत्थं भण्णते इमं –

जति कुसलकप्पियातो, ण होज्ज उवमाओ जीवलोगम्मि ।

छिण्णऽब्भं पित्र गयणे, भमेज्ज लोओ निरुवमाओ ॥४८७२॥

"कुसल" त्ति पंडिता, तेहिं कप्पिया जा जस्स अत्थस्स साधिका उवमा सा तम्मि चेव अत्थे णिउत्ता, जति ताओ उवमाओ ण होज्ज इमम्मि मणुयजीवलोगो छिण्णऽब्भमिव, "छिण्णऽब्भं" ति एगं अब्भयं तं जहा वाएण इतो य इतो य भामिज्जति निराश्रयत्वात् तहा इमो वि लोगो भामिज्जति णिरुवमाओ, णिग्गया उवमा जत्थ अत्थे सो अत्थो दृष्टांताभाव इत्यर्थः। तो दिट्ठंतितो अत्थो दिट्ठंतेण विणा ण इच्छिओ भवति, ण सम्ममुवलब्भति त्ति वुत्तं भवति।

उक्तं च सिलोगो –

तावदेव चलत्यर्थो, मन्तुर्विषयमागतः ।
यावन्नोत्तम्भनेनेव, दृष्टान्तेन प्रसाध्यते ॥

एवं बहुधा उक्ते गुरुणा, चोदगाह – "यद्येवं ततः क्रियतां दृष्टान्तः।" उच्यते। श्रूयतां तत्थ –

मरुएहि य दिट्ठंतो, चउहिं णेयव्वो आणुपुव्वीए ।

एवमिहं अद्धाणे, गेलण्णे तह य ओमे य ॥४८७३॥

एतीए पुव्वद्धस्स इमं वक्खाणं –

चउरो मरुग विदेसं, साहपारए सुणग रण्ण सत्थवहो ।

ततियदिणे पूइमुदगं, पारउ सुणगं हणिय खामो ॥४८७४॥

चत्तारि मरुआ सत्थेण विदेसं गच्छंति। तेसिं पंचमो साहपारगो। तेण भणिता – "सुणगं सह णेह।" तेहिं सह णीतो। ते सुणहच्छड्ढा अणेगाहगमणिज्जं विहं पवण्णा। तेसिं तत्थऽरण्णे

वच्चंताणं सो सत्थो वहितो मुट्ठो त्ति भणियं होति। सो य सत्थो दिसोदिसिं पलातो। इतरे वि मरुयपंचजणा सुणगच्छट्ठा एक्कतो पट्ठिता। अईवतिसियभुक्खिया तइयदिणे पेच्छंति पूइमुदगं, मयगकलेवराउलं।

तत्थ ते साहपारगेण भणिता-एयं सुणगं मारेउं खामो, एयं च सरुहिरं पाणियं पिवामो, अण्णहा विवज्जामो, एयं च वेदरहस्सं आवतीए भणियं ण दोसो ॥४८७४॥

एवं तेण ते भणिता -

परिणामओ उ तहिं, एगो दो अपरिणता उ अंतिमो अतीव।
परिणामओ सद्दहती, कण्णऽपरिणओ मतो एक्को ॥४८७५॥

तेसिं मरुयाणं एक्को परिणामतो, दो अपरिणामगा, चउत्थतो अतीवपरिणामगो। तत्थ जो सो परिणामओ तेणं जं साहपारगेणं भणियं, तं सद्दहियं अब्भुवगयं ति वुत्तं भवति।

जे ते दो अपरिणामया, तेसिं एक्केण साहपारगवयणं सोउं कण्णा ठइया - "अहो! अकज्जं, कण्णा वि मे ण सुणंति"। सो अपरिणामगो तं कुहियमुदगं सुणगमंसं च अखायमाणो तिसियभुक्खितो मतो ॥४८७५॥

बितिएण एतऽकिच्चं, दुक्खं मरिउं ति तं समारद्धो।
किं एच्चिरस्स सिट्ठं, अतिपरिणामोऽहियं कुणति ॥४८७६॥

जो सो बितिओ अपरिणामगो सो भणाति-"एयं एयवत्थाए वि अकिच्चं, किं पुण दुक्खं मरिज्जति" त्ति काउं "समारद्धो" णाम खइयं तेण।

जो सो अतिपरिणामो सो भणाइ - "केवच्चिरस्स सिट्ठं, वंचियामो त्ति अतीते काले जं ण खातितं।" सो अण्णाणि वि गाविगद्दभमंसाणि खादिउमाढत्तो, मज्जं च पाउं ॥४८७६॥

पच्छित्तं खु वहेज्जह, पढमो अहलहुस धाडितो बितिओ।
ततिओ य अतिपसंगा, जाओ सोवागचंडालो ॥४८७७॥

तत्थ जेहिं खइयं ते साहपारगेण भणिता—"इतो णिच्छिण्णा समाणा पच्छित्तं वहेज्जह।" तत्थ जो सो परिणामगो तेण अप्पसागारियं एगस्स अज्झावगस्स आलोइयं। तेण भणियं-वेदरहस्से वुत्तं—"परमण्णं गुलघृतमधुजुत्तं प्राशयेत्।" एसेव पढमो। एयस्स य एयं अहालहुसं पच्छित्तं दिण्णं, सुद्धो।

तत्थ जो सो अपरिणामओ, जेण "ण दुक्खं समारद्धं", सो णिच्छिण्णो समाणो सुणगकत्ति सिरे काउं चाउवेज्जस्स पादेहिं पडित्ता साहेति, सो चाउवेज्जेण धिद्धिक्कतो णिच्छूढो।

जो सो ततिओ अतिपरिणामगो "णत्थि किंचि अभक्खं अपेयं वा" अतिपरिणामपसंगेण सो मायंगचंडालो जातो ॥४८७७॥ एस दिट्ठंतो।

अयमत्थोवणओ—अद्धाणे वा गेलण्णे वा ओमोदरियाए वा—

जह पारओ तह गणी, जह मरुगा एव गच्छवासी उ।
सुणगसरिसा पलंबा, मडतोयसमं दगमफासुं ॥४८७८॥

उच्चारियसिद्धा । मरुएहिं य दिट्ठंतो ति दारं गतं ।

इदाणिं [1]"अद्धाणे" त्ति दारं ।

एवं अद्धाणादिसु, पलंबगहणं कयावि होज्जाहि ।
गंतव्वमगंतव्वं, तो अद्धाणं इमं सुणसु ॥४८७९॥

आह चोदग – अद्धाणं किं गंतव्वं न गंतव्वं ? उच्यते –

उद्दद्दरे सुभिक्खे, अद्धाणे पवज्जणाउ दप्पेणं ।
लहुगा पुण सुद्धपए, जं वा आवज्जती जत्तो ॥४८८०॥

उद्दरा – उद्दद्दरं, उद्धं पूरिज्जंति त्ति वुत्तं भवति । ते य दरा दुविधा – धन्नदरा पोट्टदरा । धन्नदरा धण्णवासणा कडपल्लादि, पोट्टाणि चेव पोट्टदरा ।

एत्थ चत्तारि भंगा – उद्दद्दरं सुभिक्खं १ । उद्दद्दरं नो सुभिक्खं २ ।
नो उद्दद्दरं सुभिक्खं ३ । णो उद्दद्दरं णो सुभिक्खं (क्खं) ४ ।

एत्थ पढमभंगे जति गच्छति अद्धाणं दप्पेणं, एत्थ जतिवि सुद्धं सुद्धेण गच्छति ण किं चि आवजति – मूलुत्तरविराहणं तहावि चउलहुं पच्छित्तं । कीस ? दप्पेणं अद्धाणं पडिवज्जति त्ति अतो चउलहुं दिन्नं । जं वा अण्णं आवज्जति त्ति "जतो" त्ति – मूलुत्तरगुणविराहणातो तण्णिप्फण्णं सव्वं पच्छित्तं । अहवा – जं वा मूलुत्तरगुणविराहणाओ आवजति तं पुण विराहणं करेति, जतो त्ति – दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो वा, तण्णिप्फण्णं सव्वं पावति । एवं ततियभंगे वि अत्थतो पत्तं । सेसेहिं वितिय – चउत्थभंगेहिं अद्धाणगमणं हवेज्जा, पढम-ततिएसु वा अण्णतरकारणे ॥४८८०॥

किं तं कारणं ? उच्यते –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।
गेलण्ण उत्तिमट्ठे, णाणे तह दंसणचरित्ते ॥४८८१॥

आगाढसद्दो सव्वाणुवादी मज्झट्ठिओ, अहवा – जं दव्वादि आगाढं सत्तविहं वुत्तं तं एत्थ दट्ठव्वं ॥४८८१॥

एएहि कारणेहिं, आगाढेहिं तु गम्ममाणेहिं ।
उवगरणपुव्वपडिलेहितेण सत्थेण गंतव्वं ॥४८८२॥

अद्धाणे जं उवकरणं गुलिगादि उवउजति तेण "पुव्वपडिलेहिएण" त्ति – गहितेणेत्यर्थः ।

अद्धाण पविसमाणो, जाणगणीसाए गाहए गच्छं ।
अह तत्थ ण गाहेज्जा, चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥४८८३॥

जाहे अद्धाणं पविसियव्वं णिच्छियं भवति ताहे आयरिया "जाणगणिस्साए" त्ति – जाणतो गीयत्थो तण्णिस्साए गच्छो अद्धाणकप्पट्ठितिं गाहेज्जति । पच्छद्धं कंठं ॥४८८३॥

---

[1] गा० ४८७३ ।

स्यान्मतिः - "को श्रद्धाणकप्पट्ठितिं गाहेति ? कहं वा गाहिज्जति" ? उच्यते -

गीयत्थेण सयं वा, वि गाहते छड्डंतो पच्चयणिमित्तं ।
सारेंति ते सुतत्था, पसंग अपच्चश्रो इहरा ॥४८८४॥

जति श्रप्पणा केणइ कारणेण वावडो तो श्रण्णेण उवज्झायादिणा गीयत्थेण गाहेति, श्रप्पणा वा गाहेति श्रण्णगीयत्थसमक्खं, ताहे सो गाहिंतो श्रंतरंतरे श्रत्थपदं छड्डेंतो कहेति, ताहे जे ते गीयत्था ते ताणि श्रत्थपदाणि संभारिंति - "इमं ते विस्सरियं" ति । किं णिमित्तं एवं कज्जति ? श्रगीयत्थाणं पच्चयणिमित्तं - "सव्वे एते जाणंति" त्ति सव्वमेवं ।

श्रध एवं ण कज्जति तो तेसिं एवं उप्पज्जइ "एत्ताहे एयं सद्दितिं सेच्छाए करेंति" । "इहर" त्ति - एवं श्रकज्जंते श्रद्धाणमुत्तिण्णा वि तत्थेत्र पसंगं करेंति, श्रपच्चतो वा भवति ॥४८८४॥

सीसो भणति - "भणह सव्वं श्रद्धाणविधिं" ।

श्राचार्याह -

श्रद्धाणे जयणाए, परूवणा वण्णिया उवरि सुत्ते ।
श्रोमे उवरिं वक्खति, रोगाऽऽतंकेसिमा जयणा ॥४८८५॥

जहा श्रद्धाणे गम्मति, जा य श्रद्धाणे विधी. जा य श्रद्धाणे जयणा, सा सव्वा उवरिं श्रद्धाणसुत्ते सोलसकमुद्देसके परूविता, तं तत्थेव भणीहामि । श्रोमे वि जा विधि पलंबगहणं पति तं पि उवरिं इहेव-उद्देसके वक्खति । इह "[1]गेलण्णं" त्ति जं दारं भणामि, तं च गेलण्णं रोगो वा भवति, श्रातंको वा ॥४८८५॥

स्यान्मतिः - "केरिसो रोगो, केरिसो वा श्रातंको ? तत उच्यते -

गंडी-कोढ-खयादी, रोगो कासादितो उ श्रातंको ।
दीहरुया वा रोगा, श्रातंको श्रासुघाती य ॥४८८६॥

गंडमस्यास्तीति गंडी गंडमालादी, श्रादिसद्दातो सिलिप्पादी, सूणियं, गिलासिणीमादी रोगो । कासो, श्रादिसद्दातो सासो, सूलं, सज्जक्खयमादी श्रातंको ।

श्रहवा - सव्वो जो दीहकालितो सो रोगो, जो पुण श्रासुघाती सिग्घं मारेति सो श्रातंको ॥४८८६॥

समासतो गेलण्णस्स इमे भेदा -

गेलण्णं पि य दुविहं, आगाढं चेव तह अणागाढं ।
आगाढे कमकरणे, गुरुगा लहुगा अणागाढे ॥४८८७॥

एतीए इमा विभासा -

आगाढमणागाढं, पुव्वुत्तं खिप्पगहणमागाढे ।
फासुगमफासुगं वा, चतुपरियट्टं तऽणागाढे ॥४८८८॥

श्रहिणा डक्को, विसं वा से केण ति दिण्णं, सज्जविसूतिगा वा विद्धाति, सूलं वा श्रासुघाती,

---

[1] गा० १८" ३ ।

एवमादि आगाढं पुव्वुत्तं । "इतरं" पुण जं कालं सहते तं अणागाढं । तम्मि आगाढे फासुयं वा एसणमणेसणं वा भ्रुड त्ति गेण्हियव्वं ।

अह आगाढे कमकरणं करेति – तिपरियट्टं पणगादिजयणं वा तो चउगुरुगा पच्छित्तं । अणागाढे पुण तिपरियट्टे कए चउत्थपरियट्टेण गेण्हति, तत्थ वि पणगपरिहाणीए ।

अह अणागाढे आगाढकरणिज्जं करेति अजयणाए वा गेण्हति तो चउलहुगा पच्छित्तं ॥४८८८॥

एत्थ गेलण्णे इमा जयणा –

वेज्जे पुच्छण जयणा, पुरिसे लिंगे य दव्वगहणे य ।
पिट्ठमपिट्ठे आलोयणाए पण्णवण जयणाए ॥४८८९॥

एस भद्दबाहुकया अत्थसंगहगाहा ।

इमा से विभासा –

वेज्जेट्ठग एगदुगादिपुच्छणे जा चउक्कउवदेसो ।
इह पुण दव्वे पलंबा, तिण्णि य [1]पुरिसाऽऽयरियमादी ॥४८९०॥

[2]अट्ठवेज्जा संविग्गादी पुव्वुत्ता गिलाणसुत्ते । "[3]पुच्छण जयण" त्ति वेज्जस्स एगो पुच्छगो ण गच्छति जमदंडो त्ति कातुं, दो ण गच्छंति जमदूअं ति काउं, चत्तारि ण गच्छंति णीहारे त्ति काउं, मा वेज्जो एयं णिमित्तं गहिस्सति, तम्हा जयणाए गंतव्वं – तिण्णि वा पंच वा सत्त वा । सो य पुच्छितो चउक्कउवदेसं देज्ज – दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । एते वि गिलाणसुत्ते वक्खाणिया । इहं दव्वतो पलंबादि भाणियव्वा ।

वेज्जो पुच्छिओ भणेज्जा – जारिसं रोगं कहेह एरिसस्स इमं वणस्सतिभेदं देह ॥४८९०॥

सो चउव्विहो होज्जा रोगभेदाओ –

पउमुप्पलमाउलिंगे, एरंडे चेव निंबपत्ते य ।
पित्तुदय सन्निवाते, वातपकोवे य सिंभे य ॥४८९१॥

एते जहासंखं पित्तादिसु हवेज्जा । जो सो गिलाणो सो इमेसिं एक्कतरो हवेज्ज – [4]गणी वा वसभो वा भिक्खू वा । भिक्खू गीतागीतो परिणामोऽपरिणामो वा । एतेसिं तिण्ह वि पुरिसाणं फासुएसणिज्जेण आलेवणादि जातेण कायव्वं, जता फासुयं ण लब्भति तदा अफासुएण वि कज्जति ॥४८९१॥

कहिज्जति य जं जहा गहियं इमेसिं –

गणि-वसभ-गीय-परिणामगा य जाणंति जं जहादव्वं ।
इतरेसिं वा तुलणा, णातम्मि य मंडिपोतुवमा ॥४८९२॥

गणि वसभ गीतो य भिक्खू जं जहा गहियं दव्वं तं जाणंति चेव आगमतो, चित्तमचित्तं वा, सुद्धमसुद्धं वा, जं वा जम्मि य [5]थक्के दव्वं घेप्पति । जो य अगीओ परिणामओ तस्स वि कहिज्जति, सो वि जं जहा कहिज्जति तं तहेव परिणमयति त्ति । "इतरे" णाम जे अगीता अपरिणामगा तेसिं ण कहिज्जति जहा "अफासुयं अणेसिज्जं" ति, तेसिं वा तुलणा कज्जति, जहा "अमुगगिहातो आयट्ठा कयं एयं आणियं ?"

१ गा० ४८८९ । २ गा० ४८८९ । ३ गा० ४८८९ । ४ गा० ४८९० । ५ अवसरे ।

अह कहं वि एतेहिं णायं जहा –"एयं अफासुयं अणेसणिज्जं वा आणियं" ति । ततो ते भंडिपोत-दिट्ठंतेहिं पण्णविज्जंति ॥४८९२॥

जा एगदेसे ण दढा उ भंडी, सीलप्पई सा य करेइ कज्जं ।
जा दुब्बला सीलविया वि संती, न तं तु सीलंति विसन्नदारुं ॥४८९३॥

जा भंडी पोतो वा एगदेसभग्गा, सेसं सव्वं दढं, सा तम्मि एगदेसे संठविता संती कज्जं करेति । जा पुण भग्गविभग्गा सुट्ठु वि संठविया कज्जं ण करेइ, ण तं संठवेंति, णिरत्थो वा उक्कोसो य तत्थ वि । एवं तुमं पि जइ जाणसि – "पउणोहं पउणो य समाणो एवं पच्छित्तं वहीहामि, अण्णं च अप्पणो आयं सज्झायज्झाणवेयावच्चादीहिं उवज्जिणीहामि, तो पडिसेव अकप्पणिज्जं । अध एतेसिं असमत्थो, तो मा पडिसेव त्ति ॥४८९३॥

इदाणिं "[१]दव्वग्गहणे य पिट्ठमपिट्ठे" त्ति अस्य व्याख्या –

सो पुण आलेवो वा, हवेज्ज आहारिमं च मिस्सितरं ।
पुव्वं तु पिट्ठगहणं, विकरण जं पुव्वछिण्णं वा ॥४८९४॥

व्रणे अव्रणे वा अणाहारिमं आलेवो वा होज्ज आहारिमं वा होज्ज, अचित्ताभावे मिस्सं इयरं वा सचित्तं, अहवा – अणाहारिमं आहारिमं वा मिस्सं जं आलेवो आहारेयव्वं च । "इतर" त्ति जं णो आहारेयव्वं णावि आलेवो । तं किं होज्ज ? फासेण फरिसियव्वं, णासाए वा पुप्फादि अग्घातियव्वं, पाडलाइ वा पाणगं वा सो धूवणादि वा किंचि, एयं अचित्तादि सव्वं जं पुव्वदिट्ठं लब्भति तं घेत्तव्वं । असति पुव्वदिट्ठस्स जं पुव्वछिण्णयं तं विकरणं करित्ता, विकरणकरणं णाम अणेगखंडं करेत्ता जहा णिज्जीवावत्थं भवति तं तारिसं आणेत्ता पीसंति । असति पुव्वछिण्णस्स अप्पणा वि छिंदति ॥४८९४॥

जं पुण पुव्वच्छिण्णं तं इमेसु गेण्हंति –

भावितकुलेसु गहणं, तेसऽसति सलिंगगेण्हणाऽवण्णो ।
विकरणकरणालोयण, अमुगगिहे पच्चतो अगीए ॥४८९५॥

जाणि सड्ढकुलाणि अम्मापितिसमाणाणि वा परिणामगाणि अणुग्गाहकराणि । तेसिं भावियकुलाणं असति अभावियकुलेसु य लिंगग्गहणेण अवण्णो भवति, तम्हा अण्णलिंगेण गेण्हियव्वं ।

अहवा – "[२]पण्णवणे" त्ति अविज्जमाणेसु भावियकुलेसु जाणि कुलाणि सुवण्णवणिज्जाणि ताणि पण्णवेत्ता मग्गंति गेण्हंति य । ताणि पुण जत्थ गहियाणि पढमवितियभंगिल्लाणि पलंबाणि ताणि तत्थ चेव विकरणाणि करेत्ता आणेउं गुरुसमीवे [३]आलोएंति, अगीयपच्चयणिमित्तं अमुगस्स गिहे सयट्ठाए एताणि मए लद्धाणि ॥४८९५॥

एसा चेव "[४]जयणा", इदाणिं णिग्गंथीणं भणति –

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि [५]होइ णायव्वो ।
आमे भिण्णाभिण्णे, जाव तु पउमुप्पलादीणि ॥४८९६॥

---

१ गा० ४८८६ । २ गा० ४८८६ । ३ गा० ४८८६ । ४ गा० ४८८६ । ५ नवरि छब्भंगा, इति बृहत्कल्पे गा० १०३३ ।

[1]एवं आमं ण कप्पति, पक्कं पुण कप्पति न वा वि ।
भणति सुणसु पक्कं, जह कप्पति वा ण वा वा वि ॥४८९७॥

जहा णिग्गंथाणं तहा णिग्गंथीणं पि भाणियव्वं जाव पउमुप्पलादीणि, जाव य "अमुगगिहे पच्चग्रोऽ गीते" त्ति । णवरि – तासि भिण्णे छब्भंगा कायव्वा, ते अणंतरसुत्ते भणिहिति ।

पलंबाधिकारतो इमे वि कप्पस्स ततिय-चउत्थ-पंचमसुत्ता भण्णंति –

कप्पति णिग्गंथाणं पक्के तालपलंबे अभिण्णे वा पडिग्गाहित्तए ।
णो कप्पइ णिग्गंथीणं पक्के तालपलंबे अभिण्णे पडिग्गाहित्तए ।
कप्पति णिग्गंथीणं पक्के तालपलंबे भिण्णे पडिग्गाहित्तए –
से वि य विधिभिण्णे, णो चेव णं अविधिभिण्णे ।
एते सुत्ते एगट्ठे चेव भण्णति । सुत्तत्थो पुव्ववन्नितो ॥४८९७॥

इमो णिज्जुत्ति अत्थो –

नामं ठवणा पक्कं, दव्वे भावे य होति णायव्वं ।
उस्सेतिमादि तं चिय, पक्कधणजोगतो पक्कं ॥४८९८॥

णामठवणाओ गताओ, दव्वपक्कं तं चेव उस्सेतिमादि जं आमे भणियं तं चेव जया इंधणसंजोगे पक्कं भवति तदा दव्वपक्कं भण्णति । दव्वेण पक्कं दव्वपक्कं ॥४८९८॥

इमं भावपक्कं –

संजम-चरित्तजोगा, उग्गमसोही य भावपक्कं तु ।
अण्णो वि य आएसो, णिरुवक्कमजीवमरणं तु ॥४८९९॥

संजमजोगा चरित्तं च सुविसुद्धं भावपक्कं ।

अधवा – उग्गमादिदोसविसुद्धं भावपक्कं ।

अधवा – जेण जं आउगं णिव्वतियं तं संपालेत्ता मरमाणस्स भावपक्कं भवति ॥४८९९॥ पक्क त्ति गतं ।

इदाणिं "भिण्णाभिण्णे" त्ति सुत्तपदस्य व्याख्या –

पक्के भिण्णा-ऽभिण्णे, समणाण वि दोसो किं तु समणीणं ।
समणे लहुगो मासो, विकडुभपलिमंथणाऽऽचिण्णं ॥४९००॥

पक्कं जं णिज्जीवं, पुण दव्वतो भिण्णं अभिण्णं वा, एत्थ समणाण वि दोसो भवति किमंग पुण समणीणं ? समणा जति गिण्हंति तो मासलहुं दोहिं वि तवकालेहिं लहुअं, अण्णे य विकडुभपलिमंथादओ दोसा पुव्ववण्णिया ॥४९००॥

एमेव संजईण वि, विकडुभपलिमंथमादिया दोसा ।
कम्मादिया य दोसा, अविहीभिण्णे अभिण्णे य ॥४९०१॥

---

१ एषा गाथा चूर्णौ न विवृता ।

पुव्वद्धं कंठं । तासि अहितो दव्वतो अविधिभिण्णे य हत्थकम्मदोसो । जम्हा एते दोसा तम्हा णिग्गंथीणं ण कप्पति पक्कं अभिण्णं पडिग्गहेत्ता ।

जं पि पक्कं भिण्णं तं पि विधीए भिण्णं अववादे कप्पति, णो अविविभिण्णं कप्पति, एतेहिं चेव विकड्ढुभकम्मादिएहिं दोसेहिं ॥४९०१॥

समणीणं छब्भंगा कहं भवंति ?—

विहि-अविहीभिण्णम्मी, छब्भंगा होंति णवरि समणीणं ।
पढमं दोहि अभिण्णं, अविहिविही दव्वे वितिततिए ॥४९०२॥

एमेव भावतो वि य, भिण्णं तत्थेक्कदव्वतो अभिण्णं ।
पंचमछट्ठा दोहि वि, णवरिं पुण पंचमे अविही ॥४९०३॥

जं च सुत्तपदं "[1]सेवि य विधिभिण्णे णो चेव णं अविधिभिण्णे" एयम्मि णिग्गंथीणं सुत्तपदे छ भंगा भवंति ।

तं जहा — भावतो अभिण्णं दव्वओ अभिण्णं १ । भावओ अभिण्णं दव्वओ अविहिभिण्णं २ ।
भावओ अभिण्णं दव्वतो विधिभिण्णं ३ । भावतो भिण्णं दव्वतो भिण्णं । (छ्र) ४ ।
भावतो भिण्णं दव्वतो अविधिभिण्णं ५ । (नो) भावतो भिण्णं दव्वतो विधिभिण्णं । फ्रु ६ ।

एतेसु छसु भंगेसु दिवड्ढा गाहा समोतारेयव्वा ॥४९०३॥

आणादि रसपसंगा, दोसा ते चेव जे [2]पढमसुत्ते ।
इह पुण [3]सुत्तनिवातो, ततियचउत्थेसु भंगेसु ॥४९०४॥

इमा गाहा णिग्गंथसुत्ते चउभंगक्कमे समोतारेयव्वा, ततिय-चउत्था भंगा भावतो भिण्णं ति तेण तेसु सुत्तणिवातो एमेव गाथा ।

णिग्गंथीणं छब्भंगकडे चउत्थ-पंचम-छट्ठ-भंगेसु सुत्तणिवातो कायव्वो, तेषां भावभिण्णत्वात् ।

अहवा — छट्ठे भंगे सुत्तणिवातो ॥४९०४॥

समणीणं छसु भंगेसु जहक्कमं इमे पच्छित्ता —

लहुगा तीसु परित्ते, लहुगो मासो य तीसु भंगेसु ।
गुरुगा होंति अणंते, पच्छित्ता संजतीणं तु ॥४९०५॥ कंठा

अह हत्थकम्मभावतो छसु भंगेसु इमं पच्छित्तं —

अहवा गुरुगा गुरुगा, लहुगा गुरुगा य पंचमे गुरुगा ।
छट्ठम्मि होति लहुगो, लहुगट्ठाणे गुरूऽणंते ॥४९०६॥ कंठा

---

१ (बृ० उ० १ सू० ५) । २ बृहत्कल्पप्रथमसूत्रे । ३ सूत्रनिपातस्तृतीयचतुर्थयोर्भंगयोर्भवति भावतो भिन्नमिति कृत्वा । तृतीय-चतुर्थभंगद्वयमधिकृत्य सूत्रं प्रवृत्तमिति भावः ।

आयरितो पवत्तिणीए, पवत्तिणी भिक्खुणीण ण कथेति ।
गुरुगा लहुगा लहुगो, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥४६०७॥

एवं पलंबसुत्तं आयरिओ पवत्तिणीए ण कथेति ः ः, जइ सा भिक्खुणीणं ण कहेति ः ः, पवत्तिणी तो जति ता भिक्खुणीओ ण सुणंति, तो तासि मासलहुं पच्छित्तं । आयरियस्स अकहेंतस्स आणादिया दोसा, पवत्तिणीए वि आणाइणो दोसा, भिक्खुणीए वि असुणेंतीए आणादिया दोसा ॥४६०७॥

अभिण्णे महव्वयपुच्छा, मिच्छत्त विराहणा य देवीए ।
किं पुण ता दुविधातो, भुत्तभोगी अभुत्ता य ॥४६०८॥

चोदगाह – णिग्गंथाणं पक्कं भिण्णं वा अभिण्णं वा कप्पति, णिग्गंथीणं अभिण्णं अविधिभिण्णं च ण कप्पति, विधिभिण्णं कप्पति ॥४६०८॥

जहा एस सुत्तत्थे भेदो, किमेवं महव्वएसु वि तेसि भेदो ?

जहा तच्चण्णियाणं भिक्खुयाणं किल अड्ढाइज्जा सिक्खा पदंसिता, भिक्खुणीणं पंचसिक्खा पदंसिता । एवं णिग्गंथीणं किं छ-महव्वया, साहुपंचमहव्वएहितो दुगुणा वा ?

उच्यते –

ण वि छ-महव्वता णेव, दुगणिता जह उ भिक्खुणीवग्गे ।
बंभवयरक्खणट्ठा, न कप्पति तं तु समणीणं ॥४६०९॥

उच्चारियसिद्धा । अंगादाणसरिसं पलंबं पेच्छंतं दट्ठुं कोति मिच्छत्तं गच्छे, तेणेव वा करकम्मं करेज्जा । तत्थ य संजमायविराहणा भवति ।

एत्थ दोवि दिट्ठंता कज्जंति – ताओ य समणीओ दुविधा – भुत्तभोगाओ अभुत्तभोगाओ वा । अंगादाणसरीसे पलंबे दट्ठुं भुत्तभोगीण सतिकरणं भवति, इयराण कोउयं भवति त्ति ॥४६०९॥

किं च ण केवलं पलंबे विसेसो –

अण्णत्थ वि जत्थ भवे, एगतरे मेहुणुब्भवो तं तु ।
तस्सेव तु पडिकुट्ठं, बितियस्सऽण्णेण दोसेणं ॥४६१०॥

"एगतरे" त्ति – साधुपक्खे साधुणियपक्खे वा, जेण भुत्तेण फरिसिएण वा मेहुणुब्भवो भवति तस्सेव पक्खस्स तं मेहुणुब्भवदोसपरिहरणत्थं पडिकुट्ठं प्रतिषिद्धमित्यर्थः । बितियस्स पक्खस्स अण्णेण दोसेण पडिसिज्झति असंजमदोसेणं ति वुत्तं भवति ॥४६१०॥

जहा किं उच्यते –

णिल्लोम-सलोमऽजिणे, दारुगदंडे सवेंटपाए य ।
बंभवयरक्खणट्ठा, वीसुं वीसुं कता सुत्ता ॥४६११॥

णिल्लोमं अजिणं णिग्गंथाणं सतिकरणकोउआदीणं दोसाणं वारणाणिमित्तं पडिसिज्झति, णिग्गंथीणं पुण पाणिदयाणिमित्तं अतिरेगोवधिभारणिमित्तं च पडिकुट्ठं । सलोमं णिग्गंथीणं सतिकरणकोआदीणं दोसाणं

वारणाणिमित्तं पडिसिद्धं, णिग्गंथाणं पुण पाणिदयाणिमित्तं अतिरेगोवहिभारणिमित्तं च पडिकुट्ठं । दारुदंडयं पायपुंछणं सवेंटपादं च णिग्गंथीणं वंभवयरक्खणा णिमित्तं पडिसिद्धं, णिग्गंथाणं अतिरेगोवहिभारणिमित्तं च णाणुण्णायं । एतेण कारणेण णिग्गंथाणं णिग्गंथीणं कहिं चि पुढो सुत्तकरणं ।।४६११।।

चोदगाह—पुण कम्मोदयओ मेहुणुब्भवो भवति, ण णिदाणपरिहारो कज्जति ।

आचार्याह –

णत्थि अणिदाणं तो, होतुब्भवो तेण परिहर णिदाणे ।
ते पुण तुल्ला-ऽतुल्ला, मोहणियाणा दुपक्खे वि ।।४६१२।।

णिदाणं णाम जं पडुच्च मोहणिज्जं उदिज्जति, तं जहा इट्ठसद्दादि ।

उक्तं च –

दव्वं खेत्तं कालं, भावं च भवं तहा समासज्ज ।
तस्स समासुद्दिट्ठो, उदओ कम्मस्स पंचविहो ।।

दुपक्खे वि त्ति इत्थीणं पुरिसाण य तुल्ला अतुल्ला य ।।४६१२।।

रसगंधा तहिं तुल्ला, सद्दाती सेस भय दुपक्खे वि ।
सरिसे वि होंति दोसा, किमु व संते विसमवत्थुम्मि ।।४६१३।।

इट्ठरसगंधं पडुच्च इत्थिपुरिसाणं तुल्लो मोहुदयो, जहा णिद्धादिरसेण पुरिसस्स इंदिया वलिज्जंति तहा इत्थियाए वि, तहा चंदणादिगंधेण वि, सेसेसु सद्दरूवफासेसु ।

"दुपक्खे वि" त्ति—इत्थिपक्खे पुरिसपक्खे भयणा कायव्वा। जहा पुरिसस्स पुरिसफासेणं मोहोदयो होज्जा वा ण वा, जइ होज्जा तो मंदो पाएण ण जारिसो इत्थिफासेणं उक्किट्ठो भवति । इत्थिफासेणं पुण पुरिसस्स णियमा भवति मोहोदयो उक्कडो य ।

एवं इत्थीए इत्थिफासे भयणा, इत्थीए पुरिसफासेण उदयो णियमा ।

एवं इट्ठं पि सद्दं सोउं पुरिसस्स पुरिससद्दं मोउं भयणा, इत्थिसद्दे मोहुदओ। एवं इत्थीए भाणियव्वं ।

एवं रूवं पि इट्ठं जीवसहगतं चित्तकम्मादिपडिमाओ वा दट्ठुं, एतेण कारणेणं सलोमणिल्लोमादिणो तुल्लातुल्लणिदाणा परिहरिज्जंति । एतेणेव कारणेणं णिग्गंथीणं अभिण्णं अविधिभिण्णं वा ण कप्पति ।।४६१३।।

इमे य अण्णे अभिण्णे अविधिभिण्णे य दोसा । तत्थ ताव अभिण्णे दोसा भण्णाति, "[1]मिच्छत्त विराहणाय देवीय य" त्ति अस्य व्याख्या—मिच्छत्तं कोइ जाएज्जा, एस दोसो णत्थि दिट्ठो त्ति काउं । विराहणा वंभवयस्स हवेज्जा ।।४६१३।।

इमो देविदिट्ठंतो –

चीयत्त कक्कडी कोउ कंटक विसप्प समित सत्थेणं ।
पुणरवि निवेसफाडण, किमु समणि णिरोह भुत्तितरा ।।४६१४।।

---

१ गा० ४६०८ ।

एगस्स रण्णो महादेवी । तस्स लोमसियाओ चियत्ताओ । तीसे देवीए एगो णिउत्तपुरिसो दिवसे दिवसे ता आणेति ।

अण्णया तेण पुरिसेण अहापवित्तीए अंगादाणसंठिया लोमसिया आणिता ।

तीसे देवीए तं लोमसियं पासेत्ता कोतुयं जायं, "पेच्छामि ताव केयारिसो फासेति एयाए पडिसेविए" ।

ताहे ताए सा लोमसिया पादे बंधिउं सागरियट्ठाणं पडिसेविउमाढत्ता ।

तीसे लोमसियाए कंटओ आसी, सो तम्मि सागारिए लग्गो, विसप्पियं च तं ।

ताहे वेज्जस्स सिट्ठं ।

ताहे वेज्जेण समिया मट्टिया तत्थ णिवेसिया उट्ठेत्ता सुसियप्पदेसं चिंचियं । तम्मि देसे तीए अपेच्छमाणीए सत्थओ खोहिओ । पुणो तेणेव आगारेण णिवेसिया फोडियं, पउणा जाया । जति ताव तीसे देवीए दंडिएण पडिसेविज्जमाणीए कोउअं जायं, किमंग पुण समणीणं णिच्च-निरुद्धाणं भुत्तभोगीणं अभुत्तभोगीण य ॥४९१४॥

कसिणाऽविहिभिण्णम्मि य, गुरुगा भुत्ताण होति सतिकरणं ।
इतरासि कोउगादी, घेप्पंते होति उड्डाहो ॥४९१५॥

कसिणं णाम सकलं, तम्मि अविधिभिण्णे य सतिकरणं भुत्तभोगीणं, अभुत्तभोगीणं कोउअं भवति । एत्थ पच्छित्तं गुरुगा । तं च अंगादाणसंठियं घेप्पंतं दट्ठुं उड्डाहो, "णूणं एसा एतेण पावकम्मं काहिति" एवं लोगो संभावेति ॥४९१५॥

तेण य पलंबेण मोहुदयाओ कम्मं करेत्ता इमं चिंतेइ –

जइ ताव पलंबाणं, सहत्थणुण्णाण एरिसो फासो ।
किं पुण गाढालिंगण, इतरम्मि य निद्दतो सुद्धे ॥४९१६॥

"सहत्थणुण्णाणं" ति णुद प्रेरणे, स्वहस्तप्रेरितानाम् इत्यर्थः । "इयरम्मित्ति" अंगादाणं जदा पुरिसेण णिद्दयभावेण सुद्धं वुढमित्यर्थः । अहवा – सुद्धेत्ति पुरिसफरिसे सुद्धे सुट्ठुतरं सोक्खं भवतीत्यर्थः ॥४९१६॥

ताहे हत्थकम्मकरणातो जोणिघट्टणलद्धसुहासादा उदिण्णमोहा असहमाणी इमं कुज्जा –

पडिगमणअण्णतित्थिय, सिद्धे संजत सलिंग हत्थे य ।
वेहाणस ओधाणे, एमेव अभुत्तभोगी वि ॥४९१७॥

संघाडगादिसमीवातो जत्थागता तत्थेव गमणं करेज्जा, अण्णतित्थिएसु वा गच्छति ।

अहवा – अण्णतित्थिएण वा पडिसेवावेज्जा, सिद्धपुत्तेण वा । संजतं वा उवसग्गेज्जा । "सलिंगि" त्ति एयाणि अण्णउत्थियादीकम्माणि सलिंगे ठिएल्लया करेज्जा, हत्थकम्मं वा पुणो पुणो करेज्जा, वयाणि वा भग्गानि त्ति काउं उड्डाहं वा, "कहं काहामि त्ति कहं वा सीलं भसेहामि" त्ति वेहाणसं करेज्जा, उब्भामगं वा घेत्तुं ओधावणं करेज्जा । एते पदे सव्वे भुत्तभोगी करेज्जा । अभुत्तभोगी वि अचिट्ठे एते चेव पदे करेज्जा, णवरं – पडिगमणं मातापितिसमीवं ॥४९१७॥

आह चोदकः – "ण जाणामो केरिसं अविधिभिण्णं, केरिसं वा विधिभिण्णं" ?

अतो भण्णति –

भिण्णस्स परूवणता, उज्जुग तह चक्कली विसमकोट्टे ।
ते चेव अविहिभिण्णे, अभिण्णे जे वण्णिया दोसा ॥४६१८॥

असंजमदोसणियत्तणहेउं गुणोवलंभहेउं च अविधिभिण्णस्स य परूवणा कज्जति – उज्जुयऽप्फालिय-करणं तिरियं वा चक्कलीकरणं एते दो वि अविधिभेदा, विधिभिण्णं पुण विसमकोट्टकरणं जं पुणो तदाकारं काउं ण सक्कति तं सव्वं विधिभिण्णं । जे ते अभिण्णे देविदिट्ठंतेण दोसा भणिया ते चेव दोसा सविसेसा भवंति अविधिभिण्णे ॥४६१८॥

स्यात् कथमित्युच्यते –

कट्ठेण व सुत्तेण व, संदाणिते अविहिभिन्ने ते चेव ।
सविसेसतरा वि भवे, वेउव्वियभुत्तइत्थीणं ॥४६१९॥

अविधिभिण्णं कट्ठेण सिलागादिणा 'संदाणेति" त्ति संघातितं पुव्वागारे ठवियं सुत्तेण वा संदाणियं, जे चेव अभिण्णे दोसा ते चेव सविसेसा भवंति ।

कहं ? उच्यते – "वेउव्वियभुत्तइत्थीणं" ति जाओ ईत्थीओ अंगादाणे वेंटियं त्रोटियं वा आबंधित्ता भुत्तपुव्वाओ तासि तेण संदाणियपलंबेण रती भवति त्ति अधिकतरा दोसा एवं ॥४६१९॥

अत्थतो कारणियं सुत्तं दरिसंतो गुरू भणति –

विहिभिण्णम्मि ण कप्पति, लहुओ मासो य दोस आणादी ।
तं कप्पती ण कप्पति, णिरत्थयं कारणं किं तं ॥४६२०॥

जं पि छट्ठे भंगे विधिभिण्णं तं पि ण कप्पति, ते गेण्हंतीण मासलहुं आणादिया य दोसा भवंति ।
आह चोदकः – "णणु सुत्ते भणियं "तं" ति विधिभिण्णं कप्पति ?"
आचार्याह – जति सुत्ते भणियं तहावि अत्थेण पडिसिज्झति, "ण कप्पति ।"
चोदगाह – "एयं सुत्तं णिरत्थयं ।"
आयरिओ भणति – हे चोदग ! सुत्तं कारणियं ।
चोदगाह – "किं तं कारणं ? यन्नोपदिश्यते" ? उच्यते – ब्रूमः –

गेलण्णऽद्धाणोमे, तिविहं पुण कारणं समासेणं ।
गेलण्णे पुव्वुत्तं, अद्धाणुवरिं इमं ओमे ॥४६२१॥

अद्धाणे उवरिं सोलसमे उद्देसगे भणिहिइ । इमं ओमं पडुच्च भण्णइ ॥४६२१॥

णिग्गंथीणं भिण्णं, णिग्गंथाणं तु भिण्णऽभिण्णं तु ।
जह कप्पति दोण्हं पी, तमहं वोच्छं समासेणं ॥४६२२॥

णिग्गंथीणं णियमा विधिभिन्नं छट्ठभंगे, णिग्गंथाणं चउत्थततिएसु भंगेसु, दोण्ह वि साहुसाहुणीणं जहा कप्पति तहा संखेवओ भणामि ॥४६२२॥

ओमम्मि तोसलीए, दोण्ह वि वग्गाण दोसु खेत्तेसु ।
जयणट्ठियाण गहणं, भिण्णाभिण्णं च जयणाए ॥४६२३॥

ओमकाले तोसलिविसयगया साधुसाधुणीओ य एते चेव दो वग्गा दोसु खित्तेसु ठिता, एक्कम्मि खेत्ते संजता ठिता, अण्णम्मि बितिए खेत्ते संजतीओ ठिताओ । "जयणट्ठियत्ति" एसा चेव विधी जं अण्णेसु ठिता, उस्सग्गेण एगखेत्ते ण ठायंति ।

अथवा – "जयणट्ठिय" त्ति साधुसाधुणीपायोग्गं विहिं गाहेत्ता खेत्ते जे ठिता, गहणं करेंति । चरिमभंगे दव्वतो भिण्णं, ततियभंगे वा दव्वतो अभिण्णं, णिग्गंथीणं छट्ठपंचमेसु भंगेसु दव्वओ भिण्णं, चउत्थभंगे वा दव्वतो अभिण्णं ।

"जयण" त्ति जतीण चरिमभंगासति ततियभंगे, णिग्गंथीणं छट्ठभंगासति पंचमे, पंचमासति चउत्थे ॥४६२३॥

चोदक आह – "को णियमो तोसलिग्गहणं" ?

आचार्याह –

आणुगदेसे वासेण विणा वि तेण तोसलीग्गहणं ।
पायं च तत्थ वासती, पउरपलंबो वि अण्णो वि ॥४६२४॥

आणुगदेसो णतिसलीलादीहि जलबहुलो, सो अजंगलो भवति । अण्णं च तम्मि वरिसेण विणा वि सस्सं णिप्फज्जति सारणिपाणिएहिं । अण्णं च किल तोसलीए वरिसति, अणावुट्ठी न भवति । अण्णं च किल तोसलीए पउरपलंबा । तेण तोसलिग्गहणं कयं । इयरहा अण्णो वि जो एरिसो विसओ पउरपलंबो य तत्थ वि एसेव विधी ॥४६२४॥

पुच्छा सहु-भीयपरिसे, चउभंगो पढमगो अणुण्णातो ।
सेस तिए णाणुण्णा, गुरुगा परियट्टणे जं च ॥४६२५॥

एत्थ सीसो पुच्छति – जं सुत्तं दोण्ह वि वग्गाण, "[1]दोसु खेत्तेसु" त्ति, एत्थ पुट्ठो ठियाणं संजतीणं वा दुक्खं वावारो बुज्झति, दोसदंसी य पुट्ठो खेत्ते ठवेह, जतो य दोसा समुप्पज्जंति तं ण घेत्तव्वं, आगमे य पव्वावगिज्जा, अतो संसतो किं परियट्टियव्वाओ न परियट्टियव्वाओ ?

आयरिओ भणइ – णत्थि कोइ णियमो जहा अवस्सं परियट्टियव्वाओ ण व त्ति । जइ पुण पव्वावेत्ता णायओ परियट्टइ तो महतीए णिज्जराए वट्टति । अव अण्णायओ पालेइ तो अतिमहामोहं पकुव्वइ दीहं संसारं णिव्वत्तेइ ।

"तो केरिसेण परियट्टियव्वाओ ? को वा परियट्टणे विधी" ?

अतो भण्णति – "सहु भीयपरिसि" त्ति, एतेहिं दोहिं पदेहिं चउभंगो कायव्वो –

सहू भीयपरिसो १ । सहू अभीयपरिसो २ । असहू भीतपरिसो ३ । असहू अभीतपरिसो । (च्छ) ४ ।

धितिबलसंपण्णो इंदियणिग्गहसमत्थो थिरचित्तो य आहारउवधिखेत्ताणि य तासिं पाउग्गाणि उप्पाएउं समत्थो, एरिसो साधू जस्स सव्वो साहुसाहुणिवग्गो भया ण किं चि अकिरियं करेति, भया कंपति, एरिसो भीयपरिसो ।

---

१ गा० ४६२३ ।

एत्थ पढमभंगिलस्स परियट्टणं अणुण्णायं, सेसेसु तिसु भंगेसु णाणुण्णायं। अह परियट्टति तो चउगुरुं।

"परियट्टणे जं च" त्ति—वितियभंगिल्लो अप्पणो सह अभीतपरिसत्तणतो जं ताओ सच्छंदपयाराओ काहिंति तं पावति।

ततियभंगिल्लो पुण असहुत्तणओ तासिं "[१]अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं" दट्ठुं जं समायरइ तं पावति।

चरिमे य ततियभंगदोसा दट्ठव्वा ॥४९२५॥

जति पुण पव्वावेति, जावज्जीवाए ताउ पालेति।
अण्णासति कप्पे वि हु, गुरुगा जे निज्जरा विउला ॥४९२६॥

पढम-भंगिल्लो "जइ" त्ति अब्भुवगमे। किमब्भुवगच्छति? ताओ पव्वावेउ। जति ता पव्वावेति तो विधीए जावज्जीवं परियट्टेति, "पुण" त्ति विसेसणे,

किं विसेसइ? इमं—

सो पढमभंगिल्लो जइ जिणकप्पं पडिवज्जिउकामो अण्णं च अज्जाओ परियट्टियव्वातो, किं करेउ?

जइ अत्थि गच्छे अण्णो परियट्टगो, तो चिरदिक्खियाओ अहिणवाओ दिक्खेउं तस्स समप्पेउं जिणकप्पं पडिवज्जउ।

अह नत्थि अन्नो परियट्टगो, तो मा जिणकप्पं पडिवज्जउ ताओ च्चिय परियट्टव्वाओ। एवं विसेसेति।

किं एवं भण्णति? उच्यते—अणवट्टावगस्सासति जति जिणकप्पं पडिवज्जति तो चउगुरुगा। अण्णं च जिणकप्पट्ठियस्स जा णिज्जरा ततो णिज्जराओ विधीए संजतीओ अणुपालेंतस्स विउलतरा णिज्जरा भवति ॥४९२६॥

इदाणिं "[२]जयणट्ठिताण गहणं भिण्णाभिण्णं च जयणाए" त्ति एवं पच्छद्धं, एयस्स पुव्वं अक्खरत्थो भणितो।

इदाणिं को विसेसऽत्थो? भण्णति – "जयणट्ठिय" त्ति इमाए जयणाए ठिता—

उभयगणी पेहेतुं, जहि सुद्धं तत्थ संजती णेति।
असती च जहिं भिण्णं, अभिण्णे अविही इमा जयणा ॥४९२७॥

जो उभयगणोववेओ गणी सो ओमकाले तोसलिमादी अणुगविसए पलंबपउरे गंतुं दो खेत्ता गीयत्थेण पडिलेहावेति, अप्पणो वा गीयत्थेयरसहितो वा पडिलेहेति, जेसु सुद्धं ओदणं लब्भति तेसु ठायंति।

जइ दो एरिसे णत्थि खेत्ते तो जत्थ सुद्धं ओदणं लब्भति तत्थ संजतीओ ठवेंति।

जत्थ पुण पलंबमीसं ओदणं लब्भंति तत्थ अप्पणा ठायंति, णत्थि णिम्मिसोदणखेत्तं ताहे जत्थ मीसं लब्भति तत्थ संजतीओ ठावेति, अप्पणा णिम्मिमपलंबेसु ठायंति। "असति" त्ति सव्वेसु चेव खेत्तेसु णिम्मिस्सा पलंबा लब्भंति, ताहे जत्थ विधि-भिण्णा लब्भंति संजतीतो ठावेंति, अभिण्णे अविधिभिण्णेसु वा अप्पणा ठायंति,

---

१ दश० अ० ८ गा० ५८। २ गा० ४९२३।

अथ सव्वेसु अभिण्णा अविधिभिण्णा वा लब्भंति ताहे इमं पण्णवणं जयणाए करेंति ॥४६२७॥

भिण्णाणि देह भेत्तूण वा वि असती पुरो व भिंदंति ।
ठावेंति ताहे समणी, ता एव जयंती तेसऽसती ॥४६२८॥

जत्थ संजतीतो ठविउकामा तं खेत्तं पुव्वामेव अप्पणो भावेंति ।

कहं ? उच्यते – जाहे णीणिया पलंबा ताहे संजता भणंति – "भिण्णाणि जाणि ताणि अम्हं देह" ।

अह ते गिही भणंति—'णत्थि भिण्णा", थोवेहिं वा णो संथरति भिण्णेहिं । ताहे भणंति गिही – "अम्हं भेत्तूणं देज्जह, ण कप्पंति अम्हं एरिसे घेत्तुं ।" "असति" त्ति—जाहे भेत्तुं ण देति भणति वा – "अम्हे एत्तियं [2]हिविप्पढं ण याणामो", अभिण्णे चेव पणामेंति, ताहे ते चेव संजता गिहिभायणे चेव ठिया तेसिं गिहत्थाणं पुरतो भिंदंति, ताहे गेण्हंति । एवं कीरमाणे तेसिं गिहत्थाणं गाढं भावणा उप्पज्जइ—"ण कप्पइ एतेसिं अभिण्णाणि घेत्तुं" ति । एवं ते भेत्तुं देंति । एवं जाहे भावियं भवति खेत्तं ताहे समणीतो तत्थ ठवेंति । "ता एवं जयंति तेसऽसइ" त्ति तेसिं संजताणं असतीए वावडेसु वा केण ति कारणेण संजतेसु ताहे ता एव संजतीओ जाओ तत्थ थेरियाओ ताओ एतेणेव पुव्वुत्तेण जयणाए विहाणेण खेत्तं भावेंता ठायंति ॥४६२८॥

भिण्णासति वेलातिक्कमे य गेण्हंति थेरियाऽभिण्णे ।
दारे भित्तुमतिंती, ठागासति भिंदती गणिणी ॥४६२६॥

इदाणिं "[1]गहणं भिण्णाभिण्णाण जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

जति खेत्तं विधिभिण्णभावणाए ण सक्केति भावेउं ताहे भिण्णाणं असति जाव गिहत्थेहिं भिंदावेति, अप्पणा वा जाव गिहत्थाणं पुरओ भिंदंतीओ अच्छंति ताव वेलातिक्कमो भवति, ताहे जाव – थेरियाओ ताओ अभिण्णे अविधिभिण्णे य गिण्हंति, तरुणीओ विहिभिण्णाणि ओदणभत्तं च गिण्हंति ।

एतेण विधिणा हिंडित्ता सण्णियट्टातो वसहिदारे ठिच्चा जे ते अभिण्णा अविधिभिण्णा य ते विधिभिण्णे करेत्ता वसहिं अतिंति । "ठागासति" त्ति जति दारे णत्थि, ताहे पविसित्ति ताणि अभिण्णाणि अविधिभिण्णाणि य पवित्तिणीए पणामंति । सा गणिणी ते विधिभिण्णे करेति ॥४६२६॥

आह – किं कारणं तरुणीणं पडिग्गहणाए सामुद्दिसणाए वा अभिण्णं अविधिभिण्णं वा ण दिज्जति ?

उच्यते –

कक्खंतरुक्खवेगच्छिताइसुं मा हु गुम्मए तरुणी ।
तो भिण्णं छुब्भति पडिग्गहेसु ण य दिज्जते सकलं ॥४६३०॥

कक्षायांतरितं कक्षांतरं, यथा स्तंभेनांतरितं स्तंभांतरं । अहवा – उवक्खो कक्खा, अंतरमिति – स्तनांतरं । उवक्खो णाम परिधाणवत्थस्स अब्भिंतरचूलाए उवरि कण्णे णाभिहिट्टा उवक्खो भण्णति । संगच्छिकाकारा

१ गा० ४६२३ । २ विहिप्पढं ।

वामपासत्थिया वेगच्छिया भण्णति । आदिसद्दातो अण्णतरे वत्थंतरे । एवमादिठाणेसु मा तरुणी णूमेस्सति— स्थापयिष्यतीत्यर्थः ।

एतेण कारणेणं भिक्खग्गहणकाले अभिण्णं अविविभिण्णं वा ण च्छुहंति पडिग्गहे तासिं, ण वा भोयणकाले तासिं तं दिज्जति । "तो भिण्णं छुहंति पडिग्गाहेसु' त्ति पाढंतरं, तो इति तेणं कारणेणं तरुणीणं पडिग्गहे वि विधिभिण्णं छुब्भंति—भिक्खग्गहणकाले गेण्हंतीत्यर्थः ॥४६३०॥

एवं एसा जयणा, अपरिग्गहितेसु तेसु खेत्तेसु ।
तिविहेसु परिग्गहिए, इमा उ जयणा पुणो होति ॥४६३१॥

पुव्वद्धं कंठं । तिविहे त्ति संजता संजइओ उभयं च ॥४६३१॥

तीसे गाहाए पच्छद्धस्स इमा विभासा —

पुव्वोगहिते खेत्ते, तिविहेण गणेण जति गणो तिविहो ।
एज्जाहि तयं खेत्तं, ओमे जयणा तहिं का णू ॥४६३२॥

जं खेत्तं पुव्वं उग्गहियं तिविहेण गणेण तिविधगणस्स वा अण्णतरेण गणेण, संजतेहिं संजतीहिं उभएणं त्ति एस तिविधो गणो, तं चेव खेत्तं । तिविधो गणो — एस संजता संजतीओ उभयं वा । एते ओमकाले असंथरंता आगता । तेसिं आगयाणं, तेहिं ठायमाणेणं का ठायव्वे जयणा ? तेसिं वा वत्थव्वाणं दायव्वे का जयणा ? ॥४६३२॥

अतो भण्णति —

आयरिय-वसभ-अभिसेग-भिक्खुणो पेल्लऽलंभे ण वि दंते ।
गुरुगा दोहि विसिट्ठा, चतुगुरुगा दीव जा मासो ॥४६३३॥

वत्थव्वाणं आगंतुगाण वा जो संजयपरिग्गहो सो इमाणं चउण्हमण्णतरस्स होज्जा —

आयरियस्स वसभस्स अभिसेगस्स भिक्खुणो वा. आगंतुगाण वि एते चेव चउरो भेदा, संजतीण वि वत्थव्वाऽऽगंतुगीण एते चउरो भेदा कायव्वा ।

इमा उच्चारणा — पवत्तिणी वसभी अभिसेया भिक्खुणी ।

अत्राचार्यः प्रसिद्धः । इह उपाध्यायो वृषभानुग इति कृत्वा वृषभ इत्युक्तः । इह पुनः इत्वराभिषेकेन आचार्यपदे अभिषिक्तो यः सोऽभिषेकः, अहवा—गणावच्छेदक अभिषेकः । शेषा भिक्षवः प्रसिद्धाः ।

एतेसिं इमा चारणिका — आयरियपरिग्गहिते खेत्ते जति अण्णो आयरिओ आगओ, जति सो वत्थव्वो खेत्ते पहुप्पंते पउग्भत्तपाणे अण्णतो अलब्भंते ण देति ठाणं आगंतुगाणं द्धा ।

जं सो आगंतुगो हिंडंतो पाविहिति तं सो वत्थव्वगो सव्वं पावति ।

अहे ण पहुप्पंते खेत्तं सो य आगंतुगो बला पेल्लिओ ठाति, भणइ य — " कोऽसि तुमं", तस्स वि चउगुरुं, जं च ते वत्थव्वा पाविहिंति तण्णिप्फण्णं सव्वं आगंतुगो एगो पावति । एत्थ एयं पच्छित्तं उभय-गुरुं भवति।

सो चेव वत्थव्वगो आयरिओ वसभस्स आगंतुगस्स ण देति द्धा ।

वसभो वा आगंतुगो वत्थव्वं आयरियं बला पेल्लिओ ठाति ङ्क। एते पच्छित्तं तवगुरुगा काललहू भवंति।

सो चेव वत्थव्वायरिओ अभिसेगस्स ण देति ङ्क।

सो वा आगंतुगो अभिसेगो वत्थव्वं आयरियं पेल्लिउं ठाति ङ्क। एते पच्छित्ता तवलहुगा कालगुरू।

सो चेव वत्थव्वगो आयरिओ आगंतुगभिक्खुस्स ण देति ङ्क।

सो वा आगंतुगो भिक्खू वत्थव्वगं आयरियं पेल्लिउं ठाति ङ्क। एते पच्छित्ता उभयलहुं।

इयाणि वसहस्स पुव्वट्ठियस्स आयरिओ आगओ जति वसभो ण देति ठाणं तो ङ्क।

आयरिओ वा पेल्लिउं ठाति तो ङ्क। एत्थ वि एते उभयगुरु पच्छित्ता।

पुव्वट्ठितो वसभो आगंतुगो वसभो जति ण देति तो ङ्क। पेल्लेति वा तो ङ्क। एते पच्छित्ता तवगुरुगा।

वसभो वत्थव्वो आगंतुगो अभिसेगो ण देति तो ङ्क। पेल्लेति वा तो ङ्क। एते पच्छित्ता कालगुरु।

वसभो वत्थव्वो भिक्खू आगंतुगो ण देति ङ्क। पेल्लेति वा ङ्क। एते पच्छित्ता उभयलहुं।

एवं अभिसेगवि पुव्वट्ठिएणं आयरियादिएसु एते चेव चत्तारि गमा कायव्वा। एते चेव पच्छित्ता।

एवं भिक्खुणा वि पुव्वट्ठिएणं आयरियादिसु आगंतुगेसु चउसु एते चेव चत्तारि गमा। एतं चेव पच्छित्तं। एवं एते सोलस गमा।

अहवा – एतेसु चेव सोलससु गमेसु पच्छित्तादेसो इमो भण्णति – "चतुगुरुगादी व जा मासो" त्ति।
आयरिओ आयरियस्स ण देति ङ्क, सो वा पेल्लेइ ङ्क।
आयरिओ वसभस्स ण देति ङ्क, सो वा पेल्लेति ङ्क।
आयरिओ अभिसेयस्स ण देति ०, सो वा पेल्लेति ०।
आयरिओ भिक्खुस्स ण देति ०, सो वा पेल्लेति ०।
एवं एत्थ वि ते चेव सोलसगमा। एवं चेव पच्छित्तं।
णवरं – सव्वत्थ आयरियस्स उभयगुरुं। वसभस्स तवगुरुं। अभिसेगस्स कालगुरुं। भिक्खुस्स उभयलहुं ॥४९३४॥ संजयाण संजतपक्खे एते सोलस विकप्पा भणिता।

सेसविकप्पदरिसणत्थं इमं भण्णति –

एमेव य भयणादी, सोलसिया एक्कमेक्कपक्खम्मि।
उभयम्मि वि णायव्वा, पेल्लमलंभे य जं पावे ॥४९३५॥

"एक्कमेक्कपक्खम्मि" त्ति एक्को संजतिपक्खो, अण्णो वि संजतिपक्खो चेव।

वत्थव्वासु पवत्तिणिमादियासु चउसु आगंतीसु पवत्तिणिमादियासु चउसु एमेव सोलसिया ठावेयव्वा।

इमा भयणा कायव्वा – "उभयम्मि वि णातव्व" त्ति, उभयं संजतासंजतीओ य, वत्थव्वगाणं चउण्हं एत्थ वि सोलभंगा।

अथवा – चउव्विधसंजतिपरिग्गहिएसु उभयगणाधिवो चउव्विधो आगंतुगा वि चउव्विहाहिं संजतीहिं एत्थ वि सोलसगमा। चउव्विहाणं संजतीणं अच्छंताणं चउव्विहेहिं आगच्छमाणेहिं एत्थ वि सोलस विकप्पा भवंति। एते सव्वे चउसट्ठिगमा। सव्वेसु वि पच्छित्तं पूर्ववत्।

अधवा – अयमपरो विकल्पः – एक्कमेक्कपक्खम्मि त्ति, एक्कमेक्कपक्खो णाम जो उभयगणो ण भवति तेसु सोलसिया भयणा कायव्वा ।

तं जहा –

संजयाणं संजएहिं एत्थ सोलस भंगा कायव्वा ।

संजतीणं संजतीहिं एत्थ वि सोलस भंगा ।

संजयाणं संजईहिं एत्थवि सोलस ।

संजतीणं संजएहिं एत्थ वि सोलस ।

"उभयम्मि वि णायव्वं" ति उभयं णाम उभयगणाधिवो, सो य चउव्विहो चेव आयरियादि तप्परिग्गहितेसु खेत्तेसु चउव्विहेहिं आगंतुगसंजएहिं [संजयाणं] सोलस भंगा ।

अहवा – उभयपरिग्गहिएसु खेत्तेसु चउव्विहाहिं आगंतुगसंजतीहिं सोलस भंगा ।

अहवा – उभयपरिग्गहिएसु खेत्तेसु उभयगणाहिवो आगच्छेज्ज, एत्थ वि सोलस भंगा ।

अधवा – चउव्विहसंजयपरिग्गहिएसु उभयगणो चउव्विधो, एत्थ वि सोलस ।

अधवा – चउव्विधसंजतिपरिग्गहिए उभयगणो चउव्विधो, एत्थ वि सोलस। सव्वे णव सोलस भंगा, चोयालं भंगसयं । एतेसु पच्छित्तं पूर्ववत् । इमं पदं सव्वत्थाणुवादी ।

"पेल्लमलंभे य जं पावे" त्ति अपहुप्पंते खेत्ते आगंतुगा जति बला पेल्लिउं ठंति तो जं वत्थव्वा गच्छमाणा ओमोदरियादिणिग्गता वा जं विराहणं पावंति, तन्निप्फण्णं सव्वं आगंतुगा पावेंति ।

अध वत्थव्वा पहुप्पमाणे खेत्ते ण देंति तो जं आगंतुगा अडंता विराहणं पावेंति, तण्णिप्फण्णं सव्वं वत्थव्वाण पच्छित्तं ॥४६३४॥

आह चोदकः – "जति एयं पच्छित्तं भवति तो सपक्खस्स दूरंदूरेण होयव्वं ।"

आचार्याह – अणस्स खेत्तस्स अलंभे –

चउवग्गो वि हु अच्छउ, असंथराऽऽगंतुगा उ वच्चंतु ।
वत्थव्वा उ असंथरे, मोत्तूण गिलाणसंघाडं ॥४६३५॥

चउवग्गो णाम – वत्थव्वा संजत्ता संजतीतो वि, आगंतुगा संजता संजतीओ य । एते चउरो वि वग्गा एगखेत्ते अच्छंतु, जति संथरति ण मच्छरो कायव्वो. हुशब्दो यस्मादर्थे; यस्मात्तत्र वर्तनमस्ति, तुशब्दो अर्थप्रदर्शने । इमं दर्शयति – चउवग्गो जइ ण संथरति तहिं तिवग्गो वि हु अच्छउ, तिवग्गो णाम – वत्थव्वगसंजयसंजईओ आगंतुगसंजया य । तिवग्गासंथरे आगंतुगा गच्छति ।

अध तेसिं गिलाणो होज्ज तो गिलाणो ससंघाडो अच्छति, सेसा गच्छंति ।

अधवा – तिवग्गो वत्थव्वगसंजयसंजती आगंतुगसंजतीओ य ।

एत्थ भयणा भण्णति – जइ अण्णं खेत्तं आसण्णं संजतीण णिप्पच्चवायं ताहे वा गच्छंतीणं [1]वत्थव्वगसंजतीओ गच्छंति ।

अह तासिं गिलाणी होज्ज तो मोत्तुं गिलाणिसंघाडं सेसा गच्छंति ।

अह दूरे खेत्तं संजतीण य सपच्चवायं, ताहे वत्थव्वगसंजतीतो आगंतुगसंजतीतो य अच्छंति ।

एत्थ भणति – वत्थव्वाओ असंथरे मोत्तूण गिलाणसंघाडं, सेसा सव्वे गच्छंति ।

---

१ आगंतुगा.... इत्यपि पाठः ।

इदाणिं 'दुवग्गो वि हु अच्छउ" – दुवग्गो णाम वत्थव्वगसंजता आगंतुगसंजता य।

अह दुवग्गस्स असंथरं, ताहे आगंतुगा गच्छंति, जति गिलाणो तो मोत्तूण गिलाणसंघाडगं गच्छंति।

अह तं आगंतुगभद्दगं खेत्तं आगंतुगा वा अदेसिया अखेत्तण्णा वा, ताहे वत्थव्वा असंथरे गच्छंति। मोत्तूण गिलाणसंघाडं ति।

अथवा – दोण्ह वि संजयवग्गाणं बालवुड्ढअसहुमादी अच्छंति, सेसा दुण्ह वि वग्गाणं गच्छंति।

अथवा – दुवग्गो वत्थव्वगसंजती आगंतुगसंजतीओ य, एयासिं अप्पणो सट्ठाणे णिग्गमणविधी जहा संजयाणं संजते पडुच्च णिग्गमणे भणियं तहा भणियव्वं ॥४६३५॥

इमो संजतीणं णिग्गमणे विसेसो –

एमेव संजतीणं, वुड्ढी तरुणीण जुंगितगमादी।
पादादिविगलतरुणी, य अच्छते वुड्ढितो पंसे ॥४६३६॥

एत्थ दुगभेदो कायव्वो – वुड्ढीणं तरुणीण य। तरुणीतो णिप्पच्चवाते गच्छंति, वुड्ढीओ अच्छंति। जुंगियाणं अजुंगिताणं वा अजुंगियाओ गच्छंति। जुंगिता दुविधा – जाति सरीरेण य। जातिजुंगिता गच्छंति। सरीरपादादिजुंगिता तरुणीओ य सपच्चवाए अच्छंति। सेसा वुड्ढिमाइ गच्छंति ॥४६३६॥

एवं तेसि ठिताणं, पत्तेगं वा वि अहव मीसाणं।
ओमम्मि असंथरणे, इमा उ जतणा तहिं पगते ॥४६३७॥

एवमित्यवधारणे। येन प्रकारेणोपदिष्टं पत्तेगं णिस्सामण्णं खेत्तं अण्णतरवग्गस्स "मीसं" दो तिण्णि चत्तारि वग्गा एगखेत्ते ठिता साधारणमित्यर्थः। ओमकाले असंथरंताणं पलंबाधिकारे पगते इमा जयणा तेहिं पलंबग्गहणे भण्णति ॥४६३७॥

ओदण मीसे णिम्मीसुवक्खडे पक्क-आम-पत्तेगे।
साहारण सग्गामे, परगामे भावतो वि भए ॥४६३८॥

ओदणादिपदेसु सव्वेसु सग्गामपरग्गामपता चारेयव्वा ॥४६३८॥

"ओदण" इति एयस्स इमा विभासा –

बत्तीसाई जा एक्कघासो खमणं व ण वि य से हाणी।
आवासएण अच्छतु, जा छम्मासे ण उ पलंबे ॥४६३९॥

ओदणस्स बत्तीसं घासा पुरिसस्स आहारो, तं एक्केण घासेण णूणता लब्भति, एक्कतीसं ति वुत्तं भवति। तेहिं अच्छउ, जति से आवस्सयसंयमादिया जोगा ण परिहायंति, मा पलंबे गेण्हउ।

"जा एक्को घासो" त्ति, एत्थ हाणी दरिसिज्जति – दोहिं लंबणेहिं ऊणा बत्तीसं लंबणा लब्भंति, तीसं ति वुत्तं भवति। तेहिं अच्छउ, जति से आवस्सयसंयमादिगा जोगा ण परिहायंति, मा य पलंबे गेण्हतु।

एवं एक्केक्कलंबणपरिहाणीए ताव णेयव्वं जाव एक्को लंबणो लब्भति, तेणेवेक्केणं अच्छउ जति से आवस्सयमादिया जोगा ण परिहायंति, मा य पलंबे गेण्हउ।

एक्कघासो वि ण लब्भति एक्कं दिवसं ताहे खमणं करेत्ता अच्छउ, जति से आवस्सयमादिया जोगा न परिहायंति, मा य पलंबे गेण्हतु ।

बितियदिणे पारेइ बत्तीसं लंबणे एत्थ वि पारणदिवसे एक्केक्कलंबणपरिहाणीए एता अच्छउ, जाव एक्को घासो, जइ से आवस्सयमादिया जोगा न परिहायंति । पारणदिवसे एक्को वि घासो ण लद्धो ताहे छट्ठं करेउ, छट्ठपारणे बत्तीसादि जाव घासो वि ण लद्धो ताहे अट्ठमं करेउ, जति से णत्थि परिहाणी । "जा" इत्यनेन खमणे वुड्ढी दंसिता, खमणवड्ढिया पारणे अलभंतो खमणं करेइ जाव छम्मासं संपत्तो, जति से आवस्सयपरिहाणी णत्थि, मा य पलंबे गेण्हतु ॥४६३६॥ सग्गामे ओदणे त्ति गतं ।

इदाणिं [1]परग्गामे —

जावतियं वा लब्भति, सग्गामे सुद्ध सेस परगामे ।
मीसं च उवक्खडियं, सुद्धज्झवपूरयं गेण्हे ॥४६४०॥

जावतियं सुद्धोदणं सग्गामे लब्भति, जति तेण ण संथरति [जो जत्तिएण वा संथरति] तं परगामाओ ओदणं सुद्धं आणेयव्वं । ओदणे त्ति गतं ।

इदाणिं "[2]मीसे" त्ति पच्छद्धं – ओदणं जया सग्गामपरग्गामेसु पज्जत्तियं ण लब्भति ताहे सग्गामे जं ओदणं मीसुवक्खडं दव्वभावतो भिण्णं तं सुद्धज्झवपूरयं सग्गामे गेण्हति ॥४६४०॥

तत्थ वि घेप्पति जं मीसुवक्खडं दव्व-भावतो भिण्णं ।
दव्वाभिण्णविमिस्सं, तस्सऽसति उवक्खडं ताहे ॥४६४१॥

"तत्थ" गाहा पुव्वद्धं–जति तस्स सग्गामे असती ताहे तम्मीसोवक्खडं दव्वभावतो भिण्णं परग्गामतो सुद्धस्स अज्झवपूरयं आणेति । "दव्वाभिण्णविमिस्सं तस्सऽसति उवक्खडं ताहे" पच्छद्धं – जइ तं पि ण लब्भइ ताहे सग्गामे चेव जं ओदणं मीसोवक्खडं ततियभंगे दव्वतो अभिण्णं तं सुद्धऽज्झवपूरयं गेण्हति जति सग्गामे ण लब्भति ताहे तं चेव परग्गामातो आणेति ॥४६४१॥

इदाणिं "[3]णिमीस्सं" तं ठप्पं ताव – कमपत्तं पणगपरिहाणिं ताव भणामि – जाहे सुद्धोदणं मीसोवक्खडं च पज्जत्तियं ण लब्भति ताहे चेव सुद्धमीसोवक्खडा सग्गामपरग्गामेसु पणगपरिहाणीए उग्गमादिसुद्धस्स सुद्धोदणस्स मीसोवक्खडस्स य अज्झवपूरयं गेण्हति । एत्थ लक्खणं जं जं अवराहपदं अतिक्कमति तं तं आधारे ठवेयव्वं । तम्मि वि अलब्भमाणे दसराइंदियदोसजुत्तं सग्गामपरग्गामेसु अज्झवपूरयं गेण्हति । एत्थ दसराइंदिया आहारे ठिया । तम्मि वि अलब्भमाणे पण्णरसराइंदिएहिं सग्गामपरग्गामे अज्झवपूरयं गेण्हंति । एत्थ पण्णरसराइंदिया आहारे ठिया । एवं जाव पणुवीसा राइंदिया ।

तेहिं वि अलब्भाणे इमं भणति —

पणगाति मासपत्तो, ताहे णिम्मीसुवक्खडं भिण्णं ।
निम्मीस उवक्खडियं, गेण्हति ताहे ततियभंगे ॥४६४२॥

"णिम्मीसं ठप्पं" ति जं पुव्वं तमिदाणिं भणति — जाहे भिण्णमासमतिक्कतो मासलहुं पत्तो ताहे सग्गामे णिम्मीसुवक्खडं दव्वभावतो भिण्णं अज्झवपूरयं गेण्हति । सग्गामे अलब्भमाणे तं चेव परग्गामातो

---

[1] गा० ४६३८ । [2] गा० ४६३८ । [3] गा० ४६३८ ।

अज्झवपूरयं आणेइ। जाहे तं चरिमभंगे ण लब्भति ताहे सग्गामे ततियभंगे दव्वतो अभिण्णं णिम्मीसोवक्खडं अज्झवपूरयं गेण्हति। असति सग्गामे तं चेव परग्गामातो अज्झवपूरयं आणेति ॥४६४२॥ एवं "उवक्खडं" ति गतं।

इदाणि "[1]पक्कं आमं" च भण्णति –

एमेव पउलिताऽपलिते य चरिम-ततिया भवे भंगा।
ओसहि-फलमादीसु, जं चाऽऽइण्णं तयं नेयं ॥४६४३॥

"एवं" अवधारणे। किं अवधारेति ? उच्यते – जं अतिक्कंतं तं अवधारेति. "पक्कं" ति पक्कं णाम जं अग्गिणा पउलियं, जहा वाइंगणं इंगुपरकुणगोविल्लंवि वा अंटेरगमादि, एयं पि ओदणमीस-णिम्मीसोवक्खडस्स वा सग्गामे चरिमभंगेण अज्झवपूरयं गेण्हति। असति परगामतो चरिमभंगेण चेव आणेति। चरिमभंगासति एयं चेव ततियभंगेण सग्गामतो परग्गामतो वा अज्झवपूरयं आणेति। पक्कासतीए "आमं", आमं णाम जं अपउलियं, अग्गिणा ण पक्कं ति। अण्णेण वा केणइ पगारेण न पक्कं, णिज्जीवं च, जहाकयलगं चि ब्भडं जरट्ठ-तपुसादि वा, एयं पि चरिमभंगे सग्गामे परग्गामेसु अज्झवपूरयं गेण्हति। चरिमभंगासति ततियभंगेण सग्गामेसु अज्झवपूरयं गेण्हति।

"ओसहि" पच्छद्धं, ओसधी धण्णा, तिफला अंबातिया, एतेसिं मज्झे जं आइण्णं, आइण्णं णाम जं साहूहिं आयरियं विणा वि ओमादिकारणेहिं गिण्हंति तं। ओसहीसु जहा आलिसंदय चणया। फलेसु जहा त्रिफला। आदिसद्दातो मूलकंदादि जं आइण्णं तं णेयं। "नेयमि" ति नयणीयं, नीयते वा नीयं,-अहवा ज्ञातव्यं।

कहं ? उच्यते – एत्थ आइण्णा अत्थओ विभागेण दट्ठव्वा।

ते कहं जाणियव्वा भवंति ? भण्णति – पणगपरिहाणीओ पुव्वं जे पदा ते आइण्णा, जं पुण पदं पणगपरिहाणीकमेण पत्तं पडिसेवितं तं नियमा अणाइण्णं। एत्थ जं भणियं मीसोवक्खडं तं नियमा आइण्णं। णिम्मीसुवक्खडं पुण आइण्णं पि अणाइण्णं पि, ॥४६४३॥

जतो भण्णति –

सगला-ऽसगलाइन्ने, मिस्सोवक्खडिते णत्थि हाणीओ।
जतितुममिस्सग्गहणे, चरिमदुगे जं चऽणाइण्णं ॥४६४४॥

इमाए गाहाए आइण्णअणाइण्णविभागो दंसिज्जति पुव्वद्धेण आइण्णं, पच्छद्धेण अणाइण्णं। सगलं जं ततियभंगे दव्वतो अभिण्णं तं दुविहं ओदणं – मीसोवक्खडं, निम्मीसोवक्खडं च। असगलं जं चरिमभंगे दव्वभावेहिं य भिण्णं तं पि दुविधं ओदणं – मीसोवक्खडं निम्मिस्सोवक्खडं च। एयस्स जं जं अप्पदोसतरं पदं तं पुव्वं सग्गामपरग्गामेहिं चारेयव्वं जाव णिम्मिस्सोवक्खडं। अणाइण्णं ण पावइ। एयम्मि आइण्णभेदे पदातो पदं संकमंतस्स पणगपरिहाणी णत्थि।

कुतः ? उच्यते – आइण्णत्तणतो अपायच्छित्तित्तणओ य। "जइउं" पच्छद्धं – जइउं पुण पणगपरिहाणीए जाहे मासं पत्तो ताहे णिम्मिस्सोवक्खडस्स अणाइण्णस्स गहणं करेति।

---

१ गा० ४६ ८।

"चरिमदुगि" त्ति चउत्थततियभंगेसु त्ति वुत्तं भवति, जं च त्ति जम्हा एयं पणगपरिहाणिपत्तो गेण्हति तम्हा एमादि अणाइण्णं णायव्वं।

अहवा - "जं चऽणाइण्णं" ति जं च अण्णं पि एवं पणगपरिहाणीए घेप्पति तं सव्वं अणाइण्णं णायव्वं।

चोदगाह - "आइण्णाऽणाइण्णेसु दोसु वि णिम्मीसोवक्खडं दिट्ठं, कहं एगमाइण्णं एगं अणाइण्णं" ?

अत्रोच्यते - सति णिम्मीसोवक्खडाभावे जं आयरियपरंपरएणं वालुंकलाओ आदिण्णं णिम्मिसोवक्खडं आसेवितं तं आइण्णं, जं पुण तेहिं चेव वज्जसूरणकंदादि णासेवियं तं अणाइण्णं।

अहवा - जं आगमे - "[1]अप्पे (सिया) भोयणजाए वहुउज्झियधम्मिए" एवमादिए पडिसिद्धं तं अणाइण्णं, जं पुण अणुण्णायं तं आइण्णं।

चोदकाह - "णिज्जीवं कहमणाइण्णं" ?

उच्यते - आगमप्रामाण्यात् ॥४९४४॥

जति ताव पिहुगमादी, सत्थोवहता व होंतऽणाइण्णा।
किं पुण असत्थोवहता, पेसी पव्वा य सरडू वा ॥४९४५॥

विही पक्का भज्जिता भट्ठे फुडिया तुसा अवणिया पिउगा भण्णंति। अगणिसत्थोवहया जति ते वि अणाइण्णा, किं ति कहिं, पुण विसेसणे।

किं विसेसेति ? - असत्थोवहयत्तणं पलंबस्स उद्धफालपेसी, पव्वा तं मिलाणं, सरडु अवद्धट्ठियं, एते असत्थोवहता - कहं आइण्णा भविष्यन्तीत्यर्थः ॥४९४५॥ एयं सव्वं परित्ते भणियं। परित्ते त्ति गयं।

इदाणिं "[2]साहारणे" त्ति भण्णति -

साहारणे वि एवं, मिस्सा-ऽमिस्से य होइ भयणा उ।
पणगाइ गुरुपत्तो, सव्वविसोही य जय ताहे ॥४९४६॥

साधारणं णाम अणंतं, तत्थ वि चरिमततियभंगेसु मिस्से णिम्मिस्से य जहा पत्तेगे भणियं तहा भाणियव्वं। णवरं - परित्ते जहा ततियभंगे ण लब्भति तदा मासलहुगाओ उवरिं उग्गमादिसु जत्थ पंचराइंदिया अब्भहिया तं सग्गामपरग्गामे गेण्हति, एवं जाहे गुरुगं मासं पत्तो ताहे साधारणस्स चउत्थभंगेण सग्गामपरग्गामेसु गेण्हति, तस्सऽसति ततियभंगे, अणंतततियभंगासति "सव्वविसोहीय जया ताहे" त्ति इमा अविसोधी आहाकम्मियं चरिमेसु तिसु उद्देसिकेसु पूतीकम्मे य मीसजाते य बादरपाहुडियाए अज्झोयरए य चरिमदुगे। एते वज्जेउं सेसा उग्गमदोसा विसोहिकोडी, तत्थ वि जं अप्पदोसतरं त पडिसेवति, तं पि पणगे परिहाणि पत्तो, जाहे उग्घातियावि न लब्भति तदुवरि पणगपरिहाणीए जाहे चउगुरुं पत्तो तहा किं आहाकम्मं गेण्हतु ? ॥४९४६॥

अह पढमवितियभंगा गेण्हतु, एत्थ -

कम्मे आदेसदुगं, मूलुत्तरे ताहे वि कलि पत्तेगे।
वादर (दावर) कली अणंते, ताहे जयणाए जुत्तस्स ॥४९४७॥

---

१ दशवेकालिक ५,१,७४। २ गा० ४९३८।

एत्थ दो आदेसा, आहाकम्मे चउगुरुगा, परित्ते पढमबितितिएसु भंगेसु चउलहुगा, पायच्छित्ताणुलोमेणं आहाकम्मं गुरुगं, वताणुलोमेणं पढमबितिया भंगा गुरुआ, जम्हा वतलोवो।

अथवा—अहाकम्मं उत्तरगुणो त्ति काउं लहुतरं, पढमबितियाभंगा मूलगुणो त्ति काउं गुरुआ, एवं कते आदेसदुगे तहावि कम्ममेव घेत्तव्वं, णो पढमबितिया भंगा।

किमिति ? उच्यते—आहाकम्मे जीवा अण्णेण वि जम्हा मारिया, पढमबितिएसु भंगेसु पुण जीवा सव्वे अप्पणा मारेयव्वा। एतेण कारणेणं आहाकम्मं घेत्तव्वं, णो पढमबितिया भंगा। 'कम्मे आदेसदुगं मूलुत्तरे" त्ति गतं।

इदाणिं "विकलिपत्तेग" त्ति—जदा आहाकम्मं ण लब्भति तदा परित्ते बितियभंगो घेत्तव्वो, जदा बितियभंगो ण लब्भति तदा "कलि" त्ति पढमभंगो घेत्तव्वो। "विकलि" त्ति "पत्तेग" त्ति गतं।

इदाणिं "बादरकलि अणंते" त्ति – जधा पत्तेयसरीराणं पढमभंगो ण लब्भति तदा पणगादिणा जाव सग्गामादिसु जयउ, चउलहुअं अतिक्कंतो चउगुरुं च पत्तो भवति तदा अणंते बितिओ भंगो घेत्तव्वो, बादरो (दावरो) णाम बितियभंगो, तम्मि अलब्भमाणे कली घेत्तव्वो। कली णाम पढमभंगो। "बादर (दावर) कली अणंते" ति गतं।

इदाणिं "ताहे जयणाए जुत्तस्से" त्ति—जदा अणंतपढमभंगे वि ण लब्भति ताहे जयणाए जुत्तस्स, जयणा जत्थ जत्थ अप्पतरो कम्मबंधो, तं गेण्हमाणस्स संजमो भवतीति वाक्यशेषः ॥४६४१॥ एवं ताव संजयाणं जयणा भणिता।

अह संजतीणं का जयणा ? उच्यते—

एमेव संजतीण वि, विहि अविही णवरि तत्थ णाणत्तं।
सव्वत्थ वि सग्गामे, परगामे भावतो वि भए ॥४६४८॥

जहा संजयाणं भिण्णाभिण्णे सग्गामपरग्गामेसु जयणा भणिता तहा संजतीण वि भाणियव्वा, णवरि तासिं विधिअविधिभिण्णाणि भणिऊण सव्वत्थ विहिभिण्णाणि घेप्पंति सग्गामपरग्गामेसु य। पढमं छट्ठभंगो, ततो पंचमभंगो, ततो चउत्थभंगो उवउज्ज सव्वं भाणियव्वं ॥४६४८॥ पलंबपगतं सम्मत्तं।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पादे
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पादे
संवाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संवाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पादे
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पादे
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पादे
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पादे
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

❀　　❀　　❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो काय
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायं
संवाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संवाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायं
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायं
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायं
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायं फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

❀　　❀　　❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि वणं
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२५।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि वणं
संवाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संवाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२६।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि वणं तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा
मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२७।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि वणं
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२८।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि वणं
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।२९।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि वणं फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३०।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेज्ज वा विच्छिंदावेज्ज वा
अच्छिंदावेंतं वा विच्छिंदावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३१।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावित्ता वा विच्छिंदावित्ता वा
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३२।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं

अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा
उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेज्ज वा विलिंपावेज्ज वा
आलिंपावेंतं वा विलिंपावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा
अब्भंगावेंतं वा मक्खावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेत्ता मक्खावेत्ता
अन्नयरेणं धूवणजाएणं धूवणावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा
धूवावेंतं वा पधूवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा
अंगुलीए निवेसाविय निवेसाविय नीहरावेइ
नीहरावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा दीहाओ नहसिहाओ कप्पावेज्ज वा
संठवावेज्ज वा कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू.।।३८।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा दीहाइं जंघरोमाइं कप्पावेज्ज वा
संठवावेज्ज वा कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३९।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा दीहाइं कक्खरोमाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा दीहाइं मंसुरोमाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४१।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा दीहाइं वत्थिरोमाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४२।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा दीहाइं चक्खुरोमाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४३।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दंते आघंसावेज्ज वा
पघंसावेज्ज वा, आघंसावेंतं वा पघंसावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४४।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दंते उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।४५।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दंते फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४६।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो उट्ठे
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४७।।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो उट्ठे
संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा
मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति । सू०॥४६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो उट्ठे सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो उट्ठे फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दीहाइं अच्छिपत्ताइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि
संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दीहाइं भुमगरोमाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दीहाइं पासरोमाइं
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा
दंतमलं वा नहमलं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा
पंकं वा मलं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो
सीसदुवारियं कारवेइ, कारवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

सुत्तत्थो जहा ततिउद्देसगे तहा भाणियव्वं, णवरं – अण्णउत्थिएण कारवेइ त्ति वत्तव्वं ।

पादप्पमज्जणादी, सीसदुवारादि जो करेज्जाहि ।
गिहि-अण्णतित्थिएहि व, सो पावति आणमादीणि ॥४६४६॥

तेहिं अण्णउत्थिएहिं गारत्थिएण वा कारवेंतस्स ङ्कं ।

किं कज्जं ?, उच्यते –

कुज्जा व पच्छकम्मं, सेयमलादीहि होज्ज वा अवण्णो ।
संपातिमे वहेज्ज व, उच्छोलप्पावणे व करे ॥४६५०॥

ते साहुस्स पादे पमज्जित्ता पच्छाकम्मं करेज्ज, साहुस्स प्रस्वेदं मलं वा दट्ठुं घाणं वा तेसिं आघाइऊण असुइ त्ति अवण्णं भासेज्जा, अजयणाए वा पमज्जंता संपातिमे वहेज्ज, बहुणा वा दवेण अजयणाए धोवंता उच्छोलणदोसं करेज्ज, भूमिट्ठिए वा पाणी प्लावेज्जा ॥४६५०॥

इमो अववादो –

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, परलिंगे सेहमादीसु ॥४६५१॥

अणप्पज्झो कारवेज्ज, सेहो वा अजाणंतो कारवेज्जा, कारणेण वा परलिंगमज्झट्ठिओ कारवेज्जा, सेहो वा उवट्ठितो जाव न दिक्खिज्जति तेण कारवेज्जा ॥४६५१॥

किं चान्यत् –

पच्छाकडादिएहिं, विस्सामावेउ वादि उव्वातो ।
पण्णवणभाविताणं, सति व दवे हत्थकप्पं तु ॥४६५२॥

साधूण अभावे पच्छाकडेण, आदिसद्दातो गहियाणुव्वएण, दंसणसावगेण वा, एतेहिं विस्सामए ।

को विस्सामविज्जा ?, वादी वा, अद्धाणगतो वा, उव्वातो श्रान्तः, जे भाविता ते पण्णविज्जंति साधूनां पादरजः श्रेष्ठः मांगल्यः शिरसि घृष्यते न दोषः, जे पुण अभाविता तेसिं सति मधुरदवे विद्यमाने हत्थकप्पो तेसिं दिज्जति, मा पच्छा कम्मं करिस्संति ॥४६५२॥

जे भिक्खू आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा
परियावसहेसु वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे भिक्खू उज्जाणंसि वा उज्जाणगिहंसि वा उज्जाणसालंसि वा
णिज्जाणंसि वा णिज्जाणगिहंसि वा णिज्जाणसालंसि वा
उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे भिक्खू अट्टंसि वा अट्टालयंसि वा चरियंसि वा पागारंसि वा दारंसि वा
गोपुरंसि वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे भिक्खू दगंसि वा दगमग्गंसि वा दगपहंसि वा दगतीरंसि वा दगट्ठाणंसि वा
उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे भिक्खू सुन्नगिहंसि सुन्नसालंसि वा भिन्नगिहंसि वा भिन्नसालंसि वा
कूडागारंसि वा कोट्ठागारंसि वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे भिक्खू तणगिहंसि वा तणसालंसि तुसगिहंसि वा तुससालंसि वा
छुसगिहंसि वा छुससालंसि वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे भिक्खू जाणसालंसि वा जाणगिहंसि वा जुग्गगिहंसि वा जुग्गसालंसि वा
उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे भिक्खू पणियसालंसि वा पणियगिहंसि वा परियासालंसि वा
परियागिहंसि वा कुवियसालंसि वा कुवियगिहंसि वा
उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू गोणसालंसि वा गोणगिहंसि वा महाकुलंसि वा महागिहंसि वा
उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे भिक्खू आगंतागारेसु वा इत्यादि सुत्ता उच्चारेयव्वा, जाव महाकुलेसु वा महागिहेसु वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेति । सुत्तत्थो जहा अट्ठमउद्देसगे । इह णवरं – उच्चारपासवणं ति वत्तव्वं । एतेसु ठाणेसु उच्चारमादीणि वोसिरंतस्स ॰ ॰ ।

आगंतागारादी, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसुच्चारादीणि, आयरमाणम्मि आणादी ॥४६५३॥ कंठा

एतेसु ठाणेसु आयरंतस्स इमे दोसा –

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तहेव य दुगुंछा ।
आगंतागारादिसुं, उच्चारादीणि आयरतो ॥४६५४॥

"अनुइसमायारा जोगायारबाहिरा अलसगा वसुलगा भोगोवभोगट्ठाणाणि असुईणि भुंजमाणा विहरंति" एवमादि अयसो, लोगाववादेण य अयसोवहएसु ण कोति पव्वयति त्ति पवयणहाणी, डंडिगादि

वा णिवारेज्ज, तारिसगं वा समायारं दट्ठुं अहिणवधम्मसड्ढगादि विप्परिणमेज्ज, सेहो वा विप्परिणमेज्ज, मिच्छत्तं वा थिरीकरेज्ज, "असुइणो एते" त्ति महाजणमज्झे दुगुंछेज्ज, दुगुंछाए वा तं काएसु परिट्ठवेज्ज, तम्हा ण कप्पति आयरिउं ॥४६५४॥

इमो अववातो —

बितियपदमणप्पज्झे, ओसन्नाइन्नरोहगद्धाणे ।

दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसरणं होति जयणाए ॥४६५५॥

एतीए गाहाए इमा वक्खा — णिसिद्धट्ठाणेसु अणप्पज्झो आयरेज्जा ॥४६५५॥

ओसण्णाऽपरिभोगा, आइण्णा जत्थ अण्णमण्णेहिं ।

अद्धाणे छड्डिज्जति, महाणिवेसे व सत्थम्मि ॥४६५६॥

लोगापरिभोगं ओसण्णं भण्णइ, जहिं अण्णमण्णो जणो वहिं वोसिरइ तं आइण्णं, तं वा टागं रोधगे अणुण्णातं, अद्धाणपवण्णा वा वोसिरंति छड्डेति वा ।

अधवा — महल्लसत्थेण अद्धाणं पवण्णा तं सत्थणिवेसं जाव वोलिउं जंति एंति य ताव महंतो कालो गच्छति, अतो सत्थे वा वोसिरति ॥४६५६॥

दुब्बलगहणि गिलाणाऽतिसारमादी व थंडिलं गंतुं ।

न चएति दवं पुण से, दिज्जति अच्छं समतिरेगं ॥४६५७॥

दुब्बलगहणी ण सक्केति थंडिलं गंतुं, गिलाणो वा वोसिरेज्जा. अतिसारेण वा गहिओ कित्तिए वारे गमिस्सति ?, एवमादिकारणेहिं थंडिलं गंतुं असमत्थो वोसिरति जयणाए, एगो सागरियं णिरक्खेति एगो वोसिरति । अधवा — सागारियं हवेज्जा तो से अच्छं बहुं दवं दिज्जति. अचित्तपुढवीए कुरुकुयं करेति ॥४६५७॥

उज्जाणद्धाणादिसु, उदगपह-सुण्णपहमादिएसुं च ।

जाणासालादीसू, महाकुलेसुं च एस गमो ॥४६५८॥

एतदेव व्याख्यानं यत् पूर्वसूत्रे ॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छति, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू असणादी, देज्जा गिहि अहव अण्णतित्थीणं ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥४६५६॥

तेसिं अण्णतित्थियगिहत्थाणं दितो आणादी पावति चउलहुं च ॥४६५६॥

सव्वे वि खलु गिहत्था, परप्पवादी य देसविरता य ।
पडिसिद्धदाणकरणे, समणे परलोगकंखिम्मि ॥४६६०॥

एतेषु दानं शरीरशुश्रूषाकरणं वा, अथवा – दान एव करणं, यः परलोककांक्षी श्रमणः तस्यैतत्प्रतिषिद्धं । अहवा – एतेसु दाणं करणं किं पडिसिद्धं ?, जेण समणो परलोककंखी ॥४६६०॥

चोदगाह –

जुत्तमदाणमसीले, कडसामाइओ उ होइ समण इव ।
तस्समजुत्तमदाणं, चोदग सुण कारणं तत्थ ॥४६६१॥

"जुत्तं अण्णतित्थियगिहत्थेसु अविरतेसु त्ति काउं दाणं ण दिज्जति, जो पुण देसविरतो सामाइयकडो तस्स जं दाणं पडिसिज्झति एयमजुत्तं, जेण सो समणभूतो लब्भति" ॥४६६१॥

आचार्य आह – हे चोदक ! एत्थ कारणं सुणसु –

रंधण किसि वाणिज्जं, पवत्तती तस्स पुव्वविणिउत्तं ।
सामाइयकडजोगिस्सुवस्सए अच्छमाणस्स ॥४६६२॥

जति वि सो कयसामाइओ उवस्सए अच्छति तहावि तस्स पुव्वणिजुत्ता अधिकरणे जोगा पवत्तंति – रंधणपयणजोगो किसिकरणजोगो वाणिज्जजोगो य, एतेण कारणेण तस्स दाणमजुत्तं ।

चोदक आह – "णणु भणियं समणो इव सावओ" । उच्यते – "इव उवम्मे" ण तु समण एव, तेण सव्वविरती ण लब्भति ॥४६६२॥

जओ भण्णति –

सामाइय पारेतूण णिग्गतो जाव साहुवसतीतो ।
तं करणं सातिज्जति, उदाहु तं वोसिरति सव्वं ॥४६६३॥

आयरिओ सीसं पुच्छति – "सामाइयं करेमि" त्ति साहुवसहीए ठितो एत्ततो आरब्भ जाव सामाइयं पारेउण णिग्गओ साहुवसहीओ पोसहसालाओ वा एयम्मि सामाइयकाले जे तस्स अधिकरणजोगा पुव्वपवत्ता कज्जंति ते सो किं सातिज्जति "उदाहु" वा वोसिरति सव्वे ?

उच्यते – ण वोसिरति, साइज्जति । जति साइज्जति एवं तस्स सव्वविरती ण लब्भति ॥४६६३॥

दुविह-तिविहेण रुंभति, अणुमन्नातेण सा ण पडिसिद्धा ।
तेण उ ण सव्वविरतो, कडसामातिओ वि सो किं च ॥४६६४॥

पाणातिवायादियाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं सो विरतिं करेति, "दुविधं तिविधेणं" ति दुविधं ण करेति ण कारवेति, तिविधं मणेणं वायाए काएणं ति, एत्थ तेण अणुमती ण णिरुद्धा, जतो अणुमती ण णिरुद्धा तेण कारणेण कडसामातितो वि सो सव्वविरतो ण लब्भति ॥४६६४॥

किं चान्यत् –

कामी सघरंऽगणतो, थूलपइण्णा से होइ दट्ठव्वा ।
छेयण भेयण करणे, उद्दिट्ठ कडं च सो भुंजे ॥४६६५॥

पंचविसया कामेति त्ति कामी, सह गृहेन सगृहः, अंगना स्त्री सह अंगनया सांगन, थूलपदण्णा देसविरति त्ति वुत्तं भवति, साधूणं सव्वविरती, वृक्षादिच्छेदेन पृथिव्यादिभेदेन च प्रवृत्तः सामायिकभावादन्यत्र जं च उद्दिट्ठं कडं तं कडसामाइओ वि भुंजति । एवं सो सव्वविरओ ण भवति । एतेण कारणेणं तस्स ण कप्पति दाउं ॥४६६५॥

इमो अववातो –

> बितियपदं परलिंगे, सेहट्ठाणे य वेज्ज साहारे ।
> एएहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती दाउं ॥४६६६॥

एयस्स इमा विभासा –

> कारणलिंगे उड्डोरगत्तणा देज्ज वा वि णिब्बंधे ।
> दव्वगिही सेहस्स व, तेणच्छेज्जे व अद्धाणे ॥४६६७॥

परलिंगं कारणेणं होज्जा, अतो परतित्थियाण मज्झे अच्छंतो देज्ज । सेहो वा उड्डोरगत्तणा दिज्ज । गिही अण्णतित्थी वा णिब्बंधेणं मग्गेज्ज तदा से दिज्जति । सेहो वा गिहिवेसट्ठितो भावतो पव्वइओ तस्स देज्जा । सत्थेण वा पवण्णा अद्धाणं साधू, तत्थ गिहिपंततक्करेहिं गिहीणं अच्छिण्णं, तं साधू गिहीण पच्चप्पिणेज्जा । अथवा – अद्धाणे अति (भि) यत्तियमादियाण देज्जा ॥४६६७॥

> वेज्जस्स पुव्वभणियं, साहारण णिसिरते व दुलभम्मि ।
> पंतेसु अणिच्छेसु व, बहुसमयं तेसि परिभाते ॥४६६८॥

वेज्जस्स वा गिलाणट्ठा आणियस्स देज्जा, तं च जहा दिज्जति तहा पुव्वभणियं । जत्थ गिहीणं अण्णतित्थियाण य साधूण य ओमकाले दुल्लभे भत्तपाणे दंडियमादिणा साहारणं दिण्णं तत्थ ते गिही अण्णतित्थिया वा विभज्जावेयव्वा । अह ते अणिच्छा साधु भएज्जा ।

अहवा – ते पंता, ताहे साधू विभयति, साधुणा विभयंतेण सव्वेसि बहुसमागमे व विभइयव्वं । एसुवदेसो ।

जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

जे भिक्खू ओसण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

जे भिक्खू ओसण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८०॥

जे भिक्खू कुसीलस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

जे भिक्खू कुसीलस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८२॥

जे भिक्खू संसत्तस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

जे भिक्खू संसत्तस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

जे भिक्खू णितियस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,
देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

जे भिक्खू णितियस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८६॥

एतेसिं जो देति, तेसिं वा हत्थाओ पडिच्छति आणादी ङ्क।

पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त-णितियवासीणं ।
जे भिक्खू असणादी, देज्ज पडिच्छेज्ज वाऽऽणादी ॥४६६९॥

किं कारणं तेहिं समाणं दाणग्गहणं पडिसिज्झइ ?, भण्णति –

पासत्थादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
जयमाणा-सुविहिया, ण होंति करणेण समणुण्णा ॥४६७०॥

जम्हा जयमाणाणं साधूणं ते पासत्थादी "करणेणं" ति क्रियाए समणुण्णा सदृशा न भवंति तम्हा दाणग्गहणं पडिसिज्झइ ।

अहवा – जम्हा करणेणं तुल्ला ण भवंति तम्हा तेहिं सह समणुण्णया ण भवति संभोगो न भवतीत्यर्थः ॥४६७०॥

किं चान्यत् –

पासत्थ-अहाछंदे, कुसील-ओसण्णमेव संसत्ते ।
उग्गम-उप्पायण-एसणाए बायालमवराहा ॥४६७१॥

ते पासत्थादी उग्गमदोसेसु सोलससु, उप्पायणदोसेसु य सोलससु, दससु य एसणादोसेसु एतेसु बातालसवराहेसु णिच्चं वट्टंति । अतो देंतेण तेसिं ते सातिज्जिता – अनुमोदिता इत्यर्थः । तेसिं हत्थाओ गेण्हंतेण उग्गमदोसा पडिसेविया भवंति ॥४६७१॥

उग्गम-उप्पायण-एसणाए तिण्हं पि तिकरणविसोही ।
पासत्थ-अहाछंदे, कुसील-णितिए वि एमेव ॥४६७२॥

उग्गमादियाणं तिण्हं पि "तिकरणविसोहि" त्ति सयं ण करेंति, अण्णं पि ण कारवेंति, अण्णं करेंतं ण समणुजाणंति। एक्केक्कं मणवयणकाएहिं ति, "एवं तिकरणे विसोहिं ण करेंति" वक्कसेसं कते एवं ण करेंति पासत्थादी चउरो, अहाच्छंद पंचमा। णितियवासी पुण किरियकलावं जति वि असेसं करेंति तहावि णितियवासित्तणओ एवं चेव दट्ठव्वा ॥४९७२॥

एयाणि सोहयंतो, चरणं सोहेति संसओ णत्थि।
एएहि असुद्धेहिं, चरित्तभेयं वियाणाहि ॥४९७३॥

एते पासत्थादी ठाणा सोधितो, संसग्गं ण करेति त्ति वुत्तं भवति, सो णियमा चरित्तं विसोहेइ। एतेसु पुण असुद्धेसु नियमा चरित्तभेदो-असुद्धिरित्यर्थः। चरित्तेणं असुद्धेणं मोक्खाभावो। तेण पडिकुट्ठं दाणग्गहणं एतेसु। जो पुण एतेसु तिकरणविसोधिं करेति सो णियमा चरित्तविसोहिं करेति। सो णियमा चरित्तं विसोहेति ॥४९७३॥

उग्गमदोसादीया, पासत्थादी जतो ण वज्जेंति।
तम्हा उ तव्विसुद्धिं, इच्छंतो ते वि वज्जेज्जा ॥४९७४॥

जम्हा उग्गमादिदोसे पासत्थादी ण वज्जेंति तम्हा "विसुद्धि" त्ति चरित्तविसुद्धी तं इच्छंतो ते वि पासत्थादी वज्जेज्ज। एस णियमो ॥४९७४॥

किं च –

लक्खिज्जति अणुरागो, दाणेणं पीतितो य गहणं तु
संसग्गता य दोसा, गुणा य इति ते परिहरेज्जा ॥४९७५॥

जो पासत्थादियाण देति तस्स पासत्थादिसु रागो लक्खिज्जइ, जो पुण तेसिं हत्था गेण्हति तस्स तेसु मज्झेणं पीती लक्खिज्जति, तम्हा तेसु जा दाणगहणरागपीतिसंसग्गी सा वज्जेयव्वा।

कम्हा ? जम्हा दुट्ठसंसग्गीतो बहू दोसा, अदुट्ठसंसग्गीतो य गुणा भवंति। "इति" त्ति तम्हा ते दुट्ठसंसग्गिकते दोसे परिहरेज्जा ॥४९७५॥

न वि रागो न वि दोसो, सुहसीलजणम्मि तह वि तू वज्जा।
वणसुगलद्धोवम्मा, णेच्छंति बुहा बहुकरं पि ॥४९७६॥

सुहसीलजणो पासत्थादी, तेसु ण वि रागो ण वि दोसो।

चोदकः – "एवं अत्थापत्तीओ णज्जति तेसु संसग्गिं पडुच्च णाणुण्णा, णा वि पडिसेहो। जति अहापवत्तीए संसग्गी भवति। भवतु णाम ण दोसो ?"

उच्यते – जति वि तेहिं ण रागो ण दोसो वा, तहावि तेहिं जा संसग्गी सा वज्जणिज्जा।

कहं ? उच्यते वणे सुको वणसुको, वणचरेण वा सुगो गहितो वणसुको, तेण कयं उवमं उदाहरणं, तं दट्ठूण जाणिऊण बुधा पंडिता, "बहुकरो" – संसग्गी, तं णेच्छंति।

मातात्येका पिताप्येको, मम तस्य च पक्षिणः।
अहं मुनिभिरानीतः, स च नीतो गवाशनैः ॥१॥

गवाशनानां स गिरः शृणोति, वयं च राजन् ! मुनिपुंगवानाम् ।
प्रत्यक्षमेतद् भवतापि दृष्टं, संसर्गजा दोषगुणा भवंति ॥२॥

अण्णं च पडिसिद्धं तित्थकरेहिं जहा "अकुसीलेण सदा भवियव्वं" ॥४६७६॥

पुणो पडिसिज्झति —

पडिसेहे पडिसेहो, असंविग्गे दाणमादि तिक्खुत्तो ।
अविसुद्धे चउगुरुगा, दूरे साहारणं कातुं ॥४६७७॥

जो कुसीलो तेण संसग्गी ण कायव्वा । एस पडिसेहे पडिसेहो । असंविग्गस्स पाहुणस्स तिण्णि वारे देति मातिट्ठाणविमुक्को । तस्स आउट्टंतस्स एक्कसि मासलहु, दो तिण्णि य वाराए वि मासलहु, ततियवाराओ परं णियमा माइस्स मासगुरुं विसंभोगो य, जो तं अविसुद्धं संभुंजति तस्स चउगुरुगा ।

"दूरे साधारणं काउं" ति केइ अण्णदेसं संभोतिता गता तत्थ अण्णे गंतुमणा पुच्छेज्जा — "ते अम्हं किं संभोतिता ? असंभोतिता ?" तत्थ आयरिओ जति एगंतेण भणति — "संभोतिया," तो मासलहुं । अह भणति — "असंभोतिया", तो वि मासलहुं । असंखडादी दोसा, तम्हा आयरिएणं साधारणं कायव्वं — "भो ! सुण, संभोति होइया, इदाणिं ण णज्जति, तुब्भे णाउं भुंजेज्जह ।" जम्हा एवमादि दोसगणो भवति तम्हा तेसिं ण दायव्वं, ण वि तेसिं हत्थाओ पडिच्छियव्वं ॥४६७७॥

इमो अववातो —

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, देज्जा अहवा पडिच्छेज्जा ॥४६७८॥ कंठा

जतितूण मासिएहिं, उवदेसो पुव्वगमणसंघाडे ।
एसा विही तु गहणे, देज्ज व एसिं असंथरणे ॥४६७९॥

"जतिऊण मासिएहिं" ति जे ओहुद्देसियमादी ठाणा तेसु पुव्वं गेण्हति त्ति वुत्तं भवति, जता तेसु ण लब्भति तदा पासत्थादिउवदिट्ठेसु गिण्हंति ।

तहावि असती ताहे पुव्वगतो पासत्थो परिचियघरेसु दावावेति ।

तहावि असती पासत्थसंघाडेण हिंडति । एसा तेसिं समीवातो गहणे जयणा । तेसिं वा असंथरे देज्जा ण दोसा ॥४६७९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८७॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८८॥

अण्णउत्थियमादीण उवहिवत्थमादीणि देज्जं देति, पाडिहारियं वा देति ।

अधवा — तेसिं समीवातो पाडिहारियं गेण्हति, तस्स आणादिया दोसा । ङ्क ।

जे भिक्खू वत्थाइं, देज्जा गिहि अहव अण्णतित्थीणं ।
पडिहारियं च तेसिं, पडिच्छए आणमादीणि ॥४९८०॥ कंठा

मइलं च मइलियं वा, धोविज्जा छप्पदा व उज्झेज्जा ।
मलगंधा वाऽवण्णं, वदेज्ज तं वा हरेज्जा हि ॥४९८१॥

इमे य मइलं साधूहिं दिण्णं तं धोवेति ।

अहवा – तेहिं चेव मइलियं जति वारे धोवति ततिया ङ्क । जं साहूहिं दिण्णं ततो छप्पयातो छड्डेज्जा । अधवा – तम्मि वत्थे वाहिज्जंते छप्पदातो सम्मुच्छंति, ताव छड्डेज्ज, तेसिं घट्टणे ङ्क, परितावणे फ्रु । उद्दवणे फ्रु ।

अधवा – तम्मि वत्थे मलिणे मलगंधे वा अवणं भासेज्जा "असुतिमलिणसमायार" त्ति ।

अधवा – तं पाडिहारियं दिण्णं तेहिं हरेज्जा ॥४९८१॥

सव्वे वि खलु गिहत्था, परप्पवादी य देसविरया य ।
पडिसिद्ध दाण-गहणे, समणे परलोगकंखिम्मि ॥४९८२॥ कंठा

जुत्तमदाणमसीले, कडसामइओ उ होइ समण इव ।
तस्समजुत्तमदाणं, चोदग ! सुण कारणं तत्थ ॥४९८३॥ कंठा

रंधण किसि वाणिज्जं, पवत्तती तस्स पुव्वविणियुत्तं ।
सामाइयकडजोगि स्सुवस्सए अच्छमाणस्स ॥४९८४॥

सामाइय पारेतूण णिग्गतो जाव साहुवसहीओ ।
तं करणं सातिज्जति, उदाहु तं वोसिरति सव्वं ॥४९८५॥

दुविह तिविहेण रुंभति, अमणुण्णा तेण सा ण पडिसिद्धा ।
तेण उ ण सव्वविरतो, कडसामाइओ वि सो किं च ॥४९८६॥

किं च –

कामी सघरंऽगणओ, थूलपइण्णा से होइ दट्ठव्वा ।
छेयण-भेयण-करणे, उद्दिट्ठकडं च सो भुंजे ॥४९८७॥

एताओ गाहाओ पूर्ववत् ।

तेसिं हत्थाओ पाडिहारियं गेण्हंति इमे दोसा –

णट्ठे हित-विस्सरिते, छिण्णे वा मइलिए य वोच्छेयं ।
पच्छाकम्मं पवहणं, धुयावणं वा तदट्ठस्स ॥४९८८॥

गिहि-अण्णतित्थियाण हत्थाओ पाडिहारियं वत्थं गहियं, तेणेण वा हारियं, [illegible] वा विस्सारियं, मूसगादिणा वा छिण्णं, परिभुज्जमाणं वा मइलं कतं ।

एवमादिएहिं कारणेहिं तम्मि पाडिहारिए, अन्नम्मि जंते वोच्छेदं करेज्ज । तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स पाडिहारियं दाउं तट्ठे वा अण्णो अण्णं कारवेति । एवं पच्छाकम्मं ।

अहवा – अण्णो पुव्वकयं अच्छतं पवाहेति, तहावि कारणेसु वा कुव्वावेति – इदद्वं कुर्वतीत्यर्थः । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा पाडिहारियं गेण्हिउ वाणो ण दायव्वं ॥४८८८॥

भवे कारणं जेण गेण्हइ –

> सिनियपदं परलिंगे, मेहट्ठाणे य वेज्जमाहारे ।
> अद्धाण देस गेलण्ण, असति पडिहारिते गहणं ॥४८८९॥

कारणं परलिंगट्ठितो देज्ज वा गेण्हेज्ज वा, सिहि अणिग्गिविट्ठो वा मेहो त्ति पव्वइउकामो तस्स दिज्जति, अद्धाणे वा तहा सव्वं देज्ज, "आहारे" त्ति णट्ठे पुव्वभणिया । एतेहिं कारणेहिं पाडिहारियं पडिच्छेज्जा ।

अद्धाणे अण्णो असति कुसिणो वा पाडिहारियं गेण्हेज्जा ।

"देसि" त्ति ओमोयरिए अण्णो पाडिहारियं गेण्हेज्जा, गिलाणस्स वा अत्तुरणादि गेण्हेज्जा । "असति" त्ति ण देज्ज, अण्णदण्णाले, पाडिहारियमवि गेण्हेज्जा ॥४८८९॥

जे भिक्खू पासत्थस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

जे भिक्खू पासत्थस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९०॥

जे भिक्खू ओसन्नस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९१॥

जे भिक्खू ओसन्नस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९२॥

जे भिक्खू कुसीलस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९३॥

जे भिक्खू कुसीलस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९४॥

जे भिक्खू नितियस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९५॥

जे भिक्खू नितियस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९६॥

जे भिक्खू संसत्तस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९७॥

जे भिक्खू संसत्तस्स वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९८॥

जे भिक्खू वत्थादी, पासत्थोसण्णनितियवासीणं ।
देज्जा अहव पडिच्छे, सो पावति आणमादीणि ॥४९९०॥

पासत्थादी पुरिसा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
जयमाणसुविहियाणं, ण होति करणेण समणुण्णा ॥४९९१॥

पासत्थमहाछंदे, कुसील ओसण्णमेव संसत्ते ।
उग्गम उप्पायण एसणा य बातालमवराहा ॥४९९२॥

उग्गम उप्पायण एसणा य तिविहेण तिकरणविसोही ।
पासत्थ अहाछंदे, कुसील नितिए वि एमेव ॥४९९३॥

एयाणि सोहयंतो, चरणं सोहेति संसओ णत्थि ।
एएहिं असुद्धेहिं, चरित्तभेयं वियाणाहि ॥४९९४॥

उग्गमदोसादीया, पासत्थादी जतो न वज्जेंति ।
तम्हा उ तव्विसुद्धिं, इच्छंतो ते विवज्जेज्जा ॥४९९५॥

सातिज्जति अणुरागो, दाणेण पीतितो य गहणं तु ।
संसग्गता य दोसा, गुणा य इति ते परिहरेज्जा ॥४९९६॥

न वि रागो न वि दोसो, सुहसीलजणम्मि तह वि तू वज्जा ।
वणसुगलद्धोवम्मा, णेच्छंति बुहा चइकरं पि ४९९७॥

पडिसेहे पडिसेहो, असंविग्गे दाणमादि तिक्खुत्तो ।
अविसुद्धे चउगुरुगा, दूरे साहारणं कातुं ॥४९९८॥

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
[1]सेहे चरित्त सावय, भए व देज्जा अथव गेण्हे ॥४९९९॥

जत्थ सुलभं वत्थं तम्मि विसए अंतरे वा असिवादि कारणे हुज्जा, एवमादिकारणेहिं तं विसयमागच्छंतो इह मलभंतो पासत्थादि वत्थं गेण्हेज्जा, देज्ज वा तेसिं ॥४९९९॥

---

१ अद्धाणं सेहे वा, देज्जा अहवा पडिच्छेज्जा, इतिपाठान्तरम् गा० ४९९९ ।

अथवा –

अद्धाणम्मि विवित्ता, हिमदेसे सिंधुए य ओमम्मि ।
गेलण्ण कोट्ठ कंबल, अहिमाइ [1]पडेण ओमज्जे ॥५०००॥

अद्धाणे वा विवित्ता, मुसिया, अप्पणो अलभंता पासत्थादि वत्थं गेण्हेज्जा ।
हिमदेसे वा सीताभिभूता पाडिहारियं गेण्हेज्जा । एमेव सिंधुमादिविसए ।
ओमम्मि उज्जलवत्थो भिक्खं लभति, अप्पणो तम्मि उज्जलवत्थे असंते पासत्थादियाण गेण्हेज्जा ।
गेलण्णे वा किमिकुट्ठादिए कंबलरयणं पासत्थादियाण देज्ज गेण्हेज्ज वा,
अहिमादिडक्के वा सगलवत्थेणं उमज्जणं कायव्वं, अप्पणो असंते पासत्थवत्थं गेण्हेज्जा देज्ज वा तेसिं॥५०००॥

जे भिक्खू जायणावत्थं वा णिमंतणावत्थं वा अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।
से य वत्थे चउण्हं अण्णतरं सिया, तं जहा –
निच्च-नियंसणिए मज्जणिए छणूसविए राय-दुवारिए ॥सू०॥६६॥

जायणवत्थं जं मग्गिज्जइ "कस्सेयं" ति अपुच्छिय, "कस्सट्ठा कडं" ति अगवेसिय । णियंसणं जं दिया राती य परिहिज्जेइ । "मज्जिउ" त्ति ण्हातो ज परिहेति देवघरपवेसं वा करेंतो तं मज्जणीयं । जत्थ एक्केण विसेसो कज्जति सो छणो, जत्थ सामण्णभत्तविसेसो कज्जइ सो ऊसवो । अहवा – छणो चेव ऊसवो छणूसवो, तम्मि जं परिहिज्जति तं छणूसवियं । रायकुलं पविसंतो जं परिहेति तं रायदारियं । एयं वत्थं जो अपुच्छिय अगवेसिय गिण्हति तस्स चउलहुं, आणादिया य दोसा । एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्तिवित्थरो –

तं पि य दुविहं वत्थं, जायणवत्थं णिमंतणं चेव ।
णिमंतणमुवरि वोच्छिहिति, जायणवत्थं इमं होइ ॥५००१॥

वस आच्छादणे, ग तं आच्छादेति जम्हा तेग वत्थं ।

तस्सिमो निक्खेवो –

नामं ठवणा वत्थं, दव्वावत्थं च भाववत्थं च ।
एसो खलु वत्थस्सा, णिक्खेवो चउव्विहो होइ ॥५००२॥

णाम-ठवणाओ गताओ, दव्व-भाववत्थे इमं भणणति –

एगिंदि-विगल-पंचिंदिएहि णिप्फण्णगं दवियवत्थं ।
सीलंगाइं भावे, दविए पगतं तदट्ठाए ॥५००३॥

एगिंदियणिप्फण्णं कप्पासमादि, विगलिंदियणिप्फण्णं कोसेज्जमादि, पंचेंदियणिप्फण्णं उण्णियमादि, एयं दव्वं वत्थं । भाववत्थं अट्ठारससीलंगसहस्साइं । दविए पगयं । "तदट्ठाए" त्ति एत्थ दव्ववत्थेण अधिकारो,

[1] डंकेण, इत्यपि पाठः ।

"तदट्ठाए" त्ति भाववस्त्रार्थं, जम्हा तेण वत्थेण कारणभूतेण भाववत्थं साहिज्जति सरीरस्योपग्रहकारित्वात्, शरीरे निराबाधे सति ज्ञानादय इति ॥५००३॥

पुणरवि दव्वे तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।
एक्केक्कं तत्थ तिहा, अहाकडऽप्पं सपरिकम्मं ॥५००४॥

जं तं एगिंदियादि दव्ववत्थं भणियं तं तिविधं भवति – जहण्णं मज्झिमं उक्कोसं च । जहण्णं मुहपोत्तियादि, मज्झिमं चोलपट्टादि, उक्कोसं वासकप्पादि । पुणरवि एक्केक्कं तिविधं – अहाकडं अप्पपरिकम्मं बहुपरिकम्मं । एवं मज्झिमयं ३, उक्कोसयं च ३, तिविधं भाणियव्वं ॥५००४॥

इमो उक्कोसादिसु पच्छित्तविभागो –

चाउम्मासुक्कोसे, मासिय मज्झे य पंच य जहण्णे ।
वोच्चत्थगहण-करणं, तत्थ वि सट्ठाणपच्छित्तं ॥५००५॥

उक्कोसे ण्का, मज्झिमे मासलहु, जहण्णे पणगं । "वोच्चत्थगहणं" ति पुव्वं अहाकडं गिण्हियव्वं । तस्सऽसति अप्पपरिकम्मं, तस्स असति बहुपरिकम्मं, एवं कमं मोत्तुं वोच्चत्था गेण्हंतस्स पच्छित्तं । "करण" मिति परिभोगो, जो विवरीयभोगं करेति अविधिभोगं वा तत्थ वि सट्ठाणपच्छित्तं । कण्णं छिदिउं चोलपट्टं करेति, मुहपोत्तियं वा, तत्थ जं करेति तत्थ सट्ठाणपच्छित्तं चिंतिज्जति ॥५००५॥

एसेव पायच्छित्तऽत्थो फुडतरो भण्ण त –

जोगमकाउमहाकडे, जो गेण्हति दोण्णि तेसु वा चरिमं ।
लहुगा तु तिण्णि मज्झम्मि मासियं अंतिमे पंच ॥५००६॥

उक्कोसवत्थस्स अहाकडस्स णिग्गतो तस्स जोगं अकाउं अप्पपरिकम्मं गेण्हति ꞉ ꞉ (४ पारांचिला) ।

अह तस्सेव अहाकडस्स णिग्गतो बहुकम्मं गेण्हति ꞉ ꞉ ।

अह अहाकडस्सासति अप्पपरिकम्मस्स णिग्गतो तस्स जोगं अकाउं बहुपरिकम्मं गेण्हति ꞉ ꞉ ।

एवं उक्कोसे तिण्णि चउलहुया । मज्झिमस्स अहाकडस्स णिग्गतो तस्स जोगं अकाउं अप्पपरिकम्मं गेण्हति तस्स मासलहुं । अह बहुसपरिकम्मं गेण्हति ० (मासलघु) ।

अप्पपरिकम्मस्स णिग्गतो तस्स अजोगं काउं जइ बहुपरिकम्मं गेण्हति ० । । एवं मज्झिमे तिण्णि मासलहुगा ।

जहण्णस्स अहाकडस्स णिग्गओ जति अप्पपरिकम्मं गेण्हति पणगं । अह बहुपरिकम्मं ना (पणगं) । अध अप्पपरिकम्मस्स जहण्णस्स णिग्गतो तस्स जोगमकाउं बहुपरिकम्मं जहण्णं गेण्हति, ना (पणगं) । एवं जहण्णे तिण्णि पणगा, अत्थतो पत्तं ।

अहाकडस्स णिग्गतो – जोगे कते अलब्भमाणे अप्पपरिकम्मं गेण्हमाणो सुद्धो, अप्पपरिकम्मस्स वा णिग्गतो जोगे कए अलब्भमाणे सपरिकम्मं गेण्हमाणो सुद्धो ॥५००६॥

एगतरणिग्गतो वा, अण्णं गेण्हेज्ज तत्थ सट्ठाणं ।
छेत्तूण सिव्विउं वा, जं कुणति तगं ण जं छिंदे ॥५००७॥

उक्कोसयस्स णिग्गतो मज्झिमयं गेण्हति "सट्ठाणं" त्ति मासलहुं ।

अध जहण्णयं गेण्हति तत्थ सट्ठाणं पणगं भवति ।

मज्झिमयस्स णिग्गतो उक्कोसं गेण्हति तत्थ सट्ठाणं चउलहुगं भवति ।

जहण्णयं गेण्हति ना (पणगं) । जहण्णयस्स णिग्गतो उक्कोसयं गेण्हति ़ङ्क । मज्झिमं गेण्हति ० । आणादिया दोसा । तं च कज्जं न तेण परिपूरेति अतिरेगहीणदोसा य भवंति । "[1]वोच्चत्थगहणे" त्ति एयं गयं ।

"[2]करणे तत्थ वि सट्ठाण पच्छित्तं" अस्य व्याख्या —

"छेत्तूण" पच्छद्धं । उक्कोसयं छिंदेत्ता मज्झिमयं करेति मासलहुं, जहण्णयं करेति ना, (पणगं) । मज्झिमयं छिंदेत्ता जहण्णयं करेति, ना (पणगं) । जहण्णए संधाएत्ता उक्कोसयं करेति ॰॰ ॰॰ । जहण्णयं संधाएत्ता मज्झिमं करेति ० । मज्झिमे संधाएत्ता उक्कोसं करेति ५क । जं छिंदति तण्णिप्फण्णं ण भवति । आणादिया य दोसा, संजमे छप्पतियविराहणा, आताए हत्थोवघातो, पलिमंथो य सुत्तत्थाणं । जम्हा पायच्छित्तं परियाणामि तम्हा ण वोच्चत्थगहणकरणं कायव्वं, जहाविहं कायव्वं । सव्वे आणादिया दोसा परिहरिया भवंति ।।५००७।।

तं वत्थं इमाहिं चउहिं पडिमाहिं गवेसियव्वं —

उद्दिसिय पेह अंतर, उज्झियधम्मे चउत्थए होइ ।
चउपडिमा गच्छ जिणे, दोण्हेग्गहऽभिग्गहऽण्णतरा ।।५००८।।

गच्छवासी चउहिं वि पडिमाहिं गिण्हति । जिणकप्पियादओ दोण्हं उग्गहं करेति, अंतर उज्झियधम्मिया य, एतेसिं दोण्हं अण्णतरीए गहणं करेति ।।५००८।।

एतेसिं चउण्हं पडिमाणं इमं सरूववक्खाणं —

अमुगं च एरिसं वा, तइया उ णियंसणऽत्थुरणगं वा ।
जं वुज्झे कप्पडिया, सदेस बहुवत्थदेसे वा ।।५००९।।

उद्दिट्ठं णाम उद्दिट्ठसरूवेण ओभासति, "अमुगं च" त्ति जहण्णमज्झिमुक्कोसं ।

अधवा — एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचेंदियनिप्फण्णं गेण्हति ।

बितियपडिमा — पेह इमं से सरूवं — एरिसं वा किंचि वत्थं दट्ठुं भणाति — हे सावग ! जारिसं इमं वत्थं, एरिसं वा देहि, तं वा देहि ।

"अंतरं" तु "ततिया उ" णियंसणऽत्थुरणगं वा । ततिय त्ति पडिमा । तु स्वरूपावधारणे । "णियंसणं" सो य साडगो, साडगगहणातो पाउरणं पि दट्ठव्वं । "अत्थुरणं" ति प्रस्तरणं प्रच्छदादि, अण्णं पोत्तं परिहिउकामो पुव्वणियत्थवत्थते अवणेउकामो एयम्मि अंतरे मग्गंति ।

"उज्झियधम्मा चउत्थिय" त्ति सदेसं गंतुकामा कप्पडिया जं उज्झंति तं मग्गंति, बहुवत्थदेसं वा गंतुकामा उज्झंति, बहुवत्थदेसे वा जं उज्झियं लब्भति । एसा अण्णायरियकयगाहा ।।५००९।।

इमा भद्दबाहुकता —

उद्दिट्ठ तिगेगतरं, पेहा पुण दिस्स एरिसं भणति ।
अण्ण णियत्थऽत्थुरियं, ततिएणितरं तु अवणेंते ।।५०१०।।

---

[1] गा० ५००५ । [2] गा० ५००५ ।

उद्दिट्ठं श्रोभासति – "देहि मे तिण्हं वत्थाणं श्रण्णतरं" जहण्णादी । श्रथवा – एगिंदियादितिगं । पेहा णाम दट्ठूणं पूर्ववत् ।

ततिया श्रंतरिज्जं उत्तरिज्जं वा । श्रंतरिज्जं णाम णियंसणं, उत्तरिज्जं पाउरणं ।

श्रधवा – श्रंतरिज्जं णाम जं सिज्जाए हेट्ठिल्लपोत्तं, उत्तरिल्लं जं उवरिल्लं पच्छदादि, श्रण्णं णियंसेति वा श्रत्थुरति । "इयर" मिति पुव्वणियत्थं श्रत्थुरणं वा श्रवणेति, जम्मि काले तम्मि श्रंतरे मग्गति ।

श्रहवा – "इयरमि" त्ति उज्झियधम्मियं, तं "श्रवणे" त्ति छड्डेति, तं मग्गति ॥५०१०॥

तत्थ जा उज्झियधम्मिया पडिमा सा चउव्विहा–दव्वश्रो खेत्तश्रो कालश्रो भावश्रो ।

तत्थ दव्वुज्झितं इमं –

दव्वाइ उज्झियं दव्वश्रो उ थूलं मए ण घेत्तव्वं ।
दोहि वि भावणिसिद्धं, तमुज्झिश्रोभट्ठऽणोभट्ठं ॥५०११॥

जस्स श्रणगारस्स एवं पइण्णा भवति थूलं मए ण घेत्तव्वं, ण परिभोत्तव्वं, तं च से केणती उवणीयं, तं च पडिसेवियं, "श्रलं मम तेण" त्ति भावतो चत्तं । जेण वि श्राणियं सो वि भणाति – "जति एस ण गेण्हति तो ममं पि ण एतेण कज्जं" ति, तेण वि भावतो चत्तं एयम्मि देसकाले जं जति लब्भति श्रोभट्ठं वा तं गेण्हंतस्स दव्वुज्झियं भवति ॥५०११॥

इदाणिं खेत्तुज्झियं –

श्रमुगिच्चयं ण भुंजे, उवणीयं तं ण केणई तस्स ।
जं वुज्झे कप्पडिया, सदेस बहुवत्थदेसे वा ॥५०१२॥

जहा लाडविसयच्चयं मए वत्थं ण घेत्तव्वं ण वा परिभोत्तव्वं, तं च केणति तस्स उवणीयं, तेण पडिसिद्धं । जेण श्राणियं सो भणाति – जति ण गेण्हति तो वि चत्तं, एयम्मि श्रंतरे माहुग्गोवट्ठियस्स श्रोभट्ठमणोभट्ठं वा देजा । बहुवत्थदेसे जहा महिस्सरे श्रण्णं चोक्खतरयं परिहेंति, श्रण्णं छड्डेंति ॥५०१२॥

इमं कालुज्झियं –

कासातिमाति जं पुव्वकाले जोग्गं तदण्णहिं उज्झे ।
होहिति च एस काले, श्रजोगयमणागतं उज्झे ॥५०१३॥

कासाएण रत्तं कासायं भण्णति । गिम्हे कयं जं हेमंते श्रजोग्गं परिभोगस्सेति काउं छड्डेज्ज जोनि पइट्ठत्तो, श्रादिग्गहणेण श्रकसायं पि । श्रथवा – श्रणागए चेव तस्स कालस्स छड्डेति श्रण्णं जोग्गतरं कसाइमं लद्धूणं ति ॥५०१३॥

इमं भावुज्झियं –

लद्धूण श्रण्णवत्थे, पोराणे ते तु देंति श्रण्णस्स ।
सो वि य णेच्छति ताइं, भावुज्झियमेवमादीणि ॥५०१४॥

उच्चारियसिद्धा । एयाहिं चउहिं पडिमाहिं गच्छवासिणो गेण्हंति, जिणकप्पिया उवरिल्लाहिं दोहिं

गिण्हंति । "[1]अभिग्गहो" त्ति किमुक्तं भवति ? अभिग्गहो दोण्ह वि अण्णतरं अभिगिज्झ, तासि चेव दोण्हं एगाए गेण्हंति । जा पुण आदिल्लातो दो अणभिग्गहियाओ ताओ ण गेण्हंति ॥५०१४॥

तं पुण गच्छवासी कहं मग्गइ ? काए वा विधीए ? त्ति, उच्यते –

जं जस्स णत्थि वत्थं, सो तु णिवेदेति तं पवत्तिस्स ।
सो य गुरूणं साहति, णिवेदे वावारए वा वि ॥५०१५॥

जं जस्स साधुणो वासकप्पंतरकप्पगादी णत्थि सो तं पव्वत्तिणो साहति, जहा "मम अमुगं च वत्थं णत्थि" । सो वि पवत्ती गुरूण साहति, गुरू णाम आयरिओ, तं भणति – अमुगस्स साहुस्स अमुगं च वत्थं णत्थि । गच्छे य सामाचारी इमा अभिग्गही भवंति "मए वत्थाणि पाता वा आणेयव्वाणि", अण्णेण वा जेण केति पओयणं साहूणं ताहे सो आयरिओ तेंसि अभिग्गहियाणं निवेदेति, जहा – "अज्जो ! अमुगस्स साधुस्स अमुगं वत्थं णत्थि" । अध णत्थि अभिग्गहिला तो सो चेव साधू भण्णति – "तुमं अप्पणो वत्थ उप्पादेहि ।" अह सो असत्तो उप्पाएउं तो अण्णो जो साधू सत्तो आयरिया तं वावारेंति, जहा– "अमुगं वत्थं मग्गह" त्ति॥५०१५॥

जो सो अभिग्गहितो, जो वा सो वावारितो, ते काए विधीए उप्पादेति ? उच्यते –

भिक्खं चिय हिंडंता, उप्पाए असति वितिय-पढमासु ।
एवं पि अलब्भंते, संघाडेक्केक्क वावारे ॥५०१६॥

सुत्तपोरिसिं अत्थपोरिसिं च करेत्ता भिक्खं चेव हिंडित्ता उप्पादेंति ।

"असति" त्ति जति भिक्खं हिंडंता ण लभंति, ता "वितिय" त्ति अत्थपोरिसी वज्जेत्ता वितियाए वि पोरिसीए मग्गंति । तह वि असतीते "पढमाए" त्ति सुत्तपोरिसीए सुत्तं वज्जेत्ता मग्गंति ।

जति एवं पि ण लब्भति ताहे एक्केक्कं संघाडयं आयरिया वावारिंति– "अज्जो ! तुमं च भिक्खं चेव हिंडंता वत्थाणं जोग्गं करेज्जह", ताहे ते वि मग्गंति ॥५०१६॥

एवं तु अलब्भंते, मोत्तूण गणिं तु सेसगा हिंडे ।
गुरुगमणम्मि गुरुगा, उभावण-ऽभिजोग सेहहिला य ॥५०१७॥

तहवि अलब्भंते बहूणि वा वत्थाणि उप्पाएयव्वाणि वृंद-साध्यानि च कार्याणीति कृत्वा, ताहे पिंडएणं सव्वे उट्ठेंति, "गणे" त्ति आयरिओ, तं मोत्तूणं ।

आयरिया जति पुण अप्पणा हिंडति तो चउगुरुगा, ओभावणदोसा – "आयरिओ होंतओ अप्पणा हिंडंति, णूणं एयस्स आयरियत्तं पि एरिसं चेव जो चीराणं पि ण घाति ।"

कमणिज्जरूवं वा दट्ठुं काइ इत्थी अभिओगेज्जा, ओभासिए वा अणिच्छमाणे विसं देज्ज गरं वा ।

अथवा – सेहा हीलेज्ज आयरियाणं हिंडंते अलद्धे सेहा भणेज्ज – "आयरियाणं दिट्ठं माहप्पं लद्धी वा ।" जम्हा एते दोसा तम्हा आयरिओ ण हिंडावेयव्वो । तं मोत्तूणं जे अण्णे सेसा तेहिं हिंडियव्वं ॥५०१७॥

---

[1] गा० ५००८ ।

ते पुण इमेरिसा होज्जा —

सव्वे वा गीयत्था, मीसा व जहण्णे एगो गीतत्थो ।
एक्कस्स वि असतीए, करेंति ते कप्पियं एक्कं ॥५०१८॥

ते पुण सव्वे गीयत्था ।

अहवा — अद्धा अगीता, अद्धा गीता ।

अधवा — एक्को गीयत्थो, सेसा सव्वे अगीयत्था ।

अहवा — आयरियं मोत्तुं सेसा सव्वे अगीयत्था, ताहे एक्कं कप्पियं करेंति जो तेसिं अगीयाण मज्झे वाग्मी धृष्टतरः लब्धिसंपन्नः, एयस्स आयरिया वत्थेसणं उस्सग्गाववादेण कहिंति ॥५०१८॥

तेसिं उवओगकरणे इमा विधी —

आवास-सोहि अखलंत समग उस्सग्ग डंडग ण भूमी ।
पुच्छा देवत लंभे, ण किं पमाणं धुवं वा वि (दाहि) ॥५०१९॥

तेहिं साहूहिं अणागयं चेव काइयसण्णाओ अणवलेयव्वा मा चीरुप्पादणगताणं होज्ज त्ति, एसा आवासगसोधी । उट्ठेंतेहिं उट्ठेति य, जोगं करेंतेहिं ण खलियव्वं णावि पक्खलियव्वं ।

अहवा — अपक्खलियं अविकूडं तेहिं उट्ठेयव्वं, सव्वेहि य समं उट्ठियव्वं, ण अण्णे उट्ठिता अच्छंति ।

अहवा — समयं चेव उस्सग्गं करेति । "उस्सग्गो" उवओगकाउस्सग्गो, सो य अवस्सं कायव्वो, तं करेंतेहिं भूमीए डंडगो ण पइट्ठवेयव्वो, भूमी य ण छिवियव्वा डंडएणं जाव पढमलाभो लद्धो, ततो परेणं इच्छा, अण्णे जाव पडियागय त्ति । एत्थ जं किं चि वितहं करेंति तं करेंतस्स पच्चत्थ असमायारिणिप्फण्णं मासलहुं ।

एत्थ सीसो पुच्छति — "काउस्सग्गं किं णिमित्तं करेंति ? किं देवताराहणणिमित्तं जेण आराहिता समाणि वत्थाणि उप्पादेति, उअ अण्णं किं पि कारणं ?"

आचार्य आह — ण देवताराहणणिमित्तं काउस्सग्गं करेंति तत्थ काउस्सग्गे ठिता उवउज्जंति — किं पमाणं वत्थं घेत्तव्वं ?, जहण्णयं मज्झिमयं उक्कोसं ।

अधवा — किं अहाकडं अप्पपरिकम्मं ?,

अहवा — कत्थ धुवो लाभो भविस्सति ?, एयं उस्सग्गट्ठिता चिंतेंति । को वा पढमं ओभासितो अवस्सं दाहिति ?, जो नज्जति एसो अवस्सं दाहिति सो पढमं ओभासियव्वो, एयं सव्वं उस्सग्गट्ठिता चिंतेंति ॥५०१९॥

काउस्सग्गे काए केण पढमं उस्सारियव्वं ?, उच्यते —

रातिणिओ उस्सारे, तस्सऽसतीमो वि गीओ लद्धीओ ।
अविगीओ वि सलद्धी, मग्गति इतरे परिच्छंति ॥५०२०॥

तत्थ जो रातिणिओ गीयत्थो सलद्धिओ तेण उस्सारियव्वं, अह रातिणियस्स गीयत्थस्स लद्धी णत्थि रातिणिओ वा सलद्धिओ ताहे ओमरातिणिओ वि गीयत्थो सलद्धिओ जो सो उस्सारेति ।

अथ सो वि अलद्धी ताहे जो अगीयत्थो वि सलद्धी सो उस्सारेति, सो चेव ओभासति, सो चेव य पायच्छित्तणं करेति। "इयरे" (जे) गीयत्था अलद्धिया ते पडिच्छंति, एसणादि सव्वं सोधि त्ति, ते जाव वत्थस्स विधी भणिता कप्पति ण व त्ति ॥५०२०॥

इदाणिं पच्छित्तं भण्णति –

उस्सग्गाती वितहे, खलंत अण्णणओ य लहुओ य ।
उग्गम विप्परिणामो, ओभावण सावगा ण ततो ॥५०२१॥

काउस्सग्गपदं आदी करेत्ता सव्वेसु पदेसु पच्छित्तं भण्णति – उस्सग्गं ण करेति, आवासयं ण सोधेति, खलंति वा समं वा, उस्सग्गं ण करेंति, डंडएण वा भूमी छिवंति, उस्सारेंति वा वितहं, सव्वत्थ मासलहुं । "अण्णण्णतो य" त्ति ण वि पिंडएणं काउस्सग्गं करेत्ता [1]संदिसह त्ति ण भणंति मासलहुं । आयरिया लाभोत्ति ण भणंति मासलहुं । आवस्सियं ण करेंति ना (पगगं), "जस्स य जोग्गं" ण भणंति मासलहुं । किह गेण्हिस्सामो त्ति ण भणेंति मासलहुं, आयरिया जहा संदिट्ठेल्लयंति ण भणंति मासलहुं ।

एवं करेत्ता गता जति सावयं ओभासति तो उग्गमदोसा, घरे असंते कीतादी करेज्जा । णवाणि वा काउं अण्णम्मि वा दिणे देज्जा । विप्परिणामो वा से । सो य णवधम्मो चिंतेज्जा–जो एतेसिं सड्ढो भवति तं एते चड्डेंति । ओभावणा वा से होज्जा, तस्स सावगस्स घरे णत्थि वत्था, ताहे साधू अलद्धवत्था तस्स घरातो णिग्गता, ताहे अण्णतित्थियादि भणेज्जा – "एते एयस्स दिक्खिगेता, एस एतेसिं पि ण देति, अति-खरंटो एस सावगो" त्ति, एवमादी जम्हा दोसा तम्हा ण तं जाएज्जा ॥५०२१॥

अहवा –

दातुं वा उदु रुस्से, फासुद्धरियं तु सो सयं देति ।
भावितकुलतोभासण, णीणित कस्सेत किं वासी ॥५०२२॥

सावगो वा दातुं पच्छा उदु रुसेज्जा, "किं एतेहिं एत्तिलयं पि ण णायं जहा सावगस्स संजमीणं तं अणोभासिएल्लयं चेव देति ।" अण्णं च सावयाणं एसा सामायारी चेव जं फासुयं उद्धरियं तं साधूणं दायव्वं, तो सो अप्पणो चेव दाहिति, तम्हा किं तेण ओभासिएणं ? जे अण्णे भाविएल्लया कुला तेसु ओभासियव्वं । गंतूण भाणियव्वो जो पभू सो – "धम्मलाभो सावग ! साधुणो तव सगासं आगता, एरिसेहिं चीरेहिं कज्जं" ति मग्गितो सो भणेज्जा – "अणुग्गहो ।" ताहे णीणिए भाणियव्वं – "कस्सेयं ? किं आसी ? किं वा भविस्सति ? कत्थ वा आसी ?" एवमादी पुच्छियव्वं ॥५०२२॥

जे चत्तारि परियट्टगा णव-पुराणा तेसिं सामण्णेण इमं भणइ –

जायण-णिमंतणाए, जे वत्थमपुच्छिऊण गिण्हेज्जा ।
दुविह-तिविहपुच्छाए, सो पावति आणमादीणि ॥५०२३॥

जायणवत्थं निमंतणावत्थं च एतेसु दोसु वत्थेसु जो ण पुच्छइ, तं च अपुच्छियं गेण्हति तस्स आणादिया दोसा ।

जायणवत्थे दुविधा पुच्छा – कस्सेयं ? किं आसी ?

---

१ संदिसावेंति खुतं, खुतं संदिसावेंति वा इत्यपि पाठः ।

णिमंतणावत्थे तिविधा पुच्छा – कस्सेयं ?, किं वासी ?, केण कज्जेण दलसि मज्झं ?,

जति "कस्सेयं ?" ति ण भणति तो ः ः । "किं एयं ?" ति ण भणति ङ्क ॥५०२३॥

को दोषः ? उच्यते –

कस्स त्ति पुच्छियम्मी, उग्गम-पक्खेवगादिणो दोसा ।
किं आसि पुच्छियम्मी, पच्छाकम्मं पवहणं वा ॥५०२४॥

जति कस्सेयं ति ण पुच्छति तो उग्गमदोसदुट्ठं वा गेण्हेज्जा, पक्खेवगदोसदुट्ठं वा गेण्हेज्जा ।

अह "किं वा सी" त्ति ण पुच्छति तो पच्छाकम्मदोसो पवहणदोसो वा भवे ॥५०२४॥

उग्गमदोससंभवं ताव दंसेति ।

"कस्सेयं ?" ति पुच्छिओ समाणो भणेज्जा –

कीस ण णाहिह ! तुब्भे, तुब्भट्ठकयं च कीय-धोतादी ।
अमुएण व तुब्भट्ठा, ठवितं गेहे ण गेण्हह से ॥५०२५॥

"भगवं ! तुम्हे किं ण याणह ? जाणह चे तुब्भे, तहवि अम्हे पुच्छह, पुच्छंताण तुब्भं कहेमो – तुब्भट्ठाए एयं कयं, तुब्भट्ठाए वा कीयं, तुब्भट्ठाए वा धोतं, सज्जियं, समट्ठावियं ।"

अथवा भणेज्जा – "अमुगणामधेज्जेण एयं आणेउं इह तुब्भट्ठा ठवियं, जेण घरे से ण गेण्हह" ॥५०२५॥

ते य मूलगुणा उत्तरगुणा वा संजयट्ठा करेज्जा ।

के मूलगुणा ? के वा उत्तरगुणा ? अतो भण्णति –

तण विणण संजयट्ठा, मूलगुणा उत्तरा उ पज्जणता ।
गुरुगा गुरुगा लहुआ, विसेसिता चरिमओ सुद्धो ॥५०२६॥

वत्थणिप्फायणाणिमित्तं जं कीरति जहा तणणं परिकम्मणं पाणकरणं विणणं एते मूलगुणा संजयट्ठा करेति, उत्तरगुणा जे णिम्मातस्स कीरंति, जहा "पज्जणं" ति सज्जणं कलमोदगं उप्फो(प्फु)सणं धावणादिकिरियाओ य, एते वा संजयट्ठा करेज्जा ।

एत्थ मूलुत्तरेहिं चउभंगो कायव्वो –

मूलगुणा संजयट्ठा, उत्तरगुणा वि संजयट्ठा । मूलगुणा (संजयट्ठा), ण उत्तरगुणा (संजयट्ठा) ।

ण मूलगुणा (संजयट्ठा), उत्तरगुणा (संजयट्ठा) । णावि मूलगुणा णावि उत्तरगुणा (संजयट्ठा) ।

एतेसु पच्छित्तं जहासंखं – ४का, ४का, ४का । एते तवकालेसु विसेसियव्वा । चरिमभंगो सुद्धो । एते एवमादी दोसे ण जाणइ, इमं न जाणति जेण ठवियं ॥५०२६॥

तं पुण केण ठवियं होज्जा –

समणेण समणि सावग, साविग संबंधि इड्ढि मामाए ।
राया तेणे पक्खेवए य णिक्खेवणं जाणे ॥५०२७॥

ठावितं समणेण वा समणीए वा, सावगेण वा सावियाए वा, भातादिसंबंधीण वा, इड्ढिमंतेण वा, मामगेण वा, रातिणा वा, तेणेण वा, "पक्खेवए" त्ति एतेहिं तं पक्खित्तं होज्जा, एसेव पक्खेवगो भण्गति । "णिक्खेवणं जाणे" त्ति णिक्खेवगो वि एतेसु चेव ठाणेसु भवति ।।५०२७।।

एतेसिं पदाणं इमा विभासा जेण कारणेण अण्णत्थ पक्खिवंति ।

समणादीछद्दारे एक्कगाहाए वक्खाणेति –

लिंगत्थेसु अकप्पं, सावग-णीतेसु उग्गमासंका ।
इड्ढि अपवेस साविग, इड्ढिस्स व उग्गमासंका ।।५०२८।।

तत्थ जे ते समणा समणीतो वा ते लिंगत्था य होज्जा, तेसिं हत्थातो ण कप्पति घेत्तूणं, ते उग्गमादीहिं असुद्धाणि वत्थाणि गेण्हंति, सयं च सम्मुच्छावेंति, ते लिंगतो वि पवयणओ वि साहम्मिय त्ति काउं ण वट्टति तेसिं हत्थातो घेत्तुं, ताहे ते. अम्हं ण गेण्हंति त्ति काउं अण्णत्थ पक्खिवेंति त्ति, इमं च भणंति – "एते जाहे साधुणो तुब्भे चीराणि मग्गेज्जा ताहे तुब्भे एयाणि देज्जह ।"

सावगो साविगा वा णीतो वा कोति साधुस्स एतेसिं तिण्ह वि उग्गमादिसंकाए साधुणो ण गेण्हंति, ताहे ते "अम्हं न गेण्हंति" त्ति काउं अण्णत्थ पक्खिवेंति । इड्ढिमंतस्स साविया भज्जा, तत्थ णं पवेसो ण लब्भति, ताहे सा वि अण्णत्थ पक्खिवति ।

अहवा – इड्ढिमंतस्स, जहा – दक्खिणापहयाणं सावयाणं, तेसु घरेसु बहवे साहम्मिया पविसंति, ताहे उग्गमदोसा भविस्संति त्ति काउं ण घेप्पंति तेसिं, ताहे ते अण्णत्थ पक्खिवंति, इड्ढिमं णाम इस्सरो त्ति ।।५०२८।।

एमेव मामगस्स वि, भज्जा सड्ढी उ अण्णहिं ठवते ।
णिवति-पिंडविवज्जी, तेणे मा हू तदाहडगं ।।५०२९।।

मामको णाम कस्सइ घरे पवेसणं ण देति, पंतयाए वा ईसालुयाए वा, तस्स भज्जा साविया, सा अणत्थ पक्खिवेज्जा ।

अधवा – घरे अण्णयरउग्गमदोसा संकाए त्ति काउं ण गेण्हंति । णिवो णाम राया, तस्स पिंडो ण कप्पति, सो वि अण्णत्थ पक्खिवेज्जा, मम ण गेण्हंति त्ति जहा तधा लाभं लभामि, तेणगस्स वि ण वट्टति घेत्तुं, मा तेणाहडयं होज्जति, सो वि मम ण गेण्हंति अण्णत्थ पक्खिवति । एवं ताव पक्खेवो ।।५०२९।।

एते उ अघेप्पंते, अण्णहिं संपक्खिवंति समणट्ठा ।
णिक्खेवओ वि एवं, छिण्णमछिण्णो व कालेणं ।।५०३०।।

पुव्वद्धं सव्वाणुवादी गतत्थं । णिक्खेवतो पि एवं चेव, णवरं – सो छिण्णो अच्छिण्णो वा कालतो भवति ।।५०३०।।

गिहत्थणिक्खेवगतं च भणामि –

अमुगं कालमणागते, देज्ज व समणाण कप्पती छिण्णे ।
पुण्ण समकाल कप्पति, ठवितगदोसा अतीतम्मि ।।५०३१।।

णिक्खेवगो णाम ते गिहत्था णिक्खिवंता जइ भणंति – "अमुगं कालं जति अम्हे ण एज्जामो ताहे तुब्भे एयं समणाणं देज्जह"। एवं जइ छिंदति तो कप्पति पुण समकालमेव। अतीते ण कप्पति, ठवियकदोसो त्ति काउं, अच्छिण्णे पुण जाहे दलंति ताहे कप्पति ॥५०३१॥

इदाणिं साधुणिक्खेवगो –

असिवातिकारणेणं, पुण्णातीते मणुण्णणिक्खेवे।
परिभुंजति धरेंति व, छड्डेति व ते गते णाउं ॥५०३२॥

जे साधू संभोइया तेहिं जं असिवादिकारणेहिं गच्छमाणेहिं णिक्खित्तं होज्जा तं पुण्णे वा अतीते वा काले गेण्हंति, गिण्हिता जइ तेसिं चीवरासती ताहे परिभुंजंति।

अह तेहिं ण कज्जं ताहे ठवेंति, "तेसिं दाहामो" त्ति काउं।

अह जाणंति ते अण्णविसयं गता अप्पणो य तेहिं ण कज्जं ताहे छड्डेति ॥५०३२॥

अहवा – सो "कस्सेयं" ति पुच्छितो रुट्ठो भणेज्जा –

दमए दूभगे भट्ठे, समणच्छन्ने य तेणए।
ण य णाम ण वत्तव्वं, पुट्ठे रुट्ठो जहा वयणं ॥५०३३॥

[1]दमए त्ति अस्य व्याख्या

किं दमओ हं भंते!, दमगस्स व किं च चीवरा णत्थि।
दमएण वि कायव्वो, धम्मो मा एरिसं पावे ॥५०३४॥

दमओ दरिद्रः। "भगवं! किं पुच्छसि "कस्सेयं" ति किमहं दमगो।"

अहवा – "सच्चमहं दमओ, तहा किं मम दमगस्स चीवरा णत्थि ?"

अहवा – "दमएण वि दारिद्ददिट्ठदोसेण धम्मो कायव्वो, मा पुणो परलोए एरिसं चेव भविस्सति" ॥५०३४॥

इदाणिं [2]दूभगे त्ति –

जति रण्णो भज्जाए, दूभओ दूभगा व जति पतिणो।
किं दूभगो मि तुब्भ वि, वत्था वि य दूभगा किं मे ॥५०३५॥

उवकारी वि दूभगणामकम्मोदयातो परस्स अणक्कारो दूभगो, सो य रण्णो भज्जाए वा, इत्थी वा पइणो। "जइ एतेसिं अहं दूभगो किमहं भंते! तुब्भ वि दूभगो", अहवा भणेज्ज – "किं वत्था वि मे दूभगा" ॥५०३५॥

इदाणिं [3]भट्ठे त्ति –

जति रज्जातो भट्ठो, किं चीरेहिं पि पेच्छहेताणिं।
अत्थि महं साभरगा, मा हीरिज्ज त्ति पच्छइओ ॥५०३६॥

---

१ गा० ५०३३। २ गा० ५०३३। ३ गा० ५०३३।

ऐश्वर्यस्थानात् च्युतो भ्रष्टः । "जइ हं रज्जाम्रो अण्णतराम्रो वा इस्सरठाणातो भट्ठो तो किं जाणह चीराणि वि णो होज्जा, पेच्छह मे इमे पभूए चीरे ।"

इदाणिं "[1]समणच्छण्णे" त्ति पच्छद्धं । "समणच्छण्णो" त्ति असमणवेसधारी अच्छति, साभरगा णाम रुवगा, ते मे बहू अत्थि, मा मम ते राउलकुलादिएहिं पहरेज्ज, अतो हं पव्वइयरूवेण पच्छण्णो अच्छामि, तं तुब्भे मा एवं जाणह जहा हं पव्वइओ, गेण्हह मम हत्थाओ वत्थे त्ति ॥५०३६॥

इदाणिं "[2]तेणे" त्ति –

अत्थि मि घरे वि वत्था, नाहं वत्थाणि साहु ! चोरेमि ।
सुट्ठु मुणितं च तुब्भे, किं पुच्छहं कि वऽहं तेणो ॥५०३७॥

अत्थि घरे चेव मे वत्था, णाहं अप्पणो साहुणो वा अट्ठाए वत्थे चोरेमि, तं मा तुब्भे तेणाहड त्ति काउं ण गेण्हह ।

अहवा – भणिज्जइ – सुट्ठु णायं तुब्भेहिं, जहा हं तेणो । को अण्णो णाहिति साधुणो मोत्तुं ? तमहं सच्चं तेणो, ण पुण साधुअट्ठाए हरामि ।

अहवा भणेज्ज – "किमहं तेणो जेण तुब्भे पुच्छह "कस्सेयं ति" ॥५०३७॥

"[3]ण य णाम" पच्छद्धं । पुच्छिए साधुणा भणेज्ज, तम्मि एवं भणंते वि "ण य णाम" – ण वत्तव्वं । वत्तव्वमेव जहारिहं वयणं ।

दमओ भण्णति – "ण वि अम्हे भणामो जहा तुमं दमओ त्ति । अम्हे भणामो मा एवं तव णीयस्स अहवा परिणीयस्स होज्जा, तेसिं च अण्णं न होज्ज, ताहे ते अण्णं उवकरेज्जा ।" एवं सव्वे पि पदा भाणियव्वा । अंते अभिहितं प्रतिपदमुपतिष्ठती ति कृत्वा "समणे समणी" गाहा (५०२७) एसा भावियव्वा । जत्थ जहा संभवंति पुट्ठे जहारिहं वयणं ।

अहवा – इमं तं वयणं जहारिहं जं वत्तव्वं –

इत्थी पुरिस नपुंसग, धाती सुण्हा य होति बोधव्वा ।
बाले य वुड्ढजुयले, तालायर सेवए तेणे ॥५०३८॥

[4]इत्थि अस्य व्याख्या –

तिविहित्थि तत्थ थेरी, भण्णति मा होज्ज तुज्झ जायाणं ।
मज्झिम मा पति देवर, कन्ना मा थेरमातीणं ॥५०३९॥

दायगा इत्थी तिविधा – थेरी मज्झिमा तरुणी । थेरी भण्णति "एयं वत्थं मा होज्ज तुज्झ जायाणं, "जायाणं" ति पुत्तभंडाणं, तुमं एत्थ अप्पभू" ।

मज्झिमा इत्थी भण्णति – "मा तुज्झ पइणो देवरस्स वा एवं वत्थं होज्ज" ।

तरुणित्थी – कण्णा, सा भण्णति – "थेरि" त्ति मातापित्तिसंतियं, मातीणं वा संतियं होज्जा" ॥५०३९॥

---

१ गा० ५०३३ । २ मा० ५०३३ । ३ गा० ५०३३ । ४ गा० ५०३८ ।

एमेव य पुरिसाण वि, पंडऽप्पडिसेवि मा ते णीयाणं ।
धाती सामिकुलस्सा, सुण्हा जह मज्झिमा इत्थी ॥५०४०॥

जहा इत्थी एवं [1]पुरिसा वि भाणियव्वा, णवरं – पतिठाणे भज्जा भाणियव्वा, देवरठाणे सुण्हा भाणियव्वा । [2]णपुंसगो त्ति जो अप्पडिसेवी, तस्स हत्थाओ घेत्तव्वं । सो य वत्तव्वो – मा ते एयं वत्थं णीयसतियं होज्जा ।

जहा इत्थी पुरिसा भणिया तहा णपुंसगो अप्पडिसेवी भाणियव्वो । जो पुण पडिसेवी तस्स हत्थाओ ण घेत्तव्वं । जो गेण्हति ꣸ ꣸, आणादिया य दोसा ।

जा धाती सा भण्णति "मा ते सामीकुलस्स होज्जा" ।

जा सुण्हा सा देंती भाणियव्वा – जहा मज्झिमा इत्थी ॥५०४०॥

इदाणिं[3] बाल-वुड्ढ-जुवणे त्ति –

दोण्हं पि जुयलयाणं, जहारिहं पुच्छिऊण जति पभुणो ।
गेण्हंति ततो तेसिं, पुच्छासुद्धं अणुण्णातं ॥५०४१॥

दो जुयलया – बालजुवलयं थेरजुवलयं च, बालो बाली वुड्ढो वुड्ढी वा । जे अतीवअप्पत्तवया बाला ते इह भण्णंति, जे अतीववयवुड्ढा ते य इह भण्णंति । जति ते पभू तो घेप्पति, अप्पभूसु वि जइ परियणो अणुयाणति तहावि घेप्पंति । "पुच्छासुद्धं" ति पदं सण्णासिकं अच्छउ ॥५०४१॥

इदाणिं "[4]तालायर" त्ति –

तूरपति देंति मा ते, कुसील एतेसु तूरिए मा ते ।
एमेव भोइ सेवग, तेणो तु चउव्विहो इणमो ॥५०४२॥

तालाद्यादिभिः विद्याविशेषैः चरंति तालाचरा, तेसिं तूरपती देज्जा तो सो भण्णति – "एयं वत्थं मा कुसीलाण होज्जा, तेहिं वा सामण्णं होज्ज ।" अध ते कुसीलिया देज्ज, ताहे भण्णति – "एयं वत्थं मा तूरपतीण होज्ज तेण वा सामण्णं ।" [5]सेवगो वि एवं चेव भाणियव्वो ।

भोतितो भण्णति – "मा सेवगस्स होज्जा" । सेवगो भण्णति – "मा भोइयस्स होज्जा" ।

[6]तेणगे पुण इमो चउव्विहो विभागो ५०४२॥

सग्गाम परग्गामे, सदेस परदेस होति उड्डाहो ।
मूलं छेदो छम्मासमेव चत्तारि गुरुगा य ॥५०४३॥

तेणगस्स हत्थाओ घेप्पमाणे गेण्हण-कड्ढण-उड्डाहमादिया दोसा सग्गामादिएसु, मूलादियं पच्छित्तं जहासंखं दायव्वं, एत्थ छम्मासा वि गुरुगा चेव दट्ठव्वा ॥५०४३॥

जं वुत्तं "[7]पुच्छासुद्धं अणुण्णायं" –

एवं पुच्छासुद्धे, किं आसि इमं तु जं तु परिभुत्तं ।
किं होहिति त्ति अह तं, कत्थाऽऽसि अपुच्छणे लहुगा ॥५०४४॥

---

१ से ६ तक गा० ५०३८ । ७ गा० ५०४१ ।

समणादिएहिं पक्खेवयट्ठाणेहिं सुद्धं, जं जं च दमगादिरुट्ठवयणेहिं पुव्वतरओो सुद्धं, जं च इत्थिमादिगेसु य दायगेसु परिसुद्धं, अण्णेसु य उग्गमादिदोसेहिं सुद्धं तस्स गहणं अणुण्णायं । "कस्स" त्ति गतं ।

जइ वि पढमपुच्छाठाणे सुद्धगहणं पत्तं तहावि ण घेत्तव्वं जाव वितियपुच्छाए न सुद्धं ।

अतो वितियपुच्छा "किं वासि त्ति, तं णीणियं वत्थं परिभुत्तं अपरिभुत्तं वा ?"

जति परिभुत्तं तो पुच्छिज्जइ – "किं एयं णिच्चणियंसणमादियाणं आसि ?"

अध अपरिभुत्तं तो पुच्छिज्जइ "किं एयं णिच्चणियंसणमादियाणं होहिति ?"

अण्णं च पुच्छिज्जइ – "एयं वत्थं कत्थ भायणे ठाणे वा आसि ?"

एयाओ पुच्छाओ जइ ण पुच्छइ तो पत्तेगं चउलहुगा ।।५०४४।।

जं तं परिभुत्तं वत्थं णीणितं दायगेण तं पुच्छियं –

"किं एयं आसि ?" ताहे ते गिहत्था भणेज्जा –

णिच्चणियंसण मज्जण, छणूसए रायदारिए चेव ।
सुत्तत्थजाणगेणं, चउपरियट्टे ततो गहणं ।।५०४५।।

णिच्चणियंसणियं एयं आसि, अहवा भणेज्ज – मज्जणयं, अहवा – छणूसवियं, अहवा – रायद्दारियं ।

एत्थ सुत्तजाणगेणं चउण्हं परियट्टाणं जो अण्णतरो णीणितो तस्स जति अण्णो तप्पतिमो अत्थि तो गहणं भवति, एवं दोसु परियट्टेसु णीणितेसु जति दो तप्पतिमा अत्थि, तिसु णीणितेसु जति तिण्णि तप्पतिमा अत्थि, चउसु परियट्टेसु णीणितेसु तप्पतिमेसु "चउसु परियट्टेसु ततो गहणं" ति ।।५०४५।।

जं च तं परिभुज्जमाणयं णीणियं तत्थ वि इमे दोसा परिहरियव्वा –

णिच्चणियंसणियं ति य, अण्णासति पच्छकम्म-वहणादी ।
अत्थि वहंते घेप्पति, इयरुप्फुस-धोव-पगतादी ।।५०४६।।

जति तेण पुच्छिएण भणियं – "णिच्चणियंसणियं ।" जति तस्स अण्णं णिच्चणियंसणियं णत्थि तो ण घेत्तव्वं ।

को दोसो ? उच्यते – पच्छाकम्मं करेज्जा, अण्णं सम्मुच्छावेज्जा, किणेज्जा वा ।

अधवा – अत्थि से अण्णं ण ताव तं परिवाहेइ, तत्थ वि ण घेप्पति, मा सो तं पवाहेज्ज ।

अह अण्णं पच्चूढयं तो घेप्पति । "इयरे" त्ति – अवहंते पढमपवाहेंतो आउक्काएण वा उप्फोसेज्जा, धोवेज्ज वा, धी(वी)याराण वा पगयं करेज्ज, आदिग्गहणातो धूवेज्ज वा, अप्पणो वा ण्हाएज्जा ।।५०४६।।

अधवा – णीणियं तं वत्थं अहतं, तं च तेण गिहिणा पुच्छिएण कहियं –

होहिति वि णियंसणियं, अण्णासति गहण पच्छकम्मादी ।
अत्थि णवे वि तु गेण्हति, तहि तुल्लपवाहणा दोसा ।।५०४७।।

जति तस्स अण्णं णिच्चणियंसणियं णत्थि तो ण कप्पति । अध गेण्हति एत्थ वि ते चेव पच्छाकम्मादी दोसा ।

अध अत्थि अण्णं से तो कप्पं, तं अण्णं जति अवहंतं तहावि तं गेण्हति ।

किं णिमित्तं ?, तुल्ला तत्थ पवहणा दोसा । तुल्ला णाम जति वि गिण्हति, जति वि ण गिण्हति, तहावि सो अप्पपओगेण चेव अण्णं पवाहेउकामो काहिति पवाहणादयो दोसा ।।५०४७।।

एमेव मज्जणादिसु, पुच्छासुद्धं च सव्वतो पेहे ।
मणिमाती दाएंति व, अदिट्ठे मा सेहुवादाणं ।।५०४८।।

जहा णिच्चणियंसणियं कप्पति न कप्पति वा तहा मज्जणछणुसवरायद्दारिया वि भाणियव्वा, जाहे पुच्छासुद्धं कप्पणिज्जं ति णिज्जातं ताहे अंतेसु दोसु घेत्तूण सव्वतो सम्मं जोतेयव्वं, मा तत्थ गिहत्थाणं मणी वा हिरण्णे वा सुवण्णे वा तंबे वा रुप्पे वा अण्णे वा केइ उवणिवद्धे होज्जा ।

सो गिहत्थो भण्णति –"जोएह सव्वतो एयं वत्थं ।" जति तेहिं दिट्ठं हिरण्णादी तो लट्ठं, अध ण दिट्ठं ताहे साहुणो दाएंति, "इमं किं फेडिहि" त्ति भणंति ।

आह "णणु तं अधिकरणं भण्णति ?" उच्यते – थोवतरो सो दोसो, अधिकतरा सेहुवादाणे दोसा । सो सेहो तं घेत्तुं उप्पव्वएज्जा, गिहत्था वा उड्डाहं करेज्जा – "पोत्तेण समं मम हडं हिरण्णादी ।" जम्हा एवमादी दोसा तम्हा साहेज्जा ।।५०४८।।

एवं तु गविट्ठेसुं, आयरिया देंति जस्स जं णत्थि ।
समभाएसु कएसु व, जह रातिणिया भवे वितिओ ।।५०४९।।

एतेण विधिना गवेपितासु उप्पण्णेसु आगता गुरूण अप्पिणंति, ताहे ते गुरू जं जस्स णत्थि वत्थं तं तस्स साधुस्स देंति । एस एक्को पगारो ।

अधवा – जावतिताण ते दिज्जिउकामा वत्था तावतियभाए समे कज्जंति, ताहे जहारातिणियाए गेण्हंति । एस वितिओ पगारो ।।५०४९।।

एवं जायणवत्थं, भणियं एत्तो णिमंतणं वोच्छं ।
पुच्छादुगपरिसुद्धं, पुणरवि [1]पुच्छिज्जिमो तु विही ।।५०५०।।

[2]णिमंतणावत्थं पि "कस्सेतं" "किं वासि" त्ति एताहिं दोहिं पुच्छाहिं जाहे परिसुद्धं ताहे पुणरवि ततियपुच्छाए पुच्छियव्वं, तस्स णिमंतणावत्थस्स एस विही वक्खमाणो ।।५०५०।।

विउसग्ग जोग संघाडए य भोतियकुले तिविहपुच्छा ।
कस्स इमं ? किं च इमं ?, कस्स व कज्जे ? लहुग आणा ।।५०५१।।

काउस्सग्गं काउं संदिसावेति, तहत्ति भणितो जस्स य जोगे कते संघाडएण णिग्गतो, किं च अद्धप्पहेणं, "भोतितो" त्ति गामसामी, दंडियकुलं वा पविट्ठो, तत्थ एक्काए इस्सरीए महता संभमेण भत्तपाणेणं पडिलाभेत्ता वत्थेणं णिमंतिओ, तत्थ इमं तिविधं पुच्छं पयुंजति–कस्स इमं ? (किं च इमं ?) कस्स व कज्जे दलयसि ? एत्थ दो पुच्छाओ पुव्वभणियाओ, एतासु दोसु पुच्छासु जया परिसुद्धं भवति तदा इमा अब्भहिता पुच्छा – "केण कज्जेण दलयसि ?" त्ति । जइ एवं तं ण पुच्छति तो चउलहुगा, आणादिया य दोसा ।।५०५१।।

---

१ ... मा मेरा, इति बृहत्कल्पे गा० २७९५ । २ गा० ५००२ ।

इमे य अन्ने दोसा –

मिच्छत्त सोच संका, विराहणा भोतिते तहि गते वा ।
चउत्थं व वेंटलं वा, वेंटलदाणं च ववहारो ॥५०५२॥

अत्थसंगह गाहा । एसा "मिच्छत्त" अस्य व्याख्या –

मिच्छत्तं गच्छेज्जा, दिज्जंतं दट्ठु भोयओ तीसे ।
वोच्छेद पदोसं वा, एगमणेगाण सो कुज्जा ॥५०५३॥

तं वत्थं दिज्जंतं दट्ठुं "भोअगो" त्ति-तीसे भत्तारो सो मिच्छत्तं गच्छेज्जा, तस्सेगस्स अणेगाण वा साहूण वोच्छेदं करेज्जा, पदोसं वा गच्छेज्जा, आउसेज्ज वा ताडे(ले)ज्ज वा उड्डाहं वा करेज्जा ॥५०५३॥

"[1]सो वा संका" अस्य व्याख्या –

वत्थम्मि णीणितम्मी, किं देसि अपुच्छिऊण जति गेण्हे ।
अण्णेसि भोयकस्स व, संका घडिता णु किं पुव्विं ॥५०५४॥

भोइणीए वत्थं णीणियं, "किं देसि" त्ति वेण व कज्जेण मज्झेयं दलयसि" त्ति एवं अपुच्छियं जति गेण्हंति, तस्स भोतगो त्ति भत्ता, तस्स संका जाता, अण्णेसु वा सासुससुरदेवरादियाण य संका जाता – "णूणं एते पुव्वघडिया जेण तुण्हिक्का दाणगहणं करेंति, एसा मेहुणट्ठिता होउं दलाति, एसा एतेण सह संपलग्गा" । अहवा – संकेज्ज – "किं [2]वेंटलट्ठिता होउं दलाति" ॥५०५४॥

एवं ताव सामाणिए भोयए, अव से असमाणो भोइओ होज्जा तो इमे दोसा –

एमेव पउत्थे भोइयम्मि तुसिणीय दाणगहणे तु ।
महयरगादीकहिते, एगतरपदोस वोच्छेदो ॥५०५५॥

पुव्वद्धं कंठं । जे तम्स महत्तरगा कता आसी तेहिं आगयस्स भोतियस्स कहियं, आदिसद्दातो महतरिगाए वा अण्णयरीए वा दुवक्खरियाए कम्मकारेण व कहियं ।

"[3]विराहणं" ति अस्य व्याख्या – तेहिं कहिए एगतरस्सादोसं गच्छेज्जा, अगारीए साधुस्स उभयस्स वा पदुट्ठो अगारिं साधुं वा पंतावेज्जा णिच्छुभेज्ज वा बंधेज्ज वा रुभेज्ज वा णिमाणेज्जा वा वोच्छेदं वा एगमणेगाण वा कुज्जा ॥५०५५॥

एत्थ संकाए णिस्संकिए वा इमं पच्छित्तं –

मेहुणसंकमसंके, गुरुगा मूलं च वेंटले लहुगा ।
संकमसंके गुरुगा, सविसेसतरा पउत्थम्मि ॥५०५६॥

मेहुणसंकाए ङ्का । णिस्संकिते मूलं । वेंटलसंकाए ङ्क, तिस्संकिए ङ्का । भोतिगे सपउत्थे तहिं वा भोतिगे देसंतरगते वा पच्छागए एवमादी विराहणा भणिता ॥५०४६॥

एवं ता गेण्हंते, गहिते दोसा इमे पुणो होंति ।
घरगय उवस्सए वा, ओभासति पुच्छती किं च ॥५०५७॥

---
१ गा० ५०५२ । २ वशीकरणविद्या । ३ गा ५०५२ ।

पुव्वद्धं कंठं । "[1]तहिं गते वा चउत्थं वा वेंटलं वा वेंटलदाणं च ववहारो" – एतेसिं पदाणं इमं वक्खाणं ।

"तहिं गते व" त्ति अस्य व्याख्या – घरगयपच्छद्धं । तहिं घरे अण्णदिवसे जता साधू गतो भवति तदा पुच्छति ।

अहवा – तहिं ति साधुम्मि वसहिं गते सा अविरतिया पच्छा साधुवसहिं गंतुं "चउत्थं" ति मेहुणं ओभासति "तुमं मे अभिरुचितो उब्भामगो भवसु" त्ति वेंटलं पुच्छति ।।५०५७।।

किं च –

पुच्छाहीणं गहियं, आगमणं पुच्छणा णिमित्तस्स ।
छिण्णं पि हु दायव्वं, ववहारो लब्भति तत्थ ।।५०५८।।

गहणकाले ण पुच्छितं "केण मे कज्जेण दलयसि ?" त्ति, एयं पुच्छाहीणं । पुच्छाहीणे गहिए सा आगता णिमित्तं पुच्छति, जेण वा से भोयगो वसो भवति तं वा आइक्खसु, एवं वुत्ते साधू भणति – मेहुणं ण कप्पति, वेंटलं णिमित्तं वा ण जाणामि, साधुणा एवं वुत्ते जति वत्थं पडिमग्गेज्जा तो तं वत्थं पडिदायव्वं ।

अध तं छेत्तुं पत्तगबंधादि कयं होज्जा तहावि छिण्णं पि हु तमेव दायव्वं, जेण ववहारो लब्भइ ।

कहं ववहारो लब्भइ ? एगेण रुक्खसामिएण रुक्खो विक्कीतो । कइएण मोल्लं दाउं छिंदित्ता वियंगित्ता घरं णीतो । तो वेक्कइओ पच्छा तप्पितो भणति – पडिगेण्हेसु मोल्लं । रुक्खं मे पच्चप्पिणाहि । दो विवदंता राउलं उवट्ठिता । किं सो कइतो रुक्खं दवाविज्जति ? णो । अह दवाविज्जति तो वि कट्ठाणि दवाविज्जति । ण रुक्खं पुव्वावत्थं ति । "दत्त्वा दानमनीश्वरः" इति ।।५०५८।।

जति –

पाहुण तेणऽण्णेण व, णीयं व हितं व होज्ज दड्ढं वा ।
तहियं अणुसट्ठाती, अण्णं वा मोत्तु हित-दड्ढं ।।५०५९।।

अह वत्थं पाहुणएण संभोइएण वा णीयं होज्ज, तेणेण वा हरियं, आलीवणेण वा दड्ढं, एत्थ से सब्भावो कहिज्जति । जइ तहावि मग्गति ताहे से अणुसट्ठि त्ति धम्मकहा कज्जति, विज्जमंतेण वा वसीकज्जति । असती तेसिं अण्णं वा से वत्थं दिज्जइ, हिते दड्ढे वा ण किंचि दिज्जति ।।५०५९।।

अह दाणकाले साधुणा पुच्छितं – "किं णिमित्तं देसि" ? त्ति । तत्थ तुण्हिक्का ठिता, भावो ण दंसितो ।

कोइ पच्छा गंतुं वेंटलं पुच्छति, चउत्थं वा ओभासति, तत्थ भण्णइ –

ण वि जाणामो णिमित्तं, ण य णे कप्पति पउंजिउं गिहिणो ।
परदारदोसकहणं, तं मम माता व भगिणी वा ।।५०६०।।

णिमित्तं ण जाणामो, अहवा भणेज्जा – जइ वि जाणामो तहा वि गिहत्थाणं ण कप्पति पउंजिउं । चउत्थं ओभासंती भण्णति – परदारे बहु दोसा, णरगगमणं डंडणं मुंडणं तज्जणं ताडणं लिंगच्छे-

---

[1] गा० ५०५२ ।

दादिं च पावति, परभवे य णपुंसत्ताए पच्चायाति, अयस अकित्ती य भवति, अण्णं च तुमं मम माता जारिसी भगिणी वा ॥५०६०॥

तमेव वत्थमुप्पण्णं जाव गुरुसमीवं ण गम्मति ताव कस्स आभवइ –

संघाडए पविट्ठे, रातिणिए तह य ओमरातिणिए ।
जं लब्भति पाउग्गं, रातिणिए उग्गहो होति ॥५०६१॥

भिक्खादि जेट्ठो ओमो य संघाडएण पविट्ठा उवओगं काउं जप्पभिति जत्थ तं पाउग्गं संघाडगेण लद्धं जेट्ठेण वा ओमेण वा लद्धं जाव आयरियपादमूलं ण गच्छंति ताव तं जिट्ठज्जस्स। उग्गहो स्वामी इत्यर्थः ॥५०६१॥

अधवा इमेण पगारेण देज्जा –

एक्कस्स व एक्कस्स व, कज्जे दिज्जंते गेण्हती जो तु ।
ते चेव तत्थ दोसा, बालम्मि य भावपडिबंधो ॥५०६२॥

एयस्स इमा विभासा –

अहव ण पुट्ठा पुव्वेण पच्छवंधेण वा सरिसमाह ।
संकातिया हु तत्थ वि, कडगा य बहू महिलियाणं ॥५०६३॥

सा दातारी पुच्छिता समाणी भणेज्जा – "[1] एक्कस्स व एक्कस्स" त्ति, पुव्वपच्छासंथवे भाओ वा सरिसओ सि त्ति तेण ते देमि ।

अहवा – पच्छसंथवेण ससुरस्स देवरस्स य भत्तुणो सरिसगो सि तेण ते देमि, एतेसिं संबंधाणं अण्णयरं संबंधकज्जेण दिज्जंतं जो गेण्हति तत्थ ते चेव पुव्वभणिया दोसा । संथवे इमो अतिरित्तो बालसंबंध-दोसो भवति, जति भाय त्ति गहितो तस्स य बालो अत्थि सो य साधू चितेति – एयं मे भाणेज्जं ।

अह भत्तगहितो तत्थ वि चिंतेति – एयं मे पुत्तभंडं । एवमादी भावसंबंधेण पडिगमणादी करेज्जा । किं च पति-भातिगहणे वि कते अप्पणो वि संका उप्पज्जति । एयं सव्वं मिलियं ति ।

अधवा – जणेणं संकिज्जति जेण बहू महिलियाणं कृतकभावा भवंति, पुत्त-पति-पित्तिकडगभावेण य जारे गेण्हति, तम्हा पुव्वपच्छा संथवेसु वि दिज्जमाणं ण गेण्हेज्जा ॥५०६३॥

एतद्दोसविमुक्कं, वत्थग्गहणं तु होति कायव्वं ।
खमओ त्ति दुब्बलो त्ति व, धम्मो त्ति व होति णिद्दोसं ॥५०६४॥

पुव्वद्धं कंठं । सा दातारी पुच्छिया समाणी भणति – खमओ सि तुमं तेण ते देमि ।

अहवा – दुब्बलो सि दीससि खमगत्तणेण सभावेण वा तेण ते देमि ।

अहवा भणेज्ज – तुज्झं तवस्सिणो देज्जमाणे धम्मो होहिइ त्ति अतो देमि । एवमादि णिद्दोसं लब्भमाणं घेप्पति ॥५०६४॥

किं च –

आरंभनियत्ताणं, अकिणंताणं अकारवेंताणं ।
धम्मट्ठा दायव्वं, गिहीहि धम्मे कयमणाणं ॥५०६५॥

---

[1] गा० ५०५२ ।

पुव्वद्धं कंठं। तुब्भे धम्मे कयमणा, गिहीहिं सव्वारंभपवत्तेहिं तुब्भं धम्मट्ठा दायव्वं ॥५०६५॥ भणियं जायणा णिमंतणा वत्थं ।

इमं कप्पभणियं पसंगतो भण्णति—

कप्पति से सागारकडं गहाय आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्चं पि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए ॥ (बृ० क० उ० १. सू० ३९ उत्तरार्धम् ॥)

दोच्चं पि उग्गहो त्ति य, केई गिहिएसु बितियमिच्छंति ।
सावग ! गुरुणो नयामो, अणिच्छि पच्चाऽऽहरिस्सामो ॥५०६६॥

दोच्चं पि उग्गहो अणुण्णवेयव्वो त्ति जं सुत्तभणियं एयं केति सच्छंदं आयरियदेसिका भणंति — एस दोच्चोग्गहो गिहीसु भवति।

कहं ? उच्यते—जो देति सावगो, सो वत्तव्वो – हे सावग ! एयं वत्थं अम्हे घेत्तुं आयरियाणं णेमो, जइ आयरिएहिं इच्छियं ततो अम्हे पुणो आगंतुं तुब्भे दोच्चं पि उग्गहं अणुण्णवेस्सामो। एस दोच्चोग्गहो ।

अह णेच्छिहिति आयरिया घेत्तुं तो तुब्भं चेव आणेउं पच्चप्पिणिस्सामो ॥५०६६॥

इहरा परिट्ठवणिया, तस्स व पच्चप्पिणंते अहिकरणं ।
गिहिगहणे अहिकरणं, सो वा दट्ठूण वोच्छेदं ॥५०६७॥

जइ एवं ण कप्पति तो "इहर" त्ति – आयरिए अगेण्हंते परिट्ठवणे दोसा भवंति ।

अह ण परिट्ठवेंति तो अप्पडिहारियगहिए तस्सेव पच्चप्पिणंते परिभोगधुवणादिसु अधिकरणं भवति, परिट्ठवियमाणेण वा गिहत्थेण गहिते अधिकरणं चेव ।

अथवा—सो दाता परिट्ठवियं, गिहिगहियं वा दट्ठुं, तस्स वा दव्वस्स तस्स वा साहुस्स, अण्णेसिं वा वोच्छेदं करेज्जा ॥५०६७॥

आचार्य आह—

चोयग ! गुरुपडिसिद्धे, तहिं पउत्थे धरेंत दिण्णं तु ।
धरणुज्झणे अहिकरणं, गेण्हेज्ज सयं च पडिणीयं ॥५०६८॥

चोदक ! एवं कज्जमाणे ते चेव दोसा जे तुमे भणिया, तं वत्थं आयरियाणं आणियं, तेण आयरियाण ण कज्जं – पडिसिद्धमित्यर्थः, तं वत्थं जाव पडिणिज्जति ताव सो गिहत्थो गामंतरं पवेसिओ होज्जा, जइ तं परिभुंजति तो अदिण्णादाणं पसिज्जति। तस्स संतियं होंतं धरेइ तहावि अधिकरणं। अध अत्तट्ठियं धरेइ तहावि अतिरित्तस्स अपरिभोगत्वात् अधिकरणं। अध उज्झति तहावि गिहिगहियं अधिकरणं परिठवणदोसा य।

अहवा – पडिणीयं अप्पणो चेव गेण्हेज्जा – "ण देमि" त्ति, तम्हा ण एसो दोच्चोग्गहो । इमो दोच्चोग्गहो – तं वत्थं गिहिहत्थाओ घेत्तुं आगओ आयरियस्स पच्चप्पिणति, आयरिया जइ तस्सेव दलयंति आयरियसमीवातो दोच्चोग्गहो भवति ॥५०६८॥

वहिता व णिग्गताणं, जायणवत्थं तहेव जतणाए ।
निमंतणवत्थं तह चेव, सुद्धमसुद्धं च खमगादी ॥५०६९॥

बहिसज्झायभूमीं वा निग्गया वत्थं जाएज्जा । तह चेव जयणाए जाएज्जा, णिमंतणवत्थं पि तह चेव दट्ठव्वं, चउत्थवेंटलपुव्वपच्छासंथवेण वा देंतस्स असुद्धं, समणो त्ति धम्मो त्ति वा काउं देंतस्स सुद्धं भवति, ॥५०६६॥ णिग्गंथाणं वत्थग्गहणं भणियं ।

इदाणिं णिग्गंथीणं भणणति –

णिग्गंथिवत्थगहणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाता ।
मिच्छत्ते संकादी, पसज्जणा जाव चरिमपदं ॥५०७०॥

जइ णिग्गंथीओ गिहत्थाणं सगासाओ वत्थाणि गेण्हंति तो चउगुरुगा । दट्ठूणं कोइ णवसड्ढो मिच्छत्तं गच्छेज्जा, "णिग्गंथीओ वि भाडिं गिण्हंती" त्ति एवं संकेज्ज ।

अथवा – एस एतेण सह अणायारं सेवइ त्ति संकाए चउगुरुं, णिस्संकिते मूलं ॥५०७०॥

"[1]पसज्जणा जाव चरिमपदं" त्ति अस्य व्याख्या –

पुरिसेहिं तो वत्थं, गेण्हंती दिस्स संकमादीया ।
ओभासणा चउत्थे, पडिसिद्धे करेज्ज उड्डाहं ॥५०७१॥

मेहुणट्ठे संकिते ङ्का, भोतियाते कहिते ङ्कु, वाडियस्स ङ्कु, णाईणं कथिते छेदो, आरक्खिएण सुए मूलं । सेट्ठि सत्थवाह-पुरोहितेहिं सुते अणवट्ठप्पो । अमच्चरायादीहिं सुते पारंचियं । सो वा गिहत्थो वत्थाणि दाउं चउत्थं ओभासेज्ज । पडिसिद्धे उड्डाहं करेज्ज, एसा मे वत्थे घेत्तुं वुत्तं ण करेति ॥५०७१॥

किं चान्यत् –

लोभे य आभियोगे, विराहणा पट्टएण दिट्ठंतो ।
दायव्व गणधरेणं, तं पि परिक्खित्तु जयणाए ॥५०७२॥

"लोभे य" अस्य व्याख्या –

पगती पेलवसत्ता, लोभिज्जति जेण तेण वा इत्थी ।
अवि य हु मोहो दिप्पति, तासिं सइरं सरीरेसुं ॥५०७३॥

"पगइ" त्ति सभावो । स्वभावेन च इत्थी अल्पसत्वा भवति, सा य अप्पसत्तत्तणओ जेण वा तेण वा वत्थमादिणा अप्पेणावि लोभिज्जति, दाणलोभिया य अकज्जं पि करेति । अवि य ताओ बहुमोहाओ । तेसिं च पुरिसेहिं सह संलावं करेंतीणं दाणं च गेण्हंतीणं पुरिससंपक्कातो मोहो दिप्पइ, सइरं सरीरेसु अभिओगो इति कोइ उरालसरीरं मंजति दिस्स अभिओएज्जा, अभिओइत्ता चरित्तविराहणं करेज्जा ॥५०७३॥

एत्थ पट्टएण दिट्ठंतो कज्जति –

वीयरग समीवाराम सरक्खे पुप्फदाण पट्ट गया ।
णिसिं वेल दारपिट्टण, पुच्छा गामेण णिच्छुभणं ॥५०७४॥

एगत्थ गामे "वियरगो" त्ति कूविया, सा य आरामसमीवे । ततो य इत्थिजणो पाणियं वहइ । तम्मि आरामे एक्को सरक्खो । सो कूवियातडे उरालं अविरइयं दट्ठुं तीए विज्जाभिमंतिताणि

[1] गा० ५०७०।

पुप्फाणि देति। तीए य घरं गंतुं णिस्सापट्टए ताणि कुसुमाणि ठवियाणि। ततो ते पुप्फा पट्टयं आविसिउं णिसि अद्धरत्तवेलाए घरदारं पिट्टंति। ततो अगारी णिग्गओ, पेच्छति पट्टगं सपुप्फं। तेण अगारी पुच्छिता किमेयं ति। तीए सब्भावो कहिओ, तेण वि गामस्स कहियं, गामेण सो सरक्खो णिच्छूढो ॥५०७४॥

जम्हा एते दोसा तम्हा णिग्गंथीहिं ण घेत्तव्वा वत्था अप्पणा गिहत्थेहितो। तासिं गणधरेण दायव्वं परिक्खित्ता, इमेण विहिणा –

सत्त दिवसे ठवेत्ता, थेरपरिच्छाऽपरिच्छणे गुरुगा।
देति गणी गणिणीए, गुरुग सयं दाण अट्ठाणे ॥५०७५॥

संजतिपाउग्गं उवहिं उप्पाएत्ता सत्त दिवसे परिवसावेइ। ताहे कप्पं कातूणं थेरो थेरी वा धम्मसड्ढी वा पाउणाविज्जति। जइ णत्थि विगारो सुंदरं, एवं अपरिक्खित्ता जति देइ तो चतुगुरुगं। एवं परिक्खिए "गणि" त्ति आयरिओ, सो गणिणीए देइ, सा गणिणी तासिं देति, पुव्वुत्तेण विधिणा। अथ अप्पणा देति तो चउगुरुगं। काई मंदधम्मा भणेज्जा – "एतीए चोक्खतरं दिण्णं, एसा से इट्ठा जोव्वणट्ठा य।" एवं अट्ठाणे ठविज्जति, तम्हा ण अप्पणा दायव्वं, पवित्तिणीए अप्पेयव्वं ॥५०७५॥

चोदकाह – "यद्येवं सूत्रस्य नैरर्थक्यं प्रसज्यते"।

आयरिओ आह –

असति समणाण चोदग ! जातित-णिमंतवत्थ तध चेव।
जायंति थेरि असती, विमिस्सिगा मोत्तिमे ठाणे ॥५०७६॥

हे चोदक ! समणाणं असती थेरियाओ वत्थे जायंति, णिमंतणवत्थं वा गेण्हंति, जहा साधू तहा ताओ वि। थेरीणं असती तरुणि वतिमिस्साओ जायंति, इमे ठाणे मोत्तुं ॥५०७६॥

कावालिए[1] य भिक्खू[2], सुतिवादी[3] कुव्वि (च्चि) ए[4] य वेसित्थी[5]।
वाणियग[6] तरुण[7] संसट्ठ[8] मेहुले[9] (णे) भोतए[10] चेव ॥५०७७॥
माता पिता य भगिणी, भाउग संबंधिए य तह सण्णी।
भावितकुलेसु गहणं, असति पडिलोमजयणाए ॥५०७८॥

चउरो दारे एक्कगाहाए वक्खाणेंति –

अट्ठी विज्जा कुच्छिय, भिक्खू णिरुद्धा तु लज्जतेऽणत्थ।
एवं दगसोरि कुच्चिय, सुइ त्ति य बंभचारित्ता ॥५०७९॥

"अट्ठि" त्ति-हड्डसरक्खा ते विज्जाते मंतेण वा अभिओगेज्जा, अण्णं च ते जुगुंछिता। भिक्खुओ णिरुद्धा, दुवक्खरिआदिसु गच्छमाणा लज्जंति, अण्णं च ते विपरिणामंति। सुती दगसूगरिया। कुच्चंहरा कुच्ची (कुव्वंहरा कुव्वी)। एते वि एवं भाणियव्वा जहाभिक्खू। ते वि दगसोगरिया कुच्चीय (कुव्वीय) भण्णंति – जम्हा एयाओ बंभचारिणीओ अप्रसवा य तम्हा सुदियाओ य ॥५०७९॥

वेसित्थि मेहुले (णे) एते दो दारे एक्कगाहाए वक्खाणेति –

अण्णट्ठवणट्ठ जुण्णा, अभियोगे जा व रूविणिं गणिया ।
भोइय चोरिय दिण्णं, दट्ठुं समणीसु उड्डाहो ॥५०८०॥

जुण्णा वेसित्थी, अप्पणा असत्ता वि ठवेत्तुं रूववइं समणिं दट्ठुं अभियोगेज्जा, गणियाठाणे पट्ठवेज्जा । मेहुलो (णो) माउलपुत्तो, तेण य अप्पणो भारियाए चोरिएण वत्थं दिण्णं, तं समणीए पाउअं दट्ठुं, सा से भोतिया उड्डाहं करेज्जा, "एसा मे घरभंगं करेति" ॥५०८०॥

वणिय तरुण संसट्ठि भोतिगो य चउरो दारे एगगाहाए वक्खाणेति –

देसिय वाणिय लोभा, सइं दिण्णेणं चिरं च होहित्ति ।
तरुणुब्भामग भोयग, संका आतोभयसमुत्था ॥५०८१॥

देसिओ वणिओ चिंतेति – एक्कवार दिण्णेण दाणेण चिरं मे होहिइत्ति अणुबंधिज्जा । उक्कड-मोहत्तणतो तरुणो । संसट्ठो पुव्वमुब्भामगो । भोयगो भत्तारो । एतेसिं हत्थाओ घेप्पंति संकादिगा य दोसा पसज्जंति । अप्पणो तस्स वा उभयस्स वा पुणरवि खोभा अणुबंधो भवेज्जा ॥५०८१॥

सेसदारा एक्कगाहाए वक्खाणेति –

दाहामो णं कस्स यि, णियमा सो होहिती सहाओ णे ।
सण्णी वि संजयाणं, दाहिति इति विप्परीणामो ॥५०८२॥

मायादिया य सयणा चिंतेंति – एयं उण्णिक्खमावेत्ता कस्स ति दाहामो, सो अम्हं इहलोगसहातो भविस्सति । सण्णी वि विप्परिणामित्ता उण्णिक्खमावेति । एस मे धम्मसहाती होहिति, अण्णं च मे घरसवत्ती संजयाणं भत्तादि दाहिति, ममं वा देंतस्स विग्घं ण काहिति, ॥५०८२॥

एते ठाणे वज्जेत्ता जाणि संजतीसु वत्थादिग्गहणे भाविताणि कुलाणि तेसु गिण्हंति । भावितकुलाणं असति पडिसिद्धठाणेसु सण्णिमादी काउं परिलोमं गेण्हेज्जा, इमाए जयणाए –

मग्गंति थेरियाओ, लद्धं पि य थेरिया उ गेण्हंति ।
आगार दट्ठुं तरुणीण व देंते तं न गेण्हंति ॥५०८३॥

जा थेरी धम्मसड्ढी गीयत्था अविकारी सा वत्थे ओभासति, जाहे य णीणियं दायारेणं ताहे थेरियाओ चेव गेण्हंति ।

अह सो दाता काणच्छिमादी आगारं करेति ।

अह थेरीए हत्थे पसारिए भणति – "ण तुज्झ दलयामि इमाए तरुणीए दलयामि" त्ति तं ण गेण्हंति ॥५०८३॥

एवमादि दोसविमुक्कं उप्पाएत्ता वसहिमाणीए इमा परिच्छाविधी –

सत्त दिवसे ठवेत्ता, कप्पकते थेरिया परिच्छंति ।
सुद्धस्स होइ धरणं, असुद्ध छेत्तुं परिट्ठवणा ॥५०८४॥

कंठा –

चीरुप्पादणविणिग्गताणं पढमवत्थे इमं णिमित्तं गेण्हेज्जा –

जं पुण पढमं वत्थं, चतुकोणा तस्स होंति लाभाए ।
वितिरिच्छंऽता मज्झे, य गरहिता चतुगुरू आणा ॥५०८५॥

पुव्वद्धं कंठं । तिरिच्छं जे दो अंतिल्ला विभागा मज्झो य जो विभागो एए, तिण्णि वि अप्पसत्था । एतेसु आयविराहण त्ति काउं चउगुरुगं भवति । जे य दो पासंत-दसंत-मज्झविभागा एते वि पसत्था चेव ॥५०८५॥

णव भागकए वत्थे, चतुसु वि कोणेसु वत्थस्स ।
लाभो विणासमण्णे, अंते मज्झेसु जाणाहि ॥५०८६॥

पडविभागेण णव भागे कते वत्थे कोणविभागेसु चउसु, तम्मज्झेसु य दोसु, एतेसु छसु अंतविभागेसु लाभो भवति । "विणासमण्णे" त्ति अण्णे मज्झिल्ला तिण्णि विभागा तेसु विणासं जाणाहि ॥५०८६॥

एतेसु विभागेसु इमं दट्टुं णिमित्तमादिसेज्जा –

अंजण-खंजण-कद्दमलित्ते, मूसगभक्खिय अग्गिविदड्ढे ।
तुण्णित कुट्टिय पज्जवलीढे, होति विवागो सुभो असुभो ॥५०८७॥

कुट्टियं पत्थरादिणा, उद्दीढं पज्जवलीढं परिभुज्जमाणं वा खुसियं सुभेसु विभागेसु सुभो विपाको भवति, असुभेसु असुभो ॥५०८७॥

तेसु णवविभागेसु इमे सामी—

चतुरो य दिव्विया भागा, दोण्णि भागा य माणुसा ।
आसुरा य दुवे भागा, मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥५०८८॥

कोणभागा चउरो दिव्विता, तेसिं चेव दसंत-पासंत-मज्झग दो भागा माणुसा, सव्वमज्झे जो सो रक्खसो, सेसा दो आसुरा ॥५०८८॥

एतेसु विभागेसु इमं फलं –

दिव्वेसु उत्तमो लाभो, माणुसेसु य मज्झिमो ।
आसुरेसु य गेलण्णं, मज्झे मरणमाइसे ॥५०८९॥ कंठा

जं किं चि भवे वत्थं, पमाणवं सम रुचिं थिरं निद्धं ।
परदोसे निरुवहतं, तारिसयं खु भवे धण्णं ॥५०९०॥

पमाणतो ण हीणं णातिरित्तं सुत्तेण समं अकोणगं वा कोणेहिं समं ।

अहवा – प्रमाणतो समं प्रमाणयुक्तमित्यर्थः । रुइकारगं रुइं, थिरंति दढं, णिद्धं सतेयं जं रुक्खं ण भवइ, परदोसा खंजणादिया ।

अथवा – परदोसा दायगदोसा, तेहिं विवज्जितं, "वण्णं" ति सलक्खणं लक्खणजुत्तं णाणादीणि आवहति । विवरीते विवज्जतो । तेण लक्खणजुत्तं वत्थं इच्छिज्जइ ॥५०६०॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पादे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१००॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पादे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०१॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पादे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१०२॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पादे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०३॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पादे सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०४॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पादे फूमेज्ज वा रएज्ज वा
फूमेंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०५॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०६॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०७॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०८॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०९॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायं सीओदगवियडेण वा

उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११०॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायं फूमेज्ज वा रएज्ज वा,
फूमंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१११॥

* * *

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११२॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि वणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११३॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११४॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११५॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि वणं सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११६॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि वणं फूमेज्ज वा
रएज्ज वा, फूमंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११७॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा
अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११८॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा
असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा
विसोहेज्ज वा, नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११९॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा
असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदेत्ता विच्छिदेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा
पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२०॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा
असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोयेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा
आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२१॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा
असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता
विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अन्नयरेणं
आलेवणजाएणं आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा
अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२२॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा
असियं वा भगंदलं वा, अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेत्ता विसोहेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता
अन्नयरेणं धूवणजाएणं धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा
धूवंतं वा पधूवंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२३॥

卐 卐 卐

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अंगुलीए
निवेसिय निवेसिय नीहरेइ, नीहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२४॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाओ नहसिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू॥१२५॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं जंघरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२६॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं कक्खरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२७॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं मंसुरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२८॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२९॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं चक्खुरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३०॥

*　　*　　*

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा,
आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३१॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३२॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दंते फूमेज्ज वा रएज्ज वा,
फूमंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३३॥

*　　*　　*

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३४॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो उट्ठे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३५॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा

णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति । सू०॥१३६॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१३७॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो उट्ठे सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३८॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो उट्ठे फूमेज्ज वा रएज्ज वा, फूमंतं वा
रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३९॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४०॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं अच्छिपत्ताइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४१॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४२॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छीणि संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४३॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४४॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४५॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छीणि सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४६॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छीणि फूमेज्ज वा रयेज्ज वा
फूमंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४७॥

* * *

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं भुमगरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४८॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दीहाइं पासरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४९॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा
नहमलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५०॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा
मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५१॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं
करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५२॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा
अन्नयरं उवगरणजायं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५३॥

जे भिक्खू विभूसावडियाए वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा
अन्नयरं वा उवगरणजायं धोवेइ, धोवंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१५४॥

तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।

जे भिक्खू विभूसावडियाए इत्यादि, [illegible] ।

पादप्पमज्जणादी, सीसदुवारा उ जाव उवसिति ।
जे कुज्ज विभूसट्ठा, वत्थादि धवेज्ज आउणादी ॥५०६१॥

[illegible] ।

इयरह वि ता ण कप्पति, पादादिपमज्जणं किमु विभूसा ।
देहपलोयणसंगो, माता उक्कोलगमणादी ॥५०६२॥

इयरह त्ति – विणा विभूसाए, जो विभूसाए पादेसु पमज्जणादी करेति सो तेणेव पसंगेण देहपलोयणं करेज्जा, तहेव सायपडिबद्धयाए उच्छोलणादिसु देसे सव्वे वा पयट्टति, तप्पसंगे य पडिगमणादीणि करेज्जा ॥५०९२॥

एमेव य उवगरणे, अभिक्खधुवणे विराहणा दुविधा ।
संका य अगारीणं, तेणग मुहणंतदिट्ठंतो ॥५०९३॥

अभिक्खा पुणो पुणो । दुविधा आयसंजमविराहणा संका य । जहा एस सरीरोवकरणबाउसो दीसति तहा से णूणं कोइ पसंगो वि अत्थि, एवं अविरता संकंति । उज्जलोवहित्ते य तेणगमुहणंतगदिट्ठंतो-एगे आयरिया बहुसिस्सपरिवारागमा एगेण रण्णा कंबलरयणेण पडिलाभिता भणिता य – "पाउतेण य णिग्गच्छह ।" ते पाउणं णिग्गच्छंता तेणगेहिं दिट्ठा । वसहिं गंतु मुहणंतगा कया । तेणगा वि रातो आगता, देह त कंबलरयणं, दंसिया य तेहि एतेसु मुहणंतगा कया, तेणगेहिं रुट्ठेहिं सिव्वावेतुं मुक्का । जम्हा एते दोसा तम्हा ण विभूसाए धरियव्वं ॥५०९३॥

सव्वेसि सुत्ताण इमं वितियपदं जहासभवं भाणियव्वं –

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जयणा ॥५०९४॥

अणवज्झो खित्तादिगो सेहो वा अजाणंतो, असेहो वि दुविहमोहतिगिच्छाए अणिमित्ते सणिमित्ते वा मोहोदए, रायादि अभियोगेण वा, असिवे वा, असिवोवसमणिमित्तं, दुब्भिक्खे वा कुचेलस्स ण लब्भति त्ति सिंधुमालवगादिसु तत्थुज्जलोवधिधरणं करेज्ज, एवमादिपयोयणेसु उज्जलोवधिधरणं करेंतस्स जा जहिं जयणा संभव त सा कायव्वा ॥५०९४॥

रविकरमभिधाणक्खरसत्तमवग्गंतअक्खरजुएणं ।
णामं जस्सित्थीए, सुतेण तस्से कया चुण्णी ॥१॥

॥ इति विसेस-निसीहचुण्णीए पण्णरसमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥